समर्पित जीवन

- प्रस्तावना
  डा० राजेन्द्र कुमार जी जैन
  उद्योग एवं खनिज मंत्री
  मध्यप्रदेश भोपाल
- सम्पादक
  श्री नेमीचन्द्र काला
  जयपुर
- प्रबन्ध सम्पादक
  श्री सुशील कुमार सेठी
  उज्जैन

पं. सत्यंधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन ग्रंथ

□ सहयोगी

श्री माणिक्यचन्द्र जी जैन एम ए, बी जी

श्री सज्जनकुमार जी जैन एम ए, बी एड

प निर्मलकुमार जी बोहरा एम ए, जैनदर्शनाचार्य

□ प्रकाशक

प सत्यंधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति
जयपुर

□ प्राप्ति स्थान

सुरेश काला
नव अल्पना
मोदीखाना जयपुर 302003
(राजस्थान)

□ मूल्य

एक सौ एक रुपये मात्र

□ प्रकाशन तिथि

25 दिसम्बर, 1983

प्रस्तावना

डा. राजेन्द्र कुमार जी जैन
उद्योग एवं खनिज मन्त्री, मध्यप्रदेश

क्रान्ति की लहर जब उठती है व्यक्ति के परम्परागत एवं अर्थ शून्य बाहर के चरित्र से नही, अपितु अन्दर के निर्मल व्यक्तित्व से उठती है— पूज्य सेठीजी का व्यक्तित्व ऐसा ही निर्मल, निःशंक और निर्भय है। समाज के स्थापित मूल्य व्यक्तित्व के नही सदा परम्परा से चले आए चरित्र के पक्षपाती है। व्यक्तित्व का चमत्कार इसमे है कि वह रूढियो का परम्परागत स्थापित सामाजिक मूल्यों का विरोध कर नये मान स्थापित करे— यही कारण है कि समाज ने सदा सर्वदा से ऐसे क्रान्तिकारी विचारको, चिन्तको तथा प्रवक्ताओ का आदर और सम्मान ही नहीं किया वरन् उन्हे महामानव सम्बोधित कर प्रतिष्ठित भी किया है— पं० सत्यधर कुमार सेठी ऐसे ही द्रष्टा और सृष्टा है— जिनमे थोथी रुढियो के प्रति गहरा अभिनिवेश है, शास्त्रीय ज्ञान को केवल ज्ञान मान लेने की भ्रान्तियाँ, शास्त्रीय शब्दो की बाल की खाल खीचकर बुद्धि विलास करते रहने की मोहक वृत्तियाँ आज के आध्यात्मिक मानस पर कितनी हावी हो गई है—इस दूषण पर आपने आलसता की कल्याणकारी सर्जरी की है— निश्चय ही आपका यह उदबोधन लोगो में "चक्खु दयाण" की पावन स्मृति में सही श्रद्धा जागृत करता हुआ दर्शन और साक्षात्कार की ग्रन्थी विमोचन सोपानो की ओर उन्मुख होने की प्रेरणा भी देगा। पंडित सत्यधर कुमारजी अभिनदन ग्रन्थ "समर्पित जीवन" में श्रीसेठीजी के विभिन्न विषयो पर लिखे गये निबन्धो का सकलन भी पाठको को रुचिकर लगेगा तथा पाठको के बौद्धिक चिन्तन को

नई दिशा एवं परिवर्तित परिवेश में सोचने, समझने और आचरण करने की
प्रेरणा भी देगा।

आज का युग सर्वधर्म समन्वय का युग है। सर्वधर्म समन्वय का
तात्पर्य धर्मों के सारतत्व, जिनमें जीव और जगत के शाश्वत अर्थ तथा लोक
मंगल की कामना की स्पष्ट अन्विति है— पूज्य सेठीजी का समग्र जीवन
इसी कामना और भावना से पुष्पित और पल्लवित है— इनकी रुचि
आध्यात्मोन्मुखी है— लोकैषणा की वृत्ति नहीं। यश, पद तथा लोक पूजा की
कामना और लिप्सा से दूर रहकर निस्पृह वृत्ति से जीवन जीना और मान सम्मान
की कामना नहीं करना विनय, शालीनता और सेवा भावना से व्यवहार करना
उनकी समग्र दिनचर्या है। आपका समस्त जीवन श्रम की साधना से पल्ल-
वित है— उनकी कथनी और करनी में साम्यता है— वे मेरे अग्रज हैं— उनके
अभिनंदन की पुनीत घड़ियों में उनके सम्बन्ध में कुछ कहना दुस्साहस ही होगा
फिर भी ग्रन्थ की भूमिका लिखने के लोभ का संवरण नहीं कर सका— ऐसे
नूतन और पुरातन के सन्धि देवता को वन्दन। वे गांधीवादी विचारधारा के
प्रबल पक्षधर हैं— ओजस्वी वक्ता, निर्भीक समाज सुधारक तथा सरस और
सरल लेखनी के धनी हैं— उन्हीं के शब्दों में जीवन का ध्येय त्याग है, भोग
नहीं, श्रेय है प्रेय नहीं, वैराग्य है विलास नहीं है, प्रेम है प्रहार नहीं—
कहकर श्रद्धानवत हूं।

मेरा विश्वास है प्रस्तुत संकलन का सब ही क्षेत्रों वर्गों और मान्य-
ताओं में स्वागत होगा तथा यह भावी पीढ़ी को दिशा दर्शन देगा।

जय हिन्द।

डॉ० राजेन्द्र कुमार जैन

अभिनन्दन तथा अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह

श्री प्रकाशचन्दजी सेठी
गृहमन्त्री भारत
प्रमुख सरक्षक
अभिनन्दन समिति

डा० राजेन्द्रकुमार जैन
उद्योग एव खनिज मन्त्री मध्यप्रदेश
सरक्षक-स्वागत समिति

श्री सुशीलकुमार सेठी
प्रबन्ध सम्पादक

श्री नेमीचन्द काला
आयोजन सचिव
एव
सम्पादक

अभिनन्दन समिति के कुछ प्रमुख कर्णधार

श्री अक्षयकुमार जैन

श्री भगतरामजी जैन

श्री किशनलाल सेठी

पं० राजकुमारजी शास्त्री

पं० लाडलीप्रसाद पापडीवाल

श्री निर्मलकुमार सेनानी

श्री ललितकुमार जैन

श्री रमेशचन्द कासलीवाल

श्री सनतकुमार वैनाडा

श्री हनुमानबक्स गंगवाल

श्री माणकचन्द गंगवाल

श्री हरकचन्द गंगवाल

सहृदय पाठको के कोमल करो में पडित सत्यधर कुमार सेठी अभिनन्दन ग्रन्थ "समर्पित जीवन' का यह सुन्दर, सरस, सरल और सुरभित सुमन समर्पित करते हुए हार्दिक प्रसन्नता और गौरवपूर्ण गरिमा का अनुभव हो रहा है। सुमन कैसा खिला है? यह मूल्य विसर्जन के युग में प्रथम और अन्तिम प्रश्न है। अनुभव के प्रति कितना गौरवपूर्ण है सहृदय पाठकों के विवेक पूर्ण निर्णय पर छोडना ही श्रेयस्कर है।

मनुज-जीवन के सत्य सकल्पों को साकार करने में जिसने अपनी समग्र शक्ति का आधान किया और आज भी कर रहे हैं तथा जीवन की सध्या के चरम क्षणो तक करते रहने का जिसने सत्यव्रत स्वीकार किया, उन प० सत्यधर कुमार सेठी का सार्वजनिक अभिनन्दन उनकी जीवन पद्धति, कार्य प्रणाली तथा उनके भ्रान्त विचारो के दिव्य आलोक का अभिनन्दन है, उसे हमको आत्मसात् करना चाहिए—यही पडित सत्यधर कुमार सेठी का आदर और सच्चा सत्कार होगा।

समाज ने जिसको सस्कृति का सस्कार करने के कारण सस्कारक माना है, धर्म ने जिसमें स्व और पर को धारण करने की शक्ति देखकर धार्मिक कहने मे अपना गौरव अनुभव किया है, साहित्य ने जिसमे कल्पना, प्रतिभा और निसर्ग भावुकता देखकर प्रखर वक्ता और व्याख्याता से विभूषित किया, जैन जगत के विश्रुत विचारक कहकर सम्मानित किया—उनका सम्मान, एक व्यक्ति का नही, व्यक्ति की सत्ता क्या है, इस अनन्त ससार मे एक बूद। किन्तु उस बूंद में जो सिन्धु की विराट सत्ता है व्यक्ति समष्टि का बीजाणु है—यह उसी का अभिनन्दन है।

जैन जगत के विश्रुत विद्वान, यशस्वी वक्ता, श्रेष्ठ साहित्यकार एव सन्त और सुधारवादी दृष्टिकोण के प्रणेता स्व० प० चैनसुखदास न्यायतीर्थ की शिष्य परम्परा के अग्रणी प० सत्यधर कुमार सेठी उस परम्परा के प्रकाश स्तम्भ हैं- श्री सेठी का सम्मान पडित चैनसुखदास न्यायतीर्थ के जीवन दर्शन का सम्मान कहा जाय तो भी अप्रासगिक न होगा।

श्री सेठी के हीरक जयन्ती वर्ष मनाने के लिये जो भव्य समारोह एव अभिनदन का आयोजन किया जा रहा है— इसका अर्थ है कि उनके उज्ज्वल एव गरिमा पूर्ण व्यक्तित्व ने लोक मानस को गहराई से स्पर्श किया है— यह अभिनदन ग्रन्थ और आयोजन जन-मन की श्रद्धा-अभिव्यक्ति का एक स्थूल रूप ही तो है। प्रस्तुत ग्रन्थ में आशीर्वाद और शुभकामनाओ के समानान्तर श्री सेठी के सामयिक और समीचीन उपलब्ध चित्रों का प्रकाशन भी हैं जो इनका प्रतीकात्मक सकेत है। यह ग्रन्थ तीन खण्डो में पूर्णत: विभक्त है —

1 प० सत्यधर कुमार सेठी व्यक्तित्व और कृतित्व।

2 धार्मिक विद्वान, लेखक— पत्रकार, शिक्षाशास्त्री, समाजसेवी, राष्ट्रीयो, व्यवसायियो तथा स्वजनो के विचार पण्डितजी के प्रति।

3 श्री सेठी के अनुभव और अनुभूतिया, चिन्तन और मनन से अभिभूत विचारो का सकलन जो गत पाच दशको मे विभिन्न पत्र पत्रिकाओ के माध्यम से प्रकाशित हुये है। तीर्थंकर और उनकी शिक्षाये, दशलक्षण, जैन धर्म और दर्शन, जैन कला और सस्कृति, जैन सस्कृति के प्रतीक मन्दिर और तीर्थ, जैन सन्त और विविध इस ग्रन्थ का कलित कलेवर है— आशा और विश्वास है आप इससे सन्तुष्ट होगे।

अभिनन्दन योजना और ग्रन्थ को मूर्तरूप देने मे जिन जिन महानुभावो का सहयोग और सरक्षण मिला है वह अनुकरणीय और स्तुत्य है— विशेषकर ध्यानयोगी व्यक्तित्व श्री भट्टारक चारुकीर्ति पडिताचार्यवर्य स्वामीजी, मूडविद्री माननीय श्री प्रकाशचन्द सेठी गृहमन्त्री भारत सरकार, डा० राजेन्द्रकुमार जैन उद्योग एव खनिजमन्त्री मध्य प्रदेश, श्री अक्षयकुमार जैन, सेठ श्री टासचन्द सागर, श्री भगतराम जैन दिल्ली, प० राजकुमार शास्त्री निवाई, श्री मिश्रीलाल पाटनी लश्कर, प० चांदमल काला जयपुर, श्री माणिक्यचन्द जैन जयपुर, श्री जेठमल काला गोहाटी, श्री हनुमान दत्त गर्ग गवाल कुली श्री हरकचन्द काला भगतपुरा, श्री नथमल सेठी कलकत्ता, श्री सोहनलाल काला टोंकापुर श्री किशनलाल सेठी टोंकापुर, श्री पन्नालाल बोहरा ग्वालियर, श्री रतनलाल गंगवाल कलकत्ता, श्री सुरेन्द्रकुमार बोहरा करोली, श्री कैलाशनन्द शास्त्री जयपुर, ब्रह्मचारिणी कमलाबाई श्रीमहावीरजी श्री ललितकुमार जैन, श्री रमेशचन्द कासलीवाल, श्री सनतकुमार बनाडा उज्जैन, श्री सूर्यसागर उच्च मा० विद्यालय व श्री ज्ञानसागर दिगम्बर जैन कन्या मा० विद्यालय के शाला परिवार उज्जैन, काटन मर्चेन्ट एज्यूकेशन एण्ड चेरीटेबिल ट्रस्ट उज्जैन के सम्मानित सदस्यो के प्रति हृदय की गहराई से हार्दिक कृतज्ञता।

अभिनन्दन-योजना के क्रियान्वयन मे उन सभी लेखको, विचारको तथा व्यवसायिको के योग को भी नहीं भूला जा सकता, वे तो इस प्रयास की आधार शिला है, उनका सहयोग हमारा सबल है— तथा उनका सरक्षण इस ग्रन्थ की सजीवता और स्फूर्ति है।

अभिनन्दन-समिति के सदस्यो के अगाध स्नेह, विश्वास और आत्मीयता के सम्बन्ध मे कुछ कहना छोटे मुह बडी बात होगी फिर उनका सान्निध्य और ससर्ग ने हमारे प्रयासो को गति प्रदान की है। हम उनके आभारी है। विशेष रूप से डा० राजेन्द्रकुमार जैन और श्री सुशीलकुमार सेठी के जो इस काम को पूर्णता प्रदान करने मे हमारे अन्तरग स्रष्टा रहे है।

प्रकाशन काय मे श्रद्धेय माणिक्यचन्द जैन, श्री सज्जनकुमार, श्री विमलकुमार बोहरा का योग अनुकरणीय रहा है उनके प्रति हृदय से आभारी हू।

अन्त मे मुद्रक बन्धुओ के योग को भी नजर अन्दाज नहीं कर सकते है, जिन्होने इस गुरुतर काम को पूरा करने मे हमारा योग किया है।

अन्त में विशेष कुछ न कहकर, केवल निम्न भाव ही प्रकट करना सामयिक और समीचीन होगा—

पं० सत्यधर कुमार सेठी गांधीधारा के प्रबल पक्षधर हैं, वे निर्भीक वक्ता प्रखर, समालोचक, कुशल समाज सुधारक, क्रान्तिकारी विचारों के प्रणेता, मृदुल व मंजुल स्वभाव के धनी, शान्त और गम्भीर प्रकृति के हैं, ऐसे नेता जिस समाज मे होंगे विश्वास रखिये वह समाज, प्रान्त और राष्ट्र निश्चित ही उन्नति के शिखरों को स्पर्श करेगा— वे सरलता और सात्त्विकता की प्रतिमूर्ति हैं— उनके दीर्घ जीवन और उज्ज्वल भविष्य की पुनीत कामना के साथ श्रद्धानवत हूं।

स्व० आचार्य श्री चैनसुखदास न्यायतीर्थ, जो जैन चिन्तन क्षितिज पर ज्योतिर्मान नक्षत्र की तरह आज भी दीप्तिमान हैं के शब्द सहसा स्मरण हो आते हैं

"सतत् चिन्तन एवं तद्रूप आचरण द्वारा जीवन की तैयारी मे प्रयत्नशील रहना ही मानव धर्म है और सच्ची साधना है।" श्री सेठी के जीवन में यह कथन शत प्रतिशत सत्य उतरा है। वे उन्नत आकाश-से विशाल, सागर-से गम्भीर, शिशु-से सुकुमार और जाह्नवी-से पवित्र हैं।

अमर रहो, अविचल रहो, बढ़े चलो अविराम।
हम सब की यह कामना, स्वीकृत हो गुणधाम॥

—नेमीचन्द काला

पं. सत्यन्धर कुमारजी सेठी अभिनन्दन समिति

प्रमुख संरक्षक

श्रीमान् प्रकाशचन्द्रजी सेठी—गृहमन्त्री भारत, नई दिल्ली

संरक्षक मण्डल

१ ज्ञानयोगी स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति पण्डिताचार्यवर्या स्वामी जी श्री जैनमठ, मूडबिद्री (कर्नाटक)

२. श्रीमान् सेठ भूपेन्द्रकुमारजी सेठी, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

३ श्रीमान् रतनलाल जी गङ्गवाल, कलकत्ता (पश्चिमी बङ्गाल)

४ श्रीमान किशनलाल जी सेठी, डीमापुर (नागालैण्ड)

५ श्रीमान् हरखचन्द जी काला, भगतपुरा (राजस्थान)

६ श्रीमान् जेठमल जी काला, गोहाटी (आसाम)

७ श्रीमान् प चादमलजी काला, जयपुर (राजस्थान)

अध्यक्ष मण्डल

१ श्रीमान् सेठ साहू श्रेयासप्रसाद जी, बम्बई (महाराष्ट्र)

२ डा राजेन्द्रकुमारजी जैन, खनिज एव उद्योग मन्त्री-मध्यप्रदेश, भोपाल

३ श्रीमान् सेठ डालचन्दजी जैन, सागर (मध्यप्रदेश)

४ ,, देवकुमारसिंह जी कासलीवाल, इन्दौर (मध्यप्रदेश)

५ श्रीमान् अक्षयकुमार जी जैन, नई दिल्ली

६ ,, नथमल जी सेठी, कलकत्ता

७. ,, सोहनलालजी काला, डीमापुर (नागालैण्ड)

८ ,, ललितकुमारजी जन, उज्जैन (मध्यप्रदेश)

९ श्रीमती ब्रह्मचारिणी कमलाबाई, श्रीमहावीरजी (राजस्थान)

१० श्रीमान् ताराचन्दजी बडजात्या बम्बई (महाराष्ट्र)

११ श्रीमान् कैलाशचन्द जी शास्त्री, जयपुर (राजस्थान)

१२ नेमीचन्द जी काला सयोजक

सदस्य गण

१. श्री यशपालजी जैन, नई दिल्ली
२. „ आचार्य राजकुमारजी जैन, नई दिल्ली
३ „ भगतरामजी जैन, दिल्ली
४ „ लक्ष्मीचन्द्रजी जैन, नई दिल्ली
५ „ रमेशचन्द्र जी जैन, नई दिल्ली
६ „ प्रेमचन्दजी जैन, नई दिल्ली
७. „ नरेशकुमार जी, नई दिल्ली
८. „ शान्तिलालजी गङ्गवाल, जयपुर
९ डा कस्तूरचन्दजी कासलीवाल, जयपुर
१० श्रीमाणिक्यचन्द जी जैन, जयपुर
११ „ सौभाग्यमल जी जैन, जयपुर
१२ , ताराचन्दजी बक्शी, जयपुर
१३ „ कपूरचन्द जी पाटनी, जयपुर
१४ प भंवरलालजी न्यायतीर्थ, जयपुर
१५ श्रीभागचन्दजी सोनी, जयपुर
१६ „ केशरीमलजी काला, कलकत्ता
१७. „ प्रवीणचन्दजी छाबडा, जयपुर
१८ प तनसुखलालजी काला, बम्बई
१९ श्रीमानिकचन्दजी काला, बम्बई
२० डा॰ राजकुमारजी जैन, आगरा
२१. श्रीप्रतिष्ठाचार्य ब्र राजकुमारजी पाटनी, आगरा
२२ डा जयकिसन प्रसादजी, आगरा
२३ श्रीमिश्रीलालजी पाटनी लश्कर ग्वालियर
२४ „ फूलचन्दजी झांझरी, इन्दौर
२५ „ मोतीलालजी सुराना, इन्दौर
२६ प नाथूलालजी जैन शास्त्री, इन्दौर
२७ श्रीईश्वरचन्दजी बडजात्या, इन्दौर
२८ „ अरविन्दकुमारजी गुप्ता „
२९ „ देवेन्द्रकुमारजी जैन „
३० „ बाबूलालजी पटोदी „
३१ „ शिरोमणिचन्दजी जैन „
३२ „ हीरालालजी सोगाणी ,
३३ डा एस पी दिवाकर, जबलपुर
३४ डा. महावीरसरनजी जैन, जबलपुर
३५ श्रीसेठ हरिश्चन्द्रजी जैन, जबलपुर
३६. श्रीमती इन्दुमती जैन, भोपाल
३७. श्री बसन्तकुमारजी बडजात्या, भोपाल
३८ „ रामविलासजी पोरवाल, भोपाल
३९ „ मनोहरजी वैरागी, भोपाल
४० „ वैद्य विष्णुकुमारजी, बडनगर
४१ „ विमलचन्दजी शाह, बडनगर
४२ „ वी० सी० काला, बडनगर
४३ „ प्रमोदकुमारजी मारवाडी, बडनगर
४४ „ गुलाबचन्दजी गङ्गवाल, रेनवाल
४५. „ सोनपाल जी शरदकुमारजी ठोलिया, नागपुर
४६. महामहोपाध्याय डा० हरीन्द्र भूषण जैन, कुम्भोज बाहुबली
४७ श्रीअनन्तरामजी तूपकर, शोलापुर
४८ „ शिवानन्दजी, सतना
४९ श्रीमती डा इन्दिराजी जोशी, जोधपुर
५० श्री दयाचन्दजी जैन, किशनगज (कोटा)
५१ „ हजारीलालजी जैन काका (बुन्देलखडी)
५२ „ नन्दलालजी जैन, रीवा
५३. „ धन्यकुमारजी जैन, कटनी
५४ „ समाजरत्न राजकुमारजी शास्त्री आयुर्वेदाचार्य, निवाई
५५ „ पं० लाडलीप्रसादजी जैन, स माधोपुर
५६ „ सुगनचन्दजी पाटनी, जोबनेर
५७ „ महावीरप्रसादजी जैन एडवोकेट, हिसार
५८ विद्या वारिधि डा महेन्द्रसागरजी प्रचण्डिया, अलीगढ
५९ प्रो भागचन्दजी भागेन्दु, दमोह
६० , चादमलजी जैन, दुग
६१ „ प० विनयकुमारजी जैन, मथुरा
६२ „ जनश्रीपालजी, खादी साहब भुसावल
६३ , लक्ष्मीचन्दजी जैन सरोज, जावरा
६४ „ मोहनलालजी छाबडा, रतलाम
६५ „ स्वरूपचन्दजी जैन एडवोकेट, खण्डवा
६६ „ अमोलकचन्दजी जैन, एडवोकेट „
६७ „ पन्नालालजी साहित्याचार्य, सागर

६८ श्रीराजेन्द्रकुमारजी जैन एडवोकेट विदिशा
६९ ,, निर्मलकुमारजी सेनानी, सिरोंज
७० ,, प० सरदारमलजी जैन, सिरोंज
७१ ,, प. कैलाशचन्दजी शास्त्री, वाराणसी
७२ प्रो० खुशालचन्दजी गोरेवाला, वाराणसी
७३ श्री प० दरबारीलालजी कोठिया, ,,
७४ ,, प. कमलकुमारजी जैन शास्त्री, खुरई
७५ ,, जगनारायणजी जैन, मेरठ शहर
७६ ,, राजेन्द्रकुमारजी जैन, मेरठ
७७ ,, डा० रमेशचन्दजी जैन, बिजनौर
७८ ,, श्रीनन्दनलालजी, गज बासोदा
७९ ,, महावीरप्रसादजी रारा, नलवाडी
८० ,, वैद्य अम्बाप्रसादजीमिश्रा, मंडाभीमसिंह
८१ ,, मिलापचन्दजी जैन, मण्डाभीमसिंह
८२ ,, सुकुमारचन्दजी जैन, मेरठ
८३ ,, गणधरकुमार जी सोगाणी, जयपुर
८४ ,, अनूपचन्द जी न्यायतीर्थ जयपुर

उज्जैन से

८५ श्रीमती चन्द्रप्रभासिंह
८६ श्री भानुभाई जी पटेल
८७ ,, बहाउद्दीन जी कुरैशी
८८ ,, शान्तिलालजी जैन
८९ ,, सिद्धनाथजी उपाध्याय
९० राधेश्यामजी उपाध्याय
९१ ,, रमेशचन्दजी कासलीवाल
९२ ,, देवेन्द्रकुमारजी बनाडा
९३ ,, सुरेशचन्दजी जैन
९४ ,, मोहनलाल जी जोशी
९५. ,, मांगीलाल जी जैन
९६ ,, कैलाश चन्द जी जैन
९७ ,, दिनेश चन्द जी बडजात्या
९८ ,, सनतकुमार जी बैनाडा
९९ ,, सुशील कुमार जी सेठी
१०० ,, महावीर प्रसाद जी वशिष्ठ
१०१ ,, डा रामभूर्ति जी त्रिपाठी
१०२ श्रीतेजकुमार जी सेठी
१०३ ,, छोटे लाल जी भारिल्ल
१०४. ,, लक्ष्मीचन्द जी जैन
१०५ ,, हुकमचन्द जी चौधरी
१०६. ,, मिश्रीलाल जी कासलीवाल
१०७ ,, सूरजमल जी गोधा
१०८. ,, सागरमल जी कटारिया
१०९. ,, रामचन्द्र जी गुप्ता
११० ,, नजरअली जी भाई
१११ ,, डा व्ही के रावत
११२ ,, डा एस के जैन
११३ ,, हुकमचन्द जी पाड्या
११४ ,, प्रकाश जी बोहरा 'स्वदेश'
११५ ,, राजेश जी जैन "भास्कर"
११६ ,, रामचन्द्र जी श्रीमाल ब्रिगेडियर
११७ ,, जयकुमार जी लिग्गा
११८ ,, नन्दलाल जी कासलीवाल
११९ ,, महावीरकुमार जी अजमेरा
१२० ,, डा प्रकाश जी साहू
१२१ ,, सुशीलकुमार जी छाबडा
१२२, ,, बाबूलाल जी वाली
१२३ ,, माणकचन्द जी बडजात्या
१२४ ,, विमलकुमार जी गोधा
१२५ ,, शांतिकुमार जी सेठी
१२६ ,, राजकुमार जी छाबडा
१२७ ,, नरेन्द्रकुमार जी छाबडा एडवोकेट
१२८. ,, कैलाश जी वैद्य
१२९. नरेन्द्र जी छाजेड
१३० ,, लक्ष्मीदत्त जी चतुर्वेदी
१३१ ,, चांदमल जी मेहता एडवोकेट
१३२ ,, आनन्दशंकर जी व्यास
१३३ ,, बाबूलाल जी जैन
१३४, ,, मुन्नालाल जी पाटनी
१३५. ,, मिट्ठूमल जी जैन
१३६ ,, अभयकुमार जी जैन
१३७ ,, प्रो कलानिधि जी चंचल

१३८ श्रीमदनलाल जी गोयल
१३९ „ जीवधरकुमार जी जैन
१४० „ प. वासुदेव जी शास्त्री
१४१ „ मकसूद अहमद साहब
१४२. „ अक्षयकुमार जी जैन
१४३ „ जयकुमार जी जैन
१४४ „ डा. सुरेन्द्रकुमार जी आर्य
१४५ „ डा. कैलाशचन्द जी जैन
१४६ „ सुगनचन्द जी सेठी
१४७ „ जमनालाल जी चित्तोड़ा
१४८ श्रीमती डा. दुर्गा परमार
१४९ श्री लक्ष्मणसिंह जी गहलोत
१५०. „ बहादुरमल जी अग्रवाल
१५१ „ मुरलीधर जी गुप्ता
१५२. „ मेघराज जी कोठारी
१५३ „ हरवससिंह जी
१५४ „ गुलाबचन्द जी पहाड़िया
१५५ „ राजकुमार जी जैन
१५६ „ मोतीलाल जी जैन
१५७ „ राजमल जी दोशी एडवोकेट
१५८ „ माणकचन्द जी सरावगी गगवाल
१५९ „ तनसुखलाल जी टोंग्या
१६० „ शान्तिलाल जी सेठी
१६१ „ कैलाशचन्द जी गंगवाल
१६२ „ दौलतराम जी मंत्री एडवोकेट
१६३ „ शान्तिलाल जी फागानी
१६४ „ कुन्दनमल जी माम
१६५ „ सुगनचन्द जी जैन डा. सी. एम
१६६ „ अमरचन्द जी अमृत
१६७ „ रामनिवास जी गोयल
१६८ „ प्रभुदयाल जी गागनवा
१६९ „ स्वामी ज्ञानानन्द जी महाराज
१७० „ [illegible] जी [illegible]
१७१ „ [illegible] जी [illegible]
१७२ „ [illegible]
१७३ „ [illegible]
१७४ „ [illegible]
१७५ „ [illegible]
१७६ „ [illegible]
१७७ श्रीनरेन्द्रकुमार जी बिलाला
१७८ „ केशरीमल जी मालीपुरा
१७९ „ राजेन्द्रकुमार जी जैन फ्रीगंज
१८० „ आनन्दीलाल जी गोधा
१८१ „ चैनरूप जी गोधा
१८२ „ मनसुखलाल जी सुपारीवाले
१८३ „ राजकुमार जी ठोलिया
१८४ „ रतनलाल जी जैसवाल
१८५ „ मांगीलाल जी लुहाड़िया
१८६ „ श्रवणकुमार जी साह
१८७ „ चांदमल जी पाड्या
१८८ „ कृष्णदास जी मोड
१८९ „ गोकुलदास जी बागड़ी
१९० „ कुन्दनमल जी जैन बिड़लाग्राम
१९१ „ शतानमल जी सरावगी
१९२ श्रीमती प्रो. शीला डोसी
१९३ श्री गजानन्द जी वर्मा
१९४ „ प्यारेलाल जी श्रीमाल
१९५ „ महादेव गोविन्द जी जोशी
१९६ „ रामसिंह जी साईं
१९७ „ राधावल्लभ जी त्रिवेदी
१९८ „ गौरीशंकर जी वर्मा
१९९ „ वीरेन्द्र जी कोठारी
२०० „ विनयकुमार जी जैन अग्रवाल
२०१ „ शान्तिलालजी जैन रेडीमेड वाले
२०२ „ लक्ष्मीनारायण जी
२०३ „ मदनलाल जी शर्मा
२०४ „ राजमलजी प्रेस वाले
२०५ श्रीमती राजकुमारी जी ठोलिया
२०६ श्री बजरङ्गलालजी हरभजनका
२०७ „ एम० जी० जोशी एडवोकेट
२०८ „ कृपाशङ्करजी तिवारी
२०९ „ फतेह मोहम्मद साहब
२१० „ मो. मसूद अली साहब
२११ „ दीपसिंहजी श्याममुखा
२१२ „ नदमणप्रसादजी भागव
२१३ „ [illegible]जी जैन
२१४ „ मनोहर जी गुप्ता

गतिक्रम

14 श्री बाबूलाल जमादार, बडौत
15 „ प० मिलापचन्द्र शास्त्री, जयपुर
16 „ प० मूलचन्द जैन शास्त्री, श्रीमहावीरजी
17 „ मोतीलाल मार्तण्ड, ऋषभदेव
18 „ यतीन्द्रकुमार लाखनदौन
19 „ राजकुमार पाटनी, आगरा
20 „ प० विनयकुमार जैन, मथुरा

(ख) लेखक एव पत्रकारो ने

1 श्री अक्षय कुमारजी जैन, नई दिल्ली
2 „ खादी साहब, श्री श्र गारवाला जैन श्रीपालजी, भुसावल
3 „ ताराचन्द बक्षी, जयपुर
4 , प्रवीण चन्द छाबडा, जयपुर
5 „ भवरलाल न्यायतीर्थ, जयपुर
6 „ वो० माणक चन्द नाहर, मद्रास
7 „ विमलकुमार जैन, सोरया
8 „ यशपालजी जैन, नई दिल्ली
9 , ज्ञान चन्द जैन, भोपाल
10 , ज्ञान चद जैन स्वतत्र, सूरत

(ग) शिक्षा शास्त्रियो ने

1 श्रीमती डा इन्दिरा जोशी, जोधपुर
2 प्रो कला निधि चचल, उज्जैन
3 श्री कमलकुमार जैन शास्त्री, खुरई
4 डा कैलाश च द अगवाल उज्जैन
5 प्रो खुशाल चन्द गोरावाला वाराणसी
6 डा जयकिशन प्रसाद खडेलवाल आगरा
7 डा ज्योतिप्रसाद जैन, लखनऊ
8 श्री तेजकरण डडिया, जयपुर
9 „ दयाचन्द शास्त्री, उज्जैन
10 , मती डा दुर्गा परमार, उज्जैन
11 „ देवेन्द्रकुमार जैन, इन्दौर
12 „ नाथूलाल शास्त्री, इन्दौर
13 „ पदमचन्द साह, जयपुर

14 श्री डा० प्रेमसुमन जैन, उदयपुर
15 ,, फूलचन्द शास्त्री पुष्पेन्दु, खुरई
16 ,, बाबूलाल शास्त्री, डालटनगंज
17 ,, डा० वी० वी० रानाडे, उज्जैन
18 ,, डा० भागचन्द जैन भागेन्दु, दमोह
19 ,, माणिक्यचन्द जैन, जयपुर
20 ,, मन्नालाल जैन, रुड़की
21 ,, डा० महेन्द्रसागर प्रचंडिया, अलीगढ़
22 ,, डा० राजकुमार जैन, आगरा
23 ,, आचार्य राजकुमार जैन, नई दिल्ली
24 ,, डा० राममूर्ति त्रिपाठी, उज्जैन
25 ,, लक्ष्मणसिंह गहलोत, उज्जैन
26 ,, लक्ष्मीचन्द सरोज, जावरा
27 ,, लक्ष्मीचन्द सिंघई, उज्जैन
28 ,, आचार्य वासुदेव शास्त्री, उज्जैन
29 ,, डा० विष्णुधर वाकणकर, उज्जैन
30 ,, प० विद्याकुमार सेठी, कुचामनसिटी
31 ,, सरमल लाल जैन, सरधना
32 ,, सी० एल० भारुत, उज्जैन
33 ,, डा० सुरेन्द्र आर्य, उज्जैन
34 ,, डा० हरीन्द्र भूषण जैन, कुम्भोज बाहुबली

(घ) समाज सेवियों ने

1 श्री एम जी जोशी एडवोकेट, उज्जैन
2. ,, अजीत प्रसाद जैन, लखनऊ
3 ,, अमोलक चन्द जैन एडवोकेट, खण्डवा
4 ,, ईश्वर चन्द बडजात्या, इन्दौर
5 ,, कस्तूर चन्द दोषी, उज्जैन
6 ,, केसरीमल गोधा, लश्कर
7 ,, कृपाशंकर तिवारी, उज्जैन
8 ,, कुन्दनमल जैन, उज्जैन
9 ,, कुन्दनमल मारु, उज्जैन
10 वैद्य श्री कैलाश जैन, उज्जैन
11 श्री गजानन्द वर्मा, उज्जैन
12. वैद्य श्री गुलजारीलाल शास्त्री, उज्जैन

13 श्री गारीशंकर वर्मा, उज्जैन
14 श्रीमती चन्द्र प्रभासिंह 'प्रभाकर' उज्जैन
15 श्री चादमल मेहता उज्जैन
16 „ जयनारायण जैन, मेरठ
17 „ जीवन्धर जैन, उज्जैन
18 „ टीकमसिंह श्यामसुखा, उज्जैन
19 सेठ श्री डालचन्द जैन, सागर
20 श्री तनसुखलाल टोंग्या, उज्जैन
21 डा तेजसिंह गोड, उज्जैन
22 श्री दशरथ जैन, छत्तरगढ
23 „ दया चन्द जैन, किशनगज (कोटा)
24 „ द्वारका प्रसाद मिश्र, मढाभीमसिंह
25 „ सेठ देवकुमारसिंह कासलीवाल, इन्दौर
26 „ देवेन्द्र कुमार वैनाडा, उज्जैन
27 „ दौलतराम मन्त्री, उज्जैन
28 श्री नजर अली एडवोकेट, उज्जैन
29 „ नरेन्द्रकुमार जैन, उज्जैन
30 डा नरेन्द्र कुमार सेठी, न्यूयार्क
31 श्री निमल कुमार जैन सेनानी सिरोंज
32 „ प्यारेलाल श्रीमाल, उज्जैन
33 श्री पवन कुमार कासलीवाल, उज्जैन
34 डा प्रकाश जैन, उज्जैन ,
35 श्री प्रताप चन्द जैन, आगरा
36 श्री प्रमोद कुमार मारवाडी, वडनगर
37 श्री प्रभुदयाल गोयनका, उज्जैन
38 „ पाडे परमेष्ठी दास जैन, उज्जैन
39 „ वहीदउद्दीन कुरेशी, उज्जैन
40 „ बाबूलाल पाटोदी, इन्दौर
41 „ बाबूलाल वाली, उज्जैन
42 श्री बाबूलाल वैद्य, खुरई
43 श्री बाबू रामो जैन, उज्जैन
44 श्री विमलचन्द कटारिया, उज्जैन
45 „ विरधीलाल सेठी, जयपुर
46 „ भगतराम जैन, दिल्ली
47 „ भगवानदास जैन, गज बासौदा

83 श्री ललितकुमार जैन, उज्जैन
84 ,, वच विरण कुमार वैवग्ता, नउनगर
85 ,, स्वरूप चन्द जैन गडवाट, राणा
86 ,, सतनकुमार ग्नाडा, उज्जैन
87 ,, सागरमल कटारिया, उज्जैन
88 ,, सागर मल जैन, गज बासौदा
89 ,, सिद्धनाथ उपाध्याय, उज्जैन
90 ,, सुगन्धचन्द जैन, उज्जैन
91 ,, सुगन चन्द जैन, उज्जैन
92 ,, सरजमल गोधा, उज्जैन
93 ,, सुरेश जैन, उज्जैन
94 ,, सुरेशकाला, जयपुर
95 ,, सुरेश चन्द जैन, लखनादौन
96 ,, सुरेश चन्द जैन शास्त्री, दिल्ली
97 ,, सुकुमार चन्द जैन, नई दिल्ली
98 ,, शिवानन्द, सतना
99 ,, शिरोमणी चन्द जैन, इन्दौर
100 ,, हरक चन्द काला, भगतपुरा
101 ,, डा हरीराम चौबे, उज्जैन
102 ,, हुकम चन्द जैन, उज्जैन
103 , हीराचन्द वैद, जयपुर
104 ,, हीरालाल बोहरा, बजबज
105 ,, कमलकुमार जैन, छतरपुर
106 ,, कैलाशचंद चौधरी, इन्दौर
107 ,, शांतिलाल गंगवाल, जयपुर

(ड) कवियों ने

1 श्री अनूपचन्द न्यायतीर्थ, जयपुर
2 ,, अमृतलाल अमृत, उज्जैन
3 ,, डा० कस्तूरचद सुमन, श्रीमहावीरजी
4 ,, ताराचद प्रेमी, फिरका फिरोजपुर
5 ,, वैद्य पन्नालाल वैजनाथ नामदेव, उज्जैन
6 ,, माणिक चद नाहर, उज्जैन
7 ,, मोतीलाल सुराना, इन्दौर
8 ,, चमनलाल जैन सरस
9 ,, हजारी लाल जैन काका

(च) व्यापारियों ने

1 श्री अरविन्द कुमार गुप्ता, इन्दौर
2 ,, कान्तिलाल झालानी, उज्जैन
3 ,, केसरीमल झाला, कलकत्ता
4 ,, कृष्णदास मोढ, उज्जैन
5 ,, गोकुलदास वागडी, उज्जैन
6 ,, चादमल जैन, दुर्ग
7 ,, चन्द्रकात जैन सतना
8 ,, जयकुमार लिग्गा, उज्जैन
9 ,, जमनालाल चित्तौडा, उज्जैन
10 ,, दामोदर, उज्जैन
11 ,, ताराचद वडजात्या, बम्बई
12 ,, नथमल सेठी, कलकत्ता
13 ,, प्रेमनारायण गर्ग, उज्जैन
14 ,, फतेहमोहम्मद, उज्जैन
15 ,, वजरगलाल हरभजनका, उज्जन
16 ,, वालमुकुन्द अग्रवाल, उज्जैन
17 ,, मोहनलाल गगवाल, उज्जैन
18 ,, मुरलीधर गुप्ता, उज्जैन
19 ,, मेघराज कोठारी, उज्जैन
20 ,, महावीरप्रसाद रारा, गोहाडी
21 ,, रामचद गुप्ता, उज्जैन
22 ,, राजमल जैन प्रेसवाला, उज्जैन
23 ,, विमलचद शाह, वडनगर
24 ,, सोनापाल शरदकुमार जैन, नागपुर
25 ,, शातिलाल जैन, उज्जैन
26 ,, हरिशचद गुप्ता, जबलपुर
27 ,, हरिशचद जैन, जबलपुर
28 ,, हरवशसिह, उज्जैन
29 ,, हीरालाल सोगाणी, इन्दौर

स्वजनों ने

1 श्री प० चाद मल काला, जयपुर
2 ,, कैलाश चद शास्त्री, जयपुर
3 ,, सौभाग्य मल रावका, जयपुर
4 ,, फूलचद झाझरी, इन्दौर

5 ,, जेठमल काला गोहाटी
6 ,, पन्नालाल बोहरा, ग्वालियर
7 ,, तनसुख लाल काला, बम्बई
8 ,, मानकचन्द काला बम्बई
9 ,, वर्धमान कुमार काला, बम्बई
10 ,, केसर लाल काला बम्बई
11 ,, त्रिलोक चन्द सेठी, जयपुर
12 ,, सुशीलकुमार सेठी
13 ,, रजनीशकुमार सेठी
14 ,, सजयकुमार सेठी
15 ,, मनीष कुमार सेठी
16 ,, मती कनकप्रभा सोनी
17 ,, भरतकुमार काला
18 ,, मती शैल वाला काला
19 ,, मती ज्ञानेश्वरी देवी कटारिया
20 ,, मती शारदा देवी बोहरा
21 सुश्री अलका सोनी

9 विचार और चिन्तन

1 तीर्थंकर और उनकी शिक्षायें

2 दस लक्षण धर्म

3 जैन सन्त व विद्वान

4 जैन धर्म और दर्शन

5 संस्कृति और सभ्यता के केन्द्र : तीर्थ और मन्दिर

विविध

देश के महान् संत, राजनेताओं द्वारा भेजे आशीर्वाद, शुभकामनायें एवं सन्देश

आचार्यरत्न श्री १०८
श्री निमल सागरजी महाराज

सत्य की खाज के पद प्रदशक श्री प० सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनदन तथा अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह उज्जन मे किया जा रहा है—पढकर बडा हष हुआ कि ऐसे महान् विद्वान रत्न का सम्मान होना अति आवश्यक है। उसके लिए हमारी निमल आत्मा से हार्दिक शुभकामना से पूर्वक शुभ आशीर्वाद। आगे मानव जीवन बडे अहोभाग्य से प्राप्त हुआ है। इसमें अपना आत्मस्वरूप पहचानकर रत्नत्रय के सत मुक्ती पथ पर चलकर मानव जीवन की सार्थकता प्राप्त करना ही नररत्न की सार्थकता है—आपका पूरा परिवार धम निष्ठ होने के नाते धम निमल ज्ञान गगा बहा रहे है। ऐसी हमेशा निमल ज्ञान गगा बहती रहे। ऐसी शुभकामना के साथ आपको और आपके समस्त अभिनन्दन समिति के पदाधिकारी को शुभ आशीर्वाद।

❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖❖

परम पूज्य एलाचार्य
श्री १०८ मुनि विद्यानन्द जी महाराज

सेठी जी द्वारा की गई धर्मसेवा तथा समाज सेवा अभूत-पूर्व है तथा स्वर्ण अक्षरों में लिखने जैसी है।

ूज्य माताजी
१०५ ज्ञानमती जी

आपने अपना जीवन साहित्य और समाज की सेवा मे व्यतीत किया है, अब अपने जीवन का शेष भाग देव, शास्त्र, गुरु की भक्ति करते हुए अपने लक्ष्य की सिद्धि करें और अपनी आत्माराधना में निरन्तर प्रयत्नशील रहे। यही मेरा शुभ आशीर्वाद है।

र्म दिवाकर १०८
ुल्लकरत्न
्ध सागर जी महाराज
इन् वाला

(1) श्रीमान् प० रत्न सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन ग्रन्थ के विषय मे जानकारी मिली, यह कार्य धार्मिक-जनो के लिए आनन्द का विषय है।

(2) यथार्थ मे प० जी का जीवन जैन साहित्य के सृजन एवं धार्मिक कार्यो मे व्यतीत हुआ है, आदर्श जन जीवन को प्रकाशित करेगा।

(3) महापुरुषो का कथन है कि विद्वान का आदर जिनवाणी का आदर माना जायेगा।

(4) मेरा पण्डित जी के लिए शुभाशीर्वाद है कि वे अपनी आत्मविभूति को प्राप्त करने हेतु उत्तरोत्तर आगे बढ़े और अपनी ज्ञान गरिमा से धर्म को उद्योत करें।

(5) इस प्रकार शुभ कामना के साथ मे श्रीमान् प० सत्यधर कुमार जी के स्वास्थ्य एवं आत्महित के लिए शुभाशीर्वाद प्रेषित करता हू।

क्षु. १०५ श्री सूर्यसागर जी महाराज

हमारा उनका मिशनसारी जीवन बीत रहा है। उनका हमारा बहुत पहले से ही मेल-मिलाप रहा है। हमसे हर हालत मे बडे हैं। मैं ब्रह्मचारी पर्याय मे उज्जन कई बार गया था, तब ही से उनका प्रेम परिचय रहा है। आप मुनि भक्त धर्मात्मा प्रेमी है। धर्म प्रभावना मे अग्रसर रहते हैं। तीर्थ क्षेत्र प्रेमी-तीर्थ क्षेत्रो की देख-रेख मे लगन रहती है। समय-समय पर धर्म प्रभावन करने मे प्रेरणा दें, मैं यही आशा करता हू कि दिन-दूने रात चौगुने धर्म प्रभाव करते रहे। भविष्य आपका चौगुना धर्म प्रभावन बनता रहे। आप एक धर्मर्मूति है, आपकी जन समाज की धर्मरूप प्रतिष्ठा बढती चली आ रही है और आगे भी बढ़ती रहेगी।

श्रीयुत डा भगवतदयालजी शर्मा
राज्यपाल-मध्यप्रदेश
भोपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता है कि १० सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन 25 दिसम्बर 1983 को किया जा रहा है। सेठी जी ने सामाजिक कुरीतियो को दूर करने तथा नैतिक और सास्कृतिक मूल्यो की पुन स्थापना मे उल्लेखनीय योग दिया। उनका जीवन त्याग से पूर्ण रहा है। आपका जीवन नयी पीढी के लिए प्रेरणा स्रोत के समान है। ईश्वर से प्रार्थना है कि वह सेठी जी को दीर्घायु प्रदान करें जिससे उनकी महान् सेवाओ का लाभ पूरे समाज को लम्बे समय तक मिलता रहे। अभिनन्दन समारोह की सफलता के लिए कामना करता हू ।

श्रीयुत अनन्त प्रसादजी शर्मा
राज्यपाल–पश्चिमी बगाल
कलकत्ता

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि प सत्यधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति की ओर से उज्जन मे पडित सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन तथा अभिनन्दन ग्रथ समर्पण का आयोजन दिनाक 25 दिसम्बर 1983 को किया जा रहा है।

मै आयोजन के सफलता की कामना करता हू।

श्रीयुत प्रकाश चन्द्र जी सेठी
गृहमत्री–भारत
नई दिल्ली

I am glad to know that Pandit Satyandhar Kumar Ji Sethi is being Felicitated at Ujjain on December 25, 1983, by the felicitation committee formed for this Purpose It is a highly rewarding and ennobling tradition to honour those who have given their best in the Service of the community

I send my greetings to the felicitation committee and good wishes for the success of the Programme I also pray to God to grant Pandit Satyandhar Kumar Ji good health and a long life in the Service of the people

श्रीयुत विश्वनाथ प्रतापसिंह जी
वित्त मंत्री–भारत
नई दिल्ली

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि प० सत्यंधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति अभिनन्दन ग्रन्थ समपण समारोह के अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित करने जा रही है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन एव समारोह के सफल आयोजन हेतु मेरी हार्दिक शुभ कामनायें है।

श्रीयुत शंकरराव चव्हाण
योजना तथा उपाध्यक्ष योजना
शासन भारत
नई दिल्ली

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि उज्जैन मे 25 दिसम्बर 1983 को प० सत्यंधर कुमार जी सेठी के सम्मान म एक अभिनन्दन समारोह का आयोजन किया जा रहा है और इस अवसर पर अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

जिस निष्ठा और समपण की भावना से श्री सेठी जी ने अपना सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र, समाज देश, अपग, असहाय व अनाथो की सेवा मे लगाया है वह वास्तव में सराहनीय और अनुकरणीय है। यह उचित ही है कि ऐसे व्यक्तित्व के सम्मान मे अखिल भारतीय स्तर पर एक अभिनन्दन-समारोह के आयोजन के साथ-साथ एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी प्रकाशित किया जा रहा है।

उपयु क्त समारोह और अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता के लिए मैं अपनी हार्दिक शुभ कामनायें भेजता हू ।

श्रीयुत माधवसिंहजी सोलंकी
मुख्यमंत्री-गुजरात
गांधीनगर

मुझे यह जानकर बड़ी प्रसन्नता हुई कि प० सत्यधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समारोह उज्जैन में दिनांक 25 दिसम्बर 1983 को सम्पन्न हो रहा है तथा इस अवसर पर उनको अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित करने का भी आयोजन किया गया है।

मुझे आशा है कि यह अभिनन्दन समारोह श्री सत्यधर कुमार सेठी के उच्च जीवनादर्शों तथा राष्ट्र एवं समाज के प्रति समर्पित उनकी अन्य सेवाओं से लोगों को पूर्णरूप से अवगत कराने तथा उनके अनुकूल कार्य करने के लिये प्रेरणा प्रदान करने में अत्यधिक उपयोगी सिद्ध होगा।

इस अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह की मैं हार्दिक सफलता चाहता हूं।

श्रीयुत वीरभद्र सिंहजी
मुख्यमंत्री-हिमाचल प्रदेश
शिमला

❖卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐卐❖

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि प्रसिद्ध समाज-सेवी प० सत्यधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन हेतु 25 दिसम्बर, 1983 को उज्जैन में एक समारोह आयोजित किया जा रहा है जिसमें उन्हें अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पित किया जायेगा। ऐसे व्यक्ति के सम्मान हेतु प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ जन मानस में समाज सेवा के लिए निश्चय ही प्रेरणा जगायेगा तथा स्फूर्ति पैदा करेगा। ऐच्छिक संगठनों तथा स्वेच्छा से समाज सेवा के धर्म को अपनाकर काम करने वाले व्यक्तियों से हमारे देश में सामाजिक कल्याण के कार्यों में महत्वपूर्ण योगदान प्राप्त होता आया है।

मैं समारोह की सफलता के लिए अपनी हार्दिक शुभ-कामनायें भेजता हूं।

—

श्रीयुत डा फारूक अब्दुल्लाह
मुख्यमंत्री-जम्मू एव कश्मीर
श्रीनगर
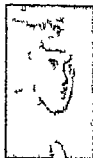
मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आपके द्वारा श्री पं० सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन ग्रन्थ सर्म्पण समारोह का विशाल आयोजन किया है। ऐसे तपस्वी के अभिनन्दन समारोह मे भाग लेकर मै पूर्ण आनन्द अनुभव करता, परन्तु बहुकार्यवश इस पुनीत काय मे उपस्थित नहीं हो सकता हू।

काय की सफलता के लिए मै मगल कामना करता हूँ।

ीयुत अशोक गहलोत
मन्त्री-पयटन एव नागर विमानन
ालय-भारत
ई दिल्ली

मुझे खुशी है कि प० सत्यधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन हेतु 25 दिसम्बर 1983 को विशाल समारोह का आयोजन कर समिति द्वारा प्रकाशित अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट करने का निश्चय किया गया है।

मानव मूल्यो की स्थापना एव समाज के सभी वर्गो की सेवा म अपना सम्पूर्ण जीवन अपित करते हुए जो काय किया वह सर्व विदित है। आशा है उनके आदर्शो एव उच्च जीवन चरित्र पर आधारित प्रेरक सामग्री पाठको को उपलब्ध होगी ताकि वे उन्ही से शिक्षा प्राप्त कर समाज की सेवा कर सकेंगे।

समारोह की पूर्ण रूपेण सफलता हेतु मेरी हार्दिक मगल कामनाओ सहित।

श्रीयुत शिवभानु सोलंकी
उप मुख्यमंत्री-मध्य प्रदेश
भोपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी का उनके हीरक वर्ष में 25 दिसम्बर 1983 को उज्जैन में अखिल भारतीय स्तर पर अभिनन्दन किया जा रहा है। इस अवसर पर उन्हें एक अभिनन्दन ग्रंथ भी भेंट किया जायगा।

बहुमुखी प्रतिभा के धनी पण्डित जी का जीवन समाज, राष्ट्र, धर्म और असहायों के लिए समर्पित रहा है। ऐसे उज्ज्वल व्यक्तित्व और प्रेरक कृतित्व का अभिनन्दन निःसंदेह वर्तमान भ्रमित भौतिक ऊहापोह में एक स्तुत्य मार्गदर्शक प्रसंग है।

मैं आयोजन की सफलता की कामना करता हूं।

श्रीमान मोतीलाल वोरा
मंत्री-उच्च शिक्षा
भोपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप विद्वान प्रवर सत्यंधर कुमार सेठी जी के समर्पित सेवा-भाव और साहित्यिक कृतित्व के प्रति उनका अभिनन्दन करने जा रहे हैं। सेठी जी ने अपने कर्मठ जीवन में समाज सुधार हिन्दू-मुस्लिम एकता, सर्वोदय रचनात्मक कार्य तथा हरिजन उत्थान के कार्यों में जो गहरी दिलचस्पी ली वह सचमुच अनुकरणीय एवं श्लाघनीय है। कृपया पं० सत्यंधर कुमार सेठी सरीखे व्यक्तित्व का 25 दिसम्बर 1983 में अभिनंदन कर उन्हें अभिनंदन ग्रंथ समर्पित करने के संकल्प पर साधुवाद स्वीकार करें।

मुझे आशा है कि अभिनन्दन ग्रंथ सेठी जी के जीवन और कृतित्व की एक विश्वसनीय झांकी प्रस्तुत करने में सफल होगा। मेरी शुभकामनायें आपके साथ हैं।

श्रीयुत हाजी इनायत मोहम्मद
मंत्री—खेल, वक्फ एवं उर्दू अकादमी,
मध्यप्रदेश
भोपाल

अत्यन्त प्रसन्नता की बात है कि पं० सत्यधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर दिनांक 25–12–83 को उज्जैन के अभिनन्दन तथा ग्रन्थ समर्पण समारोह का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर प्रकाशित होने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ के सफल प्रकाशन तथा समारोह की पूर्ण सफलता के लिए मैं अपनी शुभ कामनायें तथा दुआएं पेश करता हूं।

श्रीयुत अजय मुशरान
मंत्री—वन, खेल एवं युवक कल्याण
मध्यप्रदेश
भोपाल

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी का अखिल भारतीय स्तर पर दिनाक 25-12-1983 को उज्जैन में अभिनन्दन किया जा रहा है तथा अभिनदन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। राष्ट्र एवं समाज को समर्पित ऐसे मनस्वी व्यक्तित्व का सम्मान सराहनीय है।

इस अवसर पर मेरी हार्दिक शुभ-कामनायें।

श्रीयुत विजयकुमार पाटनी
राज्यमंत्री–ऊर्जा, नर्मदाघाटी विकास
मध्यप्रदेश
भोपाल

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी जिनका सम्पूर्ण जीवन देश समाज एवं असहायों की सेवा एवं उन्नति में लगा है, का अभिनन्दन समारोह आयोजित करने जा रहे हैं। आपका यह आयोजन निःसन्देह सराहनीय है।

ईश्वर से प्रार्थना है कि आपके द्वारा आयोजित यह समारोह सफल हो एवं पण्डित जी शतायु हों।

शुभ कामनाओं सहित—

श्रीयुत चन्द्रकुमार भनोत
राज्यमंत्री–आवास, पर्यावरण एवं
स्थानीय शासन
मध्यप्रदेश
भोपाल

मुझे पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति के उज्जैन में 25 दिसम्बर को आयोजित किये जा रहे कार्यक्रम की जानकारी पाकर प्रसन्नता हुई। अपना सम्पूर्ण जीवन समाज, देश, अपंग, असहाय और अनाथों को समर्पित व्यक्तित्व का सम्मान कर हम केवल उनके प्रति कृतज्ञता ज्ञापित कर सकते हैं।

मैं आशा करता हूं कि इस अवसर पर प्रकाशित किये जा रहे अभिनन्दन ग्रंथ से समाज विशेषकर नवयुवक प्रेरणा प्राप्त करेंगे।

मैं इस अवसर पर अपनी शुभकामना प्रेषित करता हूं।

श्रीयुत सत्यनारायण अग्रवाल
राज्यमंत्री—वाणिज्य एवं उद्योग, खनिज
साधन
मध्यप्रदेश
भोपाल

यह प्रसन्नता का विषय है कि पण्डित सत्यंधर कुमार सेठी जी के हीरक महोत्सव के शुभ अवसर पर अभिनन्दन समिति द्वारा उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जा रहा है।

श्री सेठी जी का समाज के क्षेत्र मे अविस्मरणीय योगदान रहा है। ऐसे तपस्वी व्यक्तित्व का सम्मान सेवा भाव का सम्मान है। मुझे विश्वास है कि अभिनन्दन ग्रन्थ मे प्रकाशित सामग्री हमारी युवा पीढी का मार्गदर्शन करेगी और सेवा कार्यों के लिये उत्प्रेरित करेगी।

आयोजन तथा अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता के लिये मेरी ओर से शुभ कामनाये स्वीकार करें।

● ● ●

श्रीयुत हरिहर प्रसाद शर्मा
राज्यमंत्री—धार्मिक न्यास एवं धर्मस्व
तथा शिक्षा (मालय)
मध्यप्रदेश
भोपाल

पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन का समाचार निश्चय ही प्रसन्नतादायक है। सेवा मानव जीवन की सर्वश्रेष्ठ कसौटी है और इस कसौटी पर सेठी जी व्यक्तित्व कंचन सम प्रतीत होता है। यह और भी प्रसन्नता की बात है कि इस अवसर पर आप एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे है जो न केवल पण्डित सेठी के व्यक्तित्व के असाधारण गुणो को ही प्रकट करेगा वरन् सामाजिक क्षेत्र मे कर्तव्यरत अनेक समाज सेवको को निस्पृह जीवन-यापन की प्रेरणा देगा।

आयोजन की सफलता के लिये मेरी हार्दिक शुभकामनाये।

श्रीयुत महेश जोशी
राज्यमंत्री-वन
मध्यप्रदेश
भोपाल

तप पूत पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन दिनांक 25 दिसम्बर 1983 को प्रसिद्ध ऐतिहासिक एवं धार्मिक नगरी उज्जैन में सम्पन्न होने जा रहा है, जानकर प्रसन्नता हुई।

श्री सेठी जी का सम्पूर्ण जीवन समाज के कमजोर, अपंग एवं असहायों की सेवा के प्रति समर्पित रहा है।

यदि यह कहा जाय कि पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी स्वयं में संस्था हैं और राष्ट्र के प्रति की गई आपकी सेवायें बेमिसाल हैं, जिसके लिये मालवा भूमि आपको चिर ऋणी रहेगी।

आयोजन एवं अभिनन्दन ग्रन्थ हेतु शुभ-कामनायें।

सुश्री गंगा पोटाई
राज्यमंत्री
आदिम जाति कल्याण
मध्यप्रदेश
भोपाल

यह जानकर प्रसन्नता हुई कि 25 दिसम्बर को उज्जैन में पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी अभिनन्दन समिति जयपुर द्वारा अखिल भारतीय स्तर पर प्रमुख समाजसेवी श्री सेठी का अभिनन्दन किया जा रहा है।

एक ऐसे व्यक्ति का जिसका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र, समाज तथा अनाथों, असहायों की सेवा में समर्पित रहा है, अभिनन्दन निश्चय ही सराहनीय कार्य है। इस कदम से समाज स्वयं को ही गौरवान्वित करेगा, ऐसा मेरा मत है।

अभिनन्दन ग्रन्थ के लिये हार्दिक शुभ-कामनायें।

चित्रावली

प सत्यधर कुमारजी सेठी, उनके परिवार तथा अनेक समारोह, अवसरों पर
लिए गए उपलब्ध चित्र

प सत्यधर कुमार जी सेठी

श्रीमती जोधाबाई सेठी
माताश्री सेठीजी

बड़े भाई श्री सू जालालजी सेठी
तथा उनकी धर्मपत्नी

सेठीजी के पौत्र एव पौत्रियाँ

युवा अवस्था मे श्री सेठी जी

श्री सेठीजी अपनी धर्मपत्नी श्रीमती [illegible] के साथ

सेठीजी के पुत्र व पुत्र वधू

श्री सुशील कुमार सेठी
सबसे बड़े पुत्र

श्रीमती रविका ता सेठी
सबसे बड़ी पुत्र वधू

श्री रजनीश कुमार सेठी
द्वितीय पुत्र

श्री सजय कुमार सेठी
तृतीय लघु पुत्र

श्री भरतकुमारजी काला, बम्बई

श्रीमती शल बालाजी
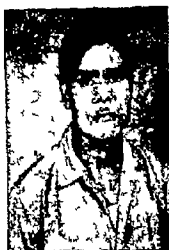
श्री महावीरजी कटारिया, चाँदखेड़ी

श्रीमती विद्युतप्रभाजी

श्री सुरेन्द्रकुमारजी बोहरा, करौली

श्रीमती शारदा देवीजी

सेठी वंश-वृक्ष

उज्जैन में अपने निवास स्थान पर
खड़े श्री सेठीजी

परम पूज्य १०८ श्री एलाचार्य मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के
चरणों में, महत्त्वपूर्ण चर्चा करते हुए श्री [illegible]

भगवान महावीर २५०० वा निर्वाण महोत्सव के समापन समारोह पर विशाल जनसमूह को सम्बोधित करते हुए। श्री सेठी, बीच मे बठे हैं। मुसलमान समाज के धम गुरु शहरकाजी, भारत के गृहमंत्री श्रीमान् प्रकाशचन्दजी सेठी, सुप्रसिद्ध उद्योगपति माननीय भूपेन्द्रकुमारजी सेठी, श्री ललितकुमारजी जन, पत्रकार श्री प्रकाशजी जन आदि।

उज्जन मे धमचक्र का स्वागत करते हुये श्री सेठीजी।

धमचक्र प्रवेश के समय सव धर्मो के प्रतिनिधिया के बीच जन समुदाय को सम्बोधित करते हुए श्री सेठीजी।

उज्जन मे एलाचार्य विद्यानन्दजी के प्रथम आगमन पर विशाल जन समूह के बीच अभिनन्दन भाषण करते हुए।

परम पूज्य एलाचाय श्री १०८ मुनि विद्यानन्दजी का उज्जन प्रवेश अन्य साधु सन्त के साथ। सेठीजी अहम भूमिका निभाते हुये।

उज्जन प्रवेश पर एलाचाय श्री १०८ मुनि विद्यानन्दजी के साथ श्री सेठीजी।

श्री वाहुवली कु भोज काण्ड पर जिलाधीश का नापन दत हनु श्री मठीजी

स्नेह सम्मेलन का उद्‌घाटन दीप प्रज्ज्वलित करते हुए श्री सेठीजी–पास खड़े संस्था के महामंत्री श्री ललितकुमारजी जन

स्नेह सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए श्री सेठीजी

भारत के गृहमन्त्री श्री प्रकाशचन्दजी सेठी
का स्वागत करते हुये श्री सेठीजी

उज्जन के सुप्रसिद्ध अभिभाषक
श्री चादमलजी मेहता
का
स्वागत करत हुए-श्री सेठीजी

मध्यप्रदेश के उद्योग मन्त्री
डा० राजेन्द्रकुमारजी जन श्री सेठीजी को
प्रणाम करते हुये और वे उनका
स्वागत करते हुए।

उज्जन मे महावीर जयन्ती पर राजस्थान के
स्वास्थ्य मन्त्री माननीय श्री त्रिलोकचन्दजी जन
का स्वागत करते हुए-श्री सेठीजी।

मुख्य मन्त्री मध्यप्रदेश श्रीमान् अर्जुनसिंहजी
को विक्रम विश्वविद्यालय में जैन चेयर
स्थापित करने सम्बन्ध में ज्ञापन देते हुये।
साथ खड़े तत्कालीन कुलपति
डा० शिवमंगलसिंह सुमन।

हिंसा विरोध समिति उज्जैन द्वारा २३ मार्च ८२
को दिल्ली में लोकसभा अध्यक्ष श्री बलरामजी
जाखड़ को याचिका प्रस्तुत करते श्री राजमलजी
प्रेसवाले। साथ खड़े हैं—श्री सेठी व
आनन्दीलालजी आदि।

मालवा प्रान्तीय दि० जैन सभा बड़नगर
के अमृत महोत्सव के अवसर पर
आयोजित निःशुल्क रोग परीक्षण
में दातारों से चर्चा करते हुये।
श्री सेठी जी।

अखिल भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन मे सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नारायण देसाई व उद्‌घाटन-कर्त्ता श्री भवानी प्रसाद मिश्र के साथ श्री प० सत्यधर कुमारजी सेठी।

अखिल भारत सर्वोदय सम्मेलन के स्वागत महामन्त्री श्री रामविलासजी पोरवाल श्री सेठीजी के बिल्ला लगाते हुए—साथ मे बठे हुए मध्य प्रदेश के माने हुए सत श्री मानव मुनि।

सर्वोदय समाज सम्मेलन के अध्यक्ष श्री नारायण देसाई का स्वागत करते हुए श्री सेठीजी

अखिल भारत सर्वोदय समाज सम्मेलन मे स्वागत भाषण देते हुए श्री सेठीजी—स्वागताध्यक्ष पद से मच पर बठ है श्री नारायण देसाई, श्री भवानी प्रसाद मिश्र, मानव मुनि आदि सर्वोदय नेतागण।

उज्जन के विद्वत् सम्मेलन का एक दृश्य
मध्यप्रदेश मे आवास मन्त्री श्री चन्द्रप्रभा शेखर
सम्बोधित करते हुए। मच पर बैठे हैं श्री सेठीजी आदि
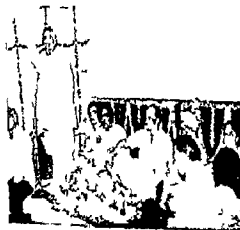
मध्यप्रदेश शासन के वाणिज्य मन्त्री
डा० राजेन्द्रकुमारजी जैन का विशाल जन समूह के बीच
स्वागत करते हुए—श्री सेठीजी

श्री सेठी वम्बई मे विद्वत् गोष्ठी मे सम्मानित। साथ मे खडे है माननीय साहू श्रयासप्रसादजी व श्रीमान् चादमलजी मेहता मत्री–श्रीशातिसागर ट्रस्ट वम्बई।

नादगाव महाराष्ट्र मे एक विशाल समारोह मे श्री सेठीजी, साथ मे है पूज्य भट्टारकजी महाराज कोल्हापुर महापडित वनसुखलालजी काला और अ० भा० दि० जन महा सभा के सभा पति श्री निमलकुमारजी सेठी आदि।

नादगाव मे श्री मतिसागर दि० जन सरस्वती भवन क उद घाटन के अवसर श्री सेठी साहब विशाल जन समदाय को सबोधित करते हुये।
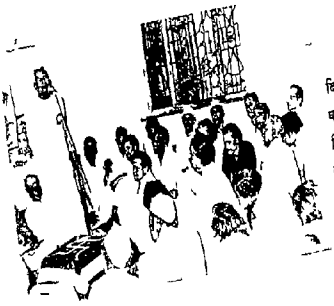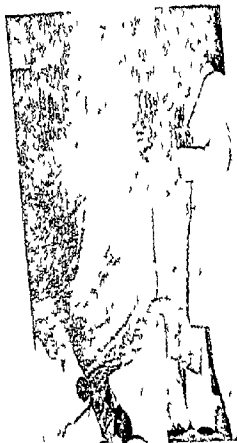
खातेगांव पञ्चकल्याण महोत्सव पर आयोजित भा० प्रा० दि० जैन सभा बडनगर के अमृत महोत्सव पर श्री सेठीजी के सार्वजनिक अभिनन्दन पर शाल ओढाते हुए श्रीमान् सेठ फूलचन्दजी पुड अध्यक्ष, पास मे खडे है महामन्त्री श्री कैलाशचन्दजी चौधरी, इन्दौर तथा बैठे हुए है श्रीमान् जुगमदर लालजी जैन, खण्डवा।

ज्ञानपीठ द्वारा आयोजित अ.भा दि जैन विद्वत् गोष्ठी बम्बई मे स्वागत के बाद श्री सेठीजी, साथ मे खडे हैं-माननीय साहू साहब श्रेयासप्रसादजी जैन व श्रीमान् चाँदमलजी मेहता बम्बई।

आध्यात्मिक संत पूज्य श्रीकानजी स्वामी के साथ सोनगढ़ मे श्री सेठीजी, पास मे खडे है प्रसिद्ध उद्योगपति सेठ लालचन्दजी सेठी, पं. अनन्तरामजी आयुर्वेदाचार्य, श्रीरामजीभाई, सेठ मोहनलालजी अग्रवाल आदि।

अखिल विश्व जैन मिशन अधिवेशन खालेगांव प्रतिष्ठा महोत्सव के समय श्री सेठीजी
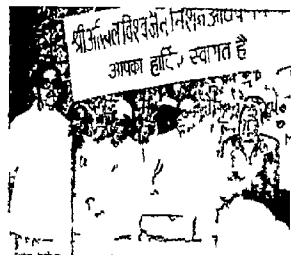
अखिल दिगम्बर जैन परिषद के अधिवेशन, ग्वालियरमे प्रदर्शनी का अवलोकन करते हुये श्रीसेठीजी साथ मे खडे परिषद के अध्यक्ष— माननीय सेठ डालचन्दजी जैन सागर वाले।

सेठीजी का नांदगांव महाराष्ट्र में हुये स्वागत का एक दृश्य
पास में खड़े हैं अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के अध्यक्ष
माननीय निर्मलकुमारजी सेठी आदि
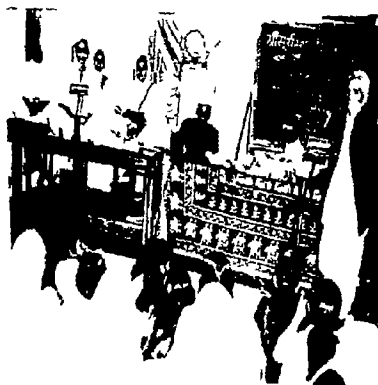
श्री सुगनचन्द [illegible] माध्यमिक विद्यालय सभागार में श्री सेठीजी
एक धार्मिक पर्व पर सम्बोधित करते हुये

प० सत्यंधरकुमार सेठी का सार्वजनिक अभिनन्दन समारोह

श्री सेठीजी द्वारा आभार प्रकट

सुप्रसिद्ध उद्योगपति श्रीमान् सेठ भूपेन्द्रकुमारजी सेठी
अपने विचार प्रकट करते हुये।

सुप्रसिद्ध उद्योगपति माननीय श्री तेजकुमारजी सेठी
विचार प्रकट करते हुये, पास मे है–जिलाध्यक्ष
श्री विष्णुप्रतापसिंहजी, डा शिवमंगलसिंह सुमन
श्री ललित जैन श्री रमेशचन्द्र कासलीवाल व
डा हरीन्द्र भूषण

उज्जन के सार्वजनिक अभिनन्दन मे नगर के सुप्रसिद्ध सामाजिक कार्यकर्ता श्री ललितकुमारजी जैन, श्री सेठीजी के चरणस्पर्श करते हुए। पास मे खडे हैं–डा शिवमगलसिहजी "सुमन"।

भारत के सुप्रसिद्ध विद्वान, साहित्यकार व विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डा० शिवमगलसिह "सुमन" उज्जन मे श्री सेठीजी को मानपत्र भेट करते हुए। पास मे खडे हुए है श्री दि० जैन नवयुवक मडल के अध्यक्ष श्री रमेशचन्दजी कासलीवाल।

अखिल भारतवर्षीय स्तर पर श्री सेठीजी के अभिनन्दन समारोह के सयोजक श्री नेमीचन्द काला उनके ७४ व जन्म दिवस पर माल्यापण कर आशीर्वाद लेते हुए।

थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति उज्जैन के निर्वाचन मे विजयी होने पर—
निर्वाचन अधिकारी श्री त्रिवेदी के साथ श्री सेठीजी

गुमाश्ता मण्डल के वार्षिक अधिवेशन मे सबोधित करते हुए—
श्री सेठीजी

एक करोड रुपये की वस्त्र थोक मार्केट निर्माण स्थल पर वृक्षारोपण करते हुए श्री सेठीजी। साथ मे खडे उज्जन के जिलाधीश श्री आर सी सक्सेना व अन्य गणमान्य महानुभाव।

वृक्षारोपण के बाद श्री सेठीजी अपने विचा प्रकट करते। हुए बैठे हुए है जिलाधीश आर सी सक्सेना, नगर निगम के प्रशासक माननीय एन वी पटवर्द्धन तथा विनोद मिल के मालिक।

मालवा प्रान्तीय दि० जन सम्मानित छात्रावास क उद्‌घाटन के समय सयाजक के रूप मे श्री सेठीजी उद्‌घाटन भाषण देते श्रीमान् सेठ हीरालालजी कासलीवाल, इन्दौर।

थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति के निर्वाचन पर निर्वाचित होने के अवसर पर व्यापारियो को सम्बोधित करत हुये सेठीजी।

श्री सूयसागर दि० जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उज्जैन के विभिन्न पदाधिकारियो द्वारा श्री सेठीजी का स्वागत।

प सत्यधर कुमारजी सेठी
विभिन्न मुद्राओं मे

व्यक्तित्व

एव

कृतित्व

प सत्यधर कुमार जी सेठी से उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व को विस्तृत जानकारी के लिए लिया गया साक्षात्कार—सम्पादक द्वारा

पं० सेठी साहब से साक्षात्कार

देश म प्रतिदिन किसी न किसी राजनेता, उद्योगपति, समाज सेवी, विद्वान आदि का सम्मान विभिन्न रूपो म आयोजित होते रहत है – इमम कितने इसके पात्र है, कितने नही, यह विचारणीय विषय नही है सभी अपने अपने विवेक से सभी का सम्मान करते है।

म वचपन से इस विचार को अपने दिमाग मे रखता आया हू – जो नि स्वार्थ भावना से प्रेरित हो अपना समय समाज के लिये देते है। जिस समय मे वे अन्य आवश्यक काम कर धन दौलत कमा सकते है, भ्रमण कर सकते है पर समाज के हित मे वे अपने स्वार्थों को त्याग कर काम करते है जगह जाकर अलख जगाते है, प्रवचन देते है, लेख विचारा, समीक्षाओ द्वारा अपने विचार प्रगट करते है, रूढियो के विरुद्ध आवाज उठाते है, विरोध की चिन्ता किये विना काय करते रहते है। ऐसे व्यक्ति के जीवन मे वह दिन भी अवश्य आना चाहिये कि समाज उनके किये कामो के प्रति अपनी कृतज्ञता प्रकट कर सके।

मैं स्वय समाज मे जो कुछ करना चाहता हू वह अभी कर नही पाया, अनेक कारणो से, फिर भी काम करने वालो के प्रति अपनी श्रद्धा एव भक्ति से प्रेरित होकर मेरे पूज्य प्रात स्मरणीय स्वनामधन्य प चनसुखदास जी के परम शिष्य प सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जैन निवासी की सेवाओ एव काय के प्रति कृतज्ञता प्रकट हेतु अनेक वार उनसे मिला और अपने मन की इच्छा प्रकट की, किन्तु कई वार जाने व मिलन के वाद भी सफलता नही मिली। वे सदा यही कहते रहे, यह काम तुम्हे किसी राजनेता या उद्योगपति का करना चाहिये ताकि तुम्हे उसका लाभ हो सके मेरे जैसे कार्यकर्ता का करने से तुम्हे भुलना पडेगा, लाभ भी नही होगा। अनको विचार-विवाद के पश्चात् दो वष की लगन, मनन एव चिन्तन के पश्चात् जनवरी 83 म श्री सेठी जी को मैने इस कार्य हेतु राजी कर लिया।

यह अभिनन्दन तया अभिनन्दन ग्र थ समपण योजना करके मैने श्री सेठी जी के प्रति कुछ भी नही किया है सिफ अपने मन के उन विचारो के मूतरूप देने की कडी मे एक ओर कदम वढाया है जिससे समाज के लिये जिन्होंने कोई भी नई दिशा, चिन्तन, मनन विना किसी नि स्वार्थ के कर रहे है, का सम्मान कर उनके प्रति श्रद्धा एव भक्ति का परिचय दिया जा सके। यह काय कहा तक समाज मे काम करने वालो लोगो के लिये दीपशिखा हो सकेगा—यह विचारणीय विषय मैं समाज के प्रवुद्ध लोगो के लिये छोड रहा हू।

सेठी जी के स्वीकृत के पश्चात् एक बार उनसे साक्षात्कार लेने हेतु म उनकी सेवा म उपस्थित हुआ, उनसे हुए साक्षात्कार को आपकी सेवा म प्रस्तुत कर रहा हू –

प्रश्न – आपका अभिनन्दन किया जा रहा है यह विचार आपको कैसा लग रहा है?

उत्तर – मैंने कभी नहीं सोचा मेरा अभिनन्दन या अभिनन्दन ग्रथ निकाला जायगा, प्रदर्शन करने का मै प्रारम्भ से ही विरोधी रहा हू मैं बड़े-बड़े आयोजन बिना प्रदर्शन के ही किये हैं। कई समारोह म कई उपाधियो व सम्मानो से मुझे लोगो ने सम्मानित किया है किन्तु मैंने उनका उपयोग नहीं किया। लोग मुझे पडित लगा कर कहते व लिखते है पर मैं कोई पण्डित नहीं हू, मैं तो सिर्फ कार्य करता हू, काम मे ही मेरा विश्वास है। सच बात तो यह है कि यह करके अपने मेरे काम करने की गति को कुछ रोक दिया है।

प्रश्न – आप धर्म और समाज को क्या एक समझते है?

उत्तर – धर्म और समाज मे भेद है ही नहीं, धर्म तो जीवन को ऊँचा उठाता है उनकी शिक्षायें मानव के जीवन का मार्जन करती है। समाज एक सगठन का नाम है। जिसम बुराइयाँ और भलाईयाँ बराबर रहती है। जैन भाषा मे इन्ही का नाम पुण्य व पाप है। इन दोनो से ही मुक्त कराने के लिये समाजो व राष्ट्रो मे महामानव के रूप म तीर्थंकरो का उदय होता है।

प्रश्न – क्या आप तीर्थंकरो को महापुरुष के रूप में मानते है?

उत्तर – तीर्थंकर अपना समस्त जीवन राष्ट्र के समस्त प्राणियो के उत्थान व विकास के लिए अर्पित करते है। जैन धर्म की समस्त शिक्षायें मानव व प्राणी के विकास के लिये हैं। मैं अपने विचारो म भगवान महावीर को राष्ट्रीय महापुरुष के रूप मे मानता हू उन्होंने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकात जैसे महान् सिद्धान्तो का प्रचार सिर्फ राष्ट्र को जीवित रखने हेतु ही किया, यदि महावीर अहिंसा पर बल नही देते तो राष्ट्र जीवित नही रहा सकता था। वे जानते थे अहिंसा से ही मानवता का सरक्षण हो सकता है। पारस्परिक प्रेम, सह अस्तित्व की भावनायें, राष्ट्र म एक दूसरे के समभाव की भावनायें अहिंसा के बल पर ही जीवित रह सकती है। महावीर ने अपरिग्रह पर बल दिया क्योंकि जिस राष्ट्र म शोषण चलता है वह ऊचा नही उठ सकता। इसके लिये शोषणहीन जीवन अनिवार्य है और इन्ही के साथ अनेकात विचारधारा दी। क्योकि राष्ट्र मे रहने वाले प्राणियो के विचारो म सामजस्य भी आवश्यक है।

प्रश्न – क्या आप तीर्थंकर की शिक्षाओ से राष्ट्र की समस्याओं का समाधान समझते है?

उत्तर – तीर्थंकर कहे या महापुरुष उनके सिद्धान्त राष्ट्र म प्रान्त गतभेद, भाषा गतभेद समाज-गतभेद, धर्मगतभेद, वर्णगतभेद को जन्म नहीं देते। महावीर ने तो इन सब बातो पर गहरा प्रहार किया है। अग्नि, रस आदि के परित्याग की बात कही, पानी की एक बूँद का व्यय करने का पाप कहा, वनस्पति के विदारण को पाप बताया था, उन्होंने इसे राष्ट्र की सपत्ति माना वे सबको सयम म बाधकर रखना चाहते थे।

प्रश्न – क्या अब अपने परिवार के बारे मे कुछ बतायेंगें ?

उत्तर – मेरा जन्म आश्विन शुकला 10 सवत् 1967 को जयपुर राज्य के अन्तगत सामर तहसील के पास भादवा नाम गाँव मे हुआ था। यह एक छोटा सा कस्बा है। मेरे पूज्य पिताजी का नाम फतेहलाल जी सेठी थी और माता जी का नाम जोधाबाई। मेरे पूज्य पिताजी पाच भाई थे और इनके एक चचेरा भाई थे। दादा साहब का नाम धनालाल जी था इसके पिताजी का नाम हुकमचन्द जी थे। श्री धनालाल के पाच पुत्र थे। धुनीलाल जी, सूरजमल जी लिखमीचन्द जी, लालचन्द जी और फतेहलाल जी। पाचो के कट्टर धार्मिक थे। तेरहपंथ विचारधारा थी, स्वर्गीय पडित टोडरमल जी के अनुयायी थे। इन भाइयो म पूर्ण से गठन था। गाव म प्रमुख माने जाते थे। नीति म निपुर्ण थे, गरीबो के प्रति हमदर्दी थी। ये पाचो भाई पाच पाण्डव के नामो से इलाके मे मशहूर थे। इनमे चौथे भाई लालचन्द जी की बडी ख्याति थी। बडे-बडे जागीरदार उनके चरणो मे पडे रहते थे। हमारे पूज्य पिताजी के हम दो पुत्र है–बडे भाई श्री सूडालाल जी सेठी और दूसरा मै गैदालाल सेठी (वतमान मे मैं सत्यधर सेठी)। सूरजमल जी के एक पुत्र थे जिनका नाम था नाथूलाल।

प्रश्न – आपका बचपन कसे गुजरा ?

उत्तर – जब 5 वर्ष हुआ तो मेरे पूज्य पिताजी का स्वगवास हो गया। इसके बाद हमा चाचा साहब श्रद्धेय लाल चन्द जी साहब व पूज्य काका साहब लादूलाल जी की देखरेख मे होता रहा, लेकिन 2 वष बाद उनका भी स्वगवास हो गया, ऐसे म हमारी स्थिति अनाथ जसी हो गई, हमारे लिये हमारी श्रद्धेय माताजी जो ममतामयी त्याग की साक्षात मूर्ति थी उन्होने अपने प्यार और ममत्व से हमको खीचा।

प्रश्न – आपके परिवार की आर्थिक दशा कैसी थी ?

उत्तर – आर्थिक स्थिति हमारी अच्छी नही थी। गाव के कुछ लोगो ने हमारी किसानी हडप ली थी। माताजी बहुत सीधी सादी महिला थी, वह एक रुपये के पसे भी नही गिन सकती थी। फिर हमारे बडे भाई सहाब के परिवार को सभाला।

प्रश्न – आपके अध्ययन की क्या व्यवस्था रही ?

उत्तर – प्रारम्भिक पढाई गाँव से प्रारम्भ हुई। माँ ने हमे धार्मिक संस्कार दिये। उन्होने हमे नमस्कार मत्र और भक्तामर स्तात सीखा जिसके कारण धार्मिक आस्थाय बढी। गाँव मे जन पाठशाला थी। प रामचन्द्रजी बडे विद्वान अध्यापक थे उन्होने ही हमे अक्षर ज्ञान कराया तथा कई धार्मिक मत्र, जप आदि सीखाये। मैं जब 9 वष था तो श्रद्धेय पूज्य गुरुवर्य प चनसुखदासजी की की दृष्टि मुझ पर पडी वे मेरी प्रतिभा से प्रभावित हुये और अपने चरणो में कुचामन विद्यालय में ले गये। उनकी महती कृपा से मैने विद्यालय में बहुत बढ़िया उच्च स्थान प्राप्त कर लिया। यहाँ रहकर मैने अपना अध्ययन किया।

प्रश्न – परम पूज्य प चनसुखदासजी के बारे में आपके क्या विचार है ?

उत्तर –सच बात तो यह कि यह सारा जीवन ही उनकी देन है, उनका जीवन बडा परिमार्जित जीवन था। उनके जीवन मे सादगी थी। वह आजन्म बाल ब्रह्मचारी थे। सुधार की भावना के कट्टर विद्वान थे अपने सकल्प के धनी थे, स्वतत्र विचारो के विद्वान थे। उनके जीवन

पर किसी भी धनी व्यक्ति का प्रभाव नही था। स्वाभिमान उनमे हृदय मे कूट कूट कर भरा था। जैन सिद्धान्तो पर अटल आस्था थी। उनके जीवनकाल मे जो अनुशासन था, वह आज हम लोगो को देखने को नही मिलता। वे 5 बजे प्रात उठते थे और रात को 10 बजे तक हम लोगो को टटोला करते थे।

वास्तव मे वे एक आदर्श अध्यापक थे। 100 छात्रो के होते हुए भी वे सब काम स्वय करते थे। ऐसे महान् गुरु के चरणो मे हमने आश्रय पाकर अपने आपको धन्य किया था उनके जीवन का असर मेरे जीवन मे पूरा उतरा, यही मेरा प्रयास रहता है–सच तो यह कि मेरे जीवन किसी भी तरह की बुराई नही पनप सकी। पडित साहब के कट्टर सुधारक विचारो के व्यक्ति थे उन्होने बाल विवाह, वृद्ध विवाह, अनमेल विवाह, कन्या विक्रय जैसी प्रथाओ के रोकने मे बड़े बड़े धनिको से लोहा लिया-उनके विचारो को पूरा करना ही मेरा जीवन का उद्देश्य है। वे मुझे हर जगह आगे लाते थे। गाव गाँव मे जन सस्कारो का प्रचार करने के लिए भेजते थे। जन विवाह विधि के प्रचार मे तो मुझे मार तक भी खानी पडी है। लेकिन हमने कभी भी निराशा को स्थान नही दिया, पडित जी हमारे ऐसे कामो के लिये पीठ ठोकते थे। 16 वर्ष के जीवन मे मैने सर्वार्थ सिद्धि गोमटटसार, जीव काण्ड आदि ग्रन्थो का अध्ययन कर लिया था। पडित साहब मेरी बुद्धि के विकास के लिये अपने सामने स्वाध्याय कराते थे बडी बडी सभाओ मे भाषण दिलाते थे, जिससे मेरी बुद्धि का विकास और लेखन शक्ती बढी। मेरा सबसे पहला लेख, खण्डेलवाल जन हितेच्छु मे प्रकाशित हुआ जिसके सम्पादक प इन्द्र लालजी शास्त्री थे। वसे पडितजी ने जो कुछ हमे दिया है उसके बारे मे उनकी बातो मे स्मरणो मे एक नही कई ग्रथ तयार किये जा सकते हैं।

प्रश्न – क्या आपने बचपन से सुधारवादी सिद्धान्तो का प्रतिपादन करते आ रहे है?

उत्तर – हमार बचपन म सुधारवादी और पुरानपथि विचारधारा वालो क बीच सघष की स्थिति रहती थी। मैंने धार्मिक रूढिया के खिलाफ मेरे गाँव मे ही कदम उठायें बहुत लोगा का विरोध सहना पडा। कुमा पताओ के विरोध मे घर घर जाकर महिलाओ को प्रतिज्ञा मे दिलाई। इसमे म काफा सफल हुआ। मृत्यु भोजन, विवाह के समय थाली पूजा, कुम्हार के यहा जाकर चाक पूजना, दीपावली पर लक्ष्मी पूजन करना मृत्यु के बाद 12 व दिन बडिये डोलना आदि रस्मो का घोर विरोध किया और इसमे हम आशातीत सफलता भी मिली। गाँव के लोगो का जहा विरोध मिला वहा प्यार और स्नेह भी प्राप्त हुआ।

प्रश्न – सुना है आप बचपन से मुनि विरोध रहे है?

उत्तर – आपने बहुत ही गलत सुना है मै प्रत्यक मुनि, सत को आदर की दृष्टि से मानता, नमस्कार व आदर करता हू, पर हा, मुनिचर्या क विरोध काम करन वाला को साफ कहने मे कभी नहीं चूकता। मेरा मानना है मुनिगण हमार पथ प्रदर्शक होते है उनके बताये मार्ग पर चलकर हम अपना आत्म सुधार करते है। पर कभी-कभी विरोध भी करना पडता है। 60 वर्ष पूर्व की बात है [illegible] मुनि [illegible] उनके आचरण के लिए विरोध किया, सभी लोग मेरे इस आचरण से नाराज [illegible] भी निकाल दन [illegible] किन्तु जब लोगो को मेरे विरोध का [illegible] मालूम [illegible] मामला [illegible] सभी ने मेरी हिम्मत की प्रशसा की।

प्रश्न – सुना है आपने बचपन से ही विजातीय विवाह तथा विजातियो को जैनी बनाने का समथन किया और उनके कारण समाज के कुछ वग विशेष का कोप भजन भी होना पड़ा ?

उत्तर – प चैनसुखदास जी के वचपन से सस्कार मेरे जीवन पर पड़े थे। मैं ब्र शीतल प्रसाद जी, प दरवारीलाल जी न्यायतीर्थ आदि के विचारो से भी प्रभावित था। एक वार प दरवारीलाल जी न्यायपतीर्थ ने विजातीय विवाह को उचित ठहराते हुये लेख लिखा। मेरे विचार से उनके विचार काफी मेल खाते थे, मैंने उसका समर्थन कर दिया। सारा पडित समाज मेरे खिलाफ हो गया। मेने उसकी परवाह नही की क्योकि सिर पर पडित जी का हाथ था। श्री सेठ गभीर मल जी पाड्या के विद्यालय मे म अध्ययन करता था मे कट्टर स्थिति पालक दल के आदमी थे। वड़े-वड़े विद्वानो का उनको समर्थन था। एक वार उन्होने फतेहपुर पचकल्याण मे जाप करने के लिये मुझे भिजवाया। वहा श्रद्धेय पडित जी साहव भी गये थे। अ भा दि जैन महासभा का अधिवेशन भी था। शास्त्र सभा मे स्व प रघुनाथ प्रसाद जी सरलौ वाले शास्त्र पढ रहे थे उन्होने कहा कि दीक्षान्वय क्रिया के अनुसार कोई भी जैन हो सकता है मैने तपाक से प्रश्न कर डाला कि ब्र शीतल प्रसाद जी ने मुसलमान का जन दीक्षा दी उसका आप लोग क्यो विरोध करते है। यह प्रश्न करते ही सब विद्वान मेरे पर टूट पडे।' किसी ने नास्तिक कहा, किसी ने और कुछ, शास्त्र सभा वन्द हो गई, हल्ला हो गया, छोटा सा छोकरा मुसलमान को जैनी होने का समर्थन करता है। मै घवडा गया, सोचा-मैने क्या जुल्म कर डाला।

उस वक्त पडित श्री धन्नालाल जी कासलीवाल वम्बई वालो का जोर था उन्होने कहा 'छोकरे कहाँ पढता है मैने कहा– कुचामन, क्या चनसुखदास के पास, मने कहा-हा। इस पर वे कहने लगे पडित चैनसुखदास जी नास्तिक और धर्मद्रोहियो की फौज तयार कर रहा है, बुलावो चनसुखदास को। लोग दौडकर उनके पास गये। किस्सा सुनाया, वे समझ गये कि मरयधर ने ही उत्पात किया है। लेकिन वे स्वाभिमानी विद्वान थे, तुरन्त पधार गये। उनको कहा गया ये लडका आपके पास पढता है। उन्होने कहा-हा। श्री पडित धन्नालाल जी ने कहा कि यह लडका नास्तिक है यह विद्यालय म नही रहेगा। प साहव न कहा क्या अपराध किया है इसने। उत्तर दिया-मुसलमानो को जैन बनाने का समथन करता है श्रद्धेय पडित साहव ने कहा विल्कुल ठीक कहता है। मेरे से शास्त्राथ कर लीजिये, सव चुप हो गये, इस प्रकार पडित साहव ने अनेक वार मेरा साहस बढाया।

प्रश्न – सेठी वश के परिचय के साथ क्या आप अपने परिवार का परिचय भी देने की कृपा करेंगे ?

उत्तर –मेरे पास एक पुस्तक 'समकित' बोलकर आई है। जिसके प्रकाशक है माननीय पूज्य ब्रह्मचारी लाडमलजी महाराज। ब्रह्मचारी लाडमलजी महाराज से मेरा घनिष्ठ परिचय है। व साधु सत है। सेवा उनका जीवन है। इस पुस्तक मे कई लेख है वैदिक वर्ण व्यवस्था के सम्बन्ध म भी परम पूज्य आचार्य श्रुतसागर जी महाराज, पूज्य धार्मिक ज्ञानमति माताजी आदि के विचार भी उल्लेखनीय है। सब ही लेखको ने अपने विचारो मे स्पष्ट किया है कि वर्ण, वश जाति आदि नहीं बन्सत। य अनादि काल से है। लेकिन जब हमारा प्राचीन इतिहास और पौराणिक साहित्य का दर्शन है ना

के नाथूलालजी और फतेहलालजी के सूण्डालालजी और मैं नत्थधरकुमार सेठी। श्री नाथूलालजी का स्वर्गवास छोटी उम्र में ही हो गया। उनकी धर्मपत्नी श्रीमति बसती बाई मौजूद है। बड़े भाई सूण्डालालजी के दो पुत्र व तीन पुत्रियां हुई। उनकी धर्मपत्नी का नाम इचरज बाई है। सूण्डालालकी के दो पुत्र हैं, श्री जीवधर कुमार और श्री त्रिलोकचन्द। जीवधरकुमार के 4 पुत्र है, त्रिलोकचन्द के 3 पुत्रियां है।

मेरे तीन पुत्र हैं सुशीलकुमार, रजनीशकुमार और सजयकुमार। पांच पुत्रियां हैं कनकप्रभा विद्याप्रभा, मलबाला, भावश्वरी और शारदा। सुशीलकुमार के तीन सन्तान है मनीष, विवेक और विमला। मेरी धर्मपत्नी का नाम सूरजकुमारी है और सुशीलकुमार की धर्मपत्नी का नाम रविकान्ता है।

रजनीश एम काम फाइनल है और सजय बी काम द्वितीय वर्ष है। मुझे अपने तथा अपने परिवार के शान्तिपूर्ण जीवन से बहुत प्रसन्नता है।

प्रश्न — व्यावसायिक क्षेत्र में आपका प्रवेश कहां से आरम्भ हुआ और इस क्षेत्र के प्रारम्भिक अनुभव आपको क्या और कैसे हुए ?

उत्तर—विवाह के तुरन्त बाद मुझे नौकरी के लिए कलकत्ता जाना पड़ा। वहां श्रद्धेय पंडितजी साहब के छोटे भाई सरदारमलजी साहब रावका रहते थे। उनके सयोग से मुझे श्रीमान् दुलीचन्दजी झूमरमलजी साहब सेठी के 13) रुपये मासिक और भोजन में नौकरी मिल गई। दोनों विवाहों के एक साथ होने से हमारी आर्थिक स्थिति कमजोर हो गई थी। मैं इसको सहन नहीं कर सका। सिर पर वज्र हो गया था। इसलिये विद्याध्ययन की इच्छा होते हुए भी नहीं कर सका, कलकत्ते में मैंने समस्त खर्च सीमित कर डाले। मैंने अपने जीवन को सीमित बना लिया। धार्मिक शिक्षण ने मेरे जीवन में इतना परिवर्तन कर डाला कि मैंने हर जगह खुद को संजोया। मैंने हमेशा से अपने आपको बन्धन में रखने का प्रयास किया। इसमें मैं मितव्ययी बन गया। मुझे जो 13) रुपये मासिक मिलते थे। मैंने वे रुपये कर्जदारों को भेजना शुरू कर दिया। जिससे वे हमें भी बाधित नहीं कर सके। मेरे हृदय में श्रद्धेय पण्डितजी साहब की प्रेरणायें काम करती थीं। इसलिये मेरे जीवन में कोई बुराई नहीं पनप सकी। मैंने हमेशा सदाचार और नैतिकता का ध्यान रखा। मुझे यही श्रद्धा थी कि इनके बिना मैं आगे नहीं बढ़ सकता। कलकत्ता जाने के कुछ दिनों बाद धीरे धीरे मैंने समाज में स्थान बना लिया और शास्त्र सभा आदि में बराबर भाग लेने लगा। समाज के अच्छे-अच्छे लोगों से परिचय हो गया। इससे मेरे मालिक भी मेरे से प्रसन्न हो गये। वे भी सेठी थे। इन्हीं दिनों मे श्री धर्मचन्दजी सरावगी विलायत गये थे। वापस आने पर बहिष्कार की चर्चायें चली। धर्मचन्द के पिता श्री सेठ बैजनाथजी सरावगी बड़े धार्मिक निष्ठावान व्यक्ति थे। यह हमें सहन नहीं हुआ। कलकत्ते में दिगम्बर जैन युवक समिति थी। उसके मन्त्री श्री रतनलाल झांझरी थे। हम लोगों ने निर्णय किया कि बहिष्कार नहीं होने देंगे। पंचायती में फैसले के लिए उदयपुर से सुप्रसिद्ध पूज्य ब्रह्मचारी चांदमलजी महाराज अधिकृत किये गये। उन्होंने फैसला तैयार करके पंचायती एकत्रित की। पूज्य ब्रह्मचारीजी का मेरे से प्रेम था। जैसे ही वे फैसला पढ़ने को तैयार हुए, हमने किसी तरकीब से फैसला ले लिया और उसको गायब कर दिया। बड़ा हल्ला हुआ, मारपीट तक की नौबत आई, लेकिन हम लोग गायब हो गये। श्री धर्मचन्दजी का बहिष्कार नहीं हो सका।

प्रश्न – नौकरी पर रहते हुए आपने सामाजिक व धार्मिक सेवाओ के लिए क्या-क्या कार्य किये ?

उत्तर – मने निम्न काम किये —

(1) सन्मति पुस्तकालय की स्थापना।

(2) हिन्दू-मुस्लिम दगे मे सरकार का प्रतिबन्ध होते हुए भी भान्वा नुगी 14 का जुलूस आम माग से बन्दूको की नोक पर निभय होकर निकालना, पुलिस गिरफ्तारी नहा कर सकी। इस जुलूस मे हजारो हिन्दुओ ने साथ दिया।

(3) हिन्दू मुस्लिम दगे मे दीपावली पव आ गया। वेल गन्छेया क्षेत्र मुसलमानो का था। लोग दीपावली पर्व होने के कारण लडडू चढाने को चले गये। मुसलमानो ने आकर घेर लिया। मैं पूजन करा रहा था। लोगों ने कहा यह स्थिति बन गई है। सब घबराने लगे। मेरे साथी मेरे पास आये। सब कहने लगे क्या करना है। मैंने कहा कितने कार वाले हैं। हम कार वालें ड्राइवरो से मिले। उनमे कुछ सिख डाइवर भी थे। उनसे मैंने एक ही बात कही आप सब 22 कार वाले एक साथ फुल पावर से कारें छोड दें। भीड सामने है। या तो वे भाग जायेंगे या हम मर जायेंगे। मरना तो आज है ही। मेरी राय सबको पसद आई और उस भयकर सकट से हम बच गये।

(4) काली घाट पर काली माता के सामने हजारो बकरो का दशहरे पर पूजा के समय बलिदान होता था। मैंने मेरे मित्रो के साथ निर्णय लिया कि बलिदान के खिलाफ पिकेटिंग किया जाय। हम लोग 40 स्वयसेवक तत्पर हो गये। इसमे मेरे साथ बिडला, कानोडिया और हिम्मत सिंह आदि बडे-बडे लोगो का सहयोग था। मैने कलकत्ते म विलायती वस्त्रो के बहिष्कार मे भी काग्रेस का साथ दिया था। इससे मेरा परिचय इस क्षेत्र मे बढ गया था। इन सबके सहयोग से एक सर्वीय अहिंसा परिषद् की मैंने स्थापना कर डाली। उसके माध्यम से हमन पिकेटिंग चालू करने के पहले पडो से निवेदन किया लेकिन वे तयार नही हुए क्योकि उनके हजारा की आमदनी होती थी और 1900 घर पडो के पलते थे। हमने काली माता के मन्दिर का घेर लिया। यह मन्दिर भारतवष मे एक प्रसिद्ध मन्दिर था। इससे बडा तहलका मचा। एक दिन मने साहस किया। जिस खूटे म बकरो का गला फसा कर खजर चलाया जाता था उसी में मैंने बढकर हाथ फसा दिया और कहा कि बकरा नहीं कटेगा। मरे हाथ काटो। इससे पण्डे क्रुद्ध हो गये। मार-पीट चालू हो गई। मेरे सब साथी भाग गये। मैं डटा रहा। मेरी उन्होंने डटकर पिटाइ की। दोनो हाथ पर पकड कर 10 फीट लम्बी जगह मुझे फक दिया। मेरे मु ह म जबरदस्ती मास के टुकडे फसा दिये। समाज म हल्ला हो गया। ऐसे भी सेठ चम्पीरमलजी पाण्ड्या, सेठ प्रभूलालजी पाण्डया हमारे खिलाफ थे ही। उन्होंने पचायती बुला कर कहा सत्यवर कुमार सठी भ्रष्ट हो गया है। मास तक खा चुका है। अत उनका बहिष्कार किया

जाय। उस समय मेरे मालिक सेठ दूनाचन्दजी झूमरमलजी का पूरा सहयोग था। उन्होंने और मेरे साथियो ने वह पचायती न होने दी। मेरी पीठ ठोकी।

प्रश्न – धर्म और समाज की रक्षा के लिए आपने आन्दोलन के कौन-कौन से रूप अपनाये ?

उत्तर – बलि पूजा रोकने के लिए मैंने अपने प्राणों की परवाह भी नही की और आगे बढ गया। वहा उपस्थित अनेक पण्डो ने मिलकर मेरी पिटाई की उससे मेरे सहयोगी कुछ कांग्रेसी व बगाली महिलाओ ने जोर पकडा। जिनमे मोहिनादेवी, ज्योतिमया गागुली आदि प्रसिद्ध थी। उन्होंने मन्दिर को आ घेरा। बिडलाओ की कारे आ गई। वहा तूफान मच गया। गवर्नमेंट ने मेरे पर पाबदी लगा दी। मैं कालीघाट नही जा सकता था। तब हमने रामचन्द्र शर्मा वीर को आमन्त्रित किया। वे कलकत्ता आये और उन्होंने 65 दिन का अनशन ठान लिया किन्तु उल्लेखनीय सफलता हाथ न लगी।

प्रश्न – क्या आपने चर्चा सागर ग्रन्थ के बहिष्कार का आन्दोलन किया ? क्यो ?

उत्तर – एक बार समाज मे सुधारको और स्थिति पालको को लेकर बडा आन्दोलन था। हम सब वीतराग मार्ग के अनुयायी थे। उस समय परम पूज्य आचार्य शान्ति सागर जी महाराज का जोर था। समाज मे प० धन्नालालजी कासलीवाल, प० मक्खनलालजी मारेना का अधिक प्रभाव था। उसी समय प० मक्खनलालजी के भाई नन्दनलालजी मुनि हो गये। उनका नाम सुधर्म सागरजी था। उन्होंने चम्पालाल पाण्डे कृत चर्चा सागर ग्रन्थ का कुछ सेठ लोगो से कहकर प्रकाशन कराया। उस ग्रन्थ मे दिगम्बर जैन धर्म के विरुद्ध मे कई चर्चायें थी। जिनमे गोबर से भगवान का अभिषेक करने से करोडो उपायो का फल प्राप्त होता है आदि कई अनर्गल प्रतिपादन था। इससे प्रबुद्ध लोगो मे हलचल मची, लेकिन किसी ने साहस नही किया कि एक मुनि की कृति का विरोध किया जाय। श्री दिगम्बर जैन युवक समिति के मन्त्री श्री रतनलालजी झाझरी और हम सब कलकत्ता समाज के प्रमुख विद्वान् स्वर्गीय पडित गजाधरलालजी के पास गये। उन्होंने कहा कि आप लोग आगे बढिये, मैं आपके साथ हू। इस ग्रन्थ का बहिष्कार करिये नही तो वीतराग मार्ग ही खत्म हो जायेगा। उनके कहते ही जबर्दस्त आन्दोलन चला। हम लोग आगे बढे। समीक्षायें प्रकाशित करवाई। सबसे पहले कलकत्ता समाज ने बहिष्कार किया और यह आन्दोलन इतना आगे बढा कि भारतवर्ष से उस ग्रन्थ का बहिष्कार हो गया।

प्रश्न – आपने कलकत्ता मे मारवाडी समाज के बहिष्कार आन्दोलन के खिलाफ क्या योग दिया ?

उत्तर – कलकत्ता मे बगाली समाज द्वारा आन्दोलन उठाया गया कि बगाल का मार्ग व्यवसाय मारवाडी छीन रहे हैं। पूरे बगाल पर उनका जूट व्यवसाय व कपडा व्यवसाय पर आधिपत्य हो गया है। अत इनका बहिष्कार किया जावे। आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। उस समय मारवाडी लोग और मैं स्वय पगडी लगाते थे। जहा भी पगडी वाला मिलता पगडी उतारी जाती और पिटाई कर दी जाती थी। इससे मारवाडी समाज मे आतक फैल गया। मारवाडी समाज मे बिडला तो थे ही लेकिन एक बैरिस्टर थे श्री प्रभुदयाल हिम्मतसिंहका। वे आगे बढे। महेश्वरी भवन मे मीटिंग बुलाई। मैं भी

आमन्त्रित था। मेरा भी भाषण हुआ। हम उनके साथ आगे बढ़े और यह आन्दोलन शान्त हुआ। गांधी ने मारवाड़िया के साथ थी और विधानचन्द्र राय जैसे प्रबुद्ध लोगों ने इस आन्दोलन को नहीं बदल दिया। इन्हीं दिनों में खण्डेलवाल समाज में एक लोहड़ साजन भाईयो को लेकर जबरदस्त आन्दोलन चला। मैं उसमें भी बढ़कर कूद पड़ा। मेरे जीवन में यह एक ऐतिहासिक आन्दोलन था।

प्रश्न – सुना है आपने समाज में लोहड़ साजन आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया, जिसके कारण आपका बहिष्कार भी हुआ ?

उत्तर – संवत् 1990 में खण्डेलवाल दिगम्बर जैन समाज में लोहड़ साजन भाईयो को लेकर एक तूफानी आन्दोलन खड़ा हुआ। जिनके सूत्रधार थे परम पूज्य आचार्य शान्ति सागर जी के प्रमुख शिष्य थे। ये नांदगांव के थे, खण्डेलवाल थे, पहाड़िया इनका गोत्र था, ये कट्टर स्थितिपालक थे, त्याग, तपस्या इनकी ऊंची थी, स्वभाव के उग्र थे और जबरदस्त जिद्दी थे। इन्होंने समाज में लोहड़ साजन भाईयो के खिलाफ जबरदस्त आन्दोलन खड़ा कर दिया और कहा कि खण्डेलवाल समाज में यह शाम दस्सा से भी नीच है। इनके साथ बेटी-व्यवहार तो हो ही नहीं सकता लेकिन इनके हाथ का पानी भी यदि कोई जैनी ग्रहण करेगा तो उनके घर आहार नहीं करूंगा। मुनिजी अपने निर्णय पर आगे बढ़ गये। प्रतिमायें चालू हो गई। स्थिति पालक मुनि भक्त लोग इनके साथ हो गये। इससे खण्डेलवाल समाज में गहरी हलचल मच गई एवं आतंक मच गया।

आचार्य शान्ति सागरजी महाराज बहुत ही शान्तिप्रिय साधु थे। उन्होंने श्री चन्द्रसागर जी महाराज को कहा कि साधु इन झगड़े में नहीं जा सकता है। इन्होंने माना नहीं। संघ से आचार्य महाराज ने अलग विहार का आदेश दे दिया। अब वे स्वतन्त्र होकर उनके बहिष्कार में डट गये। लोहड़ साजन भाईयो के समाज में काफी घर थे। जयपुर के प्रबुद्ध लोगों ने मुनि श्री के इस चेलेंज को स्वीकार किया और इस आन्दोलन के खिलाफ श्रद्धेय पंडित चैनसुखदास जी ने अपने कदम बढ़ाये। [illegible] श्री पन्न भट्टारक देवेन्द्र कीर्तिजी नागौर के माध्यम से इनका इतिहास तैयार करवाया। [illegible] प्रामाणिक तैयार हो गया। जिसमें प्रमाणिक हो गया कि लोहड़ साजन व बड़ साजन एक है। श्रद्धेय पण्डितजी साहब ने इनके लिए कमर कस ली। खण्डेलवाल समाज के सुधारक विचारों के लोगों ने [illegible] समर्थन किया। जिसमें सेठ तालारामजी नथमलजी सेठी, गजराजजी गंगवाल को [illegible]। सेठ सा० [illegible] गोधा, श्रीमान् दनीचन्दजी साह, श्री रामचन्द्रजी खिन्दूका, श्री [illegible] गंगवाल जयपुर, श्री फतहचन्दजी सेठी अजमेर, सेठ ताराचन्दजी सेठी नसीराबाद, [illegible] गंगवाल [illegible] पचार, श्री [illegible]चन्दजी सेठी दिल्ली, [illegible] सेठ हीरालालजी कासलीवाल इन्दौर, श्रीमान सेठ माणकचन्दजी [illegible] श्री [illegible] सा० गोधा [illegible] पूर्ण सहयोग रहा। श्री मुनि [illegible]।

[illegible]

सेठी के साथ उत्साह के बीच करा दिया। इस विवाह मे लाडनू के उत्साही युवक श्री भीमराजजी चूडीवाल, गणेशमलजी पाटनी, श्री नथमलजी सेठी और श्री मालचन्दजी पाटनी का आदर्श योगदान रहा। मुनि भक्त लोगो ने इसके विरोध मे खण्डेलवाल दिगम्बर जैन महासभा मे बहिष्कार का प्रश्न उठाया लेकिन वे सफल नही हो सके। श्री राजमलजी सेठी कलकत्ता मे रहते थे। मैं भी उस समय कलकत्ता मे था। यह प्रश्न कलकत्ता पचायत मे बहिष्कार को लेकर आया। मैं पूर्ण तैयारी के साथ राजमलजी के समर्थन मे खडा हो गया, शास्त्रार्थ का चलेंज दे दिया, कोई सामने नही आया। कलकत्ता मे इस आन्दोलन का श्रीगणेश हो गया और श्रीमान सेठ गजराजजी गगवाल ने कहा कि सत्यधरजी हम इस आन्दोलन मे आपके साथ हैं। आपको हम तन, मन और धन से सहयोग देंगे। हम आगे बढ गये। कलकत्ता से मैं जयपुर आ गया। श्रद्धेय पण्डितजी साहब ने कहा कि सत्यधर तू साहसी वीर है। इस आन्दोलन मे आगे बढ जा। मैंने उस आदेश को स्वीकार किया। श्रद्धेय पण्डित साहब का आशीर्वाद हमारे साथ था। उस समय मुनि श्री चन्द्रसागरजी महाराज नसीराबाद मे थे। नसीराबाद मे लोहड साजन भाइयो के घर थे। वे उनसे त्रस्त हो गये। मैं कलकत्ता से आया और सीधा नसीराबाद पहुँच गया। वहा मुनि श्री बहिष्कार की चर्चा कर रहे थे। मैंने बीच मे ही प्रश्न कर डाले। मुनि श्री क्रुद्ध होकर बोले, पिटाई खायेगा ? मैंने कहा, तैयार हू। इस पर मेरे साथी भी क्रुद्ध हो गये और वह युद्ध टल गया। नसीराबाद और अजमेर मे सेठ राजमलजी सेठी और ताराचन्दजी सेठी का प्रभाव था। वे अजमेर जाकर कमिश्नर के पास पहुँच गये। मुनि श्री के ऊपर प्रतिबन्ध आ गया और उनका विहार देहरादून हो गया। समाज के प्रबुद्ध लोगो ने हमारा साथ दिया। मैं कलकत्ता चला गया। सेठ गजराजजी गगवाल ने कहा कि आप हमारे यहा आ जाइये। आपकी हमे जरूरत है। मैंने भी यही उचित समझा, क्योंकि सेठ तोलारामजी गजराजजी हमारे पूर्णत समर्थक थे। मैं पहले वाले मालिका से कह नही सका कि म जाता हू। सेठ गजराजजी ने ही सेठ झूमरमलजी साहब को कहा कि सत्यधरजी को कुछ दिन के लिये हमको दे दो। मै उनके यहा आ गया। यहा आन्दोलन ने उग्र रूप ले लिया। कलकत्ते मे सेठ तनसुखलालजी पाण्ड्या थे। वे बडे प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उन्होने कहा कि सेठजी श्रद्धेय पण्डितजी साहब से मिल कर एक पत्र को जन्म दिया जाये, ताकि समाज मे लोहड साजन भाइयो के सम्बन्ध मे प्रचार हो सके। म तयार हो गया। माननीय सेठ गजराजजी ने कहा कि सेठी जी। आन्दोलन की सफलता के लिए आपको समर्पित करता हू।

प्रश्न – क्या आपने फिर पत्र का प्रकाशन किया ?

उत्तर – मैंने जयपुर आकर पण्डित चैनसुखदासजी से चर्चा की। उन्होने अपने शिष्य श्रीमान् प० भवरलालजी न्यायतीर्थ, प० कैलाशचन्दजी शास्त्री प० मिलापचन्दजी न्यायतीर्थ आदि से परामर्श किया। सबने कहा कि पत्र निकाल दिया जाये। पत्र का नाम "जन बन्धु" घोषित किया गया। यह पत्र माननीय पण्डित चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ के सम्पादकत्व मे प्रारम्भ हो गया। इसके प्रकाशन का समस्त भार श्री तनसुखलालजी पाण्ड्या, कलकत्ता ने लिया। मुनिजी के समर्थको ने भी अजमेर से "चन्द्र प्रकाश" नामक पत्र का प्रकाशन किया। समाज मे इस आन्दोलन ने तुमुल रूप ले डाला। जगह-जगह इसकी चिंगारिया फैल गई। एक तरफ पूजीवादी तबका था और दूसरी तरफ क्रान्तिकारी विचारधारा के समाज सुधारक थे।

प्रश्न —क्या आप मुनि विरोधी ? दिगम्बर जैन मुनियो के प्रति आपके मन मे किस प्रकार की आस्था है।

उत्तर —समाज उनको पूज्य माने या नही ? सच्चे वीतरागी साधुओं का मैं भक्त अनुयायी हूं बिना भाव के आचरण वाले साधुओ का विरोध भी करता हू।

एक बार मे जयपुर नगर मे परम पूज्य आचार्य सूर्य सागर महाराज का पदार्पण हो गया। वे आदर्श सरल चित्त संत थे। उनके पास न कोई दिखावा था और न प्रदर्शन। ध्यान, ध्यान, तप ही उनका जीवन था। सब तरह के लोग उनके चरणो मे जाते थे। श्रद्धेय पंडित जी साहब के कहने पर मैं भी गया। मैंने नमस्कार नही किया। वे ऐसे संत थे जिनको इन बातो का विचार तक नहीं था। तीन-चार दिन मे मेरे हृदय मे उनके प्रति श्रद्धा पैदा हो गई। श्री दुलीचन्द जी साहब ने कहा कि सत्यधर जी विचित्र आदमी हैं। आगे आकर बैठते हैं। नमस्कार नही करते। ये शब्द महाराज श्री के कानो मे पहुंच गये। उन्होंने कहा साधु किसी से नमस्कार के लिए पैदा नही होता। आत्मकल्याण के लिए यह जीवन है। मेरी आत्मा ने जवाब दिया कि यह सही साधु है। मैंने नमस्कार कर दिया। महाराज शूद्र जल का त्याग नही करवाते थे। उनके लिए काफी संख्या मे श्रावकगण चौके लगाते थे। उन चौके मे लोहड साजन भाई भी सम्मिलित थे। एक दिन महाराज श्री का आहार लोहड साजन भाईयो के हो गये। पंडित इन्द्रलाल जी शास्त्री वगैरह विरोध मे खड़े हो गये और कहने लगे कि सूर्य सागर जी महाराज ने लोहड साजना के यहा आहार लेकर मुनि पद के विरुद्ध काम किया है। महाराज से चर्चा की जायेगी। दोपहर मे हजारो लोग खजाची जी की नसिया मे पहुंच गये। महाराज श्री को घेर लिया। हम लोग भी पहुंच गये। महाराज श्री ने एक बात कही। हम संत हैं। हमारी विधि के अनुसार जहा भी भक्ति पूर्वक आहार मिलेगा हम लेंगे। हम किसी के दबाव मे नही हैं। हमारी दृष्टि मे सब एक हैं। विरोधियो ने पं. मक्खन लाल जी को बुलाया। हम भी वहा पर ही थे। मैंने मक्खन लाल जी को इस विषय मे कहा कि आप आचार्य शांति सागर जी से बात करलें। मामला ठंडा सा हो गया। श्री सूर्य सागर महाराज जी के लाडनूं चातुर्मास के अवसर पर उक्त आन्दोलन को हमने गांव गांव मे जाकर प्रचार किया। जिससे वैवाहिक सम्बन्ध चालू हो गये। इस आन्दोलन का असर समाज के अभिषिक्त सम्राट राव राजा सर सेठ हुकम चन्द जी साहब कासलीवाल पर भी पड़ा। उन्होंने कहा कि एक साधु सामाजिक आन्दोलन मे नही पड सकता। लोहड साजन शुद्ध हैं। सूर्य सागर महाराज ने आहार ले लिया है। तब हम लोहड साजना के साथ हैं। इनके विचारो से समाज मे काफी परिवर्तन आया। लेकिन कुछ लोगो ने अपनी जिद्द नही छोडी। सूनियावास मे पंच कल्याणक प्रतिष्ठा थी। लोहड साजन भाईयो का बहिष्कार करने के लिए खण्डेलवाल महासभा को निमन्त्रण दिलवाया और मेरे विरुद्ध सांभर नाजिम सा को एक प्रार्थना पत्र दिया कि ये लोग उद्दण्ड है। बदमाशी करेंगे। इन पर प्रतिबन्ध लगा दिया जाय। उसी दिन किसी कार्यवश मैं भी सांभर पहुंच गया। वहाँ पर श्रीमान् बंसीलाल जी लुहाड़िया वकील साहब थे। उन्होंने मुझे देखते ही कहा सेठी सा आपके विरुद्ध मे एक प्रार्थना पत्र पहुंचा है। सब बात उन्होंने मुझे समझाई। वे भी उग्र सुधारक व्यक्ति थे। वे मुझे जिलाधीश के पास ले गये। मैंने निवेदन किया-हुजूर यह संस्था ऐसे लोगों की है जिनमे छुआछूत, विधवा विवाह, विजातीय विवाह का विरोध है।

हम चाहते है कि जन साधारण मे इन बातों की चर्चा नही हो। आज का युग यह नही चाहता। यदि ये प्रश्न आये तो इन राष्ट विरोधी बातो का हम विरोध करेंगे। आप अर्जी देने वालो से पूछ लो, इसके बाद आपका आदेश मान्य होगा। कचहरी मे आवाज हो गई। हम भी कचहरी म हाजिर हो गये। मुझे देखकर उसको आश्चर्य हुआ। इस मेले मे आप क्या प्रचार करना चाहते है। वे एक दूसरे का मुह देखन लग गये तब मुझ पूछा, आप क्या कहना चाहते है मैने स्पष्ट कर दिया। तब जिलाध्यक्ष ने कहा कि आप इन पर विचार करेंगे तो वहा अधिवेशन नही हो सकेगा। ये आपके नियम राष्ट विरोधी है। यदि इनको लेकर कोई झगडा होगा तो महासभा पर प्रतिब ध लगेगा व आप लोगो के मुचलके होग। मे ठडे होकर आ गये। पच कल्याण प्रतिष्ठा मे हजारो लोगो की उपस्थिति थी। मै और मेरे मित्र श्री चादमल जी काला शान के साथ पधार गय और लोह्ड साजन भाईओ के समथन भी हजारो की सख्या मे पहु चे।

जिलाधीश के आदेश से खण्डेलवाल दिगम्बर जैन सभा का अधिवेशन नही हो सका। महासभा के पदाधिकारी सुन्न हो गये। अब इन्होने निणय लिया गया कि चन्द्रसागर जी महाराज के जरिए लोहड साजन भाईयो का विरोध कराया जाये। दोपहर मे करीब 2बजे उनका भाषण प्रारम्भ हुआ। यह दिन जेठ सुदी 9 स० 1992 था। जसे ही हम लोगो को ज्ञात हुआ, हम लोग सभा मण्डप मे पहु च गये। महाराज चन्द्र सागर जी ने भाषण मे लोहड सजनो के खिलाफ अनगल बाते कहना प्रारम्भ किया। यह कहते ही हम लोगो ने भाषण का विरोध किया। हल्ला मच गया। तब तब स्वय चन्द्र सागर जी ने कहा कि क्या देखते हो इन धमद्रोहियो को मार भगाओ। हम पर लाठी प्रहार होने लगा। हम भागकर बिछौनो के नीचे दुबक गये। उन सभा मण्डप कुरुक्षेत्र बन गया था। लोगो को चोटे आई। महिलाओ की भी दुर्दशा हुई। यह घटना अभूतपूर्व थी। सभा मण्डप मे पुलिस पहु च गई। सारा दोष लोहड साजन समथको पर डाला गया। तब पुलिस ने स्वय सेवको को गिरफ्तार किया और श्रीमान् सेठ गम्भीर मल जी पाण्डया, माणक चन्द जी बैनाडा आदि से मुचलके हुए। स्वयसेवकों की लकडिया जब्त की गई। उस समय हमारे ऊपर विरोधी लोगो की जबर्दस्त आख थी। विरोधियो ने हल्ला मचा दिया कि पुलिस द्वारा वे तो मार दिये गये। हमारी मातानी की हालत खराब हो गई। उधर मेरे परम मित्र चादमल जी काला की स्त्री की हालत खराब हो गई। हम दोनो भागकर काला जी के गाव पधार आ गये। हमारी उस समय स्थिति अकलक निष्कलक जैसी हो गई। पुलिस ने स्वय सेवको पर केस चलाया। जेल का हुक्म हुआ। अपील मे 51/— रुपय व्यक्ति के हिसाब से जुर्माना हुआ। इस पर मेरा और मेरे मित्र श्री चान्दमल जी का। वर्ष व 2 वष के लिए जातीय बहिष्कार का पुतवा निकाला, लेकिन समाज ने इसकी कोई कीमत नही दी, प्रस्ताव का घोर विरोध किया गया। उसके बाद समाज द्वारा कितनी ही पचायतो ने महासभा की नीति का विरोध किया और इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। नावा के बाद किशनगढ म महासभा बुलाई गई और इन लोगो के हाथ से महासभा छीनी गई। इन्दौर म सदा के लिए दफना दी गई। भग सेठ हुकमचन्द जी साहब ने घोषणा कर दी कि लोहड साजन भाई हमारे है। रोटी बेटी व्यवहार चालू रहेगा। इसी समय इन्दौर म मुनि श्री चन्द्रसागर जी का अखिल भारतीय स्तर पर बहिष्कार भी घोषणा की एसा व्यक्ति समाज मे दिगम्बर वेष मे रहने लायक नही। यह हमारी प्रथम विजय

थी। इस विजय के बाद इन्ही के गढ कुचामन मे श्रद्धेय प चैनसुख दास जी के नेतृत्व मे एक बहुत बडा दल पहुचा। जिसमे समाज के बहुमान्य नेता सर सेठ हुकम चन्द जी साहब, सेठ हीरालाल जी साहब कासलीवाल, सेठ तोलाराम जी गजराज जी गगवाल, सेठ बेवर चन्द जी गोधा, श्री सेठ गोपी चन्द जी ठोलिया, प भवरलाल जी न्यायतीर्थ मास्टर सा माणिक्य चन्द जी जयपुर श्रीमति मोहना देवी जयपुर आदि सकडो महानुभाव सम्मिलित हुए। हजारो लोगो ने रथ यात्रा मे भाग लिया और यहा पर इस विशाल आन्दोलन को समाप्त किया।

प्रश्न —सेठो के यहा नौकरी करते हुए आपने इतने सघर्ष अपनी इच्छा से किये अथवा मालिको की इच्छा से। आपके मालिको का आपके प्रति कैसा व्यवहार रहा है?

उत्तर —मैने समाज सुधार के लिए सघर्ष किया, व्यक्तिगत स्वार्थ के लिए नही और इसलिए जहाँ पर भी रहकर कार्य किया। समाज का पूरा सहयोग मिला। नारायणगज मे मेरे मालिक श्रीमान सेठ तोलाराम जी के सुपुत्र बाबू सा मदनलाल जी रहते थे। इनका मेरे पर अगाध प्रेम था। इनके घराने की मेरे पर बडी श्रद्धा रही। कभी भी नौकर के रूप मे मुझे नहीं देखा। नारायणगज मे एक साधु के पजे मे श्री बाबू मदनलाल जी आ गये। वे घबडा गये। मुझे बुलाया। मैने कहा चिन्ता मत करिये, आप शान्त बठे। मै गोरखा को लेकर पहुँच गया। महाराज को कहा आप रवाना होइये। उसने कहा मत्र से खत्म कर दू गा। मैने गोरखे को कहा बाबाजी के मत्र को आदूगर खत्म कर दो। इससे भेष धारी साधु घबराया और प्रस्थान कर गया।

मै नारायणगज छोडकर कलकत्ता आ गया। श्री सेठ साहब गजराज जी के पास। यहा भी हिन्दु मुस्लिम दगा चल रहा था। गवनमेंट का डिस्पोजल का काम भी सेठ साहब ने ले रखा था। उनकी 20 टर्के खाद्य सामग्री ढोने का काम करती थी। सेठ सा गजराज जी ने पालीगज मे 10 हजार हिन्दुओ को अपने जूट गोदाम म स्थान दिया। लेकिन उनके खान की समस्या सामने थी। मैंने साहस क साथ रास्ता निकाला। इनको बिना कहे चावल के टक हिन्दुओ के भोजन के लिये खाली करवा दिये और गवनमेंट के खाद्य विभाग को फोन कर देता कि मुसलमानो न चावल लूट लिय। जब यह घटना इनको मालूम हुई, तो मेरे मालिको न मेरी पीठ ठोकी। वास्तव म ऐसे मालिक भाग्य से ही म लते है। सामाजिक गतिविधि म बराबर इसी तरह चलती रही।

प्रश्न —आप अपनी नौकरी भी करते थे, सामाजिक सघर्ष भी करते रहे तो पारिवारिक समस्याओं का निराकरण कब और कसे करते थे।

उत्तर — परिवार को मै कम ही सभाल पाता था। जब मेरी द्वितीय पत्नी का स्वगवास हो गया। तो मन निर्णय लिया कि अब मैं विवाह नही करूगा और अपना जीवन सामाजिक सेवा और धार्मिक प्रचार म दूगा। इनके बीच म मेरे बाबा साहब के पुत्र श्री नथमल जी का असमय म स्वर्गवास हो गया था और छोटी उम्र म मेरी भौजाई विधवा हो गई थी। इनके स्वगवास न मुझे बेचैन

बना डाला था। इनके स्वर्गवास के बाद मैंने सब ऐश आराम को, इन तेल साबुन आदि का त्याग कर दिया था।

सेठ दुलीचन्द जी के कहने पर मैंने एक सिनेमा देखा था वह सिनेमा मेरे जीवन का पहला और अन्तिम सिनेमा था। इसी समय सिनेमा नहीं देखने का व्रत ले लिया था। मेरे जीवन में उदासीनता आ गई थी। मैं कलकत्ता में धार्मिक स्वाध्याय आदि में ज्यादा समय देता था। मेरे विरुद्ध सेठ गजराज जी को अन्य गुमाश्तों ने शिकायतें भी की, लेकिन उन्होंने यही कहा कि समाज के लिए इनका बलिदान काफी है। कलकत्ता में सर्विस करते हुये एक घटना सेठ गम्भीर मल जी के वृद्ध विवाह की घटित हो गई। हमने इस विवाह को रुकवाया। खण्डावा में अदालत में केस चला। इस केस में भी श्रीमान सेठ गजराज जी ने आगे होकर साथ दिया। इस केस की सारी जिम्मेदारी सर सेठ साहब हुकम चन्द जी ने ले रखी थी। केस में हमारी पार्टी विजयी हुई। इस मामले में मेरा एक परीक्षण का समय आया था। वकील के कहने पर सर सेठ साहब ने विश्वास किया कि हाकिम को कुछ देना पड़ेगा। मेरे को भेजा गया। मैंने वहां होशियारी से काम लिया। रुपये 25 हजार बचा लिये। सेठ साहब मेरे पर बड़े प्रसन्न हुए और मेरे सेठ तो होते ही। सेठ साहब ने मेरे मालिको को कहा कि सत्य धर जैसा ईमानदार हमने नहीं देखा। यदि इसकी जगह दूसरा होता तो रुपये हजम कर जाता। तब ही से सेठ साहब हुकमचन्द जी का मेरे पर अगाध प्रेम हो गया। खण्डावा केस में विजय होने के बाद श्रीमति लक्ष्मी बाई सेठ गजराज जी के गले पड़ गई। सेठ गजराज जी ने पहली धर्मपत्नी के होते हुए भी लक्ष्मी बाई के साथ 50 वर्ष की उम्र में विवाह कर लिया। यह विवाह मेरे लिए चैलेंज था। मैं विरोध में खड़ा हो गया। मैंने नौकरी की परवाह नहीं की।

प्रश्न —आन्दोलनों के बीच आपको नौकरी से हटाये जाने का भय कभी नहीं हुआ ?

उत्तर —मैंने सिद्धान्त के विरुद्ध कभी आन्दोलन नहीं किया और सिद्धान्त पर चलना मैंने अपना कर्तव्य माना। आगे की परवाह मैंने नहीं की मैंने एक वृद्ध विवाह को रोका और सेठ गजराज जी ने उसी लड़की से विवाह कर लिया यह उचित नहीं। कलकत्ता समाज की मेरे पर आंख गई। सब कहने लगे अब सत्यधर जी नौकरी करेंगे या गजराज जी के खिलाफ आन्दोलन करेंगे। मैंने मेरे सिद्धान्त के अनुसार नौकरी के लात मार दी। इनके खिलाफ आन्दोलन चालू कर दिया। मैं राजस्थान आ गया। राजस्थान में आते ही श्रद्धेय पंडित जी साहब ने मुझे साम्भर उनकी नमक की दुकान पर भेज दिया। साम्भर समाज में जल्दी ही स्थान पा लिया। कई धार्मिक सामाजिक कार्यों में भाग लिया। महावीर जयन्ती महोत्सव विशाल पैमाने पर चालू कराया। यहां 2--3 वर्ष तक नमक का काम किया। फिर नमक पर पाबंदी आ गई। लाइसेंस प्रणाली चालू हो गई। लाइसेंस उसी को दिया जाता था, जिसका 5 वर्ष का व्यवसाय था। लोगों ने शपथ देकर लाइसेंस ले लिया। मैं भी अदालत में गया। मुझे पूछा गया शपथ पूर्वक।

मैंने शपथ लेने से इन्कार किया लाइसेंस नहीं मिला। रात्रि को मजिस्ट्रेट ने घर पर

बुलाया। मेरे पर प्रसन्न होकर कहा, आप बहुत ईमानदार हैं। मैं आपको लाइसेंस देने को तैयार हूं। कहा कि आपको इसके तकलीफ नहीं दूंगा। मैं साभर से जयपुर आ गया। और मेरे मित्र श्री रेवती प्रसाद जी के साथ खादी का काम करने लगा। वहां से फिर मेरे अनन्य मित्र श्री चान्दमल जी काला ने खादी के काम में ले लिया और कुछ दिनों के लिए जयपुर मेरा स्थान बन गया।

प्रश्न –नौकरी छोड़ देने के बाद आप हतोत्साहित नहीं हुए ? आपने पारिवारिक जीवन किस प्रकार आगे बढ़ाया ?

उत्तर –नौकरी मेरा जीवन नहीं। मुझे अपने पुरुषार्थ पर पूरा भरोसा है, पूज्य माता जी की शारीरिक अवस्था ने छह वर्ष बाद मित्रों के दबाव व मुझे तीसरा विवाह करने के लिए इच्छा न होते हुए भी विवश कर डाला। मुझे मेरी आत्मा ने गवाह नहीं दी। उस समय मैं 28 वर्ष का था। जिस लड़की के साथ मेरा सम्बन्ध हुआ उसकी उम्र कम थी।

विरोध के पत्र मेरे पास पहुंचे। यह सम्बन्ध भी जयपुर के ही श्रीमान् सुन्दर लाल जी पाटोदी की सुपुत्री सौ. सूरज बाई से तय हुआ था और वहां से मुझे विवाह करना था। युवकों की मीटिंग में कुछ लोगों ने पूछा कि हमें उम्र से विरोध है या तृतीय विवाह से। बहुभाग ने कहा कि हमें उम्र से विरोध है। यदि उम्र 30 वर्ष से ऊपर की है तो शादी नहीं होने देंगे। वहां पर श्रीमान् मास्टर साहब माणिक्य चन्द जी उपस्थित थे। उन्होंने कहा कि उम्र 28 वर्ष से ऊपर की नहीं है। यह मैं विश्वास पूर्वक कहता हूं। इससे मेरा विरोध टला और मेरा विवाह बहुत ही सादगी के साथ जयपुर में हो गया। जयपुर में मैं खादी का काम माननीय मेरे मित्र चान्दमल जी के साथ करता रहा। उस समय खादी का काफी प्रचार था।

प्रश्न –आप हैं तो राजस्थानी मगर उज्जैनी कैसे बने ?

उत्तर –जयपुर में खादी का काम करते करते मेरा मन ऊब गया था। मैं चाहता था कि कहीं अन्यत्र जाकर खादी का काम किया जाय ताकि आर्थिक स्थिति में सुधार हो और मैं अपनी गृहस्थी का संरक्षण करता हुआ सामाजिक व धार्मिक क्षेत्र में विशाल रूप से अपने कदम बढ़ा सकूं। यह सोचकर मैं जयपुर से श्रद्धेय पूज्य भाई सा० चांदमलजी काला की इजाजत लेकर गुना (म०प्र०) आ गया। गुना 2-3 दिन रहा। मैंने शास्त्र-सभा भी की। लोगों से परिचय भी बढ़ा लेकिन गुना जमा नहीं। कुछ मित्रों ने सलाह दी कि आप उज्जैन जाइये। उज्जैन व्यापारिक स्थल है। आबादी भी काफी है। आप उज्जैन में सफल हो जायेंगे। उज्जैन का नाम सुनते ही मेरे हृदय में उज्जैन के प्रति जो भावनाएं थीं वे सब जागृत हो गईं क्योंकि विद्यार्थी जीवन से ही उज्जैन के प्रति मेरा आकर्षण था। पौराणिक ग्रन्थों में महापुरुषों के जीवन को लेकर जिन घटनाओं का उल्लेख था वे सब मेरे सामने आ गईं। मैंने निर्णय लिया कि उज्जैन जैसी पुण्य भूमि के प्रत्यक्ष दर्शन करके जीवन को सफल किया जाय। यह सोच कर गुना से बस द्वारा रवाना होकर उज्जैन आ गया।

प्रश्न – उज्जैन का प्रथम अनुभव आपको किस प्रकार हुआ ?

उत्तर – उज्जैन जाते समय रास्ते में एक सज्जन से भेंट हो गई थी। उनके साथ मैं [illegible] धर्मशाला में ठहर गया। ये सज्जन बड़े विकट थे। बोली में बड़े मीठे और चतुर थे। रात्रि

का धन्य है वहाने मुझे ऐसे स्थान की तरफ गया जिसकी म कल्पना भी नही कर मकता था। मेरा हृदय काप गया। बड़ी मुश्किल से किसी तरह अपने आपको बचाया। फिर मने उन महापुरुष से न कोई चर्चा की और न किसी प्रकार का सम्बन्ध रखा। धमशाला मे 2–3 दिन रहकर वे अपने स्थान को चले गये। तब शान्ति आई।

एक दिन मै काग्रेस आफिस म गया। उस समय शहर काग्रेस या जिला काग्रेस के अध्यक्ष माननीय स्वर्गीय बनारसीदासजी साहब जैन थे। वे स्थानकवासी जैन थे लेकिन राष्ट्रीय विचारधारा के होते हुए भी उन्होने मेरे साथ आत्मीय भावना से बातचीत की। इन्ही चर्चाओ मे मैने उनसे पूछा कि म यहा खादी भण्डार खोलना चाहता हू। क्या चल सकेगा ? उन्होने सहज भाव से सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कहा कि आप अवश्य खोलिये। खादी भण्डार अवश्य चलेगा। आवश्यकता है लगन और परिश्रम की। मध्य प्रदेश के नेता श्री पुस्तके सा० वहा पर बैठे हुए थे। चर्चा काल रहे थे। उन्होने मुझे बुला कर कहा कि आप यहा भूल कर भी खादी भण्डार नही खोलना। अन्यथा मै तीन दिन भी खादी भण्डार आपका नही चलने दूगा, मेरा नाम पुस्तके है और मै मध्य प्रदेश का नेता हू। उनके इस व्यवहार न मुझे उत्तेजित कर डाला। मैने कहा कि मै आपको नही जानता, आप कौन है ? लेकिन म आपके चैलेंज को स्वीकार करता हू। आपने तीन दिन का नाम लिया है। म भीख माग कर के भी तीन वर्ष तक खादी भण्डार चलाने की प्रतिज्ञा करता हू।

इससे वे काफी उत्तेजित होकर बोले कि देख लूगा। मेरे लिए वह अपरिचित स्थान था, लेकिन मन कहा कि सत्यधर, तू निर्णय का धनी है। बनारसीदासजी की बात का प्रश्न है। तेर को किसी भी स्थिति म उज्जन म खादी भण्डार खोलना है। यह चलेंज नही तेरे लिए वरदान है। मैने इस निर्णय के साथ मेरे परम मित्र श्रद्धेय चान्दमलजी सा० काला को पत्र लिख दिया कि उज्जन मेरे लिए प्रिय स्थान है। मने निर्णय ले लिया है कि म यहा खादी भण्डार खोल दू। आप तीन गाठ खादी की अविलम्ब भिजवा द।

प्रश्न – उज्जन में सामाजिक क्षेत्र मे आपने किस प्रकार स्थान प्राप्त किया ?

उत्तर – धार्मिक कायक्रमो म भाग लेने की रुचि मेरी शाश्वत रुचि है। उज्जैन मे आने के 2 3 दिन बाद ही परम पूज्य विश्व बन्धु भगवान महावीर का जयन्ती समारोह आ गया। यह विक्रम स० 2004 की बात है। म जुलूस मे सम्मिलित हुआ। एक दो कार्यकर्ताओ से चर्चायें की। रात्रि को 5 7 मिनट भगवान महावीर की विश्व को देन विषय पर मेरा भाषण भी हो गया। उस सभा के अध्यक्ष थे मध्यप्रदेश के भूतपूर्व वित्तमन्त्री माननीय सौभाग्यमलजी जन। मने इस भाषण मे कहा कि भगवान महावीर मानवता के सन्देश वाहक थे। इसी मानवता को जीवित रखन के लिये महावीर न अहिंसा अपरिग्रहवाद और अनेकान्त जसी विचारधाराये दी। जिससे राष्ट्र प्राणवान बना। इस भाषण से लोगो का मेरे प्रति आकषण बढा और सभा के बाद वहा के सुप्रसिद्ध सामाजिक कायकर्ता एव अदभुत विद्वान् अनन्तरामजी सा०, वद्य हकीम सा० फूलचन्दजी सा० और श्री मोहनलालजी गगवाल से मेरा परिचय हो गया। वहा पर ही मेरे सहपाठी श्री हजारीमलजी अजमेरा का मिलन भी हो गया। तीन-चार दिन बाद खादी की 3–4 गाठ आ गई और श्रीमान् धीमालालजी सा० बागडिया के सहयोग से दि० जैन धमशाला मे एक दुकान मिल गई। यहा से सामाजिक क्षेत्र मे मेरा प्रवेश उज्जन मे हुआ।

प्रश्न –धार्मिक सस्कारों से सामाजिक और व्यवसायिक क्षेत्र मे आपको अनेक महत्वपूर्ण सफलताए मिली, इस विषय मे आपके क्या विचार है ?

उत्तर – धार्मिक सस्कारो न पथभ्रष्ट होने से बचाया तथा समाज स जोड़ा। जहां भी गया स्वाध्याय मने जारी रखा। उस समय उज्जन मन्दिर म श्रीमान मामाजी फून्दालालजी सा० टोग्या शास्त्र पढते थे। वे मेरे स बडे प्रभावित हुए। उन्होने मर से आग्रह किया कि शास्त्र आप ही पढ़िए। मन फौरन स्वीकृति दे दी। म अब नित्य प्रति शास्त्र सभा म जान लगा और उनी क साथ साप्ताहिक प्रार्थना का आयोजन प्रारम्भ कर दिया।

प्रश्न –उज्जन मे व्यवसाय का प्रारम्भ आपने किस प्रकार किया ?

उत्तर – जिस धर्मशाला म मैं ठहरा हुआ था उसी धर्मशाला म मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त माननीय वासुदेवजी साहब आयुर्वेदाचार्य चिकित्सक पद पर आसीन थ। वे बडे उदार हृदयी सज्जन थे। मैंने उनसे निवेदन किया कि म यहा खादी भण्डार खोलने आया हू। आप आशीर्वाद दीजिये। मैं चाहता हू खादी भण्डार का उद्घाटन आपके कर-कमलो स हो। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि सेठी जी आपका निवेदन स्वीकार है। मैंने उन्ही के हाथ से सकडो भाइयो की उपस्थिति म उद्घाटन करा डाला और उसी दिन करीब 1500/– रुपयो की खादी बिक्री हो गई। यह बिक्री बढती ही गई। मेरा यह विकास पुस्तके साहब के लिए असह्य हो गया। व विरोध क लिए मैदान मे आ गये। लेकिन मेरे भी कुछ कांग्रेसी मित्र थे, जिन्होने मुझे बल दिया, शक्ति दी और प्रेरणायें दी। वे थे श्री रामनिवासजी गोयल, श्री बांकेबिहारीलालजी पांडे आदि। विधान सभा में प्रश्न उठाया। उज्जैन कोर्ट मे भी मेरे ऊपर केस चलाया गया। लेकिन वे कहीं भी सफल न हो सके। उनके विरोध ने मेरे को और भी जीवित कर दिया और मरी खादी के ग्राहक बढत गय। मैं यहा श्रीमान हीरालालजी सा० शर्मा और वहीद भाई कुरेशी आदि को भी नहीं भूल सकता। जिनका मरे साथ अपूर्व सहयोग रहा और इन्होंने मेरे को इस क्षेत्र म बढ़ा मे पूर्ण सहयोग दिया।

प्रश्न –उज्जैन मे रहते हुए आपने यहा की सास्कृतिक स्थिति का कैसा अनुभव किया ?

उत्तर – यहा पर सार्वजनिक क्षेत्र म गतिमान उज्जयनी विकास समिति नाम की सस्था थी उसके सदस्य व सचालक थे माननीय प० सा० अनन्तरामजी वद्य, डॉ० महाडिक सा०, श्री दौलतरामजी वकील सा०, श्री मदनलालजी गोयल आदि ये कर्मठ सदस्य। यही एक सस्था थी जो उज्जन के विकास क हर क्षत्र मे अपने कदम बढाती थी। ये सब नित्य ऐतिहासिक स्थलो के निरीक्षण के लिए भी जाते थे और आवश्यकीय पुरातन सामग्री का सरक्षण भी करते थे। जिनम जैन मूर्तियो व मन्दिरो के अवशेष भी टुकडो के रुप मे बिखरे मिलते थे। इससे मेरे हृदय मे एक ठेस पैदा हुई कि जैनो की इस एतिहासिक सम्पदा को बचाने क लिए इस प्रान्त में जैनो की विपुल सख्या होते हुए भी कोई प्रयत्न नही किया गया और आज वह पद दलित होकर खत्म हो रही है। उज्जैन जैनो का नहीं किन्तु हिन्दुओ का भी एक उल्लेखनीय स्थल रहा है जो भारतवर्ष मे एक आदर्श तीर्थस्थल माना जाता

है। जिसके दर्शनों के लिये प्रतिदिन हजारों यात्री और विदेशी पर्यटक आते ही रहते हैं। इन सबका आकर्षक केन्द्र रहा है महाकाल का मन्दिर।

यहां आकर मैंने मेरा लक्ष्य बनाया पुरातन सम्पदा के संरक्षण के लिए प्रयत्न। मैं आया उन दिनों में यहां एक जर्मन लेडी थी श्रीमती क्राउझे। ये एक विदेशी महिला थी भोजप्रिय व जैन धर्म व उसकी संस्कृति में रुचि रखने वाली महिला। उज्जैन का महाकाल मन्दिर भारतवर्ष में एक प्रसिद्ध मन्दिर है और वह ज्योति लिंग माना जाता है। इसकी ख्याति विश्वभर में मानी जाती है। लेकिन यह मन्दिर किसी समय दि० जैन मन्दिर था। शैव और जैनों के संघर्ष में यह मन्दिर जैनों के हाथ से निकल गया और शैव पंथियों के हाथ में चला गया। जर्मन लेडी क्राउझे ने चैलेंज के साथ यह सिद्ध किया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर मैंने भी इसके सम्बन्ध में प्रमाण एकत्रित किये हैं लेकिन क्या किया जाय। ऐसे यहां एक मन्दिर नहीं अनेकों मन्दिर हैं जो पहले जैन मन्दिर थे और आज वे महादेव मन्दिर हैं। मध्यप्रदेश या प्राचीन मालवा में साम्प्रदायिक संघर्ष में जैनों पर अकथनीय अत्याचार हुए हैं। मूर्तियां टूटी हैं और मन्दिर नष्ट किये गये हैं। जिनके प्रमाण हैं गोअर और मालवा के कण-कण में बिखरे हुए अवशेष। इन अवशेषों ने मेरे भी हृदय को हिला डाला और मैंने संकल्प लिया इनको बटोरने का।

उन्हीं दिनों में यानी सं० 2005 में जैन समाज के अनिभिषिक्त सम्राट राव राजा राजरत्न सर सेठ हुकमचन्दजी साहब की अध्यक्षता में मालवा प्रान्तीय दिगम्बर जैन सभा का अधिवेशन बड़नगर में था। मैं भी उस अधिवेशन में पहुंच गया। सभा के अनेक विभागों में एक विभाग पुरातत्व संरक्षण का भी था। जिसके मन्त्री थे माननीय सेठ देवकुमारजी सा० कासलीवाल, इन्दौर। वे इस विभाग में कोई काम नहीं कर सके। क्योंकि पुरातत्व सम्पदा बिखरी हुई पड़ी थी, गांवों में, पहाड़ों में और जंगलों में। जहां एक दो मनुष्य का जाना बड़ा मुश्किल था। मेरी आत्मा में पहले से ही दर्द था। मैंने इस विषय को उठा डाला। मैं उस प्रान्त में नया था। सबकी दृष्टि मेरे पर गई। सेठ सा० सम्भ्रम कर बोल उठे, आप कौन हैं ? कहां से आये हैं ? मैंने कहा, मैं वही सत्यधरकुमार सेठी हूं जिसने राजस्थान में सोहड़ साजन आन्दोलन में अपने आपको समर्पित किया और अब आया हूं उज्जैन। मेरा नाम सुनते ही सेठ साहब ने मुझे अपने पास बुला लिया और कहा कि बेटा क्या यह काम तुम कर सकोगे ? मैंने कहा—आपका आशीर्वाद होना चाहिये। उसी समय वह विभाग मेरे जुम्मे कर दिया गया और मैंने सहर्ष स्वीकार किया। उज्जैन में आते ही यह प्रश्न मैंने श्रद्धेय सेठ सा० लालचन्दजी साहब सेठी स्वर्गीय पं० अनन्तरामजी साहब, हकीम साहब फूलचन्दजी सेठ जवाहरलालजी साहब गंगवाल के सामने रखा। वे हर्ष से विभोर होकर बोले आपका प्रस्ताव स्वीकार है। हम सब व उज्जैन का जैन समाज आपके साथ है। इस कार्य में माननीय सेठ साहब और मेरे चिर साथियों ने इतनी रुचि ली कि जगह-जगह जाकर पदमाकर जैसे स्थान से सैकड़ों मूर्तियां खण्डहरों का एकत्र करवाया और उज्जैन में एक विशाल संग्रहालय को जन्म दे डाला जो आज श्री दि० जैन पुरातत्व संग्रहालय के नाम से भारतवर्ष व उसके बाहर विख्यात है।

मितव्ययी विचारधारा न। मैंने इस तरह मेरे जीवन को बाधा। लाखों रुपये मैंने पैदा किये, लेकिन मेरे जीवन मे कोई बुराई नही पनप सकी। मैं मितव्ययी तो इतना रहा कि व्यर्थ का एक पैसा बच्चो को भी मैंने नहीं दिया। दुकान पर भी सीमित खर्चा रखा। व्यापारी को एक चाय का कप भी नही पिलाया। पक्की रसीद चटटा आज तक भी मैंने नही छपाया। बैंको मे खाता खोलने के लिये मेरे फाम की सील तक मैंने नही बनाई। आज सब जगह मेरी कच्ची रसीदें ही काम करती हैं। यह मेरी एक व्यापारी जगत मे मान्यता है। मेरा नैतिक जीवन है। दुकान पर एक भाव है। चाहे छोटा व्यापारी हो या बडा। मेरी दुकान पर बीडी सिगरेट पीने वाला चढ नही सकता। दूर से ही बीडी सिगरेट फैंक देते हैं। मैंने व्यापार छोडकर दुकान पर हजारो को बीडी सिगरेट और चमडे का त्याग कराया है। मैंने कभी टैक्स चोरी नही की है। न व्यापारियो के साथ झगडे किय है। भारत के हर कौने से बिना बैंक बिल्टी से माल आता है। यह मेरी प्रामाणिकता है। व्यापार मे दाम लगाने मे कभी भूल हुई है तो मैंने मेरे व्यापारी को रुपये बुलाकर वापिस लौटाये है। यह बात सब जानते है।

प्रश्न – आपकी प्रगति ख्याति से लोग आपके विरोधी नहीं बने ? और विरोधियो के बीच आपने काय किस प्रकार किये ?

उत्तर – मेरी बढती हुई ख्याति से कुछ लोगो ने विरोध मे भी कदम उठाये है। मुझे चलेंज भी मिले हैं। गुण्डो न घेराव भी किया है, गुण्डो ने ताले भी तोडे है। आर्थिक नुकसान भी काफी पहुचाया है। लेकिन इन विरोधों ने मुझे जीवन दिया है, जागृति दी है और प्रेरणायें दी है। कई जगह विरोध होने के बाद मुझे सम्मान और अभिनन्दन मिले है। उन विरोधियो को मैंने कभी विरोधी स्वीकार नही किया। उनको पत्र लिखकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की है। आज भी उनका मै कृतज्ञ हू। उनमे मैं श्री मरु लाल जी सुहाडिया और श्री राज मल जी विन्धायक्या का उपकार मानता हू। इन दोनों ही सज्जनो का वरदहस्त मेरे सिर पर रहा है। जिससे मैं बढता ही बढता गया।

विरोध का कारण है कि पाठशालाओं की स्थापना, बढता हुआ वचस्व पचामृत का विरोध, स्त्रियो की प्रक्षाल, फूल पुष्प आदि का विरोध और मुनियो मे व्याप्त शिथिलाचार का विरोध। मैं कभी दि० जैन संतो का विरोधी नही रहा हू। विरोधी रहा शिथिलाचार का, मत्र यत्र तत्रो के प्रचार का, क्षेत्रपाल और पद्मावती की मूर्तियों की प्रतिष्ठा और पूजा का तथा आहार दान मे बरती हुई। भिक्षावृत्ति का साथ मे रहने वाला आडम्बर का और महिलाओं की मैंने परम आदर के साथ सेवा की है परम पूज्य आचार्य सूर्य सागर महाराज, आचार्य धर्म सागर जी महाराज, परम् गुरु विद्यान [illegible] महाराज, विद्यासागर जी महाराज, जयसागर जी महाराज आदि मुनिवरों और संतो की, साथ मे आदर किया है आध्यात्मिक सन्त कान जी स्वामी का। एक महापुरुष के रूप मे इस युग मे इनके द्वारा दिगम्बर धर्म का बडा उपकार हुआ है। हमारा आदर्श वीतरागता प्राप्त करने का है। जिसकी प्राप्ति के लिय आडम्बरी जीवन आवश्यकता नहीं।

प्रश्न –आपने संघर्ष यात्राएँ बहुत की है तो तीर्थ यात्राओ के विषय मे आपके विचार क्या रहे – बताने की कृपा करें ?

उत्तर –मैंने मेरे जीवन मे मेरी धर्मपत्नी के साथ सब ही परम् पावन तीर्थस्थलो की यात्रा कर डाली है लेकिन इन यात्राओ मे मेरी रूढ़ीग्रस्त भावनाये नही रही। वन्दना के साथ ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी मेरा रहा इसलिये अध्ययन की दृष्टि से कई स्थलो पर एक एक सप्ताह तक भी रहा वास्तव मे पुरातत्व सम्पदायें इन तीर्थों पर मुझे कम ही देखने को मिली। सम्मेद शिखर जैसे प्राचीन और अनादि तीर्थ पर एक भी प्राचीन अवशेष नही मिला। एक मूर्ति अवश्य विराजमान है। प्राचीनता की दृष्टि से मांगी तुंगी के पहाडो मे उत्कीर्णित मूर्तियां, गयाजी के पास उपेक्षित क्षेत्र कोल्हुवा पहाड की प्राचीन मूर्तियां, कुण्डलपुर मे श्वेताम्बर मन्दिर मे रक्खी हुई प्राचीन मूर्तियां, राजगृही मे विपुलाचल पहाड पर बिखरी मूर्तियां अवश्य महत्व रखती है लेकिन जन समाज का ध्यान इनकी तरफ बिल्कुल नही है। मेरी समझ मे बिहार मे गया जी के पास जो कोल्हुवा पहाड है वह हमारा कोई महान् तीर्थ होना चाहिये। इतिहास के विद्वानो का ध्यान अवश्य जाना चाहिये। मैं चाहता हू ज्ञानपीठ जैसी संस्था इसके लिए कदम बढाये। इन तीर्थों मे मैंने सम्मेद शिखर जी जैसे पुण्य क्षेत्र पर कई चमत्कारिक घटनायें भी देखी हैं जो सत्य है और कई आडम्बर पूर्ण घटनायें भी जिन पर मेरा विश्वास नहीं।

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध सेठ प्रतापमल जी बगडा ने श्री सम्मेद शिखर पर प्रतिष्ठा कराई थी। मैं भी स्वयं सेवक के रूप मे गया था। सूतक अवस्था मे ही उन्होंने अपनी पुत्र वधु को इन्द्राणी बनाकर हाथी पर बैठा रहे थे। मैं पहुंच गया। मैंने कहा सेठ साहब यह उचित नही। उन्होंने कहा सत्यधर जी यह मौका बार बार नही आता। मैं प्रतिष्ठाचार्य प० धन्नालालजी पाटणी केकडी वालो के पास गया, बात सुनाई नही गई। इन्द्राणी हाथी पर बैठ गई। बैठते ही हाथी की पीठ टेढी हो गई। मैंने सावधान किया। फिर भी उन्होंने नही माना। हाथी पर बैठा दी। पाच मिनट नही हुए कि वर्षा ने भयंकर रूप दे डाला। पाच मिनट मे पंडाल और तम्बु जमीन पर धराशायी हो गये। प्रलय जैसा दृश्य हो गया। लोगो मे भगदड मच गई।

प० कस्तूर चन्द जी शास्त्री बाकरमा के जमाई ने एक नाटक रचा–भूत प्रेत आने का। भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सामने। बड़ा विकराल रूप बना डाला। सैकडो लोग एकत्रित हो गये। मैं भी पहुँच गया। मैं सीधा ही उनके पास पहुँच गया। उसके हाव–भाव से मैंने देखा कि न उसके शरीर मे [illegible] है और न ही भूत प्रेत। वह कहता था हट जाओ। क्षेत्रपाल जी मेरे शरीर मे [illegible] है। [illegible] मे भी भूत आ गया। साहस पूर्वक आगे बढा। उसके मानो हाथ पकड [illegible] कि [illegible] तमाशा ठीक नही। हट जाइये। उन महाराज ने कहा कि हट जाइये। मैं [illegible] दूंगा। [illegible] तो आपको छोड दूंगा। सातवी फूंक मे धरणेन्द्र भार दिया। मेरे [illegible] हो गया। उस समय मेरी द्वितीय पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। मैंने कहा ये ही नही। [illegible] एक लात धर दी। जमीन पर गिर गये। भूत

भा गया। घसीट कर मन्दिर के बाहर पटक दिया। लोग स्तब्ध रह गये। वास्तव मे परम् पूज्य सम्मेद शिखर एक आदर्श तीर्थ है। ऊपर मे बहुत शान्ति मिलती है। मानव को एक अवसर मिलता आत्म निरीक्षण का। कई बार पुन उस पुण्य भूमि के दर्शनो की प्यास जागृत हो जाती है। ऐसे मैने करीब 8 बार तीर्थ राज की वन्दनाए की है। इसी के साथ मैने विहार, बगाल और उडीसा के सब ही तीर्थों की वन्दना की। राजगृही के पाचो पहाडो की वन्दना मे भी अपूर्व आनन्द रहा। ऋजुकुला नदी के तट पर भी मैं गया। सिर्फ श्वेताम्बर समाज का मन्दिर देखने को मिला। दिगम्बर प्रतिमाये एक ताक मे पडी हुई मिली। भगवान् महावीर ने वहा केवल्य प्राप्त किया है। वह हमारा ऐतिहासिक स्थल है। इसके लिये दिगम्बर जैन समाज विचार करे। खण्डगिरी उडीसा मे एक आदर्श तीर्थ स्थल है। वहा पर आत्मार्थियो के लिए चिन्तन के साधन है। जबकि वहा 3 घण्टे मे दर्शन करके यात्री लौट जाते है। तब मै करीब 5 दि उन कन्दराओ के बीच रहा। फिर भी हटने की इच्छा नही हुई। मै तो मानता हू कि यह साधन स्थल है। यहा पुरुषो ने इन्ही स्थलो पर विराजमान होकर आत्म लाभ लिया है। परिणामो की निर्मलता के लिए तो ये पुण्य भूमिया है ही। किन्तु इनके पीछे हमारा हजारो वर्षों का इतिहास भी छिपा हुआ है। इन प्राचीन स्थलों पर खुदाई की जाय अनुसधान किया जाय तो भारतीय इतिहास के पन्नो पर अभूतपूर्व परिवर्तन आ सकता है। भारत का ऐसा कोई प्रान्त बुन्देल खण्ड और पूरे मध्यप्रदेश के तीर्थों की वन्दना कर डाली। आज म इन तीर्थों की वन्दना करके अपने आप को भाग्यशाली मानता हू।

प्रश्न – वर्तमान जीवन का किसी प्रकार चल रहा है ? और क्या आप पूर्व वत ही समाज को अपनी सेवाए प्रदान कर रहे हैं ? तथा आपके पदचिन्हो पर आपका परिवार कहा तक चल पा रहा है ?

उत्तर – वीतरागी देव शास्त्र और गुरु की सम्यक सेवा करते हुए मैं अपने जीवन पूर्ण सात्विक जीवन बनाने का प्रयत्न करता हू। साथ ही संदिग्रस्थ लोगो का समझाकर दिशा बोध देने का बराबर आज भी प्रयत्न मेरा जारी है। शास्त्र स्वाध्याय मेरा अभी भी नियमित से चलता है। मेरा परिवार मुझ से सन्तुष्ट है। परिवार के सभी सदस्यों पर मेरी सात्विकता का पूरा प्रभाव है।

उज्जैन मे मेरे दो प्रतिष्ठान हैं। एक का नाम नटवर कुमार सुशील कुमार, दूसरे का नाम रजनीश एण्ड कम्पनी दोनो पर ही कैश का लेने देने है।

उज्जैन आने के बाद मेरी परम् श्रद्धेय माता श्री जोधा बाई का स्वर्गवास हो गया। मैंने उनके स्वर्गवास पर किसी भी प्रकार की रूढि का परिपालन नही किया। कुटुम्बी जनो के अति आग्रह पर भी मैंने न मृत्युभोज किया और न घडी या बरतन आदि वितरण किय। मेरी धर्मपत्नी श्री सूरज कुमारी के हाथो पर अब गृहस्थी का भार आ पडा। मेरी भी जिम्मेदारिया बढ गई। मेरे तीन पुत्र रे चार पाच पुत्रिया। मैंने हमेशा इनके जीवन को सजोने का प्रयत्न किया। इन सबसे पहले धार्मिक शिक्षण देना उचित समझा। जिससे इनके जीवन मे किसी भी प्रकार की बुराई नही आ सकी। मैं

स्वयं विलासी नहीं था। सादा मेरा जीवन था, मितव्ययता मेरे जीवन का लक्ष्य था। इससे मेरे जीवन में किसी भी तरह की अशान्ति नहीं आई। मेरे सामाजिक जीवन में मेरा कदम न थमा सब से बड़ा सहयोग रहा तो मेरी धर्मपत्नी का। वह स्वयं धार्मिक है। स्वभाव में नम्र और व्यवहार में बड़ी मधुर है। मैं दुकान के काम में भी व्यस्त रहता था और सामाजिक कार्यों में भी लगा रहता था। उनकी भावना के ऊपर मैं उनका कोई भी काम समय पर पूरा नहीं कर सका। लेकिन उनको कभी भी मनताप नहीं हुआ। कई बार तो वह बच्चों को मिर्च नमक मिर्च के साथ रोटी खिलाकर सन्तोष मानती थी। लेकिन मुझे एक शब्द भी नहीं कहती थी। आज वह धार्मिक विचारधारा की महिला है। प्रात: 5 बजे उठती है। घर का काम करती है। 7 बजे मन्दिर जाती है और 9 बजे मन्दिर से लौटकर आती है। पाँचों पुत्रियों के सम्बन्ध सम्पन्न घरानों में हो चुके हैं। पाँचों ही सुशिक्षित हैं, धार्मिक हैं। इनका परिपालन ऐसे ढंग से किया गया है जिससे वर्तमान जीवन का उनके हृदय पर कोई असर नहीं है।

आप आश्चर्य करेंगे यह जानकर मैंने इनको मेरी दुकान पर कपड़े के सैंपल आते थे उनकी फिराकें बनाकर पहनाई हैं। जिनको देखकर लोग आश्चर्य करते थे। लेकिन मेरे घर में पूरा सन्तोष था। आज उस जीवन से इन सबके ससुराल में इनके प्रति आदर की भावना है। मैंने पाँचों बच्चियों के सम्बन्ध कर दिये हैं। मेरे सामने कोई समस्या उलझन की नहीं आई न मेरे सामने इनके सम्बन्ध में मेरे सम्बन्धियों ने लेन देन का प्रश्न उठाया। वास्तव में मैं उन सबका पूर्ण कृतज्ञ हूँ। आज भी वे मेरे, मेरे व्यवहार से पूर्ण सन्तुष्ट हैं। मुझे भी गर्व है कि मुझे इस युग में ऐसे ब्याही मिले। पुत्रियों के नाम हैं कनकप्रभा विद्युतप्रभा, मनवाला ज्ञानश्री और शारदा। स्नेह भलवाला और ज्ञानश्री सामाजिक गतिविधियों में काफी अग्रसर है। बड़ी-बड़ी सभाओं में प्रमुख व्याख्याता के रूप में जाती है।

मेरे बड़े पुत्र का नाम सुशील है, दूसरे का नाम रजनीश और तीसरे का नाम सञ्जय। तीनों ही पुत्र धार्मिक हैं, आज्ञाकारी हैं और वर्तमान वातावरण से दूर हैं। नित्य दर्शन करते हैं जाप करते हैं। न रात्रि भोजन करते हैं और न अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते हैं।

मेरे बड़े पुत्र का विवाह मैंने राजस्थान में एक गाँव की लड़की से किया है इसका नाम है—रविकान्ता। जब मैं और मेरी धर्मपत्नी इसका चयन करने को राजस्थान में गये। लड़की हमारे सामने हँसती हुई आई। मैंने पूजा पाठ के सम्बन्ध में जानकारी चाही। हमको सन्तोष हुआ। हमारे सामने उनका पूरा परिवार बैठा हुआ था। साथ में कलकत्ता के कुछ परिचित मित्र भी थे। मैंने लड़की से साफ बात पूछी। मैं गाँधीवादी विचारधारा का आदमी हूँ। सादा जीवन है। स्वावलम्बी हूँ। मेरे घर में सब काम हाथ से करते हैं। बर्तन हाथ से साफ करते हैं बर्तन स्वयं साफ करते हैं और कपड़े भी हाथ से धोते हैं। क्या तुम दोनों काम करने को तत्पर हो? लड़की ने सहर्ष स्वीकार किया। मैंने भी बिना किसी शर्त के लड़की का कह दिया इसको भी तुम स्वीकार हो। इससे घर वाले खुशी से उछल पड़े। मेरी धर्मपत्नी ने कहा कि चेहरे पर एक दाग है। दूसरी लड़की और देख लें। मैंने कहा यह दाग तो फिर भी हो सकता है। लड़की सुशील है। इसी से सम्बन्ध कर लेना है। धर्मपत्नी

ने कहा ठीक है। लडकी के काका मिश्रीलाल जी साहब ने मुझे बुलाकर एकान्त मे पूछा आपकी और कोई शर्त है? मैने कहा मेरा सम्बन्ध लडकी से है, पैसे से नही। मैं विवाहो मे सोदेबाजी नही करता। विवाह आप अपनी मर्जी से करिये।

वे बड़े सन्तुष्ट हुए और उन्होंने बरातियो की खातिरी करने मे कमाल कर दिया। उज्जैन के बरातियो ने कह दिया कि ऐसी खातिरी हमेशा याद रहेगी। आज वह लडकी प्रात 5 बजे उठती है। प्रेम से घर का कार्य करती है। समन्वय विचारो से रहती है और नित्य अपनी सासु जी के पैर दबाकर सोती है। पाचो ही ननदो से इतना प्रेम है कि वे जाती हैं तो बिलख बिलख कर रोती है। मेरे घर मे कही भी कोई ताला नही है और न किसी भी प्रकार की अलगाव है। परिवार पूर्ण अनुशासन बद्ध है। मेरे दो पौत्र हैं, मनीष और विवेक एवम् एक पौत्री है जिसका नाम त्रिशला रानी है। दो पुत्र अभी पढ रहे हैं। आज मेरा पूर्ण निराकुलित जीवन है। मेरे व्यवसाय मे तीनो ही पुत्रो का सहयोग है। एक पुत्र रजनीश क्रिकेट का खिलाडी अवश्य है। मुझे सबसे बडी प्रसन्नता है कि आज के इस युग मे मेरे बच्चे सिनेमा तक की चर्चा नही करते और न ट्रांजिस्टर के गीत सुनते। अन्न सकट आने पर भारत के प्रधान मन्त्री स्वर्गीय लालबहादुर शास्त्री की घोषणा व आदेश पर मैंने अपने बच्चो का कितने ही दिनो तक एक वक्त भोजन कराया। पानी का कम से कम उपयोग किया। आज भी बिजली सकट पर मेरे घर मे बहुत कम से कम बिजली का उपयोग होता है।

प्रश्न – वर्तमान मे आप किन किन सस्थाओ की सेवा कर रहे हैं?

उत्तर –लोगो के प्रेम, सम्मान, श्रद्धा के कारण निम्न सस्थाओ से सम्बन्धित हू।

1 अखिल विश्व जैन मिशन प्रचार मन्त्री तथा मध्यप्रदेश शाखा का उपाध्यक्ष।

2 भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद्-देहली मन्त्री, कार्यकारिणी सदस्य।

3 दिगम्बर जैन महासमिति-सदस्य प्रबन्ध समिति व समन्वय समिति।

4 अखिल भारतीय दिगम्बर जैन विद्वत परिषद्-सदस्य।

5 श्री मालवा प्रान्तीय दिगम्बर जैन सभा प्रबन्ध समिति-सदस्य।

6 महावीर ट्रस्ट इन्दौर-प्रबन्ध कार्यकारणी सदस्य।

7 मा प्रा समाश्रित छात्रावास-मन्त्री।

8 श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र मक्सी कमेटी-सदस्य।

9 श्री दिगम्बर जैन छात्रावास मक्सी समिति-सदस्य।

10 उज्जैन सभागीय महावीर ट्रस्ट उज्जैन का सयोजक।

11 श्री श्रुत सागर दिगम्बर जैन उच्चतर माध्यमिक विद्यालय उज्जैन का सस्थापक व उपाध्यक्ष।

12 श्री श्रुत सागर दिगम्बर जैन माध्यमिक प्राथमिक विद्यालय का सस्थापक व उपाध्यक्ष।

13 श्री दिगम्बर जैन पचायत मन्दिर नमक मण्डी ट्रस्ट का मन्त्री।

14 श्री मा प्रा दिगम्बर जैन् पुरातत्व सग्रहालय या सस्थापक व मन्त्री।

15 ऐलक पन्ना लाल दिगम्बर जैन सरस्वती भवन का सचालक।

16 श्री महावीर दिगम्बर जैन रात्रि पाठशाला-अध्यक्ष।

17 होल सेल क्लॉथ मर्चेन्टस एसोसिएशन का जन्मदाता, वतमान म उपाध्यक्ष।

18 वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति उज्जैन का जन्मदाता।

19 वस्त्र व्यवसायी पारमार्थिक औषधालय उज्जैन का जन्मदाता व अध्यक्ष।

20 जन शिक्षण समिति-उपाध्यक्ष।

21 श्री ज्ञान सागर कन्या विद्यालय उज्जैन का मन्त्री।

22 असमथ सहायता फण्ड उज्जन का जन्मदाता व सचालक।

23 श्री महावीर जैन सभा मालवा सलाहकार समिति-सदस्य।

24 श्री महावीर जयन्ती महोत्सव का सयोजक।

25 राजकीय पुरातत्व समिति उज्जैन जिले का सदस्य।

26 विश्व हिन्दू परिषद् उज्जैन जिला-उपाध्यक्ष।

27 सर्वोदय समाज सम्मेलन-सदस्य,

28 परस्पर सहकारी गृह निर्माण समिति का सदस्य।

इस तरह और भी सावजनिक सस्थाओ का सहयोगी हू। अखिल भारतीय सर्वोदय समाज का मैं स्वागताध्यक्ष रहा। जिसमे मैने स्पष्ट रूप से वतलाया कि सर्वोदय का नारा भगवान् महावीर का है। जिन्होने प्राणी मात्र के विकास व सरक्षण के लिये मानव समाज को प्रेरित किया।

प्रश्न – आपके उज्जैन में आने के बाद कौन-कौन सी उल्लेखनीय सेवाये मानते है?

उत्तर – मेरे आने के बाद उज्जन मे उल्लेखनीय सेवायें निम्न मान सकते हैं —

1 परम् पूज्य 108 ऐलाचार्य विद्यानन्द जी महाराज का पदापण। 2 महीने तक उनके सावजनिक भाषणो की व्यवस्था।

2 श्री नमक मण्डी दिगम्बर जन मन्दिर मे विशाल भवन का निर्माण। शिलान्यास सुप्रसिद्ध उद्योगपति साहू शान्ति प्रसाद जी के कर कमलो से।

3 धार्मिक सामाजिक सस्थाओ की स्थापना-विद्यालय कन्या पाठशाला, पुरातत्व सग्रहालय, सरस्वती भवन आदि।

4 समाज मे व्याप्त कुरीतियो व धार्मिक रूढियो का विरोध, मृत्युभोजन, पर्दाप्रथा, रात्रिभोजन आदि।

5 युवको मे जागृति व प्रेरणायें देना।

6 महावीर जयन्ती समारोह को विशाल रूप देना, महिला सम्मेलन, युवक सम्मेलन आदि का आयोजन।

7 श्वेताम्बर दिगम्बर समाज के समन्वय के लिये कदम बढाना।

8 सर्वधर्म सम्मेलनो मे जाना और जैन धर्म के सिद्धान्तो का प्रचार करना।

9 महावीर कीर्ति स्तम्भ के निर्माण के लिये प्रयास करना व उसके लिये स्थान की स्वीकृति लेना।

10 महावीर बाल सस्कार केन्द्र खोलने का प्रयास व उसके लिये समाज की तरफ से भवन खरीदना व महावीर ट्रस्ट इन्दौर के अनुदान के रूप म 51,000 (इक्यावन हजार) की स्वीकृति लेना।

11 क्षीरसागर पर दिगम्बर जैन मन्दिर निर्माण म सहयोग देना।

प्रश्न – आप अपने उज्जैन के सहयोगी व अनन्य हितैषी जनों के विषय में क्या विचार है ?

उत्तर – मैं समाज मे जो कुछ भी कर सका हू अपने अनेक सहयोगी महानुभावों के सहयोग का फल है। स्वर्गीय रा व सेठ लालचन्द जी सा सेठी, स्वर्गीय प अनन्त राम जी सा आयुर्वेदाचार्य, हकीम फूलचन्द जी सा जैन श्रीमान् बाबू सा भूपेन्द्र कुमार जी सेठी, श्रीमान् बाबू सा तेज कुमार जी सेठी, श्रीमती सेठानी साहिबा तेज कुमारी जी सेठी, श्रीमान् बाबू नन्द लाल जी कासलीवाल, श्रीमान् फूलचन्द जी झांझरी, श्रीमान् ललित कुमार जी सा पाण्ड्या, श्री शकरलाल जी सा सेठी, श्री सत्यधर कुमार जी बैनाडा, स्वर्गीय सेठ जवाहर लाल जी बगवाल, श्री सेठ सूरजमल जी सा पाटनी, श्रीमान् प दादा गुलाबचन्द जी सा बडजात्या व दि जैन नवयुवक मण्डल नमक मण्डी।

मैं माननीय डा पी डी वाकणकर, श्री डा सुरेन्द्र कुमार जी गार्ग और श्रीमती कुमारी भारती अध्यक्षा, राजकीय पुरातत्व विभाग को भी नहीं भूल सकता। जिनकी सग्राहलय के विकास मे पूर्ण सहयोग रहा। ऐलक पन्नालाल जी जैन सरस्वती भवन के अध्यक्ष श्रीमान् भूपेन्द्र कुमार जी सा सेठी व महामन्त्री श्री हुकमचन्द जी पाण्ड्या के सहयोग से उज्जैन मे एक विशाल ज्ञान गोष्ठी आयोजित की गई।

प्रश्न –उज्जैन के बाहर आप प्रमुख सहयोगी किन्हे मानते हैं ?

उत्तर –मेरी हर गतिविधिया में जिन्होंने सहयोग दिया वे है मेरे परम मित्र श्रद्धेय पूज्य चान्दमल जी सा काला, प० कैलाशचन्द जी शास्त्री, श्री प मक्खनलाल जी न्यायतीर्थ, श्री भगतराम जी सा जैन देहली, श्री मास्टर सा माणिकचन्द जी जैन जयपुर श्री गुलाब चन्द जी रावका, किशनगढ श्री चिरजीलाल जी सेठी श्री गुलाब चन्द जी बगवाल किशनगढ आदि जिनका म सदैव कृतज्ञ रहूंगा। मेरा प्रेरणा स्त्रोत स्थल राजस्थान ही रहा है। उसी से मुझे जीवन मिला है। म सबसे बडा कृतज्ञ हू परम् पूज्य गुरुदेव श्रद्धेय स्वर्गीय प चैनसुखदास जी और श्रद्धेय पूज्य काका साहब नाथूलालजी रांवका का जिन्होंने मेरी हर स्थिति मे मुझे साहस देकर आगे बढाया। ऐसे उज्जैन हर स्थिति मे मेरे लिए वरदान रहा।

प्रश्न –आपको अपने दृढ निश्चयी जीवन मे कभी कोई बुराइया भी मिली तथा किस स्थिति तक रहीं ?

उत्तर –मेरे म कुछ बुराइया भी थी। लेकिन ये बुराईया मेरे म टिक नही मकी। जब भी मौका आया मेरे धार्मिक ज्ञान ने मुझ बचाया कि अरयधर किस घर म तू पैदा हुआ और अब तू क्या कर रहा है।

मेरे गाव मे सरकारी टैक्स आदि को वसूल करने के लिए सरकारी आदमी रहते थे। उनके ससग से मैने बीडी पीना सीखा लेकिन कुछ दिन बाद ही मुझ घृणा हो गई और आज तक बच गया। इसक अलावा मेरे पास कोई व्यसन नही आ सका। स्वाध्याय न ही मेरा जीवन बचा। उसी से मेरे हृदय म हमेशा उदासीनता की भावना रही।

मेरी प्रकृति मे कुछ जिद्दी स्वभाव रहा। म अनुशासन प्रिय होने से, समय का पाबन्द होने से, स्वाभिमानी होने से लोगो म अपने आपको खपा नही सका। इसके अलावा समाज म भी विरोध होता रहा। मन्दिर मे पूजा नही लग सका। पचामृत अभिषेक, स्त्री प्रक्षाल, सचित्त द्रव्य से पूजा नही होने दी। मुनियो मे व्याप्त शिथिलाचार का विरोध आदि से मेरे से समाज म कुछ लागा म मेरा विरोधी भी होता रहा। मन्दिर की प्रबन्ध समिति व टस्ट का मन्त्री रहने म मन्दिर म कुछ अव्यवस्थाएँ नही हो सकी। मन्दिरा महकी प्रतियागिता नही होने दी। व्यय की सजावट नही होने दी। आदि कई ऐसे कारण हैं जिनसे मरे प्रति लोगो म असन्तोष रहा लकिन आज तक दिगम्बर श्वेताम्बर दाना ही समाजो ने मेरे लिये जो आत्म भावना है वह सदा के लिए मुझे स्मरणीय रहेगी। समाज का ही यह आशीर्वाद है कि आज इस रूप म सेवा का बल लेकर आगे बढा हू।

प्रश्न –आपके जीवन के अविस्मरणीय तथ्य आप किन्हे समझते हैं ?

उत्तर –प्रमुख रूप मे निम्न को समझ सकते हैं —

1 अनतिकता का आन्दोलन ही मेरा जीवन है।
2 समाज और राष्ट के उत्थान मे जो बाधक है वही कुरीतिया है।
3 सेवा के क्षेत्र मे प्रतिष्ठा की भावना नही रखना ही सच्ची सवा है।
4 पूजी बुरी नही, पूजीवादी मनोवृत्ति बुरी है।
5 मानव गलती करके बुरा नही होता गलती की पुनरावृति करने से बुरा होता है।
6 अच्छे सस्कार के लिए उत्कष ही प्रमाण है।
7 आत्मिक सुख ही अमूल्य पुरुषार्थ है।

इसके बाद प० सत्यधर कुमार जी सेठी ने कहा – काला जी बहुत हो गया जो कुछ आपने पूछा है – वह मेरा अपना विचार है, मान्यता है, सिद्धान्त है। बस काम करत रहना ही जीवन है और आप भी सत्काम करते रहिये यही मेरा साक्षात्कार है।

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा
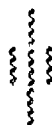
धार्मिक विद्वानों ने

समाज सुधारक

ब्रह्मचारिणी कमला बाई सचालिका एव संस्थापिका—श्री दि. जैन आदर्श महिला विद्यालय, सरक्षिका—दि जैन पचायत दि जैन नवयुवक मडल, श्री महावीर जी (राजस्थान)

पुण्यात्मा तुम धन्य हो, धन्य तुम्हारा ध्येय ।
सारा जीवन कर दिया, अर्पित प्रेम समेत ।।

जन सुधार मे प्रीति है, है सब ही सो नेह ।
अभिनन्दन है आपका, स्वीकारो सस्नेह ।।

श्रीमान् पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी ने इस भारत वसुधरा के राजस्थान प्रात मे स्थित कुचामन गाव को अलकृत करने के उपरान्त अपने बाल्यकाल मे ही भविष्य का दिग्दर्शन शैशव दर्पण मे कराया। कहा है "होनहार वीरवान के होत चीकने पात।" आपने 16 वर्ष की छोटी अवस्था मे ही सस्कृत का अच्छा ज्ञान प्राप्त कर गोम्मटसार जसे महान् ग्रन्थ का अध्ययन कर लिया था। आपके जीवन से यह उक्ति चरितार्थ होती है।

जन सामान्य क्या सम्पूर्ण समाज ही आपका अपना परिवार है, अत देश के फले धार्मिक मतभेद तथा बाल विवाह, दहेज प्रथा आदि जैसी अनेक मुह फिरी कुरीतियो का सामना किया तथा उनका भारत मा के वीर सपूत श्री सेठी जी ने बाल क्रीडा के समान बडी सहजता से निराकरण किया। आप श्रोता के मन पर अमिट प्रभाव छोडने मे दक्ष है, आपने अटल सिद्धान्त और अदम्य साहस का परिचय देकर जन सामान्य के मध्य अपना एक अनोखा दीप जलाया है। यथा दीप स्वय जलते हुये अपने साक्षी तेल को भी त्याग करते हुए जन-सामान्य को प्रकाश देता है ठीक उसी प्रकार त्याग करके अनेको कष्टो को पाते हुए भी जन-सामान्य के हित को ध्यानावस्थित रखा।

आपके जीवन मे सुख और दुःख भी अपना प्रभाव न दिखा सके, कभी भी उल्लासमयी तरगो ने उनके मुख को प्रफुल्लित नही किया, और न कभी दुःख के झोको ने चेहरे पर मलिनता की रेखायें बनाई। ठीक उसी तरह जैसे कि सूर्य लाल होता हुआ तो उदयाचल से आता है और लालिमा लिये हुए ही अस्ताचल से चला जाता है। तो मै ऐसे धार्मिक वाकप्रवीण लेख चातुर्य, परोपकार निश्चल प्रीति जन सुधार, समन्वयता आदि गुण धारण करने वाले श्री सेठी जी के प्रति अपनी हार्दिक भावनायें प्रस्तुत करती हुई चिरायु होने की भावना करती हू।

□ □ □

संस्कृति के सेवक

श्री प कपूर चन्द बैरया
लश्कर, ग्वालियर

लश्कर (ग्वालियर) मे गत् कई वर्षो से पण्डित जी का यदा कदा आगमन होता रहा है। एक बार तो वे यहा के प्रसिद्ध दिगम्बर जैन-मन्दिर बीस पथ पचायत के विशेष निमन्त्रण पर पधारे। धोती कुर्ता मे उनका सस्मित वदन देखकर कोई क्या कल्पना कर सकता था कि वे एक आधुनिक ओजस्वी वक्ता हैं। उनकी धारावाहिक वक्तृत्व-शली को देखकर लोग विमुग्ध थे। थोडे ही समय मे वे यहा के युवावग मे अति लोकप्रिय हो गये।

सेठी जी अपने क्रान्तिकारी विचारो के कारण समाज को उद्बुद्ध करने वाले पहले व्यक्ति हैं, जिन्होंने समाज मे व्याप्त कई कुरीतियो की ओर लोगो का ध्यान आकर्षित किया। आज दहेज प्रथा से सभी समाज पीडित है, युवाओ मे धम के प्रति अनास्था के भाव सवत्र विद्यमान है, इन्हें देखकर ऐसा कौन व्यक्ति होगा जो मूक होकर चुपचाप बैठा रहे। यही कारण है कि वह अपनी ओजस्वी वाणी द्वारा उन पर कटु प्रहार करते है और समाज को इस दुखद भयावह स्थिति से लोगो को सचेत करते है फिर चाहे उनकी कोई कैसी ही आलोचना करे, इसकी वे परवाह नही करते। समय के साथ कदम मिलाकर चलने वाले वे प्रगतिशील विद्वान् है, जो समाज सुधारक के रूप मे सवत्र ख्याति प्राप्त हैं।

सेठी जी महान् विचारक, व्यवहार पटु और सहृदय मानव हैं। वह कई सस्थाओ के मन्त्री और शिल्पी हैं। इस समय जब उनका सावजनिक अभिनन्दन होने जा रहा है, मैं अपना यह कतव्य समझता हू कि उनके प्रति चद शब्द लिखकर कुछ श्रद्धा व्यक्त करू।

परम् पिता परमात्मा स प्राथना है कि वह अपनी पूर्णायु का उपभोग करते हुए इसी तरह धम, समाज और सस्कृति की सेवा कर यशोभोगी बनें।

☐ ☐ ☐

सादाई मूर्ति

श्री प फणित कोटडिया
हिम्मतनगर (गुजरात)

सत्यधर सेठी पण्डित होते हुए व्यापारी ज्यादा है। वे बोलते हैं तब मालूम होता है कि वे पण्डित है। व्यापारी की प्रभा उनमे नही है और सेठ जी का रोब भी नही है। गाधीवादी एक कायकर्ता जस वे दिखते हैं, किन्तु उनका मनोबल बहुत मजबूत है। किसी से भी लोहा ल सकें इतना बल उनकी वाणी म है।

मैंन सवप्रथम उनको दुकान पर उज्जन म उनके दशन किय थे। थोडी बात चीत म हमारे म अति निकटता और घरेलू सम्बन्ध आ गया था। वह आज भी एसा ही है। व अत्यन्त व्यवहारिक पुरुष है। विद्वान होते हुए ममावान

काय वृत्ति के वे धनी है । निष्ठापूवक काय करना उनकी अच्छी आदत है । समय पारख और मानव परीक्षक भी वे है । वे थोडे मुमुक्ष है ज्यादा मुनि भक्त है । किन्तु शिथिलाचार के कट्टर दुश्मन है और खरा को खरा और बुरा को बुरा कहने मे हिचकते नही है । छोटा कद, दँत विहान मुख, हाथ मे धोती का पल्ला, वह है आछी परिचय रेखा उनकी । देश भर मे अनेक प्रभावशाली पण्डितो मे उनका नाम है किन्तु सादाई मे वे अजोड है । उज्जन मे उनकी वाणी का जादू कायशील है । वे आग्रही है किन्तु कदाग्रही नही है । सामगठ के पक्षकार हैं किन्तु अध भक्त नही हैं और मिथ्या प्रसशक नही है । वे सत्य को सत्य स्वीकार करने को तयार है ।

यह भौतिकवाद मे वे पण्डित होते हुए कपडे के थोक व्यापारी वन गये यह समय की वलिहारी है और जन समाज की कम कदरदानी का उत्तम दृष्टात हैं । समाज ने ऐसे कई विद्वानो ने खोया है । नुकसान समाज को हुआ है । वे पण्डितो को नही । वे अपने पुण्य से जीते हैं ।

सत्यधर जी की दीर्घायुप की कामना के साथ स्वस्थ जीवन की कामना करता हू ।

□ □ □

एक सेवाभावी कार्यकर्ता

श्री प कलाश चन्द्र शास्त्री
अधिष्ठाता–स्याद्वाद विद्यालय, बनारस

श्रीयुत पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी समाज के एक सेवाभावी कायकर्ता हैं । अपना व्यापारिक काय करते हुए भी वे सामाजिक और धार्मिक कार्यो मे वरावर सलग्न रहते हैं । उनकी विचारधारा समयानुकूल है । धर्म और समाज की प्रगति के प्रति वे सदा प्रयत्नशील रहते है । वे निर्भीक वक्ता व लेखक भी है ।

उनके प्रति मैं अपना समादर भाव प्रकट करता हू । ऐसे विद्वान् का अभिनन्दन योग्य ही है ।

□ □ □

कोमल और कठोर स्वभाव के धनी

डा कस्तूर चन्द कासलीवाल
निदेशक एव प्रधान सम्पादक–श्री महावीर ग्रथ अकादमी, अध्यक्ष–राजस्थान जैन साहित्य परिषद्, महिला जागति सघ, जयपुर

श्रीमान सत्यधर कुमार जी सेठी के व्यक्तित्व पर राजस्थानवासियो को ही नही किन्तु पूरी जैन समाज को नाज है । वे अध शताब्दी से राष्ट्रीय एव सामाजिक क्षेत्र मे सलग्न हैं तया अपनी कायशली से सभी पर छाय हुए है । सभा, सोसाइटी ही जिनके जीवन की खुराक है, आन्दोलन जिनका स्वभाव है तथा अपने सिद्धान्तो के प्रति कट्टरता जिनके खून के कण कण मे व्याप्त है, जो टूट सकते हैं लेकिन झुक नहीं सकते अपन मधुर सम्बन्धो को तोड सकते है लेकिन अपने सिद्धातो मे परिवतन नही कर सकते । सेठी जी किम

फौलाद के बन है यह कोई नहीं जानता लकिन फिर भी सेठी जी मानव हैं मानवता से ओतप्रोत हैं, मिलनसार हैं, सबके काम आने वाले हैं। सकोच जिनके स्वभाव म नही किन्तु निर्भयता एव निडरता जिनके साथी हैं। साधारण वेशभूषा मे और वह भी खद्दर के वस्त्रो म रहने वाले सेठी जी का नाम समाज के अधिकाश व्यक्तियो की अगुलियो पर रहता है।

कोमल एव कठोर स्वभाव के वे धनी हैं। जिसे हम एक कवि के शब्दो म वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि कह सकते हैं। ऐसे स्वभाव वाले व्यक्ति स मेरा कब सम्पर्क हुआ ? प्रथम भेंट कब हुई यह तो मुझे अच्छी तरह याद नहीं है किन्तु एक ही गुरु के शिष्य होने के नाते सम्भवत सन 1940 से ही मुझे उनके सम्पर्क मे रहने का अवसर प्राप्त है। जुझारू स्वभाव के कारण वे प्रारम्भ से ही अपने साथियो म सबके स्नेह भाजन रहे हैं। मेरा जब तक विद्यार्थी जीवन रहा, वे सामाजिक आन्दोलनो मे अपने आपको समर्पित कर चुके थे तथा अपने गुरु पूज्य पडित चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ के दाहिने हाथ बन चुके थे। किशनगढ एव लूणियावास के खण्डेलवाल जैन महासभा के अधिवेशनो म वे अपनी कर्मठता, जुझारूपन तथा वक्तृत्व शैली का सबको परिचय दे चुके थे।

रोजी रोटी के लिए उनको जयपुर छोडना पडा तथा बिहार एव कलकत्ता म काफी समय तक रहना पडा। वहा जिनकी वे सर्विस म थे, सामाजिक स्तर पर उनका उन्हे विरोध करना पडता था। कुछ समय तक दोनो कार्य साथ साथ चलते रहे। अपने विचारो म परिवर्तन के लिए उन पर बहुत कुछ दबाव भी डाला गया लेकिन वे यही कहते रहे कि सर्विस और सामाजिकता दोनो अलग-अलग हैं। वो अपने काय म अत्यधिक कुशल थे साथ म ईमानदार एव सच्चे भी थे इसलिए विरोध होने पर भी उन्होंने सेठी जी को नहीं छोडना चाहा। कुछ वर्षों पश्चात सेठी जी उज्जैन आ गये। यहा आने के पश्चात उन्होंने अपना नया जीवन प्रारम्भ किया और यहा उन्हे अपने व्यापार म जो आशातीत सफलता मिली, उसमे उनका कठोर परिश्रम, लगन एव व्यापारिक सच्चाई ही एक मात्र कारण है। आज वे उज्जैन के ही नहीं पूरे मध्य प्रदेश के प्रतिनिधि हैं और समस्त जैन समाज के प्रमुख एव लोकप्रिय नेता हैं।

उज्जैन म मैंने उनकी कार्य क्षमता, विशाल व्यक्तित्व एव व्यापक प्रभाव को एक बार नहीं किन्तु कितनी ही बार देखा है। उज्जैन म आयोजित पंच कल्याणक महोत्सव अखिल भारतीय प्राच्य विद्या सम्मेलन, दिगम्बर जैन नवयुवक मण्डल के वार्षिक समारोह जैन विद्या सेमिनार आदि विभिन्न

अवसरो पर उनके वक्तृत्व शक्ति को देखकर बडी प्रसन्नता हुई। राजस्थान के एक साथी का इस प्रकार अन्यत्र वर्चस्व देखकर कौन प्रभावित नहीं होगा। उज्जैन जैसे नगर मे वे आज सार्वजनिक जीवन के व्यक्ति है। अब वे केवल जैन समाज के ही नेता नही है, किन्तु पूरे नगरवासियो का उनके प्रति सहज स्नेह है तथा अपनी कर्तव्यनिष्ठता एव सेवाभावी जीवन के कारण सबके लोकप्रिय बने हुए है।

सेठी जी खुले विचारो के व्यक्ति हैं। लाग लपेट एव छिपना-छिपाना उनके स्वभाव के विरुद्ध है। सामाजिक बुराइयो एव धार्मिक शिथिलाचार उन्हे जरा भी पसन्द नही और जब कोई अवसर आता है उनका विरोध करने मे वे नही चूकते। जिस व्यक्ति ने सारे जीवन ही बुराईयो का विरोध किया हो वह अब कैसे चुप्पी साध सकता है। उनकी आयु की अधिकता न ऐसे कार्यों मे बाधक बन सकी है और न भविष्य मे बन सकेगी। खरी बात कहने मे वे जरा भी नही चूकते, फिर चाहे सामने कितना ही बडा व्यक्ति क्यो न बैठा हो। लेकिन इतना होने पर भी वे व्यावहारिक है। वे साधुओ मे व्याप्त शिथिलाचार के विरुद्ध है लेकिन जब कभी किसी साधु के सम्पर्क मे आना पडता है, वे उसके प्रति अपनी पूर्ण श्रद्धा भी प्रदर्शित करते है। अभी गत वर्ष की ही बात है। बोरवली बम्बई मे भारतीय ज्ञानपीठ द्वारा एक विशाल सेमिनार का आयोजन था। मैं भी उसमे गया था तथा सेठी जी भी वहा आये थे। पूज्य आचार्य विमल सागर जी महाराज भी वही ससघ विराज रहे थे। एक ओर सेठी जी ने आचार्य श्री के प्रति अपनी श्रद्धा सहित नमन किया लेकिन वे एक दूसरे ओर शिथिलाचार के विरुद्ध बोलने मे भी नही चूके। वास्तव मे साधुओ के प्रति भक्ति एक अलग बात है और बुराइयो का विरोध करना अलग कार्य है। दोनो को हम नही मिला सकते।

सेठी जी अच्छे वक्ता है, लेखक हैं तथा समालोचक भी हैं। वे अच्छे वस्त्र व्यवसायी भी है। उन्होने अपने हाथो से अपने जीवन का निर्माण किया है। पैतृक विरासत के नाम पर तो उन्हे केवल आशीर्वाद ही मिला है। उनका पूरा परिवार सुशिक्षित एव सुसस्कृत है। उनके घर पर जाने पर ऐसा लगता है जैसे वह अपने ही घर मे हो। उनके पुत्र भी विनयी एव धार्मिक प्रवृत्ति वाले है। अपने पिताजी के पूर्ण निर्देशन मे चलने वाले है। उनके आज्ञा पालक है। इसी तरह उनकी पुत्रिया भी एक से बढकर एक है। माता-पिता का सबको बराबर स्नेह, प्यार एव दुलार मिलता है।

ऐसे राष्ट्र एव समाजसेवी व्यक्ति के अभिनन्दन के अवसर पर किसे प्रसन्नता नही होगी। हमारा एव हमारे साथियो द्वारा उनका सार्वजनिक अभिनन्दन

करने का द ढ विचार था। कितनी ही बार योजना भी बनी लेकिन सेठी जी द्वारा बार बार मना करने पर उसे क्रियान्वित नही किया जा सका। फिर भी उनके अभिनन्दन की योजना को देखकर अत्यधिक प्रसन्नता हुइ। म इस अवसर पर उनके दीघ एव यशस्वी जीवन की कामना करता हू तथा वे शतायु होकर इसी तरह देश एव समाज को अपने विचारो से, कार्यो से एव व्यक्तित्व से लाभान्वित करते रहे, यही हार्दिक भावना रखता हू।

□ □ □

भारतीय सस्कृति के मूकसेवी

डा कस्तूर चन्द 'सुमन'
जन विद्या सस्थान, श्री महावीरजी
(राजस्थान)

धर्मोन्नति, शिक्षा-प्रचार, समाज सुधार, पुरातत्वान्वेषण, तीर्थरक्षा जसे पुनीत कार्यो मे आपका स्मरणीय योगदान है। जयसिहपुरा के सग्रहालय की स्थापना के श्रेय आपको ही है, भारत म यह सग्रहालय जनियो की अनुपम निधि है। आप व्यापारी है, लक्षाधिपति हैं और विशेषता यह है कि जैन दशन के विद्वान भी हैं। देश म ऐसे बहुत कम व्यक्ति होगे जो श्रीमान् भी हो और धीमान भी, किन्तु श्री सेठी जी देश की एक विभूति है।

स्वावलम्बन सेठी जी के जीवन का एक विशिष्ट गुण है अपना काम स्वय कर लेने मे आप अपना गौरव समझते हैं। प्रवास मे भी अत्यावश्यक होने पर ही आप कुली की सेवायें लेते हैं। "सादा जीवन उच्च विचार" कहावत के आप धनी ह। भारतीय वेश-भूषा मे रहना ही आपको अभीष्ट है। विचारो मे क्रान्ति है। नवीनता है।

जनाचार म भी आप धनी हैं। लोटा और छन्ना, प्रवास काल के आपके साथी ह। रात्रि मे भोजन नही करते, होटलो की ओर तो आपका ध्यान ही नही जाता। कथनी करनी मे समानता है। जो उपदेश देते हैं, उसे जीवन म उतारना आपका ध्येय है। दर्शन के प्रेमी हैं, प्रदशन के नही। जहा कही भी आप आडम्बर देखते ह, डटकर विरोध करते ह।

सुधारवादी ह। सामाजिक रूढियो का उन्मूलन करना आपके जीवन का लक्ष्य है। आचरण मे शिथिलता तो आप बिल्कुल भी नही चाहते। साधु हो या गहस्थ, छोटा हो या बडा निर्भयता पूवक शिथिलाचारियो का आप विरोध करते ह। देश मे बहुत कम ऐसे विद्वान् ह जो इस प्रकार समाज सेवा कर रहे ह।

जीवन मे सरलता है। छोटे से छोटे विद्वान को भी गले लगा लेना यह आपकी विशेषता है। आपसे मिलकर सदव प्रसन्नता ही होती है। विद्वानो

को समय समय पर आमन्त्रित कर बुलाना तथा सभाओं मे उनके व्याख्यान, प्रवचनादि कराकर समाज को दिशा बोध कराते रहने मे आप अग्रणी है।

ऐसे मनीषियो का अभिनन्दन करना समाज का कर्तव्य है। अपने कर्तव्य मे समाज सजग है। श्री सेठी जी का अभिनन्दन हो रहा है, यह जानकर अतीव प्रसन्नता हुई। सयोजक श्री नेमीचन्द काला बधाई के पात्र है।

अभिनन्दन की इस वेला में,
स्वीकारो सविनय मम वन्दन।

वीर प्रभु से यही कामना
मगलमय हो यह अभिनन्दन।

□ □ □

शुभाभिनन्दन

ज्ञानयोगी स्वस्ति श्री भट्टारक चारुकीर्ति पडिताचार्यवर्या स्वामीजी, सस्थापक एव मुख्य निदेशक—श्रीमती रामारानी जैन शोध सस्थान श्री जैनमठ, मूडबिद्री (कर्नाटक)

श्रीमान पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी ऐसे बहुश्रुत विद्वान है जिनकी वाणी लेखनी और चिन्तनशीलता का लाभ समग्र जन समाज को कई दशको से मिलता आ रहा है। आपका सारा जीवन और जीवन का प्रत्येक क्षण सामाजिक एव धार्मिक कार्यो मे अत्यन्त फलप्रद रहा, इसमे सन्देह नही। इसी कारण से आपको अखिल भारतीय स्तर पर विभिन्न प्रदेशो एव सस्थाओ की तरफ से नागरिक अभिनन्दन और सम्मान बराबर प्राप्त हुआ था।

आप एक क्रान्तिकारी सजनशील विचारक हैं जिनसे प्रभावित होकर आजकल की नयी पीढी के युवक आपको अपने सही नेता और दिशा दर्शक मानते आ रहे हैं। सचमुच श्रीमान् सेठी जी जसे प्रकाण्ड विद्वान्, सफल निबन्धकार, समथ समालोचक और समाज सुधार का अखिल भारतीय स्तर पर सम्मान करना एव उनके गौरवाथ अभिनन्दन ग्रथ समपण करना समाज के लिए अत्यन्त गौरव की बात है।

साथ ही साथ आने वाली पीढी उनके पथ चिन्हो पर चलने का प्रयास करेगी तो सन्देह नही कि सारा जन समाज अपने को धन्य सम्पन्न एव सम्मानित होने का अनुभव करेगा।

हमे अत्यन्त हर्ष होता है कि श्रीमान् पण्डित जी की हीरक जयन्ती की पावन वेला म होने वाले अभिनन्दन म मौलिक अभिनन्दन ग्रन्थ समपण करने का स्मरणीय काय चल रहा है।

श्रीमान् पंडित जी का भावी जीवन सक्षम—श्री बलायु आरोग्य-ऐश्वर्य से समृद्ध हो, यह हमारा शुभ आशीर्वाद है।

इति भद्रं भूयात्,

वर्धता जिनशासनम्।

□ □ □

जीता जागता व्यक्तित्व

श्री ताराचन्द प्रेमी
सुप्रसिद्ध गायक व गीतकार
अनेक संस्थाओं के पदाधिकारी
फिरोजपुर (हरियाणा)

सामाजिक जीवन में कम से गत तीस वर्ष से श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी की गतिविधियों से मेरा गहरा सम्बन्ध रहा है। उनके निश्छल स्नेह का मुझे बहुत समीप से स्पर्श मिला है। मैंने हर पल ये अनुभव किया है कि सत्यंधर कुमार सेठी दिगम्बर जैन समाज की प्रत्येक गतिविधि के साथ जीता जागता एक महान् व्यक्तित्व है।

कन्याकुमारी से हिमालय की शृंखला तक तीर्थ क्षेत्र हो या सिद्ध क्षेत्र, किसी भी रचनात्मक संस्था का अधिवेशन हो अथवा सामाजिक संगठन पर कोई विचार विनिमय, किसी आचार्य की प्रवचन सभा हो या कोई पंच कल्याणक समारोह, सभी जगह सत्यंधर कुमार सेठी को उपस्थित पाया। मुझे हर पल ये लगा कि श्री सेठी के हृदय में दिगम्बर जैन समाज के प्रति कुछ पाने की एक पीड़ा है। धार्मिकता और वात्सल्य उनका स्वभाव रहा। उनके पारिवारिक सदस्यों से भी मेरा परिचय हुआ है। सामाजिक सुधार के प्रति उन्हें सदैव ही समर्पित व्यक्तित्व के रूप में देखा है।

श्री सेठी का अभिनन्दन समाज सेवा में निष्ठा के साथ जूझने वाले महान समाज सेवी का अभिनन्दन है। मेरी कामना है श्री सत्यंधर कुमार सेठी यशस्वी जीवन के साथ दीर्घायु हों।

□ □ □

यथा नाम तथा गुण

श्री दयाचन्द, साहित्याचार्य
श्री गणेश दि. जैन संस्कृत महा वि.
वर्णी भवन सागर

प्रकृत में हम सब श्री सत्यंधर जी सेठी शास्त्री का अभिनन्दन इस कारण कर रहे हैं कि आपने सत्यगुण की साधना अपने जीवन क्रियान्वित की है जिससे पाप अणु व्रत रूप सदाचार की सिद्धि होती है।

आप एक निर्भीक सत्यवादी विद्वान हैं जिसके बल पर आपने अनेक उपद्रवों सामाजिक बाधायें तथा राष्ट्रीय अराजकता और असहाय मानव तथा महिलाओं की आपदाओं को दूर किया है। आपने हित मित प्रिय वचनों का समयानुकूल प्रयोग करना ही अपना सत्य लक्ष्य बनाया है। स्वपर हित का

को घूमने के बहाने मुझे ऐसे स्थान की तरफ ले गये जिसकी म कल्पना भी नही कर सकता था। मेरा हृदय काप गया। बडी मुश्किल से पिंड छुडा कर अपने आपको बचाया। फिर मने उन महापुरुष से न कोई चर्चा की और न किसी प्रकार का सम्बन्ध रखा। धमशाला मे 2–3 दिन रहकर वे अपने स्थान को चले गये। तब शान्ति आई।

एक दिन मैं काग्रेस ऑफिस मे गया। उस समय शहर काग्रेस या जिला काग्रेस के अध्यक्ष माननीय स्वर्गीय बनारसीदासजी साहब जन थे। वे स्थानकवासी जन थे लेकिन राष्ट्रीय विचारधारा के होते हुए भी उन्होने मेरे साथ आत्मीय भावना से बातचीत की। इन्ही चर्चाओ मे मने उनसे कहा कि मैं यहा खादी भण्डार खोलना चाहता हू। क्या चल सकेगा ? उन्होने सहज भाव से सहानुभूति प्रदर्शित करते हुए कहा कि आप अवश्य खोलिये। खादी भण्डार अवश्य चलेगा। आवश्यकता है लगन और परिश्रम की। मध्य प्रदेश के नेता श्री पुस्तकें सा० वहा पर बठे हुए थे। चर्चा कान रहे थे। उन्होने मुझे बुला कर कहा कि आप यहा भूल कर भी खादी भण्डार नही खोलना। अन्यथा मैं तीन दिन भी खादी भण्डार आपका नही चलने दूगा, मेरा नाम पुस्तके है और मैं मध्य प्रदेश का नेता हू। उनके इस व्यवहार ने मुझे उत्तेजित कर डाला। मैंने कहा कि मैं आपको नही जानता, आप कौन है ? लेकिन म आपके चैलेंज को स्वीकार करता हू। आपने तीन दिन का नाम लिया है। म भीख माग कर के भी तीन वर्ष तक खादी भण्डार चलाने की प्रतिज्ञा करता हू।

इससे वे काफी उत्तेजित होकर बोले कि देख लूगा। मेरे लिए वह अपरिचित स्थान था, लेकिन मैंने कहा कि सत्यधर, तू निणय का धनी है। बनारसीदासजी की बात का प्रश्न है। तेरे को किसी भी स्थिति मे उज्जैन मे खादी भण्डार खोलना है। यह चलज नही तेरे लिए वरदान है। मने इस निर्णय के साथ मेरे परम मित्र श्रद्धेय चादमलजी सा० काला को पत्र लिख दिया कि उज्जन मेरे लिए प्रिय स्थान है। मने निणय ले लिया है कि म यहा खादी भण्डार खोल दू। आप तीन गाठ खादी की अविलम्ब भिजवा दें।

प्रश्न – उज्जन मे सामाजिक क्षेत्र मे आपने किस प्रकार स्थान प्राप्त किया ?

उत्तर – धार्मिक कायक्रमो म भाग लने की रुचि मेरी शाश्वत रुचि है। उज्जन म आने के 2 3 दिन बाद ही परम पूज्य विश्व बन्धु भगवान महावीर का जयन्ती समारोह आ गया। यह विक्रम स० 2004 की बात है। म जुलूस म सम्मिलित हुआ। एक दो कायकर्ताओ से चर्चायें की। रात्रि को 5 7 मिनट भगवान महावीर की विश्व को देन विषय पर मेरा भाषण भी हो गया। उस सभा के अध्यक्ष थे मध्यप्रदेश के भूतपूव वित्तमन्त्री माननीय सौभाग्यमलजी जन। मने इस भाषण म कहा कि भगवान महावीर मानवता के सन्देश वाहक थे। इसी मानवता को जीवित रखने के लिये महावीर ने अहिंसा अपरिग्रहवाद और अनेकान्त जसी विचारधारायें दी। जिनसे राष्ट्र प्राणवान बना। इस भाषण से लोगो का मेरे प्रति आकषण बढा और सभा के बाद वहा के सुप्रसिद्ध सामाजिक कायकर्ता एव अद्भुत विद्वान मन्त्रारामजी सा०, वद्य हकीम सा० फूलचन्दजी सा० और श्री मोहनलालजी गगवाल से मेरा परिचय हो गया। वहा पर ही मेरे सहपाठी श्री हजारीमलजी अजमेरा का मिलन भी हो गया। तीन-चार दिन बाद खादी की 3–4 गाठ आ गइ और श्रीमान घीसालालजी सा० बागडिया के सहयोग से दि० जन धमशाला मे एक दुकान मिल गई। यहा म सामाजिक क्षेत्र मे मेरा आरम्भ उज्जन मे हुआ।

प्रश्न –धार्मिक संस्कारो से सामाजिक और व्यवसायिक क्षेत्र मे आपको अनेक महत्वपूर्ण सफलताए मिली, इस विषय मे आपके क्या विचार है ?

उत्तर – धार्मिक संस्कारो ने पथभ्रष्ट होने से बचाया तथा समाज मे आगे बढ़ा। जहाँ भी गया स्वाध्याय मनन जारी रखा। उस समय उज्जैन मन्दिर मे श्रीमान गणपतिजी पुन्नालालजी सा० टोग्या शास्त्र पढते थे। वे मेरे से बड़े प्रभावित हुए। उन्होंने मेरे से आग्रह किया कि शास्त्र आप पढ़ा करे। मैने फौरन स्वीकृति दे दी। मै अब नित्य प्रति शास्त्र सभा मे जाने लगा और उन्ही के साथ साप्ताहिक प्रार्थना का आयोजन प्रारम्भ कर दिया।

प्रश्न –उज्जैन मे व्यवसाय का प्रारम्भ आपने किस प्रकार किया ?

उत्तर – जिस धर्मशाला मे मै ठहरा हुआ था उसी धर्मशाला मे मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त माननीय वासुदेवजी साहब आयुर्वेदाचार्य चिकित्सा पर पर आसीन थे। वे बड़े उदार हृदयी सज्जन थे। मैंने उनसे निवेदन किया कि मै यहा खादी भण्डार खोलना चाहता हू। आप आशीर्वाद दीजिये। मैं चाहता हू खादी भण्डार का उद्घाटन आपके कर-कमलो से हो। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा कि सेठी जी आपका निवेदन स्वीकार है। मैंने उन्ही के हाथ से मारवाड़ी भाइयो की उपस्थिति मे उद्घाटन कर डाला और उसी दिन करीब 1500/– रुपया की खादी बिक्री हो गई। वह बिक्री बढती ही गई। मेरा यह दुकान पुस्तक साहित्य के लिए प्रसिद्ध हो गया। व विद्यार्थी के लिए मकान मे आ गये। लेकिन मेरे भी कुछ कांग्रेसी मित्र थे, जिन्होने मुझे बल दिया, नकि दी और इकट्ठा की थी। वे थे श्री रामनिवासजी रावल श्री बालविहारीलालजी पाड आदि। विधान सभा मे प्रश्न उठाया। उज्जैन कोर्ट मे भी मेरे ऊपर केस चलाया गया। लेकिन वे कही भी सफल न हो सके। उनके विरोध ने मेरे को और भी जीवित कर दिया और मेरी खादी के ग्राहक बनते गये। मैं यहा श्रीमान हीरालालजी सा० शर्मा और वहीद भाई कुरेशी आदि को भी नही भूल सकता। जिनका मेरे साथ अपूर्व सहयोग रहा और इन्होंने मेरे को इस क्षेत्र मे बढने मे पूरा सहयोग दिया।

प्रश्न –उज्जैन मे रहते हुए आपने वहा की सांस्कृतिक स्थिति का कैसा अनुभव किया ?

उत्तर – वहा पर सार्वजनिक क्षेत्र मे गतिमान उज्जयनी विकास समिति नाम की संस्था थी उसके सदस्य व संचालक थे माननीय प० सा० अनन्तरामजी दवे डॉ० महाडिक सा०, श्री दौलत रामजी वकील सा०, श्री मदनलालजी गोयल आदि थे प्रमुख सदस्य। यही एक संस्था थी जो उज्जैन के विकास के हर क्षेत्र मे अपने कदम बढ़ाती थी। ये सब नित्य ऐतिहासिक स्थलो के निरीक्षण के लिए भी जाते थे और आवश्यकीय पुरातन सामग्री का संरक्षण भी करते थे। जिनमे जैन मूर्तिया व मन्दिरो के अवशेष भी टुकड़ो के रूप मे बिखरे मिलते थे। इससे मेरे हृदय मे एक टीस पैदा हुई कि जैनो की इस ऐतिहासिक सम्पदा को बचाने के लिए इस प्रान्त मे जैनो की विपुल संख्या होते हुए भी कोई प्रयत्न नही किया गया और आज वह पद दलित होकर खत्म हो रही है। उज्जैन जैनो का नहीं किन्तु हिन्दुओ का भी एक उल्लेखनीय स्थल रहा है जो भारतवर्ष मे एक आदर्श तीर्थस्थल माना जाता

है। जिमके दर्शनों के लिये प्रतिदिन हजारों यात्री और विदेशी पर्यटक आते ही रहते हैं। इन सबका आकर्षक केन्द्र रहा है महाकाल का मन्दिर।

यहां आकर मैंने मेरा लक्ष्य बनाया पुरातन सम्पदा के संरक्षण के लिए प्रयत्न। मैं आया। उन दिनों में यहां एक जर्मन लेडी थी श्रीमती क्राउझे। ये एक विदेशी महिला थी ग्रोजप्रिय व जैन धर्म व उनकी संस्कृति में रुचि रखने वाली महिला। उज्जैन का महाकाल मन्दिर भारतवर्ष में एक प्रसिद्ध मन्दिर है और वह ज्योतिर्लिंग माना जाता है। इसकी ख्याति विश्वभर में मानी जाती है। लेकिन यह मन्दिर किसी समय दि० जैन मन्दिर था। शैव और जैनों के संघर्ष में यह मन्दिर जैनों के हाथ से निकल गया और शैव पंथियों के हाथ में चला गया। जर्मन लेडी क्राउझे ने चैलेंज के साथ यह सिद्ध किया है। ऐतिहासिक तथ्यों के आधार पर मैंने भी इसके सम्बन्ध में प्रमाण एकत्रित किये हैं लेकिन क्या किया जाय। ऐसे यहां एक मन्दिर नहीं अनेकों मन्दिर हैं जो पहले जैन मन्दिर थे और आज वे महादेव मन्दिर हैं। मध्यप्रदेश या प्राचीन मालवा में साम्प्रदायिक संघर्ष में जैनों पर अकथनीय अत्याचार हुए हैं। मूर्तियां टूटी हैं और मन्दिर नष्ट किये गये हैं। जिनके प्रमाण हैं गोठर और मालवा के कण-कण में बिखरे हुए अवशेष। इन अवशेषों ने मेरे भी हृदय को हिला डाला और मैंने संकल्प लिया इनको बटोरने का।

उन्हीं दिनों में यानी सं० 2005 में जैन समाज के अभिषिक्त सम्राट राव राजा राजरत्न सर सेठ हुकमचन्दजी साहब की अध्यक्षता में मालवा प्रान्तीय दिगम्बर जैन सभा का अधिवेशन बड़नगर में था। मैं भी उस अधिवेशन में पहुँच गया। सभा के अनेक विभागों में एक विभाग पुरातत्व संरक्षण का भी था। जिसके मन्त्री थे माननीय सेठ देवकुमारजी सा० कासलीवाल इन्दौर। वे इस विभाग में कोई काम नहीं कर सके। क्योंकि पुरातत्व सम्पदा बिखरी हुई पड़ी थी गावों में, पहाड़ों में और जंगलों में। जहां एक दो मनुष्य का जाना बड़ा मुश्किल था। मेरी आत्मा में पहले से ही दर्द था। मैंने इस विषय को उठा डाला। मैं उस प्रान्त में नया था। सबकी दृष्टि मेरे पर गई। सेठ सा० सम्भल कर बोल उठे आप कौन हैं? कहां से आये हैं? मैंने कहा मैं वही सत्यधरकुमार सेठी हूं जिसने राजस्थान में लोहड़ साजन आन्दोलन में अपने आपको समर्पित किया और अब आया हूं उज्जैन। मेरा नाम सुनते ही सेठ साहब ने मुझे अपने पास बुला लिया और कहा कि बेटा क्या यह काम तुम कर सकोगे? मैंने कहा—आपका आशीर्वाद होना चाहिये। उसी समय वह विभाग मेरे जुम्मे कर दिया गया और मैंने सहर्ष स्वीकार किया। उज्जैन में आते ही यह प्रश्न मैंने श्रद्धेय सेठ सा० लालचन्दजी साहब सेठी स्वर्गीय पं० अनन्तरामजी साहब, हकीम साहब फूलचन्दजी सेठ जवाहरलालजी साहब भगवाले के सामने रखा। वे हर्ष में विभोर होकर बोले आपका प्रस्ताव स्वीकार है। हम सब व उज्जैन का जैन समाज आपके साथ है। इस कार्य में माननीय सेठ साहब और मेरे चिर साथियों ने इतनी रुचि ली कि जगह-जगह जाकर पदमाकर जैसे स्थान से सैकड़ों मूर्तियां खण्डहरों का एकत्र करवाया और उज्जैन में एक विशाल संग्रहालय को जन्म दे डाला जो आज श्री दि० जैन पुरातत्व संग्रहालय के नाम से भारतवर्ष व उसके बाहर विख्यात है।

आज इस संग्रहालय मे करीब 551 कलाकृतिया संग्रहीत है। जिनको देखकर इतिहास के विद्वानो ने कहा है कि यह मध्य मालव की स्वर्णिम निधि है जिसके अध्यक्ष हैं माननीय सेठ भूपेन्द्रकुमार जी साहब सेठी और मन्त्री हू मै स्वय।

प्रश्न – उज्जैन मे समाज के लिए आपकी देन क्या रही ?

उत्तर – मेरा सामाजिक गतिविधिया आगे बढी। उज्जैन मे मैने सस्थाओ की स्थापना कर डाली। जिसम भावना सभा शास्त्र सभायें तो चलती ही थी। इसी के साथ श्री सुधर्म सागर दि० जैन उच्चतर माध्यमिक/प्राथमिक विद्यालय, ज्ञानसागर कन्या विद्यालय का विस्तार, गरीब असमर्थ लोगो के लिये सहकारी सहायता फण्ड छात्रवृत्ति फण्ड, श्री महावीर दि० जैन रात्रि पाठशाला, परमार्थिक औषधालय अनेक सस्थाओ को जन्म दे डाला। इनमे कई सस्थाओ के लिये घर घर जाकर मैने एक-एक दो-दो रुपया की झोली पसार कर रुपये एकत्रित किये थे। आज इन सस्थाओ मे हजारो विद्यार्थी और छात्राए अध्ययन कर रही है और आर्थिक दृष्टि से सभी सुदृढ है। इन सस्थाओ के विकास म राव सेठ लालचन्द जी, उन्ही के पुत्र श्री बाबू सा भूपेन्द्र कुमार जी, श्री बाबू सा तेज कुमार जी, श्रीमति सेठानी तेज कुमारी जी श्री चौधरी सा भूपामल जी, श्रीमान् प अनन्त राम जी न्यायतीर्थ, श्रीमान सेठ नेमीचन्द जी सा जैन श्री नन्दलाल जी सा वकील, श्री फूलचन्द जी सा झांझरी, श्री ललित कुमार जी सा पाण्ड्या, श्री शकरलाल जी सा सेठी, श्री चन्दन मल जी सा छावडा का अपूर्व सहयोग रहा है। श्रीमान् दादा गुलाब चन्द जी सा और श्रीमान् सूरजमल जी साहब ने वर्षों तक घाटे की पूर्ति की है। आज परस्पर सहकारी सस्था भी कितनी ही गरीबो को आर्थिक सहयोग दे रही है। कितने ही समाज के भाइयो को व्यापारिक क्षेत्र मे आगे बढाया है। इसका आज भी सचालक मैं हू।

प्रश्न – समाज ने आपकी भावनाओ का सम्मान किस स्तर से किया ?

उत्तर – उज्जैन म आने के बाद मेरा सामाजिक क्षेत्र बढता ही गया और उज्जैन ने मुझे अखिल भारतीय स्तर का व्यक्ति बना दिया। सामाजिक क्षेत्र के साथ साथ मेरा सार्वजनिक जीवन भी बनता ही गया और उज्जैन म मै एक सामाजिक कार्यकर्ता के रूप म माना जाने लगा। मै प्रारम्भ म ही असाम्प्रदायिक विचार धारा का व्यक्ति रहा हू। अत हिन्दू, मुसलमान, सिख सिन्धी, ईसाई आदि सब ही समाजो व राष्ट्रीय सस्थाओ का प्रिय भाजन बन गया।

प्रश्न – आपके व्यावसायिक क्षेत्र मे सिद्धान्तो का परिपालन कहाँ तक हो सका ?

उत्तर – सामाजिक क्षेत्र के साथ मैने मेरा आर्थिक क्षेत्र भी सुदृढ किया। खादी भण्डार का काम मैने कुछ वर्षों बाद खतम कर दिया और माननीय रा ब सेठ श्री लालचन्द जी सेठी की प्रेरणा से [illegible] का [illegible] चालू कर दिया। इस काम मे माननीय सेठ सा का सहयोग रहा, [illegible] नियम [illegible] सामने भी हाथ नहीं पसारा। मेरा व्यापार चीटी की चाल जैसा रहा। [illegible] आर्थिक स्थिति दिन दिन बढती गई। इसमे सहयोग दिया मेरे सयमी जीवन और

मितव्ययी विचारधारा ने। मैंने हर तरह मेरे जीवन को बाधा। लाखो रुपय मैंने पैदा किये, लेकिन मेरे जीवन मे कोई बुराई नही पनप सकी। मैं मितव्ययी तो इतना रहा कि व्यय का एक पैसा बच्चा को भी मैने नही दिया। दुकान पर भी सीमित खर्चा रक्खा। व्यापारी का एक चाय का कप भी नही पिलाया। पक्की रसीद बटटा आज तक भी मने नही छपाया। बैंक म खाता खोलन के लिये मेरे फाम की सीलें तक मैंने नही बनाई। आज सब जगह मेरी कच्ची रसीद ही काम करती ह। यह मेरी एक व्यापारी जगत म मान्यता है। मेरा नतिक जीवन है। दुकान पर एक भाव ह। चाह छोटा व्यापारी हो या बड़ा। मेरी दुकान पर बीडी सिगरेट पीने वाला चढ नही सकता। दूर से ही बीडी सिगरेट फक देते हैं। मैंने व्यापार छोडकर दुकान पर हजारो को बीडी सिगरेट और चमडे का त्याग कराया है। मैंने कभी टक्स चोरी नही की है। न व्यापारियो के साथ झगड किया हैं। भारत क हर कोने म बिना बक बिल्टी से माल आता है। यह मेरी प्रामाणिकता है। व्यापार म नाम उधार म कभी भूल हुई है तो मैंने मेरे व्यापारी को रुपय बुलाकर वापिस लौटाय ह। यह बात सब जानत है।

प्रश्न – आपकी प्रगति ख्याति से लोग आपके विरोधी नहीं बने ? और विरोधियो के बीच आपने काय किस प्रकार किये ?

उत्तर – मेरी बढती हुई ख्याति से कुछ लोगो ने विरोध म भी कदम उठाय ह। मुझे चलेंज भी मिले ह। गुण्डो न घेराव भी किया है, गुण्डो न ताले भी तोड ह। आर्थिक नुकसान भी काफी पहुचाया है। लकिन उन विरोधो न मुझे जीवन दिया है, जागृति दी है और प्रेरणायें दी है। हर जगह विरोध होने क बाद मुझे सम्मान और अभिनन्दन मिले है। उन विरोधियो को मन कभी विरोधी स्वीकार नही किया। उनको पत्र लिखकर उनके प्रति कृतज्ञता प्रकट की ह। आज भी उनका न करता हू। उनम स श्री सर लाल जी लुणावत और ... राज मल जी ... का उपकार मानता ह। इन सभी सज्जनो का वरदहस्त मर सिर पर रहा है। जिससे मैं बढता ही चला गया।

प्रश्न -आपने संघस यात्राएँ बहुत की है तो तीर्थ यात्राओ के विषय मे आपके विचार क्या रहे - बताने की कृपा करें ?

उत्तर -मैंने मेरे जीवन मे मेरी धर्मपत्नी के साथ सब ही परम् पावन तीर्थस्थलो की यात्रा कर डाली है लेकिन इन यात्राओ में मेरी रूढीग्रस्त भावनाये नही रही। वन्दना के साथ ऐतिहासिक दृष्टिकोण भी मेरा रहा इसलिय अध्ययन की दृष्टि से कई स्थलो पर एक एक सप्ताह तक भी रहा वास्तव म पुरातत्त्व सम्पदाय इन तीर्थों पर मुझे कम ही देखने को मिली। सम्मेद शिखर जैसे प्राचीन और अनादि तीर्थ पर एक भी प्राचीन अवशेष नही मिला। एक मूर्ति अवश्य विराजमान है। प्राचीनता की दृष्टि से मालो हू गी के पहाडो मे उत्कीर्णित मूर्तिया, गयाजी के पास उपेक्षित क्षेत्र कोल्हुवा पहाड की प्राचीन मूर्तिया, कुण्डलपुर मे श्वेताम्बर मन्दिर म रक्खी हुई प्राचीन मूर्तिया राजगृही मे विपुलाचल पहाड पर बिखरी मूर्तिया अवश्य महत्त्व रखती हैं लेकिन जन समाज का ध्यान इनकी तरफ बिल्कुल नही है। मेरी समझ मे बिहार मे गया जी के पास जो कोल्हुवा पहाड है वह हमारा कोई महान् तीर्थ होना चाहिये। इतिहास के विद्वानो का ध्यान अवश्य जाना चाहिये। मैं चाहता हू ज्ञानपीठ जैसी संस्था इसके लिए कदम उठाये। इन तीर्थों मे मैंने सम्मेद शिखर जी जैसे पुण्य क्षेत्र पर कई चमत्कारिक घटनायें भी देखी हैं जो सत्य है और कई आडम्बर पूर्ण घटनाएं भी जिन पर मेरा विश्वास नही।

कलकत्ता के सुप्रसिद्ध सेठ प्रतापमल जी सगढा ने श्री सम्मेद शिखर पर प्रतिष्ठा कराई थी। मै भी स्वय सेवक के रूप म गया था। सूतक अवस्था मे ही उन्होने अपनी पुत्र वधु को इन्द्राणी बनाकर हाथी पर बठा रहे थे। मैं पहुच गया। मैंने कहा सेठ साहब यह उचित नही। उन्होंने कहा मक्खनलाल जी यह मौका बार बार नही आता। मै प्रतिष्ठाचार्य प० पन्नालालजी पाटणी केकडी वालो के पास गया, कोई सुनाई नही करी। इन्द्राणी हाथी पर बैठ गई। बठते ही हाथी की पीठ टेढी हो गई। मने सावधान किया। फिर भी उन्होने नही माना। हाथी पर बठा दी। पाच मिनट नही हुए कि वर्षा ने भयकर रूप दे डाला। पाच मिनट मे पडाल और तम्बु जमीन पर धराशायी हो गये। प्रलय जैसा दृश्य हो गया। लोगो मे भगदड मच गई।

प० कस्तूर चन्द जी शास्त्री कोडरमा के जमाई ने एक नाटक रचा-भूत प्रेत आने का। भगवान् पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सामने। बडा विकराल रूप बना डाला। सकडो लोग एकत्रित हो गये। मै भी पहुँच गया। मै सीधा ही उनके पास पहुँच गया। उसके हाव-भाव से मैंने देखा कि न उसके शरीर म व्यन्तर है और न कोई भूत प्रेत। वह कहता था छूट जाया। क्षेत्र पाल जी मेरे शरीर म आन रहे है। मेरे म भी भूत आ गया। साहस पूर्वक आगे बढा। उनके दोनो हाथ पकड कर कहा कि क्षेत्र पर यह दिखावा ठीक नही। छूट जाइये। उन महाराज ने कहा कि छूट जाइये। मै सात फूक दूगा। छह फूक तक आपको छोड दूगा। सातवी फूक म भस्मीभूत कर देगा। मेरे मे भी जोश आ गया। उन समय मेरी द्वितीय पत्नी का स्वर्गवास हो गया था। मैंने कहा ये ही सही। ... पूरे चार तक मानता फूक देने लगा मैंने कसकर एक लात धर दी। जमीन पर गिर गये। भूत

भाग गया। घसीट कर मन्दिर के बाहर पटक दिया। लोग स्तब्ध रह गये। वास्तव मे परम् पूज्य सम्मद शिखर एक आदर्श तीर्थ है। ऊपर मे बहुत शान्ति मिलती है। मानव को एक अवसर मिलता आत्म निरीक्षण का। कई बार पुन उस पुण्य भूमि के दर्शनो की प्यास जागृत हो जाती है। ऐसे मने करीब 8 बार तीर्थ राज की वन्दनाए की है। इसी के साथ मैने बिहार, बगाल और उडीसा के सब ही तीर्थों की वन्दना की। राजगृही के पाचो पहाडो की वन्दना मे भी अपूर्व आनन्द रहा। ऋजुकूला नदी के तट पर भी मै गया। सिर्फ श्वेताम्बर समाज का मन्दिर देखने को मिला। दिगम्बर प्रतिमायें एक ताक म पडी हुई मिली। भगवान् महावीर ने वहा केवल्य प्राप्त किया है। वह हमारा ऐतिहासिक स्थल है। इसके लिये दिगम्बर जैन समाज विचार करे। खण्डगिरी उडीसा मे एक आदर्श तीर्थ स्थल है। वहा पर आत्मार्थियो के लिए चिन्तन के साधन है। जबकि वहा 3 घण्टे मे दर्शन करके यात्री लौट जाते है। तब म करीब 5 दि उन कन्दराओ के बीच रहा। फिर भी हटने की इच्छा नही हुई। मै तो मानता हू कि यह पावन स्थल है। यहा पुरुषो न इन्ही स्थलो पर विराजमान होकर आत्म लाभ लिया ह। परिणामो की निर्मलता के लिए तो ये पुण्य भूमिया है ही। किन्तु इनके पीछे हमारा हजारो वर्षो का इतिहास भी छिपा हुआ है। इन प्राचीन स्थलों पर खुदाई की जाय, अनुसधान किया जाय तो भारतीय इतिहास के पन्ना पर अभूतपूर्व परिवतन आ सकता है। भारत का ऐसा कोई प्रान्त बुन्देल खण्ड और पूरे मध्यप्रदेश के तीर्थों की वन्दना कर डाली। आज म इन तीर्थो की वन्दना करके अपने आप को भाग्यशाली मानता हू।

प्रश्न – वर्तमान जीवन का किसी प्रकार चल रहा है? और क्या आप पूर्व वत ही समाज को अपनी सेवाए प्रदान कर रहे हैं? तथा आपके पदचिन्हो पर आपका परिवार कहाँ तक चल पा रहा है?

उत्तर – वीतरागी देव शास्त्र और गुरु की सम्यक सेवा करते हुए मैं अपने जीवन पूर्ण सात्विक जीवन बनाने का प्रयत्न करता हू। साथ ही सहिशम्य लाता ना भमभाव [illegible] दिशा बाध [illegible] का बराबर आज भी प्रयत्न मेरा जारी है। शास्त्र स्वाध्याय मेरा अभी भी नियमित म चलता है। मेरा परिवार मुझ से सन्तुष्ट है। परिवार के सभी सदस्यों पर मेरी धार्मिकता का पूरा प्रभाव है।

उज्जन म मेरे दो प्रतिष्ठान हैं। एक का नाम महावीर कुमार सुनील कुमार दूसरे का नाम रजनीश एण्ड कम्पनी दोनो पर ही कपडे का लेन देन ह।

उज्जन आने क बाद मेरी पवन् श्रद्धेय माता श्री जोधा [illegible] का स्वर्गवास [illegible]। मैंने उनके स्वर्गवास पर किसी भी प्रकार की रूढि का परिपालन नहा किया। [illegible] प्रति [illegible] भी [illegible] मृत्युभोज किया और न [illegible] या बन्धन प्राप्ति [illegible]। [illegible] कुमारी के [illegible] सब गृहस्थी का भार आ [illegible]। [illegible] भी [illegible] पुत्रि [illegible]। मैंने [illegible] उनके जीवन का [illegible] प्रदान किया। [illegible] निक्षण देना उचित समझा। जिनने [illegible] जीवन म [illegible] प्रगति का [illegible]

स्वय विलासी नही था। सादा मेरा जीवन था, मितव्ययता मेरे जीवन का लक्ष्य था। इससे मेरे जीवन म किसी भी तरह की अशान्ति नही आई। मेरे सामाजिक जीवन मे आगे बढ़ने मे यदि सब से बड़ा सहयोग रहा तो मेरी धर्मपत्नी का। वह स्वय धार्मिक है। स्वभाव मे सरल और व्यवहारमे बड़ी मधुर है। मै दुकान के काम मे भी व्यस्त रहता था और सामाजिक कार्यों म भी लगा रहता था। उसकी आवाज के ऊपर मै उसका कोई भी काम समय पर पूरा नही कर सका। लेकिन उसको कभी भी असतोष नही हुआ। कई बार तो वह बच्चो को सिफ नमक मिच के साथ रोटी खिलाकर सतोष मानती थी। लेकिन मुझे एक शब्द भी नही कहती थी। आज वह धार्मिक विचारधारा की महिला है। प्रात 5 बजे उठती है। घर का काम करती है। 7 बजे मन्दिर जाती है और 9 बजे मन्दिर से लौटकर आती है। पाचो पुत्रियो के सम्बन्ध सम्पन्न घरानो म हो चुके है। पाचो ही सुशिक्षित है, धार्मिक है। इनका परिपालन ऐसे ढग से किया गया है जिससे वतमान जीवन का उनके हृदय पर कोई असर नही है।

आप आश्चय करेंगे यह जानकर मैने इनको मेरी दुकान पर कपड़े के सपल आते थे उनकी फिराक बनाकर पहनाई है। जिनको देखकर लोग आश्चय करते थे। लेकिन मेरे घर मे पूर्ण सन्तोष था। आज उस जीवन से इन सबके ससुराल म उनके प्रति आदर की भावना है। मैने पाचो लडकियो के सम्बन्ध कर दिये है। मेरे सामने कोई समस्या उलझन की नही आई, न मेरे सामने इनके सम्बन्ध मे मेरे सम्बन्धिया ने लेन देन का प्रश्न उठाया। वास्तव मे मैं उन सबका पूर्ण कृतज्ञ हू। आज भी वे मेरे से, मेरे व्यवहार से पूर्ण सन्तुष्ट है। मुझे भी गव है कि मुझ इस युग मे ऐसे व्याही मिले। पुत्रियो के नाम है कनकप्रभा विद्युतप्रभा शैलबाला ज्ञानेश्वरी, और शारदा। इनमे शैलबाला और ज्ञानेश्वरी सामाजिक गतिविधिया मे काफी अग्रसर है। बड़ी-बड़ी सभाओ मे प्रमुख व्याख्याता के रूप मे जाती है।

मेरे बडे पुत्र का नाम सुशील है, दूसरे का नाम रजनीश और तीसरे का नाम सजय। तीनो ही पुत्र धार्मिक है, आज्ञाकारी है और वतमान वातावरण से दूर है। नित्य दशन करते हैं जाप करते है। न रात्रि भोजन करते है और न अभक्ष्य पदार्थों का सेवन करते है।

मेरे बड़े पुत्र का विवाह मैने राजस्थान म एक गावड़े की लड़की से किया है इसका नाम है- रविकान्ता। जब मै और मेरी धर्मपत्नी इसका चयन करने को राजस्थान मे गये। लड़की हमारे सामने हसती हुई आई। मैने पूजा पाठ के सम्बन्ध मे जानकारी चाही। हमको सन्तोष हुआ। हमारे सामने उनका पूरा परिवार बैठा हुआ था। साथ म कलकत्ता के कुछ परिचित मित्र भी थे। मैंने लड़की से तीन बात पूछी। मै गाधीवादी विचारधारा का आदमी हू। सादा जीवन है। स्वावलम्बी हू। मेरे घर म सब काम हाथ म करते है। टट्टी हाथ से साफ करते है बतन स्वय साफ करते है और कपड़े भी हाथ से ही धोते है। क्या तुम ऐसा काम करने को तत्पर हो? लड़की ने सहष स्वीकार किया। मैने भी बिना किसी शत के लड़की को कह दिया हमको भी तुम स्वीकार हो। इससे घर वाले खुशी से उछल पड़े। मेरी धर्मपत्नी ने कहा कि चेहरे पर एक दाग है। दूसरी लड़की और देख ले। मैने कहा यह दाग तो फिर भी हो सकता है। लड़की सुशील है। इसी से सम्बन्ध कर लेना है। धर्मपत्नी

चतुर्मुखी प्रतिभा के धनी

आध्यात्म प्रेमी
श्री प यतीन्द्र कुमार
वैद्यराज, लखनादौन

श्री सेठी जी का जीवन आदर्शों के कारण अनुकरणीय बना हुआ है। आपने राजस्थान मे जन्म लेकर बचपन को आर्थिक विकास का साधन बनाया और 40 वर्ष के मध्यप्रदेश के ऐतिहासिक नगर उज्जैन को अपने कर्तव्य क्षेत्र का क्रीडा स्थल बनाकर चतुर्मुखी विकास किया। अक्सर देखा जाता है जो लोग धार्मिक तथा विद्वान् होते है वे कुशल व्यापारी नही बन पाते और जो आर्थिक सम्पन्नता वाले होते है वे विद्वान नही बन पाते। यह विरोध देखा जाता है, पर सेठी जी इसके अपवाद है। वे स्वय एक बहुत बडे कपडे के व्यवसायी है। थोक क्लाथ एसोसिएशन के प्रेसीडेन्ट है और साथ मे चारो अनुयोगो के जाने-माने विद्वान्, वक्ता, लेखक और चिन्तक व प्रसार काय कर्ता। आजकल धन, विद्या एव प्रतिष्ठा पाकर लोग बहक जाते है। विषय कषायो मे तल्लीन हो जाते है। मान बडाई के इच्छुक होते है। पर वे इतने ज्ञानी सज्जन है कि प्राप्त वैभव को ज्ञानाय, धनाय व रक्षणाय मे ही उनका सदोपयोग कर रहे है। पर हित ही उनके जीवन का ध्येय बन गया है। वे एक समर्पित कायकर्ता है।

□ □ □

सेनानी

प्रतिष्ठाचाय श्री ब्र राजकुमार जैन
सहायक सचालक–विश्व जैन मिशन
आगरा

प० सत्यधर कुमार जी सेठी ने जैन जगत के प्रसिद्ध विद्वान् स्व० प० चैनसुख दास जी न्यायतीर्थ एव डा० कमला प्रसाद जी के सम्पर्क मे प्रगतिशील भावनाओ के साथ काय किये हैं। व्यावसायिक सफलता के साथ-साथ स्वतन्त्रता सग्राम मे भी पूर्ण सहयोग किया। ऐसे कर्मठ सेनानी के साथ काय करने मे हमने भी मनुष्य जन्म सार्थक पाया है।

आपके दीर्घायु की शत शत बार शुभकामना करते हैं।

□ □ □

लोह पुरुष

श्री प विनयकुमार जैन
श्री भारतवर्षीय दि जैन सघ
मथुरा

प० सत्यधर सेठी मेरे आदरणीय मित्र है। उन्हे विगत 30 वर्षो से म जानता हू। उन्हे म सदा "लोह पुरुष" के नाम से याद करता हू। पण्डित नाम को उन्होने पण्डिताई तक ही सीमित न रख कर व्यापार क्षेत्र म लगाया और एक कुशल व्यापारी बनकर जहा द्रव्याजन किया, वही समाज क्षेत्र मे अपनी प्रतिभा का चमत्कार एक कुशल वक्ता के रूप मे दिखाया। मने उन्हे सभा मे शेर की तरह दहाडते देखा है। परिषद, महासभा, महा समिति सभी की सभाओ मे उन्हें आदरणीय व्यक्ति के रूप मे देखा और पाया है।

भगवान उन्हे शतायु बनाए यही प्राथना है।

□ □ □

इन्दिरा गांधी द्वारा सेठीजी के नाम दो पत्र

प्रिय श्री सेठी,

आपका १७ अगस्त, ७९ का पत्र मिला। सद्भावनाओं तथा विचारों की दी गई जानकारी के लिए धन्यवाद।

शुभ कामनाओं के साथ।

—इन्दिरा गांधी

• • •

आपके समर्थन-संदेश के लिए धन्यवाद। आपकी सद्भावनाओं से मुझे बल मिला है।

नव वर्ष की शुभकामनायें।

—इन्दिरा गांधी

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

लेखक और पत्रकारों ने

पंडित सत्यधर कुमार जी सेठी से परिचय बहुत पुराना है। यह याद भी नहीं कि इस बन्धुत्व को कितनी दशाब्दियां बीत गईं।

समादृत

श्री अक्षयकुमार जैन, विश्वविख्यात पत्रकार-लेखक नई दिल्ली

पं० जी जैन-दर्शन के उद्भट विद्वान् तो है ही, समाज के सुधार मे भी किसी से कम नही। रूढिवादिता से वे कोसो दूर है और आगम सम्मत अपने विचारो के कारण समस्त जन समाज मे समादृत है।

वे वक्ता भी उच्च कोटि के है। जब किसी विषय पर अपने विचार व्यक्त करते है तो दर्शक दत्तचित्त होकर शान्ति के साथ उन्हे सुनते हैं और उपदेश ग्रहण करते हैं। पंडितजी केवल आयु मे ही मुझसे छोटे है अन्यथा अन्य सभी प्रकार से बडे और महान् है। आयु मे ज्येष्ठ होने के कारण मैं उन्हें हृदय से आशीर्वाद तो देता ही हू, उनके स्वस्थ और दीर्घ जीवन की कामना भी करता हू। समाज की ओर से हो रहे उनके अभिनन्दन मे सम्मिलित होने मे मैं गौरव अनुभव करता हू।

□ □ □

निर्भय

पत्रकार खादी साहब श्री अगार वाला जैन श्री पालाजी, भुसावल

सेठी जी साहब के गुणो का वर्णन करने के लिए जो ग्रन्थ आप इन्हे भेंट करने वाले है उसके पन्ने अधूरे रहेंगे, इतने ही मेरे विचार बहुत है क्योंकि यह व्यक्ति निर्भय है और यथा नाम तथा गुण सत्यधर सत्य बोलने वाला है चाहे किसी को कटु लगे या असन्तुष्ट हो। अपने सिद्धान्तो पर चलना इनका ध्येय रहा है। मेरा सेठी जी साहब से अनेक वर्षो से सम्बन्ध रहा है। अभी की ताजी घटना है उज्जैन नगरी मे सन्त दिगम्बर दयानन्द जी का संघ पधारा था उस समय तनिक सी बात को लेकर समाज मे आपसी मतभेद होने की सम्भावना थी, किन्तु सेठी जी के साथ मैं भी था और हमारे प्रयासो से तथा दूरदर्शी विचार करते हुए महाराज श्री ने बडे ही सजगता से काम लिया और भेदभाव के बजाय समाज ने हजारो की संख्या मे मेलजोल के साथ महाराज श्री की शोभा यात्रा मे सहयोग प्रदान किया।

□ □ □

असाधारण आदर्श व्यक्तित्व के धनी

डा ताराचन्द बख्शी पत्रकार एवं प्रसिद्ध, समाजसेवी, जयपुर

पं० सत्यधर कुमार जी सेठी श्रद्धेय पं० चनसुखदास जी न्यायतीर्थ के प्रमुख शिष्यो मे से हैं जिन पर उनकी क्रांतिकारी एवं समाज सुधारवादी गुणो का गहरा प्रभाव पडा है। प्रारम्भ से आपने लोहड साजन आदि अनेक आदोलनो मे प्रमुख सक्रिय भाग लेकर मार्गदर्शन प्रदान किया है। वे निर्भीकतापूर्वक अपने विचारो को प्रकट करते है। सादा जीवन उच्च विचार आपके जीवन का महत्वपूर्ण सिद्धान्त है। आपके विचार जितने सुस्पष्ट और गम्भीर है,

उनकी अभिव्यक्ति करने की शैली भी बड़ी रोचक और प्रभावपूर्ण है आप ओजस्वी वक्ता हैं। आपकी वाणी म दूसरे को प्रभावित करने की अद्भुत क्षमता है।

अ० भा० दि० जैन परिषद्, अखिल विश्व जैन मिशन, दिगम्बर जैन महासमिति आदि अनेक संस्थाओं के अधिवेशनो एव कार्यक्रमो म मुझे आपके साथ रहने एव काय करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है और मैंने उन्हें नजदीकी से देखा है। मेरे पिता श्री केशरलाल जी बख्शी स भी आपका निकट सम्बन्ध था। मेरा आपसे लगभग 30 वर्षों से भी अधिक का प्रगाढ परिचय है। आपने अनेक बार मेरे घर पर भी पधारकर आतिथ्य ग्रहण किया है और मुझे वात्सल्य प्रदान किया है।

वास्तव मे आप असाधारण आदर्श व्यक्तित्व के धनी है और अपनी सूझबूझ, शक्ति, सामर्थ्य से ही कल्याणकारी वीतरागी धर्म के प्रचार प्रसार म अग्रणी है। आपका जयपुर एव अनेक स्थानो पर पर्यूषण आदि पर्वो पर दस दिन तक शास्त्र प्रवचन हुआ है और आपके क्रान्तिकारी सुधारवादी एव धार्मिक विचारो का समाज पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। आपने अनेक धार्मिक, सामाजिक, शैक्षणिक एव सांस्कृतिक संस्थाओं का निर्माण किया है जो आपके मार्गदर्शन मे सुचारु रूप से चल रही है। जैन संस्कृति तथा सभ्यता की रक्षा हेतु श्री दि० जैन संग्रहालय उज्जैन भी आपकी अद्वितीय यशस्वी कृति है। वास्तव मे आप जैन संस्कृति के सर्वोच्च दार्शनिक सत्य स्याद्वाद के आधार पर चलकर समाज मे कार्यकर्ताओं के प्रेरणा स्रोत हैं।

राष्ट्र, धर्म एव समाज की निःस्वार्थ सेवा द्वारा आपने जन-जन के समक्ष एक आदर्श उपस्थित किया है। अपने अध्यवसाय एव कठिन परिश्रम से ही आप कुशल वस्त्र व्यवसायी बने है। ईमानदारी एव प्रामाणिकता के कारण ही आपकी सब पर धाक है, जिसके अनेक उदाहरण भी है। आप अत्यन्त निर्भीक, स्वाभिमानी, सक्रिय कर्मठ कार्यकर्ता है। अनेक मानवी गुणो का एकीकरण और सदाचार का समीकरण एक साथ आप मे समन्वित हुआ है। आप लक्ष्मी एव सरस्वती दोनो के वरद् पुत्र है जो अत्यन्त विरल एव दुर्लभ है। आप अच्छे लेखक, वक्ता एव संगठनकर्ता हैं। आपने अनेक उपयोगी योजनाओ एव कार्यो मे मुक्त हस्त से दान भी दिया है। कर्म के प्रति गहरी निष्ठा होने के कारण आप सदैव अपने कर्तव्य के प्रति जागरूक रहते हैं। अनवरत साधना कर्मठता के प्रति अटूट विश्वास ने ही आपको उन्नति के शिखर पर पहुंचाया है।

□ □ □

सत्य के प्रति समर्पण

श्री प्रवीण चन्द्र छाबड़ा
ब्यूरो प्रमुख-समाचार भारती
राजस्थान, जयपुर

अभिनन्दन है, व्यक्ति ने अपना जीवन जी लिया है। जो होता है, वह होकर परिपूरित है। यशोगान, स्वागत, वन्दन और नमन व्यक्ति के लिए सदा से आकर्षण है। जो नहीं है, वह होकर अहं की तुष्टि है, मानस की दुर्बलता है। व्यक्तित्व और कृतित्व जहां समरस है, जीवन सार्वजनिक है, खुला पुस्तक है। निज से अलग होते जाना ही संस्था होकर कृतित्व हो जाना है। बीज की तरह मिटकर अंकुरित हो जाना है। नए रूप मे पल्लवित व सज्जित होकर धरती मे गहरे पैठते जाना ही जीवन वृत्त को ऊंचा, विशाल और व्यापक बना देता है। व्यक्ति तब चरित्र से अधिक चारित्र्य हो जाता है। आश्रित होने की जगह स्वय आश्रय हो जाता है।

सेठी सत्यधर कुमार का अभिनन्दन है समर्पित जीवन के प्रति कृतज्ञता ज्ञापन है। व्यक्तित्व और कृतित्व का स्मरण है। व्यक्ति के रूप मे जीना जीकर आज वे स्वयमेव संस्था हैं कि अर्घ्य होकर आहूत है। उनकी अपनी जड़े है, जो धरती मे गहराती जाती है। अपने से ऊंचे उठते जाकर भी झुके जाते है। विस्तार पाकर भी विनयशील है। ज्ञान, विनय और क्षमता की त्रिवेणी निजत्व लिए हुए हैं कि धन और यश के प्रति निरपेक्ष है। हृदय का अमृत अंजुलियो मे लिये वितरित किए रहते है कि कल्याणमय होकर सरल और विरल है। धर्म के प्रति आस्था, विश्वास और निष्ठा ही जीवन का मांगलिक सूत्र है।

सेठी सत्यधर कुमार, मेरे मन से अलग होकर जो है, वह होते जा रहे थे। अपने से सिमट कर आज सबके लिए है। अपने स्वभाव मे होना धर्ममय होना है और आचरण मे होना जीवन्त होना है। भागना कमजोरी है। भागकर अपने को पाया भी नहीं जा सकता। भागने की अपेक्षा संघर्षरत होना, खड़े रहना, स्थिर रहना ही जागरण है। आंचलिक क्षेत्र भादवा मे जयपुर और जयपुर से उज्जैन की यात्रा कर्मण्य जीवन की यात्रा है। स्व० प० चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ के पट्ट शिष्य होकर जैन-दर्शन के ज्ञाता-व्याख्याता है कि स्वय पण्डित है। नित्य स्वाध्याय और शास्त्र प्रवचन है। नयी पीढ़ी को दिशा बोध और तत्व ज्ञान का पाठ है। स्व बल ही सर्वश्रेष्ठ है और स्वावलम्बन ही निज का गौरव है।

सेठी सत्यधर कुमार जी स्वाश्रमी है कि आजीविका के लिए उद्यमी है कपड़े के व्यवसायी है। व्यवसाय म प्रमाणिकता और धर्म का पालन है। शुद्ध अर्जन है और तदनुसार विसर्जन है। अपने लिए कमाई म सबका समाई है। दान नहीं, अनुकम्पा है। जहां आवश्यकता है, वहां अपने आपमे व्यवस्था है। दान मे देय होना, अन्य को दीन हीन अथवा याचक बनाना है। जो देना है, वह अध्य रूप से देता है, स्वय को कृतार्थ करता है। अपन अधिकार

के प्रति जहाँ जागरूक है, वहाँ कर्तव्य का पूरी तरह पालन है। जनत्व का श्रद्धान् है, कांग्रेस के निष्ठावान् सैनिक है, श्रीमती इन्दिरा गाधी के नेतृत्व मे विश्वास है, निष्ठा है। सामाजिक कुरीतियो के विरुद्ध मुखर है। हरिजनोत्थान व समाज सुधार के कार्य में अग्रणी है, निरपेक्ष होकर समर्पित है। मनसा वाचा, कर्मणा एक हैं कि कही कि भाव दुराव नही है। अपने निश्चय के प्रति दृढता, निर्णय के प्रति सकल्पबद्धता और श्रद्धावान् हुए रहना सत्य की साधना है। निज के स्वभाव मे होकर निजत्व को पहिचानना और कर्मण्य हुए रहना ही व्यक्तित्व को कृतित्व से जोड देना है। अपने दर्शन और ज्ञान मे शुद्ध-विशुद्ध हो जाना है।

समगंध जहा होती है, आनन्द अनिर्वचनीय हो जाता है। सत्यधर कुमार सेठी, ऐसी ही सुगंध है, जहा अपने आचरण में शुद्ध तथा ज्ञान मे निश्चयी है। समाज स्थापित मूल्यो के प्रति संवेदनशील होकर भी अपने जीवन मूल्यो के प्रति सावधान हैं। स्वय दीप होकर जीवन को समर्पित किये रहते हैं कि ज्योतिष्मान हैं। जहा होते हैं, उनकी ज्योत प्रकाश किये रहती है। उनके चादना मे सब लोग प्रकाश पाये रहते हैं।

सेठी सत्यधर कुमार व्यक्ति का नाम होकर भी प्रतीक है, जिन्होंने अपने को अ-शेष कर लिया है और जो मात्र कृतित्व होकर हैं। साधारण से असाधारण होकर भी साधारण हैं सामान्य है। अपनो के बीच अपने लिए हैं सबकी पहुच मे है। साधारण आहार विहार और पहिनाव म भी विचारो म उच्च हैं ज्ञान के धनी हैं। मोटा पहिनना और मोटा खाना, यही जीवनचर्या है। जो है, सो है और इसी म जीवन जीते रहकर स्वय अपने स्वभाव म सिद्ध हैं। अक्खडपन और फक्कडपन है तो है जिन रहना ही है और यही कर्मण्य जीवन का सत्य के प्रति समर्पण है।

□ □ □

एक अभिनन्दनीय का अभिनन्दन

प० सत्यधर कुमार सेठी वास्तव म एक अभिनन्दनीय व्यक्ति हैं जिनका सारा जीवन सत्य, धार्मिक निष्ठा निस्वार्थ सेवा और परोपकार पर आधारित है। श्री सेठी जी उन निर्भीक विद्वानो लगनशील नि स्वार्थ समाज सेवकों, सिद्धान्तवादियो मितव्ययी पर आवश्यकता पडने पर मुक्त-हस्तदानियो, सादा जीवन उच्च विचार के धनियो म हैं जिनसे बहुत कुछ सीखा जा सकता है। ग्रहण किया जा सकता है। प्रेरणा प्राप्त की जा सकती है। समाज सेवा के लिए नि स्वार्थ समर्पित जीवन वाले ऐसे विरल ही होते हैं—जिनके कोई मान-मर्तबे नहीं ख्याति यश की कामना नहीं। वे केवल कर्तव्य

मानकर अपना काय करते चले जाते है। सेठीजी की विशेषता है कि अपने सिद्धान्त की कीमत पर किसी से कोई सौदा/समझौता नही करते—चाहे बडे से बडा विद्वान हो धनिक हो, नेता हो, प्रभावशाली व्यक्ति हो। ये सदा आगमानुसार क्रिया के धनी रहे है। यहा जन मान्यताओ, सिद्धान्तो से विचलित होने का काम नही। पक्के सुधारवादी है, क्रान्तिकारी है। खूबी यह भी है कि विरोधियो के समक्ष अपने सिद्धान्त पर अटल रहते है—निर्भीकतापूर्वक अपने पक्ष का प्रतिपादन करते है किन्तु उनसे सद्धान्तिक विचार भेद होते हुए भी उनसे व्यक्तिगत जीवन के प्रेम मे बाधा नही आने देते। जोर शोर से खूब कह देते है पर अन्तरग मे व र भाव नही रखते।

श्री सेठी जी मूलत जयपुर राज्यान्तगत उस भादवा ग्राम के निवासी है जिसने स्वर्गीय श्रद्धेय प० चनसुखदास जी जसा प्रतिभाशाली विद्वान पदा किया। विक्रम सवत् 1967 का आश्विन शुक्ला दशमी विजयादशमी को श्री फतेहलालजी सेठी की धमपत्नि, धमपरायण श्री जोधावाई जी की कू ख से आपका जम हुआ। विजयादशमी एक नव जागति का मत्र फू कने वाला और विजय प्राप्ति की प्रेरणा देने वाला दिवस है और फिर जोधावाई-योद्धा युद्ध मे जूझने वाली माता की कू ख से और पिता फतह पान वाले हारने वाले नही। सयोग की बात है कि जन्म से ही श्री सेठी जी ने धम, समाज और देश सेवा की जमघुट्टिका पी है।

खेलने-कूदने के दिनो मे ही पाच वष की आयु मे पितृ वियोग सहना पडा। धम-परायण माता के कतव्य भरे दुलारने सस्कार डाले। निर्भीक समाज सुधारक परम देशभक्त एव प्रख्यात दाशनिक विद्वान गुरुवय प० चनसुखदास जी न्यायतीर्थ के चरणो मे बठकर 8 9 वष के बालक ने गुरुकुलीन वह शिक्षा और सस्कार प्राप्त किये जिनमे सत्यधर नाम को सायक किया। पूज्य गुरुदेव अनेको के जीवन निर्माता है। उनके शिष्य परिवार मे सच्च रित्रता सेवापरायणता, निर्भीकता आदि की छाप एक अपूव देन है पण्डितजी की समाज को। भाई सत्यधर जी उनके प्रथम शिष्यो की पक्ति मे है—कुशासन मे शिक्षा प्राप्त करने वाला म पूज्य पण्डितजी साहब के आदर्श जीवन का प्रभाव है कि सेठी जी आज सचमुच अभिनन्दनीय है।

सेठी जी बचपन से कुशाग्र बुद्धि थ। शास्त्र सभा म बठकर चर्चा-वार्ता मे आपकी काफी रुचि थी। आज से पचास वष पहले क युग म जबकि अह मन्य विद्वानो के, पचो के सामन सचाई रखना अपराध का कहर मान लेना था। फतहपुर म महासभा का अधिवशन चल रहा था। चर्चा तत्कालीन समाज सुधारक विद्वान प० शीतलप्रसाद जी की चल रही थी। सेठी जी प०

रघुनाथदास जी से पूछ ही बैठे कि जैन दीक्षा से दूर व्यक्ति महावीर का अनुयायी हो सकता है तो प० शीतलप्रसाद जी ने यदि किसी मुसलमान को जैन बना दिया तो क्या बेजा किया ? इससे तत्कालीन समाज नेता। विद्वत्मण्डली नाराज हुई और श्री सत्यंधर जी को धर्मद्रोही का खिताब मिला। कुचामन विद्यालय के प्रधान प० चैनसुखदास जी पर काफी दबाव डाला गया कि इस छात्र को विद्यालय मे निकाल दिया जाय। पर पंडितजी मे निकालना दूर रहा, सत्यंधर जी के कथन का पूर्ण समर्थन किया।

उस समय समाज सुधार के दृष्टिकोण से पूज्य पण्डित चैनसुखदास जी साहब द्वारा एक राजावाटी, शेखावाटी प्रान्तीय सभा की स्थापना हुई थी जिसके माध्यम से मृत्युभोज वेश्यानृत्य, विवाह म कई गलत रस्मे आदि के त्याग की आवाज इस संस्था ने उठाई, जैन विवाह पद्धति का एव अन्य कई सुधारवादी बातो का प्रचार किया गया। बडी धाक थी मारवाड प्रान्त म इस सभा की। इस प्रान्त मे जैन-विवाह विधि के प्रथम प्रचारक प० चैनसुख दास जी के और उनकी शिष्य मण्डली मे प्रमुख थे भाई सत्यंधर जी। जैन विवाह विधि का बहुत विरोध हुआ—खास तौर से उन ब्राह्मण पंडितों द्वारा–जिनका यह आजीविका का साधन था। इस विरोध मे श्री सेठी जी की पिटाई तक हुई लेकिन क्रान्तिकारी जीवन की परवाह नही करते। इस छोटी सी पिटाई की घटना से कब हिम्मत हारने वाले थे।

पढने के पश्चात आजीविकार्थ सेठी जी कलकत्ता चले गये। वहा अहिंसा परिषद् की स्थापना की। वहा काली घाट पर पशु बलि का विरोध किया। पिकेटिंग किया और बकरे की बजाय हमारा हाथ काट डालो, यह कहकर अपना हाथ बकरे को काटने के स्थान पर रख दिया। पडो ने यहा भी पिटाई की और इनके मुह मे मास तक ठूसन का प्रयत्न किया, पर आप अडिग रहे। ऐसे सत्कृत्य पर अहिंसावादी कहे जाने वाले समाज के कई लोगों ने इन्हे बुरा भला कहा, पर बिडला और कानोडिया बन्धुओ ने इस सत्याग्रही का साथ दिया। दूर देश म रोटी-रोजी के लिए जाने वाला व्यक्ति, कहा अहिंसा के सत्याग्रह म–कितनी लगन थी सेठी जी की।

कलकत्ता म श्री तोलारामजी मथमलजी की फर्म मे मुनीमात का काम करते थे स्वाभिमान पूर्वक। कभी सेठो की चमचागीरी नही की। एक बार सेठ तोलारामजी को रायबहादुर का खिताब प्राप्त होने पर आयोजित वायसराय पार्टी म शामिल होने का आपने विरोध किया। मालिक की मर्जी के खिलाफ आवाज उठाइ। एक ओर रोटी-रोजी का प्रश्न और दूसरी ओर देशभक्ति। आपने देशभक्ति को तरजीह दी।

उन दिनो खडेलवाल समाज मे लोहड साजन आन्दोलन जोरो पर था। चार पाच वर्षों तक वह चला। श्री सेठी जी का उसमे प्रमुख हाथ रहा। लोहड साजनो के साथ सर्वप्रथम विवाह श्री गवतमल जी के साथ हुआ जिसमे आप अगुआ थे। सन 1937 मे खडेलवाल सभा का अधिवेशन लुनियावास (जयपुर) मे पच कल्याण के अवसर पर रखा गया था। मुनि चन्द्रसागर जी जो लोहड साजनो के कट्टर दुश्मन थे—उनसे आपने भाषण मे अनुचित शब्द कहे जिसका विरोध हुआ, मडप मे लडाई-दगा हो गया। श्री सेठी जी और उनके साथी श्री चादमल जी काला पर बडा रोष था स्थितिपालको का। जयपुर से भी पूरी सुधारक पार्टी वहा मौजूद थी। इन पक्तियो का लेखक भी उपस्थित था। विरोधियो द्वारा सेठी जी काला जी और मुझे पकडवाने की पूरी कोशिश की। वे दोनो हाथ नही आये, मुझे दो पुलिसमैनो ने पकड लिया। सयोग की बात कि दगा स्थान पर ज्योहि माननीय नाजिम साहब आये—मैं बलपूर्वक उनसे हाथ छुडा और नाजिम साहब के पास चला गया। मारपीट लाठी चार्ज हुआ। श्री सेठी जी और श्री काला जी को जाति बहिष्कृत किया गया। यह उस आन्दोलन का ही फल है कि आज समाज मे लोहड साजन—बडसाजन का कोई फर्क नही है। सब आपस मे शादी विवाह करते है।

तनिक से विचार भेद के कारण श्री सेठी जी कुछ दिनो बाद कलकत्ता से जयपुर आ गये और अपने मित्र एव सहपाठी प० चादमलजी काला के साथ खादी का काम करने लग गये। जब जयपुर मे आये तो कब चुपचाप बठने वाले थे। मेरे साथ आपका परम स्नेह रहा है। सन् 1944 ई० तक वीर सेवक मडल जयपुर—केवल श्री महावीर जी के मेले का प्रबन्ध बखूबी करता आया था। उसका पुनर्गठन किया, जिसमे श्री सेठी जी का समुचित सहयोग था। आप उसके सयुक्त मत्री थे पर पूरी देखरेख आपकी थी। इन पक्तियो का लेखक, सभापति का सस्था का विधान बना और उसमे सामाजिक कुरीतिया को दूर करने, विधवाओ को सहायता, साहित्य प्रकाशन आदि कई योजनायें बनाई गई और तदनुरूप काय भी हुआ। महावीर निर्वाण दिवस मनाने की नीव डाली। कई काय किय।

जयपुर मे कुछ ही दिन रहे और सन् 45–46 मे उज्जैन आ गये और अपना कार्यक्षेत्र उज्जैन बनाया। तब से आपने उज्जैन मे जो काय किया उससे आप जन-जन के प्रिय बन गये। अनेक सस्थाओ को जन्म दिया, सचालन किया। विकास किया करीब 20 25 स्थानीय सस्थाओ से आप सम्बद्ध है ही, अखिल भारतीय स्तर को कई सस्थाओ के पदाधिकारी और सदस्य है। यह कहे कि आप स्वय चलती फिरती सस्था है तो कोई बेजा बात नही

होगी। धार्मिक, सामाजिक, व्यावसायिक सभी सभा मे आपका वर्चस्व है। सज्जन के सार्वजनिक जीवन म आप घुलमिल गये है। व्यावसायिक क्षेत्र म आपकी ईमानदारी अनुकरणीय है। कभी किसी स अपने नियम के विपरीत नाय नही करते न ज्यादा मुनाफा लेते हैं। यदि भूल से ल लिया गया हो तो उसे वापस स्वय देने जाते है। ऐक बार मुनीम की भूल से टैक्स कम जमा करा दिया और आप को मालूम पडा कि यह भूल हो गई है तो स्वय भेजकर बकाया पैसा जमा कराया। कौन है आज जो टक्सो की चोरी नही करता और कौन ऐसा ईमानदार है जो भूल रह जाय तो पुन टक्स देता है। यही कारण है कि जो आप रिटन भरते है—वह ही स्वीकार कर लिया जाता है।

गत अक्टूबर 1976 मे जब आपका स्थानीय स्तर पर अभिनन्दन हुवा तो विक्रम विश्वविद्यालय के कुलपति डा० शिवमगल सिंह 'सुमन' के ये शब्द—सेठी जी का "सादा जीवन, उच्च विचार", नि स्वार्थ सेवायें, सरल जीवन, आज मुझे भी प्रेरणा देते है—ये तप पूत कर्मठ सेवक है—आपके जीवन के सम्बन्ध मे एक कुलपति का महत्वपूर्ण सर्टिफिकेट है।

श्री सेठी जी का गृहस्थ जीवन भी बडा सुखमय है। आपकी धर्मपत्नी श्रीमती सूरजदेवी सचमुच एक लक्ष्मी है, धार्मिक आस्था वाली कर्तव्य परायण महिला है और सेठी जी के कार्यो मे पूर्णत सहयोगी है। आपके तीनों पुत्र बडे आज्ञाकारी विनम्र और आपके पदचिह्नो पर चलने वाले हैं। अनुशासन आपका घर पर बहुत अच्छा है। श्री सेठी जी सम्पन्न है आर्थिक दृष्टि से, पर और सम्पन्नता आते ही भौतिक सुख-सुविधाओ की सामग्री एकत्र होने लगती है। सेठी जी इसके अपवाद है यहा न आपको टेलिविजन मिलेगा, न स्कूटर और न अन्य चीजें। वहा आपको दूध-दही-मक्खन जरूर मिलेगा। सेठी जी ने जीवन मे एक बार, केवल एक बार सिनेमा देखा, फिर कभी नही देखा। वे ऊपर से कटु हैं, कठोर है, काले है पर अन्दर से मीठ हैं, सरल हैं और बहुत साफ है। कथनी करणी एक है। वे परिग्रही नही है। इस मामले में कि वे सीमित कपडे, लत्ते, धन आदि का परिग्रह रखते है। वे वर्षो पहले भी फक्कड थे और आज भी फक्कड। आपके जीवन की अनेक अनुकरणीय घटनायें है—यदि सब लिखी जायें तो एक पोथी तयार हो सकती है।

इस समारोह पर हम उनका हार्दिक अभिनन्दन करते हैं। कामना है कि सेठी जी स्वस्थ रहें, दीर्घायु हो और इसी प्रकार सम्मान, धर्म और देश की सेवा करते रहे।

☐ ☐ ☐

समाज निर्माता

श्री श्री मानक चन्द नाहर
प्रसिद्ध पत्रकार एव सम्पादक
मद्रास

समाज-निर्माता, राष्ट्र-सेवी, मानवता के मसीहा प० सत्यधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण पर मेरी अनेकानेक बधाइया स्वीकारे।

वस्तुत सेठी जी का सम्मान पूरे समाज का सम्मान ही है। यह हर्ष का विषय है कि ऐसे मानवीय अनुष्ठान पर महामहिम राष्ट्रपति जी अध्यक्षासन ग्रहण कर रहे है।

पुन बधाइया।

□ □ □

उन्नत व्यक्तित्व के प्रतीक

श्री विमल कुमार जैन सोरया
सम्पादक—वीतरागवाणी
टीकमगढ

भारतीय जैन समाज के कर्मठ समाज सेवी साहित्यक विद्वान् श्रीमान् सत्यधर कुमार जी सेठी का राष्ट्रीय स्तर पर जो सम्मान किया जा रहा है वह उनके उन्नत कृतित्व अपार व्यक्तित्व का प्रतीक है। यथार्थत समाज, धर्म, सस्कृति के साथ राष्ट्र हित मे इस महामानव की सेवायें युगो-युगो तक चिरस्मरणीय अनुकरणीय एव प्ररणादायी रहेगी।

ऐसे उन्नत व्यक्तित्व का सम्मान उस देश की समाज, धर्म और सस्कृति का गौरव अभिनन्दन है। मैं श्री सेठी के शतायु जीवन की कामना करता हुआ उनकी उन्नत आत्मा को प्रणाम करता हू।

□ □ □

सात्विक

श्री यशपाल जैन
विश्वविख्यात साहित्यकार एव समाज सेवी तथा लेखक,
नई दिल्ली

पण्डित जी का अभिनन्दन होना ही चाहिये। उन्होने जैन समाज, धर्म, साहित्य और सस्कृति की जो सेवा की है वह नि सन्देह सराहनीय है।

पण्डित जी की सबसे बडी विशेषता यह है कि उनका जीवन अत्यन्त सात्विक है और उन्होने जो भी सेवा की है निस्वार्थ भाव से की है।

वस्तुत आज ऐसे व्यक्तियो का बडा अभाव है जिनकी कथनी और करनी मे अन्तर न हो। पण्डित जी के सामने यही कसोटी रही है कि जसा बोलें वसा चालें।

उनका एक अन्य विशेषता उनकी प्रामाणिकता है। उन्होने जो कुछ लिखा है, यह बहुत ही प्रमाणिक है, उसके पीछे उनके जीवन की सात्विकता तथा विचारो की उदारता तो है ही।

मेरी प्रभु से कामना है कि पण्डित जी शतजीवी हो, स्वस्थ रहे और उनके हाथो समाज, साहित्य, सस्कृति आदि की और भी सघन रूप म सेवा होती रहे।

सप्रेम आपका

□ □ □

जीवेत् शरद् शतम्

श्री ज्ञानचद जैन
सपादक–'तारणबधु'
भोपाल

यह गौरव की बात है कि उनका सारा जीवन समाज के उत्थान के कार्यो म ही बीता है। मैं उनके सुधारवादी विचार तथा ओजस्वी वक्तृत्व से बहुत प्रभावित हुआ। उनकी सरलता, मृदुल व्यापार एव निरभिमानिता सहना उनको आकर्षित कर लेती है। मैं ऐसे उग्र सुधारक वात्सल्य भावी, जिनवाणी के भक्त एव कुशल वक्ता के दीर्घ जीवन की कामना करता हू जिससे जन समाज को उनकी सेवा तथा मार्गदर्शन भविष्य मे भी मिलता रहे।

□ □ □

सत्य के प्रहरी

श्री प ज्ञान चन्द जन
स्वतन्त्र
सहसम्पादक–जैन मित्र
सूरत

भाई सत्यधर कुमार जी भी सत्य के प्रति एक रूप हैं, नामानुसार गुण है, उनका जीवन सत्य के लिए समर्पित है। सेठी जी मात्र विद्वान् एव धर्मात्मा ही नही अपितु आपका जीवन विविधताओ एव अनेक विशिष्टताओ से परिपूर्ण है। आप लेखक है, पत्रकार है, सुधारक हैं, सुवक्ता है, प्रवचनकार हैं, समाज के प्रतिष्ठित विद्वान् हैं, देशभक्त हैं, अनेक सार्वजनिक एव सस्थाओ के उच्च पदाधिकारी है, अनेक सस्थाओ के सस्थापक, अनेक सस्थाओ के मूकपोषण हैं। सस्थाओ सम्बन्धी आपकी सेवायें अविस्मरणीय एव भावी पीढी के मार्गदर्शक या दिशाबोधक हैं।

सेठी जी अपने कर्तव्य के प्रति हमेशा जागरूक रहे हैं। आप इतने निष्पक्ष विद्वान हैं कि किसी के विरोध-समर्थन मे या खण्डन-मण्डन के चक्र मे पडकर आगम की बात करते हैं। सेठी जी आदर्श व्यक्तित्व के धनी है, चिन्तक हैं, मीमांसक है, सदा हसमुख रहते हैं, खद्दरधारी हैं, स्वभाव के विनम्र, परोपकारी एव उदारमना है। जीवन मे सत्य का ही प्रयोग करते हैं। सत्य को कोई चुरा न ले जाये (विकार अज्ञान रूपी तस्कर) इसलिए सत्य की सुरक्षा के लिए आप एक प्रहरी की तरह कार्यरत रहते हैं। आपकी हीरक जयन्ती की मांगलिक एव पावन वेला पर मेरी हार्दिक शतश–विनयाञ्जलि समर्पित है।

□ □ □

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

समाज सेवियों ने

त्यागी व्यक्ति

श्री एम जी जोशी एडवोकट
[illegible]

पण्डित जी ने समाज म नतिक मूल्यो को प्रतिष्ठित करने हेतु आजीवन समाज की अपनी लेखनी से सेवा की है। आने वाली पीढी भी उनके लेखो से प्रेरणा लती रहेगी। इन्ही शुभकामनाओ के साथ।

□ □ □

प्रबुद्ध विचारक

श्री अजीत प्रसाद जन
[illegible]
लखनऊ

यद्यपि प्रबुद्ध विचारक एव समाज सुधारक तथा समाज के सुप्रसिद्ध विद्वान पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के विषय म बहुत दिनो से सुनता आया था, किन्तु 31 अगस्त, 1983 को अनायास ही उज्जन मे उनके आतिथ्य का सौभाग्य प्राप्त हुआ तथा उनसे रात्रि म बडी देर तक सामाजिक एव धार्मिक विषयो पर चर्चा होती रही।

पण्डित जी का निष्कपट स्नेहपूर्ण साधर्मी वात्सल्य प्राप्त कर हृदय गदगद हो गया। पण्डित जी के विचार बडे सुलझे हुए ह तथा समाज म व्याप्त कुरीतियो के निवारण म उन्होने अपना सम्पूर्ण जीवन उत्सग कर रखा है। इस सत्तर वष स अधिक वय म भी पण्डित जी की कमठ एव धमनिष्ठ सयमित जीवनचर्या जो प्रात: 4 बजे से ही प्रारम्भ होकर रात्रि के 11 बजे तक चलती रहती है, देखकर ही बडी प्रेरणा मिलती है। ऐसे मनीषी समाज सेवी का अभिनन्दन सभी निस्पृह समाज सेवको का अभिनन्दन है। म श्रद्धेय पण्डित जी के दीघ जीवन की मगल कामना करत हुए उनका अभिनन्दन करता हू।

□ □ □

प्रमाणिक

श्री अमोलक चन्द जन, एडवोकेट

महामत्री एव वर्किंग कमेटी—दि जन सिद्धक्षेत्र सिद्धवरकूट अध्यक्ष—ला गाडुकेशनल सोसायटी खडवा, श्री चन्द्रवाडू ज्ञान निकेतन तथा अन्य सस्थाओ क विभिन्न पदो पर पदाधिकारी। खण्डवा

आदरणीय पडित सत्यधर कुमार जी एक निर्भीक प्रवक्ता, अपने सिद्धातो पर अटल, धार्मिक सुधारवादी विचारधारा के निर्माता, नवयुवको म सगठन कराकर उनको सक्रिय करन वाले रहे है। आपका धार्मिक अध्ययन, धार्मिक ज्ञान एव आचरण भी आदश रहा है। इतना सब होते हुए भी आपका जीवन और रहन-सहन पूर्ण सादगी का रहा है। आपकी धार्मिक, सामाजिक एव राजनैतिक सेवायें भी अत्यधिक रही है। आपकी प्रामाणिकता से सब अत्यन्त प्रभावित रहे है।

आपकी सेवायें सिर्फ मालवा प्रात और म प्र मे ही नही रही है बल्कि समस्त भारत वष म प्रसिद्ध है। आप श्री दिगम्बर जन मालवा प्रातिक सभा के शुरु से ही प्राण रहे है और पुरातत्व विभाग एव गुरु कुल मक्सी के कई वर्षो से मत्री हैं। कई सस्थाओ म मुझे आदरणीय पडितजी साहब के साथ रहने और काय करने के अवसर आए। आपका जीवन अत्यधिक सरल रहा है और आपका व्यवहार सबसे पूर्ण स्नेहमयी रहा है। सन 1969 म 2500वा

महावीर निर्वाण उत्सव मनाने के लिए देहली मे पूरा भारत वर्ष के दिगम्बर, श्वताम्बर, स्थानकवासी और तेरह पथी सब समाजा की एक मीटिंग बुलाई गई थी। आपका उसमे ओजस्वी भाषण हुआ जिससे सब प्रभावित हुए। एक वर्ष पर्यूषण पर्व के लिए आप समाज की प्रार्थना पर खण्डवा भी पधारे थे। आपके प्रवचन बहुत प्रभावशाली रहे। प्रवचन एव धार्मिक कार्यो म पूर्ण लगन के साथ तत्पर रहते हुए एक ठोस काय यह किया कि खण्डवा के नवयुवको म एकता व सगठन कर जैन नवयुवक मण्डल की स्थापना की जो आज भी पूर्ण उत्साह से अपने उद्देश्यो की पूर्ति कर रहा है और आपका नाम खण्डवा शहर से सम्बन्धित हो गया है।

आप मध्य प्रदेश महावीर ट्रस्ट के ट्रस्टी है। आपकी योग्यता और सेवायें देखकर ही आपका अभिनन्दन किया जा रहा है। जो अत्यन्त आवश्यक सेवा प्रतीत हुआ।

□ □ □

निर्भीक समाज सुधारक

श्री [illegible] चन्द्र बडजात्या
[illegible]

श्री सेठी जी मेरे निकटतम मित्रो म से रहे है। हम अखिल विश्व जैन मिशन के सचालको म से रहे है। साथ साथ काय किया है, देश एव विदेशो म। सेठी जी वस्तुत हमारे जैन जगत के महान विचारक-निर्भीक समाज सुधारक-अहं से रहित-सभी मानवीय गुणो से अलकृत इन्सान हैं।

मानवीय गुणो से अलकृत मानव एव अच्छे इन्सानो की वन्दना एव सम्मान समाज के लोगो को करना चाहिये उस दिशा म यह एक सफल प्रयास है।

□ □ □

कर्मठ कार्यकर्ता

श्री [illegible] चन्द्र दोषी
[illegible] दि जैन मदिर,
[illegible]

मैं श्री पण्डित जी सा के प्रति अपनी शुभकामना प्रगट करता हुआ भगवान से प्रार्थना करता हू कि वे चिरजीवी रहकर समाज को सेवा प्रदान करते रहे तथा उज्जैन म आने के बाद जो धार्मिक, सामाजिक काय किये वे निम्न रूप म उल्लेखनीय हैं —

1 आपका 2004 म उज्जैन आगमन।
2 25 वर्ष तक शास्त्र स्वाध्याय।
3 संस्थाओ की स्थापना एव उनको क्रियात्मक रूप देना व दिन रात उसी म लगे रहना।
4 गरीब विद्यार्थी [illegible] महिलाओ के लिए छात्रवृत्ति (सहायता)
5 [illegible] धार्मिक [illegible] 13 वर्ष।
6 [illegible] सादा एवं व्यापार म प्रामाणिकता।

7 अपने निर्णय के धनी।

8 उज्जैन मे आने के बाद अनेक सस्थाओ के सचालक, व्यवस्थापक, अखिल भारतीय सस्थाओ के सदस्य, मन्त्री।

9 कथनी और करनी मे कोई फर्क नही।

10 श्री महावीर जयन्ती दिगम्बर एव श्वेताम्बर की साथ साथ वेदी निकलना यह आपकी ही देन है।

11 सामाजिक बुराईयो के लिये सघर्ष।

12 पुरातत्व विभाग की स्थापना व सयोजन मे रत।

13 श्री पण्डित जी सा सत्यधर कुमार जी सेठी की विरोधियो के लिये बुरी भावना नही।

14 अखिल भारतीय सर्वोदय समाज सम्मेलन मे निर्भीकता पूर्वक आपने कहा कि सर्वोदय का नारा नया नही, लेकिन भगवान् महावीर ने ही सर्वोदय को आगे बढाया है। उन्होने प्राणी मात्र के विकास को सर्वोदय बतलाया।

15 दृढ सकल्पी विचारा के आदर्श श्री पण्डित जी सा।

□ □ □

आत्मज्ञानी

श्री केसरी मल गाधी
प्रसिद्ध समाजसेवी
लश्कर, ग्वालियर

मैं सेठी जी के अभिनन्दन अवसर पर अपनी ओर से दीर्घायु हो, उत्तरोत्तर आत्मज्ञान म वृद्धि होती रहे, शुभकामना भेज रहा हू।

कोई धन दे के मरता है, कोई मर कर के देता है।
जरा से फर्क से बन जाते है, ज्ञानी से अज्ञानी ॥

□ □ □

अभिनन्दनीय

श्री कृपाशकर तिवारी
प्रसिद्ध समाजसेवी
उज्जैन

मैंने अनेक लोगो के अभिनन्दन समारोह देखे है, उनमे भाग लिया है और उनको दिये जाने वाले अभिनन्दन पत्रो को पढा भी है और सुना भी है।

छत्तीस का आकडा आपने देखा है। दोनो अक एक दूसरे के विपरीत हैं। इसी तरह अभिनन्दन पत्र मे जो लिखा है उसके विपरीत ही मैंने अभिनन्दित व्यक्ति को पाया है।

कभी कभी मुझे बडा आश्चर्य होता है कि यह समाज कैसा हो गया है कि जिनको धिक्कारा जाना चाहिये उनका अभिनन्दन हो रहा है।

मैं किसी की बुराई नही करता, किन्तु कटु सत्य लिखने के लिये क्षमा प्रार्थी हू, कि अभी तक मेरा अनुभव यह है कि मैं पतित, भ्रष्टाचारी और पराधिमो को दिये जाने वाले अभिनदन समारोहो मे ही उपस्थित हुआ हू।

अभिनन्दन व्यक्ति का नही उसके चरित्र का होता है। "सत्य, धर्म, नैतिकता, कर्मण्यता, लोक वत्सलता, लोक भावना, त्याग सेवा आदि गुणो से चरित्र परखा जाता है।" ऐसे चरित्रवान व्यक्ति ही अभिनन्दन के पात्र होते हैं। अभिनन्दन व्यक्ति के गुणो की पूजा है।

धन से, पठित ज्ञान से और उच्च पद से भी ससार मे मनुष्य का वह मूल्य नही है जो सदगुणो से भूषित और उत्तम आचरण से युक्त है। ऐसे व्यक्ति अभिनन्दन के वास्तविक पात्र होते हैं।

मनुष्य आस्तिक हो या नास्तिक, सजातीय हो अथवा विजातीय, किन्तु जो मानवता के आदर्श गुणो से विभूषित है ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन होना ही चाहिये।

जिसे न लोभ है न मोह है और न कोई निजी स्वार्थ है तथा जो अपने कार्य क्षेत्र से भागता नही और न किसी के अनुचित दबाव मे आकर चलता है, ऐसे व्यक्ति का अभिनन्दन करना, उसको माध्यम बनाकर स्वय का अभि नन्दन करना है।

जिसने आर्थिक क्रियाओ मे प्रलोभन को जीत रखा है तथा जो अनार्थिक क्रियाओ मे मान सम्मान पाने की इच्छा नही रखता और जिसके सम्पूर्ण कर्म आत्म सशोधन हेतु होते हैं, ऐसे योग्यतम व्यक्ति का अभिनन्दन होना ही चाहिये।

ज्यो ज्यो व्यक्ति कषाय से मुक्त होता है त्यो त्यो उसके गुणो का प्रकटीकरण होता है और उसकी जीवन यात्रा मानव से महामानव की ओर सहज ही अपने आप चल पडती है। उसकी कोई मजिल नही चलते रहना ही उसकी मजिल है। ऐसे सद्गुण वाले व्यक्ति का अभिनन्दन समाज को करना ही चाहिये।

दिल एक मन्दिर है। प्रत्येक मनुष्य मे दिल है। श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के दिल के मन्दिर में वैष्णव भगवान् रामकृष्ण को देखता है, मुसलमान को अल्लाह दिखता है, सिखो को गुरु के दर्शन होते है, ईसाइयो को यीशु दिखता है, श्वेताम्बर, दिगम्बर दोनो को महावीर के दर्शन होते हैं। ऐसे सब सम्प्र दायो का एकीकरण श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के दिल मन्दिर मे है।

[illegible] मानव प्रेमी, जय जगत का नारा लगाने वाला, सत्यधर्म की व्याख्या करने वाला भगवान् महावीर के उपदेशो को जीवन मे आचरण के रूप मे उतारने वाला पाखण्डवाद के घोर विरोधी, श्रेष्ठ पण्डित, समाज सुधारक

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का स्वागत होना ही चाहिये। उनका अभिनदन किया ही जाना चाहिये।

ऐसे व्यक्तियो के सद्गुणो का प्रचार प्रसार होना अत्यन्त आवश्यक है। उनके गुणो का प्रकाश समाज के अनेक लोगो को अधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने मे सक्षम है।

सर्वप्रथम मैं अभिनन्दन समिति के कर्णधारो का अभिनन्दन करता हू कि उन्होने अभिनन्दन करने के लिये सही व्यक्ति का चुनाव किया।

मेरा श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से बहुत पुराना परिचय है। मैं इनको पहिचानता हू और जानता भी हू। पहिचान चेहरे से होती है और जानना आत्मा से होता है।

खादी के कारण दोनो एक दूसरे की ओर आकर्षित हुये। वे सभी खादी पहिनते हैं और मैं भी खादी प्रेमी हू। खादी मन की पवित्रता और सादगी को दर्शाती है। जहा दो मन एक सरीखे मिलगे वहा निकटता आना स्वाभाविक है। मेरा उनका निकटता का सम्बन्ध है। मेरे उनके बीच मे कोई पर्दा नही है।

मैंने श्री सत्यधर कुमार जी सेठी को निकटता स देखा है। वे निर्भीक है। उनको किसी का भय नही। मृत्यु उनको डरा नही सकती। आप माने या न माने मैं एक बात स्पष्ट रूप से मरी अनुभूति के आधार पर कह रहा हू कि वे "मृत्युन्जयी" है।

जो पाना था वह पा लिया। जो पा लिया उसको समाज को मन, कम, वचन से देना है यह उनका आध्यात्मिक रूप है।

लोक व्यवहार मे भी मैंने उनको खरे उतरते देखा है। लोभ को मार भगाया और सम्यक जीविका के सिद्धान्त का पूर्णतया पालन करते भी देखा है।

अभी कुछ ही दिनों पूर्व सेठी जी के सुपुत्र सुशील किसी कायवश बाहर गाव गये थे। जब वह रात्रि को घर पर आये तब सेठी जी ने अपने पुत्र को यह बताया कि आज कौन कौनसा माल किस भाव से बचा है। श्री सेठी जी को चायल का भाव न मालूम होने के कारण उन्होने भाव ज्यादा लगा दिय। लडके ने कहा कि चायल का भाव यह है और इस भाव से 40 रुपय के करीब अधिक अपन ने ले लिय। सेठजी न कहा कि व्यापारी आता ही रहता है उसको यह रकम वापस कर देना। 7 दिना बाद पुन वही व्यापारी उसी भाव मे चायल खरीदने आया। सेठी जी न उस व्यापारी को 40 रुपय

वापिस किये और कहा कि भूल स भाव ज्यादा लग गया था, उसी भाव आप और ले लीजिये।

मैं नही कहता कि ऐसे लोग नही होगे किन्तु मैं कहता हू कि ऐसे लोगो क दशन तो कराओ। उपदेश देना बात अलग ह और उपदेश के अनुसार आचरण करना बात अलग है।

स्वामी रामतीर्थ ने एक स्थान पर कहा है कि —

"जिस क्षण हम ससार के सुधारक बनकर खडे होते हैं उसी क्षण हम ससार के बिगाडने वाले बन जाते है, वद्य पहले तू अपनी चिकित्सा कर"

सन्त तुलसीदास जी ने कहा —

"पर उपदेश कुशल बहुतेरे। जे आचरहिं ते नर न घनेरे॥"

यह एक छोटा सा उनका नतिकता का उदाहरण है। खिचडी का चावल एक ही देखा जाता है।

एक बार मैंने उनसे पूछा कि आपने अपनी दुकान पर फिक्स रेट का बोड लगा रखा है, इसका क्या मतलब है ? श्री सेठी जी ने कहा कि 'एक भाव" हमारी दुकान की पू जी है। एक भाव का मतलब है "सत्य के आधार पर जीविका", एक भाव मे विश्वसनीयता छिपी हुई है। इनकी दुकान की साख ही यही है "एक भाव"।

कोई भी ग्राहक इनकी दुकान पर बीडी सिगरेट नही पी सकता। पहले तो ये बीडी या सिगरेट बाहर फिकवा देते हैं और फिर इस दुव्यसन से कितना नुकसान होने को है उसको खासा अच्छा भाषण या उपदेश देते हैं।

ऐसे भी अवसर आये हैं कि इनके उपदेश से ग्राहको ने बीडी या सिगरट आजन्म के लिये छोड दी।

मैं स्वय 20–25 वर्षो से तम्बाकू खाता था। इसी चतुर्मास मे एक दिन उन्होने मुझको तम्बाकू खाते देख लिया। वे बोले अच्छा तम्बाकू भी खाते हो। मैं सम्हल गया। विचार किया और इस निष्कष पर पहु चा कि तम्बाकू को छोड दना ही हर तरह से हितकर है। मन म सकल्प कर लिया और तम्बाक छूट गई।

इसका सम्पूण श्रेय श्री सत्यधर कुमार जी सेठी की निमल आत्मा को है, जिसने मुझे प्रभावित कर तम्बाकू को सदा सदा के लिए छुडवा दी।

एक बार ऐसा ही हुआ कि राय बहादुर सेठ लालचन्द जी सेठी के पौत्र बा भूपेन्द्र कुमार जी सेठी के विवाह म बरात मे चलने का निमन्त्रण राय बहादुर साहब ने श्री सत्यधर कुमार जी सेठी को दिया। श्री सत्यधर कुमार जी ने बरात मे चलने का निमन्त्रण इस आधार पर अस्वीकार कर दिया कि बरात मे बाहर से आई हुई वश्याये भी जाने को है।

दूसरी बार जब राय बहादुर सा के छोटे पौत्र बा तेज कुमार जी सेठी के विवाह का अवसर आया तब फिर इनको बरात मे चलने का निमन्त्रण राय बहादुर सा ने दिया। श्री सत्यधर कुमार जी सेठी ने बरात मे चलने की तीन शर्ते रखी।

(1) बरात मे वश्यायें नही जावेगी।
(2) समाज मे जो गरीब लोग हैं उनको भी विवाह का निमन्त्रण भेजा जावेगा।
(3) वैश्याओ को दिये जाने वाले रूपया से फण्ड कायम किया जाय और उससे वक्त जरूरत गरीबो की सहायता की जावे।

सेठ लालचन्द जी सेठी ने तीनो शर्तें स्वीकार कर ली।

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी अपनी बात निर्भीकता से रखते हैं और उस पर आचरण भी करते हैं। समाज सुधार के उन्होंने बहुत से काम किये है जिनका वर्णन अनेक लोग करने ही वाले हैं।

प्रत्येक मनुष्य के दो रूप होते हैं, एक बाहर का और एक अन्दर का। श्री सेठी जी के भी दो रूप है—गन्ने के समान। लोक व्यवहार म बाहर में सख्त और आध्यात्मिकता में अन्दर स मिठास।

रामायण बहुत बड़ा ग्रन्थ है किन्तु उसका स्वरूप छोटा भी किया जा सकता है। इसी तरह श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के सद्गुणो की प्रशसा की जावे तो रामायण बन सकती है। अभिनन्दन ग्रथ श्री सत्यधर कुमार जी सेठी की रामायण होगी।

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से दो शब्द

तुम डटे रहो, अन्धेरा तुम्हे निगलने की भरसक कोशिश करेगा और तुम्हारे माथे पर लाछन की बिन्दी धरेगा, लकिन तुम्हारा जीवन का वैराग्य रहेगा, लिहाजा तुम डटे रहो।

इस पुनीत यज्ञ मे मुझको भी आहुती डालने का मौका मिला उसके लिये मैं उन सभी का आभारी हू जिन्होने इस यज्ञ का आयोजन किया। सभी मद

गुणों को अपनायें, सभी सुखी हो सभी सदगुणी व्यक्तियों का अभिनन्दन हो, इस विचार को प्रसारित करने के साथ साथ मैं श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के स्वस्थ, दीर्घायु जीवन की कामना करता हूं ताकि शेष कार्यों को वे पूरा कर सकें।

□ □ □

निष्ठावान

श्री कुन्दनमल जैन
ट्रस्टी—श्री ऋषभदेव छगनीराम ट्रस्ट
व उपाध्यक्ष श्री वर्धमान युवक मंडल
नागदा उज्जैन

साहसिक, धार्मिक, सामाजिक तथा अन्य लोगों के किसी भी अच्छे काम में उन्होंने कभी अपनी अरुचि नहीं बताई। प्रत्येक काम में लगन तथा निष्ठा से काम करते रहे और आज भी उसी प्रकार से कर रहे है। मैं परम पिता परमात्मा से उनके दीर्घायु होने की कामना करता हूं।

□ □ □

क्रियाशील

श्री कुन्दन मल साह
समाजसेवी
उज्जैन

"समाज सेवी समन्वयवादी पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के साथ अपने संस्मरणों को स्मरण करते हुए उनके अनेको सद्गुणों में से कुछ का विवरण प्रस्तुत है। उज्जैन में पिछले 40 वर्षों के निवास के दौरान उनको अति परिश्रमी सत्यान्वेषी, क्रियाशील एवं समाज धर्म व देश की प्रत्येक गतिविधि में हमेशा संलग्न पाया है। अखिल भारत जैन महामण्डल के उद्देश्यों के अनुरूप जैन समाज के प्रत्येक अंगों में प्रेम व सौहार्द को स्थायित्व देने के लिए उज्जैन में परम पावन तीर्थंकर भगवान महावीर स्वामी की जन्म जयन्ति पर वर्षों से सामूहिक जुलूस व सभाओं का आयोजन कर समन्वय की आदर्श नींव रखी है। इसमें देश भर के विभिन्न विद्वान जैन व अजैनों का समागम होता रहता है। समाज के निर्धन छात्र-छात्राओं के कल्याणार्थ गत् 20 वर्ष पूर्व स्थापित श्री जैन शिक्षण समिति के कभी उपाध्यक्ष रहकर जिस लगन व प्रेरणा से संचालन किया है वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। उज्जैन में कपड़े के व्यवसाय को स्थायित्व प्रदान करने के लिये लगभग 1 करोड़ रुपये का एक अति विशाल वस्त्र विपणन केन्द्र का निर्माण पिछले 5 वर्षों से इनके ही नेतृत्व और प्रेरणा से हो रहा है। समाज के लब्ध प्रतिष्ठित पत्रों में वर्षों से सामाजिक व धार्मिक समस्याओं पर इनके द्वारा जो लेख लिखे जाते हैं वे भी समयानुसार अत्यन्त प्रभावशाली व उपयोगी होते है। जैन पुरातत्व जैन साहित्य और जैन आदर्शों का प्रसार आदि विभिन्न सामाजिक गतिविधियों में संलग्न मेरे अग्रवर श्री सत्यधर कुमार जी सेठी शतायु हों व देश व समाज की अधिकाधिक सेवा कर त्याग का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करें जिससे वर्तमान व आने वाली पीढ़ी के लिये आदर्श की स्थायी निधि का अटूट खजाना इन प्रिय नेता से सर्वदा मिलता रहे।

□ □ □

आदर्श व्यक्ति

वद्य श्री कैलाश जन
भू पू पापद,
नगर पालिका निगम, उज्जैन
अध्यक्ष—राष्ट्रीय चिकित्सा विचार मच—मध्य प्रदेश, महासचिव–उज्जन निवास समिति

आदरणीय श्री सेठीजी को मने बचपन से ही काफी नजदीक से देखा है। सक्षिप्त मे पण्डितजी त्याग, तपस्या, निष्ठा, लगन, व सेवा हर क्षेत्र के आदश व्यक्ति है। समाज के लिये ऐसा व्यक्तित्व बहुत कम देखने मे आता है।

मेरे पू स्व पिताजी श्री अनन्तराजजी वद्य ने सेठीजी के साथ वर्षो समाज, नगर का काय किया है जो उज्जन का समाज आज भी याद करता है। इन महापुरुष के व्यक्तित्व को नमन करते हुये इनके शतायु होने की कामना करता हू।

□ □ □

मानवता के सजग प्रहरी

श्री गजानन्द वर्मा
स्वतन्त्रता सेनानी
सस्थापक अध्यक्ष
मध्य प्रदेश समाज सेवी केन्द्र,
उज्जन

पण्डित सत्यधर कुमार सेठी अपने नाम को सही माने मे सार्थक करने के प्रतीक है। सरल, मृदुभाषी, सौम्य व सादगी के रूप मे श्री सेठीजी का जीवन चरित्र एक खुली पुस्तक है। गत् 30 35 वर्षो से मेरा श्री सेठीजी के साथ रहने का व उनके साथ सावजनिक जीवन मे काय करने का सुअवसर प्राप्त हुआ। अनेकता मे एकता के दशन मुझे उनके दनिक जीवन के व्यवहार से मिले।

राजस्थान से उज्जैन आकर अपने कारोबार के साथ निस्वाथ भाव से सावजनिक काम मे जिस तरह जन साधारण की सेवा मे अपने आपको समर्पित किया है वह अनुकरणीय है। कत्त व्यनिष्ठ व सेवा की लीक पर चलकर ही वे हर क्षेत्र म लोकप्रिय होते ही गये। मानवता की सेवा करने का सकल्प जीवन के प्रारम्भ से लिया और उसे पूरा करने मे तनिक भी सकोच व हिचकिचाहट का प्रश्न भी कभी पदा नही हुवा।

श्री सेठी किसी विश्वविद्यालय के पदवीधारी न होते हुए भी उनके ज्ञान का जो विशाल भण्डार है वह अकथनीय है। जन दशन के साथ अन्य सभी धम ग्रन्थो पर पूण अधिकार है। वे किसी भी विषय पर अपने स्पष्ट और सुलझे हुए विचारो से विषय का प्रतिपादन करते है।

श्री सेठी रचनात्मक रूप से काय करने म विश्वास रखते हैं, देश के समाज सेवियो मे आपका नाम प्रमुख रूप से लिया जाता है। धार्मिक आडम्बरो के विरोध म अपने सुलझे हुए विचारो के अनुरूप आपने जो क्रान्ति का आह्वान किया व जिसके द्वारा जो जाग्रति का सन्देश दिया, उससे आपको न केवल समाज मे ही नही अपितु देशभर म सम्मान मिला। समाज म व्याप्त रूढिवादी प्रथाओ म मुख्य रूप से बाल विवाह दहेज प्रथा मृत्युभोज आदि कुप्रथाओ का घोर विरोध करते हुए उनके उन्मूलन के लिये सघष करके महान् काय किये है।

पण्डितजी अपने विचारो के परिपक्व और बात के धनी है। सिद्धान्तो के प्रति

अडिग रहते हुए स्वार्थवश समझौता नीतियों से सदैव दूर रहे, टूट जाना मंजूर किया लेकिन अपने आदर्शों को कायम रखने मे झुकना कभी स्वीकार नही किया। मध्यप्रदेश की प्रसिद्ध पौराणिक व ऐतिहासिक नगरी उज्जैन को यह सौभाग्य प्राप्त हुआ कि जिसके अन्चल मे ऐसे महान् व्यक्ति का निवास रहा। आपका नाम आज देश मे आदर एवम श्रद्धा के साथ लिया जाता है।

लेखन के क्षेत्र मे आपका अपना महत्वपूर्ण स्थान है। आपके प्रखर लेखनी से जो भाव प्रगट हुए है वह इतिहास की अमूल्य धरोहर है। आपका सम्पूर्ण जीवन भगवान महावीर एवम राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के बताये हुए रास्ते पर चलते हुए दीन-हीन जनो की सेवा करते बीत रहा है। व इन्ही कारणो से देश के विभिन्न प्रमुख प्रमुख स्थानो पर अनेक समाज सेवी सस्थाओ द्वारा आपका अभिनन्दन किया जा रहा है।

ऐसे निर्लिप्त समाज सेवी एव कर्मठ पण्डित सत्यधर कुमार सेठी की हीरक जयन्ती के अवसर पर जो अभिनन्दन एव अभिनन्दन ग्रन्थ समर्पण समारोह का आयोजन किया जा रहा है, वह सही दिशा मे लिया गया योग्य निर्णय है। परम पिता परमात्मा से प्रार्थना है कि वे पण्डितजी को दीर्घजीवी करे ताकि वे देश और समाज की सेवा सतत करते रहें।

□ □ □

प्रतिष्ठित

वैद्य श्री गुलजारी लाल शास्त्री
चिकित्सा-ट्रस्ट श्री हे व दिगम्बर
जन औषधालय, माधवनगर, उज्जैन

मेरा श्रीमान पण्डित सत्यधर सेठी से करीब 44 वर्ष से सम्पर्क रहा है, आप का स्वागत करना व्यक्तिगत पण्डितजी का स्वागत नही मानवता का अभिनदन करना है, यदि व्यक्ति मानवता का स्वागत करने लगे तो, देश, जाति व समाज की उन्नति व सुख शान्ति का साम्राज्य सर्वत्र हो जावे।

श्री पण्डितजी का सरल स्वभाव, उच्च विचार तथा साधारण वेशभूषा यही उनकी एक विशेषता है। यह जन समाज व जनेत्तर समाज के लिये जो भी सेवा कार्य कर रहे है वह सर्वविदित है।

वर्तमान म कई सस्थाओ का सचालक मन्त्री पद द्वारा कई सस्थाओ का अध्यक्ष पद द्वारा कई सस्थाओ का सदस्यता के रूप म सेवा कार्य नि स्वार्थवृत्ति से आपके द्वारा हो रहा है। मेरा एक सस्मरण है, जब पण्डितजी ता 21 4 83 को देहली बूचडखाने के विरोध म डेपुटेशन के साथ दिल्ली जा रहे थे, उस समय उनका स्वास्थ्य बहुत खराब था। रास्ते म पण्डित हरीन्द्र भूषणजी, एम ए उनस म मिले और उन्होने कहा कि पण्डित जी स्वास्थ्य का ध्यान रखना चाहिए, आपकी स्थिति ठीक नही है। इस स्थिति म पण्डितजी ने स्वास्थ्य की चिन्ता न कर उन मूक पशुओ पर हिंसा और हिंसा विरोधी काम

मे सलग्न रहे। कुछ समय वीत गया जब जन समाज मे महावीर जयन्ती मंदिर जी मे मनाई जाती थी। श्री पण्डितजी श्री सत्यधरजी सा व श्री फूलचन्दजी हकीमजी के सहयोग से यह प्रभावना के रूप मे मय गाजेबाजे दि ब श्वे जन दोनो के सहयोग से निकलने लगी। आपका संयोजन हमेशा महावीर जयन्ती पर रहता है। व्यापार क्षेत्र मे आपने अच्छी उन्नति की, प्रतिष्ठित व्यापारी भी वन गय परन्तु अब सब काय बच्चे पर छोड दिया है। उनके पुत्र भी होशियार और सदचरित्र व धार्मिक वृत्ति के है। इनका प्रभाव उन पर पूर्ण रूप से है। अब आप मात्र देखरेख ही करते है।

उज्जन मे भारतीय सर्वोदय सम्मेलन हुआ, उसके आप स्वागताध्यक्ष रहे। उस समय आपने जन धम का प्राणी मात्र का सर्वोदय सिद्धात जनता को बताया कि सर्वोदय की भावना से तीर्थकरत्व प्राप्त होता है, वह सर्वोदय के लिये ही है। सर्वोदय का सम्बन्ध मात्र मनुष्य से नही प्राणीमात्र से है। वतमान मे प्रमाणित रूप से काय करने के लिये सरकार द्वारा वस्त्र एसोसिएशन के लिये अध्यक्ष रूप मे आपका चुनाव हुआ, यह इनकी कायशैली को दर्शित करता है।

इनका जीवन परोपकारिता मे उलझा ही रहता है। यह तो इनका स्वभाव बन गया है। जैन समाज की नही जनेतर समाज भी आपसे पूर्ण सहयोग लेता रहता है। आपका अध्ययन जसा धार्मिक है व से आपका चरित्र भी उज्ज्वल है। खानपान भी जन धर्मानुसार है। जन धर्मानुसार आप सदगृहस्थ है।

आप निर्भीक वक्ता, दृढ सकल्पी, समाजसेवी, रूढियो के विरोधी रहे है। ऐसे व्यक्तियो के अभिनन्दन मे मेरा पूर्ण सहयोग है।

☐ ☐ ☐

अनोखी शैली

श्री गौरीशंकर वर्मा
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी की कथनी व करनी म कभी अन्तर नही रहा। श्री सेठी जी जो मार्गदशन आम नागरिको को देते है उसे पहले अपनी ओर से भी उसका पालन करते हैं।

आपकी काय करने की शैली अनोखी है। आपने केवल जन समाज के लिय ही नही बल्कि उज्जन नगर की उन्नति व व्यापारियो की समस्याओ के लिय भी बहुत काय किया है। आपके ही प्रयत्नो से उज्जन नगर म मध्य प्रदेश के प्रथम थोक कपडा मार्केट का निर्माण अन्तिम चरण म है।

आपने कांग्रेस पार्टी के लिये भी बहुत काय किया है। आपने एक निर्भीक विचारक, क्रांतिकारी, समाज सुधारक का अखिल भारतीय स्तर पर अभि

न दन करने का जो निश्चय किया है उसके लिए हम आपका आभार व्यक्त करते है।

□ □ □

सेवा समर्पित व्यक्तित्व

श्रीमती चन्द्रप्रभा सिंह "प्रभाकर"

अध्यक्ष

कालीदास माटेसरी उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, उज्जैन

समाज-सेवा और नगर और देश की समूची प्रगति म अपना सम्पूर्ण शक्ति का होम करने वाले दृढ और सुयाग्य व्यक्तियो की ज्येष्ठ पक्ति में जो नाम आज स्थापित और मूल्याकित है वह है—श्री सत्यधर कुमार सेठी।

उज्जयिनी का नाम पुरातन काल म धर्म, राम, सस्कृति, कला और शिक्षा के निरन्तर विकास और उच्च स्तर के कारण है जिसके मूल म ऐसी समर्पित व्यक्तियो की एकनिष्ठ कर्म चेतना रही है। श्री सेठी सादगी पसन्द, कर्मशील व्यक्ति है उनका कार्य शिक्षा एव धर्म के लिए नही वरन विविध दिशाओ म मूल्यवान कार्य के लिए समर्पित है। समर्पण भाव से एक चित्त होकर कार्य करते भी जो राजनैत, पारिवारिक कीमत चुकानी पड़ती है उससे अछूता वे नही रह सके है। जन सेवा के लिए उनकी रागाभिरुचि की श्रेष्ठता की बपौती है। अनेक सामाजिक-सास्कृतिक और धार्मिक सस्थाओ से सम्बद्ध रहकर, सिपाही की भाति सजग रहकर उन्होने जो मार्गदर्शन दिया है। वह अविस्मरणीय है। उनकी यशोगाथा के लिए शब्द कम पडना स्वाभाविक है। मधुरभाषी, सौम्य प्रकृति के श्री सेठी ने अपने नाम का अपने कृतित्व और व्यक्तित्व के माध्यम से सार्थक किया है। मैं लम्बे समय से उनके सेवा भावी समर्पित जीवन की प्रत्यक्षदर्शी हू क्योकि मेरे पूज्य पति स्व मुरलीधर सिंह जी स्वय समाज, उद्योग, शिक्षा और सस्कृति के विकास से आजीवन जुडे रहे और उनका तथा श्री सेठी जी का सदैव कदम से कदम मिलाकर सहयोग रहा। समाज सेवा कार्य म कठिनाइया आना कोई नई बात नही है, जीवन सघर्षमय बन जाता है और समय साक्षी है कि उज्जैन के समग्र विकास के लिए किये गये सघर्ष और उपलब्धियो मे श्री सेठी का नाम अग्रिम पक्ति मे अकित है। लोभ और माया के आकर्षण से परे श्री सेठी ने अपनी अदम्य सजीवनी शक्ति से जो कर दिखाया है वह उनके रहते दर्शनीय और सराहनीय बन पडा है। अपने समक्ष प्रत्यक्ष रूप से जो व्यक्ति अपने श्रेष्ठ कार्य का श्रेष्ठ परिणाम देख लेता है। वह सर्वथा अभिनदनीय है। उन्हे इस बात का अहसास है अहकार नहीं, वरन् हम उज्जैन के नागरिक उन पर गर्व करते है।

उनके व्यक्तित्व और कृतित्व के प्रति आज हम उनके मूल्याकन स्वरूप, जो अभिनन्दन कर रहे है वह उनके प्रति हमारा श्रद्धाभाव है। यह श्रद्धा उनके कर्मों के प्रति है जिसका शुभ प्रभाव सारे मनुष्य समाज पर पड़ा है। हम

आनन्दपूर्ण कृतज्ञता के साथ उनको अमरता और दीर्घजीवी होने की कामना प्रकट करते है। इसमे दो मत नहीं कि वे इसके सर्वथा योग्य पात्र है तभी श्रद्धा के द्वारा हमने उनके महत्व को स्वीकार किया है।

पदो के ऊपर आसीन रहने पर जो आदर का पात्र होता है वह पदच्युत होने पर उसके योग्य नही रह जाता मगर सेवा और समर्पण के द्वारा किये गये कार्य से जिसके प्रति आदर उत्पन्न होता है वह स्थायी होता है—ऐसे ही आदर के पात्र है श्री सत्यधरकुमार सेठी जिनके ज्ञान और वक्तत्व से उनकी विद्वता और कार्य शक्ति दमकने-चमकने लगी है।

☐ ☐ ☐

कल्याणकारी

श्री चादमल मेहता
एन्वोकेट,
प्रसिद्ध समाज सेवी
उज्जन

मनुष्य योनी मिलना दुलभ होती है। मनुष्य के जीवन मे सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान व सम्यक चरित्र नही आवे तब तक इस जीव को चौरासी लाख योनी मे भटकना पडता है।

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा सम्पर्क गत कईवर्षों से है। उनके विचारो म पठन का क्रिया मे मानवता के दर्शन है। मानवता के गुण आना इस युग मे जहा मनुष्य अपने कार्य कलाप मे अपने दैनिक जीवन मे निजी स्वार्थ की प्राप्ति मे ही सलग्न रहता है उसके विपरीत पडित जी के आचार विचार मे स्वार्थ की गंध तक नही है। वे अपनी आत्मा का कल्याणकारी कार्य करते हुए समाज के विकास, समाज म व्याप्त रूढियो व सकीर्ण विचारो को समाप्त करन मे प्रयत्नशील रहकर सफलता की ओर अग्रसर है।

जैनियो मे धर्म पालन मे श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी का जो विभाजन है उससे हमारे पण्डित जी ऊपर उठकर जैन कहलाने मे व सच्चे जैन के सिद्धान्तो का अनुसरण करके यही उपदेश देते है कि भगवान महावीर के सही मायने मे अनुयायी बनकर महामानव बनो। समाज का एकीकरण उनका लक्ष्य है। आज वर्षो से उनके अथक प्रयत्न मे श्वेताम्बर, दिगम्बर, स्थानकवासी सम्मिलित होकर समभाव से महावीर जयन्ती समारोह उज्जन मे मनाते आ रहे है। व्यापारी जगत मे भी उनका वर्चस्व है। वे उनकी कठिनाइयो मे स्वयं ही आगे होकर उनकी सन्तुष्टी कराते है। पण्डितजी मे विलक्षण प्रतिभा है। उनके विचार उदार हैं। ऐसे निष्ठावान व समाज धर्म के प्रति समर्पित व्यक्ति का अखिल भारतीय स्तर पर अभिनन्दन का आयोजन आप जैसे व्यक्तियो द्वारा किया जा रहा है, इसके लिये मैं धन्यवाद देता हू। वास्तव मे यह आयोजन हम उज्जन वासियो को करना चाहिये था, परन्तु अखिल भारतीय स्तर पर होने वाला यह आयोजन हो रहा है उसी से पडित जी की लोकप्रियता व उनके जीवन की सार्थकता परिलक्षित होती है। इस

प्रकार के अभिनन्दन से पंडितजी गौरवान्वित अनुभव नहीं करते है। परन्तु जैन समाज गौरवान्वित होता है व आगे आने वाली पीढ़ी को समाज व धर्म की सेवा मे प्रेरणा देता है।

□ □ □

सर्वतोमुखी

श्री जय नारायण जैन
मन्त्री–दि जैन महासमिति,
उत्तर प्रदेश शाखा, मेरठ

श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी की प्रतिष्ठा में एक अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित किया जा रहा है। यो सेठी जी से मेरा परिचय पुराना है किन्तु गत गोमटेश्वर महामस्तकाभिषेक के अवसर पर सेठी जी की लगन, कार्य तत्परता और सजगता देखने का अधिक अवसर मिला।

मेरी कामना है, सर्वतोमुखी प्रतिभा के धनी श्री सत्यधर सेठी शतायु हों और सामाजिक सगठन के महान कार्य को अधिकाधिक गतिशील बनाते रहे।

□ □ □

नीव के पत्थर

श्री जीवधर जैन
सचालक–श्री महावीर जैन स्पोर्ट्स सगठन,
उपाध्यक्ष–जागृति दि जैन युवक सगठन
अध्यक्ष–लक्ष्मी नगर दि जैन युवक मण्डल, उज्जैन

माननीय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जैन की दिगम्बर जैन समाज रूपी इमारत के लिये नीव के पत्थर के समान रहे है जिन पर आज के समाज की चहुमुखी प्रगति की आधारशिला रखी गई है। आपने हमेशा श्रेय, यश और प्रचार की लिप्सा से दूर रहकर मुफ्त सेवा की है। आपके मार्ग-दर्शन से ही हमारी सस्था द्वारा "एक परिचय भगवान ऋषभदेव से महावीर तक" नामक स्मारिका का प्रकाशन सम्भव हो सका था। आप हमेशा युवको के लिये प्रेरणा स्त्रोत रहे है।

आपने सड़ी-गली रूढ़ियो को हमेशा ललकारा है और समयानुकूल प्रगतिशील व्यवस्था को अपना आदर्श बनाया है जिससे समाज हमेशा जीवत रहे व उसमें चेतना का स्वर गूजता रहे।

आज की स्थिति यह है कि पण्डित जी उज्जैन के जैन समाज के पर्यायवाची बन गये है। समाज पण्डित जी मे समाहित है और पण्डित जी समाज मे।

हमे गर्व है कि ऐसे विद्वान, निरभिमानी तथा मितव्ययी समाज-सेवी हमारे नगर के ही नही पूरे देश के लिये आदरणीय है एवम् उनकी सत्यप्रियता व चरित्र अनुकरणीय है।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि आप शतायु हो एवम् सदैव युवको के प्रेरणा-दीप बने रहे।

कोटिश शुभकामनाओ के साथ।

□ □ □

प्रगतिवादी व्यक्तित्व

श्री टीकमसिंह श्यामसुखा
अध्यक्ष श्री अवन्ती पार्श्वनाथ जैन श्वे मूर्ति पूजक मारवाडी समाज ट्रस्ट, उज्जैन

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी जिनका अभिनन्दन इस ग्रन्थ के माध्यम से किया जा रहा है एक अत्यन्त ही सुलझे हुए प्रगतिवादी व्यक्तित्व के धनी है। समाज के विकास, उत्थान एवं उन्नति के लिये जो सम्पूर्ण रूप से समर्पित है, समाज के युवा वर्ग में धार्मिक भावना का स्फुरण तथा धर्म के प्रति लगाव उत्पन्न करने में आप सतत प्रयत्नशील है।

दिगम्बर व श्वेताम्बर दोनो ही समाज मे सम्मानपूर्ण स्थान अर्जित कर आप समाज के लोगो मे श्रद्धा के पात्र बने है। दोनो समाज में सामंजस्य स्थापित कर परस्पर स्नेह भावना का सृजन करने मे आपका विशेष प्रयास रहा है।

भगवान महावीर की जयन्ती चैत्र सुदी १३ के दिन उज्जैन के सभी जैन समाज सब कुछ भूलकर एक जुट होकर धर्म समारोह की जो विलक्षण छटा दिखाई देती है उसके पीछे आपका सतत् प्रयास ही परिलक्षित होता है। आपका तन मन धन से सहयोग रहता है।

सामाजिक महोत्सव, धार्मिक समारोह सन्तो के प्रवचनो, विद्वानो की गोष्ठी धर्मचर्या आदि मे आपकी उपस्थिति सर्वत्र रहती ही है चाहे वह कही भी आयोजित हो।

भगवान महावीर के 2500वें निर्वाण महोत्सव समारोह मे भी आपका प्रतिनिधित्व था। इसके क्षेत्रीय क्रियान्वयन मे आपने विशेष रुचि लेकर विभिन्न आयोजना मे आपका उनकी समाज सेवा सच्ची लगन, मानवता की सेवा भावना का मूल्यांकन करना हम सभी का परम कर्त्तव्य हो जाता है। इससे समाज सेवी के प्रति जहा हमारे कृतज्ञता प्रकट होती है वहा समाज सेवी को भी अपनी क्षमता एवम् शक्ति का परिमापन करने का भी अवसर प्राप्त होता है।

हरिजन जन मन्दिर प्रवेश आन्दोलन में आपका समाज के साथ सक्रिय सहयोग ही नही रहा है किन्तु उसमे उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करके सदा के लिये कोर्ट से फैसला लिया।

□ □ □

एक अभिनन्दनीय व्यक्तित्व

"व्यक्ति जन्म से नही कर्म से महान् बनता है।" "व्यक्ति के गुणो की ही सर्वत्र पूजा होती है। व्यक्तित्व की गरिमा ही मनुष्य को सफलता की मंजिल तक पहुचाने मे समर्थ होती है और समाज एवं राष्ट्र मे वह जनप्रिय एवं लोकप्रिय सिद्ध होता है। परिचय का अध्ययन करने पर और वैसे भी हमने स्वनाम धन्य सेठी जी का 'यथा नाम गुण' के रूप मे ही पाया है।

सेठ श्री डालचंद जैन
(पूर्व विधायक)
अध्यक्ष—अखिल भारतवर्षीय दिग. जैन परिषद
अध्यक्ष—मध्य प्रदेश दि. जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी व जैन हाई स्कूल, सागर

वास्तव में जीवन उसी का सार्थक है जो जाति, धर्म एवं सम्पूर्ण समाज के लिए अपने कार्यों के द्वारा प्रभावित करते हैं और जिनका अनुकरण करने की प्रेरणा दूसरों को भी मिला करती है।

इस अभिनन्दनीय कार्य की मैं सराहना करता हूं और आदरणीय सेठी जी के प्रति भी मैं अपना आदर एवं श्रद्धा का भाव व्यक्त करता हुआ वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि वह पंडित जी को स्वस्थ जीवन और दीर्घायु प्रदान करें जिससे वह समाज का नेतृत्व करते हुए 'जीवेम शरदः शतम' की उक्ति को चरितार्थ करते रहें।

हार्दिक शुभ कामनाओं सहित—

□ □ □

ओजस्वी वक्ता

श्री तनसुख लाल टोंग्या
सदस्य
दि. जैन मन्दिर ट्रस्ट, नमक मण्डी
उज्जैन

आदरणीय श्री सेठी का जन्म मिती आसोज सुद 10 सं० 1967 ग्राम भादवा, राजस्थान में हुआ। वह दिन अपने आप में एक महत्वपूर्ण है। इसी दिन पूरे देश में दशहरे के रूप में हम खुशी का त्यौहार मनाते हैं। आपके पिता श्री फलहलाल जी, माताश्री ओघाबाई धन्य हैं, जिन्होंने एक ओजस्वी पुत्र रत्न को जन्म दिया।

आप पढ़ाई में मेधावी छात्र रहे हैं। गोमटसार जैसे कठिन ग्रन्थ का अध्ययन 16 वर्ष की उम्र में ही कर लिया तथा 15 16 वर्ष की उम्र से ही अपने सामाजिक एवं धार्मिक कार्यों में रुचि लेना प्रारम्भ कर दिया।

उज्जैन एक प्राचीन ऐतिहासिक नगरी है। यहां पर प्राचीनकाल से ही ऋषि मुनियों के ध्यान व अध्ययन का केन्द्र रहा है। ऐतिहासिक पुरुष श्री कृष्ण की शिक्षा भी यहीं सदीपय आश्रम में हुई थी। राजा भर्तरी का ध्यान स्थल भी यहां रहा एवं इसी पुण्यशाली नगरी में श्री अन्तिम तीर्थंकर श्री वर्द्धमान स्वामी ने भी तपश्चरण किया एवं रुद्र द्वारा उपसर्ग हुआ था। ऐसी इस पावन एवं पवित्र नगरी में जो धर्म का स्थान है, ऐसे धार्मिक स्थल में श्री सेठी जी का आगमन संवत 2004 में हुआ। यहां आपने कपड़े का व्यवसाय शुरू किया एवं एक भाव एवं कम प्रॉफिट के कारण काफी ख्याति प्राप्त की है।

थोक वस्त्र व्यवसायी समिति के अग्रणी रहकर होलसेल क्लाथ मार्केट बनवाने में औषधालय समिति में सक्रिय सराहनीय योग दिया है एवं मार्गदर्शन दे रहे

है। इस औषधालय म हजारो व्यक्तियो को आरोग्य लाभ मिला है। ऐसे पारमार्थिक कार्यो से हमको भी प्रेरणा लेनी चाहिए।

दिगम्बर जन ज्ञानसागर कन्या पाठशाला एव सूयमागर हायर सकण्डरी स्कूल के आप कणधार एव मन्त्री है। श्री दिगम्बर जन मन्दिर नमक मण्डी ट्रस्ट के भी आप मन्त्री हैं।

नवयुवक मण्डल मे भी आपका सहयोग है। महावीर जयन्ती के उत्सव में सायकाल पब्लिक सभा भी आपने शुरू की, जिसमे जैन अजैन विद्वानो को बुलाकर आपने धम प्रचार करायर जो अब प्रति वष विद्वानो द्वारा प्रवचन होते है।

आपकी सकीण विचारधारा नही रही, आप सबको लेकर चले। महावीर जयन्ती का जुलुस भी श्वेताम्बर-दिगम्बर का शामिल निकलवाकर विशाल जुलूस होने से, जनेत्तर लोगो पर जन धम की अच्छी प्रभावना हो रही है।

अखिल भारतीय स्तर की कई सस्थाओ के भी आप सदस्य है। 2500वें वीर निर्वाण के अवसर पर धमचक्र निकला था, उस सस्था के भी आप सदस्य हैं तथा 1000वें श्रवण बेल गोला गोमटेश्वर अभिषक के अवसर पर भी आपने काफी योगदान दिया है।

अपना भरण पोषण तो पशु भी कर लेते हैं, मानव की विशेषता स्व पर विवेक से है, अपने कल्याण के बारे मे सोचने वाले भेद विज्ञानी बहुत कम है। अपना जीवन जिन्होंने समाज कल्याण व समाज उत्थान के लिए देते है वे धन्य है, उन्ही म से एक पडितजी है। आप सस्कृत व साहित्य के ज्ञाता हैं। विचक्षण प्रज्ञा के धनी, ओजस्वी वक्ता है। आप लागो पब्लिक म निर्भीकता से भाषण देते है, आपका व्याख्यान वाचस्पती की उपाधी प्राप्त है। आपके प्रवचनो को जनता शान्तिपूवक सुनती है एव काफी प्रभाव पडता है।

अधिकाश लोगो को अपने धधे से ही फुरसत नही है तो समाज के लिए फुसत कहा है। आप विजननमन होते हुए भी सामाजिक गतिविधियो म योगदान देते हैं यह सराहनीय है।

स्थानीय दिगम्बर जैन मदिर सर्वार्थसिद्धपुरा म पुरातत्व सग्रहालय के आपने स्थापित किया है एव आप मन्त्री हैं तथा विद्यानन्द जी महाराज उज्जैन आये थे तब भी आपने वहा उचित व्यवस्था की थी।

उज्जन के महावी- कीर्ति स्तम्भ का काय भी आप देख रहे हैं। निकट भविष्य मे आपके सहयोग से महावीर कार्ति स्तम्भ बनेगा। विक्रम विश्व-विद्यालय म भी एक जन चयर की स्थापना का आप प्रयास कर रहे है।

धार्मिक के साथ राजनतिक गतिविधियो मे भी अग्रणी रहे। आपका एव नतिक क्षेत्र म भी काफी प्रभाव है।

अभी पिछले 2 वष से आपके गले म बिमारी हुई डॉक्टरो ने वोलने से मना किया, फिर भी आप धार्मिक सभाओ को स्वस्थ न होते हुए भी धम प्रेम के कारण उदबोधन देते रहे।

आपका जावन सादगीपूण है, आपने कभी आडम्बर व दिखावे को महत्व नही दिया। आपका भरी-पूरी गृहस्थी है व घर के सदस्यो की धम म रुचि ह, यह अनुकरणीय है।

उज्जन म आपका होना समाज व देश के लिए गव की बात है। अन्त म हम परमात्मा म प्राथना करते है कि आप चिरायु हो एव इसी प्रकार धम प्रचार एव मार्गदशन देते रहें।

☐ ☐ ☐

अभिनन्दन सेवा में

डा तेजसिंह गौड

उज्जन

पंडित जी का सम्पूर्ण जीवन जन धम और समाज के प्रति समर्पित रहा है। उनका अभिनन्दन उनके द्वारा समाज की, की गई सेवाओ का अभिनन्दन है। इस अभिनन्दन पर समाज को गव होना चाहिये। आज जन समाज का ही नही अन्य समाज का भी प्रत्येक व्यक्ति अच्छी प्रकार जानता है कि पंडित जी ने जयसिंहपुरा के पुरातत्व सग्रहालय (जन पुरातत्व सग्रहालय) को इस रूप म कितना अथक प्रयत्न किया है।

उज्जन के प्रत्येक जन धम के समारोह म पण्डित जी की जान से जुड़े रहते है। शोध म सलग्न हुए शोध छात्रो को भी आप समय-समय पर अपना माग दशन करते रहते है।

मैं उनके दीर्घायु होने की कामना करता हू।

☐ ☐ ☐

समर्पित व्यक्तित्व

श्री दशरथ जैन
अध्यक्ष
श्री दि जन अतिशय क्षेत्र खजुराहो
प्रबन्ध समिति, छत्तरगढ

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी को, मुझे जितना भी देखने, सुनने तथा जानने का सौभाग्य मिला है, उसके आधार पर मैं कह सकता हू कि वे एक समर्पित व्यक्तित्व के धनी है तथा अपनी सारी शक्ति के साथ वे समाज एव सस्कृति की सेवा करने के लिये कृतसकल्प है। उनकी दृष्टि अत्यन्त दूरगामी, बुद्धि अत्यत प्रखर तथा हृदय बहुत ही निमल है। वे पूर्णत निर्भीक एव निभय है—कदाचित इसलिये कि वे लोभ-लालच से परे है। वे अत्यन्त ओजस्वी है तथा जो कुछ भी उन्हें कहना होता है, उसे वे स्पष्ट शब्दो म कह देते है। सत्य बात कहने स उन्ह कोई रोक नही सकता। वे आचार विचार में बहुत ही दृढ है, यद्यपि उनका व्यवहार बहुत ही मधुर एव मृदु रहता है।

श्री सेठी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। एक ओजस्वी एव प्रभावशाली वक्ता होने के साथ साथ वे कुशल लेखक भी है। उनका पुरातत्व-सम्बन्धी अध्ययन अत्यन्त विशाल एव गहन है और जन प्रतिमा-विज्ञान का उनका ज्ञान विशद है। उन्होने जन पुरातत्वो की सुरक्षा एव व्यवस्था करने के लिये उज्जन म जो सग्रहालय स्थापित किया है तथा उसके माध्यम से जन धम एव सस्कृति की जो सेवा की है, वह सराहनीय है। वे महावीर ट्रस्ट के अत्यन्त सक्रिय कायकर्ताओ में से है। वे अनेक सस्थाओ के प्राण है। उनका अधिकाश समय समाज-सेवा के कार्यो में प्रयुक्त होता है तथा वे सदव जनहित के कार्यो में व्यस्त रहते है। उन्होने अपने जीवन मे समाज की महती सेवाए की है। उनका ज्ञान अनुभव तथा उनकी समाज-सेवा की उत्कृष्ट भावना का लाभ समाज को अधिक से अधिक समय तक मिलता रहे तथा वे पूर्ण स्वस्थ एव दीघजीवी रह कर समाज का पथ-प्रदशन करते रहें, यह हमारी सबकी हार्दिक शुभकामना है।

पण्डित सत्यधर कुमार सेठी का अभिनन्दन करने से सेठीजी तो गौरवान्वित होते ही है, साथ वे भी गौरवान्वित होते है जो उनका अभिनन्दन करत है। सेठीजी का अभिनन्दन समाज-सेवा में लगे सभी कायकर्ताओ का अभिनदन है।

□ □ □

दिगम्बर जन महासमिति ने अब कुछ समय से विद्वानो के अभिनन्दन की परम्परा चालू की है। वह एक शुभ लक्षण है। आपका प्रस्तुत आयोजन एसी ही कायक्रमो की एक महत्वपूण कडी है। श्री सत्यधर कुमार जी स मेरा परिचय मेरे सिरोंज (मध्य प्रदेश) क राजकीय सेवाकाल मे सम्भव था कोई 53 54 वर्ष का है। जब वे वहा पर विधानोत्सव के अवसर पर पधारे थे। उस परिचय म विशेष योग रहा, श्री बा० निमल कुमार जी मनसी

सिरोंजवासी का है। उपरान्त द्रोणगिरी पंचकल्याणक महोत्सव के अवसर पर जैन मिशन अधिवेशन के प्रसंग मे अलीगंज (उत्तरप्रदेश) के बा० कमता प्रसाद जी जैन के साहचर्य में मैंने श्री सत्यधर कुमार जी सेठी की, धर्म समाज की सेवा की रुचि, लगन, तत्परता और निष्ठा को गहराई से देखा और उनसे व्यक्तिगत सम्पर्क भी रखा। उनकी कार्यशैली मे एक महान् विशेषता यह देखी कि पंडितजी थोडे से भी अवसर को पाते ही उसका अधिक से अधिक समाज के हित और कल्याण हेतु उपयोग करने में चूकते न थे। मनुष्य का यह एक बडा भारी गुण है। मेरा सम्पर्क उनसे तभी से प्राय अविच्छिन्न बना रहा है कि मैं भी जैन मिशन का साधारण सदस्य बना रहा हूं और "अहिंसा वाणी" पत्रिका मे उनके लेखो और धर्म, समाज सेवा की रिपोर्टों को रुचि से पढता रहा हूं। अभी कुछ समय पूर्व जब उज्जैन में श्री सत्यधर कुमार जी का अभिनन्दन किया गया। वाले इतने उद्‌गार प्रकट किये गये कि वे बहुत शीघ्र अपने आप को धर्म और समाज को पूर्णतया अर्पित कर देंगे। एक उत्साही कार्यकर्ता की ऐसी घोषणा समाज के लिए बडी भाग्य की बात है। प्रस्तुत' सेवाभावी कार्यकर्ता की सशक्त लेखनी और उदबोधक जिह्वा बडा काम करने म समक्ष होती है।

तथापि अब तक का अनुभव बताता है कि समाज का व्यवहार अपनी विभूतियो के प्रति पूरा उत्साहवर्द्धक नही रहा है न ही वर्तमान में है। हमने हमारे गन्धर्वो के प्रति जैसा व्यवहार किया है उसकी कभी प्रशंसा नही की जा सकती। इस दल म उच्चकोटि के कलाकार भी हुए और है हैं। परन्तु हमने उन्हें भिक्षुको से ऊचा नही समझा। इसी भांति हमारे पंडित और विद्वान् भी हमारी उपेक्षा के पात्र ही रहे हैं। पुराने कवि मनीषियो ने जो धर्म और समाज की अथक और कल्याणकारिणी सेवा की है वह जैन जाति के लिए अत्यन्त गौरव का विषय है। पं० दौलत राम जी, भागचन्द जी, बूधरदास जी, बुधजन जी, द्यानतराय जी वृन्दावन जी जैसे धुरंधरो ने जो साहित्य निर्माण किया है और वर्तमान के पंडित विद्वान् बा० कामता प्रसाद जी, जुगुल किशोर जी, जग मोहन लाल जी आदि लेखनी से जो रत्न प्रदान किये हैं तथा अभिय अमृत वर्षा की ओर कर रहे हैं, उनका पूरा प्रकाशन और प्रचार भी हम लोग ही कर रहे हैं जिससे कि जैन अजैन जनसमुदाय समुचित और [illegible] लाभ उठा सके। नवीन प्रतिमाओं के निर्माण एव प्रतिष्ठापन पंच कल्याण [illegible] और मन्दिर आदि में मूल्यवान् संगमरमर जटान के स्थान में और धनिकों के विवाह आदि अवसरों पर अथवा राजपुरुषों तथा [illegible] के सम्मान समारोह के स्थान में हमने विद्वानो और सरस्वती के उपासकों का सम्मान पूर्वक प्रचार किया होता। किया करें तो

कितने लाभ की वस्तु और प्रसग बनते अनुमान किया जा सकता है। स्वर्ण, चादी और रत्नो की प्रतिमाए प्रतिष्ठित कराने के विषय मे भी यही कहा जाना उचित है। इन सबका उद्देश्य, क्योकि आत्मस्वरूप समझने का ही तो है।

तो यह उचित ही है कि प० सत्यधर कुमार जी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन किया जावे। उनके कार्यो का हमे अत्यन्त आदर करना ही चाहिए। साथ ही यह भी आवश्यक एव उचित है कि पडित जी की कृतियो का प्रकाशन इसके सम्मलित ही किया जावे।

मै अपना सौहार्द अथच अपनी शुभकामनाए समाज के साथ एव योजना के साथ जोडता हू और अभिलाषा करता हू कि पडित जी दीर्घायु हो और अपनी सेवा तथा कृतित्व से सभी दिशाओ मे समाज एव सघ को लाभान्वित करें।

किमधिकिम् हमारी शक्ति तो सीमित है।

□ □ □

सच्चे श्रावक

वैद्य श्री द्वारकाप्रसाद मिश्र
आयुर्वेदाचार्य डी आई एम एस
काव्य व्याकरणतीर्थ, प्रधान चिकित्सक
जैन औषधालय मवा श्रीमसिंह
फुलेरा, जिला जयपुर (राज)

महापुरुषो के जन्म जात सस्कार किसी न किसी शक्ति से समन्वित होते हैं, जिस शक्ति के द्वारा वे बडे से बडे कार्य को भी सहज ही पार करते हुए सर्वसाधारण जीवो के हृदय पटल पर अपने दिव्य एव आदर्शवाद (चरित्र) को अकित कर देते है, भूले भटके लोगो को सन्मार्ग पर लाना ही जिनका दैनिक कार्य है। यही उनके आदर्शमय जीवन का मुख्य ध्येय है। जिस महापुरुष का सर्वांगीण प्रकाश हुआ है जो अपनी सारी शक्ति लोक कल्याण के लिये व्यय करने को सदैव कटिबद्ध है, ऐसी विभूति सर्वमान्य आदर की पात्र हो सकती है, ऐसे सर्वश्रेष्ठ, सर्वगुण सम्पन्न, त्यागी श्री सत्यधर कुमार जी सेठी है। जिन्होने सत्य, शिव, सुन्दरम् को अपने जीवन मे निश्चित रूप से ढाला है और अपने नाम के अनुरूप जन-जन के मानस पर यावज्जीवन सत्य की प्रतिष्ठा करने को क्रियाशील रहे हैं भारतवर्ष बहुत ही विशाल देश है, इसकी चतुर्मुखी समुन्नति के लिये समय-समय पर ऋषि, महर्षि एव राजनेता तथा समाज सुधारक महापुरुष हुए है जिनमे ऋषि मुनियो ने धार्मिक, राजनेताओ ने राजनैतिक, समाज सुधारको ने सामाजिक प्रचेतना दी है, परन्तु श्री सेठी का एक ही व्यक्तित्व ऐसा है जिसमे सर्वगुण सन्निहित है, जिसने अपने 72 वर्ष के जीवन काल मे देश एव समाज को धार्मिक, सामाजिक, आर्थिक योगदान दिया है।

प्रात स्मरणीय पण्डित श्री चैनसुखदास जी न्यायतीर्थ के सानिध्य में विद्याध्ययन करते समय महात्मा गांधी व पण्डित श्री जवाहर लाल नेहरू के आदर्शो का प्रभाव पड़ा, उसी के परिणामस्वरूप आपने सादा जीवन उच्च विचार अपनाया और मने अनुभव किया स्व० पण्डित चनसुख दास जी के उपदेश स ही आप पर धार्मिक प्रभाव पड़ा, जिससे आप सच्चे अर्थो म श्रावक भी है। जसा कि धम-शास्त्र म बताया है।

श्रद्धालुता श्राति पदाथ चिन्तनाद्,
धनानि पात्रेप वपत्यनारतम् ।
किरत्य पुण्यानि सुसाधु सेवना,
दतोऽपि ते श्रावक माहुरुत्तमा" ॥

श्रा —वह तत्वाथ चिन्तन के द्वारा श्रद्धालुता को सुदढ करता है।

व —निरन्तर सत्पात्रो मे धनरूप बीज बोता है।

क —शुद्ध साधु की सेवा करके पाप धूलि को दूर फेंकता है। अत महापुरुषो ने उसे श्रावक कहा है।

उपयुक्त सभी गुण आप मे विद्यमान है।

आपने रुढिवाद से परे रहते हुए सत्य माग का अनुसरण किया है और अन्यो को भी रुढियुक्त व धकार ग्रस्त माग से दूर रहने का उपदेश देते रहते है। मुझे सीकर जिलान्तगत लूणियावास ग्राम की एक पुरानी घटना याद है। इस ग्राम मे जन सम्मेलन हुआ था (जिसकी निश्चित तिथि मुझे याद नही है) उस समय आपकी नवयौवनावस्था थी उस सम्मेलन म इतनी अल्पावस्था मे भी स्टेज पर खडे होकर निर्भीकता से देश व समाज मे व्याप्त कुरीतियो अध विश्वासो एव रुढिवादो व सम्प्रदायवादो का डटकर विरोध किया था। परिणामस्वरूप सारा समाज आपके विरुद्ध हो गया था। पर सत्य का ही अनुसरण करने वाले श्री सत्यधर जी जरा भी परवाह न करते हुए अपने सिद्धात पर आज तक अटल हैं। सारा समाज आज आपके साथ है और सम्मान दे रहा है। आपमे प्रखर राष्ट्र भक्ति एव आत्मविश्वास से भरी हुई आशावादिता ही स्वय की जीवन रचना की नीव म होने के कारण ही कई तरह के कडवे मीठे प्रसगो का-सयम से सह सके तथा आगे बढ सके हैं।

क्या इस प्रकार का उदात्त चरित्र सबके लिए अनुकरणीय नहीं है ?

वतमान म आप करीब चालीस वष से उज्जैन, मध्य प्रदेश के स्थायी निवासी है, पर राजस्थान म जन्म लेकर ("जननी जन्मभमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी")

की मान्यता रखते हुए राजस्थान को नही भूले है। मध्य प्रदेश मे तो आपके द्वारा स्थापित अनेक धार्मिक, सामाजिक सस्थायें कायरत है ही, राजस्थान म भी अनक सस्थाओ की स्थापना की है।

आपने निबल का बल बनकर असहाय व्यक्तियो की सहायता करना ही अपना प्रमुख कर्तव्य एव ध्येय माना है।

असहाय महिलाओ, शिक्षार्थियो तथा अन्य आवश्यकतावालो के लिए सहायता फण्ड, छात्रवृत्ति की व्यवस्था करने मे आगे रहे है।

उपसहार स्वरूप निम्न पक्तियो मे अभिव्यक्त भावसुमनो से आपका सत्कार करना हमारा कर्त्तव्य है —

गौतम, गाधी, वीर जवाहर लाल हुए भारत भू पर।
दीक्षा जिनके सत्कर्मो से, यह स्वदेश ससार प्रवर।
लाज रखी जिन मातृभूमि की, ऐसे वीर अनेक हुए।
लखकर जिनके शौय तेज को, आल्हादित अखिल देश हुए।
क्षमा दया का कर वार शत्रु पर, जीता जिसने विश्व हिया।
माताए जननी अनक पर, किसने सो उपकार किया।
किया पति परिवार धन्य समाज धन्य औ देश किया।
सदा हुई वे मातृ धन्य जिसने, सत्यधर सा सुपुत्र दिया।

आपकी दीर्घायु की कामना करते हुए राष्ट्र मे अतीत हुए सभी सपूतो की तरह आज आपकी हमारे बीच उपस्थिति एव उपलब्धि मे हम और हमारा राष्ट्र गौरवान्वित है और हम आपके मार्ग दर्शन सदाचरण के लिए प्रतिज्ञा बद्ध है। यही श्रद्धा सुमन स्वीकार करें कि हम भी सत्यधर के सत्य को करने के पक्षपाती हो।

सत्यम शिवम् सुन्दरम।

☐ ☐ ☐

प्रखर बुद्धि

श्री सेठ देवकुमार सिंह जी कासलीवाल
अनेक सामाजिक, धार्मिक सस्थाओ के प्रमुख सरक्षक
इन्दौर

यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई कि पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का सार्वजनिक अभिनन्दन हो रहा है। पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा बहुत पुराना सम्पर्क है। मैं उन्हे उस समय से जानता हू जब कि वे कुचामन मे पण्डित धनसुखदास जी के पास पढते थे और मैं भी उसी पाठशाला म पढता था। वे अपने छात्र जीवन मे अत्यन्त परिश्रमी एव प्रखर बुद्धि छात्रो मे माने जाते थे।

उज्जन आने के बाद उन्होने यहां के तथा भारत के अनेक स्थानो पर सामा

जिक कार्य किया। विद्वान् होने के अतिरिक्त वे एक कुशल एवं कमठ सामाजिक कार्यकर्ता है। और अनेक संस्थाओं का कुशलतापूर्वक संचालन कर रहे है।

उनका जैन समाज के अलावा जैनेतर समाज में भी उतना ही सम्मान एवं प्रभाव है जितना कि जैन समाज में।

उनका सहयोग समाज को हमेशा मिलता रहे यही शुभ कामना है।

□ □ □

सहमार्गी

श्री देवेन्द्र कुमार बैनाड़ा
अध्यक्ष श्री दि जैन नवयुवक मण्डल
उज्जैन

यह जानकर अत्यधिक हर्ष विभोर हूं कि तीर्थंकर महावीर का पावन रज से ससिंचित मालव अचल में स्थित पुराण प्रसिद्ध इस अवन्तिका नगरी में सद गुणों मितव्ययी, सदविचार के पावन प्रतीक माननीय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का आपके जीवन के हीरक वर्ष में भव्य भारतवर्षीय अभिनन्दन होने जा रहा है वास्तव में यह पण्डित जी का ही अभिनन्दन नहीं है वरन सम्पूर्ण उज्जयनी का अभिनन्दन है। आप अपने आप में अनेक संस्था के समग्र रूप है। आप राजस्थान के विशाल मरुस्थान को पारकर मालव की सोंधी माटी की सुगन्ध में आये, पले और फले पूज्य माताजी श्रीमती जोधा बाई के सादा जीवन उच्च विचारो के आदर्श रूपी अमृत से सिंचित हो धर्म मार्ग पर आरूढ़ हुये। मुझे तो लगता है कि स्वयं कलाशपति ऋषभदेव ने आपको अपना मानव पुत्र घोषित कर धर्म सम्प्रदायों के भेदो की दीवारों को ढहाने के लिए मालव की इस अचल में भेजा है। तभी तो लोभ शोषण, हत्या, रक्तपात, अपराध, पतन और महायुद्ध के कराल जबड़ों में कराह रही आज की मनुष्य जाति का दर्द आपका पल-पल का सरोकार है। फिर भी आज की मानवता के दर्द के प्रति पण्डित जी साहब उदासीन और तटस्थ नहीं है उसमे हर क्षण सहमार्गी है तथा अत्यन्त सक्रिय चेतना और समवेदना से पल-पल जीवन संघर्ष में हिस्सेदारी ले रहे है।

अत एक धरधर मनीषी जीवन के बहुमूल्य आदर्शों एवं मान्यताओं के धनी श्री सेठी साहब के आगे श्रद्धा से नतमस्तक हूं एवं उद्दात आदर्शों के संरक्षण एवं प्रसार के लिए समर्पित आपके जीवन की उत्तरोत्तर उन्नति एवं दीर्घायु की शुभकामना करते है। तथा आपके आत्मीय आशीर्वाद की अभ्यर्थना करते है। इसी पुनीत भावना के साथ—

□ □ □

एक कर्मठ सादा जीवन

श्री दौलत राम मी
प्रसिद्ध नमा नदा
उज्जैन

जब एक अपने निकटस्थ मित्र के सम्बन्ध म कुछ लिखने को कहा जावे तो यह अति निकटता ही सकोच उत्पन्न करती है कि कहीं यह लेखन आत्मश्लाघातुल्य न समझा जावे यद्यपि इसका एक-एक अक्षर मात्र ठोस सत्य है। सादा जीवन उच्च विचार को अगर देखना हो तो वह श्री सत्यधर कुमार जी मे जीवन्त है। एक अखिल भारतीय सामाजिक स्तर पर सम्मान प्राप्त करने वाला मान्य व्यक्ति रहन-सहन मे इतना सरल होगा यह वास्तव मे विरल ही है। समाज के उच्चतम थेष्ठिवर्ग म सम्मान्य होते हुए भी मिलने मे नितात निश्छल व सहृदय है।

सयोग से श्री सत्यधर कुमार जी से मेरा परिचय व घनिष्ठता एक दीर्घकाल से है, जबकि वह उज्जैन म आये थे व बहुत ही साधारण स्तर पर उन्होंने अपना काय प्रारम्भ किया था। यह एक सत्य है कि तब से ही वह अपनी उदात्त प्रवृत्ति के साथ सामाजिक धार्मिक व राजनतिक गतिविधि मे भाग लेते रहे है। समय के साथ उनकी सामाजिक व धार्मिक गतिविधि अधिक विस्तृत व विशद होती गई और आज वह अपनी इस निष्ठा व सेवाभावना व साहसिक उदात्त विचारो के कारण जन समाज म अखिल भारतीय स्तर मे सामान्य है। आयु उनकी इस कमठता, सेवाभावना व लगन पर हावी नही हो सकी ह और वह आज भी एक कमठ उत्साह से छलछलाते युवा है। कोई भी काय सौंपा जावे वह उसकी सुचारु व्यवस्था करेंगे और उसको सफल करने म तन, मन, धन से जुड जावेगे। उज्जैन नगर की अनेक सामाजिक व्यापारिक सास्कृतिक, शक्षणिक एव राजनतिक गतिविधिया इनकी साक्षी है। अनेक कार्यो म हमको उनके सानिध्य म काय करने का अवसर मिला है और सर्वत्र उनमे उत्साह, श्रम व उदार विचारधारा छलछलाती देखी है। हमको गर्व है कि हमको उनके साथ काम करने का अवसर मिला और हमको उनकी कमठता, सादगी और उच्च विचारधारा से बहुत कुछ सीखने को मिला है। मैं उनकी विभिन्न गतिविधियो की यहा गणना या नामाकन नही करूगा क्याकि वह अनेक होते हुए भी इस कमठ व्यक्ति के व्यक्तित्व की पहलू मात्र है। उनका समग्र तो उनका सादगीपूर्ण जीवन, उच्च विचारधारा व जीवनदशन है जो नित्य प्रति निखार पर है। अपने इन अभिन्न मित्र का अभिनन्दन शब्दा म कर पाना सम्भव नही है, वह तो हृदय की बात है और हमारी यही कामना है कि अपने सादा जीवन उच्च विचार की कमठता से युक्त यह उत्साहशील व्यक्तित्व चिरयुवा रहे, शतायु हो और हम सबको मागदशन दे।

☐ ☐ ☐

कठोर परिश्रमी

श्री नजरअली, एडवोकेट
भू. पू. महापौर
नगर निगम, उज्जैन

मेरा उनसे सन् 1970–71 से सम्पर्क रहा है और उनसे मिलने पर उनके सरल स्वभाव और वाणी के कारण मैं बहुत प्रभावित हुआ। पण्डितजी एक वरिष्ठ और अच्छे समाज-सेवी हैं और क्योंकि वह राष्ट्रीय विचारधारा रखते हैं इसलिये मुझे उनसे धार्मिक विचारों और मामलों के साथ-साथ राजनतिक कार्यक्रमों में भी मेरी और उनकी विचारधारा एक होने के कारण एक साथ काम करने का अवसर आया। पण्डित जी बहुत ही सूझ बूझ और व्यक्ति को पहिचानने वाले व्यक्ति हैं। आप किस व्यक्ति से क्या काम लेना बहुत अच्छी तरह जानते हैं। मेरा एक भिन्न समाज से सम्बन्ध होते हुए भी उनसे किसी प्रकार का भेदभाव देखने को नहीं मिला। बल्कि मुझको उनके साथ और उनको मेरे साथ धार्मिक काम हो अथवा राजनतिक काम करने का योग बना और समान विचारों के अनुरूप काम किया।

महावीर शताब्दी वर्ष में पण्डितजी के साथ अनेकों बार उज्जैन शहर में होने वाले समस्त कार्यक्रमों में उनका और मेरा साथ रहा और उज्जैन शहर में शताब्दी समारोह की सफलता उन्हीं पर निर्भर करती है।

आपके द्वारा जो परिचय मुझे पण्डित जी का भेजा है उसमें एक शब्द का उपयोग पण्डित जी के लिये नहीं किया गया है और वह है उनका कठोर परिश्रम करना, इस शब्द की कमी मुझे दिखाई देता है जिसको कहीं भी जोड़ा जावे तो उनका परिचय और उनकी जीवनी के बारे में लिखी सभी बातें पूर्ण हो जावेंगी। आपने जो भी काम अपने हाथ में लिया वह रुचि और कठोर परिश्रम करके हमेशा पूरा किया। मेहनत से कभी पीछे नहीं रहे।

इन शब्दों के साथ अभिनन्दन समिति का मैं आभारी हूं और समिति के कार्यक्रमों की सफलता की कामना करता हूं।

□ □ □

समाज के गौरव

श्री नरेन्द्र कुमार जैन
उज्जैन

विगत लगभग तीस वर्षों से मैं पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के सम्पर्क में हूं और मुझे समय-समय पर आपका मार्गदर्शन मिलता रहता है। कठिन से कठिन समस्या का हल खोजने की पण्डित जी में अपूर्व क्षमता है।

शायद कोई विरला ही होगा जो पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के नाम से परिचित न हो। उज्जैन की जैन समाज का बच्चा-बच्चा पण्डित जी से परिचित है और उनके इशारों पर कार्य करने को तत्पर है। पण्डित जी उज्जैन की जैन समाज के एक यशस्वी कार्यकर्ता हैं तथा विगत कई वर्षों से

समाज की सेवा करते आ रहे है। वे उज्जैन की जैन समाज के आधार स्तम्भों मे से एक है। उन्होने जैन समाज को सगठित करने मे और विशेष रूप से उज्जैन की जैन समाज को सगठित करने मे तथा समाज मे अनुशासन कायम करने मे विशेष योगदान दिया है। आपके सद्प्रयत्नो की जैन समाज मे एक नई चेतना एक नई जागति तथा नये उत्साह का सचार हुआ और सम्पूर्ण समाज आपके मार्गदर्शन मे निरन्तर प्रगति के पथ पर बढता जा रहा है। आपकी उपस्थिति मे समाज के समारोह की भव्यता बढ जाती है तथा समारोहो मे आपकी अनुपस्थिति मन को खलती रहती है। आप उज्जैन की जैन समाज के गौरव है तथा सम्पूर्ण समाज आपसे गौरवान्वित हुआ है।

पण्डित जी प्रगतिशील विचारो के एक सुलझे हुए व्यक्ति है। समाज सेवा एव प्रगतिशीलता मे आपकी गहरी दिलचस्पी है। अन्ध-विश्वास एव कुरीतियो से आप प्रबल विरोधी रहे है। समाज मे फैली हुई कुरीतियो के साथ आपने जबरदस्त लोहा लिया और आज भी उनसे सघर्ष कर रहे है। भले-बुरे का निर्णय करने मे आप दक्ष है तथा आपकी दृष्टि सम्यक है। आप मे काम करने की युवको जैसी स्फूर्ति, लगन और उत्साह है और अपने जीवन के लगभग पैसठ वसन्त पार कर लेने के बाद भी उसमे किसी किस्म की कमी नही आई है। आप वर्तमान पीढी के प्रेरणा स्रोत है तथा भावी पीढी की प्रगति के मार्ग को भी आलोकित करते रहेगे। आप जैन समाज के आदर्शों के सबल सरक्षक माने जाते है। आपके नेतृत्व मे वर्तमान युवा पीढी सामाजिक कुरीतियो से सघर्ष करती हुई उन्नति की ओर अग्रसर हुई है। लगता है अब आपने सेवा का अपना दायरा विस्तीर्ण कर मानव समाज की सेवा का महान् लक्ष्य बनाने का सकल्प लेकर उस दिशा मे तेजी से अपने कदम बढा दिये है।

ऐसे तपस्वी, मनस्वी, यशस्वी एव निष्काम समाज सेवी के अभिनन्दन की खबर से मेरा भाव विह्वल हो जाना स्वाभाविक है। मेरी धारणा है कि ऐसे व्यक्तित्व के धनियो का अभिनन्दन करना तथा उनके सम्मान मे अभिनन्दन ग्रन्थ आदि का प्रकाशन करना निश्चय ही सम्पूर्ण जैन समाज के लिये तथा विद्वानो के लिये गौरव की बात होगी। विद्वानो का विनय करना, उनका स्वागत करना, सम्मान करना, अभिनन्दन करना तथा उनकी पूजा करने वाला समाज हमेशा जीवित रहा है और हमेशा जीवित रहेगा। वह समाज कभी जिन्दा नही रह सकता जिसमे विद्वानो को आदर की दृष्टि से नही देखा जाता। विद्वान् समाज के प्रकाशमान नक्षत्र होते है जो समाज

आपने अहिंसा सम्मेलन मे उज्जन के पास स्थित सुसनेर मे अपने ओजस्वी भाषण से सम्मेद शिखर रक्षार्थ युवको को धमयुद्ध मे कूद पडने को ललकारा, तथा स्वय ने धमयुद्ध की तलहटी मे बढकर सम्मेद शिखर की रक्षा करन में योगदान दिया। वास्तविकता यह है कि सम्पूण नई पीढी आपको अपना प्रेरणा स्रोत स्वीकार कर गौरवान्वित अनुभव करती है।

सेठी जी अपने सरल व्यक्तित्व, समाज सेवा, अपूव निष्ठा, निष्पक्षता एवम् साहित्य सेवा हेतु विख्यात के प्रति, कौन श्रद्धावनत नही है ? लगभग 73 वष की उम्र तक अपने काय म दक्ष, विद्वान् एवम् धम, समाज की चिरस्मरणीय जो सेवा कर रहे है, व्यवसाय काय मे रहते पर भी साहित्य, समाज, धम एवम् राजनीति क क्षत्र मे इतना बडा काय सम्भाल लेना उनकी अपूव प्रतिभा एवम् कमठता का प्रतीक है। ऐसे लोग जगत के लिये प्रकाश स्तम्भ, प्रेरणा के स्रोत होते है और जन कल्याण के कार्यों मे अपना जीवन सथक समझते है।

ऐसे महान् परोपकारी समाजसेवी धम रक्षक समाज सुधारक राजनीति के खिलाडी, ओजस्वी वक्ता, शास्त्र प्रवक्ता, धम प्रचारक और रूढिवादी किया को धराशायी करने वाल, आन्दोलनो म अग्रणी श्रद्धेय श्री सत्यधर कुमार सेठी के त्याग, तपस्या एवम् जीवन के बहुमूल्य आदर्शों एवम् मान्यताओ के आगे श्रद्धा से नतमस्तक है तथा अहत आदर्शो के सरक्षण एवम् प्रसार के लिए समर्पित आपके जीवन के उत्तरोत्तर उन्नत दीर्घायु की शुभ कामना करते है।

आपके अभिनन्दन करने एवम् अभिनन्दन ग्रन्थ का प्रकाशन करने मे समस्त देश के समस्त वग का पूण सहयोग, आशीर्वाद प्राप्त हो ऐसी हमारी पूण कामना है। साथ ही मनोकाक्षा है कि आने वाली सम्पूण नई पीढिया अभिनन्दन ग्रन्थ का अध्ययन कर आपके पद चिन्हो पर चलकर अपना जीवन साथक करेंगी।

इसी भावना के साथ—

□ □ □

जिन्दादिल

श्री प्यारेलालश्रीमाल
(ट्रम पण्डित)
[illegible] सगीत
[illegible], नाटक
[illegible]
[illegible]

जिन्दगी जिन्दादिली का नाम है,
मुर्दा दिल क्या खाक जिया करते है।

यह शेर पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी पर शत प्रतिशत लागू होता है। नित्य प्रति उनसे भेंट होती रहती है, किन्तु कभी विशेष रूप से उनकी उम्र की ओर मेरा ध्यान ही नही गया। जो उत्साह काय क्षमता, सक्रियता और जिजीविषा उनमे पाता हू उनसे लगता ही नही कि वे पचहत्तर के हो गए।

मैं समझता हू, ससार की सभी कलाओ म सबसे कठिन यदि है तो वह है जीने की कला। महापुरुषो के जीवन चरित्र से हम यही कला सीखने को मिलती है। कैसे जिया जाए, जीवन का यह सबसे जटिल, गम्भीर एव महत्वपूर्ण प्रश्न है जिसकी तरफ प्रत्येक व्यक्ति का ध्यान जाना चाहिये किन्तु नही जाता। जो ध्यान देते है वे महापुरुष बन जाते है। कहते है, जन्म लेना हमारे हाथ नही है किन्तु मरना हमारे हाथ म अवश्य है। कसी हो मृत्यु ? मृत्यु के बाद एक व्यक्ति निन्दा का पात्र बनता है जबकि दूसरा श्रद्धान्जली का। इसलिय सद्गुणो से आपूर्ति कर जीवन का ऐसा निर्माण किया जाना चाहिय कि स्वय भी सुखी हो और औरो को भी सुखी करें। पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का जीवन कुछ इसी प्रकार का है। उन्होने स्वय का निर्माण किया परिवार की व्यवस्था की और समाज की सेवा भी की है। सफल जीवन का लक्ष्य 'स्वपरकल्याण" ही होता है।

उज्जैन के जैन समाज की धार्मिक एव सामाजिक गतिविधियो मे प्राण फूकने वाले श्री सेठी जी है। प्रतिवर्ष महावीर जयन्ती के अवसर पर मनाया जाने वाला भव्य समारोह इसका प्रमाण है। समन्वयवादी विचारधारा के होने से नगर के अन्य सामाजिक एव राष्ट्रीय कार्यक्रमो मे भी आप सदव अग्रणी रहे है। आपकी कर्मठता एव लगनशीलता ने समाज के नवयुवको को प्रेरणा प्रदान की है। "चिराग से चिराग जलता है" इस कहावत के अनुसार श्री सेठी जी के कतित्व एव व्यक्तित्व से प्रभावित होकर समाज मे कार्यकर्ताओ का एक समूह तयार हो गया। कई लोगो को आपके जीवन स रोशनी मिली है। मैंने कभी आपको मायूस नही देखा। सघर्षो से मुस्कराते हुए जूझना कोई सेठी जी से सीखे।

पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के सयमित जीवन तथा ओजस्वी वाणी ने श्रावक-श्राविकाओ के अतिरिक्त साधु-साध्वियो को भी प्रभावित किया है। विद्वान लेखक तथा स्पष्ट वक्ता के रूप में आप देश के समग्र जैन समाज के जाने माने व्यक्ति है। उज्जयिनी आपसे गौरवान्वित हुई है।

हीरक जयन्ती के शुभ अवसर पर हमारी हार्दिक मगल कामना है कि आप पूर्ण स्वस्थ रहते हुए शतायुषी हो ताकि समाज आपसे अधिकाधिक लाभान्वित हो सके।

☐ ☐ ☐

परम आदरणीय

श्री पवन कुमार कासलीवाल
मंत्री—श्री दि जैन नवयुवक मण्डल
उज्जैन

उज्जैन दिगम्बर जैन समाज के मूर्धन्य एवं प्रभावशाली विद्वान् हैं, पण्डित जी के 35 वर्षों के सतत प्रयत्न से दिगम्बर जैन समाज ने कई महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न कराये हैं एवम् उज्जैन के नाम को गौरवान्वित किया है।

पण्डित जी साहब ने उज्जैन के दिगम्बर एवम् श्वेताम्बर समाज में एकता स्थापित करने में महत्वपूर्ण किया है। यह उन्हीं का प्रयास है कि महावीर जयन्ती जैसा पर्व विगत 35 वर्षों से सम्पूर्ण समाज एक होकर मनाता है।

पू० पण्डित जी बहुमुखी प्रतिभा के धनी हैं, इसलिये वह कई संस्थाओं से जुड़े हुए हैं और उनके निर्देशन में वे संस्थायें दिन व दिन उन्नति करती जा रही हैं।

पण्डित जी साहब हमेशा समाज में फैली हुई बुराईयों का दृढ़ता से विरोध करते हैं चाहे कोई उनका साथ दे या न दे, पण्डित जी साहब एक दृढ़ निश्चयी व्यक्तित्व हैं।

पण्डित जी साहब जैन दर्शन के प्रसिद्ध विद्वानों में से एक हैं। उनका सम्पूर्ण जीवन—दर्शन का जीता—जागता उदाहरण है, इसलिये सम्पूर्ण भारतवर्ष के दिगम्बर जैन समाज में उन्होंने अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है।

आप प्रकाण्ड विद्वान के साथ साथ ओजस्वी वक्ता हैं, आपका जैन धर्म के साथ साथ अन्य धर्म के सिद्धान्तों का गहन अध्ययन है, इसलिये उज्जैन के अन्य समाज के लोग भी आदर के साथ उन्हें अपने यहां बुलाते हैं और उनका आदर सत्कार करते हैं।

पण्डित जी साहब समाज के विकास के लिये हमेशा सतत् प्रयत्नशील हैं। वे युवकों के प्रेरणा—स्त्रोत हैं। युवक वर्ग पण्डित जी के व्यक्तित्व से काफी प्रभावित है और उनके निर्देश तथा आशीर्वाद से कई महत्वपूर्ण कार्य कर रहे हैं।

पण्डित जी से प्रेरणा लेकर यहां का युवक वर्ग एक अस्पताल भी खोलने का प्रयत्न कर रहा है। मैं भगवान महावीर से प्रार्थना करता हूं कि पण्डित जी साहब सदा स्वस्थ रहें और हम उनसे हमेशा प्रेरणा प्राप्त करते रहें।

☐ ☐ ☐

त्यागमय तपस्वी जीवन

डा श्री प्रकाश जैन
मुख्य चिकित्सक
उज्जैन

आदरणीय पण्डित जी साहब मेरे पूज्य पिताजी स्वर्गीय पण्डित अनन्त राज जी वैद्य के अन्तरग साथियो मे से रहे है। पूज्य पिताजी के बाद मुझे व मेरे परिवार को उनका पितृवत् स्नेह तथा मार्ग दर्शन मिलता रहा है। मुझे उनके परिवार के सदस्य तथा उसका चिकित्सक होने के नाते उनके निजी, सामाजिक एव राजनैतिक जीवन को निकट स देखने व समझने का सौभाग्य मिला है।

मनसा, वाचा तथा कर्मणा मे एकरूपता लाता हुआ उनका निष्कपट जीवन, बडे से बडे लोभ एव पद द्वारा भी सिद्धान्तो से डिगने वाला त्यागमय तपस्वी जीवन, निर्भीकता दृढ आत्मविश्वास तथा मितव्ययता को अन्तरग मे उतारता हुआ तथा बडे से बडे आर्थिक, शारीरिक और मानसिक सकट मे भी मुस्कराते रहने वाला उनका जीवन एक प्रकाश पुन्ज के रूप मे सबके पथ को आलोकित करता रहा है।

मानव जाति की अपरिमित, अश्लाघनीय आदर्श सेवा का व्रत धारण करने वाले, सेवा की पताका को ईर्ष्या, द्वेष एव कलुषता से ऊपर रखने वाले समाज के भास्कर पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के चरणो मे उनके हीरक जयन्ती वर्ष को पुनीत वेला मे आदराञ्जली के रूप मे अभिनन्दन करते हुए कामना करता हू कि 75 वर्ष का यह युवा पुरुष कम से कम 25 वर्ष और रह कर अपनी शताब्दी पूरी करे।

☐ ☐ ☐

सावले सलौने

श्री प्रताप चन्द जैन
सुप्रसिद्ध समाजसेवी, आगरा

जनवरी सन 1972 में कोटा में अ० भा० दि० जैन परिषद का स्वर्ण जयती समारोह था। श्री भगतराम जी के सौजन्य से मैं भी उसमे गया हुआ था। प्रतिनिधियो और दर्शको से पडाल खचाखच भरा था और जोशीली तकरीरें व बहसें चल रही थी। दो व्यक्ति ऐसे थे जो हर मुद्दे पर, अपनी सीट से ही अथवा मच पर आकर अपने विचार व्यक्त कर रहे थे। ये अपने तर्कों और शैली से कार्यवाही को और भी रोचक व जानदार बना देते थे। बगल मे बैठे एक सज्जन से पूछने पर ज्ञात हुआ कि जो सफेद धोती और कुर्ते मे कुछ सावरे है वे हैं उज्जैन क श्री सत्यधर जी सेठी और जो पेण्ट पहिने है वे हैं जयपुर के श्री कपूरचन्द पाटनी एडवोकेट। सेठी जी के सम्बन्ध मे मैंने पहिले स ही काफी पढ और सुन रखा था। यह उनके दर्शनो का प्रथम सुयोग सौभाग्य था। भेंट होने पर पारस्परिक परिचय भी हो गया और आगे हम दोनो मे पत्र सम्पर्क स्थापित हो गया।

तीन वर्षों बाद दिसम्बर सन् 1975 म हम लोग फिर मिले, अजमेर म डा० कस्तूरचन्द जी कासलीवाल द्वारा आयोजित जैन दर्शन साहित्य सेमिनार म।

अक्टूबर सन् 1981 मे हम लोग दिगम्बर जैन परिषद के दिल्ली अधिवेशन मे मिले और अक्टूबर सन 1982 मे परिषद के ही कानपुर हीरक जयन्ती समारोह मे। इन समारोहो मे भी वही कोटा जैसा जोश था उनमे। मौका चूकना तो वे जानते ही नही। वे अपनी बात स्पष्ट शब्दो मे निष्पक्ष निडर और निर्भय होकर कहते है। सेठी जी एक प्रखर वक्ता हैं। लेखनी आपकी जीवन्त है। व्यापक अनुभव और अध्ययन गहन होने से विषय पर आपकी पकड भी अच्छी होती है। ठेठ परन्तु मधुर आवाज, सोने मे सुहागे का काम करती है। पुरातत्व संग्रहालय उज्जैन और मध्यप्रदेश को आपकी स्थायी अमूल्य देन है।

इन अवसरो पर अधिकतर हम लोग रहे भी साथ ही, जिससे एक दूसरे को निकट से देखने और समझने का मौका मिला। बडे निश्छल मिलनसार और सेवाभावी है सेठी जी। अपनी कहते है तो दूसरो की सुनते भी हैं। मिजाज सादा, पहनावा सादा और रहन-सहन भी सादा। समाज और संस्थाओ की वर्तमान गिरती दशा से दु खी रहते हैं। साधु समाज का शिथिलाचार आपकी चिन्ता का विषय बन गया है। परिषद के आप उपाध्यक्ष हैं। उसकी निर्जीविता से वे बेचैन रह जाते हैं। मेरे और आपके विचारो मे बडी समानता है। मुझे आपका हार्दिक स्नेह प्राप्त है।

□ □ □

लोकप्रिय

श्री प्रमोद कुमार मारवाडी, अध्यक्ष अ भा म फेडरेशन, बडनगर
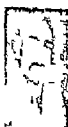
आप जैसे जैन समाज के विद्वान, वक्ता एव धर्म प्रेमी सज्जनो का सम्मान (नागरिक अभिनन्दन) करना समाज की कृतज्ञता एवं जागरूकता को परिचायक है।

आपसे सिर्फ उज्जैन जैन समाज को ही नही परन्तु भारतवर्ष के जैन समाज को बडा गौरव है। आपके कार्य लोकप्रियता के उदाहरण हैं। आपकी सौम्य मुद्रा को देखकर हृदय कवि की यह उक्ति सार्थक प्रतीत होती है—

> प्रन्दने प्र ाद सुदनं, सदये हृदय
> सुधामुचा वाच । करणं परोपकरणं
> येषा केषार्म न ते ब द्याः ।

हमारी श्री 1008 देव श्री जिनेन्द्र देव से करबद्ध प्रार्थना है कि आपको चिरायु करें जिससे हमे उनके सम्मान समारोह मनाने के अवसर प्राप्त होते रहे।

□ □ □

श्रद्धावान

श्री बाबू लाल वाली
भू पू उप महापौर नगरनिगम
उज्जन

सन् 1947 की बात है। म कांग्रेस का सेक्रेटरी था। नई पेठ मे कांग्रेस का ऑफिस था। श्री सेठीजी ने नमक मण्डी मे शुद्ध खादी भण्डार खोला था। म भी स० 1935 से खादी का ही वस्त्र पहनता हू। इनकी दुकान मेरे घर आने-जाने के माग मे होने के कारण म वहाँ से खादी खरीदने की इच्छा लेकर इनके पास पहुचा, उस समय खादी का लेन-देन तो हुआ ही साथ ही हमने आपस म एक दूसरे का परिचय भी लिया। उसी समय इनकी लडकी जो कि उस समय 2½-3 वष की होगी, वह मेरे पास आकर के खेलने लगी और तोतली जबान मे मेरे से बात करने लगी। इसलिय उसके लिये मेरे हृदय मे ममता जाग उठी और मेरा मन करने लगा कि मैं इस बच्ची को प्यार करु। लेकिन एक हरिजन होन के कारण मेरा मन अन्दर से कुछ झिझका इसलिये मैंने पण्डित जी श्री सत्यधर कुमार जी स पूछ हो वठा कि यदि मैं इस बच्ची से प्यार करू तो आपको कोइ ऐतराज तो नहीं होगा। इस पर पण्डित जी ने बडा आश्चय व्यक्त किया और भगवान महावीर स्वामी के कुछ उपदेश सुनाते हुए मुझे कहा कि बच्चो में ता स्वय भगवान विराजमान है। वे इन बातो को क्या समझे और इस मामले मे जब आपका और बच्ची का मन एक दूसरे के इतना नजदीक आ गया है तो इस बीच मे दखलदाजी करने वाला मैं कौन ? आप इस बच्ची से प्यार कर सकते है। श्री पण्डित जी का यह व्यवहार देखकर उनके प्रति मेरा श्रद्धान हो जाना स्वाभाविक था। इसके बाद निरन्तर मेरा उनका सम्बन्ध प्रगाढ से प्रगाढ रूप धारण करता ही चला गया। आज तक वसा ही यथावत बना हुआ है।

इसके बाद अनेको अवसर पर चाहे वो सामाजिक हो, राजनीतिक हो या धार्मिक हो उनमे पडितजी के विचार समाज मे जागरूकता पदा करने वाले सुनने को मिलते रहे हैं। आपके द्वारा प्रतिवष महावीर जयन्ती जस पव पर भी निमन्त्रित किया जाता रहा हू। इसके कारण पण्डितजी को अनेक बार समाज के रूढीवादियो का क्रोध भरा विरोध भी सुनना और सहन करना पडा है। ऐसे उदार धर्मावलम्बि, समाज-सेवी, राष्ट्रीय विचारधारा और राष्ट्र सेवी व्यक्ति का अभिनन्दन किया जाने पर अपने हृदय मे गौरव भरी प्रसन्नता को महसूस करता हू।

□ □ □

निष्काम विद्वान

श्री बाबूलाल बढ
अध्यक्ष
अ विश्व जन मिशन

विगत दो वर्षों से मैं अपने सपनो मे जिस मूर्ति का निर्माण कर रहा था उस मूर्ति को आपने साकार रूप दे ही दिया। सचमुच म प सत्यधर कुमार जी सेठी के ओजस्वी व्यक्तित्व को जन-जन के सम्मुख लाना आवश्यक है। ऐसे कमठ सेवाभावी, उत्साही विद्वान् का मूल्याकन करना सम्पूर्ण समाज का

मध्य प्रदेश शाखा, चुरई
अध्यक्ष—प्रतिभा सगठन साहित्यिक प्रतिष्ठान, चुरई

कर्त्तव्य है। उनकी निर्भीकता, साहस और सुधारवादिता के हम सभी पक्षधर है। अभिनन्दन की इस बहती गगा मे मध्यप्रदेश मिशन शाखा भी अपने हाथ धोकर पवित्र होना चाहती है। कृपया मेरी विनयान्जलि ऐसे निष्काम विद्वान् के प्रति प्रेषित अवश्य कीजिये। म उनके चिरायुष्य की कामना करता हू।

□ □ □

सेठी सत्यधर कुमारः

हितमिच्छु बाबूरामो जन
साहित्याचार्य, साहित्य मनस्वी
उज्जैन

दूर्हि परावर्तनपरा यामस्या महत्या जगत्या परावर्तनपरे कमयुगे पुरातन स्टष्टि स्रष्टारो चतुर्दश महापुरुषा कुलकरा अस्यादिकमपि क्रमपरामेव स्टष्टि स्यस्टवन्त न तु जाति सम्प्रदायादि भेदवती मिति विदित चरमेवेद जात्यादि भेद कलित समाजोर्वी चीनरेव विदधे। त नाना भेद विकीर्ण समाजमेक सूत्र प्रोतवता प्राचीन महापुरुषाभिमत मतमाविर्भावियता सेठी त्यागमावेन सत्य सत्यधर कुमारेण महानुभावेनविश्यक कार्याण्यपि परित्यज्य परिषदि परिषदि गत्वा गत्वा प्रयत्न विधाय विधाय स्थाने स्थाने व्याख्यानेन प्रतिबोध्य प्रतिबोध्य मनसा वचसा कायेनापि प्रयतित तदस्या प्रसिमोपकारेण समाजस्यो परिमहानाभार स आभार केवलमभि नन्दनेन नावतरति यावत सम्प्रदायादि भेद भदन वद्ध कक्ष कक्षीकृत दृढ साहस समाज सर्वथापूर्ण यत्ने विधाय समाज पूर्णमेकसूत्र प्रयोज्य महानुभाव सेठी स्यास्यया प्रथित सत्य सत्यंधर मात्मान प्रदर्शयत दुस्साह न प्रवर्धयेत आशासेऽग्रेऽपि समाज पुन सत्य सत्यधरं महानुभाव सगठन प्रपद्य स्वच्छा व्यभिनन्दयिता भविष्यति। अस्य सगठन कार्येण भशमानदन प्रमुदित पूर्ण सफलता पूर्ति काम सवदा "अय सेठी सत्यधर कुमार' जीवतात स्वकार्ये सफलता लभमा न' प्रमोद माप्नुयात् समाजच की कृत्य तस्मै अपि प्रमोद देयात्। सवदा समाज हितेच्छोरस्य।

□ □ □

दृढ सकल्पी

श्री विमलचन्द कटारिया
उज्जैन

सम्माननीय श्री सत्यधर कुमार जी सेठी सामाजिक, धार्मिक एव उदार व्यक्ति हैं। बचपन मे आपकी आर्थिक स्थिति बहुत ही साधारण थी, किन्तु सच्चरित्रता दृढ सकल्प, कर्त्तव्यनिष्ठा, सत्य एव स्पष्टवादिता आदि गुण आप मे विद्यमान हैं। अत जीवन मे अनेक कठिनाइया आने पर भी आप अपने सत्य पथ एव दृढ विचारो से विचलित नही हुए। फलत आज आपकी आर्थिक स्थिति बहुत ही अच्छी है एव उज्जैन मे कपडे का थोक व्यवसाय का सफलता से सचालन करते हैं।

आप सामाजिक एव धार्मिक कार्यो मे पूर्ण दिलचस्पी लेते हैं एव सामाजिक कुरीतियो को दूर करने का यथासम्भव प्रयत्न करते है। परमात्मा आपको दीर्घायु प्रदान करे एव आप सपरिवार सकुशल रहें। आपका जीवन सुखमय हो।

□ □ □

अनुकरणीय

श्री बिरधीलाल सेठी
जयपुर

वे जैन समाज के विशेषकर सेठी परिवार के गौरव हैं। वे समाज व देश के उन इने-गिने समाज सेवकों में से है जिन पर प्रत्येक जैन को गर्व होना चाहिये। वे जीवन भर निर्भीक होकर विकृतियों, शिथिलाचार और रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष करते रहे और स्वयं आगे रहकर समाज को नेतृत्व देते रहे है। लक्षाधिपति होते हुए भी उनका धार्मिक व सादा जीवन इस तड़क भड़क के समय में सबके लिये अनुकरणीय है। मेरी हार्दिक कामना है कि वे चिरायु होकर हम सबको प्रेरणा देते रहे।

☐ ☐ ☐

लगन के धनी

श्री भगतराम जैन
मन्त्री
अखिल भारतीय
दि. जैन परिषद
दिल्ली

आदरणीय पं० सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा लगभग 30 वर्ष पुराना सम्बन्ध चला आ रहा है। वे मुझे अपने भाई के बराबर मानते हैं। उन्हें मैंने जब भी किसी कार्य के बारे में लिखा उन्होंने निःसंकोचपूर्ण करने का प्रयास किया। मेरे बारे में यदि यह उन्हें मालूम हो जाता है कि मैं उज्जैन होकर इन्दौर आ रहा हूं तो वे अपना समस्त काम छोड़कर स्टेशन पर मिलने आते हैं।

भारत जैन महामण्डल, अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जैन परिषद, भगवान महावीर 2500वां निर्वाण महोत्सव, विश्व जैन मिशन, तीर्थ क्षेत्र कमेटी, दिगम्बर जैन महासमिति आदि अनेकों ऐसी संस्थायें हैं जिनमें मैं उनके साथ मिलकर कार्य करता रहा हूं और आज भी कर रहा हूं। उनके विचार बड़े क्रान्तिकारी हैं। उनके हृदय में समाज सुधार की वेदना हर समय रहती है परन्तु इस दिशा में कार्य करने वालों के अभाव से उनके मन में बड़ी वेदना होती है। समाज का दुर्भाग्य मानकर सन्तोष करना पड़ता है।

सही देखा जाय तो उनका समस्त जीवन, निःस्वार्थ, क्रान्तिकारी, निष्ठावान कार्यकर्त्ता के रूप में ही लगा है। उनके प्रति जितना भी लिखा जावे वह कम है। मैं अपनी श्रद्धा के सुमन उनके चरणों में अर्पित करता हूं।

☐ ☐ ☐

निपुण्यता

श्री भगवान दास जैन, अध्यक्ष
श्री दि. जैन महासमिति इकाई
गंज बसोदा, मध्यप्रदेश

उनकी वाणी में जो निर्भीकता, निपुण्यता एवं आगम के अनुकूल विचार सुने उनसे ऐसा प्रतीत होता है कि विद्वान् को अपना प्रबल बुद्धि से समाज को उस दिशा से जाने का मार्ग दृढ़ता से बताना कि जहां वीतराग का प्रादुर्भाव हो वह सेठी जी में है।

गृहस्थ धर्म का पालन कैसे किया जाता है इसकी जीती-जागती मूर्ति श्री सेठी जी है जिनकी सादगी एवं निःस्पृहता समाज सेवा आगम में दृढ़ता ऐसे सद्गुण किसी विरले ज्ञानी विद्वान में होते हैं, वह सेठी जी में मौजूद हैं।

मैं उनके भविष्य के लिये कामना करता हू कि वह अधिक समय तक हमें मार्गदर्शन जैन सिद्धान्तो पर चलने का देते रहे, साथ ही वह चरमोत्कृष्ट श्रेणी पर चढकर अपनी आत्मा का कल्याण करें।

☐ ☐ ☐

हमारे दीपक

श्री भागचन्द काला

महामन्त्री-दि० जैन महासभा, बम्बई

मेरे श्रद्धेय काकाजी व्याख्यान वाचस्पति प सत्यधर कुमार जी की हीरक जयती के शुभ अवसर पर समाज अभिनदन कर रहा है, यह जानकर हर्ष हुआ। उन्होंने अपने जीवन का अमूल्य समय समाज व देश सेवा म लगाकर समाज की उन्नति मे, असाधारण सहयोग दिया व हमेशा समाजोन्नति के कार्यो के विरुद्ध प्रतिकार करने मे वे कभी पीछे नही रहे। अन्याय के विरुद्ध आवाज उठाने म वे किसी भी प्रकार भय नही करते। धर्म के विरुद्ध प्रसग उपस्थित होने पर मौन रहना उनकी प्रकृति के विरुद्ध रहा।

अनावश्यक विरोध नही हो आवश्यक विरोध म विलम्ब नही यही उनका स्वभाव रहा। समाज व धर्म की उन्नति के कार्यो मे वे सहयोग देने मे सदैव तत्पर रहते है। उनकी वाणी व मन म समानता रही। पू काका सा ने अपने जीवन का अमूल्य भाग धर्म व नीति विरुद्ध कार्यो के प्रतिकार म ही व्यय किया। वे श्रद्धेय पं चनसुखदास जी जैसे कर्मयोगी विद्वान् के कर्मयोगी शिष्य सिद्ध हुए। आज भी श्रद्धेय प सत्यधर कुमार जी का नाम तो समाज सेवी पंक्ति मे आदरपूर्वक लिया जाता है।

मैं पू श्रद्धेय व्याख्यान वाचस्पति प सत्यधर कुमार जी की प्रशंसा केवल पारिवारिक सम्बन्ध से ही नही कर रहा हू परन्तु यह प्रशसा यथार्थ के धरातल पर ही है। आज भी कई धार्मिक, राजनैतिक, सामाजिक सस्था से उनका उच्च सम्बन्ध होना यह प्रमाण है। मैं केवल राजनैतिक कार्य करता था और वह भी उनकी प्रेरणा बिन्दू पू काकाजी ने मुझको आदेश दिया कि तुमको राजनैतिक क्षेत्र के साथ सामाजिक क्षेत्र मे भी कार्य करना आवश्यक व अनिवार्य है। यदि तुम देश रूपी विराट देश की सेवा करना चाहते हो तो समाज रूपी बिन्दु से पृथक मत रहो। सामाजिक कार्य करने की प्रेरणा मुझको उन्होने ही दी। उनकी प्रेरणा के दीपक का ही प्रकाश मेरी सब अवस्थाओ पर पड़ा।

यू तो देखा जाये तो वे हमारे पारिवारिक सलाहकार हैं। प्रत्येक हमारे पारिवारिक कार्यो मे उनकी सम्मति की प्रतीक्षा करते है।
मैंने तो उनके चरणो मे बैठकर समाज सेवा करने का पाठ सीखा है। म तो सदैव उनका ऋणी हू।

मेरी भावना है कि वे दीर्घायु हो और सदैव मेरे पर उनकी छत्र-छाया रहे।

☐ ☐ ☐

बहुमूल्य

प्रेसिडेन्ट सरश्री भागचन्द सोनी
अजमेर

विद्वान् और समाज सेवी कार्यकर्त्तागण अपनी कार्य प्रणाली, साहस, त्याग और गहन मनन चिन्तन से आगामी पीढ़ी के लिए मार्गदर्शन ही नहीं होते आदर्श पुरुष हो जाते हैं। ऐसे अनुभवी समाज सेवियों का समादर करना ही समाज का कृतज्ञता ज्ञापन है जो सभी प्रकार उपयुक्त है।

श्री सेठी जी के मैं अनेक बार सामाजिक मंचों के सम्पर्क में आया हूं। आपने जैन मिशन के माध्यम द्वारा जैन धर्म के सिद्धान्तों को देश विदेश व्यापी प्रचार प्रसार करने में अपनी ज्ञान व प्रेरणा शक्ति का सदैव उपयोग किया है तथा वे अब भी इस विषय में सोत्साह संलग्न हैं। मध्य प्रदेशीय जैन समाज के आप उत्साही कार्यकर्ता हैं और स्थानीय जैन समाज को सत्परामर्श द्वारा नियोजित और प्रोत्साहित करते रहे हैं।

उनके द्वारा उज्जैन में पुरातत्व सामग्री का संग्रह हुआ है। वह वास्तव में बड़े महत्व का है। उनके साथ ही वह देखने का अवसर मुझे प्राप्त हुआ था। मैं उससे बहुत प्रभावित हुआ। उनकी यह लगन सराहनीय है, समाज के अन्य क्षेत्रों में भी उनकी सेवायें बहुमूल्य हैं।

मैं आपके दीर्घजीवन एवं स्वास्थ्य की मंगल कामना करता हूं और आपके अनुभव साहित्यिक व धार्मिक सामग्री से सुन्दर सज्जापूर्ण अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशन की शुभ कामना करता हूं।

□ □ □

मनस्वी

श्री भानुभाई पटेल
अध्यक्ष–उज्जैन शहर जिला कांग्रेस
कमेटी (इं), उज्जैन

श्री सेठी का सम्पूर्ण जीवन समाज, देश तथा प्रदेश में अपनी गौरवशाली सेवा का एक महत्वपूर्ण पड़ाव रहा है। आपने अपने किशोर जीवन से ही समाज में व्याप्त बुराइयों के विरुद्ध एक लम्बी लड़ाई लड़ी है, जिसमें बाल विवाह, पर्दा प्रथा, जाति प्रथा आदि प्रमुख हैं। आपने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के आह्वान पर विदेशी वस्त्रों की होली जलाई तथा शराब जैसी घातक वस्तुओं का आपने बहिष्कार करवाया।

आप एक कट्टर कांग्रेसी तथा राष्ट्रवादी विचारधारा के प्रगतिशील व्यक्ति हैं। आज भी आप हमारे देश की लोकप्रिय प्रधानमन्त्री श्रीमती इन्दिरा गांधी द्वारा 20 सूत्री कार्यक्रम के क्रियान्वयन में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं। परिवार नियोजन, वृक्षारोपण तथा निर्धन व्यक्तियों के उत्थान में आप बड़े उत्साह के साथ लगे रहते हैं।

आज जबकि आप 74 वर्ष के हो चुके हैं। एक युवा व्यक्ति की तरह समाजोत्थान में संलग्न हैं और आपने जहां जैन समाज की शिक्षाओं का व्यापक प्रचार प्रसार किया है वहीं दूसरी ओर आपने अन्य धर्मों का समन्वय कर साम्प्रदायिक सौहार्द उत्पन्न करने का भी भरसक प्रयास किया है।

यह हमारा परम सौभाग्य है कि महान् धार्मिक ऐतिहासिक तथा सांस्कृतिक नगरी अवंतिका म मा भारती के एक तपोपूत के रूप मे यह व्यक्ति यहा उप स्थित है। म आपके व्यक्तित्व तथा कृतित्व से परिचित हू।

आपने जो एक तपस्वी, मनस्वी तथा ओजस्वी व्यक्ति का अभिनन्दन करने का शुभ निर्णय किया है उसके लिऐ आप साधुवाद के पात्र हैं और इससे आने वाली पीढी को मार्ग दर्शन तथा प्रेरणा प्राप्त होगी। आपके कार्यक्रम की सफलता के लिए मैं सर्वेश्वर से मगल कामना करता हू।

☐ ☐ ☐

सद्विचार

श्री सेठ भूपेन्द्र कुमार सेठी
प्रसिद्ध समाज नेता एव उद्योगपति
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी जैन समाज के कर्मठ निर्भीक, सुधारवादी एव सिद्धान्तवादी व्यक्तियो मे से है। आपका हमारा सम्बन्ध विगत तीस वर्षो से रहा है। हमारे पूज्य पितामह प्रातः स्मरणीय स्व० सेठ लालचन्द जी साहब का आप पर विशेष स्नेह रहा।

लगभग 35 वर्ष पूर्व आप राजस्थान से उज्जैन आये थे, तब से यहाँ के जैन समाज की विभिन्न गतिविधियो मे सलग्न रहे व समाज कल्याण के लिये अनेक धार्मिक शैक्षणिक एव अन्य कल्याणकारी सस्थाओ की स्थापना की।

आप एक ओजस्वी वक्ता हैं। स्पष्टवादिता तथा निर्भीकता आपकी वाणी मे परिलक्षित होती है। आपका जीवन सरलता, सादगी और मितव्ययता का द्योतक है। आपने जीवन मे कई उतार चढाव देखे है। आप साधारण स्थिति से ऊचे उठे है। आज आप उज्जैन नगर के सफल कपड़ा व्यवसाइयो मे से एक है।

काफी लम्बे समय से पण्डित जी का व हमारा सम्पर्क रहा है। इस दर्मियान मुझे निकट से आपको देखने व समझने का मौका मिला। आपके सादगीपूर्ण जीवन एव आदर्श व्यक्तित्व स मैं सदा प्रभावित रहा। आपके सदविचार सदा समाज के लिये प्रेरणा के स्रोत रहेगे।

मैं आपका हार्दिक अभिनन्दन करता हू तथा आपके स्वस्थ एव शतायु जीवन की कामना करता हू। सदव आपका मार्गदर्शन हमे मिलता रहे यही ईश्वर से प्रार्थना है।

☐ ☐ ☐

क्रान्तिचेता

श्री दानवीर तीर्थभक्त
नथाईसिंघई भयालाल रहा
बरड (सागर) मध्य प्रदेश

विशुद्ध गांधीवादी राष्ट्रीय विचारधारा के मूर्तिमान आदर्श, बहुरधागी विद्वान क्रांतिकारी समाज सुधारक पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का सर्वप्रथम साक्षात्कार एव घनिष्ठ सम्पर्क सन 1955 मे द्रोणगिरि मिशन अधिवेशन म हुआ जबकि केन्द्र सचालन स्व० बाबू कामता प्रसाद जी के निर्देश पर मैंने वहा अध्यक्ष पदभार ग्रहण किया था। इस अधिवेशन मे जापान स डा० नाकामुरा तथा इगलण्ड के प्रो० बर्टेण्ड रसेल आदि विदेशी जन विद्वान पधारे थे। सन 1944 म जैन मिशन ने विदेशो मे धर्म प्रचार का जो बीड़ा उठाया था और उसमे जो आशातीत सफलता प्राप्त की थी, उसके मूल म श्री सत्यधर कुमार जी सेठी जसे निष्पक्ष विद्वान, ओजस्वी प्रवक्ता, आत्म समर्पी सामाजिक क्रांतिचेता को कभी नही भुलाया जा सकता। अध्यक्षीय कार्यालय खुरई हो जाने के बाद तो पण्डित जी का जब तक यहा आना अनिवार्य बन गया था। कार्यकारिणी की प्रधान इकाई के नाते उनकी अनुपस्थिति मे मध्य प्रदेशीय मिशन शाखा की गाडी चल ही नही सकती थी। उनके बहुमुखी व्यक्तित्व ने शताधिक सस्थाओं को दिशा प्रदान की तथा तन, मन, धन से सम्पृक्त सिंचन कर उन्हे फलीभूत बनाया। वे पुरातत्व के लेखक तो हैं ही सामाजिक समस्याओ के भी सफल समाधानकर्ता है। उनकी सिंह गर्जना से बडी बडी सभायें स्फूर्त और जिन्दादिल हो उठती है। ऐसे व्यक्ति की अभिवन्दना अत्यन्त सामयिक है जिसको किये बिना हम नि सन्देह कृतघ्न की पदवी पाते। उनके दीर्घायुष्य की मगल-कामनाओ सहित।

□ □ □

बहुमुखी

श्री मदनलाल गोयल
प्रसिद्ध समाजसेवी, धार्मिक शैक्षणिक
सास्कृतिक एव साहित्यिक सेवी
उज्जैन

भाई श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा परिचय लगभग 40 वर्ष पुराना है। इस अवधि मे मेरे इन्ही के साथ सामाजिक, शैक्षणिक नगरीय विकास, हिन्दू मुस्लिम एकता, अस्पृश्यता निवारण, हिन्दी प्रचार, गोसेवा, राजनयिक और सर्वोदय आदि सस्थाओ म काम करने के कई अवसर आये है। मैंने इन्हे बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न अध्यवेत्ता विनम्र, कर्मठ, लगनशील, सगठनकर्ता, समन्वयवादी, स्पष्ट वक्ता और सच्चा मार्ग दर्शक साथी पाया है।

इन कर्मकाय 73 वर्षीय व्यक्ति का व्यक्तित्व और जीवन ही इन्हा के वक्तव्य लेखन व कार्य की अनूठी शैली है। इन्होंने सदव सादगी और विशुद्ध व्यवसायिक परम्परा का पालन करते हुए हिसाब को ही सत्या तथा व्यक्ति की साख माना है। यही कारण है कि आज ये एक कार्यकर्ता से कई सस्थाओ क जनक हैं और श्री सम्पन्न है।

मेरी परब्रह्म परमात्मा से सदव इन्हीं के दीर्घ एव समृद्ध जीवन की कामना है।

□ □ □

अनुकरणीय नेता

श्री मदनलाल शर्मा
उज्जैन

श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी एक कर्मठ, लगनशील एवं सेवाभावी कार्यकर्ता ही नहीं वल्कि मार्गदर्शक एवं अनुकरणीय नेता के रूप में देश की प्राचीन, ऐतिहासिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक नगरी उज्जयिनी में आदर एवं सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। पिछले एक लम्बे समय से वे विभिन्न धार्मिक, सामाजिक एवं सार्वजनिक कार्यों में अग्रणी रहते आये हैं। भारतीय संस्कृति के प्रचार, प्रसार व संरक्षण में भी सदव आगे ही रहे हैं। प्राचीन स्मारकों एवं धार्मिक स्थानों के संरक्षण एवं विकास के लिये सतत संघर्षशील रहे हैं। जयसिंहपुरा स्थित संग्रहालय में प्राचीन एवं दुर्लभ जैन मूर्तियों एवं कला कृतियों के संग्रह और संरक्षण में इनका प्रमुख सहयोग रहा है।

सर्वशक्तिमान् से प्रार्थना है कि वे इन्हें दीर्घजीवी करें ताकि वे अपने अनुभव, परिश्रम और त्याग भावना से सार्वजनिक क्षेत्र में प्रेरणा देते रहें।

□ □ □

पुरुषार्थी

श्री महावीर प्रसाद जैन
एडवोकेट, हिसार

अपनी निर्भीकता सादगी, सुधारवादी, समन्वयवादी तथा समाज तथा धर्म की जो सेवा की है वह सारी जैन समाज जानती है। हम उनकी त्याग, धार्मिक आचरण उनकी सादगी को देखकर श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं। मेरी वीर प्रभु से प्रार्थना है कि वह दीर्घायु होवें और उनके पुरुषार्थ से नवयुवक तथा समाज में धर्म भावना रहे।

+ — +

व्यक्तित्व का अभिनंदन

श्री माणकचन्द गंगवाल
सरावगी, लाडनूं वाला

जैन समाज के सुप्रसिद्ध कर्तव्यनिष्ठ व्यक्ति श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी से मेरा सम्पर्क आज से करीब 40 वर्ष पहिले हुआ। जब परम पूज्य आचार्य सूर्यसागर महाराज का चातुर्मास लाडनूं में था। उस समय लोहड़ साजन भाईयों को लेकर एक जबरदस्त आन्दोलन खण्डेलवाल समाज में चल रहा था जिसके सूत्रधार थे मुनि श्री चन्द्र सागर जी महाराज और कुछ समाज मान्य नेतागण। ये चाहते थे लोहड़ साजन भाईयों का बहिष्कार, लेकिन श्री सेठी जी जो उस समय समाज में संघर्षरत थे, समाज में व्याप्त कुरीतियों के। उनसे यह अनय नहीं देखा गया। वे कूद पड़े, एक शेर की तरह इस आन्दोलन में।

आरम्भ से ही उनका जीवन क्रान्तिकारी रहा है। उज्जैन में भी आने के बाद मैंने हमेशा क्रियाशील देखा है उनको। अब तो उनकी दो कदम और आगे बढ़ गई है। उनका क्षेत्र सेवा का विशाल हो गया है। जीवन में इतनी गहराई आ गई है कि चाहे हिंदू हो या मुसलमान हो, क्रिश्चियन हो या

आय समाजी, सब हा के हृदय मे सेठी जी के प्रति आस्थाय बढती जा रही है। सार्वजनिक क्षेत्र म कितनी ही संस्थाओ के संस्थापक हैं और व्यवस्था कमेटियो म हैं। वे एक सफल व्यापारी है। धार्मिक और नतिक तो इतने हैं कि कही भी किसी भी क्षेत्र मे उनके प्रति अश्रद्धा नहा। ऐसे व्यक्ति का यदि अभिनन्दन किया जाता है तो यह अभिनन्दन एक व्यक्तित्व का अभिनन्दन है। जिसके लिये मेरा भी नमन है।

□ □ □

धार्मिक

श्री मानक लाल टांका
उज्जैन

धार्मिक ज्ञान भी आपका बडा ही अच्छा है। वास्तव म श्री सेठी जी को अपना हार्दिक भावना से सम्मान करता हू। परम पूज्य शासनदेव स प्रार्थना करता हू कि श्री सेठी जी चिरायु हो व समाज की उन्नति मे सहयोग मिलता रहे। श्री सेठी जी मे कोई साम्प्रदायिक भावना भी नही है।

□ □ □

ध्रुवतारा

श्री सराफ मानकचन्द बड़कुल
भू पू अध्यक्ष, अखिल विश्व जैन
मिशन दरई (सागर)

मै सन् 1964 से सन् 1980 तक मध्य प्रदेश मिशन शाखा के अध्यक्ष पद पर आसीन रहा हू। स्व० श्री कामता प्रसाद जी को तो मैं उनके नाम भर से जान पाया था परन्तु सेठी जी से इतना घनिष्ठ सम्पर्क रहा है कि उन्हे केवल काम से ही जान पाया। जितनी कर्मठता, लगन, उत्साह, निर्भयता, सहिष्णुता उनमे मैंने देखी उतनी किसी अन्य विद्वान् मे नही। मिशन को यदि ऐसे ही रत्न प्राप्त हो जाते तो जन संस्कृति का इतिहास ध्रुवतारे के समान चमकता। उनके अभिनन्दन की योजना म मेरा योगदान स्वीकार कीजिये तथा दीर्घायुष्य की भावनायें उन तक पहुचाइये।

□ □ □

माला के मोती

श्री मानक चन्द बड़जात्या
अध्यक्ष-दि जैन समाज, फ्रीगंज
उज्जैन

महान् समाज सुधारक पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी ने न सिर्फ जयपुर जिले मे जन्म लिया है, अपितु मालवा की पावन भूमि उज्जैन नगरी को अपना निवास बनाकर सुशोभित भी किया है। आज यह पौराणिक भूमि खुशी से झूम रही है जब हम आप श्री सेठी जी का अभिनन्दन कर रहे हैं।

बचपन म ही आपको गुरुदेव श्री चनसुख दास जी के सत्संग में रहने का अवसर मिला और आप मे क्रान्तिकारी विचार, समाज सुधारवादी विचार घर कर गये फलस्वरूप किसी भी काम का बीड़ा उठाना वे अपना सौभाग्य समझते हैं।

काम कसा भी हो—समाज सुधार, असहाय महिला उत्थान, हरिजन

विमलता, विलक्षणता, विचक्षणता, एक धरोहर के रूप में जगमगा रही है। विशेष रूप से जहां तक देखने में यही आता है कि जब मनुष्य धन प्राप्त कर जाता है तो नशे में चूर होकर अहंकार की दुनिया में प्राय लिप्त रहता है। इस विभूति में ठीक इसके विपरीत सेवा सुश्रुषा इतनी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध है कि मानव की पीड़ा तो क्या किसी भी प्राणी की सेवा के लिए हृदय का प्रत्येक स्पंदन करुणामयी (धरा) बन जाता है। क्योंकि इस महान् विभूति ने भगवान महावीर के सिद्धान्तों का गहन मनन किया है जिसने मानव सेवा को तन, मन धन और जीवन अर्पण करने तक का धर्म बनाया है। ऐसी सेवाओं के अनेक कई ज्वलन्त उदाहरण हैं। इन्होंने इतना ही नहीं चरिन्दे परिन्दे, दरिन्दे व अनेक मूक प्राणियों को भी अभयदान दिलवाने का अदम्य साहस किया है।

उदाहरणार्थ—नगर निगमों के चंगुलों से (स्वानों को) मुक्ति तथा स्वानशाला निर्माण कराना, केन्द्रीय शासन द्वारा बनाये जाने वाले यन्त्रचालित वधशाला जो कि देवनार, बम्बई, दिल्ली उत्तरप्रदेश व बिहार में शासन निर्माणाधीन थे, उसका डटकर विरोध व बंद करवाने को प्रयासरत रहते हैं। लोकसभाध्यक्ष बलराम जाखड़, गृहमंत्री श्री प्रकाशचन्द्र सेठी और केन्द्रीय नेताओं को वधशाला का न बनवाने के ज्ञापन प्रस्तुत करने में अपना प्रभावशाली ढंग निरूपित किया है। समाज की असहाय और विधवा बहिनों के लिए कोष एकत्रण निरूद्योग युवा वर्ग के लिए उद्यम का प्रयास तथा उन्हें सेवारत करवाना, युवा पीढ़ी को आचरण की ओर आकर्षित करना। भूले भटकों को पथ-प्रदर्शन के लिए शास्त्रीय ढंग से सम्बोधन एवं स्नेह दिया है। यद्यपि व्यावहारिक दृष्टि से आप दिगम्बर जैन हैं लेकिन आपकी आत्मा में संकुचितता लेशमात्र भी नहीं है। आप क्या श्वेताम्बर, स्थानकवासी, तेरापंथी निस्तुतिक, खरतरगच्छ सब ही को एक महावीर संतान मानते हैं। इसी का मुख्य कारण है कि आपके अनेकों व्याख्यान जिनालयों, स्थानकों आदि में होते हैं। आप अपने आपको केवल जैन कहलाने में ही गर्वान्वित रखते हैं।

इन सारे कारणों से ही आपने इतनी अधिक लोकप्रियता अर्जित कर ली है कि आप लगभग 25 संस्थाओं में उच्च स्तरीय पदों पर पदासीन हैं। यहां तक कि 1–2 संस्थाओं के तो मैनेजिंग डायरेक्टर हैं। यहां यह भी उल्लेखनीय है कि आप अखिल भारतीय जैन मिशन के शीर्षस्थ नेता, श्रमण बेलगोला, बंगलोर बाहुबलि अभिषेक समिति में भी आपको सम्मानित किया गया।

भगवान् महावीर के 2500वें निर्वाण दिवस में भी आप राष्ट्रपति द्वारा प्रतिष्ठित हैं। सामूहिक महावीर जयन्ती, निर्माण कमेटी उज्जैन नगर के भी आप अभिन्न अंग हैं। प्रारम्भ से ही निर्भीक, कर्त्तव्यपरायण तथा प्रमुख

तौर से समन्वय वृत्ति के धनी है। सामाजिक और राजनतिक दृष्टि से भी आपका क्षेत्र सर्वोपरि गणमान्य हस्तियो मे रहा है। होलसेल क्लाथ मर्चेन्ट एसोसिएशन, श्री सूयसागर दि० जन उ० मा० विद्यालय ऐसी ऐसी अनगिनत क्षत्रो मे आपका बहुमान है। आपने महात्मा गाधी, पण्डित नेहरू, श्रीमती इन्दिरा गाधी के पदचिन्हो को आत्मसात किया ह एव राष्ट्र और दश के हित म अनेक बलिदान से भी नही हिचकिचाये है। आपने विश्व हिन्दू परिषद क उपाध्यक्ष पद को भी सुशोभित किया है। विश्वधम सम्मेलन के प्रवतक मुनि श्री सुशीलकुमार जी के कट्टर समथक रहे है। देश भर के अफसरो, मन्त्रियो और राजनायको से भी आत्मीयता के सम्बध हैं।

सभी लोग आपकी सादगी, सोम्यता से अत्यधिक प्रभावित है। आपके शब्द चयन मे बेजोड विशेषता है। शब्दो का कोई मोड इतनी चतुराई लिये होता है कि मुखारविन्द से निकला हुआ वाक्य सफलता के चरण चूमता है। आपका रहन-सहन बडा सादगीपूण यानी खादी वस्त्रो की भूषा है। प्रकृति प्रदत्त श्यामल वण, प्रसन्न मुद्रा, प्रस्फुटन, प्रत्येक से मिलनसारिता आदि आपके अनुपम गुण है। सबसे बडी बात यह है कि कोई साधु हो या आर्या, आचाय हो या शकराचाय, एक मतबा बिना मिले सेठी जी को चन नही पडता। आप श्री के पिछले 32 वर्षो से म सम्पक मे आता रहा हू। आपमे वही लगन व उत्साह सेवा के प्रति ज्यो का त्यो हैं। यद्यपि आपकी आयु 74 वर्ष की है परन्तु काय प्रणाली युवा ही है। आप बहुत अच्छे वक्ता के रूप म भी माने जात है। आपकी वाणी जिस समय निद्वन्द होकर झकझोरने लगती है, तब श्रोताओ को मानवीय चेतना का साक्षात्कार होने लगता है। आप व्याख्यान वाचस्पति की उपाधि से ग्वालियर मे विभूषित हुए है। आपके गुणो के वणन पर जितना भी लिखा जावे वह अपर्याप्त ही होगा। इतना ही लिखना पर्याप्त है कि आप विचारो मे अनेकान्त और आचार मे अहिंसा की प्रतिमूर्ति है। सेवा और सत्य साधना आपका मूल व्रत है। इसी कारण आपकी लोकप्रियता ख्यातिजन्य है। यह महान् प्रसन्नता का विषय है कि इस भारत भूमि मे ऐसे लाल हैं जो यथा नाम तथा गुण के धनी है। यदि आपके नाम का सन्धि विच्छेद किया जाये तो सत्य + अ ग्रर याने सत्य को ही जो निस्सकोच हृदयगम करे अथवा स्वीकार ले। अभिप्राय यही है कि सत्य है वह मेरा है। यही कारण है कि ऐसी महान् विभूति के अभिनदन पत्र पर हर्ष विभोर हूँ। भगवान् वीर से प्राथना है कि वे इन्हे शतायु करे तथा इनके माध्यम से ऐसा मागदशन अविरल मिलता रहे जिसे प्राप्त कर हम भी सेवाभाव के क्षेत्र म गति से प्रगति की दिशा की ओर अग्रसर हो सकें।

□ □ □

साधनारत व्यक्ति

श्री मांगीलाल जैन
उज्जैन

पंडित सत्यधर कुमार जी सेठी के व्यक्तित्व का परिचय मुझे पिछले 25–30 वर्षों से जन समाज में उनके साथ कार्य करते हुए हुआ।

पं० सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन करना भारत मा के एक निर्भीक वक्ता, सादगीपूर्ण जीवन के धनी, समाज-सुधारक, अपने विचारों पर अटल रहते एक समन्वयवादी तथा निरन्तर साधनारत व्यक्ति का अभिनन्दन होगा।

ऐसे कलम, वाणी और क्रिया के धनी के दीर्घ एवं मंगलमय जीवन की कामना करता हूं। साथ ही आप इस अभिनन्दन के पुनीत कार्य मे निर्दिष्ट बिन्दु तक पहुंचने मे सफल हो ऐसी कामना करता हूं।

□ □ □

धर्मपरायण

श्री मिलाप चन्द गोधा
मण्डा भीमसिंह

आपकी बाल्यकाल में ही धार्मिक प्रवृत्ति थी तथा धार्मिक किताबें पढने का बहुत शौक था। 16 वर्ष की अवस्था में ही आपने बड़े-बड़े ग्रन्थो का अध्ययन कर लिया था। आपकी भावना जन समाज के छात्रो को जैन शिक्षा प्राप्त कराने की रही। अतः आपने श्री पं० चांदमल जी काला पचार वालो से सम्बन्ध स्थापित कर किशनगढ (रैनवाल) में श्री महावीर दि० जैन विद्यालय और बोर्डिंग हाउस की भरसक कोशिश करके स्थापना करवाई जिसमे आस-पास के 25–30 ग्रामों के 250–300 छात्रो ने जैन धर्म की अच्छी शिक्षा प्राप्त की। आज वे ही छात्र अपने-अपने ग्रामो मे जैन जनता को सन्मार्ग बता रहे है। यह सब पं० श्री सत्यंधर कुमार जी की ही प्रेरणा का फल है। आपने जिन धर्मावलम्बियो को देव दर्शन शास्त्र स्वाध्याय का सदा ही सदुपदेश दिया। ऐसे सद्गुणी धार्मिक विचार वाले निर्भीक वक्ता का सभी समाज आदर करती है। आप वर्तमान में 25–30 संस्थाओ के कार्यभार, देख रेख कर रहे है। आपके त्याग एवं जीवन के बहुमूल्य आदर्शों एवं मान्यताओं की हम हृदय से प्रशंसा करते है तथा समाज सुधार एवं कुरीति निवारण की आपकी भावना बनी हुई है उसमे आपका सहयोग देंगे तथा आपके ही उत्तरोत्तर उन्नति एवं दीर्घायु की शुभकामना करते है।

श्री सेठी जी द्वारा किये गये कार्यों के प्रति आभार प्रदर्शित कर स्वस्थ परम्परा का निर्माण करें और समाज को उन्नति के शिखर पर पहुंचाने को स्व० पं० धनसुखदास जी के बताये हुए मार्ग का अवलोकन करते रहे, यही मेरी श्री वीर प्रभु से प्रार्थना है।

□ □ □

संस्कृति के रक्षक

समाजभूषण श्रीमिश्रीलाल पाटनी
कोषाध्यक्ष–अखिल जैन मिशन व
मन्त्री–सिद्धक्षेत्र सोनागिर कमेटी
लश्कर

श्री प० सत्यधर कुमार जी सेठी, उज्जैन निर्भीक प्रवक्ता, जैन सिद्धान्तो पर अटल, सादगी की मूर्ति, सुधारक वादी, विचारधारा के धनी, क्रान्तिकारी, धर्म वात्सल्य समाज प्रेमी को भारतवर्षीय जैन जैनेतर समाज मे चहु ओर के महानुभाव बहुतायत से जानते है। आप अनेक सस्थाओ के सरक्षक, सस्थापक, अध्यक्ष, उपाध्यक्ष, मन्त्री, सयोजक, जन्मदाता, सस्थापक एव सचालक, अनेक सस्थाओ के आजीवन सदस्य, कार्यकारिणी सदस्य, प्रचार मन्त्री, साधारण सदस्य, मैनेजिंग डायरेक्टर एव डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर, हिसाब निरीक्षक आदि अनेक पदो पर विभूषित रहकर अनेक जैन जैनेतर एव शासनिक तथा व्यवसायी सस्थाओ मे रहकर कार्य सम्पादन किया है व कर रहे है।

आपने मालवा प्रान्त के प्रसिद्ध नगर उज्जैन मे आकर निवास किया। वहा पर स्वदेशी हाथ का कता-बुना शुद्ध खादी कपडे का व्यवसाय किया। आपने महात्मा गाधी जी के साथ कुछ समय रहकर उनके शिक्षा व प्रवचनो का असर भी आप पर पडा। इसी दुकान पर अधिक होलसेल (थोक) मे गठानो का व्यापार बढ जाने से प्रसिद्धता होती देखकर विनोद मिल, उज्जैन व हुकमचन्द मिल, इन्दौर, एम्प्रेस मिल, नागपुर से वरिष्ठ एजेन्टो से प्रेम बढने पर उनके आग्रह करने से मिलो का माल भी गाठें मगाकर व्यवसाय करने लगे।

आप धनी-मानी श्रेणी के व्यवसायी विभूति होते हुए भी समाज सेवा अथवा सस्थाओ की मीटिंग मे, वह भादो मास के पर्यूषण पर्व मे स्थानीय नगर या बाहर से आमन्त्रित होने पर व्यापार की परवाह न करते हुए निजी खर्चे से वहा उपस्थित होते है। सस्थाओ की मीटिंग मे निर्भीकता, निस्प्रही होकर अपना मत देते थे। किसी प्रतिष्ठित या निर्धन की ओर झुकाव नही रखते थे। इस प्रकार कुशल सत्य वार्ताओ की तरफ दृष्टिगोचर करके अनेक सस्थाओ मे अपने कार्य हेतु किसी न किसी पद पर आग्रह करके सस्था मे लेते हैं। आपके आदत मे शुमार है कि जिस सस्था मे जिस पद का भार आप से लेते हैं,उसे तन-मन धन से पूर्ण करने के लक्ष्य मे रहते हैं, चाहे गृह व दुकान के कार्यो से कितना ही हर्जा होता है। उसकी आपने कभी परवाह नही की, आपमे यह खूबी होने से ही सस्थाओ ने आपको अनेक पद पर चुना है। आपने भी उन सस्थाओ को सफल बनाया।

मुनि भक्ति

जब-जब उज्जैन नगर मे निर्ग्रन्थ मुनि आर्यो का शुभागमन होता है, उनके स्वागत कमेटी समाज बनाती है तो आपको बुलाकर आपको उनका स्वागत

प्रबन्ध काय आपके ही द्वारा अधिकतर कराया जाता है। यू तो उनकी सेवा और आहार दान का अवसर भी प्राप्त होता है, जिनका स्वागत काय लगन से करने से जन त्यागीगणो से भी काफी परिचय हो गया है।

जन जनेतर सस्थायें व शासन काय सहयोगी भी रहे है। आपने अनेक सस्थाओ मे रहकर उत्तमोत्तम सेवायें करने से सस्थाओ की तरफ से आपको गोल्ड मैडल व सम्मान-पत्र व अभिनन्दन पत्र अनेक सस्था व जन समाज द्वारा भेट किय है।

समाज कुरूढियों के सुधारक—

आपने निवास पर व जहा भी समाज के आमन्त्रण पर गय वहा पर अनुचित रूढि प्रचलित मालूम होने पर वहा के समाज को प्रेमपूर्वक समझाकर उन रूढियो को बन्द कराने मे अग्रसर हुए है।

मूक पशुओ को जीवनदान दिलाया—

अनेक स्थानों पर धरना देकर साथियो के साथ जाकर देवियो पर मूक पशुओ की बली होने की रोक कराई है, जिससे मूक पशुओ को जीवनदान मिला।

सामाजिक प्रेमालाप कराने मे अग्रसर—

अनक स्थानो पर समाज मे किसी कारणवश पाटिया बनाकर द्व षता रही है, जिसके कारण धम साधनो मे बाधायें उत्पन्न होकर मनमुटाव हो रहे थे। उनको दूर कराकर एकता करा देते है।

अखिल विश्व जन की अनुपम सेवा—

आपको श्री कामता प्रसाद जी जन सस्थापक महोदय ने सन 1955 मे मालवा प्रात के उज्जन नगर की शाखा के सयोजक पद पर कायभार सोपा और अन्य स्थानो पर सस्था का प्रचार मन्त्री का काय सुपुद किया। सन् 1956 मे आप लश्कर मे जन मिशन सस्था की शाखा कायम करन पधारे। श्री दिगम्बर जैन मया मन्दिर मे प्रथम बार आपका भाषण हुआ। जन समाज काफी सख्या मे उपस्थित हुई, आपकी मधुर वाणी का समाज पर उत्तम प्रभाव पडा। आपने यह भी अपील की "मै जैन मिशन की ओर से लश्कर मे शाखा कायम करने को आया हू। यहा शाखा जैन मिशन कायम की जावे। इस काय मे जो नवयुवक भाग लेना चाहे, मेरे से वार्तालाप करें।" मिश्रीलाल जी पाटनी ने सस्था के नियम सम्बन्धी वार्तालाप की तो उन्होने जैन मिशन का सयोजक उन्हे बनाने के लिए आग्रह किया और मेरे सुपुर्द शाखा जैन मिशन का काय किया। तब से मेरा उनका सम्पक हुआ, जो निरतर वृद्धि होता रहा जो आज भी है। इस मिशन सस्था मे आज

एक कर्मठ कार्यकर्ता एवं संचालक, प्रचारक मालवा प्रांत के हैं। मैं कोषाध्यक्ष पद पर कार्य कर रहा हूं। इस कारण से भी इनसे मेरा अधिक परिचय व प्रेम है। आपकी वर्तमान आयु 74 वर्ष है तीन पुत्र व पाँच पुत्रियां हैं, आपको तीन शादियां हुई है, वर्तमान धर्मपत्नि बड़ी ही धार्मिक वात्सल्यता स्वभावी है, उनसे शादी होने के पश्चात ही आपका व्यवसाय कपड़ा वैभव मे अधिक वृद्धि हुई है, आपके सभी पुत्र आज्ञाकारी है। पुत्रिया भी विद्वान एवं सेवाभावी है, यह सब पंडितजी के निष्प्रियता से संस्था एवं समाज सेवा का प्रतिफल है। पंडितजी के कार्यकाल मे अखिल विश्व जैन मिशन का कार्य उनके परिश्रम से भली प्रकार से उत्तम चल रहा है और मिशन कार्य की तरक्की भी हुई है।

मैं पंडित सत्यधर कुमार जी सेठी के गुणों का कहां तक वर्णन करू, लेख अधिक बढ जाता है। पंडित जी यथा नाम तथा गुणी हैं मेरा अनुभव है कि धर्म प्रभाव से ही वर्तमान में सातो सुखो, उनको ही ऐसे महान् विभूति धार्मिक कर्मठ सेवाभावी सेठी जी का नेमीचन्द्र जी ने संयोजक द्वारा उज्जैन में अभिनन्दन ग्रंथ, कर संकलन करके समाज द्वारा भेंट किया जा रहा है, यह कार्य स्तुत्य है मैं अपनी ओर से शुभकामना भेजता हुआ पंडित सत्यधर कुमार जी व उनके समस्त परिवार को मैं दीर्घायु की जिनेन्द्र भगवान से प्रार्थना करता हूं।

आशा करता हूं कि भविष्य मे भी आप ऐसे ही समाज सेवा संस्थाओं की जब तक जीवित रहेंगे निरन्तर सेवायें करते रहेंगे।

पंडितजी के कृत एवं सुधारक विचार इस ग्रंथ मे प्रकाशन होने से भी नवयुवक पीढ़ी को अभिनन्दन ग्रंथ के पठन से व उनके विचारो से शिक्षा मिलेगी व यह ग्रंथ अति आवश्यक उपयोगी होगा।

□ □ □

प्रणेता

श्री मोहनलाल काला
अध्यक्ष-श्री दि जैन अतिशय क्षेत्र
श्री महावीरजी, जयपुर

मुझे यह जानकर बहुत ही प्रसन्नता हो रही है कि पं० सत्यधर कुमार जी सेठी की हीरक वर्ष मे अभिनन्दन किया जा रहा है। पं० सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा परिचय जब वे जयपुर में विराजते थे तब हुआ था। मैने पंडित जी को निर्भीक कार्यकर्ता, धार्मिक विचारो मे अटल समाज सुधारक व सदा जीवन के प्रणेता और जैन संग्रहालय के रूप में जाना है। उनके हृदय मे सभी के लिए प्रेम, भावुकता और स्वभाव में सरलता पाई। ऐसे व्यक्ति का जो दूसरो के लिए आदर्श हैं अभिनन्दन करना भी अभिनन्दनीय है। भगवान वीर प्रभु से प्रार्थना करता हूं कि उनको दीर्घ जीवी बनाये और अपने मार्ग पर अटल रहते हुए दिनो दिन उत्तरोत्तर बढते जायें।

□ □ □

सरल एव साहसी मानव

श्री मुन्नालाल पाटनी
उज्जैन

प० सत्यधर जी अपने आप मे एक कमठ कार्यकर्ता और समाज म व अन्य सस्थाओ म अमूल्य मार्गदान देकर निरन्तर सेवा म सलग्न रहते है, आप अपने विचारो के पक्के, लग्न व साहसी मानव है। जीवन म नि स्वार्थ सेवा करना ही आपने अपना लक्ष्य बना रक्खा है। ऐसे आदर्श व्यक्ति का सम्मान करने म, म आप महानुभावो के साथ हू तथा परम् पिता परमात्मा से प्रार्थना करता हू कि वह पडित जी को दीर्घायु करते हुए निरन्तर समाज व देश सेवा म उत्साहित रक्खे।

□ □ □

स्पष्टवक्ता

श्री मोहनलाल छाबडा
मत्री-दि जैन कन्या शाला विद्यालय,
मत्री व ट्रस्टी-श्री दि जैन मन्दिर
स्टेशन, रतलाम

आदरणीय प० श्री सत्यधर कुमार जी सेठी प्रसिद्ध धार्मिक एव समाजसेवी व्यक्ति है। आपसे मेरा परिचय 32 वर्ष पहले रतलाम म ही हुआ था। आप हमारे यहा खादी भण्डार खोलने के सम्बन्ध म पधारे थे, किन्तु वहा पर जम नही पाये।

आपकी स्पष्टवादिता से आप कुछ लोगो को कटु भी लगते है किन्तु आप तो अपने स्वभावानुसार स्पष्ट बोलने म अडिग ही रहते है। पिछले सन 1979 मे पर्युषण पर्व पर आप रतलाम मे प्रवचनार्थ पधारे थे, तब हमारे यहा मंदिर सम्बन्धी झगडे चल रहे थे (अभी भी है)। उसम प्रवचन समय व दूसरे समय जो लोग छोटे झगडालु है उन्हे खूब लताड देते व स्पष्ट बोलते थे कि दो चार पगडीधारी आगे बैठे है, इनके जितने पगडी म आटे है उससे ज्यादा इनके मन और दिमाग म आटे है।

इस प्रकार पडितजी स्पष्टता के कारण किसी के सामने किसी मूल्य पर झुकते नही, चाहे आपकी बात कोई माने या न माने।

अन्त मे पडितजी साहब के लिए अन्तरग भावना से हृदयाजलि अर्पित करता हू। आप दीर्घायु हो कि आप समाज एव धार्मिक कार्यो मे सलग्न रह कर कीर्तिमान स्थापित करें। इसी भावना के साथ विराम।

□ □ □

महान विभूति

श्री मोहनलाल जोशी
उज्जैन

ऐसे महान तपस्वी, चिन्तक एव साधक का अभिनन्दन कर हम भारतीय सस्कृति, विद्वत्ता, त्याग एव नि स्वार्थ सेवा के प्रतीक इन महापुरुष का अभिनन्दन कर रहे हैं। श्रद्धेय पडितजी जैसे महान् विभूति केवल अवन्तिका के ही गौरव पुरुष नही, अपितु समस्त भारत के महापुरुषों मे से हैं। उनकी

समर्पित भावपूर्ण सेवायें विश्व के समस्त प्राणी मात्र के कल्याण के लिए अविस्मरणीय है।

मैं परम् पिता परमात्मा से सच्चे हृदय से प्रार्थना करता हू कि हमारे प्रिय सेठीजी को दीर्घायुषी करे, जिससे वे समस्त प्राणीमात्र की अमूल्य एव अद्वितीय सेवायें सदैव अर्पित करते रहे।

मैं स्वय की ओर से एव हमारी सस्थाये—

(1) श्री वेद विचार समिति,

(2) विश्व शहीद दिवस,

(3) शहीद भगतसिंह मण्डल,

(4) महारानी लक्ष्मीवाई महिला कल्याण समिति की ओर से भी परम श्रद्धेय प० सत्यधर कुमार जी सेठी का हार्दिक अभिनदन करता हू।

□ □ □

सीधे साधे मनुष्य

श्री मौलाना मसूद अहमद
उज्जैन

मेरे जाने पहिचाने मित्र, शहर उज्जैन के निवासी सीधे साधे मनुष्य को लोगो ने पहिचाना और उनका सम्मान करना जरूरी समझा। म आपको और उन सबको मुबारकबाद देता हू जो मनुष्य को मनुष्य और कार्यकर्ता को कार्यकर्ता समझते है। मैं इस मामले मे हर तरह आपका साथी हू।

लोग सत्ता के पीछे चलते हैं और सत्ताधारियो का सम्मान आवश्यक मानते हैं किन्तु आपने सत्ता स दूर सीधे साधे लोगो की पहिचान और सम्मान का जो साहस दिखाया है उसकी म कद्र करता हू।

पण्डित जी जन समाज के नही है वह तो जैन समाज के उन सन्तो और पुरुषो मे से है जिन्होने दुनिया मे जैन समाज को ऊचाइया दी है। मैं उनकी लम्बी उम्र और स्वास्थ्य के लिए दुआ करता हू। वह हमारे साथ, हमारे आगे हमारे पीछे, हमारे दाये-बाये रहे। मित्रो की मित्रता बनी रहे, यही दुआ है।

□ □ □

सच्चे शुभ-चिन्तक

श्री रतन च द
ओसवाल, ...
न गवीर ट्रस्ट,
न ज बाबाद

वर्तमान म से असाधारण व्यक्तियो का होना और विद्यमान रहना वास्तव म ही आज के इस भौतिकवादी ससार मे परम आवश्यक है। पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी उन्ही प्रतिभाशाली व्यक्तियो मे स एक है। मिलन के सम्मेलना म समय-समय पर उनकी प्रखर प्रतिभा मुझे देखने को मिली और मिली साथ ही अपने साथियो के लिये समर्पित भावना। वे सच्चे माने म एक शुभ चिन्तक इन्सान है। उनके अभिनन्दन समारोह पर मेरी ओर से हार्दिक शुभ कामनायें है। वे दीर्घायु हो और जन दशन के मम को जन-जन तक पहुचाने मे सफल हो यह मरी कामना है।

☐ ☐ ☐

दृढनिश्चयी विद्वान

श्री रतन लाल गगवाल
ट्रस्टी-पुष्पदत च-द - ...
... कमल नाथ जैन सुरक्षा ट्रस्ट
बम्बई। दा ... स्मारक ट्रस्ट जयपुर,
श्री कुन्द कुन्द कहान सर्वोदय ट्रस्ट,
नई दिल्ली। कलकत्ता

श्रीमान सम्माननीय पण्डित सत्यधर कुमार जी साहब के अभिनन्दन का आयोजन कर आपने विद्वता के सम्मान का आयोजन किया है अत आप धन्यवाद के पात्र हैं।

श्रीमान पण्डित जी साहब मेरे तो बाल्यवय के शिक्षा गुरु रहे हुए हैं। मैंने उनसे प्रारम्भिक धम ज्ञान प्राप्त किया है अत मेरे ऊपर उनका बहुत आभार है। वे एक अत्यन्त निर्भीक स्पष्ट वक्ता एवम किसी प्रकार के भी दबाव म नही आकर अपने सिद्धान्तो पर जमे रहने वाल दृढ निश्चयी विद्वान् हैं। ऐसे विद्वान ही समाज का माग दशन कर सकने म समथ है।

मरी हार्दिक शुभ कामनायें है कि वे चिरायु होकर समाज का माग दशन करते रहे, भगवान् उन्हें स्वस्थ और चिरायु रख।

☐ ☐ ☐

निष्ठावान व्यक्तित्व

श्री रमेश कुमार
नई दिल्ली

इस भारत वसुन्धरा पर ऐसा कौन व्यक्ति होगा जिसने कि पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का नाम न सुना हो। पण्डित सत्यधर जी सेठी भारत मा के उन सपूतो म से हैं जिनका अधिकाश जीवन समाज म व्याप्त कुरीतियो को दूर करन व सामाजिक सुधार के लिए व्यतीत हुआ है।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सठी एक निर्भीक प्रवक्ता सादगी की मूर्ति, सुधार वादी विचारधारा क निर्माता हैं। उन्होंने सदा नि स्वाथ भाव से समाज की सवा की है। वे समाज क अन्दर फली हुई बुराइया का दूर करन मे सदा अग्रसर रहे है। श्री सठी जी ने इन बुराईयो का दृढता क साथ विरोध किया है। पण्डित जी कभी भी अपन निश्चय स विचलित नही हुए है। दूसरो का प्रभाव दबाव का आप पर कोई प्रभाव नही पडता। अपनी बात को दूसरा पर प्रभावपूर्ण ढग से समझान म आप एक कुशल व्यक्ति है। आप जसे

विद्वान् निष्ठावान व्यक्ति को पाकर दिगम्बर जन समाज अपने को आज गौरवान्वित महसूस करता है।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के इस प्रकार के सद्कार्यो को देखकर अनेक स्थाना पर यहा के समाज ने उनका अनेक शुभावसरो पर उनको सम्मानित किया है। श्री सेठी जी ने गाधी जी के आदर्शों पर चलकर सादा जीवन उच्च विचार के सिद्धात का प्रारम्भ से ही अनुसरण किया है।

ऐसे मद गुणी त्यागी, धार्मिक समाज, सुधारक पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी इसी प्रकार समाज मे व्याप्त कुरीतियो को दूर करने म समाज का मार्ग दर्शन करते रहे एव देवशास्त्र, गुरु की सेवा से विमुख व्यक्तियो को सन्मार्ग दिखाते रहे, एसी मेरी वीर प्रभु से प्रार्थना है।

गुणी

श्री रमेश चन्द जन

बिनना

अजमेर की जन विद्वत सगोष्ठी म भाग लेते हुए सर्वप्रथम उनके दर्शन करने का सौभाग्य हुआ। प्रत्यक विद्वान् की प्रतिस्थापनाओ पर अनेक प्रकार के प्रश्न करना, विद्वाना क श्रीमुख से उत्तर सुनना, अपने समाधान देना तथा अपनी मान्यता की सयुक्तिक पुष्टि करते हुए सरसता का वातावरण बनाए रखना, उनकी शली के अग थे। अजमेर के बाद सामाजिक प्रसगो मे अनेक बार उनसे मिलने का सुअवसर प्राप्त हुआ। उनम युवाओ जसा उत्साह है। समाज, धम एव राष्ट्र के लिए कुछ करने की भावना उनके अग अग म समाहित ह। विद्वानो के बीच वे विद्वान् तथा श्रेष्ठी वग के बीच मे वे श्रेष्ठी है। आर्थिक द ष्टि से निबल वग के प्रति उनके मन मे करुणा एव सहानुभूति है। जैन शोध और खोज के कार्यो को आगे बढाने हेतु उन्होने अथक प्रयास किया है। समाज के विविध मचो पर उनके निदेशन मे अनेक अच्छे काय सम्पन्न हुए हैं।

गुणी व्यक्ति के गुणो की प्रशसा करना तथा उनके प्रति कतज्ञता ज्ञापित करना हम सबका परम कतव्य है।

खुली किताब

श्री रमेश चन्द

कासलीवाल

युवा समाजसेवी
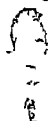
उज्जन

यो तो श्री पण्डित जी साहब करीब 34-35 वर्षों स उज्जैन जैन समाज एवम् अन्येतर समाज मे भली प्रकार से जाने जाते हैं। आपके द्वारा यहा कई ऐसे काय किये गये है जिनका कि वर्णन यहा नही किया जा सकता। फिर भी विशेष रूप से आपके द्वारा जन पुरातत्त्व सग्रहालय एवम् श्री सूय सागर दिगम्बर जन हायर सकेण्डरी स्कूल एवम् श्री ज्ञान सागर कन्या

विद्यालय आदि प्रत्यक्ष उदाहरण है। जिनके आप वर्तमान उपाध्यक्ष एवम मन्त्री के रूप मे हैं। अन्य कितनी ही सस्थाओ से आप सम्बन्धित है। श्री दिगम्बर जैन मन्दिर ट्रस्ट, नमक मण्डी उज्जैन के भी मन्त्री है।

श्री पण्डित जी साहब के पास मेरा विशेष रूप से आना जाना विगत 15 वर्षो से है। मैं जब भी पण्डित जी के पास किसी काय के लिये गया चाहे वह अपनी जन समाज का हो या अन्य किसी समाज का। उसको पण्डित जी साहब ने पूर्ण रूप से किया। चाहे उसमे कितनी ही कठिनाई आई हो या उस काय को किसी सरकारी महकमे मे करवाना हो तो उस काय को पण्डित जी साहब ने पूर्ण किया। पण्डित जी साहब के विशेष साथी स्वर्गीय श्री अनन्त राम जी वद को भी नही भूल सकते। पण्डित जी एवम् वद जी के बारे म तो कहा जाता था कि दो शरीर और मन एक है। ऐसा था पण्डित जी व वद जी का साथ।

मेरे पर तो दोनो जनो का विशेष मोह है एवम् मैं भी दोनो को उसी प्रकार पूज्यनीय मानता हू एवम आपके बताये हुये माग पर चलने का प्रयत्न करता हू। उनका कहना है कि कोई काय चाहे वह समाज का हो या स्वय का या अन्यत्र समाज का, सत्य के लिये किसी से डरो नही। सत्य क लिये हमेशा सघष करते रहो एवम् जिस काय को करने का बीडा उठाओ उसको पूण करो, साथ ही किसी से डरने की आवश्यकता नही। यह शरीर तो नाशवान है इससे कसा मोह। ऐसे निर्भीक वक्ता एवम प्रकाण्ड पण्डित के बारे मे जितना भी लिखा जाय थोडा है। अभी अभी दिनाक 15 माच, 1983 को हमारे यहा कपडा मार्केट के—थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति के 12 सचालकगणो का चुनाव हुआ जिसमे पण्डित जी साहब व मैं भी सचालक चुना गया। इम सचालको मे भी पण्डित जी साहब को सवसम्मति से अध्यक्ष बनाया गया जबकि आप नई दिल्ली मे उस विशाल बूचडखाने के विरोध मे लोकसभा के अध्यक्ष श्री बलराम जी जाखड को याचिका दे रहे थे।

म व्यक्तिगत अनुभव के आधार पर यह कहने मे जरा सा भी सकोच नही करता हू कि पण्डित जी साहब का समस्त जीवन एक ऐसी खुली किताब है जिसका हर एक पन्ना रचनात्मक कार्यो से भरा पडा है जो भी इनके सम्पक मे आता है उस पर पण्डित जी अपनी प्रगतिशील विचारधारा, योजनाबद्ध कायक्रम, अपूव कायक्षमता, सजीवता और सहृदयता की छाप छोड देते हैं। पण्डित जी साहब का स्पष्टवादी ओजस्वी वक्ता एवम् गम्भीर चिन्तन, व्याव हारिक समाज-सुधारक, दृढ निश्चयी व्यक्तित्व है इनका जीवन आदर्शोन्मुखी रहते हुए भी सदव विकासोन्मुखी रहा है।

आज के इस नाजुक दौर में जबकि स्वाथ प्रेरित समाज विरोधी विघटनकारी शक्तिया देश की स्थिति को अस्त-व्यस्त करने मे सलग्न हैं और हमारा युवा वर्ग एक ज्वालामुखी पर बठा है। ऐसी स्थिति मे काय करने की प्रेरणा मिलेगी, ऐसा मुझे पूण विश्वास है।

आपके जीवन की एक प्रमुख विशेषता यह रही है कि जीवन मे अत्यधिक व्यस्त रहते हुये प्रात सामयिक एवम व्यायाम करते है। आपकी सहृदयता व उदारता ने सभी लोगो को अभिभूत कर रखा है। अनेक व्यक्तियो को आपने सहयोग एवम् मार्ग दशन देकर उनके जीवन को उज्ज्वल किया है। आपके शान्त स्वभाव एवम मृदुल वाणी के हम सभी कायल है। आप उच्च कोटि के विचारक ही नही लेखक भी है। आपकी सजनात्मक प्रतिभा किसी से छिपी हुई नही है।

हमारे समाज का अहोभाग्य है कि हमे पण्डित जी साहब जसे महान् व्यक्ति का आशीर्वाद मिला। हम लोगो का मार्ग प्रशस्त किया। श्री पण्डित जी साहब का अभिनन्दन कर हम वास्तव मे जीवन के उच्च मूल्यो एवम् मानवीय आदर्शो के अस्तित्व मे अपनी आस्था प्रकट कर रहे है। ईश्वर से मेरी प्राथना है कि श्री पण्डित जी साहब को सदव स्वस्थ बनाये रखे तथा हम उनका मार्गदशन सदा की भाति मिलता रहे।

☐ ☐ ☐

शिल्पी

समाजरत्न प०
श्री राजकुमार
शास्त्री, सचालक
अ० विश्व जन मिशन
अध्यक्ष-श्री दि जैन
अतिशय क्षेत्र पद्मपुरा,
निवाई

सेठी जी पक्के आषमार्ग के अनुयायी हैं। लेकिन इस पवित्र मार्ग म विसग तिया उन्हें पसन्द नही हैं। इसलिये उन्हें उन्मूलन करने मे वे प्रयत्नशील रहते हैं ताकि पावन आषमार्ग पावन ही बना रहे। ऐसे हैं जन समाज के सपूत, राजस्थान निवासी और उज्जन नगरी के प्रवासी श्री सत्यधर कुमार जी सेठी। सेठी जी भारत स्तर की अनेक राष्ट्रीय, सामाजिक एवम् धार्मिक तथा शिक्षण सस्थाओ के पदाधिकारी, माननीय सदस्य है। सौजन्य सादगी और वात्सल्यता की सजीव मूर्ति है और जन मिशन के तो द ढ स्तम्भ और प्राण ही है। आपने साधारण स्थिति से उठकर अपने श्रम लगन व ईमानदारी के बल पर आज लक्षाधिपति बनकर जीवन को कहा से कहा तक पहु चा दिया है। अत आप जीवन शिल्पी भी हैं।

सभी वर्गो के साथ आपकी सहानुभूति और वात्सल्यता रही है। इसी से सभी वर्ग जन, हिन्दू और मुसलमान आपका हृदय से सम्मान करते ह। अत आप "लोकप्रिय नेता" भी हैं।

सेठी जी क्रान्तिकारी विचारो के प्रणेता और अपने सिद्धान्तो पर अटल रहने वाले दृढ निश्चयी, वीरव्रती महान व्यक्ति है।

भाषण देने की कला मे आपको महती प्रवीणता है। आप अपने विचारो को बड़े ही प्रभावकारी ढग स उपस्थित करते है कि सुनने वाले उन्हें शीघ्र ही हृदयगम कर लेते है और वे सदा के लिये आपके समथक बन जाते ह। इसी कला प्रवीणता से आपको मानद उपाधि "व्याख्यान वाचस्पति" से सम्मानित किया गया है।

सेठी जी और जैन मिशन

सेठी जी मे सर्वोदयी जैन धम के प्रचार प्रसार की प्रबल भावना है और अखिल विश्व जन मिशन सस्था का भी यही प्रमुख उद्देश्य है। इसी कारण आपका अखिल विश्व जन मिशन से आज 34 वष से अटूट सम्बन्ध चला आ रहा है।

अखिल विश्व जन मिशन दिखावा, प्रोपेगण्डा, ख्याति प्राप्ति की आकाक्षा और सभी प्रकार के विवादो से दूर रहकर जैन धम उसके प्रमुख सिद्धान्त, अहिसा के प्रचार प्रसार मे निरन्तर सलग्न रहता है। यही कारण है जिससे महामना सेठी जी मिशन से अत्यन्त प्रभावित हैं। जन मिशन के दूरा तिदूर होने वाले सभी अधिवेशनो में, मीटिगो और सगोष्ठियो म आप अवश्य सम्मिलित होते है और माग दशन भी देते है। जन मिशन आपका अत्यन्त आभारी है। अखिल विश्व जन मिशन परिवार की भावना है कि आप सदैव सपरिवार सुखी, स्वस्थ व समृद्धशाली हो और चिरायु हो ताकि चिरकाल तक हमारे बीच मे रहें।

□ □ □

कुन्दन
श्री राजकुमार जैन
कोषाध्यक्ष
श्री महावीर दि जैन
मन्दिर, मक्सी रोड
उज्जैन
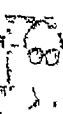
भारत मा के अनमोल रत्न समाज के निर्भीक केशरी माननीय पडित सत्यधर कुमार जी सेठी हमारे राष्ट्र की शान है। अपना सारा जीवन जिन्होंने मानव जीवन के सत्य सकल्पो को साकार करने मे लगा दिया है एव सत्यव्रत स्वीकार किया है, ऐसे महान् पुरुष के जीवन की हीरक जयन्ती वष की पावन वेला म उनका कोटिश वन्दन एवं शुभ कामनायें। पूज्यनीय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के तेजस्वी जीवन चरित्र पर कुछ लिखने मे यह लेखनी असमथ है। इस महान व्यक्ति के विषय मे कुछ कहना सूरज को दीप दिखाने के समान है।

पण्डित जी साहब का बाल्यकाल अत्यन्त दु खमय बीता। पाच वष की

मासूम अवस्था मे ही पिताश्री का बिछोह होने से आपके कोमल मन को बहुत आघात पहुचा। परन्तु धन्य है आपकी मातु श्री जिन्होने दोनो पहलुओ को सम्भालकर आपके मासूम मन को हिम्मत प्रदान की, एव आपकी शिक्षा दीक्षा का सारा काय सम्भाल कर आपको अध्ययन हेतु भेज दिया। कुशाग्र बुद्धि होने के कारण आपने 16 वष की छोटी सी उम्र मे ही अनेक धार्मिक ग्रथो का अध्ययन कर लिया। जिस प्रकार कुन्दन जितना अग्नि मे पकाया जाता है, उतना ही चमक को प्राप्त होता है। उसी प्रकार आप भी शैशव काल से कठिनाइयो से जूझने के कारण दिन दूने रात चौगुने प्रकाशवान होते गये। मा सरस्वती की भी आप पर असीम कृपा हुई एव आपने महान ग्रंथो का पूणरूपेण अध्ययन एव मनन किया और अपने जीवन मे उतार लिया। अपने गुरुदेव के क्रान्तिकारी एव सुधारवादी विचारो का आप पर पूर्णतया असर पडा और आप भी उन्ही के पद चिन्हो का अनुसरण करने लगे।

आप परिस्थितियो से टक्कर लेने को जूझ पडते है। सदैव आपने राष्ट्रीय, सामाजिक एव धार्मिक कार्यों के झगडो को शान्तिपूवक निवटाया है एव समाज की पूणरूपण सेवा की है। अपना पूरा जीवन आपने समाज सुधार के लिये अपण कर दिया है। सादा जीवन एव उच्च विचार आपके जीवन के मुख्य अग है।

चाहे आप साधारण परिस्थिति मे रहे या चाहे आप आज लक्षाधिपति हैं, पर आपके जीवन का स्तर हमेशा महात्मा गाधी के समान साधारण रहा। नियमित काय, नियमित भोजन एव जन धम के मुख्य सिद्धान्तो देवदर्शन, रात्रि भोजन त्याग, पानी छान कर पीना इनका कट्टरता से पालन करते है, एव अपने परिवार को भी कट्टरता से पालन करने का आदेश देते हैं।

पण्डित जी के भाषणो का ओजस्वी प्रभाव सभी समाज पर स्पष्ट दिखाई पडता है। उज्जयिनी मे सभी धर्मावलम्बी आपका अत्यन्त आदर करते है। आपकी सतत् प्ररणा से यहा सगठित युवक मण्डल तयार हुआ व आपके आदेशानुसार समय-समय पर वे लोग धार्मिक कायक्रमा का आयोजन करते रहते है। चाहे महावीर जयन्ती हो चाहे पयू पण या चाहे शरद पूर्णिमा पडित जी साहब के ही परिश्रम से निर्विघ्न पूर्ण होते हैं। आप ही इन सब कार्यो मे अग्रणी रहते हैं। इसी कारण आप उज्जन जन समाज व युवक मण्डल द्वारा मम्मानित भी किये गये। विरोधो के बावजूद भी आप दढ निश्चयी व स्पष्टवादिता के कारण जीवन मे आगे बढते गये।

छोटी सी घटना है। कुछ समय पूव आपके गल मे तकलीफ हुई व डा० ने

आपको आराम करने का आदेश दिया। आपरेशन के बाद आपको बोलना मना था व आपको बोलने में तकलीफ भी होती थी, फिर भी आप लिख लिखकर प्रत्येक समस्या का समाधान करते थे। आपके सरल स्वभाव के कारण ही प्रत्येक व्यक्ति चाहे बालक हो या युवा, स्त्री हो या पुरुष, अपनी समस्याओं का समाधान कराने के लिये आते हैं व आप प्रेम पूर्वक उन्हें उचित मार्गदर्शन भी देते हैं।

अवन्तिका के उत्थान के लिये आपने अनेक कार्य किये। जयसिंहपुरा में जैन संग्रहालय बनवाया, यूनिवर्सिटी में जैन धर्म पढ़ाने का प्रपोजल पास करवाया जैन स्कूल व पाठशाला आदि सुचारु रूप से चलवाई आदि अनेक काम आपने किये। अनेक स्थानों से आपको प्रवचन के लिये बुलाया जाता है व आप वहां निःशुल्क जाकर सेवा करते हैं।

ऐसे गुणवान, ओजस्वी, विद्वान्, धार्मिक, कट्टर एवं समाज सुधारक पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी युग-युग तक चिरायु रहें व हम सबको दिशा बोध कराते रहें। ऐसी इस आपके हीरक जयन्ती के पावन अवसर पर हम श्री महावीर दिगम्बर जैन मन्दिर लक्ष्मी नगर समाज उज्जैन से आपका अभिनन्दन करते हैं।

□ □ □

अनुशासन प्रिय

श्रीमती राजकुमारी ठोलिया
सुप्रसिद्ध समाजसेवी
उज्जैन

जैसे ही मुझे पत्र मिला कि पंडित सत्यंधर जी सेठी के बारे में अपने संस्मरण लिखूं। विचारों के आकाश पर स्मृति की पुरवाईयां चलते, जाने कितनी घटनायें, कितने दृश्य—आंखों के सामने आ गये। इन्हें इतना देखा है समझा है, जाना है, पहचाना है, परखा है कि यदि मैं सब लिख दूं तो शायद अभिनन्दन ग्रंथ, मेरे श्रद्धा सुमनों का ही रह जावे। मस्तिष्क में हजारों बातें—याद गड्ड-मड्ड हो रही हैं। सूझ नहीं पड़ रहा है कि कौन सी चुन कर लिखूं और कौन सी छोड़ूं। पर फिर भी कोशिश करके, उनमें से कुछ निकाल कर उनके व्यक्तित्व की झलक दिखाने का अल्प प्रयास कर रही हूं।

ये उज्जैन आने पर मेरे पिता—प्रसिद्ध उद्योगपति राय बहादुर स्व० सेठ लालचन्द जी सेठी से मिले। मेरे पिताजी में, छुपी प्रतिभा पहचानने का गुण था, इसलिये उन्होंने इन्हें सभी प्रकार का सहयोग दिया। तब ही से मेरा और इनका सम्पर्क हुआ, जो आज तक है।

स्मृतियों के झरोखे से मैं कई दृश्य देख पा रहा हूं। मुझे स्पष्ट दिख रहा

है—इनकी निर्भीकता, स्पष्टवादिता, कर्मठता अनुशासनप्रियता, सहृदयता हर एक मदद करने की प्रकृति, लगन, निष्ठा एव धार्मिक भावनाये, कट्टरता समाज सुधारक, प्रतिउत्पन्नमति आदि।

तब मैं उज्जैन म, सवजाति महिला मण्डल चलाती थी। मैं इसकी 27 व अध्यक्षा रही। यह सस्था सभी प्रकार की जनसेवा करती रही—गृह उद्योग, कुटीर उद्योग, शिशु विहार, प्रौढ कक्षायें, नृत्य-गायन-सगीत कक्षायें, कसीदा कक्षायें, पुस्तकालय, मनोरजन गृह आदि सुचारु रूप से चलाती रही। इनके उत्थान व। श्रेय पण्डित सेठी जी को भी जाता है। इनसे गम्भीर, गर्मागर्म चर्चाएँ, आलोचनाएं, बहस भी यदा कदा होती थी। जिससे हमारे बीच कभी कटुता नही आई, बल्कि इनकी साफगोई की आदत के कारण, स्नेह बढता ही गया। ये चर्चाएँ, मुझे उचित और उत्तम मार्ग खोजने के लिए प्रेरित करती थी और साथ ही साथ पण्डित जी सेठी का सहयोग तो मिलता ही था।

अनेक में से एक स्मृति ऐसी है जो इनकी कर्मठता का शाश्वत प्रमाण है। जैन समाज के एक कार्यक्रम में हल्की वर्षा हो रही थी। इन्तजाम करने वाले जैनी स्वय सेवक कभी दिखते थे, कभी ओझल हो जाते थे। मने प० सेठी जी को यह लुका छिपी बतलाई। सारा कार्य, देखरेख, वे स्वय भीगते हुए, चुपचाप करने लग गये। कुछ समय बाद समस्त स्वय सेवक गर्दन नीची कार्य करते दिखाई पडने लगे, पर प० सेठी जी कार्य करते रहे भीगते रहे, जब तक कि कार्यक्रम पूर्ण नही हो गया। यह छोटी सी झलक है लगन और कर्मठता की। केवल पण्डित सेठी जी की सूझबूझ, तुरन्त निर्णय और कर्मठता से ऐसे कई कार्यक्रम असफल होते होते, सफल हो जाते थे और सभी चकित से देखते रह जाते थे कि यह किस प्रकार सफल हो गया?

अनुशासन और व्यवस्था को मद्दे नजर रखते हुए पण्डित सेठी जी कभी भी, किसी को भी, कुछ भी कह देते थे। इन्होने कभी यह ध्यान नही दिया कि वे उचित मौके पर कह रहे हैं या अनुचित मौके पर, धनवान से कह रहे है या साधारण से, बड़े से कह रहे हैं या छोटे से, पुरुष से कह रहे है या स्त्री से। यह व्यवहार अपरिचितो को तो खलता ही था, पर धीरे धीरे सब इनकी प्रकृति और नेक आशय समझने लग गये। इनके इस गुण के कारण, इनकी उपस्थिति से ही कई अनापेक्षित व्यवहार समाप्त हो जाते थे और कार्यक्रम सफल हो जाते थे।

इन्होने कभी यह नही चाहा कि केवल इनकी ही स्तुतिमान हुआ करे। कार्य

समता के अनुसार सबको आगे आने का मौका देते रहे हैं। श्री एलक पन्ना लाल दिगम्बर जैन स्वाध्याय मन्दिर को मैंने, मेरे संग्रह में से कुछ अलभ्य ग्रन्थ, अप्राप्य पुस्तकें आदि भेंट की। समारोह में इस दान तथा सहयोग का, किसी ने भी साधुवाद नहीं किया। पण्डित सेठी जी को यह नागवार लगा और उन्होंने जोरदार शब्दों में साधुवाद की झड़ी लगा दी (जो मेरे विचार से अति ही थी।) यह पण्डित सेठी के मन की सहजता, सहृदयता और महानता थी जो उमड़ पड़ी, और वे अपने आपको नहीं रोक पाए।

हरिजन प्रवेश को लेकर, उज्जैन के समस्त मन्दिरों में ताले लग गए थे। मेरे पिता श्री ने अपने चैत्यालय में हरिजन प्रवेश करवा कर जैन समाज का संकट समाप्त किया। हरिजनों को मांस और मदिरा त्याग के सौगंध मैंने करवाए। इस प्रकरण की सब दबे छुपे मिश्रित प्रतिक्रियायें करते रहे, किन्तु पं० सेठी जी ने ससाहस इसे सराहा।

मैं नि संकोच कह सकती हूं कि उज्जैन जैसी छोटी नगरी में जो वातावरण, निर्मल विचारधारा, संगठन आदि है वह पं० सेठी जी की ही देन है, व अपने आप में एक मिसाल है।

मेरी हार्दिक इच्छा है और श्री जिनेन्द्र प्रभु से प्रार्थना है कि पण्डित सेठी जी का सादगी पूर्ण, संघर्षमय और कर्मठ जीवन शतायु होने पर भी एक बड़ा अभिनन्दन समारोह होवे और इनके गौरव के अनुरूप ही अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित होवे।

अनेक शुभ कामनायें एवम् दीर्घायु की हार्दिक एवम आत्मिक सद्भावना युक्त श्रद्धा सहित—

□ □ □

कुशाग्र बुद्धि के धनी

श्री राजकुमार ढोलिया
माननीय उपनिदेशक म प्र नाटक लोककला अकादमी, संचालक—दुर्गा प्रसाद कत्थक केन्द्र एवं कालूराम लोककला केन्द्र, उज्जैन

जैसे ही मुझे मालूम पड़ा कि पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी सा० के हीरक जयन्ती वर्ष पर अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है, मैंने महसूस किया कि एक तो मेरा कर्त्तव्य है कि मैं श्रद्धा सुमन पहुंचाऊं और दूसरे जिस पक्ष पर मैं लिख रहा हूं शायद अन्य वह पक्ष न चुने।

बचपन से ही पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी साहब को घर पू० नाना सा० (स्वर्गीय सेठ लालचन्द जी सेठी साहब) और पू० मामी सा० (श्रीमती तेज कुमारी देवी सेठी सा०) के पास आते देखा। तब ही से इनकी तेज वाणी सुनने की आदत हो गई। मन्दिर, सभाओं और समारोहों में इनके ओजस्वी

भ्रौर क्रान्तिकारी भाषण सुने। इसके पूव कभी इस प्रकार के आन्दोलित विचार, उज्जैन जैन समाज मे सुनने को नही मिले। मेरे बाल मस्तिष्क मे, प० सेठी जी की छवि की, यह पहली छाप थी।

पण्डित सेठी जी की यह प्रवृत्ति मुझे बहुत करीब से देखने को मिली कि वे विविध विषया मे जानकारी रखने वाले विभिन्न व्यक्तियो को बढावा देते रहे, सहयोग देते रहे है। उन्होने इस स्वस्थ परम्परा को बढाया कि समाज का प्रत्येक व्यक्ति अपनी जिम्मेदारी समझे और काय करे। युवा वग और युवा रगकर्मी को भ्रागे बढान का आव्हान आप करते ही रहे हैं।

सगीत—जिसम गायन, वादन, नृत्य भ्रौर नाटय भ्रादि शामिल हैं—जैन धम के दर्शन और सिद्धान्तो स एकदम भि न विषय है। कई स्थानो पर तो इसे उच्चकम की श्रेणी भी नहीं दी जाती है। मैं विगत 29 वर्षों से कला कामगार हू। अत मने यह पाया कि पण्डित सेठी जी ने सीमित साधनो मे भी कला को सवारा और सजाया है। जैन समाज मे कला को पल्लवित होने के भ्रवसर दिये है। यह बहुत ही हिम्मत, चेतना और सतकता एवम् समाज सुधार की बात है।

उज्जैन जैसे छोटे शहर में भी समय-समय पर विभिन्न मन्दिरों के समारोहों में संगीत प्रतियोगितायें, नृत्य और नाटय के प्रदशन होते रहे है। युवा रग कर्मियो की पीठ पर हमेशा पण्डित सेठी जी का हाथ रहा है। हाथ कगन को भ्रारसी क्या? अन्यथा इतने रगकर्मी उज्जन जन समाज को कहा से मिल पाते?

युवा रगकर्मी ही नही, जैन समाज के कलाकार ही नही, वरन् भारत के समस्त नागरिक, पण्डित सेठी जी के चिर ऋणी रहेंगे, जिन्होने सास्कृतिक जगत—जो कि हमारी सस्कृति की रीढ है—को भ्राश्रय ही नही दिया, उसे एक ऊ चाई भी दी है।

ऐसे महान्, सादगीपूर्ण, सुधारवादी, निर्भीक प्रवक्ता, धर्मनिष्ठ, कमठ काय कर्ता और कुशाग्र बुद्धि के धनी—प० सेठी जी के लिए ईश्वर से एक ही स्वाथपूण प्राथना है कि इनका वरदहस्त रगमच को हमेशा मिलता रहे, ताकि केवल हम मुट्ठी भर रगकर्मी ही नही, वल्कि पूरा भारतवप जियो और जीने दो की वहार से झूमता रहे। शत-शत नमन सहित।

☐ ☐ ☐

उत्कृष्ठ लगन वाले

श्री राजमल पचया
भोपाल

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी जन समाज के उन विद्वान कर्मयोगी पुरुषो म है जो सतत समाज कल्याण के कार्यों के लिए निष्कपट भाव से समर्पित है। कोई भी क्षेत्र उनकी सेवाओ से अछूता नही है। उज्जैन मे सन 1946 म सर सेठ भागचन्द जी की अध्यक्षता म होने वाले महासभा के अधिवेशन के समय उनकी कार्यक्षमता एव समाज सुधार की उत्कृष्ट लगन से मैं विशेष प्रभावित हुआ था। अखिल विश्व जन मिशन के भोपाल अधिवेशन मे उनको प्रतिभा के पुन दर्शन हुए। पच्चीस सौवा महावीर निर्वाण महोत्सव पर धम चक्र प्रवतन के दौरान सेठी जी से निकट का सम्पर्क हुआ।

उस समय विक्रम विश्वविद्यालय मे जन चयर की स्थापना के लिए सेठी जी विशेष प्रयत्नशील थे। अनेक धार्मिक, सामाजिक, शिक्षण सस्थाओ की स्थापना का सेठी जी को श्रेय प्राप्त है। उज्जैन का जन पुरातत्व सग्रहालय आपकी अनूठी सूझबूझ एव सक्रिय श्रम का सर्वोत्तम प्रतीक है।

उनकी दक्षता, कायपद्धति, इस वृद्धावस्था म भी युवकोचित साहस, समाज सेवी की तड़प किसी भी कायकर्ता के लिए ईर्ष्या की वस्तु हो सकती है। जिस काय को हाथ मे लेते हैं उसे सफलता की मजिल तक पहुचाए बिना चैन नही लेते।

आज भी उनमे वही दम खम विद्यमान है जो किसी जमाने म जन समाज के दसा पूर्णाधिकार लोहड साजन वडसाजन, अन्तर्जातीय विवाह चर्चा, सामज बहिष्कार, मृतक भोज आदि आन्दोलनो के समक्ष था।

आपकी विचारधारा क्रान्तिकारी रही है। आज भी आप जागति के क्षत्र में अपनी सेवा और श्रम से युवको को प्रेरणा दे रहे है। मैं उनकी दीर्घायु की कामना करता हुआ इस शुभ अवसर पर हृदय से आप जसे कर्मयोगी का सादर अभिनन्दन करता हू।

☐ ☐ ☐

अनुकरणीय

श्री रामचन्द्र गुप्ता
सचिव—श्री चकनीय सहायक एवम पारमार्थिक न्यास, उज्जैन

पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा परिचय लगभग 25 वर्षों से है। इस अवधि मे निरन्तर पण्डित जी के सानिध्य मे सावजनिक, धार्मिक राजनतिक एवम् शक्षणिक गतिविधियो मे भाग लेने का अवसर प्राप्त होता रहा है। पण्डित जी की निर्भयता, जीवन की सादगी मिलनसारिता, सभी धर्मो का गम्भीर अध्ययन एवम सिद्धान्तो का दृढ़ता से पालन से मैं अत्यधिक प्रभावित रहा हू।

वर्तमान समय मे व्यापार मे नैतिकता का लोप हो गया है, परन्तु पण्डितजी ने व्यापार एव जीवन मे नैतिकता को सर्वोच्च स्थान देकर आदर्श उपस्थित किया है।

पण्डित जी केवल जैन धर्म के ही पण्डित नही है, सभी धर्मो का उनका अध्ययन एव विवेचन अनुकरणीय है। जैन धर्म के प्रमुख सिद्धान्त "अपरिग्रह एव अहिंसा" का पालन पण्डितजी ने जीवन मे जिस दृढता से किया है, वह विरला व्यक्ति ही कर सकता है।

चरित्र के धनी, जैन धर्म के प्रकाण्ड पण्डित, सर्वधर्म समभावी, देशहित सर्वस्व त्याग करने को तत्पर एव सिद्धान्त प्रेमी पण्डितजी शतायु हो, यही प्रभु से प्रार्थना है।

□ □ □

सादा जीवन उच्च विचार की प्रतिमूर्ति

श्री रामविलास पोरवाल
मन्त्री—मध्य प्रदेश सर्वोदय मण्डल, भोपाल

मेरा प० सत्यधर जी सेठी से पिछले तीन-चार वर्षों से निकट का परिचय आया। यो म 10 वर्षो से इन्हे सामान्य कपडे के व्यापारी के रूप मे ही देखता रहा। उनके कई निकट के मित्रो ने मुझे प्रेरित किया कि "पडितजी केवल कपडे के व्यापारी ही नही है—महात्मा गाधी एव सर्वोदय विचार क अनुसार अपना जीवन भी जी रहे है।" आपसे निकट सम्पर्क करना चाहिये। 2 अक्टूबर को 'देश मे लोकतन्त्र की शुद्धि" के निमित्त आयोजित 24 घण्टे के उपवास कार्यक्रम मे पडित जी भी शरीक हुए। उस अवसर पर उनके विचारो को सुनने का मौका मिला। सादी पोशाक, धोती कुरता, लेकिन उच्च विचारो क धनी भी है, यह जानकर म कृत कृत्य हुआ। निकट आने का सिलसिला प्रारम्भ हो गया। कई छोटे-बडे कार्यक्रमो म आते रहे। परिवार से भी सम्पर्क बढा। बच्चे भी उतने ही धीर, गम्भीर एव सुशील। पिता की परम्परा को व्यापार मे भी दाखिल किया है।

सुनता रहा कि पडितजी बडे ही निर्भीक, साहसी व निश्चय क मापदण्ड है। उज्जैन नगर म अखिल भारतीय सर्वोदय समाज का 24वा सम्मेलन 15, 16 व 17 मई 1982 को करने का निश्चय किया गया। उज्जैन नगर म सर्वोदय सम्मेलन हो और पडितजी का सक्रिय योगदान नही मिले यह कैसे हो सकता है। सम्मेलन की स्वागत समिति गठित की गई। वरिष्ठ स्वागताध्यक्ष आपको बनाया गया।

आपने कार्यकारी स्वागताध्यक्ष का कार्य सभाला और सम्मेलन की समाप्ति तक पूरी शक्ति से जुटे रहे। निश्चय के धनी है, उसका प्रमाण हम मिला।

उनका मानना है कि गांधी एवं सर्वोदय विचार ने ही देश और दुनिया में सत्य, अहिंसा को सामाजिक मूल्य प्रदान किया है। सर्वोदय के अनेक उपकार देश और समाज पर हैं इसलिए आज भी और आगे भी वे सर्वोदय विचार धारा को फैलाने वाले कार्यकर्ताओं को पूरा-पूरा सक्रिय सहयोग करते रहेंगे ऐसा उनका दृढ़ निश्चय है।

मैंने खूब नजदीक से पंडित जी को देखा व समझा है। कई संस्थाओं को एक साथ थोड़े समय में अनेक व्यस्तताओं के होते हुए कुशल संचालक की भांति कार्य करते रहते हैं। आलस्य एवम् प्रमाद तो पंडित जी के मारे परेशान रहते हैं। अखिल भारतीय स्तर की अनेक धार्मिक, सामाजिक तथा रचनात्मक संस्थाओं के पदाधिकारी एवम् ट्रस्टी होते हुए भी अहंकार छू तक भी नहीं गया है। पंडित जी जैसे एकरस जीवन जीने वाले जैसे बोल वैसे चले—किंचित ही देखने को मिलते हैं। मुझे यह जानकर अत्यधिक प्रसन्नता हुई कि पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी जैसे निर्भीक, संकल्पों के धनी, सत्यग्राही, सादगी की प्रतिमूर्ति का अभिनन्दन करने का निश्चय समाज द्वारा किया गया है, सर्वथा योग्य, सराहनीय एवम् समयानुकूल है। इस अवसर पर मैं मध्यप्रदेश सर्वोदय मण्डल की ओर से पंडित जी के दीर्घायु होने की आंतरिक शुभ कामनाएं प्रेषित करता हूं।

□ □ □

अग्रणी

श्री राजेन्द्र कुमार जैन

अध्यक्ष-श्रावक दानवीर सेठ सिताबचन्द लक्ष्मीचन्द जैन पारमार्थिक संस्था नथमलजी जैन महाविद्यालय मध्य प्रदेश विदिशा

उज्जैन हमारे क्षेत्र का नगर होने से पंडित जी से भेंट प्रसंग मिलता रहता है। समाज की गतिविधियों के साथ रचनात्मक प्रवृत्तियों में भी सेठी जी अग्रणी रहते हैं। हमारे हमेशा शुभ रहे हैं। उनकी सेवाओं का प्रारूप न तो ग्रन्थ हो सकता और न ही कोई अन्य। आज भी उज्जैन में उनकी मौलिक सूझबूझ उनकी स्थापित संस्थाओं में परिलक्षित होती है। वे चिरायु हों। सफलता की हृदय से अभिलाषी हैं।

□ □ □

सुधारवादी

श्री लक्ष्मीदत्त चतुर्वेदी

[illegible]

सेवाभावी एवम् राष्ट्रीय बनावट के बीच निर्भीक सुधारवादी व्यक्ति विरले ही मिलते हैं, क्योंकि सेवा और राष्ट्रीयता दोनों कार्यों में स्वार्थ का मोहक स्वरूप वरण कर लिया है।

जहां सेवा के फलस्वरूप मतदान की भिक्षा राष्ट्रीयता का कवच पहिने प्रति द्वार-द्वार घूम रही है वहां सुधारवादी के संकल्प या निर्भीक ममता के उद्गार तो कुण्ठित होना ही है, परन्तु इस पेचीदगी की पगडंडी के बाहर ये सत्यंधर जी का व्यक्तित्व है।

जैसे ही आप राजस्थान निवासी होकर उज्जन मे एक राष्ट्रीय चेतना के सरल चित्र खादी की दुकान पर राजस्थानी खादी के सामान्य व्यवसायी के रूप मे खादी प्रेमी होकर मुझसे मिले, म धीरे धीरे इनकी वाणी विन्यास से इनके निकट-निकट होता गया। महात्मा तुलसीदास जी के शब्दो मे "स्वाथ लागी करत सब प्रीति, भय बिना करहु न कोई प्रीति" तथव स्वाथ व भय से मुक्त जो कुछ परहित होता है उसे ही सेवा कही जा सकती है। इसी प्रकार मानव समाज की सेवा के लिए उस समय तरुणाई काल मे आप लालायित रहे।

गरीब दरिद्र नारायण की सेवा के लिये आपकी कितनी ही भावना रही होगी, परन्तु उज्जन के जन समाज मे आपकी वेझिझक अपने अभिमत की अभिव्यक्ति की मुखरित प्रतिभा आपमे पाई तो यहा के जन समाज ने अपने आकषण के मोह मे थाम लिया, जिससे इनके द्वारा यहा के जन समाज की रिक्तता की पूर्ति होती रही। नारगी मे चाहे उसके भीतर कितनी ही चीरें हो लेकिन बाहर से एक सुन्दर रगीन फल जैसे, आपने यहा के जन समाज को सगठित किया। आपकी उज्जन, जयपुर, कलकत्ता, देहली आदि अन्य जन स्थानो म समर्पित भावनाओ ने कई सस्थाओ को जन्म दिया, नवजीवन दिया एवम प्रोत्साहित किया। आज भी आप अनेक सस्थाओ का सचालन भार वहन किये हुए है। यद्यपि आप म मितव्ययता के विशेष गुण रहे है।

जब गौवध के प्रति सारे देश मे एक व्यापक असतोष का वातावरण फला हुआ था उसी समय आपने अपनी दुकान पर जो उस समय आप खादी से हटकर सभी सूती वस्त्रो का व्यवसाय कर रहे थे। गौवध की समस्या का दुरुह उपाय समझकर सूती वस्त्रो के व्यवसाय के साथ-साथ चम रहित जूतो को अपनी दुकान पर बेचना अपनी सामाजिक कतव्यनिष्ठा का विरल परिचय दिया। एक उदाहरण है —

आप एक बार मुझसे बोल दिये कि हमारे जन समाज म स्वण पहिने हुई नारिया नही होती तो हमारा समाज घर की बाइयो को तुच्छ व हेय की दृष्टि से देखता है। यह सामान्य स्वाभाविक उदगार मेरे मन को छू गया। म तभी से उनको निष्ठावान् कायकर्त्ता मानकर प्रीति भाव रखता रहा। मने सेठी जी की दुकान पर आना जाना नही छोडा। वे स्वय कुछ मित्रो से कह बठे कि श्री चतुर्वेदीजी आते है तो जो हम दिन भर दुकान पर बठे रहते हैं पर इनके आने पर एकदम विपुल राशि का व्यापार हो जाता है। यह श्री सत्यधर जी की अभिव्यक्ति की छाप है जो कि सहज भाव अपन अभिमत की अभिव्यक्ति किये बिना नही रहे।

म निरन्तर विरल जीवन की झाकी जो एक स्वच्छ, निरभिमानी, लोक सेवक म होना चाहिये वह म ने श्री सत्यधर जी म पाई है।

☐ ☐ ☐

यादगार

श्री लक्ष्मीनारायण सेठ

([illegible])

[illegible] श्मशान घाट,

उज्जैन

श्री सेठी जी से मेरा पुराना सम्बन्ध है। इन्होंने उज्जैन में जैन धर्म की व सभी धर्मों की सेवा की है और कर रहे हैं। आज के युग में समाज धर्म की व देश की सेवा में जो लोग समय देते हैं बड़ी बात है। कारण लोगों के पास अच्छे कार्यों के लिए समय नहीं है। मैं यहां करीब 36 वर्ष से श्मशान घाट पर रहता हूं। बड़ा सुन्दर घाट बना है। कुछ लोगों को छोड़कर बाकी लोग अपने घर के मनुष्य को जलाने में भी समय पूरा नहीं देते, ऐसे समय में सेठी जी महापुरुष समाज, धर्म व देश की सेवा में हमेशा लगे रहते हैं। बड़ी बात है सिंहस्थ के समय व बाद में भी इन्होंने उज्जैन में सर्वधर्म सम्मेलन कराये व पूरा-पूरा सहयोग दिया। प्रतिवर्ष श्री महावीर जयन्ती के कार्यक्रम में भी आपका पूरा-पूरा सहयोग मिलता है व बाहर से प्रमुख वक्ताओं के विचार का लाभ उज्जैन की जनता को मिलता है। मेरा सौभाग्य है कि उज्जैन में परम पूजनीय स्व० श्री चौथमल जी महाराज, स्व० श्री विद्याविजय जी महाराज, श्रीयुत् सुशील कुमार जी महाराज की सेवा में रहने का अवसर मिला है।

मनुष्य आता है, चला जाता है, यादगार रह जाती है। ऐसे सेवाभावी लोगों का अभिनन्दन होना आवश्यक है ताकि आने वाली पीढ़ी को कुछ मिले।

☐ ☐ ☐

वर्तमान में पंडित पीढ़ी में पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी का नाम आदर एवं श्रद्धा के साथ लिया जाता है। वे जैन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् हैं तथा आकर्षक शैली में प्रवचन करने के लिए मशहूर हैं। पण्डित जी का जीवन सदैव सादा, साफ सुथरा, कंचन जैसा है। अतः कोई भी उनसे प्रथम दृष्टि में ही प्रभावित हुए बिना नहीं रहता। सहिष्णुता और क्षमा पण्डित जी के चरित्र के दो महत्वपूर्ण गुण हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण वे समाज में लोकप्रिय हैं। पण्डित जी की दृष्टि सृजनात्मक है। वे उज्जैन नगर की अनेक संस्थाओं से सम्बन्धित हैं। बड़े से बड़ा धार्मिक आयोजन विद्वानों का समागम आदि के सफल आयोजन में वे सिद्धहस्त हैं। मैं व्यक्तिगत रूप में उनका ऋणी हूं। मुझे अपने कार्य क्षेत्र में सदैव उनका सम्बल और मार्गदर्शन मिलता रहता है। निश्चय ही पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी जैन समाज की एक महत्वपूर्ण धरोहर हैं।

☐ ☐ ☐

समर्पित जीवन

वद्य श्री विष्णु कुमार वद्यरत्न
बड़नगर

श्री व्याख्यान वाचस्पति प० सत्यधर कुमार जी सेठी की अनुपम समाज सेवा से प्रभावित होकर दिगम्बर जैन समाज उनकी हीरक जयन्ती की सुखद मगलवेला मे अभिनन्दन करने जा रही है। यह प्रसन्नता की बात तो है ही परन्तु इससे समाज की सौजन्यता एव कृतज्ञता प्रगट होती है।

श्रद्धेय प० सत्यधर कुमार जी ने तो अपने जीवन का कण तथा जीवन का अधिकाश भाग समाज को समर्पित किया हुआ है। उन्होने अपनी तरुणाई का सौरभ समाज मे प्रवाहित कर नवयुवको को सुवासित व प्रोत्साहित किया है। श्रद्धेय पडितजी ने अन्याय को कभी स्वीकार नही किया। अन्याय व धर्म विरुद्ध बात के प्रतिकार करने मे ये सदव तत्पर रहे, विरोध करते समय कैसी भी कठिनाई आई तब भी "न्याय्यात पथ प्रविचलन्ति पद न धीरा", को चरितार्थ की धैयता का उदाहरण प्रस्तुत किया, कठिन प्रसग पर भी ये व्यामोह ग्रसित नही हुए। व्याख्यान वाचस्पति जी सत्य को उसके उज्जवल रूप मे प्रकट करने के लिए तत्पर रहे। धर्मात्माओ के जीवन मे सतत् सेवा, त्याग व प्रेम की त्रिवेणी लहराती है। सेवा से जीवन जगत के लिये, त्याग से आत्मा के लिये और प्रेम से समाज व धर्म के लिए उपयोगी होता है। प० सत्यधर कुमार जी मे यह बात पाई जाती है, उनमे यह त्रिवेणी बहती रहती है। उनके व्याख्यान मे मन वचन काम की समता रही–त्रियोग मे विषमता नही। जहा विषमता होती है वहा हृदय मूक हो जाता है, भाषा साथ नही देती और जहां भाषा हृदय को ठगने का यत्न करती है तब व्यक्ति विभक्त हो जाता है जहा त्रियोग मे द्वैध नही उनका व्यक्तित्व अखण्डित रहता है। प० सत्यधर कुमार जी का व्यक्तित्व निखरा हुआ रहा। उनके व्याख्यान व विचारो से अनेक युवको को प्रेरणा व मार्गदर्शन मिला। विशेषत बड़नगर का दिगम्बर जैन युवक तो आज भी उनसे मार्गदर्शन प्राप्त करता रहता है।

मध्यप्रदेश की धार्मिक, सामाजिक, राजनैतिक कोई भी सस्था हो उनमें प० सत्यधर कुमार जी का अनुपम योगदान रहा है। ये प्रत्येक सस्था से सम्बधित है।

मैं सदव श्री व्याख्यान वाचस्पति प० सत्यधर कुमार जी सेठी के दीर्घायु व पुनीत आयु की कामना करता हू।

□ □ □

प्रभावकारी

श्री स्वरूप चन्द जैन
कर सलाहकार, खण्डवा

श्रद्धेय पण्डित जी के प्रथम दर्शन करने का सौभाग्य मुझे उस समय प्राप्त हुआ था जबकि वे पर्यूषण पर्व के अवसर पर समाज के निमन्त्रण पर खण्डवा पधारे थे। उनके प्रवचन की शैली सरल एवम् रोचक होने से समाज के सभी वर्ग के लोगों को रुचिकर तथा प्रभावकारी होते थे। उनका विशेष ध्यान समाज के नवयुवकों के उत्थान तथा उनमें रुचि, देव दर्शन तथा स्वाध्याय आदि की प्रवृत्ति जागृत करने का रहता है। इसलिये उनके द्वारा प्रति गुरुवार को "प्रार्थना दिवस" के रूप में सामूहिक मनाये जाने की प्रेरणा दी गई थी।

उस समय खण्डवा में स्थानीय दिगम्बर जैन खण्डेलवाल समाज के दो गुट हो गये थे। उनके आपसी मन-मुटाव को दूर करने का भरसक प्रयत्न पण्डित जी द्वारा किया गया था। जब उन्हें इस कार्य में सफलता प्राप्त होने में शंका होने लगी उसी क्षण उनके द्वारा दृढ़ निश्चय किया गया कि जब तक समाज में एकता नहीं हो जाती है, वे खण्डवा से उज्जैन नहीं जावेंगे। उनके इस दृढ़ निश्चय के फलस्वरूप ही समाज में पूर्ण रूप से एकता स्थापित हो सकी थी तथा आज भी एकता बनी हुई है।

इसके अलावा भी कई बार पण्डितजी के सामाजिक एवं धार्मिक विषयों पर विचार सुनने के अवसर प्राप्त होते रहे हैं। मैंने उन्हें एक निर्भीक वक्ता, स्वतन्त्र विचारक एवं क्रांतिकारी समाज सुधारक के रूप में पाया है। वे सदैव ही सदाचार तथा नैतिक भावनाओं को जागृत करने का प्रयत्न करते रहते हैं।

एक बार मुझे एक शादी के अवसर पर उनके निवास स्थान पर ठहरने का अवसर प्राप्त हुआ था। उनका समस्त परिवार सरल, सादगीप्रिय तथा धार्मिक विचारों का पाया गया था। यह सब श्रद्धेय पण्डित जी के सद्विचारों का ही परिणाम है।

□ □ □

निष्काम कर्मयोगी

श्री सन्त कुमार
बनाड़ा, उपमन्त्री
दिगम्बर जैन समाज
नगर मंत्री
व प्रसिद्ध समाजसेवी
साहित्यिक व कर्मठ
—जैन

सादा जीवन उच्च विचार को जीवन में उतार कर निष्काम कर्मयोगी की तरह सतत् परमार्थ की ओर अग्रसित होते रहना साधारण मानव के सामर्थ्य की बात नहीं कही जा सकती है। ऐसे विरले ही व्यक्ति होते हैं जो पीड़ित मानवता के दर्द को अपना दर्द मानकर उन्हें त्राण से मुक्ति दिलाने के लिये निःस्वार्थ भाव से सदैव प्रयत्न करते रहें। मानव सेवा ही सबसे बड़ा धर्म है। जिसने मानव सेवा का व्रत ले लिया उसने सभी धर्मों को अपने आप में समावेश कर लिया है। ऐसा मेरा मत है। ऐसे मानव सेवा के व्रती पण्डित

सत्यधर कुमार जी सेठी के बारे म कुछ लिखने का साहस करना बडे ही जीवट का काय है। सन् 1957 से मुझे जन समाज उज्जन मे काय करने का अवसर मिला है। जन दशन ने इस उद भवविद्वान्, कुशल सगठक धम के लिय, समाज के लिये इस समर्पित व्यक्ति का सानिध्य मेरे जमे र्ति के लिये प्ररणा देता रहता है। आचाय विनोबा भावे के एकला चालो रे" वाली नीति पर चलते हुए मैंने उन्ह पाया है। श्री सेठी जी समाज मे सतत् कायरत है। उज्जन जन समाज का पर्यायवाची शब्द ही पण्डित सत्यधर कुमार सेठी बन गया है। किसी भी काय के लिये मैंने कभी भी उन्हे पीछे हटते नही देखा है। श्री सेठी जी को जन समाज का कमठ व्यक्ति कहकर हम उनकी महानता को लघता म बाधने का प्रयास करके उनके व्यक्तित्व के साथ याय नही करते है। उज्जन मे प्रत्येक समाज एव समुदाय का लोकप्रिय सम्मानित व्यक्ति निर्विवाद रूप से उन्हे कहा जा सकता है। सामाजिक व्यक्ति को आलोचनाओ का शिकार होना पडता है। अपनी आलोचना से और उत्साह के साथ काय करना उनका विशेष गुण है। सर्वोदयी विचारधारा से अभिभूत होना सद व सामाजिक सगठन की सामाजिक उत्थान की दिशा मे कायरत रहना ही इनका ध्येय है। ऐसे समाज, धम और राष्ट्रीय विचारधारा से ओत प्रोत कमयोगी पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन करके हमने अपने को धन्य कर लिया है। मैं उनके इस अभिनन्दन समारोह के अवसर पर परम पिता परमेश्वर से उनके दीर्घायु होने की कामना करता हू और चाहता हू कि चिरकाल तक उनके मागदशन म काय करता रहू। उनका आशीर्वाद मुझे प्राप्त होता रहे।

□ □ □

गम्भीर चिन्तक

श्री सागरमल कटारिया
मन्त्री—श्री वधमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, उज्जन

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जन के जन समाज मे करीब 30 वर्षों से जाने जाते है। ये यहा पर कई सामाजिक एव धार्मिक सस्थाओ मे विशिष्ट पदो पर काय कर रहे है जिसमे सूयसागर दिगम्बर जन उच्च माध्यमिक विद्यालय, ज्ञान सागर कन्या माध्यमिक विद्यालय के आप वतमान म मन्त्री है।

श्री सेठी जी से मेरा व्यक्तिगत सम्पक करीब 18 वर्षों से है। मैंने इनके सानिध्य म धार्मिक एव सामाजिक स्तर पर बहुत कुछ सीखा है। आप यहा पर महावीर जयन्ती महोत्सव समिति के सयोजक है। दि होल सेल क्लॉथ मर्चेन्ट्स एसोसिएशन एव थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति मे आप अध्यक्ष एव प्रबन्ध सचालक के पद पर रहे है। तथा मैंने आपके निर्देशन म

ऑफिस सेक्रेटरी के पद पर रह कर सफलतापूवक काय का सम्पादन किया।

सेठीजी बहुत ही स्पष्टवादी, समाज सुधारक, गम्भीर चिन्तक, ओजस्वी वक्ता एव दृढ व्यक्तित्व के धनी है।

मैं इनके स्वास्थ्य एव दीघ जीवन की कामना करता हू।

☐ ☐ ☐

सादगीपूर्ण

श्री मागरमल कटारिया
याट नमक मण्डी, उज्जन

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई कि आप श्री प० सत्यधर कुमार जी सेठी का 74 वष के उपलक्ष मे अभिनन्दन करने जा रहे हैं व उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर रहे है। यह ग्रन्थ साहित्य को बहुमूल्य उपलब्धि सिद्ध होगी। मेरा प० सत्यधर कुमार जी सेठी से करीब 32 वष से सम्बन्ध रहा है। वे अपनी धुन के पक्के है, साम्प्रदायिकता से कोसो दूर व अपने विचारो को निर्भीकता से व्यक्त करते है। पण्डित जी रूढिवाद के कट्टर विरोधी रहे हैं। पण्डित जी का जीवन बडा सादगीपूण है, सामाजिक काय चाहे वे कितने ही बडे हो उन्हे सफलतापूवक सम्पन्न करने मे वे समाज के पसो का कभी दुरुपयोग नही होने देते।

सेठी जी एक अच्छे लखक व निर्भीक वक्ता है, उनके जीवन को नजदीक से देखते हुए मुझे किसी कवि की यह दो पक्तिया याद आती हैं—

> जिन्दगी न केवल जीने का बहाना है,
> जिन्दगी न केवल सासो का खजाना है।
> जिन्दगी सिन्दूर है पूरब दिशा का,
> जिन्दगी का काम है सूरज उगाना॥

इन्ही शब्दो के साथ मैं पण्डित जी का अभिनन्दन करता हू, और इस अथक प्रयास के लिए आपको साधुवाद देता हू।

☐ ☐ ☐

सत्य के उपासक

श्री सागरमल जी जन
[illegible] जन समाज रत्न मन्त्री
[illegible]

प० सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित हो रहा है और उनका भारतीय स्तर पर अभिनन्दन भी किया जाना तय हुआ है यह जानकर अत्यन्त ही प्रसन्नता हुई। प० सेठी जी सत्य के उपासक है और कठोर साधनामय उनका जीवन है। जन धम के गूढ रहस्य को उन्होंने समझा, परखा और जीवन म उतारा है, वे वतमान के मत मतान्तर से दूर धम की वास्तविक वस्तु को जन मानस के समक्ष रखने म जरा भी नहीं हिचकिचाते। अनक अवसरो पर आपके विचार सुनने का अवसर आया। उनम सदा एक ही बात देखी कि जन धम की वास्तविक अनुभूति लिए सेठी जी सिद्धान्त पर सद व अडिग रहते हैं। अपने जीवन के पूरे 74 वष समाज की सेवा म नि स्वाथ भाव म लगन वाला व्यक्ति सेठी ही है।

उनका अभिनन्दन स्तुत्य योग्य है।

☐ ☐ ☐

सच्चे कार्यकर्ता

श्री सिद्धनाथ उपाध्याय
पूर्व कार्यालय प्रमन्त्री तथा पूर्व उपाध्यक्ष-आर्य प्रतिनिधि सभा मध्य भारत, उज्जैन

ओम् विश्वायुर ह्येहि यतयाय देव (ऋग्वेद 10 7 1)
दाता सत्कर्म के लिये पूर्ण दीर्घायु प्रदान करे।

प० सत्यधर कुमार जी जो जैसा मैंने देखा, जाना, समझा वैसा ही मैं लिख रहा हूं। क्षमा करना है न्यूनाधिकता के लिए।

श्रीयुत् सेठी जी सन 1947 मे उज्जैन आये थे, तभी से उनके सम्पर्क मे आने का शनै शनै सतत् प्रयत्न करता रहा व आज मे 39 वर्ष के जीवित सम्पर्क मे जो कुछ जान पाया उसी के आधार पर उनके सम्मानार्थ अभिनन्दन ग्रन्थ को अपनी पूर्ण श्रद्धा के साथ एक भेंट समर्पित कर रहा हूं। मैं यह भी दावा नही कर रहा हू कि मने श्री पण्डित जी को पूर्णतया जान पाया हू।

मानव जीवन की कई दिशायें होती है, पर एक साथी वही कुछ जान पाता है जो व्यक्ति के सम्पर्क, कार्यक्षेत्र, मित्रता या शत्रुता के सन्धिकाल मे प्रदर्शित हो पाती है। पर म क्रम 4 से शून्य हू।

श्री सेठी जी खण्डेलवाल कुलोत्पन्न है व राजस्थान मे जन्मे हैं। वही शिक्षा पाई व बाद म राजस्थान से कलकत्ता पहुचे थे। जैसा कि अधिकांश राजस्थानी वणिक कमाई के लिए या यो कहो लक्ष्मीवान् होने के लिए अक्सर कलकत्ता की ओर दौड़ा चल पड़ता है। जैसा कि भारत का निवासी आजकल विदेशो मे पहुच जाता है।

पर म इस तथ्य से असमंजस में हू कि सेठी जी कलकत्ते को केवल धनवान होने के लिए ही गये हो, क्योंकि सेठी जी से 7-8 वर्ष की आयु मे ही अपने पूज्य पिताजी का सानिध्य, सहारा, सहाय, सौभाग्य, आसरा अनायास ही छिन गया था। पूज्य माताजी के तपस्वी जीवन की छत्र छाया मे एक विधवा मा अपने लाडले बेटे के लिए जो त्याग, तपस्या, कड़ी मेहनत, परिश्रम, दुःख, दर्द सब कुछ सहन करते हुए पालनार्थ कर्त्तव्य निभाती है। वह सब माता जी ने अपने नाम के गौरव की गरिमा को ऊचा ही रखा था। उनका नाम जोधाबाई जो था। राजस्थान की जोधा बाई ने अपने बलिदानी जीवन से इतिहास मे जो कीर्तिमान स्तम्भ स्थापित किया था, उससे राजस्थानी पालक अपनी कन्या रत्न का नाम जोधा बाई रखकर आज भी गौरव अनुभव करता है। इस नाम पर इस युग मे भी वही लालसा दृढ़ बनी हुई है। जोधा बाई नाम से ही आज भी हृदय मे शान्ति, साहस, उत्साह व कर्त्तव्य वेदी पर पूरी तरह बलिदान करने की प्रेरणा मिलती है, मिलती रहेगी।

पूज्य जोधा बाई राजस्थान की एक गाँव की जीती जागती राजपूतानी माँ और मा बसा कठिन से कठिन भयानक स्थिति मे भी "सत्यस्य पथा मनुचरेम" को साधक करती रही है। उसी आदर्श माता के नाम पर रखा गया श्री सत्यधर जी की माता थी जोधाबाइ जिसने सत्यधर जी को सत्यधर कुमार बना दिया। मा के सानिध्य मे रहकर जो सन्कार श्री सत्यधर जी को मिले थे उनके प्रभाव से कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी कि सत्यधर जी कलकत्ता छोड़कर 1947 मे मालवा म उज्जैन म आकर जन्मभूमि की सेवार्थ 'खादी भण्डार' के द्वारा अपना जीवन यापन करते हुए "जीयो और जीने दो' के मार्ग पर गरीबो को भी रोटी रोजी मिले व उनका भी जीवन आसानी से यापन हो खादी भण्डार चलाया था। उन्होंने पूज्य महात्मा गाधी के बताये रास्ते पर चलते हुए खादी का व्यवसाय अपनाया व जनसेवा मे एक विनम्र सेवक की तरह तल्लीन हो गय। जसा कि ससार की नियती रही है वसे श्री सत्यधर जी भी बच नही सके व इनके "खादी भण्डार" म शुद्ध खादी बिक्री नही की जाती के आरोप के व शिकार हुए और इन पर न्यायालय म एक हम व्यवसायी स्पर्धी नेताओ ने वाद प्रस्तुत कर दिया। श्री सत्यधर कुमार जी के सामने अपनी रोजी रोटी के सरक्षण का जटिल प्रश्न उपस्थित हो गया। उस समय इनके सामने सिफ मुकदमा लड़ना व अपने को शुद्ध खादी का व्यवसायी प्रमाणित करना पुनीत कर्तव्य प्रस्तुत हो गया था। कालान्तर म सत्यमेव जयते का मन्त्र सिद्ध हुआ और सत्यधर जी न्यायालय म "शुद्ध खादी विक्रेता" निर्णीत हुए। पर इन सब कठा पठक मे ये खादी भण्डार नही चलाने के निश्चय पर भी पहुच गये व अपनी दुकान मे चम रहित अर्थात् हिसा रहित जूता की दुकान चलाना प्रारम्भ कर दिया। एक तो जन परिवार म उत्पन्न बालक व दूसरे उस समय अहिंसा के अनन्य उपासक महात्मा गाधी की आधी चल रही थी। उसम यह सस्कारी प्राणी (सत्यधर कुमार सेठी) सत्य व अहिंसा के माग को कैसे छोड़ सकता था और एसा ही रहा। चम रहित जूते की दुकान उज्जैन म इनकी एक अनूठी अनोखी ही थी। यहा इन्हे अच्छी सफलता मिली।

कांग्रेसी कायकर्ता इन्हीं की दुकान से जूते पहना करते थे व वे जो हिंसा रहित वस्तुओ के व्यवहार के समथक थे व भी इस दुकान के समर्थक ग्राहक बनते रहे। इन्ही दिनो म श्री सत्यधर जी को जन सिद्धान्तो की दृढता से अपनाने की मनोदशा बनी व वे एक कट्टर जैनी के रूप म उभरने लगे। इन्ही दिनो में हिन्दू धम अर्थात आय धमूल से हरिजनो का पृथक करने की और धम परिवतन कर देश की भारत की अखण्डता को खण्डित करने की साजिश विदेशी साम्राज्य की एक कुत्सित चाल चली जा रही थी। अतः

भारतीय स्वराज्य की सफलता बिल्कुल नही चाहते थे। पर दिनो-दिन भारतीय स्वातन्त्र्य सूर्य अपनी प्रखरता के साथ दमक रहा था व देश म "स्वराज हमारा हक है" आदर्श बन गया था। इसी समय हमसे हमारे भाइयो को अलग करने का षडयन्त्र बड़ी भयकरता से चलाया जा रहा था। कारण कि अग्रेज भारत को छोड़ने को बिल्कुल तयार नही थे। इसी षडयन्त्र के शिकार हिन्दू व मुसलमान लाखो की सख्या मे शहीद हुए व दूसरा दौर हिन्दुओ से हरिजनो को भी अलग कर दिया जाय षडयन्त्र बड़ी मुस्तैदी से चलाया जा रहा था। जिससे भारतीय स्वतन्त्रता को पगु बनाकर भारतीयो को सकट मे डालने का पक्का इरादा बनाया जा चुका था। उसका परिणाम यह हुआ, भारत व पाकिस्तान दो देश बना दिये गये व हरिजनो को भ्रमित कर नया सकट भी भारत के स्वतन्त्र होते-होते रख दिया गया। जब स्वतन्त्रता प्राप्त हुई तब देश की अखण्डता को विकृति से बचाने के लिये महात्मा गाधी के मार्गदर्शन मे "कौमी एकता" "सर्वधर्म समभाव" पर अनु सरण करते हुए देश को बलिष्ठ बनाना ध्येय सामने आय। जिसका एक आधार हिन्दू समाज को छुआछूत के कलक से पूर्ण रूपेण मिटाना भी काग्रेस ने एक ध्येय अपनाया था। उस समय मैं काग्रेस का अध्यक्ष था व मैंने सभी हिन्दू मन्दिरो मे हरिजन प्रवेश के कार्यक्रम को प्रारम्भ किया। उसमे सर्वप्रथम हम महाकाल मन्दिर मे दर्शन करने की हरिजनो के साथ मन्दिर प्रवेश की सफलता मिली व हम जन मन्दिरो मे भी हरिजन मन्दिर प्रवेश के कार्यक्रम मे प्रवृत्त हुए।

उस समय उज्जैन के जैन समाज से हमे अर्थात काग्रेस को श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का जहा सभी उपरोक्त कार्य सचालन म सहयोग मिला। वहा जैन हरिजन मन्दिर प्रवेश मे पूर्ण सहयोग मिला और इन्ही के सत्य परामर्श से श्री लालचन्द जी सेठी के विनोद मील के मन्दिर म हम हरिजनो को ले जाने म सफलता मिली। उस समय सत्यधर जी का जैन समाज म अच्छा मान था। इन्हे तरुण, वृद्ध सभ। बड़े आदर से श्रद्धा से अपने समर्थक, सहायक व मार्गदर्शक मानते थे। कुछ आतकवादी इन्हे जनाजिन्ना के नाम म भी चिढाया करते थे। उस समय देश की आवश्यकता पर इन्होने सभी कार्यों मे तन, मन से अपने आपको आगे से आगे बढकर कार्य किया था। श्री सत्यधर कुमार जी सेठी ने जहा काग्रेस के साथ रहकर सार्वजनिक क्षेत्र में एक कर्तव्य परायण कर्मठ कार्यकर्ता का गौरव पाया वहा दूसरी ओर जैन समाज मे भी इनकी सेवाओ से प्रभावित होकर इन्हे व्याख्यान वाचस्पति की उपाधि प्रदान कर सम्मानित किया। इनका जैन निष्ठा का प्रभाव व कट्टरता का डका गूजने लग गया था। लश्कर, उज्जैन रतलाम, मण्डवा

इत्यादि पूव मध्य भारत के जन समाज के मानव समूह ने इन्हें अपना एक निष्ट कार्यकर्ता ही नही वरन् एक सच्चा जैन पथ प्रदशक की मायता से स्वीकारा और आज भी सत्यधर कुमार जी को जन समाज म वही पूरा पूरा आदर, श्रद्धा व अग्रणी का स्थान बना हुआ है। व आज भी करीब 33 जन सस्थाओ, व्यवसायिक सस्थाओ व सावजनिक सस्थाओ के पदाधिकारी सचालक और कुछ सस्थाओ के सस्थापक बनने का गौरव अजित कर चुके है। इनकी सूझबूझ व काम-कुशलता का एक उदाहरण उज्जैन का मूयसागर दिगम्बर जन उच्चतर माध्यमिक पाठशाला पूर्व मार्ग म कार्यालय क सामने अपनी निजी धर्मशाला म विद्यमान है। जिसस हजारो की सख्या म छात्र छात्राये शिक्षित व दीक्षित होकर समाज व राष्ट्र की सवा म अपना एक विशिष्ट स्थान प्राप्त किये हुए है। श्री सत्यधर जी सेठी अपन को आर्य, हिन्दू व जन म कोई भेद सहन नही करते है। अपने इस सिद्धान्त को वे अपने जन समाज के धार्मिक उत्सवो म आर्य समाज के सन्यासियों, विद्वान् को उसी प्रकार स्वागत सत्कार की परिपाटी निभाते रहते प्रचलित किये है जितनी श्रद्धा व भक्ति के साथ वे जन पथावलम्बियो को मान्यता देते हैं। मैं उनके निजी जीवन से अत्यधिक प्रभावित रहा। आज भी मैं इन्हे अपना एक निश्छल निष्पक्ष साथी भाई मानता हू। परमात्मा हम शक्ति दे कि हम अपने बधुत्व को और दृढतर बनाते रहे। इन्होंने अपना जीवन सत्कार्य मे समर्पित करने की मान्यता को पूण करने म कोई कसर नहीं रखी। मैं श्री सत्यधर जी सेठी के आदश जीवन को अपनी पूण निष्ठा के साथ उनकी अभिवृद्धि, धम के प्रति पूण आस्था व कमठ जीवन की सफलता की कामना करता हू। इस भावना के साथ कि श्री सत्यधर जी अपने जीवन को निम्न पक्तियो की धारणा, सिद्धान्त, आदश को परिपूणता से लिया जाय व सफल हो।

□ □ □

निर्भीक साहसी

श्री सुगन्ध चन्द्र कावडिया
जिला सयोजक-विश्व हिन्दू परिषद्
उज्जैन

जहा तक प० सत्यधर कुमार जी सेठी के सामाजिक, सास्कृतिक, व धार्मिक जीवन का सवाल है मानो जैसे उन्होने कराल काल के गाल पर यश का डका अपने धम का सभी दूर बजाया है। वे मनुष्यता मे पारंगत, सत्य ही आधार जिनका, व्यवहार मे अतिकोमलता, श्रेष्ठ ही श्रेष्ठ विचार, चरित्रवान्, धैर्यवान्, बुद्धिमान् प्रश, जिनको जन, बौद्ध सनातनी, वैष्णव गुरुमुखी श्रमजीवी सभी अपना साथी मानते है, समझते है। आप निर्भीक साहसी जो किसी भी प्रकार का काय लेकर आये उसी के साथ शक्ति अनुसार तन, मन, धन से पूण सहयोग देकर हर क्षेत्र मे अपनत्व मनाने वाले फिर आपको पण्डित कहो, ऋषि कहो, महात्मा कहो, कामरेड कहो और बापू कहो,

कामरेड कहो और वध कहो, उस्ताद कहो, नेता कहो, लोह पुरुष कहो, व्याख्याता कहो, मुनी कहो, तपस्वी कहो या कहो जन-जन का लाडला नेता हमारा पण्डित सत्यधर कुमार सठी प्यारा।

विश्व हिन्दू परिषद के उपाध्यक्ष के रूप म मा० सेठी जी का जो योगदान रहा है। वह स्तुत्य है, आशा है सेठी जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अनेकानेक व्यक्तित्व का निर्माण होगे तथा अभिनन्दन समिति द्वारा अभिनन्दन सार्थक होगा।

□ □ □

समन्वयवादी

श्री सुगनचद जन
अध्यक्ष—श्री जन मित्र मण्डल, माधवनगर
उज्जन

पडित जी का जीवन कठिनाइयो से भरा हुआ है वही उनके जीवन में त्याग, उदारता, सेवाभावना, अतिथि सत्कार आदि गुणो का समावेश भी है।

आप निर्भीक वक्ता, सादगी की मूर्ति, धार्मिक एव अपने सिद्धान्तो पर अटल रहने वाले हैं ही, साथ ही समन्वयवादी भी है। आप कलम के धनी होने के साथ-साथ वाणी और क्रिया के धनी भी है। आपकी कथनी व करनी मे कोई अन्तर नही है। किसी भी परिस्थिति मे आप स्पष्टवादी, निर्भीक एव निस्पृह विचार के कायल है।

आपके समन्यवादी होने का ठोस प्रमाण यह है कि आपके सयोजन में वर्षों से उज्जैन नगर मे महावीर जयन्ती समारोह दिगम्बर एव श्वेताम्बर समाज द्वारा सम्मिलित रूप से आयोजित किया जाता है। इस अवसर पर प्रति वर्ष अखिल भारतवर्षीय सन्तो एव विद्वानो को आमन्त्रित किया जाकर उनके बहुमूल्य विचारो से उज्जैन नगर की श्रद्धालु एा धार्मिक जनता को लाभान्वित किया जाता है। आप ही समय-समय पर उज्जैन दिगम्बर जैन समाज का नेतृत्व करते रहे है।

दहेज प्रथा के सम्बन्ध में आपके विचार बडे ही क्रान्तिकारी हैं, आप इसे समाज के लिए कलक मानते हुए दहेज लेना एव देना निदनीय अपराध मानते हैं। यही नही आप स्वय भी दहेज न लेने एव न देने का कठोरता से पालन करते है।

पण्डितजी की सामाजिकता का एक अभूतपूर्व उदाहरण दक्षिण भारत में स्थित श्रवण बेलगोला में भगवान बाहुबलि के महामस्तिकाभिषेक समारोह के समय देखने को मिला। प्रात स्मरणीय परम पूज्य एलाचार्य श्री विद्यानद जी महाराज के निर्देशानुसार आपको वहा की आवास व्यवस्था का कार्य

माना गया जिनका उन्होंने अनेक बाधाओं के होते हुए भी बड़ी लगन एवं मेहनत से कुशलतापूर्वक सम्पादित किया एवं सम्मानित हुए। ऐसे अनेकों छोटे-बड़े सामाजिक, धार्मिक कार्य पण्डितजी जीवन पर्यन्त करते आये हैं और यह उनकी जीवनचर्या का प्रमुख भाग बन गया है।

देव दर्शन व शास्त्र स्वाध्याय आपके जीवन के अभिन्न अङ्ग हैं। उज्जैन के जयसिंहपुरा स्थित जैन मन्दिर में जैन मूर्ति संग्रहालय की स्थापना आपके साहस का परिचायक है। शास्त्र प्रवचन में आप इतने प्रवीण हैं कि उज्जैन ही नहीं अपितु देश के कोने-कोने से विभिन्न सामाजिक, व्यापारिक एवं धार्मिक संस्थाओं से सम्बद्ध हैं। यह कहा जावे तो अतिश्योक्ति नहीं होगी कि आप स्वयं अपने आपमें एक संस्था हैं। इस प्रकार पण्डित जी के लिए जितना भी लिखा जावे वह कम ही रहेगा।

आपको अपने जीवन में बड़ों का आशीर्वाद मित्रों का स्नेह एवं सहयोग मिला है। नवयुवक आपके अनुयायी और आप उनके पथ-प्रदर्शक हैं। आपके मार्गदर्शन में कई संस्थायें कार्य कर रही हैं। आप विशेषतया उज्जैन नगर के हर सामाजिक, राष्ट्रीय सांस्कृतिक एवं धार्मिक कार्यों में अग्रणी रहते हैं। यही कारण है कि उज्जैन के दिगम्बर समाज में ही नहीं अपितु हर समाज में सम्माननीय हैं।

मैं आपके ऐसे त्यागमयी जीवन, धार्मिक विचार, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के दृढ़ निश्चय जैसे जीवन से अत्यन्त प्रभावित होकर आपकी उत्तरोत्तर वृद्धि एवं दीर्घायु होने की शुभकामना करता हूं।

□ □ □

उच्च मानव

श्री सूरजमल तोरा
उज्जैन

इस नश्वर संसार में प्राणी पिछली योनियों के भोग भोगता सुकर्मों के फल स्वरूप मनुष्य योनी प्राप्त करता है। कोई इसका महत्व न समझ कर पानी के बुदबुदे जैसा अल्प आयु में ही इसे छोड़कर या ही चला जाता है। परन्तु जो सत्य अहिंसा और त्याग की सद्भावनाओं और दैनिक कर्मों से जीवन बिताता हुआ वर्तमान युवा पीढ़ी के मार्गदर्शन हेतु पथ अपनाता है वही सच्चा मानव नेता सुधारक और प्रणेता कहलाता है। ठीक इन्हीं मानव जीवन के रहस्यों का दिग्दर्शन पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी के आदर्शपूर्ण जीवन में निरन्तर हो रहा है।

समय, स्वास्थ्य व्यवसाय आदि के कोई बन्धन आपको समाज सुधार कार्यों से विचलित नहीं कर पाये हैं और इसी ठोस धारणा के तले आपकी कार्य कुशलता दिन प्रतिदिन विराट रूप लेती हुई आपको 'उच्च मानव' के शिखर पर आसीन कर रही है।

जन समाज के प्रगतिशील कार्यों और योजनाओं में आप सदा अग्रणी रहे है। नारी जाति की दशा सुधारने मे भी सदव लेखो पत्रो और समालोचनाओं के माध्यम से आपका माध्यम बहुत ऊंचा है। दहेज प्रथा उन्मूलन म आपका योगदान प्रभावकारी और महत्वपूर्ण है।

हमारे नगर, समाज और देश के इने गिने महापुरुषो म आपका नाम प्रथम पंक्ति मे याद किया जाता है। ऐसे आदर्शो, नतिक मूल्यो और जीवन के हरेक क्षेत्र मे सुधारवादी, क्रान्तिकारी परिवर्तनो के जागरूक महापुरुष की ख्याति मे चार चाद लगने के कार्यो, उनके "अभिनन्दन" और 'अभिनन्दन ग्रन्थ" प्रकाशन से हम सबका मस्तक ऊंचा होगा। साथ ही समाज के नव युवको तथा नवयुवतियो को प्रेरणा मिलेगी। साठ वष से निरन्तर अपने जीवन को समर्पित करने वाले एस महान् पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के बारे मे जो भी लिखा जाये वह कम ही रहेगा।

धन्य है वह नगर तथा समाज जिसे ऐसे अनूठे मानव का मार्गदर्शन मिला, धन्यवाद।

□ □ □

सुपरिचित

श्री सुरेश जन
युवा कार्यकर्ता
उज्जन

श्रद्धेय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का नाम भारतवर्षीय दिगम्बर जन समाज मे एक सुपरिचित नाम है। पण्डितजी बहुमुखी प्रतिभा के धनी है। उनका व्यक्तित्व विशाल है एव कार्यक्षेत्र भी विस्तृत है। वे केवल उज्जन म ही नही अपितु समस्त भारत मे समाज के कर्मठ कार्यकर्ता है। जन समाज मे तो आप आदरणीय हैं ही परन्तु दीगर समाज मे भी आप उतने ही आदर और सम्मान की दृष्टि से देखे जाते हैं। पण्डित साहब मे इस ढलती उम्र म भी युवको जैसा उत्साह दिखाई देता है। वे समाज मे नई चेतना जागृत करते रहते है एव सामाजिक कुरीतियो का वमन करने के लिए हर सम्भव प्रयास करते है। कठिनाईयो म घबराना उन्होंने सीखा ही नही है अपितु साहस के साथ उनका सामना किया है।

वे जहा भी जाते हैं अपनी विद्वता व सरलता से लोगो का मन जीत लेते हैं। सादगी उनके मन वचन और कर्म से परिलक्षित होती है।

उन्होने जन दर्शन के मूलभूत सिद्धान्तो को अपने आचार व्यवहार म लाकर मूर्तरूप प्रदान किया है। वे समाज को नई रोशनी एव मार्गदर्शन करते रहते हैं।

वर्षो से मेरा उनका सम्बन्ध है, ये मेरा सौभाग्य है कि मुझे उनका पुत्रवत दुलार मिलता रहा है और मिलता रहेगा, ऐसा विश्वास है। उनका स्नेह और आशीष मेरे जीवन का सम्बल है।

□ □ □

दिव्यगुणी

श्री सुरेश काला
जयपुर

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन किया जा रहा है, यह जानकर सभी बुद्धिजीवियों को प्रसन्नता हुई है, पण्डित जी का जीवन आदर्शों से पूरा सेवा-भावी रहा है।

आपको मैंने भगवान बाहुबली महामस्तकाभिषेक पर श्रवणबेलगोला (कर्नाटक) में काफी नजदीक से देखा, कड़ी धूप में भी खान पीन की परवाह न करते हुए आपमें केवल एक ही धुन थी कि बाहर से आने वाले यात्रियों को दिक्कत न हो। आपके द्वारा की गई आवास व्यवस्था काफी सुदृढ़ और सुन्दर थी। जैन समाज ही नहीं अपितु समस्त आगन्तुक दिगम्बर जैन मुनीसंघ, राजनेताओं, भट्टारकों की तरफ से आपका श्रवणबेलगोला में स्वागत किया गया।

पण्डित जी में सबसे बड़ी बात यह है कि आपने असहाय व निर्धन को कभी हीन भावना से नहीं देखा। आपने गरीबों को हमेशा सहयोग दिया एवं उनके प्रति आत्मीयता प्रकट की।

लोभ, क्रोध, मद एवं स्वार्थ की भावना लेश मात्र भी आपको छू नहीं गई है।

अतः आपका अभिनन्दन करना वास्तव में दिव्य गुणों का सम्मान है।

☐ ☐ ☐

एक जिन्दा दिल इन्सान

श्री डा. सुरेश चन्द्र जैन
राजनांदगांव

श्री 1008 भगवान् महावीर के 2500 निर्वाण उत्सव समिति केन्द्रीय देहली तथा मध्यप्रदेश के कार्यक्रम के एक सहयोगी के नाते तथा महावीर ट्रस्ट के कार्यकर्ता के नाते तथा बाद में जैन समाज की एक प्रतिनिधि संस्था दिगम्बर जैन महासमिति के सहयोगी सदस्य होने पर स्वनाम धन्य श्री सत्यधर कुमार जी सेठी के साथ काम करने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ।

इसे मैं अपने जीवन का महान अवसर मानता हूं। वे वयोवृद्ध होते हुए भी पूर्ण युवकोचित उमंग उत्साह से भरे पूरे रहते हैं। प्रत्येक युवक कार्यकर्ताओं से आत्मीय प्रेम प्रकट करते हुए उन्हें प्रोत्साहित करते हैं। युवकों की भावना को सही मार्गदर्शन देते हुए उनकी कार्य-प्रणाली में आई असुविधाओं को जानकर उन्हें दूर करने में रुचि लेकर सही मार्गदर्शन देकर युवकों का उत्साह बढ़ाते हैं।

इतनी वात्सल्यता के बावजूद आत्महित के लिए गृहस्थ देवपूजा गुरु वगैरह कार्यों को प्रसन्नतापूर्वक करते हुए आत्म-जागरण कर रहे हैं।

☐ ☐ ☐

सुप्रसिद्ध कर्मठ समाजसेवी

श्री सुमेर चन्द्र जैन शास्त्री
साहित्यरत्न, न्यायतार्थ,
दिल्ली
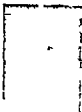
आदरणीय सेठी जी सच्चे अर्थो मे कर्मवीर है। वे निर्भीक लोक सेवी ऐसे कार्यकर्ता हैं जिन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य देश और समाज की सेवा करना अपना कर्त्तव्य समझा है। जब से हमने अखिल विश्व जैन मिशन की स्थापना की तभी से उसके गणमान्य सम्भ्रप्रतिष्ठित सचालको म से है। मिशन की महती आवश्यकता थी।

सेठी जी कुशल व्याख्याता, कर्मठ कार्यकर्ता, अपनी लगन के पक्के, साहसी, समाज सेवी, धर्म और संस्कृति के रक्षक, सुयोग्य नर रत्न है। जिन्होंने शिक्षण सस्थाओ की देखरेख बिखरी हुई प्राचीन कला और सौन्दर्य की प्रतीक मूर्तियो का सग्रह करके सुन्दर दर्शनालय करके महत्त्वपूर्ण कार्य किए है। वे मिशन के प्राण और समाज के सच्चे सेवाभावी मूक ज्योतिधर हैं जिस पर देश समाज व धर्म को गर्व है। सेवा का कार्य बडा दुधर है।

वास्तव म जो लोक कल्याण की भावना से जन साधारण की सेवा मे अपने जीवन को लगाते हैं, वे महान् और नरसिंह हैं। हमारे सेठी जी भी ऐसी ही दिव्य विभूति है। हम उनके दीर्घायु की कामना करते हैं।

□ □ □

आदर्श

श्री सुकुमारचन्द्र जैन,
महामन्त्री-दिगम्बर
जैन महासमिति, मेरठ
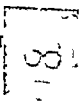
श्री सेठी का सम्पूर्ण जीवन समाज-सेवा में सलग्न रहा है। देश की युवा पीढी के लिए वे आदर्श हैं। आयोजन के सुअवसर पर मेरी शुभकामनायें स्वीकार कीजिए।

□ □ □

सौम्यमूर्ति

श्री शिवानन्द
भू पू अध्यक्ष-
विधानसभा मध्य प्रदेश
सतना

पिछले वर्षो मे अनेक बार सेठी जी के आमन्त्रण पर "महावीर जयन्ती" मे मेरा उज्जैन जाना हुआ था। उनकी सज्जनता, सहृदयता, निरभिमानता तथा प्रेरणास्पद वाणी भूल नही सकता। सरलता की वह सौम्य मूर्ति हैं।

> सीस काटि भुईं पर धर, ता पर धार पाव।
> दास कबीरा यो कहे, ऐसा होय तो आव॥

अहं रूपी शीश को काटने के बाद उन्होंने अपनी आत्म चेतना जागृत कर ली है। समाज से तादात्म्य स्थापित कर भगवान के चरणो म समर्पित है। उनके कर्म ज्ञान और भक्ति से सुगन्धित यशस्वी जीवन को प्रणाम।

□ □ □

वन्दनीय

श्री शिरोमणी चन्द्र जैन
अध्यक्ष—जे एल
जैनी ट्रस्ट, इन्दौर

धर्म प्रेमी बन्धु श्री सत्यन्धर कुमार जी सेठी सुप्रसिद्ध समाज सेवी एव जैन धर्म के धुरन्धर विद्वान् हैं। उन्होंने अपने जीवन मे जो समाज की व धर्म की सेवायें की है व अपने व्यवसाय से आत्म कल्याण का कार्य किया है वह प्रशसनीय है और वे सचमुच वन्दनीय है।

आज समाज मे ऐसे लगनशील, उत्साही, समाज सुधारको की बहुत ही आवश्यकता है जो सभी क्षेत्रो मे निस्वार्थ भाव से कार्य करें।

मै उनके दीर्घायु एव सफल जीवन की कामना करता हू।

□ □ □

अद्वितीय प्रतिभा के धनी

श्री धोनन्दनलाल जैन
दिवाकीर्ति, सयोजक—
महावीर ट्रस्ट म प्र
के युवा प्रवृत्ति
सहायक सचालक—
अखिल विश्व जैन मिशन म प्र
महामत्री—महावीर ट्रस्ट, अध्यक्ष—प्रेस
क्लब, गजबासौदा

मानवीय गुणो और सद्गुणो की माला मे पिरोकर जैन मानस का जैन दर्शन के सच्चे मर्म और सुरभि द्वार जिसने अपना सम्पूर्ण जीवन लगा दिया वह व्यक्तित्व और कोई नही हमारे अपने श्रद्धावनत आदरणीय प० सत्यधर कुमार जी सेठी जी हैं।

जीवन के एक लम्बे समय से मेरा और उनका भ्रातृतुल्य प्रेम श्री अखिल विश्व जैन मिशन के कार्यक्रमो से प्रारम्भ होता है। मैंने जितने करीब से उन्हें देखा है समझा हू और उन पर विचार किया है तो बस एक ही बात पाई है वह है उनका फक्कड़पन जीवन से सादगी मे जीना और मन को धर्म की गहराई मे डुबोना तथा तन की परवाह न कर धन से ममत्व को हटा लेना विरल ही इन्सानो मे होता है। उन इन्सानो मे हम आदरणीय सेठी जी के व्यक्तित्व को पाते हैं। जब जब भी मैं उनसे मिला एक आत्मीयता पूर्ण ममत्व उनके अन्दर दिखा अपने घर के ही बड़े भाई सदृश्य प्रेम उन ने सदैव किया। वे सदा जैन सिद्धान्तो के ऊपर चलते है और उसमे व कभी पन्थ पुराणो को महत्व नही देते हैं। उनका सारा जीवन समाज की सेवा मे लगा है।

राजनीति के वे नेता नही है पर उसकी वास्तविकता भी उनसे छिपी नही है। आज भी उनके ऊपर खादी का कुर्ता और धोती इस बात का प्रतीक है कि सच्चे अर्थों मे गाधी जी के सिद्धातो के प्रति पालक रहे है।

इसीलिये कहा जाता है कि राजनीति हो या समाज सेवा, धर्माचरण हो या मानव सेवा, ऐतिहासिक वस्तुओ का सकलन हो अथवा साहित्य सेवा सभी वाले पारिवारिक माने जाते हैं। उन्होंने जिस क्षेत्र मे भी प्रवेश किया उसमें अपना अलग ही व्यक्तित्व बनाया है। जीवन के जिस क्षेत्र को सेठी जी ने छुआ जो व्यक्तित्व उनके तनिक भी सम्पर्क मे आया उनसे वह प्रभावित

हुए बिना नही रहा उनकी अपनत्व पूर्ण वाणी माधुर्य पूर्ण व्यवहार जन मानस को सदव आकर्षण का केन्द्र रहा है।

वे जन दर्शन के प्रकाण्ड विद्वान् हैं और वे कटुता और वाद विवाद से दूर रहते हैं। सम्यक्कारी गुणो को जीवन म स्थान देना उनका मुख्य उद्देश्य रहा है पर जैन सिद्धान्तो म वे समझौतावादी नही है। उसके वास्तविक मूल्यो के लिए सदव जन जागरण मे लग रहते है।

उनके बारे म जितना कहा जाये थोडा ही है वे सच्चे अर्थो म अद्वितीय प्रतिभा के धनी हैं।

□ □ □

अर्पित जीवन

श्री हरकचद काला
महामंत्री—श्री दि जैन
... , अमनगुरा
अध्यक्ष— ... श्रा
दि, भारतपुरा

जैन समाज क अद्भुत विद्वान एव सुप्रसिद्ध समाज सेवी श्रद्धेय प० सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जैन का हीरक महोत्सव मना रहे है साथ मे ही अभिनन्दन ग्रन्थ भी भेंट कर रहे हैं आपके यह विचार वास्तव म प्रशसनीय है। श्रद्धेय सेठी जी का म निकट सम्बन्धी हू। म भली भांति जानता हू कि उन्होंने घर क कार्यो को ठुकराकर सारा जीवन समाज व धर्म सेवा के लिए अर्पित किया। राजस्थान म उन्होने कई सामाजिक रूढियो को तोडने के लिए अपनी कदम बढाई है। उसम उनको विरोध का सामना भी करना पडा है। फिर भी वे मैदान म डटे रहे और सफल हुए। वे जो कहते है उसको करते भी है। व एक दृढ सकल्पी व्यक्ति है। म तो उनके चरणो म श्रद्धा सुमन अर्पण करता हुआ उनके जीवन की दीर्घ कामना करता हू।

□ □ □

आकर्षित व्यक्तित्व

डा हरीराम चौबे
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का जो अभिनन्दन हो रहा है, ये उनकी नि स्वार्थ समाज सेवा का प्रतिफल है, इससे नई पीढी मे उत्साह व सेवा करने की भावना का उदय होगा और सेठी जी के जीवन का सादगी पूर्ण जीवन से अवश्य ही प्रेरणा लेंगे। श्री सेठी जी ने जीवन के प्रत्येक क्षेत्र मे समाज सेवा कर आम आदमी को अपनी ओर आकर्षित किया है। म अभिनन्दन समारोह की सफलता की कामना करता हू।

□ □ □

चलती-फिरती एक सस्था

श्री हुकमचद जन
ट्रस्टी एव सकेटरी
श्री एलक पन्नालाल
दि जन सरस्वती भवन, उज्जैन

श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी जीवट व्यक्तित्व के धनी प्रगतिशील विचारधारा के एक समाज सुधारक एव समाज सेवी विद्वान् व्यक्ति हैं। वे समाज सुधार की इस साध को पूरी करने के लिए सदैव समाज निष्ठ रूढियो एव अध परम्पराओ से जूझते रहते है। इस काम म समाज के युवक युवतिया भी उनका साथ दें व आगे आकर अपनी प्रबल इच्छा शक्ति से खोखली इन्हे जडमूल से उखाड फेंके इसके लिए वे अपनी ओजस्वी वाणी मे उनका आव्हान भी करते है। इस दृष्टि से सेठ जी को समाज की "चलती फिरती एक सस्था कहें तो अतिशयोक्ति नही होगी।

अपने ध्येय की पूर्ति के लिये समाज की छोटी बडी सभी सस्थाओं से वे सदव जुडे रहते हैं और उनक माध्यम स अपनी साध भी पूरी करते रहते हैं। लगभग 74 वष का उम्र मे भी उनम युवको ज सा उत्साह देखा जा सकता है। उनकी इस कमठता एवं कत व्य शक्ति से लोगो को एक ओर जहां प्रेरणा प्राप्त होती है वही दूसरी ओर अपनी प्रतिगामी शक्तियो से लोहा भी लेना पडता है लेकिन वे अपने मानापमान की परवाह किये बिना उसी धुन व लगन के साथ अपने काय मे जुटे रहते है।

श्री ऐलक पन्नालाल दिगम्बर जन सरस्वती भवन की शाखा का बम्बई स स्थानान्तरित होकर जून 1976 म उज्जन आना भी उनकी सूझ बूझ व सत्प्रयास का ही सुपरिणाम है। आज उज्जन मे भवन को बडी सुव्यवस्थित व अच्छी हालत म देखा जा सकता है। शाखा की व्यवस्था का समस्त काय प० दयानन्द जी शास्त्री अत्यन्त मनोयोग व लगन से करते हैं। भवन की शाखा का उज्जैन स्थानान्तरण शोधकर्ता एव लेखक विद्वानो के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण व लाभदायक सिद्ध हुआ है। विगत 6 वर्षों मे कई विद्वान भवन के माध्यम से लाभ उठा चुके है और उठा रहे है। भवन व्यवस्थापक प० दयानन्द जी भी ज्ञान लाभाथ सहयोग प्रदान करते रहते है। इस समय भवन मे दिगम्बर श्वेताम्बर एव वदिक साहित्य के धम, दशन, न्याय ,काव्य, व्याकरण, ज्योतिष, वद्यक, मन्त्रशास्त्र आदि मुद्रित नाना विषयो के हस्तलिखित व मुद्रित ग्रन्थ 5 हजार की सख्या म हैं और प्रतिवष उच्चकोटि के आवश्यक ग्र थ भवन की ओर से मगाये जाते है। ग्र थ भेंट मे भी आते ही रहते हैं। इस तरह यह भवन पण्डित जी एव अन्य विद्वानो के सचालन व नीति निर्देशन मे चलकर उज्जन के गौरव को बढा रहा है।

पण्डित जी के स्वागत समारोह के शुभ अवसर पर भवन के अध्यक्ष, ट्रस्टी गण व म उनके यशस्वी दीघ जीवन की शुभ कामना करता हुआ आशा करता हू कि वे अपने जीवन क अन्तिम क्षणो तक इसी प्रकार समाज व धम की सेवा मे सलग्न रहेंगे।

□ □ □

प्रेरणासूत्र

श्री हीराचन्द वैद्य,
प्रसिद्ध समाज-सेवी तथा अनेक
संस्थाओं के पदाधिकारी, जयपुर

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन का समाचार जानकर प्रसन्न होना स्वाभाविक ही था। करीब 35 वर्ष से उनसे सम्पर्क रहा है। जब वे जयपुर मे खादी व्यवसाय में रत थे उस समय भी वे समाज व धर्म के कार्यो मे काफी रुचि लेते थे। बाद मे वे उज्जैन चले गये। तब भी अक्सर उनसे सम्पर्क होता रहा। हाल ही मे प्रसंगवश उज्जैन जाने का अवसर मिला वास्तव म तो उनके सेवा कार्यो की वहीं जानकारी हुई। वे वहा समाज के सब वर्गों मे अत्यधिक लोकप्रिय है। जिससे भी उनके बारे मे चर्चा हुई उनके व्यवहार—सौजन्यता की सब ही ने भूरी भूरी प्रशसा की। सबका उनके प्रति आदर भाव देखकर बड़ी खुशी हुई। उनको जो सम्मान मिल रहा है वह शासन और समाज के प्रति उनके समर्पित व्यक्तित्व के कारण ही है। अवश्य ही उनका यह सम्मान समारोह समाज के कार्यकर्ताओं के लिए प्रेरणा सूत्र बनेगा। यह बहुत ही शुभ परम्परा है। यह सेवा भाव के प्रति गुणानुराग का द्योतक है। गुण की पूजा से व्यक्ति म गुणों का प्रवेश होता है।

श्री सेठी जी चिरायु हो और उनकी सेवाओं से समाज लाभान्वित होता रहे, यही शुभकामना है।

□ □ □

सिंहवृतिधारी

श्री हीराचन्द बोहरा
कलकत्ता (पश्चिमी बगाल)

श्री सेठी जी समाज के उन निर्भीक सिंहवृत्तिधारी कर्मठ सेवाभावी विद्वानों म प्रमुख है जिन्होंने अपना पूर्ण जीवन समाज सेवा, संस्कृति संरक्षण, धर्म प्रचार, पुरातत्व की खोज और आम जनता के लिए परोपकार की पावन भावना व साधना म व्यतीत किया है। विश्व जैन मिशन के सक्रिय कार्यकर्ता के रूप मे उनकी सेवायें सदा स्मरण रहेंगी। उनकी प्रभावक वक्तृत्व शैली, अटूट धर्म निष्ठा सादगी पूर्ण जीवन वृत्ति प्रशसनीय है। वे दीर्घायु हों, सदा स्वस्थ रहें, यही वीर प्रभु से प्रार्थना है।

□ □ □

सरस्वती पुत्र का सम्मान

श्री कमल कुमार जैन
मंत्री—श्री दि जैन अतिशय क्षेत्र
प्रबन्ध समिति, खजुराहो, छतरपुर

श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के सम्पर्क म मैं लगभग 20 वर्ष से हूं। सामाजिक कार्य करने की रुचि होने के कारण मुझे प्रान्तीय अखिल भारतीय स्तर की सामाजिक संस्थाओं के अधिवेशनों, बैठकों म जाने का अवसर मिला, समितियों म प्रतिनिधित्व करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। इन्हीं अवसरों पर पण्डित जी से प्रत्यक्ष रूप से मिलने उनके ओजस्वी विचारों को सुनने का मौका मिला। सफेद धोती कुर्ते म दुबले-पतले, मन्द गंभीर चाल जब कभी भी किसी सामाजिक मंच से ओजस्वी वाणी म व्याख्यान रहो अ

रही हो तो आप निश्चित रूप से समझिये कि ये श्री पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी बोल रहे है।

मैने सत्यधर कुमार जी सेठी को ओजस्वी वक्ता के रूप म देखा और उनके भाषण सुनकर तो यह समझा कि अपनी बात को वे बड़ी निडरता से समाज के सामने प्रस्तुत करते है। 1965 मे सम्मेद शिखर के श्वेताम्बरो के विवाद से तीथ क्षत्रो के सरक्षण हेतु मध्य प्रदेश तीथ रक्षा समिति का गठन हुआ था। उस समय उसका प्रथम अधिवेशन भी इन्दौर म हुआ। उसम मुझे भी भाग लेने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। उस समय तीर्थों की रक्षा के निमित्त समाज को एक जुट होकर सामने आने क लिए जो ओजस्वी भाषण उस मच से सेठी जी का हुआ था वह अभी भी सुनने वालो के मानस पटल पर अकित है। पण्डित जी पुरातत्व प्रेमी है यही कारण है कि भगवान महावीर 2500 वा निर्वाण महोत्सव वष मे उज्जैन सम्भाग की पुरातत्व सम्पदा को इकट्ठा करने एव उसके माध्यम से एक जन पुरातत्व सग्रहालय को विकसित करने मे महत्वपूर्ण काय किया है।

श्री सेठी जी अपने रचनात्मक कार्यों के कारण अनेक अखिल भारतीय सामाजिक सगठनो से सम्बन्धित है। क्रान्तिकारी समाज सुधार के रूप मे काय करने वाली सस्था अखिल भारतवर्षीय दिगम्बर जन परिषद के आप प्रमुख कायकर्ताओं मे से हैं। परिषद के हीरक जयन्ती के अवसर पर कानपुर मे आपने समाज सगठन के सम्बन्ध म मुनियो के शिथिलाचार के सम्बन्ध म जो ओजस्वी विचार प्रकट किये वे निश्चित रूप स आपके महान साहस क द्योतक है। भिण्ड मे महावीर ट्रस्ट की बठक मे महावीर ट्रस्ट के ट्रस्टी के रूप मे आपको निर्वाचित किया जाना निश्चित रूप से आपकी समाज सेवा का परिणाम है। मालवा प्रातिक जन सभा के आप अनेक वर्षो से प्रचारमत्री है। आपने समाज सेवा मे निश्चित रूप से बहुत लम्बा समय व्यतीत किया हैं। आपके कार्यों का सही मूल्याकन समाज ने कर जो सम्मान समारोह का आयोजन किया है वह आपक प्रति समाज ने अपन कतव्य का निर्वाह किया है। इससे दूसरे सामाजिक कायकर्ताओ को प्रेरणा मिलेगी। सरस्वती पुत्रो का यह सम्मान विद्वानो के प्रति समाज की जागरूकता का प्रमाण है। जिस समाज मे विद्वानो का सम्मान होगा वास्तव में वह समाज उन्नतिशील समाज होगा। विद्वता का सम्मान ही सही सम्मान है। जन सिद्धान्त मे भी ज्ञान की ही प्रमुखता मानी गई है। सेठी जी के इस सम्मान समारोह के अवसर पर हम उनके दीघ जीवन एव यशस्वी जीवन की मगल कामना करते हैं।

□ □ □

सुसस्कृत

श्री कैलाश चन्द्र चौधरी, महामंत्री
महावीर ट्रस्ट म प्र
श्री दि जैन तीर्थ क्षेत्र मक्सी म प्र
भारत जैन महामंडल
मध्य प्रदेश, इन्दौर

जयपुर जिले के भादवा ग्राम मे अकुरित, कुचामन म पल्लवित तथा म०प्र० मे पुष्पित, फलोदित वह जीवन जिसम राजा विक्रमादित्य की पावन पुनीत पुण्य सलीला मा शिप्रा के तट पर स्थित उज्जैन नगरी को अपनी कर्म भूमि बनाया। अपने समर्पित जीवन से धार्मिक, सामाजिक, राष्ट्रीय एव सार्वजनिक क्षेत्र को प्रभावित किया। ऐसी प्रतिभा के धनी श्री प० सत्यधर कुमार जी सेठी का उनकी 74 वर्ष की हीरक जयन्ती वेला पर अभिनन्दन किया जाना अत्यन्त ही सुखद अवसर है।

एक निर्भीक वक्ता, कर्मठ, निष्ठावान, लगनशील सुसस्कृत, सुसस्कारित, धार्मिक वृत्ति वाले श्री सेठी कलम, वाणी और क्रिया के भी धनी है। सफल समालोचक। अपने जीवन मे सादा जीवन उच्च विचार को चरितार्थ करते हुए आपने सदा सर्वदा अपने दृढ विचारो तथा सिद्धान्तो पर अडिग रहते हुए क्रान्तिकारी एव समाज सुधारवादी विचारो के साथ ही निरन्तर साधना रत जीवन का परिचय दिया है।

महावीर ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन मालवा प्रान्तिक सभा, श्री दि० जैन अतिशय क्षेत्र मक्सी पार्श्वनाथ, भारत जैन महामडल आदि सस्थाओ मे इनके समर्पित जीवन को मैने नजदीकी से देखा, समझा एव परखा है। धर्म, समाज एव राष्ट्र के प्रति समर्पित व्यक्तित्व के लिए श्रद्धा, सम्मान, प्रशसा एव कृतज्ञता ज्ञापन के भावो की अन्तरतम से उत्कठा होना स्वाभाविक परिणति है, इन भावो को प्रतिपादित करने की अनुभूति मानव मन मे युग-युगो से विभिन्न रूपो मे निरन्तर चली आ रही है निश्चित ही उस राष्ट्र एव समाज की प्रगति अवरुद्ध हो जाती जो कृतज्ञता ज्ञापन की कड़ी मे पीछे रह जाते है। समाज सेवियो का अभिनन्दन अन्य लोगो के लिए प्रेरणादायी होता है। इस रूप म किसी का सम्मान उस व्यक्ति विशेष का नही अपितु वह सारे समर्पित कार्यकर्ताओ के सम्मान का ही द्योतक होता है।

इस प्रकाश मे श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का सार्वजनिक अभिनदन कर हम अपने कर्त्तव्य का पालन कर रहे है, उनकी नि:स्वार्थ सेवाओ, सादगी जीवन तथा सद्‌चरित्रता आदि के स्मरणार्थ प्रकाशित किए जा रहे अभिनन्दन ग्रन्थ का निश्चय, अत्यन्त ही शुभ है।

इस अवसर पर म अपनी अन्तरग शुभ कामनायें अर्पित करते हुए कामना करता हू कि वे दीर्घायु हो, शतायु हो, यशस्वी हो तथा जीवन के अन्तिम क्षणो तक समाज सेवा के अपने सकल्प को अबोध गति से पूरा करने म समर्थ रहे।

इस आशा, अपेक्षा एव मगल कामना के साथ।

□ - □ □

युवा सम्राट

श्री शान्ती लाल गगवाल, युवानिया
[illegible]

श्री सरधर कुमार जी सेठी अपने आप मे एक अलग व्यक्तित्व रखते हैं, जिनसे मिलने वाले पर उनके व्यक्तित्व का सीधा प्रभाव पडता है। वे स्वभाव से शान्त किन्तु विचारो से क्रान्तिकारी है। उनकी वाणी ओजपूर्ण होती है जो श्रोता के मन पर अपना प्रभाव डालती है। वे सदा प्रसन्नचित्त रहते हैं। बाल्यावस्था से ही धार्मिक साहित्य के अध्ययन मे आपकी पूरी रुचि रही है। आप आठ वर्ष की अल्पायु मे पण्डित चनसुखदास जी न्यायतीर्थ के पास अध्ययन हेतु चले गये।

आपकी एक बहुत उत्तम विशेषता जो मैंने आपके मार्गदर्शन म देखी है वह यह है कि आप गुणी के गुण को जल्दी देख परख कर उसके गुण को प्रश्रय देते है। इस परखन म अगर सामने वाले म किसी प्रकार की कोई कमी देखी है तो बिना किसी हिचकिचाहट के उसे सचेत भी कर देते है चाहे वह बात उसे बुरी ही क्यो न लगे।

आप प्रकृति से उदार भी हैं, आप समय पर काम करने का पूर्ण ध्यान रखते है। इसलिए उसका सदुपयोग करने के लिये दूसरो को भी प्रेरणा देते रहते हैं। आपमे किसी प्रकार का कोई व्यसन नहीं है। चाय जस आधुनिक पेय को भी आपने जिन्दगी म कभी नही छुआ।

सेठी साहब भगवान महावीर के अमर सदेशो के प्रतिपूर्ण आस्थावान होकर उनके प्रचार एवं प्रसार म भी पूर्ण सलग्न रहते है। आपके दैनिक जीवन मे महात्मा गाधी का सिद्धान्त "सादा जीवन उच्च विचार" की झांकी झलकती है। आप प्रात से रात्रि तक बिना विश्राम के नवयुवकों का मार्गदर्शन करते रहते ह। दिन म विश्राम करना आप पाप समझते हैं। आप धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सेवाओ म सदा अग्रणी रहे हैं। आपने समाज में कुरीतियो को मिटाने के लिये जीवन भर सघर्ष किया ह। वाणी से निर्भीक एव यथार्थ विचारो से आपने युवावर्ग का मार्गदर्शन किया है। आपने कितनी ही धार्मिक सस्थाओ म अलग-अलग पदो पर रहकर जैन समाज का नाम उज्ज्वल किया है। आपका धर्म क प्रति सेवा एव त्याग युवा वर्ग के लिये प्रेरणादायक है। शिथिलाचार के आप घोर विरोधी हैं इसलिये आप युवा वर्ग को इनके विरुद्ध सही मार्गदर्शन करने म हिचकिचाते नही हैं। आप अपनी आलोचना म कभी नही घबराते।

युवा वर्ग की तरफ से मैं ईश्वर से प्रार्थना करता हू कि आप दीर्घायु हो और भविष्य म भी देश समाज एव धर्म की सेवा करते रहे तथा युवको को मार्गदर्शन देते रहें।

☐ ☐ ☐

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

शिक्षा शास्त्रियों ने

अजात शत्रु

डा० श्रीमती (इन्दिरा) जोशी
अध्यक्ष,
हिन्दी विभाग
जोधपुर विश्वविद्यालय
जोधपुर (राजस्थान)

समय के प्रवाह मे इस नश्वर जगत मे अनन्त नर-नारी आते है और चले जाते है किन्तु उनम से विरले ही ऐसे होते हैं जो समय के इस महामरु-कान्तार की बालू पर अपने पदचिन्ह छोड जाते हैं, जिन पर चल कर आने वाली पीढिया उनका अनुकरण करके अपने को धन्य मानती है। ऐसे ही एक महापुरुष है, पण्डित सत्यधर कुमार सेठी। व महापुरुष हैं, किन्तु न तो वै स्वय अपनी महानता को जानते ही है और न हमारे कहने पर ऐसा मानने को तयार हैं। यह एक क्षीणकाय, भीड मे खोजने वाले विनम्र व्यक्तित्व के धनी है और सपने मे भी अपने बडप्पन की परवाह न करके नीचे से नीचे और साधारण से साधारण व्यक्ति के साथ, सच्चे भाई-चारे के साथ मिलते जुलते है और हर दीन-दु खी की, हर क्षण सहायता करने को कटिबद्ध रहते हैं। हर अन्याय से पीडित के लिए, उनकी सहानुभूति और सहायता सदा ही उपलब्ध है। ऐसा सन्त-स्वभाव वाला एक व्यक्ति हमारे जीवनकाल मे हुआ है और उसके निकट सान्निध्य पाने का सौभाग्य हमे मिला है, यह हमारे जीवन की एक बडी उपलब्धि है। मैं अपना अपूव सौभाग्य मानती हू और इसे अपने पूवजन्मकृत पुण्य का प्रतिफल समझती हू कि ऐसे अनुपम साधु स्वभाव वाले सेवा-धम-वृती महानुभाव के मुझे अनायास ही दशन हो गए। यही नही, प्रथम साक्षात्कार से ही उन्होने मुझे अपनी बहिन मान लिया और आज तक वे प्राणपण से उसी स्नेह-सम्बन्ध का निर्वाह किये जा रहे है। अत आज मैं इस चिरस्मरणीय अभिनन्दन-ग्रन्थ के लिये अपना यह निबन्ध अर्पित करते हुए अपने को वस्तुत गौरवान्वित मानती हू।

अन्याय के विरुद्ध दुधष सग्राम करने वाले पण्डित सेठी जी, मन, कम और वचन तीनो मे समान हैं। उनकी मान्यतायें, आस्थायें एव निष्ठायें अपरिवतनीय है और वे उनकी रक्षा के लिये प्राण तक न्योछावर कर देने का नतिक साहस रखते ह। आधुनिक जन समाज मे वे सबसे बडे सामाजिक सुधारो के समथक हैं और उनके लिये उन्होने अपने जीवन का अधिकाश भाग लगाया है। जन धम का अनुयायी होना उनके सहज रू पे आचरण, सादा जीवन एव तपोभिमुख के अनुकूल पडता है। अत वे जन्मजात सस्कार लेकर आने वाले जन धर्मावलम्बी हैं। किन्तु धार्मिक आडम्बर तथा जनेतर लोगो के प्रति अनुदारता अथवा पक्षपात को वे अधार्मिक मानते है। इसीलिये प० सत्यधर सेठी जी ही पूरे जैन समाज मे ऐसे विद्वान एव समाज सेवक है जिनके प्रशसक जनेतर समाज मे, जन समाज की तुलना मे भी बहुत बडी सख्या मे है।

राष्ट्रीय स्वाधीनता-सग्राम के वे एक निष्ठावान सिपाही रहे हैं। आजीविका के लिए व्यापारवृत्ति अपना कर भी वे बेहद ईमानदार और हानि-लाभ की

चिन्ता किये बिना सत्य व्यवहार को अपना जीवनसूत्र मान कर चलने वाले हैं। यदि वे अपने सिद्धान्तों के साथ जरा भी ढील बरतते तो वे आज कब के ही करोडपति होते। पर आज वे इतने धनी जन समाज में एक विनम्र आर्थिक हैसियत वाले व्यक्ति हैं। किंतु उनका सम्मान देश के बड़े से बड़े श्रेष्ठियों से कहीं अधिक है। वे नेता बनाने वाले हैं स्वयं नेता बनने से दूर ही रहना पसन्द करते हैं।

जब अवसर आता है, वे मेरी तारीफ करते नहीं अघाते। इतना आदर और स्नेह और इतने निश्छल सहज भाव से देने वाला कोई दूसरा व्यक्ति मुझे दिखाई नहीं देता। वे मेरी त्रुटियों की ओर कभी ध्यान नहीं देते। केवल अच्छी ही अच्छी बातें देखते हैं। सच्चे सन्तों का यही लक्षण है। गोस्वामी तुलसीदास जी की ये पंक्तियां पण्डित सत्यधर सेठी पर सर्वांश में सत्य उतरती हैं —

"मुद मंगलमय, सन्त-समाजू। जो जग-जंगम तीरथ राजू॥
साधु-चरित शुभ चरित कपासू। निरस, विशद गुणमय फल जासू॥
जेहि सहि दुख, परछिद्र दुरावा। वन्दनीय सोइ जग, जस पावा॥

पण्डित सत्यधर सेठी सचमुच जंगम अर्थात् चलते-फिरते तीर्थ हैं। वे जहां भी जाते हैं अपने सादे जीवन और ऊंचे विचारों की छाप सर्वत्र छोड़ते जाते हैं। उनका चरित्र कपास के पुष्प की भांति विशुद्ध निर्मल और लोक-मंगल कारी है। वे स्वयं दुखों एवं अभावों को सहकर भी दूसरों के दुखों के दूर करने में लगे रहते हैं। वे औरों की बुराइयों पर पर्दा डालने वाले और उनके गुणों की प्रशस्ति करने वाले हैं। इसीलिए वे सारे समाज और देश के लिए वन्दनीय बन गये हैं। अपने शुद्ध तपोमय आचरण के कारण उन्होंने भगवान महावीर द्वारा प्रवर्तित सत्य एवं अहिंसा के धर्म का क्रियात्मक रूप में सतत प्रचार-प्रसार किया है। वे अजात शत्रु हैं और मन कर्म और वचन से अहिंसक एवं सत्य-परायण हैं। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे स्वयं नहीं जानते कि वे कितने महान् हैं। एस महात्मा एवं सेवाव्रती पण्डित सेठी जी द्वारा मुझे स्नेह, आदर एवम् जनसेवा-प्रेरणा प्राप्त हुई है, इसे मैं अपना अपूर्व सौभाग्य मानती हूं। प्रभु से प्रार्थना है कि प० सत्यधर सेठी जी अपनी शताब्दी के समारोह में भी मेरा स्मरण करें और मुझे अवसर दें कि मैं उनका तब पुनः अभिनन्दन कर सकूं।

तथास्तु।

□ □ □

व्यक्ति नहीं संस्था हैं

प्रो० कलानिधि 'चंचल'
सामाजिक, सांस्कृतिक,
साहित्यिक एवं पत्रकार
प्राध्यापक,
माधव महाविद्यालय, उज्जैन

वस्तुत: आपने यह श्रेष्ठ और पुण्य का काम किया है, मेरी शुभकामना आपके साथ है। प० सत्यधर कुमार जी सेठी तो समाज सेवा के हिमालय है। मेरा उनसे वर्षों पुराना सम्बन्ध है। साथ-साथ समाज-सेवा के क्षेत्र म काय किया है, मैने और उन्होने। सत्यधर जी अब व्यक्ति नही संस्था है। उनकी कथनी और करनी एक है। आज ऐसे व्यक्ति का मिलना दुलभ है। संसार म रहकर भी वे साधु और संत प्रकृति के है। मेरे मत म ऐसे व्यक्ति किसी विशेष वग, जाति और सम्प्रदाय के न होकर समस्त मानव समाज के लिये होते हैं। सेठी जी ऐसी पीढी का ही प्रतिनिधित्व करते है।

मेरी दृष्टि मे वे एक महान् साधक और तपस्वी हैं। उनमें क्षमता है जोडने की, मनुष्य मनुष्य को। जो ऐसा काम करता है उसकी आन्तरिक चेतना प्रबल, निर्मल तथा विस्तृत होती है। इन्हीं विशेषताओ क कारण ही तो आज सत्यधर जी सन्त से पण्डित और पण्डित से आचाय तक के शिखर को स्पर्श कर सके हैं।

रूढियो के विरुद्ध उनकी बगावत सद्कम और मूल बोध की ओर ले जाने की है क्योंकि रूढियां कभी-कभी हमे परम्परागत रूप से उलझा कर उन मार्गों से दूर कर देती है, जो सेवा का मूल मन्त्र हैं।

जब मैं उनके व्यक्तित्व को देखता हू तो प्रतीत होता है कि सेठी जी उस समपण की आंच मे तपे हैं जिसके पृष्ठ में सत्संग, आदर्श और नतिक साहस की मजबूत कहानी है। उच्च विचार की कल्पना तो सभी करते हैं किन्तु क्रियान्वित करने वाले दुलभ है। सेठी जी अपने आप मे एक उच्च विचार हैं तथा सरलता व सादगी की प्रतिमायुक्त जीवन्त मूर्ति भी हैं।

□ □ □

कर्मठ मनीषी

श्री कमलकुमार जन शास्त्री 'कुमुद'
[illegible]
[illegible]
[illegible]
[illegible] (सागर)

सन 1968 69 में मध्यप्रदेश मिशन शाखा के अध्यक्ष श्री माणिकचन्द जी दहकुल ने अपने आवास स्थल पर कायकारिणी समिति को आहूत किया। पुरातत्व संस्कृति सम्बन्धी विविध प्रस्ताव पारित किये गये। मध्यप्रदेश म जैन धम की प्रभावना तथा पुरातत्व संरक्षण हेतु एक प्रचार संगठन की आवश्यकता प्रतीत हुई। प० सत्यधर कुमार जी सेठी ने मेरे कानो म वह मन्त्र फूका कि मुझे संभागीय संचालक का पद भार सम्भालना ही पड़ा। फलस्वरूप मिशन के सिद्धान्तो के अनुसार मने ग्रन्थजी म भक्तामर का अनुवाद करके प्रकाशित किया तथा अन्यान्य छोटे-मोटे 10 15 ट्रैक्ट यहां म निकाले। उनकी राष्ट्रीय विचारधारा तथा ज्ञान का म कायल हू। उनकी

शास्त्रीय विद्वता का परिचय मुझे आचार्य विद्यासागर जी महाराज के तत्वावधान मे चलने वाली वाचना के अवसर पर सागर मे प्राप्त हुआ। ऐसे कमठ मनीषी विद्वान् के अभिनन्दन हार्दिक अनुमोदना करता हुआ उनके दीर्घायुष्य की कामना करता हू ।

☐ ☐ ☐

साहसिक

डा० कलाशचन्द जन गगवाल
विक्रम विश्व विद्यालय, उज्जैन

म पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी को करीब 45 वष से जानता हू, जब मैं साभर मे पढता था। उज्जन आने पर मेरा इनसे विशेष परिचय हुआ। भादवा जैसे छोटे से ग्राम मे इनका जन्म हुआ तथा पाच वष की आयु मे ही पिताजी का देहान्त हो गया। साधनो का अभाव रहा, किन्तु इसके उपरान्त भी ये इतनी उन्नति कर सके। इनके व्यक्तित्व के अध्ययन से ज्ञात होता है कि इनमे कुछ विशेष गुण थे।

इनकी उन्नति का सबसे बडा कारण इनकी साहसिक प्रवृत्ति है। इनका समस्त जीवन सघर्षमय रहा है। कठिनाइयो के सामने इन्होंने झुकना नही सीखा। किन्तु निर्भीकता से उनका सामना किया। इनकी उन्नति का दूसरा कारण है अदभुत नेतृत्व शक्ति। इसी कारण से इनका अनेक सस्थाओ से सम्बध बना हुआ है तथा उनके विकास तथा उत्थान के लिये सब कुछ न्यौछावर करने को तयार रहते है।

यद्यपि पण्डित सत्यधरजी की शिक्षा कुछ परिस्थिति के कारण अधिक नही हो सकी, किन्तु निरन्तर स्वाध्याय की प्रवत्ति के कारण उन्नति करते रहे। साथ मे ये एक सहज प्रवक्ता भी है। जब वे भाषण देते है, तो लोगो पर इसका प्रभाव पडता है। ठीक बात को समझने की इनकी क्षमता ह। ये पत्र पत्रिकाओ मे भी अपने विचार प्रकाशित करते रहते है

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी पुराण पथी और आधुनिक युवको के बीच एक कडी के रूप मे भी है। पुराण पथी लोगो को य समय के अनुसार चलने को प्रेरित करते है तथा साथ मे युवको को जन धम मे श्रद्धा रखने को समझाते है।

पण्डित सेठी जी का जीवन बहुत सादा है। रहन-सहन व खान-पान मे ये जन धम के सिद्धाता को व्यावहारिक रूप मे पालन करते है। मुझ इनके घर पर कुछ बार खाना खाने का अवसर प्राप्त हुआ। मुझे आश्चय हुआ कि न केवल सेठी जी किन्तु परिवार के सब सदस्य दो-तीन दिन से अधिक पहले की बनी हुई वस्तुओ का खाने म प्रयोग नही करते।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का जैन साहित्य और पुरातत्व की उन्नति मे भी बड़ा योगदान रहा है। उज्जैन के पचायत मन्दिर मे उन्होने हस्तलिखित ग्रन्थ भण्डार की स्थापना की है। हाल ही मे इन्होने भारतवर्षीय जन सेमीनार का उज्जन मे आयोजन किया था। शोध छात्रो को अध्ययन हेतु आप सब प्रकार की सहायता करते रहते है। उज्जन के लिये इनकी सबसे बड़ी देन जयसिंहपुरा के जन मन्दिर मे जैन सग्रहालय की स्थापना है। इसमे अदभुत कलापूर्ण जैन मूर्तिया है, जिनका मूल्य धन मे नही आँका जा सकता।

□ □ □

उदात्त गुरू परम्परा —पालक

प्रो० खुशालचन्द्र गोरावाला
प्राध्यापक,
भारतीय समाज शास्त्र
काशी विद्यापीठ, वाराणसी

पूज्यवर श्री 105 गणेशवर्णी महाराज और महामान्य गुरू गोपाल दास जी दिगम्बर जैन समाज के बौद्धिक जागरण के अग्रदूत थे। इनकी प्रत्येक प्रवृत्ति श्रमण सस्कृति का आचरित निदशन थी। दि० जन वाङ मय का अध्ययन अध्यापन, प्रवचन-लेखन किन मर्यादाओ के साथ होना चाहिए इसके आदर्श ये दोनो युग निर्माता थे। प्रथम ने यदि पूज्य आचार्यों के समान त्याग मार्ग को अपना कर जन वाङ मय का अध्ययन-अध्यापन किया तो दूसरे ने भी इस पुनीत पठन-पाठन को "जीवन उद्धार की कला" ही रखा था। उस जीविका नही बनाया था। इन महागुरुओ की उदात्त परम्परा को आशिक रूप से इनके दो प्र-शिष्यो ने ही निभाया है। वे थे स्वनाम धन्य स्व० प० राजेन्द्र कुमार न्यायतीर्थ और बालब्रह्मचारी स्व० पण्डित चनसुख दास जी न्यायतीर्थ। इन दोनो महारथियो ने अपने गुरुओ को सम्मान दिलाया, साथियो को समाज के सामने किया और युवक योग्य व्यक्तियो को प्रतिष्ठापित दृष्टि से ये दोनो ही ऐसे कमठ विद्वान् थे जो सपूते मरे तथा जिनके अनुज-साथी आज भी इनकी परम्परा को बचाये रखने मे लगे है।

प० सत्यधर कुमार जी सेठी इस वर्ग के लोगो म ज्येष्ठतम है। इन्होने पुण्य श्लोक पण्डित चनसुख दास जी के तीनो आदर्शों को अपना दिग्दर्शक बनाया है। इसलिए ही इन्होने देश-समाज के एक अचल को अपना सेवाक्षेत्र बनाकर जीवन लगा दिया है। प्राचीन के व्यामोह मे मूढताग्रा म जकडे मालवा के सक्षम मध्यम वर्ग को विवेकपूवक चलने के लिए प्रेरणा दी है और धन के नेतत्व को गौण किया है तथा धम-समाज सेवा से किसी भी प्रकार लाभ लेने से विमुख रहे है। इन तीनो गुणो के कारण जन समाज के सहज विश्वासी (कट्टरपंथ) तथा समृद्ध वर्ग को दिशा मिली है तथा मालवा दिगम्बर जन समाज मे युक्तिसगत प्राचीन को पापग तथा प्रवाहपति (लकीर के फकीर) प्रवृत्तियो को निग्रह मिला है। ऐसी उपलब्धि किसी भी धम-समाज के सेवक के सिर पर मुकुट ही मानी जायगी। यही कारण है कि हम आज प० सत्यधर जी सेठी का अभिनन्दन कर रहे है।

आपने अपने अंचल में दर्जनों प्रबुद्ध तथा कर्मठ एवं स्वतन्त्रजीवी कार्यकर्ता तैयार किए हैं। अतएव उदात्त महागुरु परम्परा के पालक के नाते वे हमारे अभिनन्दनीय हैं।

□ □ □

ओजस्वी वक्ता

डा० जयकिशनप्रसाद खण्डेलवाल
अध्यक्ष—संस्कृत विभाग
राजा बलवन्तसिंह कालेज, आगरा

आप जानते ही हैं कि सेठी जी ने समाज और जैन धर्म की बड़ी सेवा की है। उनका ओजस्वी वक्तृत्व सभी के लिए प्रेरणादायक रहा है। वे सच्चे अर्थों में पंडित मनस्वी एवं महान् व्यक्तित्व वाले हैं। उनका खरापन सराहनीय है। वे सरल एवं सादा जीवन और उच्च विचार वाले श्रावक हैं। अतः उनका अभिनन्दन ही उनके प्रति कृतज्ञता है।

कर्मवीर

डा० ज्योतिप्रसाद जैन
सुप्रसिद्ध लेखक-विचारक
इतिहास रत्न लखनऊ

निर्ग्रंथ श्रमण परम्परा के आर्हत तीर्थंकरों द्वारा प्रवर्तित जैन धर्म सार्वभौमिक एवं सार्वकालिक है, तथापि स्वयं जैन धर्मावलम्बियों के प्रमाद, पारस्परिक फूट, अत्यल्प संख्या तथा समय की गति को न पहचानने के कारण आज वह भारत वर्ष में भी एक अपेक्षाकृत गौण एवं उपेक्षणीय धर्म परम्परा होकर रह गया है। वर्तमान में उसका जो कुछ अस्तित्व एवं सचल्व है उसका अधिकतर श्रेय धर्म, संस्कृति और समाज के उन निःस्वार्थ एवं उत्साही सेवकों को है जो समय-समय पर आगे आते रहे। विदेशियों तथा भारत वर्ष के जैनेतरों को भी जैन धर्म की समुचित जानकारी देने और उसके प्रति उनमें आदर भाव उत्पन्न करने तथा विश्व में जैनी अहिंसा का प्रचार-प्रसार करने के उद्देश्य को लेकर वर्तमान शताब्दि के पांचवें दशक में स्व० बाबू कामता प्रसाद जी ने "अखिल विश्व जैन मिशन" की स्थापना की थी और अंग्रेजी व हिन्दी आदि के अनगिनत ट्रैक्टों के अतिरिक्त 'अहिंसावाणी' (हिन्दी) एवं 'वायस ऑफ अहिंसा' (अंग्रेजी) पत्रिकाएं निकालनी प्रारम्भ की थीं। यथासम्भव प्रतिवर्ष या एक-दो वर्ष छोड़कर वह किसी न किसी नगर में मिशन का वृहद् अधिवेशन और अहिंसा-सम्मेलन भी करते थे। हम इस योजना में भाई साहब कामताप्रसाद जी के प्रारम्भ से ही सहयोगी रहे और मिशन के संस्थापकों में परिगणित किए गए। किन्तु मिशन की सबसे बड़ी शक्ति युवा सेनानियों का वह समुदाय था जो उसकी योजनाओं को कार्यान्वित करने में उत्साह के साथ जुट जाता था। इन युवा सेनानियों में स्वनाम धन्य पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी प्रायः प्रमुख थे। इसी सन्दर्भ में उनके साथ हमारा परिचय हुआ। कई बार भेंट हुई, पर्याप्त पत्राचार भी हुआ और हम उनके कार्यकलापों से अवगत रहे।

धर्म, संस्कृति और समाज के लिए वस्तुतः सेठीजी के हृदय में सदैव एक

ऐसी तड़प, आग और जोश रहे जिनके बल पर वह प्रगतिविरोधी तत्वो एव प्रवृत्तिया की निर्भीकता के साथ डटकर आलोचना करते रहे। परन्तु उनकी आलोचनाए विध्वसात्मक नही, रचनात्मक ही रही, और आवश्यकता होने या उचित लक्षण एव गुण है, भाई सेठजी के व्यक्तित्व मे वे समायोजित हैं। सम्भवतया यही कारण है कि गहस्थिक उत्तरदायित्वो का सम्यक निर्वाह करते हुए और अर्थ-पुरुषार्थ की दृष्टि से एक सफल एव सम्पन्न व्यापारी की प्रतिष्ठा पा लेने पर भी, वह स्वधर्म और समाज के लिए ही नही, सार्वजनिक एव अन्य लौकिक क्षेत्रो म भी उत्तम योगदान के कारण एक प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर सके। उनका सम्बध आज लगभग 25 सस्थाओ से है, जिनमे जैन और अजन, धार्मिक और लौकिक, शैक्षणिक एव सास्कृतिक, अखिल भारतीय मालव प्रान्तीय तथा स्थानीय (उज्जैन, इन्दौर, बडनगर आदि की) सम्मिलित है। कई सस्थाओ के वे सस्थापक, सचालक, पदाधिकारी, ट्रस्टी या सहायक एव सहयोगी है। अपने धार्मिक प्रवचनो, जोशीले भाषणो, समाज सुधार के आन्दोलनो और जिनधर्म एव जन सस्कृति के प्रचार एवं प्रभावना के अभियाना के लिए वह प्रसिद्ध रहे हैं।

भाई सत्यधरकुमार सेठी की अमूल्य सेवाओं के लिए उनका सार्वजनिक अभिनन्दन किया जाना सर्वथ उचित है। जयपुर क्षेत्र उनका जन्म स्थान एव प्रारम्भिक शिक्षा स्थल है। स्व० प० चनसुखदास जी न्यायतीर्थ का शिष्य होने का उन्हे सौभाग्य मिला है। और उज्जैन उनका मुख्य कार्यक्षेत्र एव चिरकाल से निवास स्थान है। अतएव जयपुर और उज्जन के उनके प्रशसको की यह योजना श्लाघनीय है। उक्त अभिनन्दन समारोह की और उक्त अवसर पर श्रीसेठीजी को भेंट किए जाने वाले अभिनन्दन ग्रन्थ की सफलता की शुभकामना है। सेठीजी मेरे बन्धु सरीखे है। उसी प्रकार का स्नेह एव आदर मुझे सदव प्राप्त रहा है। सबसे बडी बात यह है कि वह धम सस्कृति एव समाज के ऐसे नि स्वार्थ कर्मठ, उत्साही एव सक्रिय पोषक, सवद्धक एव सेवक रहते आये हैं, जसे कि वतमान म अत्यन्त विरले हो गए है। अत्यन्त प्रसन्नता है कि उनके हीरक वर्ष समारोह के उपलक्ष मे यह आयोजन किया गया है। मेरी हार्दिक भावना है कि बन्धुवर प० सत्यधर कुमार जी सेठी चिरकाल तक धम, समाज एव लोक की सेवा म अधिकाधिक सलग्न रहते हुए विपुल यश प्राप्त करें। उनके व्यक्तित्व एव कृतित्व के लिए मेरा स्नेहपूर्ण अभिनन्दन है।

☐ ☐ ☐

तार्किक विद्वान

तेजकरणजी डडिया
सुप्रसिद्ध शिक्षाविद्
प्रधान—श्री महावीर जैन उच्च
माध्यमिक विद्यालय, जयपुर

स्व० पं० चैनसुखदासजी न्यायतीर्थ की शिष्य परम्परा में पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी जी को उल्लेखनीय स्थान प्राप्त है। पं० सेठीजी ओजस्वी वक्ता, कुशल लेखक और रजत प्रतिभा सम्पन्न तार्किक विद्वान हैं। जैन दर्शन और आगम ग्रन्थों का समझने और समझाने की कला में वे निपुण हैं। और संस्कृति के उन्नयन में सेठी जी का अपूर्व योगदान है। समाजोत्थान के कार्यों में सेठीजी अपने जीवन के प्रभात से ही अग्रणी रहे हैं। मानवीय गुणों से अलंकृत सेठी जी एक बेजोड़ इंसान हैं। देश और समाज में उनकी सेवायें स्वर्णिम अक्षरों में लिखने योग्य हैं। हीरक वर्ष के उपलक्ष्य में मैं उनका हृदय से अभिनन्दन करता हूं।

☐ ☐ ☐

प्रेरणादायक

प्रो० दयाचन्द्र शास्त्री
प्रवन्ध्यापक
जैन बोर्डिंग उज्जैन

मैं पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी से लगभग 35 वर्ष से सम्पर्क में हूं। इतना समय उनके व्यक्तिनिष्ठ चरित्र व समाज सेवाओं का आकलन करने के लिए पर्याप्त है। वे विलासिता से परे संयत एवं मितव्ययी जीवन व्यतीत करने वाले महत्त्वाकांक्षी विद्वान हैं। श्री स्व० पं० चैनसुखदास जी के शिष्य होने के कारण उनके विचारों व कर्तृत्व की छाप पं० जी के मन पर पड़ी है। अतः हमारी सामाजिक एवं धार्मिक मान्यताओं में समय व परिस्थितियों के साथ जो परिवर्तन व कमजोरियां आई हैं, उनका विरोध कर समाज में स्वस्थ परम्पराओं के पुनर्स्थापन के पक्षधर हैं और इस दृष्टि से समाज की छोटी बड़ी संस्थाओं तथा समाचार पत्रों के माध्यम से अपने सामयिक विचारों को समाज के समक्ष उपस्थित कर उक्त ध्येय की पूर्ति में संलग्न रहते हैं। साथ संस्थाओं की कमजोरियों के विरुद्ध अपनी आवाज उठाते रहना भी उनका प्रमुख लक्ष्य है।

आज 72–73 वर्ष की आयु में जो स्फूर्ति, दक्षता एवं कार्य करने की लगन उनमें दिखाई पड़ती है वह युवक समाज के लिए भी अनुकरणीय व प्रेरणा दायक है।

आज से लगभग 35 वर्ष पूर्व उन्होंने उज्जैन को अपना कार्यक्षेत्र बनाया था। मूलतः वे भादवा (राजस्थान) के निवासी हैं। उज्जैन में श्रीमान् स्व० सेठ लालचन्द जी साहब सेठी व उनके परिवार का उन्हें विशेष सहयोग व संबल मिला, जिससे वे जीवन के हर क्षेत्र में आगे बढ़े व सफल भी हुए। आज उनका पारिवारिक जीवन सब प्रकार से सुविधा-सम्पन्न अनुशासित एवं सुसंस्कारित है।

इस स्वागत में समारोह की वेला में मैं उनके दीर्घ जीवन का शुभाकांक्षी होते हुए आशान्वित हूं कि उनकी सेवाएं समाज को चिरकाल तक मिलती रहें।

☐ ☐ ☐

अनूठे कर्मयोगी
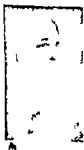
डा० (श्रीमती) दुर्गा परमार
सदस्य-मध्यप्रदेश पाठ्य पुस्तक निगम,
सचिव-जिला शिक्षा परिषद
सदस्य-आल इण्डिया फेडरेशन
आफ एजूकेशन, उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी से मैं कुछ वर्षों पूर्व सम्पर्क म आई। सामाजिक, शैक्षिक एव धार्मिक क्षेत्र मे राष्ट्रीय स्तर पर उनके द्वारा किये जाने वाले अनगिनत कार्यों को देखकर मैं स्तब्ध सी रह गई। सरल, सहज स्वाभाविक प्रकृति का व्यक्तित्व जिसम "सादा जीवन उच्च विचार" के सिद्धान्त को अंगीकार कर राष्ट्र को ऊपर उठाने म अपना सवस्व समर्पित कर दिया है। ऐसे व्यक्तित्व के विषय म कुछ लिखना सूर्य को दीपक दिखाना होगा।

आदि शक्ति की प्रतीक नारी का सामाजिक सकीर्णता वाला स्वरूप आदरणीय पण्डित जी को कभी नहीं भाया। वे नारी के हर स्तर पर पक्षधर रहे, सामाजिक कुरीतियो से अलग कर उसका स्वच्छ एव स्वस्थ शिक्षित रूप समाज के सम्मुख लाये। उनकी अन्तरात्मा आदि शक्ति नारी को अपमानित होने, विज्ञापनो मे खुली देखने, अशिक्षित, अधार्मिक और असामाजिक रूप मे देखकर मन म अकुलाहट और छटपटाहट भी दिखाई दी। उन्होने दृढ सकल्प किया कि वे वतमान म नारी के स्वरूप म जो विकृति आ गई ह उसे और उस स्वरूप को अङ्गीकार करने वाली दोषी मनोवृत्तिया को जड स जब तक नाश नही कर देंगे वे शाति महसूस नही करेंगे। दृढ निश्चयी मनीषी धर्मराज, कर्मयोगी, समाज के भीष्म पितामह प० सत्यधर कुमार जी सेठी की हीरक जयन्ती पर हमारी शत-शत हार्दिक बधाई अर्पित है।

समाज का एव राष्ट्र का यह देदीप्यमान दीप दीर्घायु हो और अपनी दीप्ति से, समग्र राष्ट्र का पथ प्रदर्शन करें, यही मगल कामना परम् पिता परमात्मा से है। यह कर्मयोगी चिरायु हो।

□ □ □

उनका हर पल, सुखी और प्रसन्न हो

श्री देवेन्द्रकुमार जैन
प्रोफसर एव अध्यक्ष
हिन्दी विभाग एव प्राचाय
महाविद्यालयी शिक्षा विभाग,
इन्दौर

श्री सत्यधर कुमार सेठी को म उज्जैन क निवासी क रूप में जानता हू, यह भी अखबारो म उनका पढकर, म भी सोचता रहा हू कि मालवा की मिट्टी ने इतना सुदृढ व्यक्तित्व कसे गढ लिया ? पर आपकी परिचायिका म यह जानकर कि मूलत वे राजस्थानी है, समझ म आ गया कि श्री सेठी जी का व्यक्तित्व राजस्थानी पुरुषार्थ सस्कार और मालवा की मिट्टी म निर्मित है। परिचायिका मे मैंने यह भी जाना कि श्री सेठी का कार्यक्षेत्र उज्जैन और जैन समाज तक ही सीमित न होकर, व्यापक है। उनका व्यक्तित्व बहु आयामी ह। मेरा उनसे बहुत आत्मिक और सीधा सम्पर्क [illegible] ही उतना थोडा भी सेठी को हो र। सम्पर्क और परिचय [illegible] ज्यादा जाता है [illegible]

के अल्बम में उसे सजोकर रख लिया जाता है, यह चमत्कार खूबी मैंने सेठी जी में ही देखी।

वह स्वनिर्मित निर्भीक और उदार व्यक्ति हैं आन-बान के पक्के, कलम के धनी और स्वभाव के फक्कड़ हैं। मनुष्य के प्रति उनका लगाव, उनकी मानव-सेवा की पहली सीढ़ी है। उन्हें राष्ट्रीय और धार्मिक व्यक्ति कहलाने में कोई झिझक नहीं। कलम का ऐसा धनी और कल्पना को आकार देने वाला ऐसा शिल्पी, कोई दूसरा देखने में नहीं आया। खासकर आजकल के इस युग में, जिसमें झूठ तथा सत्य को मात दे जाता है जिसमें शब्द अपना अर्थ खो चुका है या उसके अर्थ का अवमूल्यन हो गया है।

यह विरोधाभास भी सेठी में ही है कि वे सेठी होकर भी पण्डित कहलाने में संकोच का अनुभव नहीं करते, उनका "पाण्डित्य" आजीविका से जुड़ा हुआ नहीं है। आजीविका से वह व्यवसायी हैं सेवा उनका मिशन है, उनकी जिन्दगी खुली किताब है, जिस पर खद्दर का जिल्द है, उसमें गोपनीय कुछ नहीं है, खुरदरा कुछ नहीं है, परन्तु उसके भीतर ममता का महीन पर्त है। यह भी कम अजूबा नहीं कि उनकी तीन शादियां हुई हैं, फिर भी नाम है "सत्यधर कुमार"। मेरी एक मात्र यही शुभकामना है, उनका प्रत्येक पल, शुद्ध स्वास्थ्य और सेवा का पल हो, उन्हें जन-सेवा के क्रम से नित्य नई ऊर्जा मिले जिनसे वे देश और समाज के दूषित आध्यात्मिक पर्यावरण को शुद्ध कर सकें। उनका हर पल स्वस्थ और प्रसन्न हो।

□ □ □

सर्वमान्य

श्री पं० नाथूलाल शास्त्री
इन्दौर

श्री पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी से मैं बहुत समय से परिचित हूं। वे स्वाधीन व्यापार के कारण विद्वानों का गौरव बढ़ाते हुए निष्पक्ष एवं निर्भीक होकर सोत्साह समाज की सेवा करते रहे हैं। जनता ने उनका बड़ा सम्मान है। उज्जैन में तो किसी भी समारोह में चाहे वह जैन समाज का हो या जनेतर समाज का, उनका प्रमुख हाथ रहता है। वहां उनके नेतृत्व में ही सब कार्य सम्पादित होते हैं। वह न्यायसम्पन्न सदा अहिंसक और प्रामाणिक आजीविका से सन्तोष धारण करते हुए आनन्दमय जीवन व्यतीत कर रहे हैं। रहन-सहन और व्यवहार में उनकी सादगी एवं सरलता अनुकरणीय है। उनकी धाराप्रवाह वक्तृता और अनेकान्तमय विचारधारा से मैं प्रभावित हूं। जैन समाज के प्रसिद्ध विद्वान् स्वनामधन्य पं० चैनसुखदास जी के शिष्यों में इनका विशिष्ट स्थान है। जिन्होंने उन प्रभावशाली एवं क्रान्तिकारी विद्वान् मनीषी के साथ समाज सुधार के अनेक आन्दोलनों में सफलता प्राप्त की है।

मेरी अपेक्षा है कि सेठीजी व्यापार और गृहकार्य से निश्चिन्त होते हुए किसी सामाजिक सेवा के उत्तरदायित्व को वहन करें, क्योंकि वे किसी भी जिम्मेदारी को निभाने में सक्षम है। उनसे समाज को कोई काम लेना चाहिए। मैं उन्हें अभी श्रान्त, क्लान्त और निवृत्त नहीं मानता।

इस अभिनन्दन के शुभअवसर पर उनके प्रति हार्दिक मंगल कामना है।

□ □ □

सस्कृति सरक्षक

श्री डा प्रेम सुमन जैन
विभागाध्यक्ष,
जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

जैन सस्कृति के प्रचार प्रसार के लिये आपके मन में अपूर्व ललक है। उसी से प्रेरित होकर आप स्वय जैन धर्म की सेवा मे सलग्न है और दूसरो को भी उसमे प्रेरित करते है। आपकी स्पष्टवादिता प्रसिद्ध है। ऐसे निर्भयी एव सस्कृति सरक्षक विद्वान सेवक शतायु हो, यही हार्दिक कामना है। पण्डितजी को अनन्त प्रणाम।

□ □ □

ओजस्वी व्यक्तित्व

श्री फूलचन्द शास्त्री
'पुष्पेन्दु'
प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री एवं समाज सेवी
खुरई (सागर)

"कहा राजा भोज और कहा गंगू तेली ?" इस ऐतिहासिक लोकोक्ति को अब यों चरितार्थ कीजिये कि कहा तो मध्यप्रदेश जैसे विशद् राज्य के बड़े-बड़े शहर और कहा उसके एक कोने मे पड़ी हुई खुरई नगरी ? परन्तु जैसे "कीटो अपि सुमन सगात् देव मस्तके विराजते" वैसे ही खुरई ने भी कुछ अनूठे व्यक्तित्वो की भक्ति से जैन जगत की नजरो मे चकाचौंध उत्पन्न कर दी है।

उत्तरीय भारत की इकलौती शिक्षण सस्था श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन गुरुकुल की अवस्थिति ने तो इसे और भी अधिक उजागर कर दिया है। इस नगरी ने धर्म, समाज और सस्कृति को स्वय भी मुनि, आर्यिका, ऐलक, व्रती आदि जैसे रत्न दिये हैं। जिन जिन व्यक्तियों ने इस नगरी पर जादू डाला है उनमे से एक नाम है हमारे चरित नायक पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी का।

सन् 1944 में मैं मात्र एक 18 वर्षीय नवयुवा छात्र था। जैन पत्रो मे तत्कालीन अ० वि० जैन मिशन की सूत्र प्रेरणास्पद गतिविधिया पढ़ कर मुझ मे ऐसी सामाजिक धार्मिक चेतना जागी कि इस सस्था के लिए मैं विकाविक जाना चाहता था। श्रद्धेय स्व० बाबू कामताप्रसाद जी से पत्र व्यवहार किया। उनके जादुई पत्रो ने मुझे उनका तो भक्त बनाया ही साथ ही परिचय कराया पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी, उज्जैन और श्री विमल सेनानी से।

उनका साक्षात्कार करने मैं सपत्नीक उज्जन पहुचा और उनके क्रांतिकारी विचारो से दीक्षित होकर लौटा। फिर तो मिशन का काय स्थानीय विद्वान पण्डित कमल कुमार जी शास्त्री कुमुद के सहयोग से निरन्तर करता रहा और सन 1955 मे जब द्रोणगिरि सिद्धक्षेत्र पर मिशन का पाचवा अधिवेशन हुआ तो सम्माननीय सेठी जी के निर्देश पर सवाई सिघई मथालाल जी गुढ़ा को अ० दि० जन मिशन का अध्यक्ष मनोनीत किया गया। गुरहाजी 5 वर्षो तक मिशन के अध्यक्ष रहे और यहा से हजारो की राशि केन्द्र को भेजी गई। तदुपरान्त उन्ही सेठी जी की प्रेरणा से सर्राफ श्री माणिकचन्द जी वडकुल खुरई विगत 15 वर्षो तक मध्यप्रदेशीय मिशन शाखा के अध्यक्ष रहे। पुन उन्ही की कृपा से खुरई के उत्साही कायकर्ता प० वावूलाल जी वैद्य दो वर्षो मे अध्यक्ष पद पर प्रतिष्ठित हैं।

यहा मैं प्रौढ परन्तु युवा हृदय श्री सेठी जी के सन्दभ की बात करते हुए हर्षित हू कि कायकारिणी समितियो अथवा खुले अधिवेशनो मे उनके ओज स्वी भाषण मुर्दा दिलो मे भी सामाजिक, धार्मिक चेतना के प्राण फूकते हैं। उनके सुधारवादी विचार वचनात्मक ही नही रचनात्मक है। जितने भी प्रस्ताव उनके द्वारा लाये गये वे सब सफल एव मूर्तिमान हैं। उनके व्यक्तित्व पर मैं ही मुग्ध नही हू बल्कि खुरई की सम्भ्रान्त समाज उनके धम प्रचार लगन की भूरी भूरी प्रशसा करती है।

☐ ☐ ☐

अगाध प्रेमी

श्री वावूलाल जन शास्त्री
प्रि[illegible]
जैन [illegible]
[illegible] ([illegible])

यह जान कर कि पडित सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जैन निवासी का अभि नन्दन किया जा रहा है, हर्ष हुआ। मैं तो सोचता हू जन समाज के इस सामयिक कदम न अपनी सूझबूझ से एक कमी की पूर्ति की है।

प० जी बडे ही मिलनसार, निरभिमानी, समाज सेवा ए[illegible] स[illegible]ल प्रकृतिक हैं। म स्वय ही उज्जन निवासी होने के कारण इन्हे अति निकट स जानता हू और यह दावा करता हू कि जब कभी भी कोई इनसे मिलता है तो इनके व्यवहार मे भी मिठास, शान्ति ए[illegible] सद्भावना के दशन होते हैं। अपनी व्यापार कुशलता के का[illegible]ण प० जी का नतिक, आर्थिक एवं सेवा भावना का उच्च स्त[illegible] अनुकरणीय है। यदा-कदा कोई भी व्यक्ति अपनी किसी भी समस्या को सुलझाने हेतु पण्डितजी क पास पहुच अपनी उलझी गुत्थी को निश्छल भाव म रख देता है व सुनते ही ढाढस बधाते है तथा सरलता से सुलझा देते है। इनम किसी पर अहसान नही किन्तु अपना कत्तव्य समझकर करते हैं अन्यथा इस युग म सभी को अपनी अपनी समस्या ही नही सुलझती [illegible] भी कौन सुलझाना चाहे।

विद्वानो से तो पण्डित जी का अगाध प्रेम है क्योंकि विद्वान ही विद्वान की अंतस्थिति को आंकता । प० जी स्थानीय समाज के ही नहीं किन्तु अ० भा० जैन समाज के प्रमुख विद्वानों, समाज-सेवियो मे उल्लेखनीय है एवं मुक्त रहकर ही सेवा करते हुए कई संस्थाओ के मंत्री, व्यवस्थापक, सदस्य, संचालक आदि हैं। वे अपनी किसी भी सेवा का ढोल नहीं पिटवाना चाहते है।

पिछले दिनों पूज्य उपाध्याय 108 विद्यानन्दजी महाराज का उज्जैन मे पदार्पण हुआ था। उस समय आपने सतोषप्रद व्यवस्था की थी। प० जी की व्याख्यान शैली बडी ही रोचक एवं ठोस है क्योकि धर्म के ये अधिकारी विद्वान है। यही कारण है कि इन्हे दूरवर्ती समाज समय-समय पर आमंत्रित करती है।

पण्डित जी स्पष्टवादी होते के नाते शिथिलताचार के कट्टर विरोधी है फिर भी किसी से द्वेष बुद्धि नहीं है। सभी से प्रेम से मिलते हैं। समाज-सेवा कार्य वश अपना निजी का व्यवसायादि कार्य भी उपेक्षित कर सेवा कार्य को प्राथमिकता देते है। ऐसे नवरत्नो का जितना सम्मान किया जाय कम है। मैं इनके शतायु जीवन की शुभ कामना करता हू।

इत्य लमति विस्मरेम

☐ ☐ ☐

नितरा सुतरा अभिवन्दनीय

डॉ० भागचन्द्र जैन "भागेन्द्र"
अध्यक्ष,
संस्कृत अध्ययन तथा अनुसधान
शाला, शासकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय, दमोह (म प्र)

प्रात स्मरणीय परम पूज्य सन्त श्री गणेश प्रसाद जी वर्णी महाराज के शुभाशीर्वाद और सानिध्य ने हमारे विद्यार्थी मस्तिष्क म सर्वोदयामुखी आभिजात्य वृत्तियो को अकुरित तथा अभिसिचित कर दिया था। प्राच्य विद्याओ के यशस्वी महारथी उद्भट विद्वान स्व० डा० हीरालाल जी जैन एवं स्व० पण्डित चैनसुखदास जी, विश्व जैन मिशन के संस्थापक स्व० डा० कामता प्रसाद जी परिषद् के कर्णधार और 'वीर' के यशस्वी सम्पादक स्व० पण्डित परमेष्ठीदास जी यायतीय प्रभृति समर्थ मनीषियो के कार्य-कलापो, चिन्तन-अभिव्यक्तियो तथा उनके यशस्वी विराट व्यक्तित्व ने निरन्तर नई रोशनी, नई दिशा और समाज तथा साहित्य रचना के लिय महती प्रेरणा प्रदान की थी। तभी इन्ही दिनो सन 1959-60 म, हमारे दृष्टिपथ म एक सुविचारक मनीषी के आलय आये—जिनकी वाणी म प्रौढता, विचारो म गहराई और समाज, साहित्य, संस्कृति के विस्तृत आयाम तो थे ही, समाज के वर्तमान ढाचे के प्रति आक्रोश, दकियानूसी प्रवृत्ति पर रोष और कुरूढियो पर गहरी चोट भी था। "अहिंसा-वाणी" "वीर-वाणी

आदि मे इस क्रांति-धर्मा को खूब पढ़ता था। अद्‌भुत शैली, अदम्य साहस, अभूतपूर्व सूझबूझ और निष्पक्ष विचार प्रस्तुति उस लेखक की होती थी—जो हमारे हृदय तथा मस्तिष्क को अधिक से अधिकतर आप्यायित करती गई। वह लेखक थे—सम्मान्य प० सत्यधर कुमार जी सेठी।

विचारो से निकटतः परिचित रहने पर भी इस गुरु-गम्भीर चिन्तक से प्रथम साक्षात्कार सन 1965 66 मे उज्जन मे हुआ। एक बरात के सन्दर्भ में मैं उज्जैन गया था। वहा सर्राफा—कपड़े की दुकान श्वेत वसनधारी-श्यामवर्ण-मन्द-स्मिति-प्रभावक व्यक्तित्व के धनी एक "इन्सान" से भेंट कर परम प्रसन्नता की अनुभूति हुई। वे ग्राहक और समागत दोनो पर समान भाव से दत्तावधान एक साधक की भूमिका का निर्वाह करते प्रतीत हुए। इस प्रथम भेंट ने "यथा नाम तथा गुण ' की उक्ति को उनमे चरितार्थ पाया।

तब से लेकर प्राय प्रतिवर्ष विभिन्न आयोजनो, समारोहो सगोष्ठियो, अभिषेकों, विचार-मचो आदि विविध प्रसगो पर माननीय सेठी जी से भेंट होती है और उनकी ओजस्वी वाणी, स्फूर्ति, क्रियाशीलता, प्रत्युत्पन्नमतित्व तथा समर्पित सादगीपूर्ण जीवन ने हमे उनके प्रति श्रद्धा से अभिभूत ही किया है।

तीर्थकर प्रतिपादित सिद्धान्तों और राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के आदर्शों को व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन म कैसे पल्लवित किया जा सकता है? यह हमने सेठी जी की उपयोगितावादी प्रवृत्तियो, अहिंसक-निष्ठा सतत् जागरूकता और असाम्प्रदायिक क्रिया-कलापो के माध्यम से अनुभव किया। कपड़े का व्यवसाय करते हुए भी—'गो रक्षा' के निमित्त—"गौ रक्षक उपानह"—प्रदाय करते हुए उन्हे गौरव की ही अनुभूति होती है।

डाक मे आय लिफाफे या अन्य आवेष्टनो का पुनर्लेखन मे पूरा-पूरा उपयोग उनकी उपयोगितावादी वृत्तियो को उजागर करता है। स्वाध्याय सयम, दैनन्दिनी लेखन, समय की पाबन्दी, त्याग और विद्वता का समादर जैसे विशेष गुण एक सी स्थिति मे हमने उनमे देखे है।

विवादास्पद प्रसगो मे—जहा अधिकाश प्रतिष्ठित महानुभाव मौन धारण कर लेते है वहा विनयपूर्वक आगम और युक्तिपूर्वक विषय का प्रतिपादन करते हुए पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी सर्वत्र दिखाई देगे। वे उज्जन के पर्याय बन गये हैं। राष्ट्र प्रेम, राष्ट्रीयता, स्वदेशी वस्तुओ को प्रोत्साहन,

समाज-सुधार, शिक्षा प्रसार, कुरूढियो का उन्मूलन, सस्कृति धर्म-सरक्षण, निर्भीकता, स्पष्टवादिता, निरन्तर क्रियाशीलता और सर्वोदय की भावना उनके सहजात अभिन्न गुण है।

उज्जैन—जयसिंहपुरा का जैन पुरातत्व सग्रहालय आदि बीसो सस्थायें सेठी जी की क्रियाशीलता का मूर्तिमन्त रूप है। वस्तुत कोई भी अवसर—जहा किसी छात्र, असहाय, विधवा अथवा अन्य किसी को सहयोग/सहायता की आवश्यकता होती है—सेठी जी अन्तर्तम से उसे सहयोग करते है। सस्थाओ को नवजीवन और स्फूर्ति प्रदान करने मे सेठी जी "सजीवनी-बूटी" का काय करते हैं। किन्तु अन्याय, भ्रष्टाचरण, आगम विरूद्ध काय, बेईमानी और धोखाधडी उनकी प्रकृति के सवथा विरूद्ध है। ऐसे प्रसगो को उजागर करने मे वे सदा प्रथम पक्ति मे खडे मिलेंगे।

ऐसे प्रभा मण्डल से सवेष्ठित "पण्डित" और "सेठी"—सम्माननीय श्री सत्यधर कुमार जी का अभिनन्दन वस्तुत एक तपोपूत, नि स्पृह समाज सेवक की अभिवन्दना है। उसके प्रेरक और आदश कृतित्व का स्मरण है। हम उन्हे अपने कोटिश प्रणाम प्र पित करते हैं।

महाकवि भतृहरि के शब्दो मे—"स्वार्थो यस्य पराथ एव स हि पुमान् नृणामग्रणी"—परोपकार करना ही जिसका स्व प्रयोजन है वह मनुष्य, मनुष्यो मे अग्रगण्य होता है और "एते येष वसन्ति निमल गुणा स्तेभ्यो महद्भ्यो नम"—ये पावन गुण जिनमे होते हैं उन महान व्यक्तियो को निरतर नमस्कार है।

उनके अभिनन्दन के शुभवसर पर हमारी भावना है कि पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी जसे स्पष्टवादी, आगम सेवक, सस्कृति आराधक, साहित्य-पुरातत्व कला सरक्षक और विद्वदनुरागी चिरजीवी होवें। उनकी सेवायें धम, राष्ट्र और समाज क लिए उत्कष-विधायक होवें।
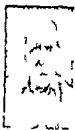
जीवेत् शरद शतम् भूयश्च शरद शतात।

□ □ □

समाज की निधि

श्री माणिक्य चन्द्र जैन
रेक्टर श्री पद्मावती जैन
बालिका उच्च माध्यमिक, विद्यालय
जयपुर
परामर्श-राजस्थान संस्कृत महा
विद्यालय, जयपुर
मंत्री-श्री प्रदीप शिक्षा केन्द्र जयपुर

जितने कष्ट कण्टका मे जिनका जीवन सुमन खिला,
गौरव ग्रन्थ उन्हे उतना ही यत्र-तत्र सर्वत्र मिला।

जिस व्यक्ति ने एकाग्रचित्त होकर जैन आगम ग्रन्थो का गम्भीर अध्ययन किया हो जिसने समूचे जैन वाङ्मय का खोजी और तार्किक विद्वान के रूप मे अनुशीलन किया हो, जिसका समूचा जीवन, जीवन की कठिनाईयो के पारावार की उत्ताल तरगों से जूझकर साहसी तैराक की भाति सागर को पारकर किनारे की ओर समाज के उत्थान के कार्यो के लिए समर्पित हो, ऐसे विलक्षण व्यक्तित्व वाले इन्सान के लिए क्या लिखा जावे ? कुछ समझ मे नही आता। वास्तव मे प० सत्यधर कुमार जी सेठी असाधारण क्षमता वाले महा मनीषी है। किसी विश्व-विद्यालय मे शिक्षा प्राप्त करके पण्डित सेठी जी ने न्यायतीर्थ, शास्त्री या दर्शनाचार्य की उपाधि प्राप्त नही की है। फिर भी वे अपने ढग के बेजोड पण्डित है। सेठी जी हिम्मत के धनी और साहस के पुतले है। उनकी वाणी मे तेजस्विता और ओज है। उनकी भाषा मे माधुर्य और लालित्य है। उनकी सूझबूझ निराली और अनूठी है। वे तार्किक हैं और शास्त्रज्ञ है। अत वास्तव म विवेकशील पण्डित है।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी देश और समाज की अमूल्य निधि हैं। उनका जीवन अनुकरणीय है। म लगभग 45 वर्षो से उन्हे जानता हू। वे सुधार वादी होने के साथ-साथ समन्वयवादी विचारक भी है। स्पष्ट वक्ता और कुशल लेखक भी हैं। अनेक बार भव्य समारोहो मे उनका सम्मान हो चुका है। कई स्थानो पर वाणी भूषण और व्याख्यान वाचस्पति की उपाधियो और पदवियो म उनको अलकृत किया गया है। उनकी कार्यक्षमता अदम्य उत्साह, साहस और सूझबूझ के कारण देश मे हमारे समाज की अनेक सस्थाओ ने सेठी जी को अपना नेता माना है। आज भी सेठी जी अखिल भारतीय अनेक जैन सस्थाओ के शिरोमणी है।

सेठी जी का जीवन सादा जीवन और उच्च विचार का प्रतिबिम्ब और प्रतीक है। प्रात स्मरणीय स्व० पण्डित चनसुखदास जी न्यायतीर्थ के शिष्यो म सेठी जी को महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। श्रद्धेय पडित चनसुखदास जी की भाति सेठी जी भी धीर, वीर और निर्भीक है। सेठी जी जैन दर्शन और तत्व ज्ञान के ज्ञाता होने के साथ-साथ निश्चय और व्यवहारनयो को खूब समझते हैं।

समाज की वस्तुस्थिति का भी उन्हें ध्यान रहता है। असहाय, विधवाओ और निर्धन छात्रो के हित की ओर उनका सदा ध्यान रहता है। हमारे समाज का मान और सम्मान बढे इस ओर भी उनका प्रयास रहता है।

सेठी जी दीर्घजीवी हो। उनके हीरक वर्ष के अवसर पर म उनका हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

☐ ☐ ☐

ज्वाज्वल्यमान प्रेरणा
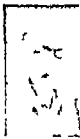
श्री मन्नालाल जन
रिसर्च स्कॉलर,
रुड़की विश्व विद्यालय
रुड़की (उत्तर प्रदेश)

गुलाब महकता है उपवन, काटो की परवाह न करते हुये। पण्डितजी ने कठिनाइयो से जूझते हुये, अपने आपको, शाश्वत सामाजिक मूल्यो, जैन संस्कृति व जन पुरातत्व के लिए समर्पित कर दिया है। सम्पूर्ण मालवा व मध्यप्रदेश का आगन, पण्डितजी की प्रेरक गतिविधियों से सुरभित है।

वर्तमान युग मे महावीर के शाश्वत सिद्धान्तो की उपयोगिता, युवा पीढ़ी की कुण्ठा एव ओजस्वी चेतना मे, समन्वय का समीकरण पण्डितजी के ओजस्वी एव प्रखर चिन्तन का ही परिणाम है। भारत मा के सपूत "पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी" का यह कार्य युवा पीढ़ी के लिए एक ज्वाज्वल्यमान प्रेरणा स्त्रोत है।

अपनी अन्तरग चर्चाओ मे मैंने पण्डित जी को, स्वय के लिए निम्नलिखित रूप मे, कहते पाया है :—

सुलगना है कुछ ऊदबत्ती सा, जिसे सुलगन से शिकायत नहीं है।

धु आ है, कसक है, किन्तु महक है, कड़वाहट नही है।

इसी तरह सुलगे ये जिन्दगी, तो मुझे सुलगन से शिकायत नही है।

प्रभु से प्रार्थना है कि पण्डित जी दीर्घायु हो व उनका अनुकरणीय मार्गदर्शन न केवल जन समाज वरन् सम्पूर्ण युवा पीढ़ी द्वारा राष्ट्र निर्माण के कार्य को गति प्रदान कर सके।

□ □ □

खरे स्वभाव : निखरे विभाव

विद्यावारिधि
डा महेन्द्रकुमार प्रचण्डिया
सुप्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री,
लेखक, समाजसेवी एव शोधकर्त्ता,
अलीगढ (उत्तर प्रदेश)

अनेक अब्दियां-दशाब्दियां बीत गई, सो बीत गई, पर बात लगती है कि आज कल की है। निरी नई। स्वर्गीय बाबू कामता प्रसाद जैन, संस्थापक संचालक अखिल विश्व जन मिशन, अलीगंज एटा के साथ मिशन के भोपाल अधिवेशन मे सम्मिलित होना हुआ था।

गणमान्य राजनेता, सुधी समाजी तथा विद्वान्-मनीषी के बीच मुझे एक व्यक्ति दूर से निराला परिलक्षित हुआ। खादी का श्वेत परिधान, श्वेत शिर पर उगे काले कुन्तल-कुस पैनी आखें, चमकता चेहरा, छोटा-सा बैग थामे मच पर चकई-लट्टू की भाति थिरकता कमाल का ऊर्जा सम्पन्न स्वस्थ यष्टि धारी, पूरे कार्यक्रम का सूत्रधार, दर्पण की नाई जाना-पहिचाना सा व्यक्तित्व नाम धाम पूछने पर ज्ञात हुआ कि ये महाशय उज्जैनवासी पण्डित सत्यधर कुमार सेठी हैं। तब की भेंट अब तक अटूट है सो है। सभाओं मे अनेक बार

भेंट हुई, होती रही। उज्जैन भी मुझे बुलाया गया। घर बाहर निरी सादगी का साहूकार। सुधारवादी नेता की भूमिका निर्वाह करने में सेठीजी साधारणत असाधारण प्रमाणित होते रहे।

साधु-सन्यासी, विद्वान-मनीषी यदि कहीं पर रिक्त अथवा अतिरिक्त प्रतीत हुए तो सेठी जी द्वारा शाब्दिक सत्कार-बौछार बिखर जाती। ऐसा निडर अक्खड आत्मीय जन मुझे पहले-पहल देखने को मिला। समाज में व्याप्त तमाम रूढ़ियों के विरुद्ध आवाज उठाने वाला 'सेठी दशाब्दियों जूझता रहा। सफल असफल सगमधारा में डूबता उतराता 'सेठी आज भी साठ में ठाठ का जीवन जी रहा है। समाजी आज उसका मान-सम्मान कर रहे हैं—सा वस्तुत बड़ी बात है। मेरे विचार में सेठी जी का सम्मान, समाज सेवी का सम्मान है। भीतर की भावना है कि सेठी जी यावज्जीवन निरभिमानी बने रहें और चारित्रिक तेज की त्रिपथगा प्रवाहित होती रहे ताकि व्यक्ति, समूह और समाज में चौकसी बनी रहे।

देश की तमाम सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक संस्थाओं से सेठी जी जुड़े रहे हैं। सभी संस्थायें प्रोन्नत हुई हैं जिनसे उनकी कार्यकुशलता प्रमाणित होती है।

सेठी जी ने आराम के वातायन से जिन श्रम को समझा-बूझा है। वे रूढ़ियों के एकदम विरोधी रहे हैं। आपके जीवन का मिशन रहा है सादा जीवन, उच्च विचार। सिद्धान्त यदि जीवनचर्या में न उतरें तो सेठी जी के विचार में वे किसी काम के नहीं। श्रममय जीवनचर्या स्वस्थ और सुखद हुआ करती है।

सेठी जी शतायु हों, सुखी-सुखद जीवन जीएं और समाज को विकृतियों से बचायें—उबारें ऐसी मेरी मंगल कामना है। इन शब्दों के साथ सम्मान के अवसर पर मेरा हार्दिक सम्मान भाव उन्हें अर्पित-समर्पित है।

□ □ □

न्यायम मान मुनियोंअसम साहित्य सेवक।
जायत गम्य रे श्रेष्ठी जन वारिम दिवाकर॥

□ □ □

[illegible] अभिनन्दनम्

निश्छल व्यक्ति

आचार्य श्री राजकुमार जैन
भारतीय चिकित्सा
केन्द्रीय परिषद
नई दिल्ली

समाज सेवा और समाज सुधार ऐसे कार्य है जिन्हे विरले ही व्यक्ति कर पाते हैं। समाज सेवा और समाज सुधार की बात करना जितना आसान है उतना ही कठिन रचनात्मक रूप से समाज की सेवा करना और समाज का सुधार करना है। श्रद्धेय प० सत्यधर कुमार जी सेठी ऐसे ही विरले व्यक्ति है। मैंने अनुभव किया कि वे अपनी धुन और लगन के पक्के है। उनमे स्वाभिमान तो है, किन्तु मिथ्याभिमान रचमात्र भी नही है। सम्भवतः इसी का परिणाम है कि आप स्वभाव से सरल एव प्रकृतित निश्चल व्यक्ति है। जिन्होंने पण्डित जी साहब का निकटता से देखा है वे तो आपके इस स्वभाव एव प्रकृति से भी भली भाति परिचित है ही, जिन्हे अल्प समय के लिए भी पण्डित जी साहब का सान्निध्य प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ वे भी उनकी इस स्वभावगत उक्त विशेषता से परिचित हुए विना नही रह सके।

आपकी एक मौलिक विशेषता यह है कि आप कट्टर सिद्धान्तवादी नही है। आपके पाण्डित्य मे मात्र शास्त्रीय ज्ञान को ही महत्व प्राप्त नही है अपितु ज्ञान की महत्ता एव सार्थकता तब होती है जब उस ज्ञान को आचार विचार म प्रायोगिक रूप दिया है, अर्थात् आचरण (सम्यक चरित्र) के बिना ज्ञान अपूर्ण है। यही कारण है आपने ज्ञान की अपेक्षा आचरण पर अधिक बल दिया। आप अपने जीवन मे भी इसका पालन करते आ रहे हैं। आपके विचारानुसार ज्ञान को जब तक आचरण म नही उतारा जाता तब तक वह निष्फल एव निष्प्रयोजन है।

जिस समाज में विषमतायें व्याप्त हो और रूढियो का बोलबाला हो उसम सुधार का काम करना एक टेढी खीर के समान है। यह काम केवल वही कर सकता है जिसमे लगन के साथ निर्भीकता हो। समाज सुधार के मामले म पण्डित जी सर्वथा निर्भीक एव कमठ रहे है। यही कारण है कि आज वे कमठ समाज सेवी के रूप म जाने जाते है। आप प्रारम्भ से क्रान्तिकारी समाज सुधारक के रूप म जाने जाते रहे है। आपने एक सच्चे कार्यकर्ता के रूप म समाज की सच्ची सेवा की है और कर रहे है। आपको कभी भी पद मोह ने व्यामोहित नही किया और न ही कभी आपने समाज म नतृत्व की अभिलाषा की।

जिनवाणी के प्रति आपकी अटूट आस्था एव अगाध श्रद्धा है। आपकी एक विशेषता यह भी है कि समाज म जब भी कभी विद्वानो के वग विशेष न विवाद या प्रपच को उठाया तो उससे आप सदव दूर रहे। यह निर्लिप्तता आपके ज्ञान की गरिमा और स्वभाव, वाणी की गम्भीरता की द्योतक है। आपकी सात्विक वृत्ति, मृदु और सरल स्वभाव, वाणी माधुर्य एव वाक्पटुता

आपके सहज स्वाभाविक गुण हैं। आपकी विचारधारा में गांधी जी के दृष्टिकोण एवं चिन्तन का अनुसरण जैन धर्म के सर्वोदय सिद्धान्त को प्रतिध्वनित करता है जिससे आपके विचारों की व्यापकता एवं उन्नतता सहज ही ज्ञात होती है। आप सही मायने में समाज के सच्चे हितैषी एवं शुभचिन्तक हैं। समाज आपकी सेवाओं के लिए आपका आभारी है।

कुछ वर्षों तक मुझे आपके निकट सम्पर्क में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। मैंने अनुभव किया और पाया कि "सादा जीवन उच्च विचार" की आप साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। सादगी का दामन अपनी जीवन सहचरी के रूप में स्वीकार कर उच्च विचारों को सदैव प्राथमिकता दी है। यही कारण है आपका जीवन आडम्बर, दिखावा और कृत्रिमता से सर्वथा शून्य है। कर्मठता आपका एक सहज स्वाभाविक गुण है और समाज सेवी के रूप में उसने आपकी प्रतिष्ठा को द्विगुणित किया है। आपकी और विशेषता मैंने लक्षित किया कि मानवीय मूल्यों के प्रति आपकी अटूट आस्था है और कठे भी भीषण आघात कार्यक्षमता और विलक्षण प्रतिभा आपके जीवन की कर्मठता को सहज ही उजागर करती है।

आपका सम्पूर्ण जीवन सादगीमय रहा है जिसे अनेक संघर्षों का सामना करना पड़ा। किन्तु आपने अपूर्व धैर्य एवं साहस के साथ उन पर विजय प्राप्त की। यह एक महत्वपूर्ण तथ्य है कि समाज सेवा की आड़ में आपने अपने लिये कभी कुछ नहीं किया। अपितु जो कुछ किया वह समाज के लिए, समाज में धार्मिक भावना को निरन्तर बनाए रखने के लिए किया।

ऐसे समाज सेवी कर्मठ व्यक्तित्व का अभिनन्दन किया जाना सर्वथा सामयिक है। यह वस्तुतः एक सुखद प्रसंग है। इस अवसर पर मैं प० साहब के प्रति अपनी अभिनन्दनांजली अर्पित करता हूं और उनके सुखद सुदीर्घ जीवन की कामना करता हूं।

□ □ □

शत शत अभिनन्दन

डा० राममूर्ति त्रिपाठी
आचार्य एवं विभागाध्यक्ष
हिन्दी विभाग
विक्रम विश्वविद्यालय,
उज्जैन

अभिनन्दन श्रद्धेय का होता है और श्रद्धेय वह होता है जो श्रद्धा पात्र हो। श्रद्धा का पात्र वह होता है जिसमें लोकमंगलोपयोगी अलौक सामान्य गुण हो, अलौक सामान्य गुण ही श्रद्धेय के प्रति पूज्यत्व बुद्धि का संचार करते हैं और ऐसे श्रद्धेय का सन्दर्भ आते ही श्रद्धालु और आनन्द निर्भर बना लेते हैं। अभिनन्दन एक प्रकार का लोक या समाज की ओर से श्रद्धेय द्वारा सम्पादित लोक मंगल के निमित्त किया गया कृतज्ञता ज्ञापन व्यक्ति के प्रति भी

होता है, पर वह व्यक्तिगत उपकार के प्रति होता है और इसे कृतज्ञता ही कहेंगे—अभिनन्दन नहीं। अभिनन्दन ऐसे उपकार के प्रति किया जाता है जिससे अभिनन्दन करने वाले का व्यक्तिगत उपकार हुआ हो या न हुआ हो पर वह जिस समाज का अग है उसका उपकार अवश्य हुआ हो। जिस समाज मे ऐसे आलोक सामान्य गुणो से सम्पादित व्यक्तित्व लोगो की श्रद्धा का आकषण हो वह समाज भी स्मरणीय है। वह समाज पनप नहीं सकता जिसमे अलोक सामान्य लोक मागलिक गुणो से आकृष्ट करने वाला व्यक्ति न हो। हर्ष की बात यह है कि यह सन्दर्भ आकृष्ट करने वाले लोग मगल विधायक आलोक सामान्य गुण सम्पन्न पण्डित सत्यधर कुमार सेठी है और है उस समाज का जो ऐसे व्यक्तित्व के प्रति आकृष्ट होता है। जहा आकषण का यह व्यवहार चलता है वह समाज हरा भरा हो जाता है। उस समाज मे श्रद्धालुजन के हृदय मे मेघ-श्रद्धा की ऐसी घटाए उठती है जो समाज के आकाश मे छा जाती है और बरस कर सारे समाज को हरा-भरा कर जाती है।

पण्डित जी का मुझसे व्यक्तिगत सम्बन्ध वर्षो से पुराना है। प्राय पर्यूषण पर्व, महावीर पचशती वर्ष, महावीर जयन्ती के पर्व पर तो आप अपने साथ समारोहो से मुझे जोड़े ही रहते है। यो भी चातुर्मास मे साध्वियो और सतो के शुभागमन पर भी अपने द्वारा अपने समाज द्वारा दी जाने वाली भावाजलियो मे मुझे साथ रखते है। साम्प्रदायिक अराजकता उनकी लोक मागलिक चेतना को किस प्रकार उद्विग्न करती है—मैने देखा है। इस तरह की कटुताओ को शात रखने के निमित्त अथक दौड धूप उनके स्वभाव मे है। उज्जयिनी से तो वे इतने एकरस है कि उनके बिना कोई लोक मागलिक समारोह सम्पन्न ही नही होता।

यही नही कि वे जैन समाज के ही पुरोहित है, सच्चे अर्थो मे प्राचीन परम्परा के अनुसार राष्ट्र मे विषय मे जागरूक रहने वाले पुरोहित है।

"वय राष्ट्रे जागृयाम पुरोहिता"—

सर्वोदय समाज या सर्वोदय सस्था जैसी लोकमगल का सकल्प लेकर चलने वाली सस्था के आप उपाध्यक्ष रहे है और आज भी उससे सबद्ध हैं। यह रूप आपके व्यक्तित्व को सम्प्रदाय के घेरे से ऊपर उठाकर लोक मगल की व्यापक वेदिका पर प्रतिष्ठापित करता है।

वास्तव मे पर दुःख कातरता ही मानवता है। जो लोक मगल का बीजभाव है। इससे बडा कोई धर्म नहीं है। यही भाव समाज और लोक का निर्धारण करता है। इसी से लोक और परलोक गत सम्प्रदाय तथा नि श्रेयस की उप

लब्धि होती है। ऐसे महान् श्रम की प्रतिमूर्ति पण्डित सत्यंधर कुमार सेठी का शुभाभिनन्दन करते हुए मुझे अपने अस्तित्व की चरितार्थता महसूस हो रही है। इस अवसर पर आयोजकों को साधुवाद दिए बिना नहीं रहा जाता।

□ □ □

A Dynamic Leader

Dr B B Raynade
Ujjain (M P)

The life of Pt. Satyandhar kumar ji is a brilliant examples of the unfloldment of intrinsic qualities in man, althrough seem to be suppressed temporarity they take time to emerage with full vigour and vitality Given the intellect, will power and guts, one can develop the inherent qualities and acquire an honourable and dignified position in Society Panditji rose from an humble position, practically ignored by the community to such a status that the same community cannot afford to ignore him The Jain community of Ujjain is fortunate to have a strong-willed leader, will-wisher of sound scholarship, and an earnest educationist in Pt satyandharji He broughut about solidarity in the community and gave a fresh impetns to implement mod rn technique in education, at the same time tried successfully to impart the knowledge of jainism in the sehools run by the Jain Community, in the traditional manner, Superficially it may sound impracticable, even chemerish, to bring about such a synthesis of the traditional lose of learning and modern education, such a synthesis is again not incompatible with the success in business Panditji is a living example of all such apparently contradictory qualities.

He is a bold champion to promote the spread of Jainism in its broad perspective he is a fearless critic of mithyadrishk To celeprate once on the eve of Divali, I casually asked him whether he worships Laxmi, the Goddess of wealth as a businessman This was enough to provoke him He expressed his utter contempt of such puja as sheer nonsense he demonstrated his disgust in a way, as if he were going to trample Laxmi under his shoes It shows

splendidly how Panditji is a man of conviction and guts Any other businessman would deem it a sacrilege.

Another notable contribution of Panditji is to collect the archiological finds found scattered throughout Malva, thanks to his crusading spirit, several idols of Thirthankars Yaksas and Yaksanis etc are brought to Ujjain and well preserved in the backyard of the jain temple at Jaisinghpura outside the city of Ujjain. Panditji is still in search of such funds Although he is not keeping sound health, his zeal and zest for social service remains undiminished He can accept invitations from distant places on the eve of Paryusan Parve only to extend the sphere of his social contacts and committments.

Panditji is a patron of scholars. He will not spare efforts to help the growing scholars Several persons have been benefited by his generosity He was instrumental in holding Seminars on Jainism without the usual grants from Government bodies and without much fanfare and publicity, he shuns publicity 'He never tries to project his own image through seminars and functions, but tries to project a grand image of the permanent significance of Jainism Pt Satyandharji is a well-drilled Pandit without being pedantic Here is Pandit Satyandharji, who literally lives by Satya and tries to actualise the Jainistic teachings in his life

□ □ □

तेजस्वी मानव

श्री लक्ष्मणसिंह गहलोत
प्रधाना यापक
श्री दि जैन ज्ञानसागर कन्या विद्यालय,
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार सेठी जी साहब मन, वचन और कम स देश के एक सच्चे एव कमठ समाज-सेवी होकर अनेक मानवीय गुणो से विभूषित है। आपके जीवन तथा कार्यों के सम्बन्ध म जितना भी कुछ कहा तथा लिखा जाय उतना ही थोडा है और होगा मानो "सूय का दीपक दिखाना" फिर भी हृदय माननीय पण्डित जी के विषय म कुछ पक्तिया लिखने को लालायित है और कृतज्ञ भी है ऐसे महान व्यक्ति के विचारो और कार्यों के सुन्दर समन्वय का।

मान्यवर पण्डित जी भगवान महावीर के अमर सन्देशा के प्रति पूण आस्था

वान होकर उनके प्रचारक एवं प्रसारक भी हैं। आपके दैनिक जीवन में आदर्शों की सुन्दर झांकी प्रत्यक्ष दृष्टिगत होती है। आप प्रातः से रात्रि विश्राम तक सदा ही सत्य संकल्प को साकार करते हुए लगते हैं समाज सुधारक नवयुवकों के प्रेरणास्रोत, महात्मा गांधी के सिद्धान्त 'सादा जीवन उच्च विचार" की साक्षात् मूर्ति, मानवीय गुणों से अलंकृत होकर तत्सम्बन्धी कार्यों के संरक्षक और समर्पित जीवन के आदर्श, सुलेखक एवं समालोचक भी हैं।

महामना सेठी जी धार्मिक, सामाजिक तथा राष्ट्रीय सेवाओं में सदा अग्रणी, समाज में कुरीतियों को मिटाने में बड़े साहसी, वाणी से निर्भीक, कटु सत्यवादी, विचारों में चट्टान जैसे अडिग और आए समय बड़े गम्भीर चिंतक, सौम्य तथा द्रवित हृदयी होकर बड़े प्रभावशाली व्यक्ति हैं। आप में समाज, नगर और राष्ट्र की सही अर्थों में सेवाओं की प्रखर ज्योति सदा ही जगमगाती देखी जाती है। ऐसे हैं आप वीरवती देश के सपूतों में बिरले तेजस्वी मानव और युवा पीढ़ी के प्रणेता। हमारे श्रद्धा सुमन पण्डित जी अपनी कलम, वाणी और क्रियाओं के धनी, स्पष्टवादिता में शिरोमणी जन-कल्याण की भावनाओं और कार्यों के प्रति सतत समर्पित रहते हैं। इतना ही नहीं जीवन की इस तीसरी अवस्था में भी आप सदा जागृत सूर्तिमान, त्वरित निर्णायक तथ्य सदचरित्र के प्रति दृढ़ निष्ठावान् देखे जा रहे हैं। ठण्ड, बरसात और गर्मी की असुविधाएं, निजी व्यवसाय और स्वास्थ्य सम्बन्धी हानियां भी आपको कल्याणकारी कार्यों और समाज के उत्सवों आदि में अपने नगर में ही नहीं अपितु देश के दूरस्थ नगरों में भी भागीदार बनाने में कहीं आड़े नहीं आती। निःस्वार्थ सेवा में रत रहते त्याग की ओर साधारण जीवन से सहज निश्छल साधक के बाने की क्या अनुपम पराकाष्ठा है। सो फिर क्यों न हृदय हर्षित हो आपके गुणों की योजनाबद्ध गाथाओं वाले अभिनन्दन-ग्रन्थ में दो शब्दों जोड़ने को।

आत्मीयता के संवधक, श्री सत्यंधर कुमार जी देश, नगर और समाज की छात्र-छात्राओं की विद्या-वृद्धि से सम्बन्धित संस्थाओं में निर्मल एवं ठोस योगदान करते हुए उनके चरित्र-निर्माण की दशा में एक सही पथ-प्रदर्शक के रूप में उभर कर निखरे हैं जो सर्व स्मरणीय और अनुकरणीय मानव के नैतिक मूल्यों की खरी कसौटी है। विनीत् नतमस्तक हैं पण्डित जी के बहुमूल्य आदर्शों, मान्यताओं, उनकी क्रान्तिकारी विचारधाराओं और सतत त्याग, तपस्या और साधनामय जीवन की सुनहली रश्मियों के आगे।

अन्त में भगवान् महावीर से जगत के आडम्बरों से परे रहने वाले पण्डित जी के स्वस्थ एवं दीर्घ जीवन की मंगल कामना करता हूं। साथ ही यह भी कि

मानव जीवन निर्माण के ऐसे मूक शिल्पी का यश दिनो-दिन बढता रहे, यही अन्तरात्मा की पुकार है।

धन्य है ! ऐसा नगर और समाज जिन्हे आदरणीय पण्डित जी ने अपना कार्यक्षेत्र बनाया और धन्य है !! वह वंश जिसमे ऐसा कर्मयोगी जन्म लेकर आया।

☐ ☐ ☐

आशा के आगार

श्री लक्ष्मी चन्द्र 'सरोज'
प्रसिद्ध समाज सेवी एव
धार्मिक कार्यकर्ता
व्याख्याता-वक्तागापात्र
कथा द मा वि
जावरा (म प्रदेश)

जो सत्य को धारण करे, वह सत्यधर है, जो सत्पथ पर कुमार-कुमार-नवयुवक बनकर अनवरत-निरन्तर चले, थकान-तनाव-विश्राम का अनुभव न करे, वह सत्यधर कुमार है, जो आचार-विचार मे श्रेष्ठ है, मनसा-वाचा-कर्मणा सेठ-सेठिया, श्रेष्ठी-सेठी है, वह है सत्यधर कुमार सेठी है।

यह बात मे जिन बन्धु के विषय मे लिख रहा हू, उनसे सर्वप्रथम साक्षात्कार सन् 1960 मे हुआ था, अवन्तिका मे आदिनाथ या पार्श्वनाथ पचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव था और उसका एक अग अखिल विश्व जैन मिशन (मध्यप्रदेश शाखा) का अधिवेशन था। मिशन के सचालक, "अहिंसावाणी" के सम्पादक दिवगत बाबू डाक्टर कामता प्रसाद की अनुरोधमय पत्र था—उज्जैन, रतलाम के समीप है, आप अधिवेशन मे अवश्य आकर मिले। मिशन अधिवेशन के सूत्रधार सेठी जी थे। अतएव उनकी सक्रिय गति विधि भी देखने का स्वर्ण अवसर मिला था।

अहिंसा सम्मेलन का समय हो गया था। कुछ लोग प्रतीक्षा मे थे, जहा-तहा जूते-चप्पलो का ढेर था, दर्शको का आवागमन था। अनायास हिम से धवल छोटे बालो वाले खादी की धोती-कुर्ता धारी इकहरे शरीर मे मझौला कद सभाले गेहुआ रगी सत्यधर कुमार सेठी आये और निराशा के नीहार मे आशा के आगार बन गये। आठ-दस मिनट व्यवस्था हुई और अहिंसा सम्मेलन शुरू हो गया। मिश्रीलाल जी गगवाल इन्दौर ने अपने भाषण के बाद गीत भी सुनाया था। कौन क्या कहेगा ? इसकी चिन्ता सेठी जी बहुधा म नहीं करते हैं और सभी कामो मे निर्भय होकर आगे बढते है।

सेठी जी से धार्मिक-सामाजिक-राष्ट्रीय विषयो पर भी बातचीत हुई। रतलाम-बडनगर-देहली-उज्जैन-ठाकरडा मे मिला भी सही सो लगा कि वे "सादा जीवन उच्च विचार" के केन्द्र-बिन्दु हैं। वे समाज सुधारक और क्रान्तिकारी रूपो मे जो कसक लिये हैं, उससे उनकी लेखनी, वाणी और क्रिया भी फलवती और बलवती हुई है। अहिंसावाणी के प्राय सब ही विशेषाको मे उनके विचार अपनी दिशा के बोधक है, वे अपनी भाषा-शैली

के प्रसारक है। राष्ट्रपिता महात्मा गाधी के पद चिन्हो पर चलने की भावना वाले सेठी जी के दनिक जीवन म सरलता और मितव्ययता का एक अदभुत सम्मिश्रण हुआ है। किसी भी काम म जुट पडना और उसे पूरा करके ही छोडना आपका स्वभाव रहा है।

श्रद्धेय की दीर्घायु के लिए शुभकामना है। जीवन-साधना के लिए सद्भावना है। निष्काम सेवा के लिए प्रशस्त मनोभावना है। अभिनन्दन के अवसर पर हार्दिक श्रद्धा की अभिव्यक्ति है।

□ □ □

प्रकाश पुञ्ज

श्री लक्ष्मी चन्द सिंघई

मार्गदर्शदाता अनुदान प्राप्त शिक्षण सन्थाये समाज
कार्याध्यक्ष श्री जैन नवयुवक मण्डल
व प्रधानाध्यापक
सूथसार दि जैन माध्यमिक विद्यालय —नन

"सादा जीवन उच्च विचार" की साक्षात् प्रतिमूर्ति पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी नवयुवको के प्रेरणा स्रोत को उज्जनी पाकर धन्य हुई है।

गाधी युग के "प्रकाश पुञ्ज आज भी देश म कही-कही विद्यमान हैं, जो अपने आदशमयी जीवन से समाज को प्रभावित करते हुए, प्रेरणास्रोत बन युवको का मागदशन करते है। पडितजी उस युग के एसे ही "प्रकाश पुञ्ज" है। जो भी आपके सम्पक में आया उसे प० जी को भूल जाना आसान नही। "आठो पहर जागत रहना' आपसे सीखा जा सकता है। साठ का दशक पार करने के बावजूद भी परिहताय कार्यों के सम्पादन की महती इच्छा एव सामथ्य पर विस्मय होता है। सस्थाओ के निर्माण एव सम्वधन के काम प्रात से शयन तक करते रहना आदत है। समाज कल्याणार्थ कार्यों के सम्पादन हेतु निजी खर्चे से नगर-नगर भ्रमण करने से निजी व्यवसाय में व्यवधान आना स्वाभाविक है, किन्तु कभी शल्य नही आती। त्याग ! कितना त्याग !!

धार्मिक एव सामाजिक बुराइयो पर प्रहार करने से निन्दा होती, किन्तु बिना परवाह किये समाज को जगाने मे रत रहते। निन्दा हो या स्तुति मौन रह कर प्रसन्नता से सुनते हुए अपने विचारो के अनुरूप समाज निर्माणरत बिरले व्यक्तियो की कोटि मे आप स्थान रखते हैं।

श्री सेठी जी के आवरण और आचरण मे पूरा-पूरा विरोधाभास पाया जाता है। आवरण से तो आप अत्यन्त सादगीप्रिय है, किन्तु आचरण मे दृढ सकल्पी, आदशवादी लगनशील तथा कर्तव्यनिष्ठ आदि सद्गुण पुञ्ज रूप मे पाये जाते है। इसके साथ ही आपका एक बडा ही उच्चकोटि का गुण मित व्ययता है, जो "स्वर्ण और सुगन्धित" वाली कहावत को सार्थक बना देता है। सग्रह के आप विरोधी नही हैं किन्तु फिजूल खर्ची आपके स्वभाव के

प्रतिकूल है । पाई पाई को सदुपयोग में लगाना आपकी आदत मे है । यही कारण है कि इस आपाधापी एव लूट-खसूट के वातावरण मे आप संस्थाओ के निर्माण एव उत्थान कराने मे सफल हुए है ।

आप सस्थाओ के लिए दान हेतु झोली फलाने मे सकोच नही करते, साथ ही दान-धन के अपव्यय रोकने के सजग प्रहरी का काय करने मे शानी नही रखते । सस्था कार्यो मे भाग लेने के लिए कई किलोमीटर पदल आते देखा जा सकता है । कारण स्पष्ट है "संस्था धन का अनावश्यक व्यय न हो" ऐसी महति भावना वाले निर्माता विरले ही होगे ।

आप महानता के शिखर पर पहुचकर भी विनम्र हैं । छोटे से छोटे व्यक्ति को गले लगाना उसके सहायक बनने मे सकोच नही करते । जरूरतमन्द की हर सम्भव मदद करना आपके स्वभाव मे है ।

वाणी के मामले मे श्री सेठी जी निराले है । आपको अपनी ओजमयी तथा जादुई वाणी से लोगो को अपने वश मे करना सरलतम काय है । आप अपने तर्को से विरोधियो को भी पक्ष मे कर लेने मे सिद्धहस्त हैं । इसलिये आपको यदि "समाज का विवेकानन्द" कहा जाय तो कोई अतिश्योक्ति नही होगी ।

आइये ! हम ऐसे त्यागमूर्ति एव बहुमूल्य आदर्शो के धनी पूज्य पण्डित जी के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु की कामना करें, ताकि उसे प्रकाशपुन्ज से समाज के कुछ मानव-दीप समाज को प्रगति की राह पर बढाने मे मार्गदशन हेतु ज्योति पा सकें ।

शत-शत् अभिनन्दन करते हुए ! श्रद्धान्वत्—

☐ ☐ ☐

गरिमामय व्यक्तित्व

आचाय प वासुदेव शास्त्री वद्य
(राष्ट्रीय सम्मान प्राप्त), उज्जन

पण्डित सत्यधर कुमार जी से मेरा प्रथम परिचय भण्डारी दवाखाने मे चिकित्सक के रूप मे हुआ । प्रथम परिचय मे ही उनके श्रद्धापरायण व्यक्तित्व तथा सरल सौम्य, स्नेह हृदय के कारण स्नेहबद्ध हो गये और आपके गुण ग्राहकता के कारण आपने नमक मण्डी स्थित शुद्ध खादी भण्डार का उदघाटन भी मेरे हाथो से कराया । यह आपकी शालीनता तथा गरिमामय व्यक्तित्व का कारण था । आपके उच्च सर्वात्मभाव, विलक्षण प्रतिभा एव निर्माण स्वभाव के कारण आप उज्जन के एक लोकप्रिय समाज नेता के रूप म प्रसिद्ध हो गये । अपनी उदारता, समाज सेवा, राष्ट्रीय भावना, सवधम समभाव, "सादा जीवन उच्च विचार", रूढीवाद के विरूद्ध सघष, अन्याय के प्रति

आक्रोश, विद्वत्ता ने उज्जन तथा मालवा प्रदेश का समस्त वर्ग की जनता को आकर्षित कर लिया।

आपको अनेक सामाजिक सस्थाओ ने उत्तरदायित्व पदा पर आसीन किया और आपने उन पदो को बडी तत्परता, निष्पक्षता, मनोयोगपूर्वक सफलता से सवहन कर कीर्ति अर्जित की। आपने "सत्यधरतीति सत्यधर", नाम को साथक किया यथा नाम तथा गुण सिद्ध हुआ।

मथाय म कहा है—

"कुल पवित्र जननी कृताथ, वसुधरा भाग्यवतीचयेन"।

आपने कुल को पवित्र किया, माता की कूख को सार्थक किया, परम श्रेष्ठ गुणों से युक्त, कर्तव्य परायण राष्ट्र भक्त, समाजसेवी "सत्यवद, धमचर" के उपासक सेठी जी के हीरक वय अभिनन्दन समारोह के लिए मगलकामना करता हू तथा कामना करता हू कि सठीजी "जीवेम शरद शतम्" प्राप्त हो।

☐ ☐ ☐

एक कर्मठ व्यक्तित्व

डा विष्णु श्रीधर वाकणकार
सचालक भारतीय शैलचित्र
शोध सस्थान, भारतीय कला भवन,
उज्जन

श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का और मेरा सस्नेह परिचय विगत तीस वर्षो से है। दिगम्बर जन मन्दिर जयसिंहपुरा म जब उन्होने अथक परिश्रम कर जन प्रतिमाओ का सग्रह किया तभी से उनकी पुरातत्व के प्रति अतीव निष्ठा देख मैं उनकी ओर आकृष्ट हुआ। उस सग्रहालय की व्यवस्था, अभ्यास तथा प्रतिमा मूल्याकन, उनका यथोचित काल निर्णय तथा प्रदशन मे सग्रहालय भवन के पुनर्निर्माण योजना म उन्होंने जो काय किया है वह अभिनन्दनीय है।

उन दिनो जब यह सग्रह बनाने की कल्पना उन्होने सकल्पित की वह सब साधारण की पहुच के बाहर थी अत प्रतिमा सग्रह एक कठिन समस्या थी पर श्री सेठी जी की सूझबूझ और योग्य सहयोग प्राप्त करने की क्षमता अद्भुत है इस समस्या के सफलतापूर्वक पूर्णता प्राप्त करने मे योग दिया। 'एकमेवाद्वितीय" ऐसे वे आज तक इस सास्कृतिक निधि के उन्नायक, सरक्षक एव उद्घोषक रहे है। यह सग्रहालय भारत का एक अनूठा सग्रहालय है जहा जन मूर्तिकला के विविध विकसित रूप एकत्र दिखाई देते हैं। 5वी 6ठी शताब्दी (विक्रम) से 14वी सदी तक की तीर्थंकर, यक्ष-यक्षिणिया सरस्वति अप्सराओ का इतना महत्वपूर्ण सग्रह भारत मे शायद ही कही दिखाई देगा। अल्प राशि मे विशाल सग्रह करने के लिए जिस अदम्य उत्साह,

लगन और श्रम की आवश्यकता होती है उसकी प्रतिमूर्ति सत्यधर जी हैं, यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है। दिगम्बर जैन समाज समृद्ध व्यापारियो का समाज है और वह यदि इस धरोहर का सांस्कृतिक महत्व समझ जाये तो इस संग्रहालय को और अधिक सुव्यवस्थित दर्शनीय और सुनियोजित बना सकता है। इस महान कार्य की बागडोर जिसे सत्यधर कुमार जी ने आज तक सम्हाला है यदि उनकी उत्कण्ठा लगन और सातत्य से यदि कोई नवयुवक सम्हाले तो सेठी जी के लिये गर्व की बात होगी।

उनके आत्मीयता के कारण ही हम उनके परिवारजन बन गये है। जन साहित्य और पुरातत्व मे मेरी अभिरुचि धार से ही रही है वहा बनियावाडी के जैन उपासरे से निकली प्रतिमाओ और हीरजी सिरवी बदनावर वाले के खेत से निकली प्रतिमाओ से मेरा ध्यान इस ओर आकर्षित हुआ। धार से निकलने वाली 'उषा' पत्रिका मे मैं इन पर लिखता रहा और 1953 मे उज्जैन म आने पर श्री सेठी सत्यधर जी, वैद्यराज स्वर्गीय अनन्तराज तथा स्वर्गीय जुगलकिशोर जी अग्रवाल (संस्थापक बलवत संस्कृत पाठशाला माधवनगर) के सानिध्य मे इस शिल्प शैली के विकास का अभ्यास कर सका। डा० सुरेन्द्र कुमार आर्य और मैंने श्री सत्यधर कुमार जी के संग्रह का पुरातात्विक अध्ययन किया, पर इसका श्रेय उन्ही को है, क्योकि वे सतत हम उस हेतु प्रेरित करते रहे है।

मै अपने इस अनन्य मित्र की स्तुति के लिये शब्द अधूरे पाता हू, पर कामना करता हू कि उनके जीवन को वैदिक मत्र "अदीना स्याम शरद शतात" के अनुसार सतत कर्मण्य, प्रेरक और समन्वयक के रूप मे देखता रहू।

□ □ □

चिरस्मरणीय

प विद्या कुमार सेठी
न्याय काव्यतीर्थ
कुचामन सिटी
(नागौर) राजस्थान

मेरा सेठी जी साहब से बहुत पुराना परिचय है। मैं इनके सौहार्दपूर्ण व्यवहार एव स्पष्टवादिता गुण की प्रशसा किये बिना नही रह सकता।
प० जी साहब सरीखे उद्भट कार्यकर्ता से हमारे विद्यालय का चिरस्मरणीय गौरव आठ वर्ष की अल्पायु मे स्वनाम धन्य स्व० प० चैनसुखदास जी न्याय तीर्थ के पास कुचामन विद्यालय म अध्ययन हेतु आपको भेज दिया गया। बचपन से ही कुशाग्र बुद्धि थे। धार्मिक पुस्तकें पढ़ने का शौक था। 16 वर्ष की आयु मे संस्कृत का अच्छा अध्ययन कर प्रसिद्ध गोम्मटसार जैसे महान ग्रन्थ का अध्ययन कर उन पर अधिकार पूर्वक लिखन म आप सिद्धहस्त रहे है। प० चैनसुखदास जी के क्रान्तिकारी विचार, समाज सुधारवादी विचारों का आप पर बाल्यकाल से ही प्रभाव पड़ा और स्वयं प्रतिभावान होकर अपने जीवन के प्रभाव से ही आज तक उन पर काम कर रहे हैं।

□ □ □

मूकसेवी

श्री सरमन लाल जैन
'दिवाकर' शास्त्री
प्रधानाचार्य
जैन नाष्टी स्कूल सरधना (मेरठ)

जिस तरह फूल से फल उत्पन्न होकर दूसरों के लिये सुस्वाद बन जाता है। इसी प्रकार समाज में कुछ विशिष्ठ व्यक्ति जन्म लेकर अपनी महान् सेवाओं के फल को सारी समाज को देकर खुद तो गौरवान्वित होते है साथ ही देश, समाज, जाति और धर्म को भी उन्नतशील बनाकर अपनी सौरभि फैलाते हैं और अनेक लोगों को प्रेरणा व अनुकरण का रास्ता प्रशस्त करते हैं। ऐसे ही महान् परोपकारी व्यक्तियों की अग्र पंक्ति में है श्रीमान् प० सत्यधर कुमार जी सेठी उज्जैन, जिन्हे मैंने कई बार अ० भा० दि० जैन परिषद के अधिवेशनों के समय देखा और समझा तथा उनके जीवन से प्रेरणा ली।

श्री सेठी जी एक महान् आदर्श के व्यक्तित्व वाले, परिश्रम एवं अनुशासन के अनूठे आदर्शवादी, धार्मिक प्रवृत्ति वाले, वीतराग मार्ग के पोषक, निर्भीक समाज सुधारक, पुरानी परिपाटी के आधुनिक संस्करण सरलता के प्रतिमूर्ति, तार्किक विद्वान, ओजस्वी, कुप्रथाओं को समूल उखाड़ फेंकने वाले अग्रणी, सेवी, आत्म प्रेरक सेवी, निबंधकार, पत्रकार, मूक समाज सेवी, सरल निष्कपट विचार वाले, लौह पुरुष धर्मप्राण, समाज-प्राण, धर्म-समाज के महान् सेवक, समाज व जीवन के शिल्पी, कर्मठ समाज सेवी, मूक सेवी, सज्जन सहृदय पुरुष, समर्पित व्यक्तित्व के धनी, धर्मात्मा, लगन के पक्के, पुरुषार्थ के धनी सेवाभावी, समाज के जागरूक प्रहरी, पथ प्रदर्शक, प्रतिभा सम्पन्न, प्रकाशवान स्पष्टवादी सद्गुणों के भण्डार, उत्साही, लोकप्रिय जन सेवक, विनम्रता के प्रतीक, शान्त स्वभावी, अथक परिश्रमी मृदुभाषी, कर्मयोगी, श्रद्धावान् आदि अनेकानेक विशेषणों से भरपूर श्री सेठी जी हैं। सेठी जी के सम्बन्ध में विशेष लिखना सूर्य को दीपक दिखाना ही माना जायेगा।

श्री सेठी जी को जब कभी देखा उनके निकट गया उन्हे देखा कि आपको समाज सुधार की महान धुन है। धर्म के नाम पर आई विकृतियों एवं कुरीतियों के निवारण की भावना निरन्तर रहती है और चिन्तित रहते हैं तथा अपने अथक परिश्रम व लेखनी द्वारा दूर करने के लिए कार्य करते रहते है, अवसर आने पर आन्दोलन के लिये तैयार रहते हैं।

आप अखिल भारतीय दिगम्बर जैन परिषद के प्राण हैं। आप परिषद् के माध्यम से समाज में व्याप्त कुरीतियों को दूर करने में भारी योगदान करते हैं। आप सेठी परिवार से सम्बन्ध रखते हुए कभी अन्तर उपजाति विवाहों का विरोध नहीं किया बल्कि दि० जैनों में 84 जातियों में अन्तर जातीय विवाहों का समर्थन कर प्रचार प्रसार किया तथा समाज में प्रेम, एकता तथा वात्सल्य की स्थापना में सहयोग ही कर रहे हैं।

धम विरुद्ध कार्य देखकर तथा शिथलाचार तथा अन्य धर्म के नाम पर आने वाली विकृतियो पर आप विरोध मे डटकर विरोध करने म हिचकिचाते नही है और बोच म आने वाली सभी परिस्थितियो स जूझते है। अपनी आलोचना स नही घबरात।

आप इतनी सस्थाओ से सम्बन्धित है कि जितना समाज मे अन्य दूसरा व्यक्ति शायद ही हो। कारण, आप सस्थाओ का काय लगनशीलता, कमठता एव निष्पक्षता से करते है। इसी से आप सस्थाओ के पास नही जाते सस्था स्वय ही आप के पास आती है और आप स्वय मे एक सस्था का रूप धारण किये हुए है।

आप जैसे महान् पुण्यात्मा पुरुष के सम्बन्ध म मैं ज्यादा क्या लिखू। मैं अन्त मे इतना जरूर लिखना चाहूगा कि मुझे आपके समर्पित जीवन से सभी क्षेत्रो मे निष्पक्षता निर्भीकता, सुधारात्मक काय करने की प्रेरणा मूक रूप से प्राप्त तो हुई है साथ ही आपका अनुकरण हमारे भावी जीवन को समाज सेवा करने मे सहायक सिद्ध होगा।

आप दीर्घायु रहकर हम सबका मागदशन करते रह। यही वीतराग प्रभु से प्राथना करते ह।

☐ ☐ ☐

मशाल

श्री सी एल भारल
प्राचार्य—श्री सूय सागर दि जन
सन माध्यमिक विद्यालय, उज्जन

श्रद्धेय पण्डित सत्यधर कुमार सेठी जी कर्मठता की एक जीती-जागती प्रतिमूर्ति है। वस्तुत समाज म ऐसे व्यक्तित्व विरले ही होते है जो अपने ज्ञान आचरण और रचनात्मक कार्यो से समाज को गतिमान बनाये रखते है। आज विद्वान् बहुत हैं, पण्डित बहुत है, परन्तु जनत्व के सस्कारो को अपने जीवन मे आत्मसात करने वाले बहुत कम है।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी अपनी इस ढलती अवस्था म भी अपनी जीवत गतिविधियो से समाज के तरुणो म धार्मिक आस्था की मशाल लिये करते रहते हैं। उनकी एक ही पीडा रहती ह जो उन्हें कचोटती रहती है और वह है जैन समाज की भावी पीढी म जनत्व के सस्कारों का बीजा रोपण करना। यही कारण है कि वे अनेक धार्मिक, शैक्षणिक सामाजिक व पारमार्थिक सस्थाओ से जुडे हुए है, जिनके माध्यम से व समाज म कई चेतना जाग्रत करते रहते है। यह प० सत्यधर कुमार जी सेठी की ही क्षमता ह कि उज्जन नगर के बडे से बडे आयोजन उनक सयोजकत्व म अप्रत्याशित रूप से सफल होते हैं फिर चाहे वह भगवान् महावीर का 2500 वा निर्वाण महोत्सव हो, जन मालव महाश्रमण का ... विक्रम विश्वविद्यालय म

जिनागम पर संगोष्ठी हो, अथवा अखिल भारतवर्षीय जैन विद्वानों का सम्मेलन हो, इन अवसरों पर पण्डित जी की कार्यकुशलता देखते ही बनती है। उनके स्वभाव की एक सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे अपने आलोचकों को अपना हितैषी मानते हैं और अन्ततः उनकी क्षमता का उपयोग समाज के लिये कर लेते हैं।

□ □ □

जैन पुरातत्व के प्रति समर्पित व्यक्तित्व

डा. नरेन्द्र आर्य

पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी से मेरा सम्पर्क विकत 18 वर्षों से रहा है। प्राच्य-विभाग में आने पर जैसे मेरा परिचय पदमश्री डा. विष्णु श्रीधर वाकणकर, जो उस समय विश्वविद्यालय के पुरातत्व संग्रहालय के प्रभारी थे और यूरोप से 1963 की जून में लौटे थे, परिचय हुआ और उन्होंने यूरोप के यात्रा संस्मरण के साथ ही जैन पुरातत्व में वहां किये गये अपने प्रयासों को बतलाया तभी से मेरा ध्यान जैन मूर्तियों के प्रति विशेष रूप से आकर्षित हुआ। यूरोप के संग्रहालयों की कार्य पद्धति एवं मूर्ति प्रदर्शन की तत्परता उन्होंने बतलाई थी और उसे प्रेरित किया कि मैं भी मध्य प्रदेश के एक सम्पन्न भू भाग मालवा के जैन शिल्प पर विधिवत अभ्यास प्रारम्भ कर दूं। मैंने अंग्रेजी, हिन्दी, मराठी एवं गुजराती ग्रन्थों से जैन मूर्ति विज्ञान पर अध्ययन कार्य प्रारम्भ कर दिया और 1966 में एक बैठक में मुझे बुलाया यह थी मालवा प्रांतीय दिगम्बर जैन पुरातत्व संग्रहालय समिति द्वारा आयोजित एक मिटिंग। उसमें मुझे सर्वप्रथम संस्था के मन्त्री पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी के दर्शन हुए। आदरणीय भूपेन्द्र कुमार जी सेठी, विनोद मिल के संचालक उस बैठक में अध्यक्ष थे और उसी समय डा० विष्णु श्रीधर वाकणकर ने यह प्रस्ताव रखा कि जयसिंहपुरा जैन संग्रहालय, उज्जैन के विषद अभ्यास की योजना के लिए उस संग्रहालय की एक परिचय-पुस्तिका तैयार की जाय। मुझे उस संग्रहालय का मानद-संग्रहालयाध्यक्ष बना दिया गया 2 वर्ष के कार्यकाल में मैंने वहां की 560 मूर्तियों की पहचान, उनकी लंबाई, चौड़ाई और मोटाई व उनके शिलालेखों का वाचन कर उनका क्रमांकीकरण कर एक विस्तृत कैटलाग तैयार किया। मेरे इस कार्य में पंडित श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी का अनन्य सहयोग मिला। उन्होंने तो इस विशाल मूर्ति-संग्रहालय को अपने संकल्प से निर्मित किया था। सारी विपरीत स्थितियों में आपने अपनी जीवट इच्छा से इसे तैयार किया था।

पण्डित सत्यंधर कुमार जी सेठी ने अपने उज्जैन प्रवास के प्रारम्भिक वर्षों में ही यह महान संकल्प ले लिया था कि समस्त मालवा भू भाग से जैन मूर्ति शिल्प को एकत्रित कर उन्हें सुरक्षा प्रदान की जाये और इसके लिए उन्होंने एक 'पुरातत्व भवन' नामक संस्था की स्थापना की जिसमें स्वर्गीय मनन्न

राम श्री वैद्य, श्री मदन लाल जी गोयल प्रमुख थे। सर्वप्रथम इन्होंने उज्जैन के आस पास के भग्नावशेषो को एकत्रित किया और उन्हें जयसिंहपुरा जैन दिगम्बर मन्दिर के प्रागण मे सुरक्षित कर दिया, पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी के परामर्श से और इन्ही के प्रस्ताव पर अखिल मालवा प्रान्तीय जैन समिति ने और तत्कालीन प्रशासकीय अधिकारियो ने अनुमति प्रदान की, कि वे साधिकार उन पुरावशेषो को इतिहास सुरक्षा करने के महान् उद्देश्य के अन्तर्गत एकत्रित कर सकते है। माननीय सेठी जी की दिव्य दृष्टि ने यह सकल्प ले लिया था कि गुना, ईसागढ, बदनावर, सुन्दरसी, जामनेर, पचोर से जो धन पुरावशेष हैं उन्हे सुरक्षित कर यह भारतीय इतिहास की अमूल्य धरोहर को व्यवस्थित करना और उसे विद्वानो एव शोधकर्ताओ के सम्मुख प्रस्तुत करना था। आपने सीमित साधनो से एक भागीरथ काम सम्पन्न कर दिया। बैलगाडियो पर लदवाकर विशाल प्रस्तर मूर्तियो को आपने जिस उत्साह से एकत्रित किया उसे 'घुमक्कड क्लब' के अन्य सहयोगियो की ही शब्दावली में कहू तो वह सेठी जी अपने इस सकल्प को पूरा करने म दीवाने से हो गये थे। आपके इस काम मे बाबू साहब भूपेन्द्र कुमार जी सेठी का भी सहयोग रहा।

पण्डित सेठी जी का व्यवसाय वस्त्रो का था और साथ ही उन दिना आप सामाजिक कार्यकर्ता के रूप मे खादी के प्रसार एव प्रचार मे लगे थे। आपके सामने "जिनवाणी" और पवित्र तीर्थकरो के आदर्श और तत्कालीन परिवेश भारत आजाद हो और उसमे महात्मा गाधीजी के कार्यक्रमो म प्रमुख खादी कार्यक्रम को आपने अपनाया था। तभी आपने अपनी पीठ पर खादी के गटठर को लादकर उसे जनमानस मे लोकप्रिय किया। इस काम म आपने अपने परिचितो से पूछ पूछकर और घूम घूमकर इस बात की जानकारी प्राप्त की कि जैन अवशेष कहा कहा पर है वहा स्वय जाकर आपने उन्ह स्थानीय लोगो से मिलकर सुरक्षा प्रदान करने का आग्रह किया।

समग्र मालवा भू भाग 10वीं से 18वी शताब्दी तक जैन मन्दिरो व मूर्तिया का प्रमुख केन्द्र रहा है। आक्रान्ताओ के दुर्दय प्रयास से उन्ह भग्न भी किया गया परन्तु भग्न के प्रति आपम एक लगाव था, आश्चर्य था कि उनसे ही हमारा प्राचीन गौरव उजागर होगा। अनेक स्थानो पर जाकर जब आपने उन पुरावशेषो की दयनीय स्थिति देखी तो आप रो पडे और इस दिशा म आपने अपना काम और तीव्रगति से बढा दिया। अनेक स्थानो म आपको पत्रो द्वारा सूचना मिलने लगी कि वहा पर खण्डहरो म, खेतो म, कुओं पर और मकान की नींव खोदते हुए तीर्थकरो की प्रतिमाए मिली है।

आप अपने व्यय से उन स्थानों पर जाकर स्थानीय सहयोग प्राप्त कर उन अभूतपूर्व प्रतिमाओं को एकत्र करने में जुटे रहे।

जैन पुरावशेषों से आपने भारतीय इतिहास में संशोधन को किस प्रकार प्रभावित किया यह एक उदाहरण से स्पष्ट हो जावेगा। उज्जैन जिले की बड़नगर तहसील के पास बदनावर नामक ग्राम में आपने हीरजी मिस्त्री के खेत से लगभग 15 जैन तीर्थंकर एवं देवियों की अभिलेखयुक्त प्रतिमाएं प्राप्त की और उनके पादपीठ के शिलालेखों का वाचन किया और उस जैन धर्म के विद्वान डा० ए० एन० उपाध्याय और डा० हीरालाल जैन को भेजा और अपना मत सर्वप्रथम रखा कि यही वर्द्धमानपुर है जो बाद में बदनावर के नाम से जाना जाता है। अपना मत विद्वानों ने माना और जो बड़वानी का पुराना नाम वर्द्धमानपुर मानते थे उन्हें भी अपना मत छोड़कर पण्डित सेठी जी के तार्किक एवं समीचीन मत को स्वीकार करना पड़ा।

इतिहास संशोधन के साथ ही आपने इतिहास सुरक्षा के प्रति भी उतनी ही सूक्ष्म दृष्टि रखी है। आपने जो मूर्ति जिस स्थान में मिली उसका निश्चित विवरण रखा और उन स्थानों को जैन पुरावशेषों से सम्पन्न बताया। बाद में जो भी पुरातात्विक सर्वेक्षण व उत्खनन कार्य हुए उनमें सेठी जी के सुझाये गये विचारों का ध्यान रखा गया और पूरे मालवा भू भाग में ऐसे सर्वेक्षण कार्य प्रारम्भ हुए।

सन् 1968 के बाद आपके प्रयास इस दिशा में हुये कि संग्रहालय को व्यवस्थित किया जाय। इसके लिये आपने शासन की ओर लिखा और तत्कालीन मुख्यमन्त्री श्री कैलाश नाथ जी काटजू के कर कमलों से जयसिंहपुरा जैन संग्रहालय के भवन का शुभारम्भ करवाया। बाद में जब पुनः इस भवन की दीवारों में दरार पड़ गई तब आपने पुनः शासन का ध्यान आकर्षित किया और तत्कालीन मुख्यमन्त्री मध्यप्रदेश श्री माननीय प्रकाशचन्द जी सेठी के कार्यकाल में इसे पुनर्निर्मित करवाया। आपकी तपस्या और लगन के पीछे बड़ा बल था जिसके पर संकल्प पूर्ण होता गया।

जब अखिल भारतीय प्राच्य विद्या का सम्मेलन 1972 में उज्जैन में हुआ तो आपने जयसिंहपुरा जैन पुरातत्व संग्रहालय की परिचय पुस्तिका का प्रकाशन कराकर उसे विद्वानों में वितरित कराया। डा० अमलानन्द घोष के सम्पादन में जब भारतीय ज्ञान-पीठ की ओर से "जैन आर्ट एण्ड आर्किटेक्चर" नामक विशाल ग्रंथ की प्रकाशन योजना थी तब आपके ही प्रयास से संग्रहालय की मूर्तियों का विस्तृत फटलाग निर्मित हुआ। सेठी जी ने अपने सामर्थ्य में जो विशाल मूर्तियां एकत्रित की थी उनका प्राप्ति स्थान, आकार माप, मूर्तिचिन्ह

की पहचान व अभिलेख वाचन तयार कर ग्रन्थ मे भेजा। यह विवरण ग्रथ मे प्रकाशित हुआ। मालवा के जन शिल्प पर इस शोध सामग्री के प्रकाशन से अनेक पी० एच० डी० कार्यो मे सहायता मिली और देश विदेश के विद्वानो ने लाभ लिया। ओरियण्टल कान्फ्रेन्स के समय आगन्तुक विद्वानो को मूर्ति शिल्प की महत्ता बताई।

आस्ट्रिया के न्यूमर इरविन, अमेरिका के राबर्ट ब्रुक्स, इग्लण्ड के अलविन, लोयार वाके और जेकोस्लावाकिया के डा० जान फिलोपिस्को ने यहा की मूर्तियो के चित्र लेकर यूरोप व अमेरिका के शोध पत्रो मे लेख लिखे। पिछले माह की न्यूमर इरविन जब उज्जैन आये तो उन्होने बताया कि जमन भाषा मे इस सग्रहालय का विवरण उन्होने पुस्तकआकार मे भी प्रकाशित करने का योजना रखी है जिसे आस्ट्रिया की म्यूजियम सोसायटी प्रकाशित करेगी।
सठी जी स्वय एक सस्था है। आपने अनेक सामाजिक सस्थायें निर्मित की है और उनका सचालन किया है। उज्जन की प्रमुख शोध सस्था विशाला शोध परिषद के समक्ष आपने "मालवा मे जैन धम एव उसका विकास" विषय पर जो अपना शोध व्याख्यान दिया था वह अभूतपूव था। इतिहास सशोधन समिति की अखिल भारतीय बठक का आपने (अगस्त 1983) अध्यक्षता की और जन धम की प्राचीनता व उसका भारतीय इतिहास मे महत्व प्रतिपादित किया।

प० सेठी जी ने तो शताधिक शोध लेख शोध पत्रिकाओ मे प्रकाशित किये हैं उनसे निश्चित ही प्राच्य इतिहास एव सस्कृति मे एक दिशा दशन का काय किया है। ऐसे मनीषी, ज्ञान वारिधि, विद्वत् लेखक व पुरातत्व प्रेमी के कृत्य-स्मरण कर हम अपने आपको धन्य मानते है। आप "जीवेम शरद शतम श्रृणुयाम शरद प्रब्रवाम शरद शतम" वाली यजुर्वेद की प्राथना को सही भागीदार हैं। आप इसी प्रकार स्वस्थ, सचेता और जागृत रहे और हमारा मागदशन करते रहे ऐसी ईश्वर के कामना है। पुन आपके चरणारविन्द म मस्तक नवाते हुए भावाजलि समर्पित करता हू।

☐ ☐ ☐

विद्वान् सर्वत्र पूज्यते

डा हरीन्द्र भूषण जी जन
निदेशक–शोधसस्थान, कुम्भोज
बाहुबली (महाराष्ट्र)

सेवाधर्म परमगहनों योगिनामप्यगम्य

दि० 20 माच 1983 को उज्जन रेल्वे स्टेशन पर दिन के 11 बजे मान्यवर प० सत्यधर कुमार जी सेठी से भेंट हुई। कहने लगे दिल्ली के नए बूचडखाने का विरोध करने के लिये उज्जैन के एक चार सदस्यीय डेलिगेशन मे देहली जा रहा हू। परसो इन्दिरा गाधी जी से भेंट है।

मैंने उनके चेहरे को बडे ध्यान से देखा और कहा आप तो स्वस्थ नही है।

मने हाथ पकड़ा तो प्रतीत हुआ कुछ हरारत भी है। मने कहा प० जी आप को ऐसी हालत मे देहली नही जाना चाहिये, आपके चेहरे पर सूजन है और शरीर मे थोडा बुखार है। तो डेलिगेशन के अन्य सदस्यो की ओर इशारा करके बोले—मगर ये लोग तो छोडते नही क्या करू। मने कहा पण्डित जी "शरीरमाद्य खलु धम साधनम्", कुछ अपनी उम्र और स्वास्थ्य का भी तो ध्यान रखो।

लगभग 40 वर्षों से प० जी सेठी अपने स्वास्थ्य और शरीर के प्रति निमम होकर धम और समाज की सेवा मे सलग्न हैं।

विद्वान् सवत्र पूज्यते

लगभग 24 वष के अपने उज्जैन प्रवास काल से मैं प० जी सेठी को निरन्तर बहुत निकट से देखता चला आ रहा हू। उनका मेरे प्रति अनुराग है। वे सदव सामाजिक, शक्षणिक उच्चस्तरीय विद्वत्सगोष्ठियो म आमन्त्रित किये जाते हैं, वहा जाकर निबन्ध पढते हैं और उसकी गम्भीर चर्चाओ मे महत्त्वपूण भाग लेते हैं। यशोलिप्सा से दूर होकर वे निरन्तर सामाजिक सुधार के विषयो पर दृढता के साथ लिखते हैं। अभी कुछ दिन पूव "मुनिचर्या शतिल्म" के विषय मे लिखा गया प० जी का निबन्ध बहुचर्चित रहा।

गुणिषु प्रमोदम्

प० सत्यधर कुमार जी सेठी बडे सहृदय व्यक्ति है। वे विद्वानो का, गुणीजनो का सदव आदर-आतिथ्य करते हैं। गत् कुछ वर्षो से, उज्जन म प्रतिवष, विद्वानो और समाज-सेवको के अभिनन्दन की एक परम्परा प० जी ने डाली है। विक्रम विश्वविद्यालय उज्जन के तीन निष्णात एव जन विद्या के प्रति समर्पित विद्वान् प्रोफेसरो का प० जी ने उज्जैन मे सामाजिक अभिनन्दन कराया। यह उनकी गुणी ग्राहकता अत्यन्त प्रशसनीय है।

य क्रियावान् स पण्डित

प० जी सेठी मेरे वावदूक पण्डित नही है। वे अपने पूरे परिवार के साथ जन श्रावक के आचारो का यथाशक्ति पालन करते हैं। महाभारत मे लिखा है, 'जो क्रियावान् है वही पण्डित है।" प० सत्यधर कुमार सेठी पण्डित की इस परिभाषा पर खरे उतरते हैं। उन्होने पण्डित्व को आजीविका का साधन न बनाकर जो प्रतिष्ठा समाज में अर्जित की है वह जन पण्डितो के लिए आदश है।

ऐसे आदश पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी "अदीना स्याम शरद शतम्" इस वेदवाणी के अनुगमन म कम से कम 100 वष अदीन होकर धम और समाज की सेवा करते रह।

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के अभिनन्दन म मेरे श्रद्धासुमन समर्पित है।

☐ ☐ ☐

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

कवियों ने

जगह जगह पर अभिनन्दन

श्री अनूप चन्द न्यायतीर्थ
साहित्यरत्न, जयपुर

यह भारत मा का वह अपूर्व, जो परम धार्मिक सहज शुद्ध।
निर्भीक प्रवक्ता, ओजस्वी, गुणग्राही महिमामय प्रबुद्ध ।।
दृढ श्रद्धानी, सात्विक प्रवृत्ति, सहृदयी, भावुक, शत वदन ।।श्री।।

है जिसका जीवन सरस शात, आदर्श युक्त सुन्दर महान।
वह परम् सादगी का पुतला, है उच्च विचारक ज्ञानवान् ।।
सिद्धात तिलाजलि देकर के ना किया किसी से गठ-बधन ।।श्री।।

वह व्रती, सयमी, शील-निधे, विद्वान्, मनीषी अति गुणज्ञ।
सदपि, विवेकी, सत्यनिष्ठ, कर्तव्य परायण, दृढ प्रतिज्ञ ।।
वह अडिग, अटल, अविचल निश्चल उज्जवल है जिसका अन्तमन ।।श्री।।

श्री फतहलाल सुत सेठी का है ग्राम भादवा जन्म थान।
सवत उन्नीस सौ अडसठ मे विजया दशमी का दिन महान् ।।
घर घर मे गीत बधावा थे जब जन्म हुआ जोधा नन्दन ।।श्री।।

सह अल्प आयु मे पितु वियोग, माता का पाया लाड-प्यार।
उस ही से प्रेरित जीवन मे, आ पाये अच्छे सस्कार ।।
सामाजिक सेवा क्षेत्र चुना, उसी मे अपरण तन-मन-धन ।।श्री।।

आ गये कुचामन विद्यालय, अध्ययन हेतु तज ग्राम आप।
गुरु मिले चनसुखदास वहा, जिनकी ही इन पर पडी छाप ।।
पढ लिये न्याय व्याकरण ग्रन्थ इतिहास और आगम दर्शन ।।श्री।।

सुन न्याय तर्क सगत बातें, झुक जाते स्वय विरोधी भी।
चरणो मे आकर गिर जाता, कितना हो कोई क्रोधी भी ।।
हित-मित प्रिय भाषी, अनुशासी, वाणी मे इतना आकर्षण ।।श्री।।

ये ऐसे प्रवचन कार यहा जिनकी शली मे चमत्कार।
कथनी करनी मे अन्तर ना, विद्वज्जन-प्रेमी, निर्विकार ।।
ये व्याख्यान-वाचस्पति है, है शास्त्र सभाओ के मण्डन ।।श्री।।

ये रूढि, भ्रम विश्वासो के शिथिलाचारो के अति विरुद्ध।
जो हैं कुरीतिया सामाजिक, उनसे भी करते सदा युद्ध ।।
आन्दोलन लोहड साजन भी, कर रहा बहादुरी दिग्दर्शन ।।श्री।।

इतिहास कला सस्कृति वेत्ताओ पुरातत्व के पुण्य-धाम।
जयसिहपुरा मे बना दिया, बेजोड सग्रहालय ललाम ।।
ये प्रात मालवा की विभूति उज्जन करे नित प्रति वन्दन ।।श्री।।

नूतन प्राचीन विचारो का, इनमे है पूरा सम्मिश्रण।
युवको वृद्धो और प्रौढो को, मिल रहा निरतर सरक्षण ॥
लोकप्रिय नेता, व्यवसायी, व्यापार वस्त्र का जीवन-धन ॥श्री॥

य भारतीय स्तर नेता है, सभी प्रमुख सस्था सदस्य।
कितनी हो सस्था सस्थापक, जो हैं सुधारवादी अवश्य ॥
है जगह-जगह मे सम्मानित, इतना है इनमे सम्मोहन ॥श्री॥

सीखा न कभी सपन म भी, धनिको की हा मे हा करना।
ना कभी छुपाई सत्य बात, कितना ही चाहे दु ख सहना ॥
हैं सफल समालोचक, लेखक, जीता है जिनने जनता-मन ॥श्री॥

य स्वाभिमान गौरवशाली है, गौरवान्वित सब समाज।
ऐसे सेवक को पाकर के, है धन्य राष्ट्र औ देश आज ॥
ये प्रतिभाशाली क्रातिदूत है, सबका शत-शत जिन्हें नमन ॥श्री॥

मधुमास सकडो देख क्या, ये जीवित रहें हजार वप।
सामाजिक सेवा रत होकर चिर रहें प्रफुल्लित औ सहृष ॥
हम यही कामना करते है, वे स्वस्थ रहें यावज्जीवन ॥
श्री सत्यधर सेठी जी का हो जगह-जगह अभिनन्दन ॥

□ □ □

स्वागत गान

श्री अमृतलाल अमृत
अध्यक्ष-जिला नागदी समिति, भवन-
मोहरा, उज्जन
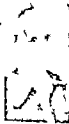
सत्य अहिंसा के व्रतधारी का अभिनन्दन,
मानवता के सफल पुजारी का अभिनन्दन।

महावीर के आदर्शों के अनुयायी का,
अभिनन्दन है विचार चिन्तन गहराई का।

राजस्थानी माटी के तुम वीर पुत्र हो,
कायभूमि उज्जयनी के रणधीर पुत्र हो।

तुमन जन-सेवा कर जीता हृदय हमारा,
इसीलिये हम स्वागत करते आज तुम्हारा।

तुम गाधी, गौतम की धरती के प्यारे हो,
सूरज, चांद सितारो मे तुम ध्रुव तारे हो।

रामकृष्ण, ईसा, मोहम्मद के उपदेशक तुम,
विश्व हितैषी, विश्व शांति के निर्देशक तुम।

है प्रशान्त सागर जसी गहराई तुम मे,
शिखर हिमालय जसी है ऊचाई तुम मे।
खादी के धागे से निर्मित ताज आपका,
करते हम सम्मान सुमन से आज आपका।
तुमने जनहित मे जीवन को किया समर्पित,
स्वागत गान कवि अमृत का तुमको अर्पित।

□ □ □

हार्दिक उद्गार

श्री डा. कस्तूर चन्द 'सुमन'
जैन विद्या सस्थान,
श्री महावीरजी

सत्यधर जी के लिए हमारा शत-शत वन्दन।
युगो-युगो तक जिये जननि जोधा का नन्दन॥
फतेलाल के लाल, भाल उज्जयिनी के है
सरस्वती के धाम लक्ष्मी के भी पति है
वे परमाणु धन्य जिन्होने उन्हे सवारा
धन्य हो गये पाय आपकी जीवन-धारा
हर्षित है हम आज तुम्हारा कर अभिनन्दन।
युगो-युगो तक जिये जननि जोधा का नन्दन॥१॥
सबके हित में स्वहित जान तुम आगे आये
सबको के लिए समर्पित जीवन कर मुस्काये
सत्य बात कहने मे खाते कभी न हेटी
देश धर्महित जुटे हुए सत्यधर सेठी
श्लाघनीय है सेठी जी का धार्मिक चिन्तन।
पुरातत्व से प्रेम किन्तु प्राचीन नही मन॥२॥
भारत मा के पूत, लाल-जिनवाणी-मा के
हो समाज के रत्न, सहायी अबलाओ के
नही प्रदर्शन, दर्शन मे विश्वास तुम्हारा
मात्र स्वावलम्बन का ही तुम लिये सहारा
लक्ष्मी भी करती है तेरा नित सहर्ष अभिनन्दन।
बहुत समय के बाद मिला है मानो यह अवलंबन॥३॥
सादा जीवन उच्च विचारो के हैं सगम
सत्य-अहिंसा को जीवन मे कर हृदयगम
जीव-दया भडार, सदा निज घट मे रहते
सबका हो कल्याण भावना ये ही करते
"सत्यधर" है धन्य उन्हे है मेरा वन्दन।
उनका जीवन 'सुमन' धरा पर जसे चन्दन॥

● ● ●

समय सार है

श्री ताराचन्द प्रेमी
[illegible]
[illegible]
([illegible])

पूजा के गीत से, जन-जन के मीत से,
मानवीय गुण के प्रतीक, आधार है।

लघुता की कामना से, सेवा की भावना से,
जीवन के पृष्ठों में मूक समय सार है।

व्यवहार त्यागी सा लक्ष्य वीतरागी सा,
सिन्धु में सरलता की लिए पतवार है।

चिन्तन में मग्न है, अन्तर में नग्न है,
वन्दनीय सेठी सत्यधर कुमार है॥

सावधान कल से है, गंगा के जल से है,
निर्मल से जीवन की निर्झर सी धार है।

स्वाभिमान के प्रतीक, जीवन में निर्भीक,
आध्यात्म पन्थ के विप्लव विचार है।

संयम के घन जैसे, मौन समर्पण जैसे,
वाणी जिनवाणी के बोल साकार है।

धर्म मार्ग धारक से, सत्य के प्रचारक से,
वन्दनीय सेठी सत्यधर कुमार है॥

□ □ □

मानव उद्धार

श्री [illegible]
[illegible]

मानव लगा दे हस्ति जग में अमन बनाने में,
जीवन लगा दे जाति मानव उद्धार में।

समय लगा दे सारा पर उपकार में,
ऐसे साधक सत्यधर सेठी महाकाल के द्वार में।

जिन्हें जन-जन से प्यार है राई सम न सार है,
जो कितनी संस्थाओं के नायक संस्थापक है।

जिनको हर जाति वर्ग अपना मानता है,
बड़े [illegible] सन्त-सन्त बालक पिता मानता है।

सिद्ध साधक है [illegible] है [illegible] भावी है,
[illegible] स्वयम बन गये सोध [illegible] है।

[illegible] सम्मान में जिनके [illegible] है,
[illegible] शीतल महान है।

समर्पित जीवन—

गिरतो थामते पर को अपना मानते करते पर उपकार है,
मानव तन ले योगी आये अवन्तिका सत्यधर कुमार है।

इसी तन मे मान पाया यश जग मे छाया अभिमान नही,
तुम ज्ञानी ध्यानी लेखक कवि ऋषि मुनि जति सम।

घर वस्त्र स्थान बदलना दर-दर भटकना क्यो करते,
कर्मो से सिद्धि लक्ष्मी मिलती सत्यधर सेठी कहते।

आध्यात्मिक जैन सनातनि वैष्णव सिक्ख सबको प्यारे,
तीर्थ उपवास दान यज्ञ जप तप करते कई न्याने-न्याने।

प्यार लुटाते फिरते जग मे अमृत सत्यधर जी प्यारे।
नामदेव नमन करें, सब मे माने ईश तुम्ही तो घट बसो,
ओ मेरे जगदीश॥

□ □ □

सत्यधर अभिनन्दन

कवि एव व्यंगकार, वाणी भूषण
श्री माणिक चन्द नाहर
उज्जैन

व्यक्तित्व मिला बहुमूल्य हमें, यह सत्यधर बन चमक रहा।
यह शुभ दिन सद् भाग्य हमारा, अभिनन्दन बन दमक रहा॥
हीरे पन्ने लाल जवाहर मूल्यवान ये सारे सभी।
साथ सत्य जब तक नही होगा, सफल काय न बने कभी॥

प्रेम समन्वय धुनी धुरन्धर धरम धुरा के धारी है।
जीयो-जीने दो वाणी के सच्चे आज्ञाकारी है॥
आधी या तूफान चले पर रहते हिमगिरी से अविचल।
जन जगत का बच्चा-बूढा खुश रहता इनसे प्रतिपल॥

सेवा भावो की तत्परता विरले ही अपनाते हैं।
पर तुम जैसे कर्तव्य निष्ठ सत्यधर ही मिल पाते है॥
प्रिय सेठी उज्जन नगर की शान बन गये आज अहो।
क्षिप्रा की कल कल धारा के स्वर कहदे या साज कहो॥

भारत के कण-कण मे खोजा ढूढा घाटी घाटी से।
दूर क्षितिज तक ढूढ लिया मिल गये मरुधर की माटी से।
नाम धन्य हो गया तुम्हारा काम धन्य हो गया यहा।
सुनते आये नाम अनेका सत्यधर सा रत्न यहा॥

शास्त्र ज्ञान की गौरव गरिमा को भी तुम लहराते हो।
घोर अमा की काली रातों में भी दीप जलाते हो॥

अभिनन्दन की दीप शिखा से ज्ञान वृद्धि भण्डार बने।
पूरे जीवन के सौ वर्षों दुलारमयी अम्बार बने॥

अभिनन्दन कई बार हुए जो आर इन्हें हो जाते थे।
जन जाति के ज्ञानवान कुछ आलसवश अनजाने थे॥

अर्पण और समर्पण का जो जीवन तुमसा अपनावे।
इस सरल, सादगी जीवन की कुछ झलकी हममें भी आवे॥

□ □ □

शुभकामना सुमनांजलि

श्री मोतीलाल सुराना
प्रसिद्ध शोधकथा लेखक
तथा अनेक सामाजिक
संस्थाओं से सम्बद्ध
इन्दौर

धर्म और समाज की, सेवा करे अथाह जो।
सत्य को करे धारण, सत्यधर कुमार वो॥
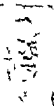
चापलूसी से सदा दूर, स्पष्ट-स्पष्ट करे बात।
तोड़ी सारी कुरीतियों को, निडर हो किये सत्कार्य॥

संस्थायें की स्थापित, सींची निज प्राण से।
साहित्य की करी सेवा, ज्ञान का दान दिया॥

सेठी का नाता हीरक से, अभिनन्दन का है प्रभात।
दीर्घायु की है कामना, सद्गुण का हो सदैव वास॥

□ □ □

वन्दन

भावधि
श्री रामनलाल जैन 'भ्रमर'
सवाई [illegible]

अब तक का सन्तप्त जनों को, जिनका जीवन चंदन।
हरते रहते सत्कर्मों से, जो हरेक का क्रन्दन॥

ऐसे सत्यधर सेठी का, करें किस तरह वन्दन।
धन्य हो रहा अभिनन्दन, करके जिनका अभिनन्दन॥

□ □ □

इस युग को वरदान

हास्यकवि

श्री हजारीलाल जैन 'काका'

सकरार (झांसी)

भारत का बच्चा-बच्चा गाता जिसके गुणगान,
श्री सत्यधर कुमार सेठी हैं इस युग के वरदान।

— 0 —

जिनकी वाणी और कलम ने चमत्कार दिखलाया,
जाने कितने पथभ्रष्टों को सही मार्ग बतलाया।

सच्ची श्रद्धा और लगन से बढ़ते रहे अगाडी,
आपा धापी के इस युग मे रखा न पैर पिछाडी।

रोक न पाया इन्हे आज तक कोई भी व्यवधान,
श्री सत्यधर कुमार सेठी है इस युग को वरदान।

— 0 —

बचपन से ही हर कुरीत पर किया कुठाराघात,
होकर के निर्भीक आपने कही काम की बात।

सफल समालोचक बनकर के सही राह दिखलाई,
इसीलिए तो हर समाज देता है इन्हे बधाई।

जाने कितनी सस्थाओ के हैं यह आज प्रधान,
श्री सत्यधर कुमार सेठी है इस युग को वरदान।

— 0 —

लेकर के नि स्वार्थ भावना किया सदा हर काम,
और आज इस वृद्धापन मे भी लेते नही विराम।

ऐसे त्यागी और तपस्वी को युग का वन्दन है,
श्री सत्यधर कुमार सेठी का शत शत अभिनदन है।

"काका" युग-युग जियें विश्व का करें सदा कल्याण,
श्री सत्यधर कुमार सेठी है इस युग को वरदान॥

☐ ☐ ☐

प० सत्यधर कुमार जी सेठी के सार्वजनिक अभिनन्दन जो आज पूर्व हो चुका है

❀ ❀

(1) उपराष्ट्रपति महोदय भारत सरकार द्वारा निर्वाण महोत्सव पर पर स्वर्णपदक द्वारा सम्मानित।

(2) अहिंसा परिषद् दिल्ली द्वारा स्वागत एवं पदक द्वारा सम्मानित।

(3) सहस्राब्दि समारोह श्रवण बेलगोला मे सार्वजनिक स्वागत, सुन्दर आवास व्यवस्था के सचालन के लिए दि० जैन महासमिति द्वारा इस अवसर पर सम्मान तथा पचकल्याणक स्वागत समिति द्वारा नागरिक अभिनन्दन तथा अभिनन्दन पत्र भेंट।

(4) विद्वत् सम्मेलन संगोष्ठी बम्बई मे ज्ञानपीठ व शांति सागर स्मारक ट्रस्ट द्वारा स्वागत व अभिनन्दन।

(5) खातेगाव पचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव पर मालवा प्रान्तीय दि० जैन सभा के अमृत महोत्सव मे सार्वजनिक अभिनन्दन।

(6) दि० जैन समाज लश्कर ग्वालियर द्वारा सार्वजनिक अभिनन्दन।

(7) श्री दि० जैन समाज बीसपथी मन्दिर उज्जैन द्वारा अभिनन्दन व अभिनन्दन पत्र भेंट।

(8) श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल उज्जैन द्वारा नागरिक अभिनन्दन।

(9) श्री दि० जैन समाज सुसनेर पचकल्याणक महोत्सव मे स्वागत एव अभिनन्दन पत्र भेंट।

(10) श्री दि० जैन नवयुवक मण्डल रतलाम द्वारा सार्वजनिक व अभिनन्दन पत्र भेंट।

● × ●

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

व्यापारियों ने

Man Kind

Shri Arvind Kumar Gupta
Indore (M P)

Long live Pundit Ji who has endeared himself to the citizen's of Ujjain and Indore, by his selfless service and rich contribution in various fields. He commands respect and affection of all those who know him.

The rejuvenation and integration of Hinduism and regeneration of man kind are the two aims of Pundit's life He has lifted the most important task of communication of religion through "living contact" with the society He worked with all type of persons and transmited the fire of vedant's into their hearts All expansion is life for him and all contraction is death.

The blessing of Shri Pundit Ji gave me the strength and courage to realise truth in this very life.

□ □ □

शानदार एवं जानदार

श्री कांतीलाल झालानी
उज्जैन

विद्वता, जैन दर्शन का ज्ञान एवं प्रभावशाली वक्तृत्वकला यह सेठी जी की विशेषता है। व्यावसायिक, सांस्कृतिक सामाजिक एवं धार्मिक गतिविधियों में सक्रियता एवं मिलन सरिता भी सेठी जी के प्रमुख गुणों में से है। निःसन्देह सेठी जी एक कर्मठ, सक्रिय एवं साहसी तथा शानदार व्यक्तित्व के धनी है।

मेरी सेठी जी के प्रति मंगल कामनायें एवं आयोजन की सफलता के लिए शुभ कामनायें स्वीकार करें।

□ □ □

आडम्बर रहित

श्री केशरीमल काला
कलकत्ता

श्रीमान् पूज्य पं० सत्यंधर कुमार जी सेठी साहब विद्वान होने के साथ साथ कुशल व्यापारी है। मुझे स्वयं उनके यहां उज्जैन में ठहरने का सुअवसर प्राप्त हुआ। वे जिस दिन काम को करने का बीड़ा उठाते हैं उसे पूरा करने का उनका लक्ष्य सदैव रहता है। ग्राम भगवानपुरा (सांवेर) में भी मंदिर प्रतिष्ठा के सुअवसर पर भी उनसे साक्षात्कार हुआ। आपकी विचारधारा आडम्बर रहित, समयानुकूल, राष्ट्रहित एवं समाज सुधार की है।

आपकी दीर्घायु की कामना करता हुआ हृदय से अभिनन्दन करता हूं।

□ □ □

अनोखा सगम

श्री कृष्णदास मोढ़
मत्री–दी होलसेल क्लाथ मर्चेन्टस
एसोसियेशन, उज्जैन

आदरणीय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी विगत अनेक वर्षो स हमारी अवतिका नगरी म नि स्वाथ रूप से विभिन्न सेवा कार्यो मे सतत जुटे हुए है। चाहे सामाजिक काय हो या धार्मिक कार्य हो अथवा व्यवसाय की सेवा का कार्य हो, कितना भी दुष्कर कार्य क्यो न हो, आपमे अपनी सूझबूझ एव परिश्रम से उस कार्य को सफलतापूर्वक सम्पन्न करने की अनोखी प्रतिभा है।

प्राचीनकाल के अनेक विद्वान आचार्यो का जीवन-चरित्र हमे देखने को मिलता है जो गृहस्थ होते हुए भी ऋषिमुनि तुल्य माने जाते थे, ठीक उसी प्रकार पण्डितजी मे सादगी, सत्यनिष्ठा, प्रम भावना, सहृदयता का अनोखा सगम स्पष्ट परिलक्षित होता है।

उज्जन नगर के जन समाज में तथा वस्त्र व्यापारी बाजार मे आपका विरला ही स्थान है। अनेक सस्थाओ की जवाबदारी आपके कधो पर होते हुए भी जब कोई परिचित अथवा अपरिचित व्यक्ति आपसे मिलने या सलाह लेने आते हैं आप अत्यन्त ही प्रमपूवक अपनी नि स्वाथ सलाह देकर उसकी समस्त चिन्तायें दूर कर देते हैं।

देश के स्वतत्रता-सग्राम मे आपके योगदान को भुलाया नही जा सकता है। देश एव समाज के हेतु आपने अपने घर-बार एव व्यापार की परवाह न करते हुए सदव अपने कर्त्तव्य का निर्वाह किया है। वतमान मे अनेक सस्थायें विद्यमान है जो उनकी कर्त्तव्यनिष्ठा का जीता-जागता प्रमाण है।

दि होलसेल क्लॉथ मर्चेन्ट एसोसिएशन, उज्जन एव थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति मर्यादित, उज्जन के आप सस्थापक सदस्य है तथा प्रमुख पद पर हैं। लेखक को इन सस्थाओ मे आपके साथ काम करने का अवसर प्राप्त हुआ है इसे मैं अपना सौभाग्य मानता हू।

हम सब परमपिता परमात्मा से प्राथना करते हैं कि आदरणीय पण्डितजी का जीवन उत्तरोत्तर यशस्वी हो, वे स्वस्थ रहे, समृद्ध रहे तथा अनेक वर्षो तक समाज एव देश की सेवा करते रह।

हार्दिक अभिनन्दन।

□ □ □

मर्यादा पालक

श्री गोकुलदास बागडी
उज्जैन

श्री अनन्त कोटि ब्रह्माण्ड नामक भगवान श्रीकृष्ण की पठनस्थली, राजा विक्रमादित्य की राजधानी एव श्री भर्तृहरि की तपोभूमि उज्जयिनी के क्षीर सागर कालोनी मे पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का निवास स्थान है।

मेरा पिछले 25 वर्षो से श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से निकट का सम्बन्ध रहा है व हमने कपडा मार्केट की सस्थाओ मे साथ-साथ काय किया है। जहा तक म उनके सम्पक मे आया, मैंने देखा कि श्री सेठी जी जो भी सामाजिक या सावजनिक कार्य हाथ मे लेते है, उसे वे अपना कत्तव्य समझ कर ही करते हैं। मितव्ययता एव निरभिमानता उनके गुण रहे हैं।

कुछ लोग केवल प्रदशन के लिए कई नियम व मर्यादाओ का ढोंग रचते हैं। श्रीमान् पण्डितजी अपने नियमो के बडे पक्के हैं। प्रवास के समय भी उन्हे अपनी मर्यादा एव नियमो के पालन का पूरा ध्यान रहता है।

मानवता के सिद्धान्तो का प्रतिपादन करने वाले श्री सेठी जी यद्यपि जैन धर्मावलम्बी हैं, परन्तु उनका धार्मिक दृष्टिकोण अति विशाल एव गहरा है। वे विद्वान् हैं एव विद्वानो को आदर देना उनके स्वभाव का ही अङ्ग है। कई बार वे मेरे साथ परम् पूज्य तपोनिष्ठ स्वामी श्री 1008 श्री परमानन्द जी महाराज "युग पुरुष" के पास गये जो अद्वैत के प्रगाढ ज्ञाता एव वक्ता है एव उन्हें समादरपूवक श्री भगवान महावीर जयन्ती के महोत्सव पर मुख्य अतिथि के रूप में आमन्त्रित करके बुलाया व लोगो को उनके अमृतमय उप देशो से लाभान्वित करवाया।

सेठी जी की आयु, अनुभव एव कार्यक्षमता में मुझसे बहुत बडे है, फिर भी वे मुझे अपने अन्तरग मित्रो मे स गिनते है।

अन्त मे श्रीमान् पण्डित जी का हार्दिक अभिनन्दन करता हुआ परमपिता से प्रार्थना करता हू कि वे चिरजीवी हो और अपने कार्यो को द्रुतगति से आगे बढाते रहे।

☐ ☐ ☐

अमूल्य हीरा

श्री चादमल जैन
दुग

श्रीमान् पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी अपने समय के विद्वानो मे से एक 'अमूल्य हीरा' है। आप एक धर्मनिष्ठ, समाजसेवी, स्पष्टवादी, निर्भीक प्रवक्ता, उच्च विचार वाले व्यक्ति है। धार्मिक कार्यों म आपकी लगन बहुत ही सराहनीय है। समय समय पर अपने सामाजिक कुरीतियो का खुलकर

विरोध किया है। आपका प्रवचन सरल भाषा मे मीठे शब्दो मे सीधे श्रोता के हृदय पर असर करने वाला है, जिसे अबला वृद्ध सभी समझ कर अपना कल्याण कर सकें, होता है। आप ठोस रचनात्मक समाज सुधारक व्यक्ति है। हमारे यहा 2 साल पहले 108 परम् पूज्य आचार्य रत्न श्री सम्मति सागर जी महाराज का ससंघ चातुर्मास हुआ। मैंने उस समय पण्डित जी को उज्जैन पत्र लिखा था। अच्छी धार्मिक प्रभावना हो रही है। पण्डित जी का प्रत्युत्तर मिला। समाज सुधार के बहुत से कार्य हुए होंगे जैसे टीका प्रथा बन्द करना, दहेज प्रथा खत्म करना, रात्रि भोजन का त्याग, जुआ-शराब आदि कुव्यसनो का त्याग, लेकिन यह सब सुधार तो हुआ नही म क्या जवाब देता? इससे यह स्पष्ट है कि आप ठोस सुधार चाहते हैं। कथनी और करनी दोनो एक समान हो। आपकी यही इच्छा है तथा सच्चा सुधार भी तभी सम्भव है। अन्त मे मैं श्रीमान पण्डित जी सत्यधर कुमार जी सेठी हीरक जयन्ती पर श्री वीर प्रभू से प्रार्थना करता हू। पण्डित जी दीर्घायु हो और हमे उनका मार्गदर्शन मिलता रहे।

□ □ □

समाजसेवी

श्री चन्द्रकांत जैन
मनेजर (सेल्स)
महर सीमेन्ट, सरलानगर
सतना

आदरणीय पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी से मुझे स्नेह और वात्सल्य, प्रेम व मार्गदर्शन विगत 30 वर्ष से मिलता रहा है।

पण्डित जी अपने नाम के अनुरूप सत्य विचारो को निर्भय होकर समाज के सामने रखते रहे है तथा इस बात की वह चिन्ता नही करते है कि बहुमत किस तरफ है। ऐसा ही एक अवसर मुझे याद है। जब आदरणीय व श्रद्धेय कानजी स्वामीजी को उज्जैन और सागर मन्दिर हेतु बुलाने के लिये जैन समाज मे कुछ विरोध था। उन्होने कहा कि हमे यह काम करना चाहिये और आदरणीय कानजी स्वामीजी उज्जैन पधारे व धर्म प्रभावना हुई।

मेरे व्यक्तिगत जीवन पर पण्डित जी का काफी प्रभाव रहा है। उन्होने मुझ म 'जैन धर्म व समाज" के लिये एक ललक जगाई और इस कारण म उनका व्यक्तिगत रूप से आभारी हू। मै यही कामना करता हू कि भगवान महावीर उन्हे अनेक वर्ष तक समाज सेवा का अवसर प्रदान करे और आदरणीय पडित जी हमारा मार्गदर्शन करते रहे।

□ □ □

अनमोल निधि

श्री जयकुमार लिग्गा
उज्जैन

जो व्यक्ति सम्प्रदायवाद जसी सकीणता से ऊपर उठकर हमेशा समग्र जन समाज और धम के उत्थान के लिए कमशील रहे वह निश्चित ही हम सबके लिये प्रशसनीय एव अनुकरणीय है और यह बात प० सत्यधर कुमार सेठी पर पूरी तरह सही उतरती है।

पण्डितजी के साथ अपने 20 वर्षों से अधिक के सम्पक म मने हमेशा उन्हे धार्मिक एव सामाजिक पुनजागरण तथा रचनात्मक कार्यों मे सलग्न देखा है। दरअसल पण्डितजी हमारे जन समाज के लिए एक अनमोल निधि है। म पण्डित सत्यधर जी के दीर्घायुष्य की मगल कामना करते हुए हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

□ □ □

आडम्बर रहित

श्री जमनालाल चिरोंडा
उज्जैन

लगभग 20 वर्षों मे पण्डित जी परिचय होकर सम्पक होता रहा है, जो वतमान मे निरन्तर आत्मीयता मे परिवर्तित होता जा रहा है। सत्य की खोज मे निरन्तर आगे बढने वाला ही हिन्दू है ऐसा प्रात स्मरणीय महात्मा गाधी ने निरुपित किया है, उसी के अनुरूप बढते हुए पण्डित जी को म देखता आ रहा हू। समाज सेवा एवं जनहित के काय चाहे उसका स्वरूप शैक्षणिक हो या आध्यात्मिक, सामाजिक हो या राजनतिक, समग्र क्रान्ति का हो या पुरातत्व का, नशाबदी का हो या जीव दया का, औषधालय का हो या पुस्तकालय का अथवा प्रगतिशील सामाजिक परिवर्तन का हो। आप हर जगह अच्छे काय मे अग्रिम पक्ति म ही मिलेंगे। उसमे भी विशेषता यह है कि आपकी राजनतिक विचारधारा से मतभेद रखने वाला व्यक्ति भी जन सेवा काय मे आपके साथ कार्य करता है तो इन्हें अपना सहयोगी ही नही अपितु मागदशक के रूप मे पाता है। उस समय परोपकारीय पुण्याय पापायच पर पीडनम् की महत्वाकाक्षा स्पष्ट झलकती है।

किसी भी प्रसग पर तत्काल निणय लेने की योग्यता, पात्रता आपम है। अपने विचार प्रभावी ढग से स्पष्ट एव तकपूण शली म रखने क बाद भी यदि कोई न्यायोचित बात या विचार परिवतन करन के लिय रखता है तो खुशी के साथ मान्य कर लेते है और उसका दृढता से पालन करन व करवान के पक्षपाती है।

देश व समाज की वतमान दुरावस्था से आप जहा व्यथित है वहा समाज सेवा के माध्यम से अथक प्रयत्न करते रहना ही कतव्य समझते है। विपरीत परिस्थितियो म ही तीव्रतर काय करने की आवश्यकता है। एसा व्यवहार काय रूप म परिणित करके ही अपन सहयोगियो का मागदशन करते हैं।

आडम्बर रहित सादगी से काय करन की इच्छा रहती है। सघष ही जीवन है। ऐसा आपके विचार और व्यवहार से प्रत्यक काय म आने वाली कठिनाइयो के समय स्पष्ट झलकता है। शारीरिक थकावट या दूसरा का मन जानने के लिये कभी-कभी निराशा के शब्द निकलते है वे क्षणिक ही रहते हैं तथा पुन अधिक तीव्र गति से काय करने म लग जाते है।

आप अपने विचार दूसरो पर थोपना नही चाहते अपितु दूसरा को भी अपन विचार पर चलने की स्वतन्त्रता के समथक व पक्षपाती हैं।

आपातकाल म आपसे व स्वतन्त्रता सग्राम सेनानी वयोवृद्ध आदरणीय श्रीमान् त्र्यम्बक सदाशिव गोखले सा० स चर्चा होती रहती थी तब मुझे इनके विचारो से यही अनुभव हुआ कि काम करने के ढग अलग हो सकते है लक्ष्य तो एक है फिर टकराव व जोर जबरदस्ती से काय नही होना चाहिये। सभी को अपनी मायताओ के साथ प्रामाणिकता से काम करने देना चाहिए। हम जो कहे वही श्रेष्ठ है। ऐसा विचार ठीक नही है, दूसरो मे भी अच्छी बातें हो सकती हैं उन्हे भी ग्रहण करना चाहिये। इस प्रकार समन्वयवादी विचार भी सभी से मैं पण्डित जी के जीवन म देख रहा हू। विश्व हिन्दू परिषद का काय करते हुए देखकर लगता है कि अब सीमित दायरे से उठकर परिपूण जीवन की ओर अग्रसर हो रहे हैं। इस सन्दभ मे मुझे एक बार कहा कि अब मैं रा० स्वय सेवक सघ का आधा सदस्य बन गया हू। एक प्रसग और भी देना चाहता हू कि मुझे प० जी न बताया कि कुछ लोग कहते थे कि चित्तौडा जी का व आपका डटकर सघष होगा, क्योंकि हमारा व्यवसाय समान है व कुछ वर्षो से हमारी दुकाने आमने-सामने पडती हैं और मुझे भी शका होती थी, परन्तु आपके व्यवहार मे कहीं टकराव ही नही हुआ बल्कि आपसी सहयोग व स्नेह बढता ही गया है तथा अब तो अभिन्न जसे हो गये हैं। यह देखकर उन्ही लोगो को आश्चर्य और कभी ईर्ष्या भी होती है। मैं तो समझता हू कि यह पण्डित जी के सहयोगी स्वभाव का ही परिणाम हो सकता है तथा इनके स्नेह का ही परिचायक मानता हू एव पण्डित जी को जोडने वाला मानता हू तोडने वाला नही।

अन्त मे परम् पिता परमात्मा से प्राथना करता हू कि वह पण्डित जी को स्वस्थ दशा में दीर्घायु प्रदान करे ताकि उत्तरोत्तर प्रगति पथ पर बढते हुए देश व समाज की सेवा साधना मे अपने परिपूर्ण मानव जीवन को साकार करने म सफल हो।

☐ ☐ ☐

अग्र

श्री दामोदर जी
उज्जैन

मैं श्री सेठी जी के सामने बच्चा हू, परन्तु मैं श्री सेठी जी के बारे में करीब 20 वर्ष से परिचित हू । श्री सेठी जी नि स्वार्थ समाज सेवी ही नही बल्कि व्यापार मे, मार्केट मे व धार्मिक कार्य मे आप हमेशा अग्र रहे हैं। आप पूरी पूरी सेवा तन-मन-धन से करते है। व्यापार मे भी आप अपनी प्रतिष्ठा बनाये है। हमेशा नेक व ईमानदारी से कार्य करने की सदैव आप हर व्यक्ति को राय देते है।

इनके विचार पर चलने वाला व्यक्ति कभी भी जीवन में ठोकर नही खा सकता है।

समाज का या अन्य धार्मिक कार्य आने पर आप अपना व्यापार, घर छोड़कर पहले उस कार्य में अग्र होते है। इनका जीवन बड़ा ही सरल व व्यवहार बड़ा ही मधुर है। हमे आप जसे व्यक्ति का हमेशा मार्गदर्शन मिलता रहे। इन्ही शुभकामनाओं के साथ।

□ □ □

Good Worker

Shri Tarachand Barjatya
Director, Rajshri Pictures (P) Ltd Bombay

Shri Sethi Ji and myself had studied together in a School at my native place Kuchaman under Pt Chain Sukh Das Ji of hallowed memory Pt Sethi Ji has done good work in the Society and we can do little to honour him

With best wihes,

□ □ □

नि:स्वार्थ सेवी

श्री नथमल सेठी
कलकत्ता

सेठी जी के कार्यक्षेत्र की शुरुआत कलकत्ता (बंगाल) म होने के कारण एक साथ रहने का बराबर लम्बा समय तक सम्पर्क चला आ रहा है। वास्तव मे सेठी जी शुरु से निर्भीक, आदर्शपूर्ण, धार्मिक, सुधारवादी, क्रान्तिकारी विचारक है। आप सुधारक होते हुए भी धार्मिक भावना होने से तथा वर्तमान जैन समाज का कोई भी पंथ पक्षपात न रखते हुए, इस वृद्ध अवस्था मे भी धर्म व समाज की अनेक संस्था द्वारा नि स्वार्थ सेवा कर रहे है, वह वास्तव मे जैन समाज के लिए गौरव की बात है। एसे महान् व्यक्ति को समाज द्वारा अभिनन्दन वास्तव म अभिनन्दन है, वीर प्रभु मे उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हुआ अभिनन्दन करता हू ।

\+ \+ \+

बात के धनी

श्री प्रेमनारायण गर्ग
भूतपूर्व अध्यक्ष–रोटरी क्लब एवं
होलसेल क्लाथ मर्चेन्टस एसोसियेशन
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी व मेरे स्वर्गीय पिताजी श्री पूनमचन्द जी गर्ग के घनिष्ठ सम्बन्ध थे। पण्डितजी अक्सर उनके पास आया-जाया करते थे। इसी दौरान मुझे भी पण्डितजी के सम्पर्क मे आने का काम पड़ा व तब से ही पण्डितजी से मेरी निकटता बढ़ती गई। पण्डितजी के साथ कुछ सस्थाओ मे मुझे कार्य करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। वहा पर पण्डितजी ने हमेशा ही मुझे मार्गदर्शन दिया। श्रीमान् पण्डितजी मे कई गुण हैं वे बड़े सात्विक, धर्म प्रेमी व अपने कार्य के प्रति पूर्णतया समर्पित है। वे जिसे एक मतबा अपना लेते है, उसका साथ कभी भी नही छोड़ते व उसके बुरे क्षण मे एक बड़े स्तम्भ के समान है। पण्डितजी हमारे नगर की कई धार्मिक, सामाजिक व व्यवसायी सस्थाओ से जुड़े हुए है। पण्डितजी जैन धर्म के तो प्रकाण्ड पण्डित है ही लेकिन दूसरे धर्मों के प्रति भी उनकी बड़ी श्रद्धा व आदर है। अन्य धर्मावलम्बी भी उनको बड़े आदर व सम्मान की दृष्टि से देखते है। व्यापार मे भी पण्डितजी की ईमानदारी व व्यवहार कुशलता की बड़ी साख है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि वे अपनी बात के बड़े धनी है। श्रीमान् पण्डितजी के प्रति मुझे प्रगाढ श्रद्धा है। मुझे उनका आशीर्वाद व स्नेह हमेशा ही मिला है। मैं उनके दीर्घायु होने की कामना करता हू।

□ □ □

प्रख्यात व्यक्तित्व

श्री फतेह मोहम्मद
उज्जैन

श्री सेठी जी के सानिध्य मे रहने का अवसर मुझे यदा-कदा मिलता रहता है और मैंने उन्हे अत्यन्त निकट से देखा है। मै आपसे अत्यन्त प्रभावित भी हुआ हू, आप एक निर्भीक प्रवक्ता, धार्मिक सुधारवादी, समाज सुधारक के रूप मे प्रख्यात हैं। आपने सदैव ही विशेष रूप मे जैन आदर्शों के रूप मे समाज को सामाजिक कुरीतियो से सघर्ष करते हुए निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा प्रदान की है। आपकी लेखनी पैनी एव सशक्त है तथा नये समाज की रचना मे महत्वपूर्ण योगदान प्रदान कर रही है। महात्मा गाधी की स्पष्ट छाया आप पर अकित है। इसी कारण आपका जीवन सादा, मितव्ययी एव सरलता से परिपूर्ण है। आशा है आप सदैव ही समाज को दिशा बोध देकर उपकृत करते रहेंगे।

□ □ □

तपस्वी

श्री बजरंगलाल हुरभजनका
मानसेवी सचिव—काटन मर्चेंट एसो
उज्जैन माधव गौशाला, उज्जैन
उपाध्यक्ष—उद्योग व्यापार महासंघ
कालीदास उच्चतर माध्यमिक वि
उज्जैन

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के बारे में मेरे समान व्यक्ति कुछ लिखें अनुचित होगा फिर भी जहा तक पण्डित जी से सम्पर्क हुआ उन सरीखा विद्वान् स्पष्ट विचारधाराओ एव सत्य के प्रति पूर्ण निष्ठावान् व्यक्ति के रूप मे आपकी उज्जैन मे ख्याति रही है।

व्यवसाय म एक प्रतिष्ठित पीढी के सफल सचालक ही नही, आप उज्जैन के विकास, उज्जैन की कोई भी समस्या हो, उसमे अपना पूर्ण सहयोग और पूर्ण निष्ठा से काय कर सफलतापूर्वक सौंपे गये कार्यों को कार्यान्वित किया है।

किसी प्रकार की इच्छा न रखते हुए और अपनी विचारधाराओ पर अडिग और ऐसे समाजसेवी व तपस्वी व्यक्ति के अभिनन्दन समारोह के लिए मेरी ओर से हार्दिक शुभकामनाय।

□ □ □

श्रेष्ठि

श्री बालमुकन्द अग्रवाल
अध्यक्ष—दौलतगज होलसेल किराना मर्चेन्ट एसासियेशन, भारतीय जनता पार्टी—दौलतगज मण्डल, कोषाध्यक्ष—चेम्बर आफ कामर्स,
उज्जैन

भारतीय सस्कृति वास्तव में महान् है और उसके पुजारी भी महान् है। भारतीय सस्कृति के अनन्य शिल्पकारो मे जब भारत मे कम के आधार पर वर्ण व्यवस्था का निर्णय किया तब ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य व शूद्र की वर्ण व्यवस्था की, तब वैश्य समुदाय को महाजन शब्द से सम्बोधित किया। वसे तो सभी वर्ण महान हैं, किन्तु वैश्य समुदाय को "महाजन" कहा क्योकि सभी वर्णो म जहा अपनी-अपनी विशेषता है "महाजन" वग मे कुछ अलग ही विशेषता है।

महाजन वही है जिसके मन मे सबके प्रति आत्मियता हो। कोई दुरभाव नही हो, सहिष्णु हो, सवेदनशील हो, दूसरे के दु ख को अपना समझकर उसके दु ख को दूर करने को सदव तत्पर हो, सेवाभावी हो, शीलवान, धर्म धारण करने वाला हो और ऐसे अनेक गुणो से भरपूर हो, वही वास्तव म महाजन है। "महाजनो येन गत स पथा" अर्थात् महाजन के पथ पर सभी वग चलने को आतुर होते है व उसी पर चलना चाहिये।

सेठी शब्द भी "श्रेष्ठि" का अपभ्रश है। श्रेष्ठि वही है जो मनुष्यो म श्रेष्ठ हो।

इस परिप्रेक्ष्य म हम अपने पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी को देख तो ऐसा लगता है कि मानो भारतीय सस्कृति के अमर गायक, शिल्पकार पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी वास्तव म महाजन" है और श्रेष्ठि (सेठी) तो व

है ही। प० सत्यधर कुमार जी सेठी अपनी समाज सेवा की नई कार्यों के कारण नय आदर्शों के कारण व अब वास्तव मे पण्डित भी बन गये है।

म प० सत्यधर कुमार जी सेठी को गत 20-25 वर्षों से जानता हू। प० सत्यधर कुमार जी सेठी वास्तव में समाज के प्रमुख व निर्भीक प्रवक्ता, आदर्शों की मूर्ति, धार्मिक, समाज सुधारक, निरन्तर साधनारत् एव समाज के प्रखर प्रकाण्ड विद्वान हैं। सम्पूर्ण मानव समाज विशेषकर महाजन समाज व खासकर जन समाज जन धर्मावलम्बी इस महान् व्यक्तित्व से सदव सदव प्रेरणा लेता रहेगा। इन्होंने न केवल अपने माता-पिता का नाम ही रोशन किया है, अपितु जहा आपने विद्या पाई ऐसे कुचामन विद्यालय एव गुरु स्व० प० मनसुखदास जी न्यायतीर्थ की आत्मा को सुख-चन देकर उनके साथ न्याय किया है और अपने नाम को वास्तव मे सार्थक किया है। प० सत्यधर कुमार जी सेठी महान् हैं व बधाई के पात्र हैं।

म प० सत्यधर कुमार जी सेठी का हृदय से हार्दिक अभिनन्दन करता हू।

□ □ □

योद्धा

श्री बाबूलाल जन
इन्दौर

प० जी को नजदीक से देखने, समझने, सुनने एव साथ काय करने का सौभाग्य मुझे मिला है। म अपने को उस सानिध्य के कारण गौरवान्वित समझता हू।

पण्डित जी सचमुच ही एक निर्भीक कार्यकर्ता, कुरीतियो से जूझने वाले योद्धा एव समाज के गरीब एव दुबल वग की पीड़ा को अपनी समझने वाले एक मानव के रूप म हमारे सामने हैं। उनके विषय म जितना लिखा जाय थोड़ा है। भगवान से म उनके लम्बे एव स्वस्थ जीवन की कामना करता हू।
आदर सहित—

□ □ □

अनमोल रत्न

श्री [illegible] टोंग्या
[illegible]

श्री पूज्य प० सत्यधर कुमार जी सेठी को हमने बहुत नजदीक से [illegible] समझा है।

हमारे सर्वोदय [illegible] सम्मेलन की स्वागत समिति के उपाध्यक्ष [illegible]
15 16, 17, 1982 [illegible] है।

श्री [illegible] विद्वान, निर्भीक [illegible] तथा [illegible] वक्ता है [illegible] आदर्श [illegible]। वह सत्य, अहिंसा म विश्वास [illegible]

हैं, यह सब धर्म को समान दृष्टि से देखते हैं, यह बड़ा गुण है। आप भारत मा के निर्भीक प्रवक्ताओं में से है आपकी काय करने की क्षमता बहुत उच्चकोटि की है। आप सादगीपूर्ण जीवन एवं उच्च विचार के धनी है। वह उज्जैनी (अवंतिका) के रत्न है। आपके पूर्व जन्म के संस्कार बहुत उज्जवल हैं। गृहस्थाश्रम मे रहते हुए भी सेठी जी सन्त हैं। यह ईश्वर की देन है। सेठी जी के पास अनमोल रत्न है।

हम ईश्वर से प्रार्थना करते है कि हमारे सेठी चिरायु रहें। उन्ही से सदमार्ग दर्शन मिलते रहे।

हार्दिक अभिनन्दन,

□ □ □

नवयुवको के प्रेरणा स्त्रोत

श्री मोहनलाल भगवाल
उज्जैन

यह अत्यन्त हर्ष की बात है कि मान्यवर पं० सत्यधर जी सेठी के हीरक वर्ष मे समस्त जैन समाज उन्हे अभिनन्दन ग्रन्थ भेंट कर उनका सम्मान कर रहा है।

श्री सेठी जी का जीवन लगभग 40 वर्षो से मेरा तथा मेरे पारिवारिक जनो का निकटतम आध्यात्मिक सम्बन्ध रहा है, वे मेरे परिवार के धार्मिक प्रेरणा के स्रोत है।

श्री सेठी जी का जीवन संघर्षमय रहा है, समाज सुधार उनके जीवन का व्रत है। इसके लिये वे अपने शरीर स्वास्थ्य की भी परवाह नही करते। उज्जैन की जैन समाज को प्रगतिशील बनाने मे सेठी जी का महत्त्वपूर्ण योगदान है। उज्जैन के नवयुवको के लिये तो वे वरदान-स्वरूप सिद्ध हुए हैं। उन्होने नव युवको मे धार्मिक भावना एवम् सांस्कृतिक अभिरुचि जागृत की। वे नवयुवको को सदैव धार्मिक ज्ञान एवं सदाचार की शिक्षा देते है।

उनके अभिनन्दन से हम सब अपने को गौरवान्वित अनुभव करते है। मेरी वीर प्रभु से कामना है कि पण्डित सत्यधर कुमार जी शतायु प्राप्त करें जिससे वे राष्ट्र एवं समाज की सेवा मे तत्पर रह सकें।

□ □ □

समर्पित जीवन

श्री मुरलीधर गुप्ता
[illegible] सचिव [illegible]
[illegible] एवं [illegible]
[illegible] जानकीबाई नाथूराम
[illegible] पारमार्थिक न्यास,
इन्दौर

पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी राष्ट्रीय विभूति है। उनका राष्ट्र एवं समाज के प्रति समर्पित आदर्श जीवन है। सेठी जी अद्वितीय विद्वान् एवम् जैन शास्त्र के महान् पण्डित हैं। उनकी सभी धर्मों के प्रति समान आस्था है। पण्डितजी का अभिनन्दन सभी के लिये विशेष गौरव की बात है। पण्डित जी के दीर्घायु होने एवम् समारोह की सफलता के लिये सर्वेश्वर से कामना है।

□ □ □

धर्म और समाज सेवा की प्रतिमूर्ति

श्री मेघराज कोठारी
उज्जैन

मानवतावादी धर्म की व्याख्या करते हुए भगवान महावीर ने कहा है—"ज्ञान मनुष्य का सार है, अज्ञान परम दुःख है और धर्म से प्राणी पूज्य होता है।" मेरे विचार में यदि इन सद्गुणों की व्याख्या को वास्तविक जीवन में नापा जाय, तो ये दोनों ही शाश्वत विचार पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी के जीवन में परिलक्षित होते हैं।

मुझे पं० सेठी को करीब से देखने का अवसर मिला है और उसी सन्दर्भ के साथ इस शब्द में मैं पण्डित सेठी को अपनी भावाञ्जली अर्पित कर रहा हूँ।

पण्डित सेठी जी का स्वरूप जैन धार्मिक गतिविधियों में मैंने सदैव से ही सकारात्मक रूप से पाया है और महसूस कर रहा हूँ कि उज्जैन के जैन मतावलम्बियों को कर्मठता का पाठ पढ़ाने में कितना योगदान करते हैं। वैष्णव मतावलम्बी होने के बाद भी मेरा सम्पर्क जैनियों से सन्निकटता का रहा है और मैंने पाया कि इस कठिन जैन जीवन पथ को सेठी ने औरों के लिए भी सरल बनाया। उज्जैन में जैन धर्म की विविध गतिविधियों के संचालन के साथ ही जैन मुनि संघ का पदार्पण और उनकी सेवा [illegible] आपकी एक प्रमुख उपलब्धि रहा है।

सामाजिक और [illegible] जीवन में पण्डित सेठी एक नैतिक और चरित्रवान नेता भी रहे हैं। उन्होंने साम्प्रदायिकता की भावना से परे हटकर [illegible] राष्ट्रीय उत्थान में योगदान दिया है। आपने कभी भी अपने सामाजिक पद का उपयोग किसी भी मत विशेष के प्रति आग्रह का नहीं रखा और [illegible] सर्वधर्म के सम्मान की भावना रही, यद्यपि आप [illegible] विचारधारा के प्रतिपादक [illegible]। राष्ट्र और समाज के उत्थान में [illegible]।

[illegible] अभिनन्दन [illegible] में मेरी धारणा है कि [illegible] [illegible] हैं और [illegible] है। [illegible]।

□ □ □

अमूल्य निधि

श्री महावीर प्रसाद रारा
नलवाडी

आदरणीय पण्डित जी के "हीरक जयन्ती पर्व" के पुनीत अवसर पर उनका अभिनन्दन समारोह करने जा रहे है। आपका यह कार्य स्तुत्य है।

मैने पण्डित जी को अत्यन्त निकट से जाना-पहचाना है। पण्डित जी का पाण्डित्य अगाध है। "सादा जीवन उच्च विचार" आपके जीवन का मूलमंत्र रहा है। आप सीधे सरल प्रकृति के परन्तु कुरीतियो पर टूट पडने मे सिंह के सदृश हैं। अपने संघर्षमय जीवन मे आपने जो देन समाज को दी है वह समाज की "अमूल्य निधि" के रूप मे हमेशा सुरक्षित रहेगी।

ऐसे निर्भीक एव ओजस्वी समाज-सुधारक के अभिनन्दन समारोह का समाचार हृदय को आनन्द रोमांचित कर देने वाला है।

□ □ □

प्रतिमूर्ति

श्री रामचन्द्र गुप्ता
भू पू अध्यक्ष-दी होलसेल क्लाथ मर्चेन्ट्स एसोसियेशन,
उज्जैन

पण्डित श्री सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा सम्पर्क गत 20 वर्षो से रहा है। इस अवधि मे उनके साथ कई सार्वजनिक कार्यों मे भाग लिया है। उज्जैन नगर की समस्त धार्मिक एव सार्वजनिक गतिविधियो मे प० जी का नि स्वार्थ सहयोग न हो यह असम्भव ही है।

वर्तमान युग मे व्यापार एवं सार्वजनिक जीवन मे नैतिकता का महत्व गौण होता जा रहा है, परन्तु पण्डित जी ने अपने समस्त जीवन मे नैतिकता को प्राथमिकता देकर आदर्श उपस्थित किया है।

नैतिकता, धर्म, साहस-सर्वधर्म समभाव, पाण्डित्य एव उत्कट देशप्रेम की प्रतिमूर्ति प० श्री सत्यधर कुमार जी सेठी शतायु हो यही प्रभु से प्रार्थना है।

□ □ □

नक्षत्र

श्री राजमल जैन
प्रेस वाले, सयोजक-
हिंसा विरोध समिति
उज्जैन, मंत्री-मुद्रण
व्यवसायी संघ, उज्जैन

"पुण्यशाली के पग पग पर निधान", यह लोकोक्ति इतिहास, शास्त्र और चरित्र कथाओ के अनुसधान मे तो प्रसिद्ध है ही परन्तु आज भी जैन शासन के आकाश मे ऐसे अनेकानेक ज्योतिपुंज नक्षत्र है जिनकी एक ही किरण हजारो पथिको के लिये पथ प्रदर्शक होती है और जिनके पग पग पर जैन शासन का इतिहास निर्मित होता रहता है, ऐसे ही एक तेजस्वी नक्षत्र है प० सत्यधर कुमार सेठी।

मधुर मुस्कान बिखरता हुआ मुख मण्डल, तप के तेज मे चमकती हुई ओजस्वी देह दृष्टि, तर्क के सामने तर्क रखकर जिन शासन के सिद्धान्तो को अकाट्य रीति से प्रस्तुत करने की पैनी दृष्टि, राजस्थान की माटी ने ऐसे

दिव्य व्यक्तित्व वाले रत्न को हमे दिया जिसने एक बार निकट सम्पर्क पा लिया, जीवन पर्यन्त भुला नही सकता।

एक घटना याद आती है—मध्य प्रदेश मे एक प्रसिद्ध अखबार "स्वदेश"—दिल्ली मे लाखो की लागत से बनने वाले बूचड़खाने के बारे मे सम्पादकीय पढा, मन मे बेचैनी हुई। चातुर्मास काल था, श्री हीरविजय जी बडा उपाश्रय गया। पूज्य गुरुदेव परम पूज्य आचार्य भगवन्त श्री विजय कलापूर्ण सूरीश्वर जी महाराज धर्म प्रभावना कर रहे थे। व्याख्यान समाप्त होने के बाद उन्हे यह समाचार बताया, मेरे साथी आनन्दी लाल सघवी व नरेन्द्र कुमार भटेवरा भी थे। पूज्य गुरुदेव ने लाखो जीवो को बचाने के लिए कोई भी उपाय करने को कहा।

हम लोग पण्डित जी के पास गये और उन्हे यह बताया कि दिल्ली के पटपड़गज क्षेत्र मे 28 करोड की लागत से 40 हेक्टर भूमि पर एक नई पशुवध शाला दिल्ली प्रशासन व केन्द्रीय सरकार मिलकर बना रही है। पण्डित जी काग्रेस के पुराने सिपाही है, लेकिन राजनीति से ऊपर उठकर धर्म कार्य मे साथ देने को इस तरह जोश बताया जैसे 16 वर्ष नौजवान। इसी रात उज्जैन के अहिंसा प्रेमी लोगो की एक सभा बुलाई गई, इस सभा मे हिंसा विरोध समिति का गठन किया गया। समिति के गठन से लेकर आज तक पण्डित जी ने सस्था को हर तरह से सहयोग दिया है।

दिनाक 23–3–83 को लोकसभा मे लोकसभा अध्यक्ष श्री बलरामजी जाखड को सस्था की ओर से मैने एक याचिका प्रस्तुत की। इस अवसर पर पडित जी भी हमारे साथ थे इस याचिका मे पशुओ के प्रति बढ रही क्रूरता तथा हत्या की प्रवृत्ति पर रोक लगाने की माग की गई। पाच दिन तक पडित जी हमारे साथ दिल्ली रहे और अपने व्यक्तित्व से लोगो को बडा ही प्रभावित किया।

राजस्थान एव मालवा की पावन भूमि ने देश को कई रत्न दिये है, पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी भी उनमे एक है। मै उनके दीर्घ जीवन की कामना करता हू तथा अभिनदन समिति के कार्य की अनुमोदना करता हू।

□ □ □

समाजोपयोगी

श्री विमलचन्द शाह
अध्यक्ष–कपडा एसोसियेशन, श्री वर्धमान सोसायटी, मन्त्री–श्री दि जन मालवा प्रांतीक सभा,
बडनगर

श्रीमान् व्याख्यान वाचस्पती प० सत्यधर कुमार जी सेठी का उनके हीरक वष के शुभ प्रसग पर उज्जन मे समाज द्वारा अभिनदन का आयोजन हो रहा है यह अत्यन्त हष व प्रे रणादायक काय है। श्रद्धेय पडित सत्यधरकुमार जी सेठी न अपना सारा जीवन समाजोत्थान के लिए लगा दिया व अपनी सारी तरुणाई समाज सेवा की महत्वपूण भूमिका मप्रकट नही है। सब दि जन समाज जानता है कि श्री दिगम्बर जन मालवा प्रा० सभाश्रित पुरातत्व विभाग के मन्त्री पद पर जो काय आपने किया व कर रहे हैं उससे जन धम का गौरव बढा ही है। मध्य प्रदेश के पुरातत्वविदो का ध्यान जन धम की प्राचीनता व पुनीत सस्कृति की तरफ आकर्षित करने मे श्रद्धेय पण्डित जी सदैव प्रयत्नशील रहे है। समाजोपयोगी कार्यो मे पण्डित जी अभी तक जुडे हुए है उनका महत्वपूण योगदान है, ऐसा मालुम होता है कि सस्था एव पण्डित जी एक दूसरे से जुडे हुए हैं मध्यप्रदेश की ऐसी कोई सस्था नही है कि जिसमे प० जी का योगदान न हो।

पडित जी दि जैन मा० प्रा० सभाश्रित छात्रावास के सयोजक हैं, वे दि० जैन युवको के प्रे रणा स्त्रोत है, परन्तु बडनगर के नवयुवको के तो वे माग दशक है, उनकी प्रे रणा व परामश से हम सदव अप्रमादी होकर कत्तव्यशाली बने रहे है।

हम परम् पूज्य जिनेन्द्र देव से प्रायना करते है कि पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी सपरिवार दीर्घायु हो ओ र उनका सत्परामश हमको सदव मिलता रहे।

☐ ☐ ☐

प्रमाणिक वक्ता

श्री सोनपाल शरदकुमार जन
नागपुर

पण्डित सत्यधर कुमार जी सेठी समाज के एक ख्यातनाम पण्डित है आप आगम पर श्रद्धा रखने वालो मे से हैं। आप बडे निर्भीक है, प्रमाणिक वक्ता ह आप परम्परागत रूढियो के खिलाफ ह। आपने सम्पूर्ण जीवन ज्ञान प्राप्त करने म तथा ज्ञान का वितरण करने म लगाया है। आप एक समाज के कमठ कायकर्ता ह। न धर्मो धार्मिक विना धार्मिक वोना एसा कहा है आप जसे ज्ञानीजन है इसी कारण समाज एव धम स्थिर है।

आप भादवा ग्राम के हैं। हमारे पिताजी भी भादवा ग्राम क थे। हम लाग नागपुर आकर बस गये। आपकी उज्जन नगरी म कपडे की थोक दुकान है। व्यापार प्रमाणिकता का तथा कम मुनाफे का है। मन भी उदार होता है।

कार्यशील

श्री शातीलाल जैन,
अध्यक्ष—दी होलसल
क्लाथ मर्चेन्ट्स एसो
सियेशन,
उज्जैन

आपको निरामय जावन दीर्घायु आरोग्य प्राप्त हो यही हमारी शुभकामना है।

□ □ □

श्रीमान् सत्यधर कुमार जी सेठी का जीवन बहुत ही सादा एव उच्च विचारा का है। आपका जीवन मे समाज की सेवा का लक्ष्य ही परम लक्ष्य रहा है। आप समाज सेवा के साथ ही अन्य सार्वजनिक कार्यों मे भी काफी रुचि रखते हैं यही कारण है कि आप आज भी कई सामाजिक सगठनो म पदाधिकारियो के रूप मे कायशील हैं। आपने हमारे व्यापारी जगत मे भी इस सस्था को अमूल्य योगदान दिया है आप इस एसोसियेशन के गठन वष 1958 से आज तक सतत कायशील है तथा आपका मार्गदशन व आपकी अमूल्य सेवायें सस्था को प्राप्त होती रही है। यही कारण है कि आप व्यापारी जगत मे समन्वय के नाम से विख्यात है।

अतएव ऐसे उच्च विचारक, ज्ञानी, समाज सेवी व्यक्ति के अभिनन्दन करते हुए हमे हार्दिक प्रसन्नता ह आपके इस प्रयास की हम भूरी भूरी सराहना करते ह।

□ □ □

सरल स्वाभावी

श्री हरिशचन्द्र गुप्ता
जबलपुर

आज से करीब 12 वष पूव मैं जब उज्जन गया था। उस वक्त धर्मशाला म मुनि सघ विराजमान था। उस माहौल म पण्डित जी का प्रेमभाव देखकर मैं अत्यधिक प्रभावित हुआ था। गत वष भी जब आप विद्वित परिषद म जबलपुर पधारे थे, मेरे निवास स्थान पर सघ सहित आपने पधारने की अनुकम्पा की थी। आप अच्छे विद्वान, सरल स्वभावी, निष्ठाभावी एव व्यापारी हैं जो व्यापारी होते हुए सरस्वती पुत्र हैं। आपकी निरभिमानता, सरलता और मृदुभाषिता, आपमें स्वण म सुगन्ध का काम करती है। भविष्य में हम आशा करते ह कि आपके पाडित्य से उज्जन समाज ही नही, समस्त जन समाज, प्रवचनो से लाभान्वित होगा। आप शतायु हो, ऐसी मेरी मगल कामना ह। शेप शुभ।

□ □ □

सरस्वती पुत्र

श्री हरिश चन्द्र जन
उदयपुर

श्रीयुत सत्यधर कुमार जी सेठी, मालवा प्रात के जाने माने विद्वान् है, पुरातत्व गहरा अध्ययन ह— उसके विशेषज्ञ हैं। सरस्वती पुत्र के साथ ही साथ लक्ष्मी पुत्र होने का सौभाग्य है, आप कुशल व्यापारी हैं। मेरी कोटिश शुभ कामनायें आपके साथ है, आप हमेशा स्वस्थ रह, एव चिरायु हो, ऐसी श्री जी से प्रार्थना ह। शेप शुभ। अनुकम्पा बनाये रखें।

□ □ □

निष्कलंक

श्री हरबन्ससिंह
अध्यक्ष–गुरुद्वारा श्री गुरुसिंघ सभा,
उज्जैन

मुझे यह जानकर अत्यन्त प्रसन्नता हुई है कि आपका जैन समाज अखिल भारतीय पैमाने पर हमारे यहां के पंडित श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन करते हुए ग्रंथ का प्रकाशन कर रहा है। मैं पंडित जी को थोक कपड़े के व्यवसाय के सहभागी होने के कारण पिछले 25 वर्षों से व्यक्तिगत तौर पर जानता हूं। उनका जीवन बहुत ही सादगी पूर्ण है। जनसेवा की भावना उनके मन में कूट कूट कर भरी हुई है। वह जैन समाज के ही नहीं अन्यों की भी सेवा तन, मन, धन से करने में सदा अग्रणी रहते हैं। हमारे यहां थोक कपड़ा मार्केट का निर्माण हो रहा है, जिसके लिए सोसायटी बना कर यह कार्य पूरा किया जा रहा है। जिसमें वह पूर्ण हिस्सा लेते हुए कार्य कर रहे हैं व वर्तमान में भी इसी सोसायटी के अध्यक्ष पद को सम्भालते हुए मार्केट का निर्माण कार्य सुचारु रूप से चला रहे हैं। कपड़ा व्यापारी की तरफ से चलने वाले पारमार्थिक औषधालय का भी कार्य आपकी अध्यक्षता में सुचारु रूप से चल रहा है। जहां हजारों रोगी स्वास्थ्य लाभ पाते हैं। इसके अलावा आप अन्य भी शैक्षणिक, सामाजिक, धार्मिक संस्था में अध्यक्ष पद सम्भालते हुए कार्य कर रहे हैं। जो जीवन वाहगुरु परमात्मा ने उन्हें दिया है। उसका सदुपयोग करते हुए जनसेवा का भाव मन में बसाये हुए वह सामाजिक, धार्मिक, पारमार्थिक कार्य में अपने जीवन को लगाये हुए हैं। हमारी भी यही इच्छा है कि ऐसे निःस्वार्थ निष्कलंक पं० श्री सत्यंधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन होना चाहिये और उनके गुणों का इतना प्रचार व प्रसार होना चाहिये कि इनके जीवन से हर मनुष्य प्राणी प्रेरणा लेकर इन्हीं की तरह समाज व देश की सेवा करते हुए अपना जीवन व्यतीत करे। अन्त में हम वाहेगुरु परमात्मा से यही अरदास करते हैं कि वाहेगुरु उनको दीर्घायु करें और वह इसी तरह जन सेवा करते रहें।

□ □ □

प्रेरणा केन्द्र

श्री हीरालाल
सोगानी
इंदौर

पं सत्यंधर कुमार जी सेठी "साहब" के जीवन दर्शन के दो सूत्र उनमें बराबर मिलते हैं। एक तो मैंने उन्हें कभी विचलित होते नहीं देखा, हो सकता है कि यह उनकी आध्यात्मिक रुझान का परिणाम हो और दूसरी बात यह है कि उनकी विशिष्ट कार्य-पद्धति। उज्जैन, बड़नगर, मक्सी तथा अन्य कई क्षेत्रों में चल रही, अनेकों लोकोपयोगी गतिविधियां जिनके प्रेरणा केन्द्र एवं मार्गदर्शक श्री सेठी जी हैं। इन सभी स्थानों पर सेठी जी का जीवित सम्पर्क हमेशा रहता है। सभी सभी प्रकार की समितियों में सेठी जी को विशेष रूप से आमन्त्रित करते रहते हैं। इसका मुख्य कारण यह है कि वे अपने साथियों और कार्यकर्ताओं को भी अपना पूरा विश्वास देते हैं और बदले में पूरी निष्ठा पाते हैं।

मुझे श्री सेठी जी के साथ बड़नगर मध्सी क्षेत्रो मे कई बार साथ रहने का मौका प्राप्त हुआ है। उनका सरल और सादा जीवन हर एक के लिए प्रेरणा का माग प्रशस्त करता है। यह समाज के लिए गौरव है कि श्री सेठी जी जसा व्यक्तित्व मौजूद है। वे एक प्रभावशाली और बुलन्द आवाज के वक्ता भी है।

सेठी जी के बारे मे एक खूबी यह भी है कि वे अपना धार्मिक प्रवचन देते समय जिस भाषा मे कहते है वह शली एक सरल रूप मे होती है जिसके कारण उनके प्रवचन म कई बार बच्चो को भी देखा जाता रहा है।

अन्त मे मैं कहना चाहूगा कि हम सौभाग्यशाली हैं कि हमारे बीच सेठी जी जसा चिन्तक, साधक और तपस्वी विराजमान है जो हमारे लिए भी शुभ कार्यो से जुडने के अवसर जब तब जुटाता रहता है। आज हम सेठी जी का अभिनन्दन कर कृताथ हो रहे है। यह समारोह हमारी नई पीढी के नव-युवको की चेतना को जागृत कर उन्हे सत्कार्यो मे प्रवृत्त होने की प्रेरणा देगा।

इस सुखद अवसर के उपलक्ष मे अपने प्रिय श्री सेठी जी के प्रति अपना गहरा भाव प्रकट करता हू। प्रभु से विनय करता हू कि वे दीर्घायु हो और उनकी कायक्षमता बढे, राष्ट्र और समाज की उनसे अधिक से अधिक सेवा हो।

इसी आशा के साथ

□ □ □

पंडितजी को जैसा

देखा, समझा और परखा

स्वजनों ने
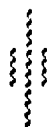
आत्मकल्याणी

प चादमर गाना
जगपुर

भाई सत्यधरजी का अभिनन्दन हो रहा है यह मेरे लिये विशेष ही गौरव की बात है। इनसे मेरा सम्बन्ध विद्यार्थी जीवन से है। एक ही स्कूल मे श्रद्धेय प० चनसुखदासजी न्यायतीर्थ के चरणारविन्द मे अध्ययन करते थे।

शारीरिक दृष्टि से मै हमेशा कमजोर रहा हू तथा भाई सत्यधरजी हमेशा से ही स्पष्टवादी, तेज तर्रार रहे है, मैंने इनसे इसलिय मित्रता बनाई कि मेरा इनसे बचाव होता रहेगा तब इनका नाम गदालाल था।

तबसे आज 60 वर्ष हो गये, एक ही प्रकार के सम्बन्ध है। 1957 तक हम समाज के काम से दोनो एक साथ बराबर लगे रहे,एक दूसरे के पूरक रहे। तब से लेकर अब तक हमारे गावो मे हमको दो शरीर एक जीव मानते आ रहे है।

हम दोनो को श्री भारतवर्षीय खण्डेलवाल महासभा ने 3 वर्ष के लिये जाति बहिष्कृत कर दिया था। हम इस से विचलित नही हुये बल्कि हिम्मत के साथ मुकाबिला भी नही किया। खण्डेलवाल महासभा का अस्तित्व जैसा रहा सर्वविदित है खण्डेलवाल महासभा के तथा कथित नेताओ की हमारे गावो मे आने तककी हिम्मत नही होतीथी, लोडसाजन व लोहडसाजन विवादको लेकर दोनो गुटो मे मारपीट हो गई थी उस समय मुनि चन्द्र सागरजी महाराज का संघ भी था हम दोना के लिये गिरफ्तारी वारट निकलने की अफवाह जोरो से फली, हम दोनो ही एक कोठी म जो ताम्बे की थी रातभर छिपकर रहे ऊपर म आजम डाल दी गई थी, दूसरे दिन हम दोना जब एक साथ बठकर खाना खा रहे थे तब पूज्य प० चनसुखदासजी, रायसाहब चेवरचन्दजी, श्री कपूरचन्दजी पाटणी काठवा श्री रामचद्रजी खिदूका श्री वधीचन्दजी गगवाल ने आकर सलाहदी कि आप यहासे चले जाओ, इच्छा न होते हुए भी उक्त सज्जनो के विशेष दबाव से जगल ही जगल भागते रहे वह दिन भी याद रहेगा, जीवन म तब सत्यधर जी ने आवाज दी पीछे से पडितजी अकलक निष्कलक भी इसी तरह से भागे थे उनका उद्देश्य भी लोक कल्याणार्थ था और अपना उद्देश्य भी वही है। 1957 के बाद से मै धीरे धीरे एकातिक होता गया समाज सेवा से भी अलग रहने लगा लेकिन भाई सत्यधरजी बराबर न कवल सवा म अपितु राष्ट्रीय सेवा मे भी निरन्तर लगे रहे आज यह देखकर अपार खुशी हो रही है कि भाई सत्यधरजी एक व्यक्ति नही एक सस्था है।

भाई सत्यधरजी ने एक बार, मुझसे कहा, पडितजी 20 हजार रुपये लो अगर आप धन्धा कर लें जवाब मे मैने कहा इस अवस्था मे मेरे से धन्धा नही होगा रुपये तुम्हारे बर्बाद ही होंगे तब सत्यधरजी ने कहा। मैं भी आपके साथ ही काम करू गा।

मैंने स्पष्ट कहा—हम दोनो एक साथ बठकर काम नही कर सकते, दोनों के विचार और कामो मे विशेष अन्तर है।

सत्यधरजी ने मुझसे कहा अपन दोनों किसी तीर्थ पर बैठ कर आत्म कल्याण के साथ समाज सेवा भी करेंगे। मैंने कहा आप करो तो अच्छा है मेरे वश की बात नहीं है।

उज्जैन में एक बार 1 महीना करीब रहा वापिस जयपुर आने पर स्टेशन तक मुझे पहुंचाने आये तो बंडिल उठाकर चलने लगे। मैंने कहा कुली करता हूँ, कुली नहीं ही किया। फिर मेरे साथ ही तांगा तक पहुंचाने आये, वहाँ पर वैसा ही किया, इस प्रकार इनकी सादगी और स्पष्ट वादिता देख मन ही मन बड़ी खुशी हुई।

उज्जैन के सभ्रांत लोगों ने कहा सत्यधरजी आपका कहना मानते हैं आप इनको समझाइये सबको फटकार कर बात करते हैं।

सही बात तो यह है निस्पृह होकर जो समाज एवं राष्ट्र की सेवा करता है उनका जीवन ऐसा ही होता है। वैसे भाई सत्यधरजी मेरे से छोटे हैं मुझे सदा से बड़े भाई की तरह ही माना है और हम भाई ही की तरह रहते हैं किन्तु अपने कामों से आज मेरे से बहुत बड़े हैं। मैं हृदय से आज भी इनका अभिनन्दन करता हूं और कामना करता हूं शतायु होकर इसी प्रकार सेवा करते रहें।

अभिनन्दन की यह भूमिका कैसे बनी? भाई सत्यधरजी मेरे पास बराबर आते रहे हैं। भाई नेमीचन्दजी काला भी इनसे प्रभावित हुए और इच्छा हुई ऐसे व्यक्ति का जरूर अभिनन्दन होना चाहिये मेरी राय ली। मैंने अपनी सहर्ष स्वीकृति दी। उन्हीं दिनों में डा० श्री कस्तूरचन्दजी कासलीवाल ने भी इनके अभिनन्दन की मेरे पास चर्चा चलाई तो मैंने कहा नेमीचन्दजी और आप मिलकर काम कर सकते हैं। डा० कस्तूरचन्दजी सहमत नहीं हुए लेकिन भाई नेमीचन्दजी ने दृढ संकल्प इस काम को मूर्तरूप देने का कर लिया उसी के परिणामस्वरूप यह अभिनन्दन समारोह सपन्न हो रहा है।

इस योजना को पूरी करने में श्री नेमीचन्दजी अस्वस्थ भी रहने लगे किंतु बिना विचलित हुए लगन के साथ इस काम को पूरा कर दिखाया इसके लिये ये विशेष ही प्रशंसा के पात्र हैं।

समाजसेवा

श्री कलाशचन्द जन शास्त्री
जयपुर

समाज मे कुछ व्यक्ति ऐसे होते है जो अपनी वक्तृत्व कला से अपने ज्ञान को समाज के अन्य लोगो तक पहुचाने मे समर्थ होत है । कुछ ऐस होते हैं जो अपने ज्ञान-भण्डार को लेखन-कला के जरिए समय-समय पर प्रकाशित करते रहते हैं । बोलने या लिखने का अभ्यास नही होने पर भी कुछ कमठ व्यक्ति अपनी अथक सेवाओ से समाज को लाभान्वित करते हैं । कुछ सुधारवादी ऐसे होते हैं जो समाज मे परम्परा से चली आ रही रूढियो को दूर करन के लिए समाज मे जागृति पदा करने का काय करते हैं और स्वय भी सुधार के पथ पर चलने के लिए सदा अग्रणी रहत हैं ।

इस तरह कुछ लोग सफल वक्ता होते हैं, कुछ सुघड लेखक, कुछ समाज सेवी और कुछ समाज सुधारक, किन्तु यदि इन चारो विशेषताओ को रखने वाले समाज के विशिष्ट व्यक्तियो की नामावली तयार की जावे तो उस नामावली मे हम नि सदेह एक विशिष्ट प्रतिभाशाली विद्वान् का नाम भी सम्मिलित किये बिना नही रहेंगे और वह नाम है-प० सत्यधर कुमार सेठी भादवा (उज्जन) । जो वक्ता भी हैं, लेखक भी है,-समाजसेवी भी है और समाज सुधारक भी । इस महान समाज सेवी व्यक्ति के अभिनन्दन की योजना का विचार प्रारम्भ मे जिन लोगो के मन मे आया है, वास्तव मे वे प्रशसा के पात्र हैं ।

सेठी जी के पिताजी का स्वगवास उनकी 5 वर्ष की आयु मे ही हो गया था । उस समय उनके वडे भाई श्री सूरजमल जी सेठी भी उनसे 2 3 साल ही वडे थे । दोनो ही बालको के पालन-पोषण का भार उनकी माता जोधाबाई पर आ गया । सयोग से मेरा जन्म भी भादवा ग्राम मे हुआ और मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री नाथूलालजी कामदार का इन दोनो बालको पर अगाध स्नेह था और वे सेठी की माता को कभी भी कोई पारिवारिक कठिनाई आती तो उसको सुलझाने व उसम सहयोग करने को हमेशा तत्पर रहते ।

कुछ बडे होने पर वे शिक्षा प्राप्त करने के लिए, रिश्ते म मेरे बडे भाई पूज्य प० चनसुखदासजी के पास कुचामन चले गये । सौभाग्य से स्व प० चनसुखदास जी मेरे बडे भाई होन के साथ-साथ मेरे गुरुजी हैं, क्योकि मैंने भी कुचामन मे ही उनसे शिक्षा प्राप्त की थी । इस दृष्टि मे सेठी जी के साथ मेरा पारिवारिक सबध होने के साथ साथ गुरु भाई होने का भी एक विशेष लगाव यद्यपि है । कुचामन म मेरी और उनकी शिक्षा समकालीन नही थी । जब मैं वहा गया, वे शिक्षा पूरी करके वहा से आ गये थे ।

उन्होने जिस जमाने मे शिक्षा प्राप्त की उस वक्त कोई परीक्षा पास करने का उद्देश्य नही होता था, अध्ययन, अध्ययन के लिए होता था

आपने वहा रहकर "गोम्मटसार" जैसे कठिन ग्रन्थो की पढाई की और जैन दर्शन के मुख्य विषयो को हृदयगम कर लिया। कुचामन से विद्यार्थियो का पुस्तको की पढाई के साथ-साथ शास्त्र स्वाध्याय करने की प्रेरणा भी दी जाती।

स्वर्गीय पण्डित चनसुखदासजी ने प्रारम्भ से ही अन्धविश्वास, शिथिलाचार, धर्म के सबध मे पाखण्डवाद का घोर विरोध किया तथा बाल विवाह वृद्ध विवाह, नुक्ते आदि कुरीतियो का भी डटकर मुकाबला किया। उन्ही के पद-चिन्हो पर चलते हुए श्री सेठी जी ने भी उनके क्रातिकारी सिद्धातो का अपने जीवन मे उतारा।

जहा तक सामाजिक कुरीतियो का प्रश्न है, आपने दहेज प्रथा पर अनेक बार अपने भाषणो द्वारा और कुठाराघात किया। आप सदा से ही अन्तर्जातीय विवाह के पक्षपाती रहे हैं। बाल विधवाओ के पुनर्विवाह के लिए भी आपने अपने वक्तव्यो से जागृति उत्पन्न की। लोहड साजन आदोलन मे समाज के रूढिवादी लोगो तथा मुनि चन्द्र सागर जी के साथ जो लोहा लिया, उससे आप समाज मे एक क्रातिकारी युवक के रूप म उजागर हुए। अपनी श्रेष्ठ वक्तृत्व कला स आपने समाज के सभी वर्गो को आकर्षित किया है।

कुछ वर्ष पूर्व आपके कण्ठ म उत्पन्न बीमारी की वजह से मंचो मचो पर दिये जाने वाले भाषणो मे आपको तकलीफ होती है और चिकित्सको की राय भी यही है कि इस रोग से त्राण पाने के लिए अधिक जोर से न बोले।

मैं उनकी दीर्घ आयु और अच्छे स्वास्थ्य की कामना करता हुआ उनके अभिनन्दन समारोह के अवसर पर बहुत बहुत बधाई देता हू।

□ □ □

यशस्वी

श्री भाग्यमल जैन
सम्पादक
राजस्थान पत्रिका जयपुर

कुछ दिनो पूर्व आदरणीय मास्टर माणिक्य चन्द जी तथा श्री नेमीचन्द जी गाला ने जब पूज्य प० सत्यधर कुमार जी सेठी को अभिनन्दन ग्रन्थ भेट करने की प्रस्तावित योजना की चर्चा की तथा उसके लिए कुछ लिखने को कहा तो काफी सुखद आश्चर्य हुआ। यह आश्चर्य की ही बात है कि ऐसे समाज और नि स्वार्थ समाज सेवी की सेवाओ का मूल्याकन करने म समाज ने इतना विलम्ब कर दिया। जब अभिनन्दन ग्रन्थ के लिए कुछ लिखने की बात आई तो मैं पशोपेश म पड गया कि क्या लिखू ? एक तरह से हमारे परिवार म अभिन्न अग होते हुए भी मुझे कभी भी उनके कार्य कलाप का समालोचनात्मक मूल्याकन करने का अवसर नही मिला। इसका मुख्य कारण

यह रहा है कि जो व्यक्ति पारिवारिक दृष्टि से मेरे जितना निकट रहा, उसके बारे मे लिखने मे मुझे इतना ही अधिक सकोच हुआ।

एक ही गाव मादवा के होने के कारण दोनो ही परिवारो मे घनिष्ठता और सान्निध्य तो रहा है, पूज्य बाबा साहब प० चनसुख दास जी न्यायतीर्थ के सान्निध्य म अध्ययन करने से हमारे परिवार के प्रति उनकी घनिष्ठता म श्रद्धा और स्नेह का समावेश हो गया। श्रद्धा पूज्य बाबा साहब के लिए और स्नेह हम सब के लिये। यह इसी स्नेह का प्रतिफल है कि बाबा साहब के निधन के बाद हमारे परिवार के सभी सदस्यो ने एक तरह से 'सत्यधर जी काकाजी" को बाबा साहब की प्रतिमूर्ति ही माना है।

पिछले करीब बीस वर्षो से उनका कार्य क्षेत्र हालांकि मुख्य रूप से मध्य प्रदेश ही रहा है लेकिन उन्होंने समय-समय पर अखिल भारतीय स्तर पर भी अपने अस्तित्व का अहसास कराया है। समाज सेवा की उनकी लगन काफी गहरी है। उन्होने समाज सेवा को कभी भी यश अर्जन का माध्यम नही बनाया। वे तो स्वय अपने कार्य कलाप से यशस्वी बन गये। वे समाज के उन विरले लोगो म से है जिन्होंने यश के लिए कभी भी अपने सिद्धांतो से समझौता नही किया। वे हमेशा अपने आदर्शो और सिद्धातो पर अडिग रहे है चाहे इसके लिये उन्हे कोई भी कीमत क्यो न चुकानी पडी हो।

यह एक विडम्बना ही है जबकि एक ओर हम अपने बाहरी आवरण को कथित आधुनिकतम रूप देने मे कोई कसर नही छोड रहे है। वही दूसरी ओर दिनो दिन रूढिया और सामाजिक कुरीतियो से अधिक-अधिक चिपकते जा रहे है। वर्तमान स्थिति से वे कितने दु खी है इसका आभास सहज ही उनके साथ बातचीत करने मे हो जाता है। समय-समय पर देश और समाज की परिस्थितियो पर उनसे जो चर्चा होती रहती है उससे मैं इस निष्कर्ष पर पहुचा हू कि उनके मन म एक टीस है, दर्द है।

धार्मिक क्रिया कलापो म बाह्य आडम्बरो के वे सदैव कट्टर विरोधी रहे है। उनकी यह निश्चित मान्यता है कि यदि दिगम्बर जैन समाज न दिगम्बरत्व की निश्चित मान्यताओ को ठकरा दियातो उसका पृथक अस्तित्व एक तरह से समाप्त प्राय ही है।

कुछ माह पूर्व जब वे जयपुर आये तो बातचीत म मुनि सस्था म बढ रहे शिथिलाचार और निर्दिष्ट लक्ष्य स भटकाव स व काफी उद्विग्न नजर आये। उन्होने कई घटनाए सुनाकर बताया कि किस तरह आज के अधिकाश दिगम्बर मुनि सामान्य गृहस्थ स कम नही है। समाज म धन बटोरना, उसका पूरा हिसाब रखना यही नही जरूरत पडने पर उसे ब्याज पर भी चलाना इन सब बातो स एक मुनि और सामान्य गृहस्थ म क्या फर्क रहा?

उनके जीवन मे कई ऐसे मौके आये जब इन मामलो को लेकर उनके मुनिया के बीच कई बार टकराव सा हुआ।

सत्यधरजी काकाजी ने जीवन मे आचरण को सदव सर्वोच्च स्थान दिया है। व्यापार म लिप्त रहते हुये भी वे कभी सदाचरण से विमुख नहीं हुये, जबकि आम मान्यता यह है कि व्यापार और सरकारी नौकर म सदाचारी का ठिकाना असम्भव नही तो मुश्किल अवश्य है।

पूज्य बाबा साहब की स्पष्टवादिता, काम के प्रति निष्ठा, प्रभावशाली वक्तृत्व शली व समाज मे ठोस कार्य करने की उत्कण्ठा तथा कुरीतियो के मूलोच्छेदन की भावना की सच्ची झलक कवल पण्डित सत्यधर कुमार जी म ही मिलती है।

आपकी सगठन शक्ति भी अदभुत है। इसे प्रत्यक्षत हजारो लोगो ने दो वर्ष पूव बाहुबली महामस्तकाभिषेक के अवसर पर देखा होगा। जब उन्हे आवास व्यवस्था का काम सौंपा गया था। जिस काम को भी वे हाथ म लेते है उसे पूरी निष्ठा और लगन के साथ करते है।

पूज्य सत्यधर जी काकाजी को हीरक जयती के अवसर पर उन्हे सादर नमन के साथ ईश्वर से यही प्रार्थना है कि उन्ह शतायु कर ताकि समाज उनकी सेवाओ से और अधिक लाभान्वित हो सके।

यदि समाज का हर व्यक्ति उन जैसा कर्तव्यनिष्ठ, समाभावी और कुरीतियो का कट्टर विरोधी हो जाये तो वह समाज कितना सुखी और समृद्ध होगा, इसकी कल्पना सहजही की जा सकती है।

☐ ☐ ☐

अनुशासित सिपाही

श्री फूलचन्द शास्त्री
बम्बईवाला, इन्दौर

श्रद्धेय पूज्य श्री सत्यधर कुमारजी सेठी के सम्पर्क मे मैं उस वक्त से हू जब से मैंने होश सम्हाला है और तभी से आपको धर्म के प्रति दृढ श्रद्धावान एव धार्मिक सिद्धातो के प्रति पूर्णतया समर्पित पाया है। आपका जीवन त्याग तपस्या बहुमूल्य आदर्शो एव मान्यताओ से भरा हुआ है और एक पूर्ण अनुशासित सिपाही की तरह है। धर्म एव धार्मिक सिद्धातो के प्रति जहाँ कहीं भी शिथिलता नजर आती है तो आप समझाईश देते हुए उसे सुधारने के प्रति पूरी तन्मयता से जुट जाते हैं तथा निर्भीकता पूर्वक अपने विचारो को प्रकट करते हैं तथा बाद म भी ऐसी परिस्थिति का निर्माण न हो इस बारे मे भी सदव जागरूक रहते हैं। आपके द्वारा हम जसे लोगो को भी जीवन मे सदव अनुशासित, दृढ एव चारित्र्यवान रहने का मत्र दिया गया है।

इसी का यह परिणाम है कि आपके हृदय म विद्यालयो, धार्मिक शिक्षण और धार्मिक स्थानो के लिए सदव लौ प्रज्वलित रहती है और इनके विका

भी कार्य के लिए आप हमेशा तयार रहते है तथा जहा भी आवश्यकता पड़ती है आप सभी कार्यो को छोडकर पहले वहाँ पहु चते है।

आपका धार्मिक एव सामाजिक क्षेत्र सिफ मध्यप्रदेश का उज्जन ही नही वरन् सपूण भारतवर्ष है। भारत का हर कोना आपको हृदय से चाहता है क्योकि वह आपकी स्पष्टवादिता, निर्भीक प्रवक्ता और सादगी से पूणतया प्रभावित है। पूण आत्मज्ञ होने के साथ ही आप सुधारवादी विचारधाराओ के जनक भी है। सिद्धातो के प्रति दृढप्रतिज्ञ रहते हुए भी समन्वयवादी के रूप मे भी आपने ख्याति अर्जित की है। यही वजह है कि आप किसी भी समाज मे किसी भी विषय पर धाराप्रवाह बोलन की क्षमता रखते हैं और इसीलिए प्रत्येक समाज आपको आमत्रित करने की इच्छा रखता है।

समाज की कई कुरीतियो को सदभावनापूवक खत्म करने मे आपने सफ-लता अर्जित की है। आज भी व्याप्त कतिपय कुरीतियो को जडमूल से नष्ट करवाने मे अपना पूण योगदान दे रहे है। कई जगह आपसी झगडे भी कुशलतापूवक निपटाकर दोनो पक्षो के बीच मनमुटाव को खत्म करवाया ह तथा उनमे वात्सल्य भाव भी निर्मित किया है।

आप एक सफल व्यापारी भी है। छोटी सी शुरूआत करके आज उज्जन ही नही वरन् मालवा के प्रख्यात व्यापारी समुदाय मे अपना नाम भी अकित करवा लिया है।

वतमान मे हिन्दुत्व के प्रति जो दुर्भावनाए पदा की जा रही है उसम सुधार के लिए भी आपकी आवश्यकता को महसूस करत हुए विश्व हिन्दू परिषद ने आपको उपाध्यक्ष का पद भार सौंपा है। आप इसके प्रति भी पूण आस्थावान होकर जन जागृति के काय मे अग्रसर हैं।

एक खुली किताब सा जीवन जीने वाले परम श्रध्देय महा मनीषी के प्रति और क्या लिखू समझ नही पा रहा हू क्योकि बचपन से अब तक देखा है उसे जब-जब भी पक्तिबद्ध करने का प्रयास करूगा तब-तब ही अधूरा और अधूरा ही पाउगा।

मेरी हार्दिक सदइच्छा है कि आपका शेष जीवन धार्मिक क्षेत्रो म फलत जा रहे अधविश्वासो को दूर करने म पनपती जा रही शिथिलताओ को खत्म करने मे और व्याप्त कुरीतियो को जडमूल स नष्ट करने जसे सद्कार्यो म बीते।

अत म आपका यह बताने मे अपने आप मे गौरव का अनुभव कर रहा हू कि ऐसी वीरतला व्यक्तित्व और महान व्यक्ति का मैं भानजा हूँ।

□ □ □

आदर्श रूप

श्री जेठमल काला, गोहाटी

श्री काला जी वास्तव मे साधुवाद के पात्र है, जिन्होने हमारे साहजी सा श्री सत्यधर कुमार जी सेठी का अभिनन्दन एव अभिनन्दन ग्रन्थ के विचार को मूर्त रूप देने का सकल्प लिया। यह सकल्प एक सही एव सच्चे व्यक्तित्व का है जिनकी कथनी व करनी म कोई अन्तर देखने म नही आया।

अब मैंने मेरी बहिन रविकान्ता का सम्बन्ध आपसे बनाया तब ही मुझे आपके सामाजिक एव सैद्धान्तिक विचारो का आभास मिल गया था और मैंने तब सोचा था, ये सैद्धान्तिक बात तो मात्र उपदेश ही होगे। पर जैसे ही हमारे आपसे सम्बन्ध बने तो मैंने प्रथम अनुभव म ही यह महसूस कर लिया था कि इस व्यक्ति के पास मात्र बातें या उपदेश नही है पर यह तो व्यवहार म भी पालन वाले लोगो मे से हैं। गृहस्थी को साथ में लेकर सिद्धान्त की बातें करने वाले का जो मेरा एक गलत भ्रम बना वह एक ही झटके में टूट गया था और तभी से मैंने अपने आपसे एक गर्व सा अनुभव किया। एक ऐसे व्यक्ति से सम्बन्ध बनने पर जिसका व्यक्तित्व इस धरातल पर अपनी कई ऊचाईयो को लिए हुए है और तभी से मैंने इन्हे हमारे साहजी का सम्बन्ध से बहुत अलग रखकर श्रद्धा स्वरूप मानस म रखांकित कर लिया।

आज समाज मे विरला ही ऐसे व्यक्तित्व के धनी लोग मिलेंगे पर हम अपने आप को सौभाग्यशाली मानते हैं और हम वीर प्रभु से यही प्रार्थना करते हैं, उन्हें अपने जीवन पथ पर इन्ही सकल्पो का मूर्त रूप देने की शक्ति प्रदान करें।

□ □ □

उच्चकुल के अवतार

श्री पन्नालाल बोहरा
लश्कर ग्वालियर

श्री प सत्यधर कुमार जी सेठी से मेरा परिचय प्रथम बार, लश्कर ग्वालियर मे पर्यूषण पर्व के समय श्री चम्पाबाग बीस-पथ पचायती मन्दिर मे प्रवचन मे हुआ था। प्रवचन श्रवण करने से मुझे अत्यन्त रोचक लगा। अनेक मार्मिक तत्वचर्चा से ओत प्रोत था। अनेक समाज म फैली हुई रूढियो कुरीतियो को बन्द कर समाज मे बढ रहे फिजूल खर्चो को दूर करने के सुझाव दिये। मुझे व सभा को प्रवचन सुनकर बहुत प्रसन्नता हुई। उसके पश्चात् भी प्रवचन श्रवण करने के एक दो अवसर प्राप्त हुए। अनेक शिक्षा की बातो को मानकर अपने जीवन म मोड लाकर सुधार किया।

कुछ समय व्यतीत होने पर हमारे रिश्तेदार समाज भूषण श्री मिश्री लाल जी पाटनी स्थानीय निवासी हैं। वह अनेक सस्थाओ के कार्य में सहयोग देते थे, लश्कर के गौरवशाली व्यक्ति हैं वह अखिल जैन मिशन के कोषाध्यक्ष हैं। सेठी जी उस सस्था के पुराने सचालक व सहयोगी होने से उनका सम्पर्क प्रेम अधिक होने से मेरे लडके राजेन्द्र कुमार को देखकर प्रसन्न हुए। उसकी हस्तरेखा को देखकर कहा मैं अपनी सुपुत्री ज्ञानेश्वरी का सम्बन्ध

आपके राजेन्द्र कुमार के साथ करना चाहता हू, स्वीकृति दीजिये । उनके मीठे, मधुर प्रम भरे वचनो की अवहेलना न कर सका सयोग सम्बन्ध होन से मुझ स्वीकृति देनी पड़ी। तब से हमारा परस्पर बहुत निकट सम्बन्ध होन से आवागमन बढने से निरन्तर प्रम वृद्धि होती रही। आपके विचार बड़े ही सुन्दर व नतिकता से ओत प्रोत है। कुरीतियो के विरोधी है। समाज सुधारक कर्मठ कार्यकर्ता हैं। यहा तक कि समाज सस्था का काय आ जाता है, तो गह काय छोड कर दुकान का समस्त काय बन्द करके अपनी हानि की परवाह न कर सस्थाओ की मीटिंगो म शहर अथवा बाहर कही भी हो, आमन्त्रित होने पर पहुचते रहते हैं । आपका बड़ा ही सरल-स्वभाव, उज्जवल चरित्र है। स्वभाव मे देखते हुए ज्ञात होता है कि पूर्व भव के उच्चकुल से अवतार लिया है व उच्च गति म ही गमन करेंगें। ऐसा मुझे उनके कार्यो से लगता है। कषायो का गमन करने वाले है। समाज व सस्थाओ के सचालक व रक्षक है।

मैं परमप्रिय आदरणीय प० सत्यन्धर कुमार जी की दीर्घायु एव सदव स्वस्थ्य रहने की कामना करता हुआ अपनी ओर से शुभ कामना भेज रहा हू ।

□ □

धर्माचरण

धर्मवीर प० तनसुख लाल जी काला, बम्बई।

श्री सेठीजी मे धर्म विरुद्ध कोई आचरण मुझे देखने को नही मिला। उनके लिये अभिनन्दन ग्रन्थ की प्रेरणा समाज ने की सो बहुत अच्छी बात है। मैं उसके लिये अपनी हार्दिक शुभकामना प्रकट करता हू । सेठीजी से मेरा निकट सम्बन्ध है। धर्म विरुद्ध कोई सुधार मे निर्भय होकर वे प्रवृत्त नही होवे ऐसी चाहना करते हुए मैं उनको अपना सादर अभिनन्दन करता हू ।

□ □

स्पष्टवादी

श्री माणकचन्द काला, बम्बई

श्रीमान प० सत्यन्धर कुमार जी सेठी उज्जैन निवासी के हीरक वय के उपलक्ष्य में आयोजित अखिल भारतवर्षीय अभिनन्दन एव अभिनन्दन ग्रन्थ समपण समारोह आगामी तारीख 25 12 83 को आयोजित किया जा रहा है। यह दिन समाज के लिए गौरव एव विद्वत्परम्परा को प्रोत्साहन देने का विषय है। जो महान लेखक, कवि, कलाकार एव सुदृढ वक्ता समाज के उत्थान एव धर्म संस्कृति को अक्षुण्ण बनाने म सहायक होकर स्वपर कल्याण करने की आतुर भावना रखते हैं। उनका अभिवादन एव गुणानुवाद करना समाज का कर्तव्य है।

प जी वयोवृद्ध, कुशल अनुभवी एव दृढ चरित्रवान व्यक्ति हैं। स्पष्ट वक्ता, निर्भीकता एव समाज सुधार की भावना उनमें कूट-कूट कर भरी

है। वे हमारे ब्याही होने के नाते, उनका सम्यक सदन बना रहता है, जिसस उनकी मनोभावना, चरित्र के जागरुकता तथा तत्व विवेचना का स्पष्ट दिग्दर्शन होता रहता है।

उनकी विदुषी पुत्री सौ० शैलबाला के विवाह के समय हमने प० जी से पूछा कि यह सम्बन्ध एव सयोग आपने कसे जमाया, जबकि आपका हमारा पथ भेद है। तब उन्होने नि सकोच कहा कि इसम पथ से क्या लेना देना है। हमारा किसी पर दबाव नही। पुत्री जहाँ जावे भले उनकी भावनाओ का पालन करे। वे पूरे क्रांतिकारी है सभी धम एव जाति की सभा सोसायटी म सम्मिलित होते है परन्तु जहा भी जाते है अपन आचार-विचार एव खानपान की शुद्धि का ख्याल रखते है। वे कई सस्थाओ के पदाधिकारी हैं। उज्जैन मे प्राचीन मूर्तिया एव शिलालेख आदि का सग्रहालय है। उस विभागके निरीक्षण का काय भी उनके हाथ म है। उनका कपडे का होलसेल व्यापार है, किंतु शाम को जल्दी ही बन्द कर देते है तथा वष भर मे उनकी लिमिट का व्यापार पूरा होने पर व्यवसाय आगे नही करते। सामाजिकता से काय करने की उनकी अपूर्व शैली है। उनके घर मे व चौके मे कादा व ह बाजार की बनी चीजें कतई नही लाई जाती। बच्चो के खानपान आदि पर उनका पूरा नियत्रण है।

उनकी नि स्वार्थ भावना समाज सेवा एव स्पष्टवादिता अनुकरणीय है। इसी कारण आर्थिक, सामाजिक, राजनतिक एव धार्मिक प्रत्येक क्षेत्र मे वे अग्रसर सहयोग देते है। हम भी वीर प्रभु से उनके दीर्घायु एव स्वास्थ्य की कामना करते हैं। उनके सम्मान मे यह आयोजन निर्विघ्नपूण हो, यही भावना है।

□ □

सुप्रसिध्द विद्वान

श्री वधमान कुमार काला,
नाँदगाव, बम्बई

मेरे अनुज चि श्री भरत कुमार के विवाह सम्बन्ध से ही हम श्रीमान प सत्यधर कुमार जी से परिचित हुए थे। वसे हमारे पिता स्व पूज्य तेजपाल जी काला का एव इनका पारस्परिक परिचय सामाजिक सेवा के कारण पहले से था।

वे जितने कठोर देखे गये उतने ही मृदु भी पाये गये हैं। सामाजिक एव धार्मिक स्तर पर भिन्न-भिन्न विचारधारा होते हुए भी प्रम एव स्नेह पाया जाता था।

एक सुप्रसिद्ध विद्वान का सम्यक स्व पूज्य पिताजी के माध्यम से प्राप्त होना यह हमारे लिए सौभाग्य की बात रही है।

उनके शेष जीवन निरसपूवक एव मोक्ष माग दशन होकर बने यह शुभकामना है। स्वास्थ्य नेक बने।

उनका अभिनन्दन, अभिनन्दन ग्रथ छपाकर करना एक स्तुत्य काम है।

अडिग

श्री केशरचन्द काला
नादगाव, बम्बई

मेरे भतीजे श्री भरतकुमार का विवाह सम्बन्ध बनने के बाद व्याइजी श्री सत्यधर कुमार जी का सम्पर्क एव उन्हे निकट से समझने का देखने का मेल एव उनके साथ बठने का अवसर हमे जब-जब व नादगाव आये तब-तब मिला।

उनकी विनयनम्रता के साथ स्पष्टवादिता एव अपनी बात पर अडिग यह उनका स्वभाव बारम्बार दृष्टिगोचर होता था। पर एक विशेष बात यह थी कि मन म किसी भी प्रकार का राग या लोभ नही रहता था। प्रेम व स्नेह रग गये थे। उनके साथ बठकर अनेको सामाजिक एव धार्मिक चर्चाए होती थी समझाने की शैली प्रभावशाली थी। भिन्न विचार होते हुये भी हम साथ रहे, यह इस सम्बन्ध की विशेषता मानना चाहिए।

उन्हे दीर्घ आयु प्राप्त होवे और सुस्वास्थ्य प्राप्त होवे,यही शुभकामना है।

☐ ☐

मेरे चाचाजी

श्री त्रिलोकचन्द सेठी,
जयपुर

मेरा सौभाग्य है कि मुझसे इस महान् आत्मा के विषय म कुछ लिखकर मागा गया है। शायद मेरा उक्त सम्बन्ध होने स मेरे द्वारा लिखा गया अतिशयोक्तिपूर्ण माना जा सकता है। हर सत्यता को नकारा नही जा सकता है, क्योकि हर परिचित व्यक्ति उनके सद्गुणो से वाकिफ है।

इनकी एक महान् विशेषता जो आज इनकी सम्पन्नता का द्योतक सिद्ध हुई है वह है "मितव्ययिता एव सादगी" कि इस भौतिकता के ससार म लग भग किसी को भी अपने प्रभाव से, भौतिक चमक-दमक से वचित नही रहने दिया है पर इन्हे रच मात्र भी नही छू पाई है, न खान-पान म रहन-सहन म और न ही बोलचाल मे। आपके स्वय के सिद्धान्त मौलिकता म बधे हुए हैं जो आज तक भी विद्यमान हैं, जिसका प्रभाव हम सभी बच्चो पर अमिट छाप छोड़ हुए हैं।

जिस इन्सान ने अपना जीविकोपार्जन का साधन पन्द्रह रुपय मासिक से उपलब्ध कर जीवन निवाह प्रारम्भ किया था वह आज की तारीख म लाखो मे होते हुए भी सादगी एव औचित्यपूर्ण, मितव्ययिता से चल रहा है, यह वास्तव म अपने जीवन की अनूठी बात है। इस तथ्य को कोई व्यक्ति नकार नही सकता।

दूसरी विशेषता जिसका मैंने व्यक्तिगत रूप से अनुभव किया है वह है स्पष्टवादिता जिसको कहना है, स्पष्ट ही कहा है और समाज के हर वर्गो के दोषो को मूल रूप से उखाड़ने के लिये कटिबद्धता से पूर्ण मुकाबला कर विजय हासिल की है। चाहे वह दोष हमारे जैन गुरुवो म रहा हो या धर्मावलम्बियो या धर्म अधिष्ठाताओ में सबका डटकर एक सभ्यतापूर्ण तरीको से सामना कर आखिरकार दोषो को हटाने की क्षमता धारण की है।

उपरोक्त तथ्य मेरे व्यक्तिगत अनुभवो पर आधारित है इसलिये इसे अतिशयोक्तिपूर्ण बनाना भूल होगा मेरा रिश्ता चाचा भतीजे का अवश्य है पर वह इतना महत्वपूर्ण नही जितना आपका हमारे से एक महान् आत्मा के रूप मे है।

☐ ☐

हमको गर्व है

श्रीसुशीलकुमार सेठी, उज्जन

मुझको ही नही अपितु हमारे पूरे परिवार को मेरे श्रद्धेय पू पिताजी साहब जिन्हे हम बापूजी नाम से सम्बोधित करते हैं, बहुत अधिक गर्व है। हम ऐसे पिता की सतान हैं जो साधारण से असाधारण अपने विशेष गुणो से अलकृत हैं। जब मैं उनके बारे मे विचार करने लगता हू तो उनके व्यक्तित्व के कई कोण मुझ दिखाई देने लगते है। और कोई ऐसा कोण मुझ खाली दिखाई नही देता जहा पर कि उन्होने अपने कतव्य का दायित्व पूरा नही किया हो। जब मैं मेरे परिवार मे व घर मे उनके दायित्व के प्रति विचार करने लगता हू तो मुझे बहुत आश्चय होता है कि एक व्यक्ति जिसने अपने आपको इतना अधिक सामाजिक दायित्व से उलझा रखा है परिवार के दायित्व को, हम लोगो की इच्छाओ का हमारे जीवन-यापन सम्बन्धी सभी प्रकार की समस्याओ को कितने शातिपर्ण एव सतोषप्रद तरीके स हल की। जब इस पहलू पर मैं विचार करता हू तो पाता हू कि उन्होन एक बहुत ही साधारण रूप से आडम्बर विहीन गृहस्थी चलाने का प्रयास किया। हमने देखा जो धार्मिक ज्ञान उन्होने सीखा और उससे उनमे कठोर आत्मबल का आलम्बन अपने जीवन मे उतारा। मैंने यहा कठोर शब्द का प्रयोग इसलिये किया है कि हर साधारण व्यक्ति उसे कठोर ही मानगा। पर हमारे पू० पिताजी सा० जिन्हे ऊपर मैं असाधारण व्यक्ति कह चुका हू, इस प्रकार के किसी भी आत्मबल को साधारण की श्रेणी मानते हैं। उनका मानना है कि जो भी आपकी जीवन जीन की शली किसी दूसरे व्यक्ति क हृदय म ईर्ष्या पदा नही करे, जो आम आदमी जीता हो वह श्रणी। जा धार्मिकता लिये हो रूढि एव आडम्बर—दिखावा से परे हो। मैं सोचता हूं आज के सामाजिक परिवेश म इस प्रकार से गुजरना कितना कष्टप्रद होता है पर उन्होने इसकी कभी परवाह नहीं की और आज हमारे सम्पूर्ण परिवार को उस ऊचाई पर ल जाकर रख दिया जिसस हम गौरवान्वित हैं। हमन देखा उनकी जितनी भी काय करन की शली है वह आडम्बर विहीन ही रही है पर साथ ही छल रहित भी रही है। यही कारण रहा कि आज आपन जो व्यवसाय कर रखा है वह दूसरे वस्त्र व्यवसायियो म भिन्न है। चू कि शुरू ही म आपको समाज क प्रति बहुत अधिक लगन ज्यादा समय सामाजिक गतिविधिया म ही गुजरता था। तो आपन अपन व्यवसाय को भी मात्र सनाप की धार्मिकता की चौखट म बाधा।

हर कोई जानता है, कपड़ा व्यवसाय बिना उधारी के नही चलता, पर आपने उसको नकद आदान-प्रदान के आधार पर सचालित किया। उसका सबसे बड़ा कारण आप अपने आपको उसमे उलझाना नही चाहते थे। आपका अपना जो सादा जीवन जीने की भावना रही है उसमे कही भी धन के प्रति मोह या लालच के प्रति आकर्षण नही हो पाता और इसके विप रीत उन्होने मितव्ययिता का कठोर अनुशासन हम सब पर बनाए रखा। मैं तो कई बार सोचने पर मजबूर हुआ हू कि जहा पिताजी खर्चे पर इतना अकुश लगाते हैं उसके बनिस्पत वो कमाने म इतना समय क्यो नही लगाते। मैंने कभी उसके प्रति आकर्षण या रुचि देखी ही नही। वे हमारा ही जीवन बाह्य आडम्बरो से बचाना चाहते हैं। उनकी इच्छा रही कि हम अपनी इच्छाओ पर पाबन्दी रखे। वे इसके द्वारा हमारे जीवन को अनुशासित करना चाहते हैं। हमने देखा जो भी धार्मिक ज्ञान सीखा अनुभव किया उसे जीवन मे उतारने की पूरी-पूरी कोशिश की और साथ ही उनकी सदव यही भावना सभी के लिए रही कि वो ज्यादा से ज्यादा बाहरी आडम्बरो, दिखावो, व्यसनो आदि से अपने जीवन को बचायें। उन्होने अपने व्यव सायिक स्थिति से भी कई व्यक्तियो को धम के महत्व के प्रति जागृत किया। और यही कारण रहा कि व्यापारी आपकी इस सद्प्रवृत्ति से आपकी ओर बहुत श्रद्धा एव विश्वास से देखते है। आपकी स्पष्टवादिता एव धन के प्रति आकर्षण के अभाव ने कई बार नये-नये व्यक्तियो को चमत्कारित किया।

आपने दुकान पर कुछ विशेष नियमो का भी चलन किया। जिसके लिये आज भी हमारी दुकान जानी पहचानी जाती है।

यह एक कितने आश्चय की बात है कि दुकान पर बठकर भी कोई सिद्धात की बात करे या उस पर चले। पर आपने अपने व्यवहार से इस असम्भव बात को भी सम्भव करते रहने का बराबर प्रयास किया। पसे के नाम पर झूठ, धोखा, गलत व्यवहार या बोलचाल मे असतुलित हो जाना जैसी साधारण बातो को महत्वपूर्ण बताया। यही कारण रहा कि व्यापा रिक जगत मे आपकी हर बात का बहुत विश्वास किया जाता है। माल खराब निकलने पर या हल्का भारी होने पर कभी रगड़ा डाल देना जसा काय नही किया।

अब मैं मेरे पू० पिताजी सा० के सामाजिक एव सावजनिक जीवन के बारे मे मेरे अनुभव लिखूगा। मैं मेरा अनुभव कुछ लिखने व समझने के लिए आज परिपक्व हुआ दीखता है। मैंने जब स होश सम्भाला है तभी स मैंने उनको नियमित एव सक्रिय रूप से समाज स बन्धा हुआ पाया है। मैं छोटा था तब हम प्रात उनके साथ जयसिंहपुरा जहा एक प्राचीन अतिशय क्षेत्र मन्दिर है जाया करते थ वहा उन्होने पुरातत्व स सम्बन्धित कई खडित

मूर्तिया प्रतिस्थापित की तब प्रात यही पुरातत्व से सम्बन्धित चर्चा होती रहती थी। उज्जैन व उनके आसपास का क्षेत्र का जैन धर्म से सम्बन्ध व महत्व विषय रहते थे। तत्पश्चात् नारकनगरी मन्दिर सम्बन्धी कार्य, शास्त्र स्वाध्याय आदि से जुड़े रहते थे। उज्जैन आने पर आपने यहाँ एक कन्या विद्यालय, एक लड़को का स्कूल मात्र धार्मिक पढाई हेतु स्थापित किये। समयानुसार परिवर्तन कर उसमे लौकिक शिक्षा चालू की गई। इन स्कूलो मे लौकिक शिक्षण के साथ-साथ धार्मिक शिक्षा चालू रहने पर कई बार सरकारी अड़चनो व अड़चनें बराबर व्यक्तियो द्वारा डाली जाती थी। जिनका आप सन्तोषजनक समाधान किया करते थे। हर वक्त हर समय मैंने आपके पास धार्मिक विचारो, धार्मिक रचनात्मक कार्यो के अलावा और कोई वार्तालाप होते नही देखा।

आपके हर काम मे मात्र धार्मिक व रचनात्मक रूप टपकते देखा। दुकान पर भी आप हर आने वाले व्यक्ति चाहे वह व्यापारी हो या अन्य कोई, धार्मिक आचरण करे बिना रह नही सकते थे। इन कार्य के पीछे कभी भी व आजभी दुकान की परवाह करते नही देखा। मैं छोटा था तो मुझे याद है इन कार्यों के पीछे दुकान बंद करके चले जाया करते थे। सामाजिक जीवन के साथ-साथ आपने राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को कभी नही भूला। शुरू ही से कांग्रेस विचारधारा के होने के नाते व महात्मा गांधी द्वारा सत्य व अहिंसा का आचरण करने के कारण उसी संस्था से जुड़ गये। तथा सभी प्रकार की सार्वजनिक गतिविधिया जो चाहे राजनीति से सम्बन्धित रही हो जोड़े रखा।

आज इन सब बातो के प्रति म सोचता हू तो पाता हू पूज्य पिताजी साहब मे हर अच्छा व रचनात्मक जो मानव को किसी भी रूप म राहत प्रदान करता हो से लगाव एव रुचि रही व उसी मे सतोष व सुखी अनुभव किया। अगर यह लिखू कि उनके जीवन की खुराक ही यही सब चीजें रही हैं तो अतिशयोक्ति नही होगी। इतना अधिक इन कार्यो म व्यस्त रहते देखकर हम तो कई बार उनसे पूछते थे, इनसे आपको क्या मतलब? तब उनका उत्तर सुनकर हम सभी को चुप हो जाना पड़ता था। उनका कहना रहा है जिस समाज व राष्ट्र म अपन ने जन्म लिया है उसके प्रति अपने भी कुछ दायित्व एव कर्तव्य होते हैं। उस संस्कृति को जीवित रखने के लिए कुछ करना चाहिये। अपना पेट तो सभी भरते हैं पर दूसरा की भी चिन्ता करनी चाहिए मैं यह सब कुछ मेरे लिए नही करता हू पर भगवान महावीर ने भी ये सब कुछ किया है तो अपने को भी उसके लिए करना चाहिए। जिस दिन म मेरे स्वार्थ के लिए करूगा तब तुम रोकना, अभी तो मुझे कर्तव्य करने दो।

मैंने अनुभव किया है उनम अपना विवेक ज्ञान का भरपूर उपयोग करने की सामर्थ्यता है उनम तो वह हिम्मत है जो सभी बाहरी आरोपो, आक्षेपो

को सहन कर सके व अपना आशय समझा सके मनवा सके, हर किसी का भी विरोध होना स्वाभाविक है। उनका मानना रहा है विरोध ही जीवन है और हर आदमी का विरोधी होना भी चाहिए। ताकि आप अपने सही मार्ग का अनुसरण करते रहे।

पू० पिताजी साहब ने कभी उनके विरोधी के प्रति बुरी भावना को नही पनपने दिया। उसे उनकी अज्ञानता ही कहा। उसका कुछ भी अहित हो जाय कभी नही सोचा। पर कई बार ऐसा वक्त आया कि विरोधी का भी हित किया।

म मेरे पू० पिताजी साहब क बारे म जितना लिखू बहुत कम रहेगा। म सदव बचपन से आज तक उनकी प्रत्यक क्षण-क्षण की गतिविधियो को दृष्टिगत करता रहा हू और आज तो उनकी हर क्रिया से कितनी शुद्ध भावना देखता हू, मैं अपने आप मे रोमाचित हो जाता हू।

यह सब मुझको अलोकिक दिखता है। उनम अपार कार्य करने की क्षमता है। वे दृढ सकल्पी कठोर परिश्रमी आत्मबली, साहसी, निणय लेने म पूण सक्षम व प्रभावक लगते है। बहुत अधिक स्पष्टवादी ह। उनका जा अपना प्रभा मण्डल है अद्वितीय है।

मेरा जैसा छोटा-सा आदमी उनके बारे म क्या लिखे, जैसा उनका व्यक्तित्व उसी को उनके बारे मे लिखना चाहिए। जो उन पगडडियो पर चले उसी को ये सब लिखना चाहिए और म इन सब बातो मे अपने आपको बहुत अधिक अपराधी पाता हू।

पर मेरा भी अपना कुछ कर्तव्य होता है। ये सब कुछ लिखा है। ये सब सूय को दीपक दिखाने जैसा लगता है। मै तो ये वीर प्रभु से यह चाहता हू कि मुझमे भी उनके चरणा पर चलने की शक्ति प्रदान करे। अगर वो कुछ मैं कर पाता हू तो उनके प्रति मेरा यही सच्चा अभिनन्दन होगा।

उनका अपार आशीर्वाद हम सभी परिवार पर वर्षो तक बना रहे, यही मेरी हार्दिक इच्छा है यही मैं वीर प्रभु से भावना भाता हू।

□ □

धन्य है हम

श्री रजनीश कुमार सेठी,
उज्जन

आज जब मैं पूज्य पिताजी साहब के अभिनन्दन के अवसर पर श्रद्धा के रूप मे यह छोटा लेख लिख रहा हू तो मेरे दिल मे इतना उत्साह भरा हुआ है कि मैं प्रकट नही कर सकता हू। क्योकि यह लेख मैं सिफ पू० पिताजी के लिये नही लिख रहा हू वरन् उन महान् विभूति के लिए लिख रहा हू जिन्हे जन समाज व सावजनिक वग के बडे से लेकर छोटे बच्चे तक अपना आदश मानते है और फिर मैं तो अपने आपको बहुत ही भाग्यशाली समझता हू कि मैंने ऐसी महान् विभूति के घर जन्म लिया है।

आज मैं उनके सम्बन्ध म लिख रहा हू तो बार-बार मेर मन म ये विचार आ रहे हैं कि रजनीश पू० पिताजी साहब द्वारा कह गय हर शब्द आदर्शता की ऊचाईयो को छू रहे हैं। तो एस समय लखक कठिन स्थिति म होता है कि वह कौन से सिद्धान्त को महत्व दव, क्योकि पू० पिताजी साहब के सभी विचार महान् हैं।

पूज्य पिताजी साहब का तो एक ही नारा है 'सादा जीवन उच्च विचार' आज हम जब भी उनके पास बठत हैं तो हम कुछ न कुछ ज्ञान दत ही रहत हैं। हम धन्य मानते हैं अपने आपको कि हम पू० पिताजी साहब के रूप म एक ऐसे मानव मिले हैं, जिनके पास हम देन के लिये 'ज्ञान रूपी एक विशाल भण्डार है'। हमे पू० पिताजी सा० ने पुरुषार्थी युवक बना दिया है। आज हम उन्ही की प्रेरणा से सब तरह के काय अपने हाथो से करन की आदत पड गई है। पू० पिताजी साहब आज भी प्रात काल पाच बजे उठकर अपनी दिनचर्या मे लग जाते हैं इसी के फलस्वरूप हमारे परिवार का छोटा बच्चा भी सवरे जल्दी उठकर अपने दनिक काय म लग जाता है।

पारिवारिक जीवन मे पूज्य पिताजी साहब का जो सादगीपूण जीवन देख रह हैं वह भूल नही सकते है। एक बार पू० पिताजी सा० एक पार्टी म गय थे जहा पर बडे बडे लोगो का जमघट लगा था लेकिन पू० पिताजी सा० वही सादगी पूण वस्त्रो मे गये थ तो पूज्य पिताजी सा० के एक मित्र न वहा की चकाचौंध से प्रभावित होकर पू० पिताजी सा० से कहा कि यहा पर तो प्रेस किए हुए कपडे पहन कर आ जाते। तो उस समय पू० पिताजी सा० ने सब लोगो के बीच एक ही सवाल किया कि 'निमन्त्रण मुझे मिला है या मरे कपडो को' अगर निमन्त्रण कपडो को ही मिला है तो मेरी क्या जरूरत है, भेज देता हू प्रेस किये हुए कपडो को। यह महान् विचार सुनकर वहा उपस्थित सब लोग हस पडे और मैंने भी मन ही मन म सोचा कि कितन महान् विचार हैं पू० पिताजी सा० के। अब आप ही सोचिये कितने 'धन्य हैं हम"।

पू० पिताजी सा० का राष्ट्रप्रेम देखते ही बनता है। मैं कभी भी अग्रेजी मे कुछ लिखता हू तो वे नाराज होते हैं, कहते हैं कि अपनी राष्ट्र भाषा हिन्दी है उसे ही महत्व देना चाहिये और यह भी कहते हैं कि ज्ञान अग्रेजी का भी होना चाहिए। मतलब यह है कि वे हमे हर तरह की जिम्मेदारी का ख्याल (ध्यान) दिलाते रहते हैं और ऐसा भी नही हैं कि यह सब ज्ञान हमे ही देते हैं वरन् हर व्यक्ति जो उनके पास आता है या वे जहा भी जाते हैं वहा के लोग कुछ न कुछ शिक्षाप्रद बातें सीख कर ही जाते हैं।

हम देखते हैं कि पू० पिताजी सा० को आज इस उम्र मे जरा सा भी आलस्य नही है, उन्हें किसी भी काय से कितनी ही दूर क्यो न हो पदल ही भ्रमण करते हैं और न ही हाथ मे घडी पहनते हैं फिर भी वह ठीक समय पर उपस्थित हो जाते हैं। कितनी महानता है उनकी।

और उनकी इन महानताओ का सही सम्मान सही अभिनन्दन तब ही है जब हम और आप उनके सिद्धान्तो पर अमल करें।

इसी तरह हमें पूज्य माताश्री का भी हमे आशीर्वाद प्राप्त है, जिनसे हम इतना प्यार व स्नेह मिल रहा है, जिससे हम उऋण नही हो सकते हैं। आज उन्ही की कृपा का फल है कि हमारा पूरा परिवार धार्मिक वातावरण और सदाचार भरे जीवन मे है।

हमारी यही भावना है कि हमे इसी प्रकार इनका आशीर्वाद मिलता रहे। ऐसे आदर्श माता पिता के चरणो मे शत-शत वन्दन।

□ □

मेरे पूज्य पिताजी

श्री सजयकुमार सेठी
उज्जन

(1) जन रत्न

पू० पिताजी सा० देश के उन रत्नो मे से है जिनका प्रकाश सदा ही समाज के कार्यकर्ताओ को मार्गदर्शन करता रहेगा। उनका ज्ञान, चरित्र और उनकी सेवायें अमूल्य देन है। उनके इस प्रेरणापूर्ण जीवन से हमे काफी शिक्षा मिली है, क्या ? सामाजिक, क्या ? राजनतिक सभी कार्यों म आप निपुण हैं। आपने बचपन से ही बड़े-बड़े ग्रन्थ व शास्त्रो का अध्ययन शुरु कर दिया था। यही कारण है कि आज आपके ज्ञान एवं शिक्षा का अपुर भण्डार है।

(2) मधुर वाणी

पू० पिताजी सा० एक आदर्श सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वे समाज के कार्यो मे जुटे होने के साथ ही विभिन्न सस्थाओ मे भाषण देते हैं, निरीक्षण करते हैं एव समय-समय पर सहयोग देते रहते हैं। आपकी भाषा शैली लोगो को बहुत आकर्षित करती है आपकी इसी मधुर वाणी के फलस्वरूप आपकी कीर्ति सब दूर फल रही है। यही कारण है कि समाज का हर युवक आपकी मधुरवाणी को पाकर योजनाबद्ध कार्य करने की दिशा म अग्रसर हो रहा है।

(3) महान व्यक्ति

पू० पिताजी सा० एक महान् व्यक्ति ह। आज भारत जस देश म जन समाज ने इस देश को कई महान् व्यक्ति प्रदान किय हैं। जिन्होने इस देश की परम्पराओ को आगे बढान मे अपना अमूल्य योगदान दिया है। मैं पू० पिताजी सा की एसे ही महान् व्यक्तियो म गणना करता हू। क्योंकि उनम आज एसे गुण विद्यमान हैं। उन्हे किसी प्रकार की फशनबल वस्तुए या शौक नही है वे क्रान्तिकारी विचारक हैं। पू०पिताजी सा० मरगुणी, उत्साही समाजसेवी, कर्मठ कार्यकर्ता, सत्यप्रेमी तपस्वी गौरवसम्पन्न हस्ती आत्मविश्वासी बहुमुखी व्यक्तित्व आदि एस कई गुण हैं जिनके फलस्वरूप उन्हें एक महान व्यक्ति के रूप मे सुशोभित करना हमारा कर्तव्य है।

(4) अनेक सस्थाओं के कायकर्ता एवं व्यवस्थापक

पू० पिताजी सा० अपने ढग के एक बेजोड कायकर्ता भी हैं। आज उनके हाथ म अनेक सस्थायें चलती हैं, आप उनकी देखभाल पूरी तरह से करते हैं एव उनके निर्माण, विकास एा सत्कय मे आपका अपूर्व योगदान रहा है। आप इन सस्थाओ के उज्जवल भविष्य के लिए निरन्तर प्रयत्नशील हैं। आजकल बहुधा यह देखने को मिलता है कि सस्था के क्षेत्र म कार्यरत विद्वान व्यवस्था सम्बन्धी कार्यो मे विशेष सफलता प्राप्त नही कर पाते हैं परन्तु पू० पिताजी सा० इसके अपवादस्वरूप हमारे सामने आते हैं। फिर वह सस्था सुचारू रूप से चलती है। वे एक सामाजिक कायकर्ता के रूप मे तो हमारे सामने आते ही है, फिर भी वे एक सफल व्यवस्थापक है। वे आज कर्तव्य परायण के चादर से ढके हुये हैं, क्योकि उन्होने जिस काम को अपने हाथ मे लिया है वे उसे बहुत ही सफलतापूर्वक निपटाते हैं।

(5) नि स्वार्थ सेवी

जैन विद्या के शीर्षस्थ विद्वान पू० पिताजी सा० देश के उन गिने-चुने विद्वानो म से एक है जिनके कारण जन समाज का मस्तक ऊचा रहता है। उन्होने जन समाज, जन साहित्य दर्शन, धम व समाज की सेवा नि स्वार्थ भाव मे करते हुए एक कठोर तपस्वी जीवन जिया है। जिन सस्थाओ से तनिक भी पू० पिताजी सा० जुडे हुये हैं वे उनकी नि स्वार्थ सेवा ही करते हैं।

(6) फशनेबल से दूर

पू० पिताजी सा० मे इन सब विशेषताओ के बावजूद भी एक विशेयता का और समागम है, वह है फशनबल से दूर। पू० पिताजी सा० का जीवन सादगीमय जीवन है। आज आपके जीवन के 73 वष पूरे होने जा रहे हैं, एकिन आपने कुर्ता और धोती म ही अपना जीवन व्यतीत करा ह। पू० पिताजी सा० न अपना जीवन साद रूप म ही व्यतीत किया है। आज तक न उन्होन हाथ म घड़ी बाधी फिर भी आका काम समय पर व्यवस्थित रूप स होता रहा है। आपने गौ रक्षा क लिए चमडे आदि स बनी वस्तुओ का त्याग कर रखा है। आपको आज 30 वष हो गए आपन कभी साबुन, इत्र वगरह आदि का आपन नही लगाया। आपन सादा जीवन ही समाज की सेवा म अर्पित किया ह। इस प्रकार आप फशनबल स पूर्ण रूप स दूर हैं।

(7) गाधी विचारधारा

पू० पिताजी सा० म आज व सब गुण विद्यमान ह जो गाधीजी म थ पू० पिताजी सा० गाधीजी की जीवन गाथा सुनाकर हम उनके पथ पर अनु [illegible] । पू० पिताजी सा० को आज क युग का [illegible] गाधी

कहा जाये तो मैं सोचता हू कि कोई अतिश्योक्ति नही होगी। आज पू० पिताजी साहब हमे स्वावलम्बी बनने के लिए प्रेरित करते रहते हैं। पू० पिताजी सा० अपने हाथ से कपडे धोना, झाड़ू लगाना, सुबह पाच बजे उठकर व्यायाम करना, आटा पिसाना, घर की मरम्मत सम्बन्धी काय, पाखाना साफ करना आदि कई ऐसे काम हैं जो पू० पिताजी सा० बेहिचक कर लेते है। पू० पिता ी सा० ने हमेशा मितव्ययता से काम लिया है। आज उनके जीवन ने हम सब को प्रेरणापद बना दिया है। कागज की एक चिन्दी भी व्यथ फकना वे स्वय का एव राष्ट्र का अपमान समझते है। उनका एक ही ध्येय ह कि इस शरीर को जितना आराम दोगे यह उतना ही आधीन होता चला जायेगा। इसे आराम देकर अपने आपको कमजोर बना दोगे। आज उनकी यह सब शिक्षा हम सब परिवार के सदस्यो के लिए बहुत ही सुखमय बन गई है, क्योकि आज हमे अपने हाथो द्वारा ही हर काम करने की आदत डल गई है। पू० पिताजी सा० बडी बडी मिटिगो मे लेक्चर देने जाते हैं वहा उनका भाषण उन महापुरुषो पर ही बोला जाता है, जिन्होने अपना जीवन त्याग, सयम, तप आदि के रूप म विताया हो। आज हम इतनी प्रसन्नता का अनु भव करते है। आज हमे ऐसे पिताजी सा० का साथ मिला है, जिनके द्वारा हम हमारे जीवन को एक नाव की तरह आगे बढा सकते हैं।

(8) निर्भीक एवं पुरुषार्थी जीवन

पू० पिताजी सा० का जीवन बचपन से ही सघर्षमय रहा है। उन्हे आल इण्डिया खण्डेलवाल महासभा की तरफ से बहिष्कृत कर दिया था, कई लाठी चाज हुए, कलकत्ता मे उनका जीवन सघषपूण रहा। यह सब क्या कारण है? इसका मुख्य कारण यह है जो आज का आम आदमी कई प्रकार की अधविश्वासी रुढियो मे फसा हुआ है। पू० पिताजी सा० न इन रुढियो को तोडने का सतत प्रयास किया और करते है, परिणामस्वरूप पू० पिताजी सा० के विपरीत विरोध होता है। वे किसी भी प्रकार के शिथिलाचार को पसन्द नही करते और फिर उनका विरोध शुरु। लेकिन पू० पिताजी सा० फिर भी सूय के समान प्रलोकित रहत हैं। पू० पिताजी सा० कहत ह कि जो आदमी काम करता है, उसका शुरु से ही विरोध होता रहा है। क्या गाधी जी को गोली नही लगी? ईसा को सूली पर नही चढाया? भगवान पार्श्वनाथ पर भयकर उपसग नही हुआ? आदि हम उदाहरण देकर कहते हैं कि ये ससार चक्र है एव पचमकाल ह। इसमे सब कुछ सहना और सघष करना पडता ह। पू० पिताजी सा० की इन भावनाओ क कारण हा आज व तारो के समान जगमगा रह है।

हमारी हार्दिक भावना है कि हम पू० पिताजी सा० की छत्र छाया म इसी तरह विकसित होत रहे और उनका आशीर्वाद मिलता रहे। जिसस हमारा भी जीवन साथक हो सके।

□ □

घर में हमको क्या सिखाया

श्री मनीषकुमार सेठी

मेरे घर मे पूज्य दादा साहब से लोग मिलने आते है, उनकी सन्मान की बात करते हैं। तब मेरे मन मे भावना आई मैं भी दो शब्द लिखू। मेरे श्रद्धेय दादा साहब हमको बहुत अच्छे लगते हैं। उनका स्वभाव और सादा पहनावा, सादा ही खानपान रहा है। हम लोगो को भी यह बात कहते हैं। सब्जी मे मसाला तेल कम डालने की बात कहते है। हम स्वास्थ्य के बारे मे धर्म की पढाई मे ज्यादा जोर देते हैं हमे नित्य ही मन्दिर जाने की बात कहते हैं। हम तीनों भाई बहिन उठते ही मन्दिर चले जाते हैं, फिर आते ही सब बडो के चरण छूते हैं। हम सब को पीने को दूध देते हैं।

आलू, प्याज, लहसुन व सिनेमा की चर्चा भी नही होने देते हैं कभी वे हम बच्चो के बीच बैठकर मेरी भावना सुनते हैं। मन्दिर मे स्नान करने की भी कहते हैं तब हमे बडा अच्छा लगता है। हम लोग खेलने को जाते हैं तब वे हमको समझा देते हैं कि तुमको इससे क्या मिला इतने समय मे तुम पढते तो कितना अच्छा रहता। उनके कारण से सांस्कृतिक गतिविधि, भाषण प्रतियोगिता, सामाजिक धार्मिक नाटक मे भी भाग लेते हैं, मेरे को कई ईनाम भी मिले हैं। पूज्य दादा साहब हर तरह मे स्नेह प्राप्त हैं वे हमेशा एक ही बात कहते हैं पानी छानकर पीओ रात को भोजन मत करो सादे कपडे पहनो, साबुन कम लगाओ, बिजली का कम उपयोग करो फैशन मे मत जाओ, स्कूल मे ठीक टाइम पर जाओ। हम को धार्मिक बातो के साथ राष्ट्र की बात भी सिखाते हैं। हमको राष्ट्रीय बचत की बात भी कहते हैं।

हम बच्चो के स्कूल मे जब भी अध्यक्ष व प्रमुख अतिथि के रूप मे आते है जब भी वे अधिकतर हम बच्चो को चरित्र निर्माण की बात के साथ देश रक्षा की बात स्वावलम्बी बनने की बात गुरू के प्रति भक्ति की बात, भाई चारे की बात, सिनेमा नही जाने की बात करते हैं। दादा साहब की बातो से हमारे स्कूल मे अन्य स्कूलो की तरह कोई गलत बात नही होती। हम तो यही चाहते हैं ऐसे हमारे दादा साहब का आशीर्वाद हम हमेशा मिलता रहे। ऐसे ही हमारी दादी का हम पर लाड भरा प्रेम है। वे बडी सीधी सरल है हम तो यही चाहते हैं कि स्नेह भरा लाड प्यार हमको मिलता रहे। □ □

ऐसे है मेरे पिताजी

श्रीमती कनक प्रभा सोनी
जयपुर

भारत की पवित्र भूमि पर जितने भी महापुरुषो ने जन्म लेकर इस वसुन्धरा को पवित्र किया है। जिनके जीवन से हजारों वर्ष बाद भी मानव को प्रेरणायें मिलती है। उन्ही के पद चिन्हो पर चलने वालो मे यदि मेरे पूज्य पिताजी 'सत्यधर कुमार जी सेठी' के नाम का उल्लेख किया जाये तो कोई अत्युक्ति नही होगी। वे जिस युग मे पैदा हुये हैं वह एक भौतिक युग है। लेकिन उनके जीवन पर इस युग का प्रभाव नही पड सका। वे आदर्श विचारधारा के

व्यक्ति हैं। उनमे न किसी प्रकार का दिखावा है और न प्रदर्शन भावना है। वे सादगी की प्रतिमूर्ति है उनके विचारो मे विशाल है, हृदय मे उदारता है, बधुता है। श्रममय उनका जीवन है। समाज सेवा के लिए कृत सकल्प है।

जब से मैंने उनके घर मे जन्म लिया है और हम मे बहुत कुछ समझने की शक्ति मिली है। हमे कई बातें सीखने को मिली है छोटी उम्र से ही हमने धार्मिक सस्कार ग्रहण किये। हम सब के बीच म बटकर देवदर्शन, रात्रि भोजन नही करना, पानी छानकर पीना, मोटा कपडा पहिनना प्रेम पूर्वक रहना आदि कई बातो की शिक्षा हमने अपने जीवन मे उतारी।

हमारे पिताजी कट्टर रूढियो के विरोधी हैं, परन्तु कट्टर धार्मिक हैं जिससे हमारे जीवन मे कुदेव को पूजने के सस्कार नही आये। दीपावली पर्व पर भी हम लक्ष्मी पूजा नही करते हैं। आज ससुराल मे भी हमारी यही धारणा बनी हुई है।

पिताजी हमेशा सामाजिक रूढियो के विरोधी रहे है। पर्दा प्रथा, मृत्यु भोज व दहेज प्रथा। उनकी कथनी और करनी म मैंने कही भी अन्तर नही देखा। अपने उच्च आदर्शो के कारण उन्हे कई बार विरोधो का सामना करना पडा। बडा से बडा सकट आने पर भी धैर्य से काम लिया। एक बार मेरा भाई सजय बीमार पड गया था। घर पर इलाज न होने पर अस्पताल म भर्ती कराया। सभी प्रकार के इलाज हुये पर कोई सुधार न हो सका। अन्त म पिताजी ने भक्तामर का पाठ शुरू किया, णमोकार मन्त्र का पाठ किया। उसके कुछ समय बाद ही सजय की तबियत मे सुधार हुआ उसने आखें खुली डाक्टर भी चकित रह गये। यह धार्मिक श्रद्धा व आस्था का उदाहरण है। पिताजी का यही कहना है कि श्रद्धा ही जीवन है। पिताजी के समान माताजी भी सादा जीवन व उच्च विचारो की प्रणेता है।

पिताजी राष्ट्रीय व्यक्ति भी हैं। देश मे अन्न सकट आने पर हम सबने एक समय ही भोजन किया। उनकी सभी धार्मिक व सामाजिक सेवायें नि स्वार्थ है। कभी भी समाज के सामने हाथ नही फैलाया। गरीबो की सहायता, धार्मिक पाठशालायें असहाय महिलाओ के उत्थान, युवको मे जागृति पैदा करना आपके जीवन का अनिवार्य अग है।

इन सब प्रेरणाओ व महान आदर्शो से युक्त पिताजी को पाकर हम अपने आपको धन्य मानती है। उनके पवित्र चरणो म असीम श्रद्धा प्रकट करती हुई दीर्घ जीवन की कामना करती हू।

☐ ☐

बाबूजी मेरे श्वसुर

भरतकुमार तेजपाल काला
महामंत्री—श्री भारतवर्षीय
दिगम्बर जैन युवा परिषद,
बम्बई।

मेरे विवाह सम्बन्ध की चर्चा आगे बढ़ी और श्रद्धेय बाबूजी साहब से श्रीमान् सत्यधर कुमार जी साहब के गुणों का एवं स्वभाव तथा विचारों का शनै शनै परिचय प्राप्त होने लगा।

उनके एवं मेरे विचारों में मतभेद होते हुए भी व विचारों के हद तक रहने के कारण सम्बन्धों में कोई दरार श्री बाबूजी ने कभी नहीं पड़ने दी। यद्यपि वे अपने विचारों के धुन के पक्के रहे और हैं तथा हम भी अपनी बात के पक्के हैं तथापि यह स्थिति विचारों तक ही सीमित रहती आयी है। विचार अलग रहते हुए भी साथ में साथ एकता देखी गया।

उनमें निर्भयता एवं स्पष्टवादिता कूट कूट कर भरी हुई है। आज भी वयोवृद्ध होते हुए यह व्यवहार जीवन में बना हुआ है। सामाजिक, राष्ट्र व धार्मिक सेवाओं में निष्पक्षता एवं प्रमाणिकता आपका आधार है। समझौता उन्हें मालूम ही नहीं। इसी के कारण विरोध के बावजूद भी वे भारत भर में प्रसिद्ध रहे। ऐसे सुप्रसिद्ध व्यक्ति का सुप्रसिद्ध पिता स्व० प० तेजपाल जी काला का पुत्र मुझ इनका जवाई बनने का सौभाग्य प्राप्त हुआ उससे मैं इसलिये प्रसन्न हूँ कि इनके सम्पर्क से एवं इनकी पुत्री मेरी पत्नी सौ० शैलबाला के समागम से मेरा सामाजिक एवं धार्मिक जीवन उन्नत बनने में सहायता प्राप्त हुई।

ऐसे निरभिमानी सेवक के जीवन चरित्र पर प्रकाश डालने वाला अभिनन्दन ग्रन्थ निश्चित ही एक आवश्यक बात है जिससे आगामी पीढ़ी ऐसे जीवन चरित्र से मार्गदर्शन प्राप्त कर सके।

मेरे श्वसुर दीर्घायु रामकमी बन एवं अन्त में सुसमाधिपूर्वक उनका मृत्युमहोत्सव मनाने का सौभाग्य हमें मिले यही शुभकामना है। □

श्रद्धेय बाबूजी द्वारा संस्कारित

सौ० शैलबाला भरत कुमार काला
बी० ए०
मंत्री श्री स्याद्वाद शिक्षण
महिला परिषद, बम्बई

श्रद्धेय बाबूजी ने बचपन में ही हमारे पर जो संस्कार डाले वे आज हमारे लिये वरदान सिद्ध हो रहे हैं। धर्म का जिस चीज में विधान होता है ऐसे संस्कारों व लाड-प्यार से उन्होंने बचपन से ही हमें सम्पन्न कर रखा। मुझे याद है वो दिन जब बाबूजी सुबह सुबह दूध लेकर आते थे। सर्वप्रथम भगवान् के दर्शन-स्मरण हेतु वे हमें भेजते थे, तभी हम दूध आदि खाते पीते थे। मुझे याद आता है हमारा वह बचपन, जब हम शाम को ठण्ड के दिनों में अंगीठी के पास व गर्मी के दिनों में छत पर बैठते थे। तब हमारी सरल हृदया माँ हमें सीता मैना अंजना चंदना सुरसुन्दरी आदि सतियों की व अन्य कहानियाँ सुनाती रहती थी जिससे हमारे ऊपर भी वैसे ही संस्कार

पडे। त्याग, सयम, विवेक, सहनशीलता महानुभूति के गुण हमारे म पनप । धम ज्ञान मे हम प्रवृत हो, रूची उत्पन्न हुई। इस प्रकार हमारे पर धार्मिक सस्कार डालने का कर्तव्य वडी तत्परता से निभाती थी, जिसका प्रभाव आज भी हमारे पर है।

सद्साहित्य का स्वाध्याय, पठन व चिन्तन की आदत भी हमारी बचपन से ही बना दी गयी थी। पुस्तको की तो घर भर मे मानो लाईब्रेरी ही है। दुकान पर भी विभिन्न प्रकार की पत्र-पत्रिकाए आती थी, बाबूजी सदव हमारे पढने के लिए घर लेकर आते थे जिसस समाज की वतमान स्थिति से हम अवगत होते रहे। समाज मे कहा क्या हो रहा है, हम क्या कर रहे है, क्या नही आदि व सभी मोटा मोटा ज्ञान उसके माध्यम से ही हम लोग जान सकते थे जिसकी पूर्ति वे कर देते थे। कई मन म उठते हुए प्रश्नो का समाधान भी उनसे प्राप्त कर लेते थे। दुकान मे आने के बाद प्राय यही चर्चायें चलती थी। इसके लिए हम सदव उत्कठित रहते थे।

धार्मिक क्षेत्र मे आगे बढाने के साथ-साथ लौकिक शिक्षा प्राप्त कराने के भी वे पक्षधर थे। जब हमारा डिवीजन बनता था तब वे काफी प्रसन्न होते थे। हमे सदव विभिन्न प्रतियोगिताओ मे भाग लेने को प्रोत्साहित करते थे इसके लिये वे बाहर भी भेज देते थे। जब हम ईनाम जीत कर आते तो वे हमे छाती से लगा लेते थे। हमेशा आगे बढने के लिए मार्गदर्शन देते रहते, जिससे हमारा साहस व उत्साह द्विगुणित हो जाता था। पर साथ ही अनुशासन भी वे काफी रखते थे। फैशन उन्हे जरा भी पसन्द न था। मोटा खिलाना व मोटा पहनाना आज भी उनका मूल उद्देश्य है। साधन सम्पन्न होते हुए भी बाबूजी ने हमारे पर खाने पीने रहन-सहने, पहनने आदि सबधी किसी भी प्रकार का कोई व्यसन या आदत नही डाली। इस बारे म उनका विवेक व दूरदर्शिता ही काम करती थी। उनका कहना था कि लडकी पराई है। पराये घर मे जायेगी, कैसा घर मिलेगा किस परिस्थिति व वातावरण म जायेगी, उसके अनुकूल उसे ढालना है, इसीलिये हम सब काम घर का सीखते थे, सब मिलकर आपस मे सुलटा लते थे। काम बिगडने पर और भी अच्छा काम होगा ऐसा कहकर प्रोत्साहन देते थे। सौभाग्य है कि आज उनके सारे सस्कार हम काम मे ला रहे हैं। बाबूजी ने हम घर भी ऐसा ढूंढकर दिया जहा हमारे धार्मिक सस्कार और भी दृढतर बन रहे है। धर्म की ओर रुचि बढ रही है। आज इसका मुझ गर्व है।

उनकी नि स्वार्थ समाज सेवा, निर्भीक वक्तृत्व शैली न भी हम काफी प्रभावित किया। आज भी इस वृद्धावस्था म जिस जोश, उत्साह, लगन व अनुशासन स बाबूजी काम करते है युवा वग भी उनस आश्चर्यचकित हो उठता। उनकी वक्तृत्व आज भी जन साधारण का मन आकृष्ट कर

लेती है। त्याग, संयम और सादगी उनके जीवन में पग-पग पर देखने को मिलती है। स्वार्थ के वशीभूत कभी कोई काम बाबूजी ने नहीं किया। बड़ी-बड़ी कठिनाईयो मे जूझकर बाहर निकले हैं। विभिन्न प्रकार की संस्थाओ मे आज भी वे अपनी नि स्वार्थ सेवाये अर्पित कर रहे है। न जाने कितनी उलझी हुई गुत्थियो को उन्होने सुगमता से सुलझाया है। कभी कभी तो उनकी उपस्थिति व मध्यस्थता मात्र जटिल समस्याओ का समाधान कर देती है।

आज हमारे मे जो चारित्रिक शिथिलता आई है, उससे श्रद्धेय बाबूजी काफी चिंतित रहते है। हमारे मे जो चरित्रहीनता आई है आज हम जिन प्रारम्भिक उनाचारो से मुह मोडते जा रहे है वह वास्तव मे समाज के एक चरित्रवान व प्रबुद्ध विद्वान के लिए चिंता का विषय है। देव शास्त्र व गुरु का जिस तरह से अवर्णवाद हो रहा है वह दुःख की बात है।

श्रद्धेय बाबूजी की जन्म दिन व अभिनन्दन के पावन अवसर पर दीर्घायु सहित सभी से यह शुभकामना करती हूँ कि सर्वप्रथम हम देव-शास्त्र व गुरु के सच्चे भक्त बने चरित्रवान बने सुसंस्कारित बने व फिर हम अन्य विवाद मे पडे। चरित्रहीन विद्वान या व्यक्ति समाज का सिर्फ भ्रमित कर सकते है पर सही निर्णय तक नही पहुचा सकते। यही निवेदन है। यही उनका सबसे बडा अभिनन्दन होगा। सबसे बडी उपलब्धि होगी।

□ □

संकल्प के धनी पूज्य बाबूजी

श्रीमती विद्युतप्रभा कटारिया
कानपुर

मै घर के कार्यो से निपटकर कभी एकांत मे बैठती हू तो कभी-कभी मेरे बाल्य-जीवन माता-पिता का अतुल्य प्रेम, भाई-बहिनो का अटूट स्नेह, उनकी अनुशासनबद्धता, समय-समय पर की जाने वाली धार्मिक व नैतिक शिक्षाये स्वावलम्बन की शिक्षायें और उनकी कार्यप्रणालियां सभी एक साथ मेरे सामने आ जाती है। साथ ही ये विचार मन मे उठने लगते है कि वास्तव मे अपने माता पिता की एक भाग्यशाली पुत्री हू जिनकी स्नेहसिक्त गोद मे पलकर हमने हमारे जीवन का निर्माण किया और आज के इस वीभत्स कालीन युग मे भी हम लोगो के जीवन मे किसी भी रूप मे कोई बुराई नही आ सकी।

वास्तव मे हमारे पू० पिताजी साहब ने अपने जीवन मे दो ही बातो पर ध्यान दिया-एक सदाचार दूसरी कार्यों की कर्मठता। सदाचार उनके जीवन का प्रथम अग है। उसका उपयोग उन्होने हर क्षेत्र में किया चाहे वह व्यापारिक क्षेत्र हो या सामाजिक। वे हमको कहा करते थे बेटी! धर्म मन्दिर मे नही धर्म जीवन मे उतारने की चीज है। मानव की सम्पत्ति सदाचार ही है।

इसी तरह वे अपने सकल्प के भी धनी हैं। जिस काम का निणय लेते हैं उसके लिये कभी भी उन्होंने उपेक्षा नही की । फिर चाहे कितनी ही बाधायें आवे। उनका एक ही निणय होता रहता था कि अमुक काम करना है-तो करना। मुझ याद है, उज्जन मे कोई पाठशाला नही थी। परम पूज्य सूयसागर जी महाराज के सामने यह प्रस्ताव पिताजी न रखा ।

श्रीमान रायवहा० सेठजी ने कहा-प० जी ! यह उज्जैन है, पाठशाला चल नही सकती। पिताजी ने कहा, कोई चिंता नही। पाठशाला के मुहूत मे भी मकान को लकर विरोध चला परन्तु, इन्होन एक नही सुनी। उस सस्था के लिये घर -घर जाकर भीख मागी। आज वही सस्था श्री सूयसागर दि० जन उच्चतर मा० विद्यालय के नाम से पूरे उज्जैन जिले म विख्यात है। जिसमे आज करीब 950 विद्यार्थी अध्ययन कर रह है और शिक्षा जगत मे उसको प्रथम स्थान प्राप्त है।

इसी तरह दस्सा भाईयो का आदोलन आपन किया। उनको पूजा-पक्षाल का अधिकार दिलाया कन्याशाला, विकास शिक्षण-सस्था की स्थापना, अस मथ लोगो की सहायताथ पेटी की स्थापना, छात्र-वृत्ति की व्यवस्था, मन्दिरो के विकास का प्रयत्न करना, शोध के विद्यार्थियो को मदद दिलवाना आदि कितने ही काय उनके जीवन के अ ग हैं । जिनमे कि वह अहर्निश जुटे रहते हैं।

सामाजिक क्षेत्र मे वह रूढियो के कट्टर विरोधी रहे। उन्होंने मृत्युभोज, रात्रिभोज कदमूलभक्षण, समाज मे दिन मे ही भोजन विवाह मे चाक-पूजन थाली पूजन दीपावली पूजन आदि कई रूढियो को खत्म करवाया। इसी तरह दहेज प्रथा के कट्टर विरोधी रहे। उन्होंने हमारे भाईसाहब की शादी मे भी सौदेबाजी नही की और न हम पाचो वहिनो के श्वसुराल वालो ने उनसे किसी रूप मे सौदेबाजी की व आज भी सभी से असीम प्रेम है। मेरी ही सगाई की एक घटना है। मेरी प्रथम सगाइ एक प्रतिष्ठित घर मे हो गई थी दस्तूर भी हो गये थे। लेन-देन विषयक स्पष्ट चर्चा थी। लडके ने कहलवाया कि आप मेरे को स्कूटर दिलवा दें। अम्मा न कहा-आप य क्या वात करते हो। इस तरह की कोई माग या सौदे-बाजी नही होगी। और अम्मा ने वापूजी को पत्र लिखा कि आपने कसे घर से सबध किया है जो मेरे को परेशान करते हैं। बापूजी ने विना किसी सोच विचार के उस सबध को रद्द कर दिया। कई लोगो ने समझाया, उन्होने एक ही जवाव दिया कि मुझे सबध नही रखना। ऐसी कई घटनायें हैं उनके जीवन की, वे वास्तव मे सकल्प के पूण धनी हैं।

मेरे माजी का स्वर्गवास हुआ। हमारे बडे पिताजी व बुहाजी ने मृत्युभोज व कपडे फाडने आदि पर काफी जोर दिया। उन्होने एक ही

जवाब दिया आप बठने को आये हो, मेरे पर दवाव डालने को नही। सब चुप हो गये।

महिला-जगत के प्रति उनकी सदव आदश भावनाय रही है। हमारा परिपालन बच्चो से ज्यादा अच्छे ढग से किया गया गया है। वे हमारे भाइ को पिटाई कर देते थे लेकिन हम बच्चियो को वे हाथ भी नही लगाते थे। वे यही कहा करते वच्चिय घर की लक्ष्मी है। ये मातृत्व लेकर आती है। आज भी हम लोगो को उनसे स्नेह प्राप्त है वह वास्तव मे अनुकरणीय है। इसी तरह घर मे सामजस्य, भाई भाभी सभी का बहिनो पर निश्छल स्नेह, एक दूसरो के प्रति पूण आदर की दृष्टि, सादा रहन-सहन आदि सभी देन पू० बापूजी की है।

आज उन्ही के विचारो का हम पर भी प्रभाव है और हम सोचते है इन "सकल्प के धनी" के पदचिन्हो पर हम भी चलें और जीवन को आदश बनावें।

□ □

जीवन के प्रेरणा स्त्रोत

श्रीमती शारदा देवी बोहरा
करौली (राजस्थान)
जिला—सवाईमाधोपुर

श्री सत्यधर कुमार जी सा सेठी उन महान् विद्वानो, समाजसुधारको म स एक है जिनकी छवि न केवल मध्य प्रदेश की उज्जैन नगरी म वरन् समस्त भारत के कोने कोने विस्तरित हो रही है हम उनक समस्त जीवन का एकान्तपन म अवलोकन करें तो लगेगा कि ससार मे ऐसे विरले ही इन्सान होत हैं जो सभी दृष्टि से समाज म व राष्ट्र म अपना महत्वपूण पद सुशोभित करते आये है व कर रह हैं जो अपने जीवन का अधिकाशत समय धम, समाज व राष्ट्र के लिये अर्पित कर रहे हैं व अन्त तक अपना ध्येय यही बना रखा है। उनके द्वारा किये गये सामाजिक व धार्मिक सुधार जो उनके बाल्यपन से लेकर अब तब उनके जीवन मे विद्यमान ह और उनकी सबसे बडी भावना है नि स्वाथ व निष्कपट की भावना। यदि हम उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त करना चाहे तो बहुत कुछ प्रेरणास्पद बना सकते हैं। यदि हम उनके जीवन म किये गये समस्त कार्यों का मूल्याकन करें तो पायेंगे कि उनके द्वारा किये गये कार्य बेजोड ह अमिट ह, अद्वितीय ह सही दृष्टि म देखा जाय तो वह एक चलती फिरती मानवीय सस्था ही ह।

उन्होने प्रारम्भ स ही सादे जीवन पर बल दिया है, भगवान महावीर क समस्त सिद्धान्तो पर आधारित ही अपना सम्पूण जीवन बनाया है व उन्ही अनुसार अपनी धमपत्नी व सन्तानो को भी ढाला है उन्हें किसी प्रकार का बाह्य आडम्बर व तडक भडक पसन्द नही है, उन्होने अपना जीवन इस प्रकार का बनाया है कि किसी भी समय व परिस्थिति म कठिनाई

का सामना न करना पड़े व ये सिद्धांत ही आज इनके जीवन में वरदान रूप सिद्ध हो रहे है। गंदे साहित्य, सिनेमा, अश्लील बातों से तो वो कोसों दूर है और जन साधारण से भी उनकी यही अपील रहती है कि यदि हर व्यक्ति इतना पैसा इनमें बरबाद करता है और यदि वही पैसा इनमें बरबाद न करके गरीबोत्थान के लिये व जनहित के लिए लगाए तो हमारा व राष्ट्र का कितना बड़ा हित होगा।

उनका दृष्टिकोण बड़ा व्यापक है वह सूक्ष्म से सूक्ष्म बातों को भी बड़ी विस्तार की दृष्टि से देखते हैं। उन्होंने सभी क्षेत्रों में सभी दृष्टियों से अपना महत्वपूर्ण स्थान बना रखा है, चाहे वह सामाजिक हो धार्मिक, हिन्दू मुस्लिम एकता हो, हरिजनोत्थान हो-किसी भी काम में वह अछूते नहीं रहे हैं, उनका समस्त चिन्तन मनन ही इस बात पर चलता रहता है कि किसी भी प्रकार, किसी भी क्षेत्र में सुधार व प्रगति हो। उज्जैन में भगवान् महावीर के 2500 वें निर्वाणोत्सव के उपलक्ष में विक्रम विश्व विद्यालय में जैन चेयर कायम करवाना, जयसिंहपुरा में पुरातत्व संग्रहालय की स्थापना करना, जगह-जगह जाकर पुरातन मूर्तियाँ लाना व उन्हें स्थापित करना यह कम महत्व की बात नहीं है।

उन्होंने कभी भी असहाय व निर्धन लोगों को घृणा या हीन भावना से नहीं देखा है वरन् उसके लिये जैसी भी सहायता या काम हो, जैसा भी बन सके करना अपना ध्येय बनाया है, गरीबों का सदा साथ दिया है व उनके प्रति आत्मीयता की भावना ही अपनाई है और यही कारण है कि आज उनके द्वारा काम पर लगाया गया जो भी इंसान अपनी [illegible] चरणों में गिर पड़ता है और फिर से [illegible] आशीर्वाद मांगता है।

मृत्युभोज के वह हमेशा से ही विरोधी रहे हैं। [illegible] सामाजिक रस्म वगैरह करने को पैसा नहीं उसको [illegible] रस्म पूरी करनी पड़ती है, पर कई जगह यह रस्म बन्द करवाने [illegible] और अमीर वर्ग भी करना चाहे तो उसमें यही कहा जाता है कि [illegible] औषधालय या [illegible] समाज का व गरीब वर्ग का उत्थान होगा। [illegible] बात सोचना हर रोज की बात [illegible] एक ओर वह मृत्युभोज के खिलाफ [illegible] [illegible] है [illegible] की शादी में दहेज लेने पर [illegible]

भी बताया है। उन्होंने अपनी पाचो लड़कियो की शादी मे दहेज के नाम पर एक पसा भी नही दिया और नही मागा, स्वेच्छा से देना वो दूसरी बात है।

रात्रि भोजन व जमी कद का भी घर मे आना ही पूर्ण निषेध है, घर के 2 साल के बच्चे को भी वह रात्रि भोजन नही देते, वह भी कितने ही बड़े भोज मे जायें पर उनके लिये पहले ही दिन मे भोजन का इन्तजाम कर दिया जाता है। यही है उनके व्यक्तित्व की ठोस छाप व उनके सिद्धान्तो की अडिगता। लोग लाखो दृष्टि से उन्हे अपने जाल मे फसाने, चाहे पर वह फसने वाले इन्सान नही है।

अन्त मे हम यही कह सकते है कि उनके समग्र जीवन पर दृष्टिपात करे तो वह भी उन महान् विभूतियो मे से एक हैं जिनके जीवन मे हिमालय की सी सर्वोच्चता, सागर सी पवित्रता, सिद्धातो पर अडिगता नि छलता नि स्वार्थता की भावना के द्योतक, सादगी की प्रतिमूर्ति, महान् सामाजिक व धार्मिक सुधारवादी, गरीबोत्थान के लिये सतत् प्रयत्नशील आदि महान् गुणो से सुशोभित हैं। बड़ी खुशी की बात है कि उनके हीरक वष मे आगामी जन्म दिन पर भव्य भारतवर्षीय अभिनन्दन करने का निश्चय किया गया है व इसी सुअवसर पर एक अभिनन्दन ग्रन्थ भी आप लोग भेंट करने जा रहे हैं यह एक हमारे व समाज के लिये बड़ी खुशी की बात है इस सुअवसर पर हम यही कामना करते हैं कि वह जिस प्रकार से अब तक सूय के समान ज्योतिपुज होत रहे है व हो रहे है व आगे भी इसी तरह होते रहेंगे, ऐसी ही भगवान महावीर से कामना करते हैं व उनके चरणो मे श्रद्धा से नतमस्तक होते हैं।

□ □

महान विभूति

सुश्री अल्का सोनी,
जयपुर

"इस वसुधरा पर अवतीर्ण होने वाले सर्वकालीन महान् विभूतियो का इतिहास कभी लिखा गया तो नि सन्देह समाज व राष्ट्र रत्न "सेठी सा" का नाम सर्वोपरि होगा।"

"सेठी सा राष्ट्र की आद्वतीय निधि है, उत्थान के लिये अक्षय स्रोत हैं, सुधार की सुरसरि है, समाज के लिए सञ्जीवनी शक्ति प्रदायक रसायन हैं।

वास्तव में सेठी सा देश व समाज की "महान् विभूति" हैं जिसने अपना समस्त जीवन देश व समाज के लिये समर्पित कर दिया है।

मैंने प सा को बहुत नजदीक से देखा, समझा व परखा है। इस लिये मैं इन शब्दो का प्रयोग करती हू। आपका समस्त जीवन महात्मा गाधी के सिद्धान्त "सादा जीवन व उच्च विचार" पर आधारित है। यही आपके जीवन का मूल मन्त्र है।

वर्तमान में आप एक उच्च व्यवसायी होते हुए भी एक साधारण जीवन व्यतीत करते है। आप हमेशा अपने जीवन मे अहिंसात्मक तरीके का उपयोग करते हैं। जिस वस्तु या चीज को आपने छोड दिया उसको छूते तक नही है चाहें वह वस्तु कितनी ही अमूल्य व लोकप्रिय क्यो न हो।

आज के आधुनिक समय मे भोग विलास, शारीरिक सुख व एश्वय के इतने लोकप्रिय साधनो के होते हुए भी आप उनका केवल सीमित मात्रा मे ही उपयोग व उपभोग करते है। यही कारण है कि आप ही नही वरन् आपके परिवार का जीवन भी सुखमय है। आपके उच्च आदर्शो की प्र रणा बराबर उनको मिलती रहती है।

आप समय के बडे पाबन्द हैं। ठीक समय पर पहु चना आपके जीवन की एक महान् खूबी है। आपकी कथनी व करनी मे कोई अन्तर नही है। आपके जीवन मे घटित अनेक घटनाए इसकी साक्षी है। जसे-मृत्यु भोज न होने देना, दहेज न लेना आदि।

आपकी विद्वता अगाध है। इसका उदाहरण आपने 16 वष की आयु मे ही सस्कृत के महान ग्रन्थ "गोम्मटसार" का अध्ययन कर लिया था। आप अध्ययनशील व्यक्ति हैं। आप अपना अधिक समय धार्मिक पुस्तको के पठन मे व लेखादि मे लिखने ही व्यतीत करते हैं। आपका अपने घर मे एक पुस्तकालय है। जिसम धार्मिक व सामाजिक विचारो के ग्रन्थ का अच्छा सग्रह है। यही कारण है कि आप अपनी कलम व वाणी के धनी है।

आप हमेशा अपनी निर्भीकता, उच्चादर्शो द्वारा समाज को और हमे भी दिशा बोध देते रहे हैं। आप क्रातिकारी विचारधारा के व्यक्ति हैं। हमेशा धम व समाज की रक्षा करने के लिये तत्पर हैं। जसे दस्सा भाईयो के धार्मिक अधिकार, असहाय महिलाओ के उद्धार व सुरक्षा, निधन व अनाथ बच्चो के लालन-पालन की व्यवस्था करना। परिणामस्वरूप आप हर क्षेत्र मे चाहे हिन्दू हो या मुस्लिम हो चाहे प्रान्तीय हो या राष्ट्रीय अपना सहयोग देते रहे है। सेठी सा कोमल हृदय व्यक्ति है। आपका हृदय नवनीत समान है। आपने दयालुता खूब है। आप मे सहानुभूति कूट-कूट कर भरी है। आहत पीडितो तथा दीन-दुखियो की सहायता करने म आपको आनन्द आता है। प्रत्येक व्यक्ति की हर तरह से निष्काम व नि स्वार्थ हीन सहायता करने मे आप अग्रसर रहते है। जसे असमर्थो छात्रो को छात्रवृत्ति दिलवाना, बेकारो की कही भी व्यवस्था करके नौकरी पर लगवाना, अस्पताल मे अस हाय व गरीब मरीजो के लिये भोजन भिजवाना आदि।

आप विनय की साक्षात् मूर्ति हैं। "विद्या ददाति विनय" उक्ति पर पूर्णतया घटित होती है। प्रसिद्ध विद्वान् व सामाजिक कायकर्ता होते हुए भी इतने विनम्र है कि प्रत्येक व्यक्ति की बात को ध्यानपूर्वक श्रवण करते हैं

और उनको हर तरह से सहयोग देत है। आपकी भाषण शैली इतनी सरल और सयत ह कि हर व्यक्ति आपके व्यक्तित्व से प्रभावित हो जाता है क्योकि आपका चिन्तन बहुत ही गम्भीर है और आपक विचारो म उदारता है।

सेठी सा वतमान समय म करीब 25–30 धार्मिक, सामाजिक सस्थाओ के अध्यक्ष व सदस्य आदि हैं। उन सबके लिए आपका जीवन सम र्पित है। उसमे औपचारिकता नाम मात्र की भी नही हैं। वे समय पर अपने व्यक्तित्व से हर सस्था के काय को सम्पादित करते हैं।

उज्जन म ही नही अखिल भारतीय सस्थाओ के अधिवेशनो म भी आपकी उपस्थिति रहती है। इसके साथ ही आप पारिवारिक व व्यापारिक दायित्वो को भी पूर्ण रूप से करते हैं।

आप सगठन के पूण समर्थक हैं। राष्ट्रीय क्षेत्र मे भी कलकत्ता नारा-यण क्षेत्र आदि स्थानो पर हिन्दू-मुस्लिम सघप मे भी आपने मध्यस्थता के कार्य किये है। उदयपुर व रतलाम आदि स्थानो पर बाल विवाह खत्म कर वाये हैं। उस समय आपने अपने अद्वितीय सहयोग द्वारा राष्ट्रीय एकता मे सराहनीय भूमिका अदा की है। आपने कोई राष्ट्रीय अपराध भी नही किये हैं।

आपने हमेशा अपने उच्च, महान, समन्वयकारी आदर्शो द्वारा अपना समस्त जीवन "बहुजन हिताय व बहुजन सुखाय" की मानवीय भावना के साथ निष्काम भाव से अपना समस्त जीवन दीपशिखा के समान समाज व देश को समर्पित किया है। इस सम्बन्ध मे अपनी बात कहने के लिये यह कहना चाहू गी कि आपका परिवार भी आपके पद चिन्हो की प्रेरणा से निर-न्तर इसी तरह चलता रहे।

आपका अनेक स्थानो पर "अभिनन्दन' किया गया है और "आज हम सब मिलकर आपके त्याग, तपस्या आदि बहुमूल्य आदर्शो व मान्यताओ से प्रेरित होकर देश की इस विभूति का अभिनन्दन ग्रन्थ प्रकाशित कर रहे है यह काफी हर्ष का विषय है।'

□ □

प सत्यघर कुमार जी सेठी द्वारा गत 60 वर्षों मे लिखे देश की विभिन्न पत्र-पत्रिकाओ, स्मारिको मे प्रकाशित लेखो व विचारो में से उपलब्ध चुनींदा विभिन्न विषयों पर लेखो एव विचारो का 6 खण्डो मे विभाजन

तीर्थंकर और उनकी शिक्षायें

भगवान ऋषभ और उस समय की व्यवस्था

भोग भूमिया युग से कर्म भूमिया युग के परिवर्तन पर जो दिशा, निर्देशन, व्यवस्था भगवान ऋषभदेव ने दी-वह लाखो वर्षो बाद भी आज देखी जा सकती है-जो कुछ नहीं है वह उनके बताये सिद्धान्त का पालन न कर मानव का स्वय दु खी होना।

विश्ववद्य भगवान ऋषभ का उदय इस पुण्य भूमि पर हजारो और लाखो वर्षो से पूर्व हुआ है। उनके महात्म्य के सम्बन्ध मे जितना जन साहित्य मे है उतना इतर साहित्य मे नही है, फिर भी स्मृति और पुराणो मे उनको महापुरुष के रूप मे माना है और उनके यौगिक जीवन के सम्बन्ध मे बहुत कुछ लिखा है। जन साहित्य मे वे इस युग के प्रथम तीर्थंकर माने गये हैं। उन्होने युग के प्रारम्भ मे कई क्रातिकारी परिवर्तन किये जिनकी उस वक्त के प्राणियो को अत्य-धिक आवश्यकता थी।

जन साहित्य मे लिखा है कि भगवान ऋषभ के पहले लोगो का जीवन भौतिक था, उनके जीवन मे भोग का ही प्राधान्य था इसलिये वे भोग भूमिया जीव कहे जाते थे। उनके जीवन म सयम और साधना को कोई स्थान नही था, वे युगलिया पदा होते थे- वह युग कल्पवृक्षो का युग था। मानव जीवन की समस्त आवश्यकताओ की पूर्ति उन वृक्षो से हुआ करती थी। इनका रहन सहन सब सादा होता था, वे जगलो मे ही रहा करते थे। महल और मकान उस समय नही थे।

वृक्षो ने बहुत वर्षों तक उनका साथ दिया लेकिन आहिस्ते आहिस्ते उनका चमत्कार कम होने लगा फल फूल भी कम आने लगे तब भोग भूमियो की चिन्तायें बढी। वे अपने कुछ प्रमुख व्यक्तियो के पास पहुचे लेकिन उनसे खाने और पीने की समस्यायें हल न हो सकी, क्योकि उनमे एक भी ऐसा व्यक्ति न था जो उनको कोई नया मार्ग बता सकता।

इसी समय राजा नाभि और रानी मरुदेवी के घर चैत्र वदि ९ को भगवान ऋषभ ने जन्म लिया। जन्म लेते ही त्रिभुवन में एक बार आनंद की लहर उमड़ पड़ी – लोगों ने समझ लिया कि यह कोई महापुरुष है जिसके जन्मते ही हमें बहुत शान्ति मिली है। भगवान ऋषभ के युवा होते ही प्रजा के समस्त लोग भगवान के पास पहुँचे और उनसे निवेदन किया कि भगवान हमें कोई ऐसा मार्ग बतलाइये जिससे हम सुखी हों और हमारी खान पान की समस्यायें हल हो सकें।

भगवान ऋषभ एक कर्मयोगी पुरुष थे। उन्होंने क्षण भर में इन समस्याओं को खत्म करने का मार्ग निकाल डाला और उनको बतलाया कि अब भोग भूमि का युग बदल गया है। यह कर्म भूमि का युग आया है अतः जीवन के साथ आपको कर्म भी करना होगा। अगर कर्म न करोगे, पुरुषार्थी न बनोगे, तो अब जिन्दे भी नहीं रह सकोगे। अतः मैं आज से छः प्रकार की आजीविकायें आप लोगों के लिये निर्धारित करता हूं, जिससे समस्त विश्व के मानव समाज का जीवन सुखी हो सकेगा। वे छः प्रकार की आजीविकायें असि, मसि, कृषि, वाणिज्य, शिल्प और विद्या थी। ये छः प्रकार की आजीविकायें व्यवस्थित रूप से चले इनके लिये मानव समाज में तीन आजीविका के अनुरूप भेद कायम किये थे। क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र। ये तीन भेद उन्होंने वंश परम्परा के अनुरूप में नहीं किये। ये भेद किये कार्य के अनुरूप जो व्यक्ति अस्त्र शस्त्र के प्रयोग से सबकी रक्षा कर सकता था उसे क्षत्री संज्ञा दी, क्रय विक्रय करने वाले को वैश्य संज्ञा दी। और गांव जाकर व शिल्प कृषि आदि के द्वारा जीवन निर्वाह करने वाले को शूद्र संज्ञा दी। यह बटवारा मानव समाज का कार्य के आधार पर किया गया था। जो एक दूसरे के लिये सहयोगी का रूप था-भगवान ऋषभ मानवता वादी थे। इसलिये उन्होंने मानव-मानव में भेद पैदा करने वाली कोई व्यवस्था चालू नहीं की थी। इन व्यवस्थाओं को सबने माना और वे भोग भूमि के लोग अब कर्मयोगी बन गये। इस मार्ग से वे बड़े सुखी हुये। सबने इच्छानुसार आजीविका का मार्ग निकाल डाला। इसके बाद भगवान ऋषभ ने इनका सामाजिक ढांचा बनाया और इसके लिये नगर, ग्रामों का, पत्तनों का निर्माण किया और रहने के लिये मकानों का निर्माण कराया – अब वे जंगलों में रहने वाले लोग ग्राम, पत्तन, नगर और शहरों में रहने लगे।

भगवान ऋषभ ने सामाजिक जीवन के लिये कई नियम और उप नियम बनाये। उनमें वैवाहिक जीवन को भी प्रधानता दी और उन्होंने बतलाया कि इस जीवन के बिना हमारा मार्ग प्रशस्त नहीं बन सकता। इसलिये सर्व प्रथम भगवान ऋषभ ने स्वयं विवाह करके विवाह का मार्ग चलाया। भगवान ऋषभ के १०१ पुत्र थे और दो पुत्रियां थी। पहला पुत्र भरत था। वह इस युग का चक्रवर्ति सम्राट था। उस भरत के नाम से ही इस क्षेत्र का नाम भारत पड़ा जो आज भी इसी नाम से प्रसिद्ध है। सबसे अन्तिम पुत्र का नाम भी बाहुबली था। बाहुबली ने शासन नहीं किया। वे अध्यात्मयोगी महापुरुष बने और इस युग में सबसे पहले बाहुबली ने मुक्ति का मार्ग खोला।

तब जंगली जीवन होने से शिक्षा का पूर्णतः अभाव था। अतः भगवान ऋषभ ने शिक्षा प्रचार करना अनिवार्य समझा। पहले यह प्रचार अपने घर से आरंभ किया और वह भी महिला

समाज से। उन्होंने सबसे पहले अपनी दोनो पुत्रियो को बुलाया और उनमे ब्राह्मी नाम की पुत्री को अ और आ पढाना प्रारम्भ किया और दूसरी पुत्री को १ और दस पढाना प्रारम्भ किया'। इसलिये आज भारतीय वर्ण लिपि ब्राह्मी लिपि के नाम से प्रसिद्ध है। इसके बाद भगवान ऋषभ सामाजिक जीवन मे उतरे। और कई सामाजिक प्राणी बन गये तब इनके जीवन को सुखी बनाने के लिये भगवान ऋषभ ने इनको गृहस्थो के माग की शिक्षा दी और कहा कि बिना नतिक जीवन के विकास के तुम सुखी नही हो सकते। न तिक जीवन का मतलब है ईमानदारी, सतोष और सदाचार। इसके लिये उन्होंने पाच बातें बतलाई। सर्व प्राणी सम भाव, सत्य, अचोय-अपरिग्रह और ब्रह्मचय। ये गृहस्थ जीवन को सुखी बनाने के मार्ग हैं, इनसे प्राणियो मे मैत्री और समादर की भावना बढ़ेगी, अनाचार और कटुता का नाश होगा। इनके परिपालन से प्राणी मे अनैतिकता आवेगी ही नही। भगवान ऋषभ की इस आज्ञा को सबने माना। इससे उस वक्त का सामाजिक जीवन बहुत सु दर बन गया। भगवान ऋषभ ने भी सुख की सास ली और हजारो वर्षों तक लोक सेवा करते रहे। एक दिन वे विश्व कल्याण की दृष्टि से घर के बाहर निकल पडे – उन्होंने अपनी छोटी सी गृहस्थी से मु ह मोड लिया और वे सबके बनने के लिए स्त्री पुत्र माता पिता सबको छोडकर विशाल क्षेत्र मे कूद पडे। वे चाहते थे मैं विश्व सेवा करू लेकिन सबसे पहले स्वावलम्बी बनू। सबका होकर रहू। किसी के लिये भारभूत न रहू न मैं खाने के लिये किसी से मांगू और न शरीर सरक्षण के लिये कपडा। यह सोचकर ऋषभ ने आध्यात्मिक माग को ही अपने लिये चुना और वे योगिक जीवन मे उतर पडे क्योंकि इसके लिये आवश्यकता है आत्मिक शक्ति को बटोरने की जिसका सम्पादन यौगिक जीवन से ही हो सकता है। इस आत्म शक्ति के विकास के लिये वे एक मूल साधना मे उतर पडे। यह साधना सरल न थी, बडी बीहड थी लेकिन भगवान ऋषभ ने इसकी कोई परवाह न की। वे रहने लगे वन्य प्रदेशो मे नदियो के तटो पर, पवतो की चोटियो और पहाडो की कदराओ मे।

भगवान ऋषभ के साथ करीब एक हजार अन्य साथी भी इस योग पथ के पथिक बने थे लेकिन वे सफल न बन सके। भगवान ऋषभ ने एक हजार वष तक इस महान तपस्या के बल पर आत्मिक शक्ति को प्राप्त किया। उनका ज्ञान पूर्ण ज्ञान बना, उनका ज्ञान इतना पूर्ण बना कि वे सवज्ञ के नाम से प्रसिद्ध हो गये। इनके ज्ञान की ख्याति मृत्यु लोक से लेकर स्वर्ग लोक तक फली और वे सब इनके सभा स्थल पर आये। भगवान ऋषभ का सभा स्थान समवशरण के नाम से विख्यात था। यह समवशरण मानव के लिये ही नही प्राणि मात्र के लिये खुला हुआ था। भगवान ऋषभ सबके आकषण केन्द्र थे इसलिये उस स्थान पर पशु पक्षी भी दौडते हुये आते थे। उनके समवशरण मे भेदभाव, वगभेद, जाति भेद आदि को कोई स्थान नही था। उनके सिद्धात और उनका उपदेश प्राणिमात्र के लिये था। वह भी एक रूप था जो समानता के आधार पर बतलाये जाते थे। वहा राजा और रक, नीच और ऊ च की दृष्टि नही थी। वहा तो नैतिकता और आत्म विकास की शिक्षायें मिला करती थी। प्राणि मे बबरता और शोषण की भावना जागृत न हो इसके लिये उ होने अधिक से अधिक बल अहिंसा और अपरिग्रह को दिया। और इनके प्रचार के लिये ऐसे ही हजारो लाखो प्रचारको का सगठन कायम किया जो रात दिन इसी मे लगे रहते थे। लोग हठवादी न बन जायें व सदा सत्य को पहचानते रहें, इसके लिये उन्होंने अनेकान्त और स्यादवाद सिद्धात को भी ज म दिया। सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चरित्र इसकी कसौटी बतलाई।

भगवान ऋषभ इसके प्रसार के लिये लाखो वर्षों तक गाव २ और नगर २ मे विचरण करते रहे। विश्व के हर कोने मे उनके सिद्धात की पूर्ण गूज उठी। हर प्राणी ऋषभ का अनुयायी बना, सबने श्रद्धा से माना और विश्व के समस्त साहित्य ने उनको महात्मा के रूप मे देखा। इसीलिये भगवान ऋषभ युगपुरुष प्रजापति, आदिनाथ,ब्रह्मा शिव आदि अनेक नामो से सबोधित किये गये। सचमुच भगवान ऋषभ का युग सतयुग कहलाया। भगवान ऋषभ की यह सेवा ८३ लाख वर्ष पूर्व तक चलती रही। अन्त मे फिर उन्होने इस जीवन से विश्राम लिया, योगो का निरोध किया तथा कैलाश पर्वत से निर्वाण को प्राप्त किया। उन भगवान ऋषभ के अनुयायियो को व भारतीयो को उनके सिद्धातो पर ध्यान देकर अपने कर्तव्य का पालन करना चाहिये। क्योकि कर्त्तव्य ही धर्म और मानवता का नाम है। भगवान ऋषभ के सिद्धात यहा तक ही सीमित न रहे लेकिन हजारो लाखो वर्षो बाद भी जीवित रहे। भगवान महावीर ने भी उन्ही सिद्धातो का आधार लेकर मानवता का प्रसार किया जो जैन धर्म के नाम से आज प्रख्यात है।

—o—

☐ जो विवेकी जीव भावपूर्वक अर्हन्त को नमस्कार करता है, वह तुरन्त सब दुखो से मुक्त हो जाता है।

—जयधवला

☐ जो अनेक प्रकार की युक्तियो से तथा दुर्धर तप के द्वारा जिन शासन के माहात्म्य को प्रकाशित करता है, उसके निर्मल प्रभावान गुण होता है।

—कार्ति०

☐ जिनके केवलज्ञान रूपी उज्ज्वल दर्पण मे लोक अलोक प्रतिबिम्बित होते हैं, तथा जो विकसित कमल के गर्भ के समान समुज्ज्वल हैं, वे वीर भगवान जयवन्त हो।

—जयधवला

महामानव भगवान अजित एव सभव

तीर्थंकर जोवन की एक विशेषता रही है कि वे स्वय का विकास करे तथा विश्व के अन्य प्राणियो को विकास का माग वतलायें, भगवान अजीत और सभव का जीवन इस ही सिद्धान्त का प्रतिपादन करता हुआ, निर्वाणगामी हुआ ।

विश्व वद्य भगवान अजितनाथ और सभवनाथ का जीवन उतना उज्जवल और महत्वपूर्ण है जितना अन्य तीथकरो व विदेह क्षेत्र मे विराजमान तीथकर प्रभु सेमधर का। भगवान गुणभद्रा-चार्य रचित उत्तर पुराण मे दोनो ही तीथकरो का जीवन व चरित्र इतने सुन्दर ढग म चित्रित किया गया है जिसके अध्ययन से यह अनुभव होता है कि यह तीथकर पद महान साधना के बाद मिलता है। यह सुलभ नही अति कठिन है। क्योकि अनतानत वर्षो बाद मानव जीवन म यह एक बार मिलता है और मिलने के बाद वभव और सम्पदा के बीच रहते हुए भी ये महाप्रभु लक्ष्य पर डटे रहते हैं और अवसर मिलते ही लक्ष्य की पूर्ति के लिये धन, वभव सपदा और राज्यपाट को लात मारकर दिगम्बर वन जाते हैं। और एकात स्थलो मे जाकर समस्त विकल्पो को, कामनाओ और इच्छाओ को रोककर निर्विकारी जीवन की प्राप्ति के लिए साधक के रूप म अलौकिक साधना म इतन तल्लीन हो जाते हैं कि वे आत्मसात करके दिव्य ज्ञानी वन जाते हैं।

भगवान अजितनाथ और सभव भी ऐसे ही महाप्रभुओ म थे। इन दोनो तीथकरो की उत्पत्ति भी एक ही क्षेत्र पर वताई गई है, और इनकी मुक्ति एक ही स्थान पर हुई है। अयोध्या और श्रावस्ती नगरियो का यह सौभाग्य है कि उनमे ऐसे महात्माओ ने अपना वगम्प्रत्न म जन्म लिया और पवित्र पदरज से वह पवित्र हुई। इसी तरह मुक्तिधाम भी सम्मेदाचल है, अनादि से मुक्तिधाम रहा है। यहा से अनतानत साधको ने साधना की पूर्ति की है और आत्मा के अमर को प्राप्त कर अविनाशी स्थान को प्राप्त किया है। इन दोनो महाप्रभुओ के चरणो ज म य भी तीथ व महापुरुष जहा भी चरण धरते है वह भूमि पुण्य तो है लेकिन विश्व के लिये यह तीर्थ वन जाती है। और अगणित व्यक्ति उस पुण्य भूमि का स्पर्श करके परम पावन तीर्थ वन जाती है।

तीथकरो के जीवन म एक विशेषता रहती है। वे अपने आपको कोई महत्व नहीं देत। उनका एक ही लक्ष्य रहता है कि वे स्वय का विकास करें और विश्व के अन्य प्राणियो को विकास का माग वतलायें। इसी म वे अपने आपको पूण वना लेते हैं।

भगवान अजीतनाथ और सम्भवनाथ ने भी ऐसा किया है। कई वर्षों तक इनकी मूक साधना रही। इसके बाद वे आध्यात्मिक काय क्षेत्र म उभरे। विश्व का भ्रमण किया और छोटे से छोटे प्राणी को अपने सपक में लेकर उसको सुख के माग म लगाया।

इन महात्माओ के जीवन म हमें यह भी मिलता है कि इनके सभा स्थलो म महत्व प्राणी मात्र को था, इसलिये भगवान गुणभद्राचार्य न लिखा है कि असख्य तियच भी उनकी सभामा म जाते थे। और यदि उनके लिए विशेष रूप से सभा स्थल सुरक्षित रहता था। वास्तव मे यह एक अलौकिक उदारता की बात है जबकि आज के युग मे ही नही राम और कृष्ण के युग म भी साहित्य न आदमी को महत्व दिया है लेकिन पशु पक्षी को महत्व नहीं दिया। इन सभा स्थलो म इन महामानवो की दिव्य वाणी सिर्फ आदमी के लिये ही होती थी यह बिल्कुल नही था। ये महामानव मानवतावादी न होकर आत्मावादी थे।

इन्होंने कही भी आदमी की बात नहीं की। जहा भी इनकी दिव्य वाणी ने प्रकाश दिया वहा जीव व आत्मा मात्र की बात की। इसी का यह महात्म्य है कि तीथकरो ने जिन सिद्धान्त को जन्म दिया वे एक देशीय न होकर सावभौमिक सिद्धात मान गये और इन सिद्धातो से कीट और पतग जसे क्षुद्र प्राणियों को भी सहारा मिला। इनके सिद्धात बडे सरल और उच्च उदाराशय के थे।

भगवान अजीतनाथ और सभवनाथ की दिव्यवाणी मे अनेकात और स्याद्वाद का बडा गहरापुट था। इसका यही रहस्य था कि दोनों ही सत एकात पक्षग्रह और दुराग्रह से इस प्राणी को हटाना चाहते थे। इनको बिना छोडे प्राणी अपनी भूल का सशोधन भी नहीं कर सकता और न स्वय का निरीक्षण कर सकता है। अनेकात और स्याद्वाद सहयोगी अन्यतम मित्र हैं। जिनके समक्ष म आने वाला कोई भी प्राणी वस्तु स्थिति समझकर स्वय का बचाव कर सकता है और जीवन का विकास कर सकता है।

तीर्थंकर महाप्रभुओ के सामने सबसे बडा प्रश्न प्राणी विकास था, वे इतने अनत करूणावान महात्मा सन्त थे जो ससार के क्षुद्र प्राणी को भी दु खी सतप्त और आकुल नही देखना चाहते थे। और उन दोनो सिद्धातों के बल पर वे सफल हुए, उनके सिद्धातो को हजारो लाखा ने नहीं किन्तु असख्यों ने अपनाये और वे सिद्धात चिर जीवी बने।

अन्त म इन दोनो महाप्रभुओ ने लोक कल्याण के बाद स्वय की तरफ खिचाव दिया, योगो का निरोध करके सम्मेदाचल जसे परम पावन तीथ पर आत्माओ के चरणो मे लेखक की श्रद्धा पुन -पुन नत मस्तक।

—

तीर्थंकर भगवान सुमतिनाथजी

भगवान सुमतिनाथ ने अनेक जनकल्याणी उपदेश दिये-वे आत्मा का उत्कर्ष ऐश्वर्य और राज्यवैभव मे नहीं मानो-इनसे उनका पतन होता है। आत्मा का विकास यदि होगा तो अन्य अहिंसा के बल पर ही होगा—जिसने समता और शांति को प्राप्त कर लिया वही आत्मा परमात्मा कहलायेगी-अत सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह ही सार है।

इतिहास के पृष्ठो मे भगवान पार्श्वनाथ और महावीर का बराबर उल्लेख मिलता है। २२ वे तीथकर अरिष्ठनेमि का ऐतिहासिक उल्लेख भी मिल जाता है। लेकिन अन्य तीथ करो का पूर्णत नही है। पर यह निश्चित बात है कि मानव का इतिहास हजारो और लाखो वष पुराना है। और उसका अनुसधान जारी है। हडप्पा और मोहन जोदडो की खुदाई ने इतिहास को नई मोड दी है, उससे इतिहास आर्य सभ्यता को बहुत आगे खीच कर ले जाता है। इससे ज्ञात होता है कि पौराणिक काल का इतिहास काल्पनिक नही है वस्तुत वह प्रामाणिक है। अत भगवान सुमतिनाथ की उत्पत्ति सभव है। महावीर और पार्श्वनाथ की तरह उन्होने भी तीथ कर के रूप मे जन्म लेकर इस वसुधरा को पवित्र किया है।

महापुरुषो की उत्पत्ति के सबध मे विश्व के समस्त धर्मों का एक मत है। उनका जन्म ऐसे समय मे होता है जब विश्व के समस्त प्राणी अपनत्व को खो कर अज्ञानान्धकार म डूब जाते हैं। तब उन सबको प्रकाश देने के लिए इस वसुन्धरा पर कोई महान पुरुष अवतरित होता है। महापुरुष अव तार तीथकर पैगम्बर आदि विविध नामो से पुकारे जाते हैं। जन धम अवतार वाद को नही मानता। वह मानवतावादी धर्म है और ऐसे महापुरुषो को तीथकर का रूप देता है तीथकर स्वय अपना विकास करते हैं और उसके बाद विश्व के समस्त प्राणियो को विकास का मार्ग बतलाने का प्रयत्न करते हैं।

भगवान सुमतिनाथ की श्रेणी भी इन्ही महापुरुषो म आती है। भगवान अभिनन्दन की मुक्ति होने के बाद हजारो वर्ष बीत जाने पर भगवान सुमतिनाथ का जन्म अयोध्या नगरी म हुआ था। इनके पिता का नाम मेघरथ था और माता का नाम मगला। इनका जन्म अतुल वभव के बीच म हुआ था। इनके जीवन का पूर्ण वृतात पुराण ग्रन्थो मे बडे रोचक ढग से मिलता है। जिससे ज्ञात होता है कि सामान्य लोगो के जीवन की अपेक्षा तीथकर जीवन की अनेक विशेषताए होती हैं। जीवन का मापदण्ड इतना ऊ चा होता है कि इनके शैशवकाल मे भी बाल्य साथी स्वर्ग के देव ही हुआ करते हैं और वे इनके

ससर्ग मे रहकर अपने जीवन को सफल माना करते हैं। क्योंकि तीर्थकरो का जन्म ऐश्वर्य और भोग विलास के लिए नही होता। भगवान सुमतिनाथ के पिता बहुत बडे राजा थे, उनका राज्य भगवान सुमतिनाथ को भी मिला लेकिन वह उसको खीच नही सके। बहुत वर्षो तक राज्य शासन किया फिर इनको सब कुछ छोडकर लोक कल्याण के लिये बाहर आना पडा। जिस वक्त भगवान सुमतिनाथ सेवा का महान व्रत लेकर घर से बाहर निकले तब प्राणियो को इतनी खुशी हुई कि स्वर्ग और मृत्युलोक के प्राणी ही नही किन्तु पशु पक्षी भी इनके चरणो मे लोट पडे। भगवान सुमतिनाथ राजकीय महलो से निकल कर वन्य प्रदेशो मे गये और वहा एकात स्थान म बठकर साधना क्षेत्र म उतर गये। उनकी यह साधना मूक थी, लेकिन थी महान। इस साधना के बल पर भगवान सुमतिनाथ ने अनन्त आत्मज्ञान को प्राप्त किया और उसके साथ ही अनन्त ज्ञान शक्ति भी। जन शास्त्र अनन्त ज्ञान शक्ति को प्राप्ति आपको दिव्यदर्शी व केवल ज्ञान नाम से सबोधित करते हैं।

थोडे समय मे भगवान के इस दिव्य ज्ञान की ख्याति विश्व के कोने-कोने मे व्याप्त हो गयी इनकी सभाए भरने लगी। असख्य देवी देवता और मानव सुमतिनाथ पूर्ण अपरिग्रह और अहिसक थे। इनके चेहरे पर दिव्य आभा थी और शरीर के हर प्रदेश मे अहिसा की महान छटा छाई हुई थी। इसलिय जो भी इनकी सभाओ मे आता वह सुख और शाति की श्वास लेता।

सबसे बडी बात यह थी कि भगवान की सभा मे राजा और रक, नीच और ऊ च का कोई भेद भाव नही था। वहा तो सबको एक ही स्थान था। क्योकि भगवान सुमतिनाथ उच्च विचारो के महा मानव थे वे सबके भले की बात कहते थे। उनके विचारो मे अहमकल्पना नही थी। उनके विचार और सिद्धात बडे उदार थे। वे मनुष्य के लिये हितकारी थे, उनके व्याख्यानो मे कर्ता-धर्ता की बातें नही चला करती थी। न वे कभी यह कहते थे कि मैं सब शक्तिदायक हू। वे तो हर आत्मा के विकास, प्राणी के विकास की बातें कहा करते थे। वे कहते थे कि आत्मा का उत्कर्ष, ऐश्वर्य और राज्य वभव मे नही है। इनसे उनका पतन होता है। आत्मा का विकास यदि होगा तो अन्य अहिसा के बल पर ही होगा जिसने समता और शान्ति को प्राप्त कर लिया वही आत्मा परमात्मा कहलायेगा – परमात्मा बनने के लिये उन्होंने सत्य और अहिसा के साथ अपरिग्रह का भी महत्व बतलाया।

भगवान सुमतिनाथ ने उन्ही सिद्धांतो पर जोर दिया, जिनका प्रचार पहले भगवान ऋषभ देव ने किया था क्योकि तीर्थंकरो का मार्ग एक ही होता है, तो अन्य तीर्थंकर उन्ही सिद्धातो को जन जीवन तक पहु चाने का प्रयत्न करते हैं। क्योकि धर्म के सिद्धात बदलते नही वे सार्वभौम होते हैं। भगवान सुमतिनाथ ने इन सिद्धातो का प्रचार करने के लिए अगदेश, बगदेश कलिग काशी मालव, मल्य, नेपाल, तुरक, काश्मीर व कर्णाटक, गुजरात इत्यादि सब प्रदेशो म विहार किया। इसके बाद भगवान सुमतिनाथ ने योगो का विरोध किया और भारत विख्यात सम्मेद शिखर पहाड के शिखर पर बठकर आत्म लाभ लेकर निर्वाण पद प्राप्त किया। भगवान सुमतिनाथ के सिद्धात आज भी जीवित हैं। भारत के कोने कोने में उनके स्मृति के चिन्ह, उनकी भव्य मूर्तिया और मन्दिर व्याप्त हैं जिनकी श्रद्धा की दृष्टि से लाखो प्राणी अर्चना और आराधना करते है। ऐसे महापुरुष के पावन चरणो मे श्रद्धाजलि अर्पित करना लेखक भी अपना परम कर्त्तव्य समझता है।

तीर्थंकर शीतलनाथ भगवान

जब-जब भी किसी पुण्य आत्मा का जन्म होता है-पृथ्वी पर सवत्र खुशियां छा जाती हैं। भगवान शीतल ने इस भारत भूमि पर जन्म लेकर अपना स्वय के जीवन का अनुभाग लोक कल्याण और आत्म विश्वास प्राप्त कर जिस सुन्दर ढग से हमे उपदेश दिया वह उस समय तो अनुकरणीय होगा, आज भी है।

समय समय पर महापुरुषो का जन्म होता है और वे अपने अपने समय मे सतप्त व दु खित प्राणियो को मागदशन देकर आत्म विकास किया करते है। यह परम्परा आज की नही किन्तु भारतीय सस्कृति मे अनादि की है। तीथकर भगवान शीतलनाथ भी इन्ही महापुरुषो मे से एक है। जन मान्यता नुसार चौबीस तीथकरो मे से दसवें तीथकर है और भगवान ऋषभ की तरह इनका भी जीवन का बहुभाग लोक कल्याण और आत्म विश्वास मे ही गया—इनका जन्म आज से हजारो लाखो वष पहले इस भारत भूमि पर हुआ है, जिसको हम पौराणिक काल कहते हैं। इनके पिता का नाम दशरथ था और माता का नाम सुनदा। राजा दशरथ अनेक देशो का शासक था, जिनकी मूल राजधानी भद्रपुर मे थी। इसी नगर मे भगवान शीतलनाथ का जन्म हुआ था। राजा दशरथ ने शीतलनाथ के जन्म के समय इतनी धनराशि गरीबो को दानरूप मे दी थी कि उस समय एक भी भिखारी नही रहा। भगवान शीतलनाथ एक विशेष सातिशय महापुरुष थे जिनके जन्म से ही मानव म ही नही किन्तु आस पास के अन्य लोको मे भी खुशिया मनाई गई थी और दुखी से दुखी प्राणी ने भी एक समय के लिये सुख की सास ली थी। इससे ज्ञात होता है कि भगवान शीतलनाथ एक असाधारण प्रतिभा व व्यक्तित्व रखने वाले महान आत्मा थे। वर्ग के देव यानी उच्च वभव के प्राणी भी उनके सपर्क मे रहने मे अपना गौरव अनुभव करते थे। इसलिये वे बालपन से ही भगवान शीतल के साथी रहे और उनके साथ विधिवत् रूप से क्रीडायें करते रहे। वह जन्म से अवधिज्ञानी थे।

युवावस्था मे भगवान शीतल ने अपने आपको रमाने का प्रयत्न नही किया। उनका ज्ञान अन्तमु खी था। यह ज्ञान जीवन का विश्लेषण करना जानता था। इसलिए वे सुखो को भोगते हुए यह

समझा करते थे कि इनसे जीवन आगे नहीं बढ सकता है। यह विचारधारा उनकी दृढ थी। इसी के बल पर वे एक साधक के रूप मे युवावस्था मे रहे और इन विचारो के बल से भगवान शीतलनाथ का जीवन निखर पडा। ससार की कोई बुराई उनके पास नहीं आ सकी। विश्व के समस्त सद्गुणो ने उनका आश्रय लिया और वे उनसे दमक उठे।

पिता अपने पुत्र के गुणो पर मुग्ध था। एक दिन राजा दशरथ ने अपने राज्य का भार शीतलनाथ के कधो पर डाला और स्वय इस भार से मुक्त हो गये। शीतलनाथ की बुद्धि चतुर्मुखि बुद्धि थी। उन्होंने शासक भार को बहुत ही कुशलता के साथ सभाला। थोडे ही दिनो म सारी प्रजा इन की इस योग्यता की तारीफ करने लगी। प्रजा के लिये भगवान शीतलनाथ की शिक्षायें कानून के रूप म नहीं, बल्कि प्रेम के प्रसाद रूप म थी, इससे समस्त प्रजा म नये जीवन का सचार हुआ, और वह हर तरह से सुखी हो गई। अहिंसा उनकी राजनीति का आधार था। एक दिन शीतलनाथ घूमने क लिए वन खण्ड म गये। हिम ऋतु का समय था। बादल छाये और छाने के तुरन्त बाद वे विलीन हो गये। मेघो के इस परिवर्तन ने उनको हठात् बेचैन कर डाला। वे सोचने लगे, मेघ पटल की तरह क्या मेरा जीवन भी एक दिन यो ही विलीन हो जायगा। अत आत्मा ने जवाब दिया कि शीतलनाथ! वैभव, सपत्ति, आयु व शरीर इसी तरह एक दिन खत्म होंगे। प्राणी व्यर्थ मे इनको अपना मानकर आत्मिक शांति का खत्म करता है। हजारो वर्षों तक भोग और राज्य तूने भोगा लेकिन फिर भी तुझको अतर की शांति नही मिली। फिर इनसे क्या लाभ, व आध्यात्मिक शांति प्राप्त करली है तो इनसे अलग होना अनिवार्य है। यह सोचकर शीतलनाथ ने अपने पुत्र को राज्यभार सौंपा और वे लोक कल्याण व स्वकल्याण के लिए राज्य वैभव त्यागकर वन की तरफ प्रस्थान कर गये, उस वक्त हजारो लोग शीतलनाथ के सग मे गये।

उनके व्यक्तित्व और कर्तव्य से प्रभावित अनेक लोगो ने भी इनके मार्ग को ग्रहण किया। अब भगवान शीतलनाथ तो एक क्षण पहले बडे भारी सम्राट थे वे अब दिगबर भेष को धारण करके मगन बन गये। अब न शरीर पर कोई कपडा है और न आभूषण, जगल उनका महल था, वन के प्राणी उनके साथी थे। जमीन उनके बिस्तर थे और आकाश उनका चादर था। माघ बुदी १२ के दिन उन्होंने अपने जीवन को बदल डाला। साथ मे अन्य एक हजार राजाओ ने भी। दीक्षा के बाद दो दिन तक भगवान निराहार रहे। तीसरे दिन उन्होंने अरिष्टपुर नगर में आहार लिया इसके बाद तीन वर्ष तक घोर साधना मे तल्लीन होकर अपने अनुभव और ज्ञान को बढाया—कर्तव्य का बोध किया। उत्थान और पतन की बातें सोची। अगली आवश्यकता को पहचाना और अपने ज्ञान को इस रूप में ढाला कि अब मैं अधिकार के साथ विश्व को मार्गदर्शन देने के योग्य हू। इनके इस ज्ञान की महिमा सब साधारण म फलते फलते स्वर्ग तक पहुच गई और ज्ञान के जिज्ञासु लोग चारो तरफ से उमड पडे। बुद्धिमान लोगो ने एक विशाल सभा स्थल का निर्माण किया जिसके ठीक बीच मे भगवान विराजमान हो गये। भगवान इस ढग से विराजमान थे कि हर श्रोता उनके मुह को देख सकता था। भगवान शीतलनाथ के प्रमुख 81 श्रोता थे, जो उद्भट विद्वान थे। इस सभा स्थल म १२ प्रकार के प्राणी बैठकर आत्मलाभ की बातें सुन सकते थे। भगवान शीतलनाथ

के विचार बड़े उदार थे। सर्वप्राणी हित की उनमें भावना थी। अत आत्मज्ञान प्राप्त करने के बाद उनके विचार मे एक ही बात थी कि म सब प्राणी समभाव की शिक्षा का प्रचार ससार मे फलाऊ। इसलिए सबसे पहले भगवान शीतल ने पारस्परिक भेदभाव, ऊच नीच की भावना, वर्ण और जाति का तूफान खत्म करने के लिए यह घोषणा की कि ससार के समस्त प्राणी एक है—सबकी एक शक्ति है न कोई राजा है और न रक। यह एक विडवना है। इनसे आत्मा का विकास नही होता सघन होता है। आत्मा एक स्वतन्त्र पदार्थ है जो ज्ञान और दर्शन का पुज है। और साथ मे अनत सुख और अनत वीर्य का धारी है जिसकी तरफ हमारा ध्यान होना जरुरी है। यदि हम स्वशक्ति को नही अपनायेंगे तो विरोधी शक्तिया आत्मा पर हावी होकर उसको कमजोर करने का प्रयत्न करेंगी। इन विरोधी शक्तियो के कारण अज्ञान और मोह ने परिभ्रमण कराया और इस प्राणी के स्वरूप को भूलकर फलस्वरूप मे अपन आप को योग्य किया। भगवान शीतलनाथ की यह घोषणा सर्वप्राणि हितकर थी अत उनकी सभा मे हजारो प्राणी एकत्रित होकर उनकी वाणी सुनने लगे। भगवान शीतल ने आत्मा सबधी निर्देश देने के बाद अपरिग्रह और कर्मवाद पर भी जोर दिया जिससे प्राणियो की आत्मा पर रहने वाली मोह की कडिया ढीली पडी, लोगो मे समता की तरह भावनाएँ दौडी, त्याग, सयम और साधना की तरफ लोगो का ध्यान गया, पशु और पक्षी भी आगे बढे, उन्होने भी ज्ञान की बातो से जीवन मे आचार लाने का प्रयत्न किया। ऐसा ग्रथो मे मिलता है। भगवान शीतल की सभा मे हजारो साधु थे, लाखो श्रावक श्राविकाए थी, और असख्य पशु पक्षी थे। वास्तव मे यह एक दृश्य कितना भव्य होगा जो धर्म का साक्षात् स्वरूप था। भगवान शीतल ने हजारो वर्षो तक विभिन्न देशो मे विहार किया, प्राणियो का उत्थान किया, अन्त म इन सब से अलग होकर सम्मेद जसे महान पवत पर ध्यानारूढ होकर एक महिने के लिये एकात वास लेकर योग का निरोध किया व आसोज शुक्ला अष्टमी को आत्म लाभ लेकर मुक्ति पधारे।

भगवान शीतल की वे शिक्षायें आज भी हमे मानवता प्राप्त करने के लिये मूक रूप से आत्मज्ञान की बातें बतला रही है, उनका लोक कल्याणकारी सदेश आज भी जीवित है। सतो की वाणी उनका ज्ञान हजारो लाखो वर्षों तक प्रेरणा देती रही है। ऐसे महान सन्तो व युग तीर्थंकर भगवान मे श्रद्धाजली अर्पित करता हुआ निवेदन करता हूँ कि हम सब उनकी शिक्षाएँ जीवन मे उतारने का प्रयत्न करें।

—o—

आदि तीर्थंकर ऋषभदेव और अन्तिम वर्द्धमान को नमस्कार करके दर्शन मार्ग को यथाक्रम से सक्षेप मे कहूँगा।

—दसणपाहुड

परम पूज्य भगवान धर्मनाथ

भगवान धर्मनाथ ने विश्व को बताया सत् शिक्षाओं के बल पर मानवता प्राप्त करो। सच्ची मानवता ही वह धर्म है जो हमें अहंकार और मोह छोड़ने को कहती है। मानवता से ही अन्याय और पर-शोषण समाप्त होता है। संयम, साधना, त्याग और तपस्या मानवता प्राप्त करने से ही की जाती है।

परम पूज्य विश्ववंद्य भगवान धर्मनाथ का जन्म इस भूतल पर लाखों वर्ष पहले हुआ था। ऐसा जैन पौराणिक ग्रन्थों में उल्लेख है। यह बात आज के इतिहास से परे है। क्योंकि आज का इतिहास इतनी लम्बाई तक नहीं पहुंच सकता। लेकिन यह निश्चित है कि समय-समय पर ऐसे महापुरुष होते आये हैं और जब तक संसार है तब तक स्वात्म कल्याण और पर कल्याण के लिए उत्पन्न होते रहेंगे। यह परम्परा आज की नहीं अनादि की है। जैन धर्म की मान्यतानुसार भगवान धर्मनाथ 15 वें तीर्थंकर हैं। इनका जन्म भगवान अनंतनाथ के 4 सागर आधापल्य जाने के बाद हुआ। धर्मनाथ का जन्म रत्नपुरी नगरी में हुआ। कुरुवंशियों का मालिक कश्यप गोत्री महाराज भानु इनके पिता थे और महारानी सुप्रभा इनकी माता थी। पूर्व जन्म में धर्मनाथ का जीव एक बड़ा भारी सम्राट था जिनको चन्द्र ग्रहण को देखकर वैराग्य हो गया था। ज्ञान और वैराग्य के बल पर उनको आत्मज्ञान हुआ और उन्होंने एक निश्चय किया कि मैं ऐसे जीवन को प्राप्त करूं जिस जीवन में जाने के बाद विश्व के प्राणियों की सेवा कर सकूं। इस संकल्प को पूरा करने के लिए उन्होंने सोलह कारण भावनाओं का चिन्तन किया और उन्हीं के बल पर वे सर्वार्थ सिद्धि में जाकर महान दिव्य देह को धारण करने वाले अहमिन्द्र जाति के देवता हुए। और वहां से चलकर माघ कृष्ण १३ को भगवान धर्मनाथ के नाम से प्रसिद्ध हुए। जन्म के पहले इनकी माता ने सोलह स्वप्न देखे थे। इनके गर्भ के समय में स्वर्ग की देवियां आकर गर्भ शोधना करती थीं और माता के सामीप्य में रहकर उत्तम ढंग से धार्मिक चर्चायें करके माता के विचारों को पवित्र और शुद्ध रखने का प्रयत्न करती थीं जिससे उत्पन्न होने वाले शिशु के शरीर और मानस का निर्माण उत्तम से उत्तम तरीके से हो क्योंकि माता के विचारों और संस्कारों का प्रभाव गर्भस्थ बालक पर अवश्य होता है। इनके जन्म से माता और पिता

को ही खुशी नही हुई लेकिन स्वग और नक मे रहने वाले प्राणियो ने भी वही खुशी मनाई। स्वग के देवता तो उसी समय पृथ्वी पर आये और माता के पास से बालक को लेकर सुमेर पवत पर जाकर जन्म का उत्सव मनाया। भगवान का शरीर तपे सोने के समान पीत वण का था। रूप इतना सुन्दर था कि इन्द्र जसे अमरनाथ को भी एक हजार ने रूप को निरखने के लिये बनाने पडे फिर भी वह तृप्त नही हो सका।

अनतनाथ स्वामी के निर्वाण के बाद धम का बहुत समय तक विच्छेद हो चुका था, उसी को दूर करन क लिये इस महान आत्मा का जन्म हुआ था। अत सब पृथ्वी पर इन्द्र ने इनका नाम धमनाथ घोषित किया। इनकी आयु 10 लाख वप की थी और साढे पैंतालीस धनुष ऊचा इनका शरीर था। बाल्यकाल के अढाई लाख वप जाने के बाद इनको राज्य भार मिला। लेकिन इतना विशाल वभव पाने के बाद भी धमनाथ का मन उधर आकर्षित नही हो सका। अत उन्होने कभी भी इस वभव को अपना नही माना और न कभी यह अनुभव किया कि इस विशाल राज्य का मै एक बहुत बडा सम्राट हू। अत प्रजा के साथ भी इनका सबध पिता और पुत्र तुल्य रहा। दण्ड देने योग्य व्यक्तियो के लिये भी क्षमा की भावना रही। हृदय परिवतन ही उनके लिये एक बडा प्रायश्चित्त व दण्ड माना गया। इससे धमनाथ की कीर्ति सारे भूमण्डल पर फल गई। धमनाथ ने ५ लाख वर्ष तक राज्य शासन किया फिर भी वे अलिप्त-से बने रहे।

एक दिन भगवान धमनाथ ने उल्कापात होता हुआ देखा और उस उल्कापात ने इनके मानस मे एक बहुत बडी हलचल पदा कर दी। आप विचारने लगे उल्कापात की भाति मेरा भी जीवन अस्थिर है। अत मुझे राज्य वभव आदि सब बधनो से अलग होकर धम और राष्ट्र हिताथ फिर कदम उठाना चाहिये। उनके समय धर्म की अवनति हो गई थी। प्राणियो म आध्यात्मिक शक्ति नही थी। सब विपयगामी बनकर अनात्महित के कार्यो मे फसे हुए थे। इस स्थिति के प्रति वह सजग थे। अत उन्होने यही तय किया कि अब मुझे घर पर नही रहना, एकात प्रदेश म जाकर यह तप करना है कि विश्व के इन प्राणियो का और मेरा हित कसे हो? प्रभु के इन विचारो का समथन देव, मनुष्य सबने किया। वे असख्य देवी-देवता, राजा और प्रजा के साथ वन गये। स्वच्छ और पवित्र जीवन बिताने के लिये उन्होने मुनि दीक्षा ग्रहण की। निरन्तर साधना से उनका ज्ञान निमल हो गया। उनको मन पर्यायज्ञान की प्राप्ति हो गई। उनका प्रथम आहार पाटलीपुत्र के राजा धनसेन के यहा हुआ। सयम और त्याग से मन को ही काबू नही किया किन्तु शरीर और इन्द्रियो को भी वश मे कर डाला, वे केवलज्ञानी बन गये। उनके ज्ञान की बात चारो तरफ फूट पडी। इन्द्र ने उसी समय कुबेर को आज्ञा दी कि मध्य लोक मे एक विशाल सभा सदन की रचना करो जिसमे असख्य प्राणी बैठकर धमनाथ की दिव्यवाणी सुन सकें। कुबेर ने ऐसा ही किया धमनाथ समवशरण मे जा विराजे। उनकी वाणी को सुनने के लिए स्वर्ग से देव-देविया और मृत्यु-लोक से समस्त प्राणी जिनमे मूक पशु भी शरीक हैं, दौड पडे। समवशरण मे इतना सुन्दर समन्वय था कि वहा मानव-मानव मे ही नही किन्तु पशुपक्षी तक मे कोई भेदभाव नही था क्योकि महापुरुष सबके होते हैं और उनकी शिक्षायें सवप्राणि हितकर होती हैं। भगवान धमनाथ की शिक्षायें जीवन को आगे बढाने मे मूल प्रेरणा थी। उनमे अहिंसा

और अपरिग्रह की प्रधानता थी। उनका एक ही कहना था कि सत्शिक्षाओं के बल पर मानवता प्राप्त करो। सच्ची मानवता ही धर्म है जो हमें अहंकार और मोह को छोड़ने को कहती है। मानवता में अन्याय और परशोषण खत्म होता है। संयम, साधना, त्याग और तपस्या मानवता प्राप्त करने के लिए ही की जाती हैं। मानवता से आत्मा में कोई बुराई नहीं आती। नई बुराई नहीं आने से पुरानी बुराई खत्म हो जाती है। सोई आत्मा ही उठती है और ऊंचा उठा हुआ आत्मा ही परमात्मा बन जाता है। इसके लिये हम सबको प्रयत्न करना है। पूर्णतः बुराइयों से छूट जाना यही मुक्तिदशा कहलाता है।

भगवान की ये शिक्षायें बड़ी सीधी और सरल थी। इनके ४३ गणधर थे। भगवान की शिक्षायें साधु व गृहस्थों के लिए भिन्न भिन्न थीं जिनका उद्देश्य आत्मा को पवित्र करना था। आत्म निरीक्षण पर आपने विशेष बल दिया। मानवता के प्रसार के लिये आपने आर्य खण्ड में धर्म विहार किया। अनेक आपके शिष्य बने। देश और राष्ट्र में नवजीवन नई क्रांति आई। वह क्रांति आत्मा की विशुद्ध शक्ति से सम्बन्ध रखती थी। इसलिये वह आध्यात्मिक क्रांति कही गई। इस क्रांति से सारे विश्व में भाईचारा, प्रेम और वात्सल्य का प्रचार हुआ। अन्त में भगवान धर्मनाथ जेष्ठ शुक्ला चतुर्थी की रात्रि को सम्मेदाचल से मोक्ष सिधारे। आध्यात्मिकता प्राप्त करने के लिये बड़ी भक्ति के साथ भगवान धर्मनाथ की पूजा की जाती है। उन्हें मेरी हार्दिक श्रद्धाजलि है।

—०—

☐ जो सब प्राणियों को अभय रहित करने वाले हैं, वीर हैं जिनों में श्रेष्ठ हैं तथा राग-द्वेष और भय से रहित हैं, वे भगवान महावीर धर्मतीर्थ का प्रवर्तन करने वाले हैं। —जयधवला

☐ जो सुर-असुर, मनुष्य और इन्द्रों से पूजित हैं, तथा जिन्होंने घाति-कर्म-मल को नष्ट कर धो दिया है, उन धर्म तीर्थ के प्रवर्तक वर्द्धमान (महावीर) को प्रणाम करता हूं (१)

—प्रवचनसार

भगवान शान्तिनाथ

महान परमात्मा एव जगत उद्धारक भगवान शातिनाथ ने अनेक कल्याणकारी उपदेशो के साथ साथ अहिंसा को जीवन मे शाति का दाता और अपरिग्रह को तृष्णा का नाश करके साम्य भाव सन्तोष भाव पैदा करने वाला बताया। आपने धर्म का स्वरूप निज स्वरूप को पहिचानने वाला माना और उसके लिये कहा-बुराइयो से बचो और अच्छाइयो को ग्रहण करो।

भगवान शान्तिनाथ इतिहास परे के महापुरुष माने जाते हैं फिर भी यह निश्चित है कि वह एक महान् क्रान्तिकारी युग प्रवर्तक ससार को नई दिशा बतलाने वाल महान् आध्यात्मिक सत थे। उनकी पूर्व जन्म की व वर्तमान जीवन की कथाओ म त्याग, सयम और साधना का अद्भुत वर्णन मिलता है जिनस अनुभव होता है कि राज्य प्रासादा व स्वर्गीय वभव के बीच पलने वाले सुकोमल राजकुमारो न किस तरह वभव को ठुकराया और अन्य कल्याण तथा लोक कल्याण के लिए किस तरह अपन समस्त जीवन का अर्पित किया। भगवान् शातिनाथ का जन्म हस्तिनापुर नगर मे हुआ था जिसके कारण उस नगर म कोई दु:खी न रहा। इतना ही नही बल्कि स्वग और नक मे भी आनन्द की भेरी बज उठी। स्वग का वातावरण और नक के वातावरण म भी एक समय के लिये महान परिवतन हो गया और स्वर्गीय देवता व इन्द्र नगर म आकर ही जन्म का उत्सव नही करते लेकिन विदेह क्षेत्रस्थ सुमेरू पवत पर ले जाकर जन्मोत्सव मनाकर शिशु का अभिषेक करते हैं, नृत्य करते हैं एक हजार आठ नाम से इन्द्र भगवान का स्तवन करके "शातिनाथ" ऐसा नाम घोषित करते हैं। भगवान का सौंदय निरखने के लिए इन्द्र एक हजार नेत्रो की रचना करता है, फिर भी वह तृप्त नही होता उनका इतना अनुपम सौंदय होता है। भगवान के जीवन का निर्माण उत्तम से उत्तम तरीके से हो इसके लिये उनके साथ क्रीडा करन के लिये देव बालको को इन्द्र छोडकर चला जाता है और बालक जीवन से युवावस्था मे आने के बाद योग्य कन्या के साथ विवाह कराया जाता है। यह जीवन एक हजार वर्ष तक रहा, जिसको कौमार्य काल बतलाया गया है। भगवान को योग्य देखकर पिता इन पर राज्य का भार डालते हैं और वे आत्मकल्याण के लिये घर से निकलकर दीक्षित हो जाते हैं। पिता के दीक्षित होने के बाद शातिनाथ ने बहुत ही योग्यता के साथ शासन भार सभाला। इनके एक चक्रायुध नाम का छोटा भाई था। उसने राज्य शासन में बहुत सहयोग दिया। भगवान शातिनाथ ने शासन तो किया लेकिन

प्रजा के साथ उनका व्यवहार शासक की तरह नही रहा। इन्होंने पुत्रवत् प्रजा का परिपालन किया। इनका राज्य वढता गया। वडे वडे राजाओ ने इनके सरक्षण म रहने मे अपनी भलाई मानी। ऐसे राजा इनकी शरण म वत्तीस हजार थे। भगवान शातिनाथ का शासन समस्त भारत क्षेत्र मे फला। अत वे चक्रवर्ती सम्राट कहलाये। इतना वडा राज्य पा करके वे भी सुख का अनुभव नही कर सके। वे हमेशा सोचा करते थे कि क्या इस वभव से आत्म शाति व जीवन का उच्च विकास हो सकता है। अन्तरात्मा उनको जवाव देती कि अभी दूर है। इस तरह ही विचार तरग हमेशा उठा करती थी। एक दिन वे दर्पण म मुख देख रहे थे। देखते देखते एक दूसरा मु ह उनको सामने दिखलाई दिया जिसने पूर्व जन्म की स्मृति ताजा कर दी। उस स्मृति मे वह जीवन सामने आया जिस जीवन मे तीथकर वने थे। भगवान शातिनाथ के विचारो मे हलचल पैदा हो गई। वे सोचने लगे शातिनाथ अव आत्महित क लिए कदम वढा। इन भोगों से और राज्य भार स जीवन का भार वढेगा, यह सुख का मार्ग नही। सुख का माग आध्यात्मिक माग है। जिस जीवन मे जाने के वाद यह आत्मा ज म मरण के व धन से भी मुक्त हो सकता है। अव मुझे इस जीवन मे क्षण भर नही रहना। ये सोचते सोचत शातिनाथ के हृदय म वराग्य उमड पडा और वे घर से वाहर निकल पडे। इनके इन विचारो का स्वागत करने के लिये नगर के नर नारी स्वर्ग के देवी और देवता भी उमड पडे। सव ने जय जयकार किया वे वन म आकर दीक्षित हो गये। भगवान के साथ एक हजार राजाओ न भी दीक्षा ली। दीक्षा लेने के वाद भगवान शातिनाथ ने सोचा मुझे अव ऐसे जीवन का निमाण करना है जिससे मैं स्वय भी ऊ चा उठ सकता हू और विश्व के प्राणियो का योग्य मार्ग देकर उनको भी ऊ चा उठा सकता हू। इस के लिए मुझे अहिंसा और अपरिग्रह की जीवन मे पूर्ण साधना करनी है। इनके सहारे के विना जीवन आगे नहीं वढ सकता। अहिंसा जीवन मे शाति लाती है और अपरिग्रह तृष्णा का नाश करके साम्य भाव सतोष भाव पदा करती है। इन दोनो की साधना के लिये भगवान शा तिनाथ वीर योद्धा की तरह तपश्चर्या की भूमि पर उतर पडे। वोलना वद कर दिया। १६ वष तक भगवान् की यह मूक साधना रही। इस साधना मे अहिंसा और अपरिग्रह को जीवन मे जगा डाला। इससे विचारो को वल मिला, मन का केन्द्रीयकरण हुआ। विकृतिया निकली, काम को जीता, क्रोध, मान, माया और लोभ को निकाल फेंका। ज्ञान मे इतनी विशदता आई कि वे त्रिकाल दर्शी वन गये। वे केवलज्ञानी कहलाये। यह उनकी एक महान सफलता थी। क्योकि निज स्वरूप की प्राप्ति लक्ष्य था वह यहा आकर पूण हो गया। अव भगवान को लोक कल्याण के लिए आगे वढना था। अत इन्द्र ने एक विशाल सभा स्थल का निर्माण किया। जन ग्रन्थो म इसका नाम समवशरण के नाम से वतलाया है। इसकी रचना इन्द्र कुवेर से करवाता है। इस सभा स्थल मे वारह सभायें थी जिनमे हजारो लाखो मनुष्य तो जाते ही थे किन्तु स्वर्गों के देवी देवता और पशु पक्षी तक भी वहा जाकर वैठा करते थे। इन्द्र ने इस सभा स्थल मे ऊ च और नीच का भाव नही रखा था। वह महापुरुषो के वठने का एक स्थान था जिनके चरणो मे वठकर ससार का हर प्राणी अपने विकास की वात सुन सकता था या सीखता था। भगवान शातिनाथ का सदेश लोक कल्याण कारी सदेश था। वह राष्ट्र धम समाज और आत्मा के विकास से सम्बन्ध रखने वाला था। उनके सदेश म मानवता की व जीवन विकास की सच्ची शिक्षायें थी। उन्होंने धर्म का स्वरूप निज स्वरूप को पहचानने वाला वताया था। निज स्वरूप की प्राप्ति के लिए यही वतलाया कि वुराइयो

मे बचो और अच्छाइयो को ग्रहण करो। विकृति मे विकार है जिनका सम्बन्ध हिंसा और तृष्णा से है। इनमे उलझने के बाद प्राणी निजस्वरूप को भूलकर हमेशा के लिए दु खी बन जाता है जिसकी आत्मा मे अहिंसा है वह स्वरक्षण भी कर सकता है और पर रक्षण भी कर सकता है। अत उन्होने कहा कि आचार मे अहिंसा और विचार मे अनेकात को जो अपना लेगा वही जीवन मे सुखी हो सकता है और यही सच्चा धम है । शातिनाथ भगवान की भाषा ऐसी भाषा थी जिसको सर्व प्राणी सरलता से समझ सकते थे। भगवान शातिनाथ ने हजारो साल तक लोक कल्याण के लिए विचरण किया अन्त मे जेठ वदी १४ को परमपूज्य सिद्ध क्षेत्र सम्मेद शिखर से निर्वाण प्राप्त कर पचम गति को प्राप्त हुए। ऐसे महान् परमात्मा एव जगत उद्धारक शातिनाथ के पावन चरणो मे श्रद्धा के पुष्प अपण करता हुआ निवेदन करता हू कि भगवान शातिनाथ के उन पावन सदेशो को आज भी हम जीवन मे उतार कर लोक कल्याण के लिये उनका प्रचार करें । आज भी विश्व मे उनके सदेश की आवश्यकता है । उन्ही के उपदेश राष्ट्रो को युद्धकीय हिंसा की घोर ज्वाला से बचा सकते है ।

—०—

☐ विशाल नयन, रक्त कमल के समान कोमल चरण वाले भगवान महावीर को मन, वाणी और शरीर से प्रणाम करके शीलगुणो को कहूगा।

—शीलपाहुड

☐ जन्म-मरण के भय से रहित सिद्धो को मन, वचन शरीर से नमस्कार करके तीनो लोको के गुरु जिनवरेन्द्र महावीर की वन्दना करता हू।

—पन्नवणासूत्र

☐ जन्म-मरण के दु ख तथा अठारह दोषो से रहित भगवान महावीर को सुख की अविनश्वर प्राप्ति के लिए वन्दना करता हू।

—चन्द्रप्रज्ञप्ति

भगवान पार्श्वनाथ

संग्रह पाप यह एक ऐसी तृष्णा है जिसमें शोषण और परपीडन को स्थान है। जहां परपीडन और शोषण हैं वहां धर्म नहीं अधर्म है। ऐसी ही अनेक महान शिक्षाओं के लिये मनुष्य भगवान पार्श्वनाथ का ऋणी रहेगा।

भगवान पार्श्वनाथ एक ऐतिहासिक महापुरुष थे। इनका जन्म भगवान महावीर के २५० वर्ष पहले बनारस नगरी में हुआ था। इनका जीवन अन्य तीर्थंकरों की अपेक्षा महत्वपूर्ण ही नहीं किन्तु क्रान्तिकारी भी था। इनके जीवन की साधना महान थी। इनका लालन पालन एक विशाल वैभव के बीच में हुआ था, फिर भी इनकी आत्मा पर वैभव का कोई असर न था। इनकी विचार धारा विशुद्ध वैभव और संपत्ति से विपरीत थी उन्होंने वैभव को विषधर के विष से भी भयंकर माना था। वे हमेशा विचार करते थे कि जीवन का उद्देश्य भोग विलास ही है या इससे भी कुछ ऊपर। इन सबका विचार करने के लिए एकांत स्थान में ही बैठा करते थे और सोचा करते थे जीवन के विकास के सम्बन्ध में।

भगवान पार्श्वनाथ भी उन्हीं सिद्धांतों के हामी थे जिन सिद्धांतों का प्रचार अन्य महापुरुषों ने किया था, फिर भी इनके जीवन में ब्रह्मचर्य और तपस्या की विशेषता थी। इस विशेषता के कारण वे भगवान पार्श्वनाथ अन्य तीर्थंकरों की अपेक्षा अत्यधिक प्रसिद्ध हुए। आज भी भारत में भगवान पार्श्वनाथ स्वामी की सुन्दर से सुन्दर कलात्मक प्रतिमाएं अत्यधिक पाई जाती हैं। कई जातियां तो ऐसी हैं जिनका कुल देवता पार्श्वनाथ है। कई प्रान्तों में तो जैन धर्म को पार्श्वनाथ के नाम से ही पहचानते हैं। इसका कारण यही है कि पार्श्वनाथ वे महापुरुष थे जिन्होंने कुमार काल में वैभव के बीच रह कर भी विवाह बंधन को तोड़ा और अपूर्व रीति से ब्रह्मचर्य की महान साधना में अपने आप को उतारा। इनका एक ही काम था जीवन का अध्ययन और ब्रह्मचर्य की महान साधना। यह साधना इतनी चरम सीमा तक पहुंच गयी थी कि वह बार बार पार्श्वनाथ को प्रेरणा देती थी और कहती थी कि आगे बढ़ो – आगे बढ़ो और संसार के त्रसित और दुखित प्राणी वर्ग को भी इस मार्ग में [illegible], [illegible] और [illegible] समाज साथ को समझ कर इसी साधना का आश्रय [illegible] और [illegible] में अपना आप का अर्पण कर गए।

एक दिन भगवान पार्श्वनाथ अनेक कुमारो के साथ गंगानदी के तीर पर भ्रमणार्थ गये थे तब उनकी दृष्टि एक ऐसे तपस्वी की तरफ गई जिसके सिर की जटाए बधी हुई थी चारो तरफ अग्नि जल रही थी और यह पचाग्नि तप तप रहा था। भगवान ने सोचा तपस्वी के पास चलू और पूछू की यह तपस्या क्या युक्ति युक्त है ? जिसमे असख्य प्राणियो का नाश हो रहा है। भगवान तपस्वी के पास गये और कहने लगे – भाई यह तो आपका तप अज्ञान तप है क्योकि इससे जीव हिंसा है, जहा हिंसा है वहा धर्म नही। धर्म का मतलब है हर प्राणी का उद्धार। तपस्वी को यह शिक्षा अच्छी नही लगी वह क्रोधित हो उठा और कहने लगा – अरे नादान कुमार बतलाओ कहा जीव हिंसा हो रही है। भगवान एक विशेष ज्ञानी पुरुष थे। साधु से कहने लगे उस लकड़ी को उठावो उसमे कितने प्राणी जल रहे हैं। साधु ने लकडी को उठाकर तोडी और उसमे जलते हुये सर्प और सर्पणी निकले। जो जीवन के अन्त समय मे विषम यातना से तड़प उठे थे। भगवान पार्श्वनाथ की आत्मा दहल उठी उन्होने कहा देखा यह क्या है ? तुम्हारा यह तप अज्ञान तप है। भगवान ने नाग और नागिन को नमस्कार मन्त्र दिया और उसके प्रभाव से वे धरणेंद्र पदमावती हुए।

इस घटना ने भगवान को बेचैन कर डाला। वह सोचने लगे–"वास्तव मे यह जीवन नश्वर है। कितने प्राणी आज इस तरह मृत्यु को प्राप्त हो रहे हैं। जिनको कोई सबोधित करने वाला नही। तू विवेकी होकर भी आज विश्व कल्याण के लिए नही निकल रहा है। तेरा काम है ससार को सबोधित करना और उसको मार्ग पर लगाना। जीवन तो नश्वर है, उसे देखो खतम होगा। अगर मैं इसी तरह बधन मे पड़ा रहा तो मेरे इस जीवन से क्या लाभ। अब तो मेरा एक ही काम है, निवृत्ति की तरफ अग्रसर होना और भूले भटके प्राणियो को सत्य और अहिंसा के मार्ग पर लगाना।" पार्श्वनाथ नदी के तीर पर इस विचारधारा मे इतने मगन हो गये कि वे यह भूल गये कि मुझे घर पर जाना है। इतने मे कुछ विवेकी लोग घर पर आये। चेहरे की भावना समझकर कहने लगे–भगवन आप के विचार उत्तम है आप राज प्रसादो से बाहर आयें, और इन भूले भटके प्राणियो को मार्ग बतलाइये। इनके विनम्र शब्दो ने भगवान के विचारो को परिष्कृत बना डाला। वे वन की तरफ चल पड़े जहा कोई नही था। उनको सबसे पहले यह देखना था कि मेरे मे कोई कमजोरी तो नही है। सबसे पहले मेरा काम है आत्म निरीक्षण, जिससे अन्त शुद्धि होती है। इसके पहले उन्होने अपने शरीर के समस्त वस्त्र और आभूषण भी उतार कर फेंक डाले। अब वे जीवन मे इनकी आवश्यकता नही समझते थे। इतना ही नही सिर के केश भी, हाथो से ही उखाडकर उसी वक्त देखते-देखते बिना किसी चाह के फेंक दिये। ऐसा उन्होने क्यो किया ? इसका उत्तर मेरे शब्दो मे तो यही है कि अब वे परावलबी जीवन न बिताकर स्वावलबी जीवन चाहते थे। जिस जीवन के प्राप्त होने पर प्राणी अमर बनकर निर्भीक बन जाता है। इसी जीवन को अपरिग्रही जीवन भी बतलाया गया है। इस जीवन मे आने के बाद प्राणी को ससार की कोई लिप्सा या तृष्णा नही सता सकती , क्योकि यह एक प्राकृतिक जीवन है। जिसमे न विकार है न ममता या तृष्णा। ममता और तृष्णा का नाम ही ससार है। और यही एक ऐसी कमजोरी है जो आत्मा को आगे नही बढने देती। अब भगवान को कोई चिंता नही थी। उन्होने आत्मान्वेषण के लिए कठिन योग धारण किया और इसके साथ-साथ मौन व्रत भी। क्योकि मौन के बिना आत्म निरीक्षण हो

नही सकता मौन सहना ज्ञान के विकास का भी कारण है। अध्ययन और विकारो का विरोध वही कर सकता है जो अपनी वचन वर्गणा को व्यय न खोता। भगवान् पार्श्वनाथ ने ऐसा ही किया और वह भी वर्षो तक।

एक दिन भगवान पाश्वनाथ साधना मे तल्लीन थे। इतने मे ही एक असुर उधर आता है और साधना मग्न भगवान को देखकर किसी कारण से क्रुद्ध हो जाता है क्योकि वह असुर था। असुर वही कहलाता है जिसकी वृत्ति और भावना खराब होती है। जिसमे उचित और अनुचित का विचार नही होता जो कृत्य और अकृत्य को नही देखता। जैन ग्रन्थो मे लिखा है कि यह पूर्व जन्म से प्रवधित कामठ का जीव था जिसको हर समय पाश्वनाथ के जीवन ने मदद दी थी फिर भी वह इनकी भलाई के प्रति कृतज्ञ न होकर इन पर जला ही करता था और हमेशा इनके प्रति दूषित भावना रखा करता था। उन्ही दूषित भावनाओ का जन्म यहा भी हुआ और उसने भगवान पाश्वनाथ को कष्ट देना ही उचित समझा। यह भगवान पार्श्वनाथ के लिए कठिन परीक्षा की भूमि थी। असुर ने इतना कह दिया कि आस-पास का समस्त वातावरण क्षुब्ध हो उठा। आसुरी शक्ति एक प्रबल शक्ति होती है।

वह पागल हो उठा। उसने नही सोचा कि यह एक महान महात्मा है। उसने पत्थर रेत-धूल मिट्टी आदि चीजो का भी खूब उपयोग किया। लेकिन उस महामानव ने उन सब ही को नहीं जीता उस असुर को जीत लिया। जब उसने यह देखा कि इन सब उपद्रवों के होते हुए भी यह महान तपस्वी सयत और गम्भीर हसमुख बैठा था। सब कुछ बिना किसी आह के सह रहा है, जिसकी आत्मा मे कोई विकार नहीं है। उस मानवी शक्ति के सामने आसुरी शक्ति ने हार खाई और वह असुर योगी के चरणो मे विलाप करता हुआ गिर पड़ा और कहने लगा, 'भगवान अपराधी का अपराध क्षमा कर। तू महान है, गभीर है"। पार्श्वनाथ अपने में तल्लीन थे। भगवान के इस महान उपद्रव के सवाद नाग नागिनी के धरणेन्द्र पदमावती तक भी पहुचे। वे भी कर्त्तव्य को अदा करने के लिए और कृतज्ञता प्रकट करने के लिये भगवान के चरणो म दौड़ कर आये। भगवान के उपसर्ग को दूर करने के लिये धरणेन्द्र ने अपने आप को समर्पण करना ही उचित समझा। उन्होंने भगवान के शरीर पर अपने आपको छतरी की तरह छा डाला। यह दृश्य आज भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमाओ पर स्मृति के रूप मे देखा जाता है।

उपसर्ग विजय के बाद पार्श्वनाथ की दिव्य आत्मा ने कैवल्य प्राप्त किया। उनका ज्ञान निर्मल और पवित्र बना। उन्होने अपने आप को समझा। साथ मे उस समय की समस्त परिस्थितियो का अध्ययन भी किया। अब पार्श्वनाथ ने सोचा, " मुझे बोलना है। और यह कष्ट मेरे लिये नही विश्व कल्याण के लिये है।" दुनिया की दृष्टि पहले से ही इस महात्मा की तरफ थी। वह चाह रही थी कि वह कुछ बोलें। दुनिया दौड़ पड़ी। पशु और पक्षी भी दौड़ पड़े उस महात्मा की तरफ। वे सभी सोचने लगे यह महात्मा है हमारे लिए इसके हृदय म स्थान है। महात्मा वही होता है जिसके हृदय में तुच्छ से तुच्छ प्राणी के लिए भी स्थान हो। उस समय मनुष्यो की अपेक्षा पशु पक्षी ज्यादा सताये जाते थे। मनुष्य भी आये पशु भी आये, और स्वर्गो से देवता भी आये। आपने भगवान पाश्वनाथ को चारो तरफ से घेर डाला, सब मस्त थे। इन्द्र के अनुचरो ने बैठने की व्यवस्था की और उन सब को बारह स्थानो मे विभक्त कर

डाला जो बारह सभी के नाम से कहलाये भगवान सबसे बीच मे थे। वे चारो तरफ से दिखलाई देते थे। उनका मौन खुला और भगवान ने कहा– "सबके हित म ही अपना हित है—किसी के प्रति भी बुरा मत सोचो और न बुरा वचन कहो। चोरी मत करो ।"

"ब्रह्मचर्य का पालन करो, सग्रह की परिपाटी खतम करो। अगर तुम सग्रह करना ही चाहते हो तो उतना ही सग्रह करो जितने की तुम्हे आवश्यकता है। सग्रह पाप है। यह एक ऐसी तृष्णा है, जिसमे शोषण और परपीडन को स्थान है। जहा पर पीडन और शोषण है वहा धर्म नही अधर्म है। सग्रह एक भयकर अनथ है। यह मेरी पाच शिक्षायें है, जिनको जीवन मे उतारने की जरूरत है। ये मेरे अनुभव की चीज है मैने सोचा है, विचारा है और अनुभव किया है कि पाच शिक्षाओ के बिना जीवन सुखी बन नही सकता। बिना सुखी जीवन के शान्ति मिल नही सकती। वे जीवन निर्माण की प्रारम्भिक महान श्रेणिया हैं। इन से ही जीवन का विकास होगा।" भगवान पार्श्वनाथ की यह धर्म घोषणा उपस्थित प्राणियो के लिए आकर्षक बनी। इसके बाद भारत के कोने कोने मे पार्श्वनाथ ने विहार किया, सिद्धातो का प्रचार किया और अन्त समय मे बिहार के प्रसिद्ध तीर्थ सम्मेद शिखर पर जाकर श्रावण शुक्ला सप्तमी को आत्म-लाभ निर्माण पद प्राप्त किया। यह भगवान पार्श्वनाथ का निर्माण दिवस बडे महत्व के साथ भारतीय समाज मे मनाया जाता है और उस दिन उस महात्मा के प्रति श्रद्धा और भक्ति करने के लिए छोटे-छोटे बच्चे भी व्रत और उपवास करते हैं। यह दिन मोक्ष-सप्तमी के नाम से पुकारा जाता है।

भगवान पार्श्वनाथ का यह जीवन हमे अनेक शिक्षायें देता है। समाज का काम है वह इससे कुछ शिक्षायें ग्रहण करे। आज भारतीय जनता पार्श्वनाथ की शिक्षाओ से दूर हो रही है। भारत मे कुछ जातिया ऐसी है जिनका एक देवता पार्श्वनाथ है फिर भी उसकी सस्कृति और शिक्षाओ से वह दूर है जिनके उद्धार के लिए जैन समाज ने कोई प्रयत्न नही किया। जैन समाज को उन इकाइयो से शिक्षा लेनी चाहिये जो बाहर से आकर भारत मे अपना प्रचार कर रहे हैं और हम पडोस मे रह कर भी कुछ नही कर रहे हैं। पार्श्वनाथ की सच्ची उपासना उनके सिद्धान्तो का प्रचार है। जैन समाज म आज आध्यात्मिक भावनायें कम हैं। वह भी भौतिक वाद की तरफ अग्रसर है। भौतिकवाद का असर आपके सामने है जिसकी ज्वाला मे आज का विश्व भयकर रूप से जला जा रहा है। विश्व की माग हैं ऐसे सिद्धान्तो की जो उनको शान्ति का सदेश दे सके। क्या पार्श्वनाथ की सन्तान उनकी पुकार सुनेगी?

भगवान महावीर

हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार, और अतिशोषण किसी राष्ट्र को पतन के कगार पर पहुँचा सकते हैं। भगवान महावीर ने अपने आपको इन बुराईयो को समाप्त करने हेतु समर्पित किया और वे सफल हुये। उन्होंने सर्व हितकारी, सब कल्याणकारी और सब-कालिक शिक्षायें हमें प्रदान की थी।

विश्ववंद्य भगवान महावीर का उदय इस वसुंधरा पर करीब 2600 वर्ष पहले विश्व को मानवता का संदेश देने के लिये हुआ। भगवान महावीर एक ऐतिहासिक महापुरुष हुये। इनका जन्म विहार में वैशाली ग्राम में राजा सिद्धार्थ के घर पर हुआ। राजा सिद्धार्थ एक बहुत प्रतापशाली राजा थे। उनके पास अपार वैभव सम्पत्ति और आकर्षक महल थे। भगवान महावीर प्रारम्भ से ही विशद ज्ञान के धारी थे। उनकी बुद्धि विशाल थी। चिंतन बहुत ऊंचा था। उनके हृदय में अपार करुणा थी। 8 वर्ष के जीवन में उनके मानस में मानवोचित भावनायें जाग्रत हो गई थी। वे चाहते थे जीवन का विकास और आत्मिक अभ्युदय, इसलिये विशाल वैभव और सम्पत्ति महावीर को बाँध नहीं सकी। उनके पीछे वे अपने आपको खो नहीं सके। वे बालक थे। फिर भी चिंतनशील थे। वे चाहते थे अपने जीवन का निर्माण। महावीर के जीवन में अनेक घटनायें देखने को मिलती हैं लोग उनकी चमत्कारिक बातें कह करके महावीर को चमत्कारिक महापुरुष भी मानते हैं। लेकिन महावीर ने इन बातों से अपने आपको प्रभावित नहीं किया-चमत्कारों से कोई महान नहीं बनता। महान वही बन सकता है जिसने अपने आपको संजोया है। आत्मिक गुणों के विकास से महावीर का चमत्कारों से कोई विश्वास नहीं था। महावीर चाहते थे आत्मिक गुणों का विकास जिससे राष्ट्र और समाजों का निर्माण हो और मानवता प्राप्ति के लिये अवसर हो।

महावीर का समय आज से कम विकट नहीं था। उस समय अनेक धर्म थे। उनके नाम पर अनेक पाखण्ड प्रचलित थे। मन्दिरों में धर्म के नाम पर नरमेध और पशुमेध के नाम पर यज्ञ होते थे। उनमें गरीब, अनाथ पशु और मनुष्य तक होमे जाते थे। जिससे मन्दिरों में खून की नदियां बहती थीं। चारों तरफ चमत्कार और हाहाकार था। मानवता ने दानवता का रूप ले लिया था अन्याय और अत्याचार का जोर था, वर्णभेद, जातिभेद पंथभेद का बोलबाला था। मानव-मानव में भेद की दीवारें खड़ी थीं। अन्त्यज सताये जाते थे। ऊंच नीच की भावना पनप रही थी। महिलाओं की स्थिति बड़ी

भयावह् थी। अत्यन्त रूपवती स्त्री नगरवधू बना दी जाती थी। खुले ग्राम सड़को पर उनकी नीलामी होती थी। मानवता कराह् रही थी। इन सब दृश्यो ने छोटी उम्र मे ही महावीर को बचेन बना डाला था। वे चाहते थे इन समस्याओ का हल। इन सब के लिए वे बठा करते थे एकात कक्ष मे, निर्द्वन्द्व होकर एकाकी। बालक महावीर के हृदय को हिला डाला था इन समस्त समस्याओ ने।

भगवान महावीर की माता का नाम त्रिसला था। जब महावीर युवक हो गये तब माता त्रिसला ने सोचा कि क्यो नही किसी राजकुमारी के साथ महावीर का विवाह कर दे। वह महावीर के पास गई और महावीर से कहा कि बेटा मैं चाहती हू मेरे घर मे एक छोटी सी बहू आवे जिससे मेरे आगन की शोभा बढे, इसके लिये मैंने कलिंग देश के राजा की कन्या पसन्द की है। मुझे इसके लिये स्वीकृति दे। यह सुनते ही महावीर का माथा ठनका। महावीर ने विनम्र शब्दो मे कहा माता, आपकी समस्त आज्ञा स्वीकार है। लेकिन यह बन्धन मुझे स्वीकार नही। महावीर इस जीवन के लिए मानव जीवन मे नही आया। जनजीवन को सुरक्षित करने के लिए अनेक समस्यायें मेरे सामने खडी हैं जिनको हल करने के लिए मुझे मेरे कदम बढाने हैं। माता अधिक आग्रह न करे इसलिए भगवान महावीर अपने महलो से निकल पडे। उन्होंने राज प्रासाद छोड दिया। अगणित लोग दौड पडे उनके इस विशाल निर्णय को सुनने के लिए, महावीर के कदम जगल की तरफ बढते गये। उन्होने अपना जीवन बदल डाला। उन्होने शुद्ध दिगम्बर रूप ले लिया जो एक निद्वन्द्व जीवन था। वे वन मे एकात प्रदेश मे बठ गए। राष्ट की समस्याए हल करने के लिए १२ वष तक वे मौनी रहे। इस मौन काल मे उन्होंने अपने आपको टटोला और अन्त दृष्टा बने। समस्त कमियो का निरीक्षण करके अपने आप को निर्मल बनाया। उन्होने काम, क्रोध लोभ, मद, मोह आदि अमानवीय बुराइयो को निकाल फेंका। इन पर विजय करके वे महावीर बन गये। १२ वष के मौन काल मे उक्त समस्त समस्याओ को हल करने के लिए पृथ्वी और राष्ट्र को प्राण देने के लिए एक ही रास्ता सोचा अहिंसा और अपरिग्रह का।

अहिंसा एक आवश्यक अस्त्र था। बिना अहिंसा के कोई राष्ट्र प्राण नही पा सकता। क्योंकि अहिंसा चाहती है राष्ट्र मे आत्मीयता प्रेम, सह्-अस्तित्व की भावना इन भावनाओ के बिना राष्ट्र बच नही सकता और विश्व के प्राणियो को प्राण भी नही मिल सकता। और जीवो को शान्ति भी नही मिल सकती। अहिंसा एक सजीवनी शक्ति है और अपरिग्रह उस समता का आधार है। अहिंसा और अपरिग्रह का समन्वय है। समस्त बुराइयो की जड हिंसा है और शोषण पीडन है। मानव जब अपनी ही तरफ देखता है तब उसमे हिंसक भावनायें पदा होती है और अपने आराम के लिए शोषण की तरफ आगे बढ जाता है। इसके लिए भगवान महावीर स्वय अहिंसक और अपरिग्रही बने। पूर्ण दिगम्बर बने। शोषणहीन जीवन को उन्होने स्वीकार किया इन दोनो ही सिद्धातो के प्रचार के लिए महावीर ने राष्ट्र के लिए अपने आप को समर्पित कर दिया। महावीर नग्न रहते थे। एक समय बहुत ही सादा भोजन लेते थे। न स्नान करते और न हजामत बनवाते थे। उनका विहार पदल होता था। जन सम्पर्क करना उनके जीवन का लक्ष्य था। वे एक महान साधक महापुरुष थे। सयम, त्याग और तपस्या ही उनका जीवन था। देश को उठाने के लिये उनकी पाच महत्त्वपूर्ण शिक्षायें थी। सर्व हितकारी, सर्व कल्याणकारी और सर्वकालिक थी। वे चाहते थे देश को जिंदा रखने के लिए आदमी मानव बन जाये। इसी को वे धर्म कहते थे।

महावीर का विश्वास मन्दिर और मठो मे नही था। उनका विश्वास मानव मे था। धर्म का अर्थ भी मानव बनना और सद्‌शिक्षायें जीवन मे उतार कर मानवता प्राप्त करना था। जिससे मानवता मिले वही धर्म है। जिसने इसको प्राप्त कर लिया वह मानव है या धर्मी है। महावीर की दृष्टि में पाच बुराइया थी हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार और अतिशोषण। वे मानते थे कि इन्ही से राष्ट्र का पतन होता है। अत इन शिक्षाओ के प्रचार के लिए महावीर ने अपने आपको समर्पित कर दिया वे सफल हुए। और विश्व के समस्त प्राणियो ने उनको महामानव के रूप मे या तीर्थकर के रूप मे स्वीकार करके उनको भगवान के रूप मे स्वीकार किया। वास्तव मे महावीर की शिक्षायें मानवतावादी हैं और आज की परिस्थिति मे भी राष्ट्र को अहिंसा, अपरिग्रह जसे सिद्धात की आवश्यकता है। आज भी देश की स्थिति भयावह है। चारो तरफ आदमी पागल बनता जा रहा है। हत्याओ और अत्याचारो का जार है। असुरक्षित भावनाय मानव को विचलित कर रही है। शोषण बढ रहा है नतिकता गायब हो रही है। ऐसी स्थिति मे देश महावीर की जयती मनाना चाहता है तो इसका कर्त्तव्य है कि राष्ट्र के कणधार नेता, समाज सेवक, युवक-युवतिया और छात्र नेता समस्त बुराइओ से अलग होकर पुन महावीर की शिक्षाओ को अपने जीवन मे उतारे और राष्ट्र व्यापी इनका प्रचार करे। महावीर मानवतावादी महापुरुष थे। उन्होंने प्राणी मात्र को सरक्षण देने की वात कही। अत वे साम्प्रदायवादी या पथ विशेष के महापुरुष नही थे। इसीलिए पशु-पक्षी, वृक्ष और जल, थल की रक्षा पर तक महा रि की दृष्टि गई। वे समझते थे कि ये राष्ट्र की सम्पत्तिया है। यदि वे व्यर्थ मे नष्ट कर दिये गये तो राष्ट्र दुखी हो जायेगा।

—o—

☐ जो श्रुत के जनक हैं, तीर्थ करो मे अन्तिम हैं, लोक के गुरु हैं तथा महात्मा हैं, वह महावीर जयवन्त हो।

☐ जिनेन्द्र देव के वचन विषय-सुख के विरेचन के लिए औषधि के समान है और जरा-मरण व्याधियो को दूर करने तथा सब दुखो का क्षय करने के लिए अमृत क समान हैं।

मानवता के आधार स्तम्भ भगवान महावीर

भगवान महावीर ने विश्व को शाति, समानता और सहअस्तित्व का सन्देश अहिसा, अपरिग्रह के आधार पर देकर मूच्छित मानवता को जीवित किया था और अहिंसावादी समाज रचना को मूतरुप दिया था। वे राष्ट्र निर्माण और जीवन निर्माण प्रवल समथक थे।

महावीर एक साम्प्रदायातीत अनेकात विचारधारा के महापुरुष थे। उन्होने अपने जीवन काल मे विश्व को शाति, समानता और सहअस्तित्व का सदेश अहिंसा तथा अपरिग्रह के आधार पर देकर मूछित मानवता को जीवित किया और अहिंसावादी समाज रचना को मूत रूप दिया।

सच कहा जाय तो महावीर उस युग के एक महान् क्रातिकारी युग पुरुष और उग्र चितक महापुरुष थे। उनके सिद्धान्त उदार थे। वे नही चाहते थे कि समाज मे ऊच और नीच की भावनायें पनपें। मानव मानव मे भेद की दिवारें खडी हो।

अत उन्होने अपने विचारो मे कही भी किसी भी रूप मे वर्ण और जाति भेद को आश्रय नही दिया। उनका एक ही लक्ष्य था मानव अहिंसा की प्रतिष्ठा पर जीवित रहे। उसमे राष्ट्रीय भावनाओ का उदय हो, सह अस्तित्व की भावना पदा हो, और मत्री करुणा भाईचारा ही उसका जीवन हो। महावीर के मुख्य तीन सिद्धात थे – अहिसा, अपरिग्रह और अनेकात। महावीर के उदयकाल मे धार्मिक सामाजिक और आर्थिक व्यवस्थायें इतनी विचित्र थी कि उनके सामने मानव के जीवन की कोई कीमत नही थी।

धम के नाम पर मन्दिरो मे पशु और मानव की वलि दी जाती थी, मदिरो मे खून की नदिया बहती थी, अन्त्यजो पर अत्याचार होते थे। अवलायें सताई जाती थी। और अनिंद्य सुन्दरियाँ नगर वधू के नाम पर बाजारो में बेची जाती थी। महावीर एक राजघराने म चत्र शुक्ला 13 को पैदा हुये थे। उनके पिता का नाम राजा सिद्धार्थ और माता का नाम रानी त्रिशला था। भगवान महावीर अपार वभव और राजप्रासाद के बीच पदा हुये थे। वे प्रारम्भ से ही उग्र चितक थे। उदार विचार धारा के महामानव थे। उक्त समस्यायें महावीर के सामने उग्र रूप से खडी थी। जिनसे मानव कराह रहा था।

हावीर यह सब देखकर विचलित हो गये। उनको विशाल वैभव राजप्रासाद और माता पिता का ाग्रह खींच नहीं सका।

वे मानव की मानवता को जीवन दान देने के लिए घर से बाहर निकल पड़े। और उन्होंने पना समग्र जीवन राष्ट्र के लिये और प्राणी सेवा के लिए अर्पित कर दिया।

महावीर ने वर्गहीन समाज की स्थापना अहिंसा और अपरिग्रह के आधार पर कर दी। उनका वशाल सभाओ म मनुष्य से लेकर पशु और पक्षी तक जाते थे। महावीर अपनी सभाओ मे राष्ट्र नर्माण और जीवन निर्माण की चर्चायें करते थे। उनके विचारो से राष्ट्रो मे नई भावनाओ का उदय हुआ। वर्णभेद, जातिभेद और धार्मिक आडम्बरो ने अन्तिम सासे ली।

बड़े बड़े मठाधीश महावीर के कदमो मे आकर लेटने लगे। महावीर ने अपने सिद्धांतो को मूर्त रूप देने के लिये चाडाल तक को ऊचा उठाया और उसकी देवताओ से पूजा कराई। यह बात आज भी उनके विशाल साहित्य मे वर्णित है। ऐसे ही चन्दनबाला एक महासती की कहानी है जो वश्याओ द्वारा सताई गई। एक सेठ के हाथ बेची गयी। बन्धन मे डाली गई। बेडियो से जकडी गई। उसी चदनबाला के यहा महावीर पहुचे और उसके हाथ का आहार लेकर उसको उज्जवल किया तथा अपने सघ म उसका सर्वश्रेष्ठ पद पर घोषित किया। इस तरह के अनेक कथानक महावीर के जीवन दर्शन म मिलते हैं। इससे ज्ञात होता है कि महावीर किसी समाज विशेष व जाति विशेष के महापुरुष नहीं थ। वे एक महान मानवतावादी महापुरुष थे।

अत हम कह सकते हैं कि उन्होंने मानवता को पुन प्रतिष्ठा दी। वे मानवता के एक आधार रूप म थे। भगवान महावीर ने अपने जीवन के अन्त तक स्वय के जीवन को ऊचा उठाया और सयम, त्याग और तपस्या की वेदी पर नतिक शिक्षाओ का प्रचार करके राष्ट्र को एक प्रबल शक्ति प्रदान की। यह महावीर की शिक्षा का प्रभाव है जिसके बल पर परतन्त्र देश स्वतन्त्र देश बना। गाधीजी जसे महापुरुष ने भी महावीर की अहिंसा को आधार माना।

आज भी देश की स्थिति बडी विचित्र है। मानव धीरे-धीरे दानवता की तरफ कदम बढा रहा है। हर जगह शोषण बलात्कार, और अनैतिकता का जोर है।

पाखण्डवाद पनप रहा है। देश असुरक्षित है। जिनके हाथो म सत्ता है वे ही शोषक और धन लिप्सु बन रहे है। न उनम त्याग है और न उनम सयम। आज उनका सूखा जीवन है।

ऐसी स्थिति म हमारा कर्तव्य है कि हम महामानव भगवान महावीर की शिक्षाओ को उनके सन्देशो का जीवन म उतारें। और उन्ही सिद्धान्तो को राष्ट्रीय सिद्धांत घोषित करें। जिससे राष्ट्र के प्राणियो को शान्ति की श्वास मिले। महावीर चाहते थ राष्ट्र निर्माण और जीवन निर्माण जिससे राष्ट्र आगे बढे।

मानवता के आधार भगवान महावीर

धम का सही स्वरुप मानवता प्राप्त करना है जहा समानतायें और समता का साम्राज्य है। अहिंसा जीवन का तत्व है। भगवान महावीर ने कहा है कि वही सही मार्ग है जिसमे अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत के दर्शन हो।

आज से करीब 2571 वर्ष पहले इस अवनीतल पर मगध प्रदेश के अन्तगत कुण्ड ग्राम मे एक ऐसे महापुरुष का उदय हुआ था जिसने अपने जीवनकाल मे विश्व को समता और सहअस्तित्व का आदर्श देकर मूर्छित मानवता को मुखरित कर अपना महावीर नाम सार्थक किया।

महावीर का उदयकाल बडे सकटो से व्याप्त था। समस्त राष्ट्र सतप्त और दुखी था। देश मे अनेक मत मतातर थे। विश्व कल्याण की भावनायें लुप्त थी। मानव दानव बना हुआ था। देश मे सवत्र राक्षसी भावनायें पनप रही थी। सवत्र ब्राह्मणवाद का बोलबाला था। मन्दिरो की पवित्रता खत्म हो चुकी थी। धम के नाम पर अनेक आडम्बरो का जन्म हो चुका था मन्दिरो म धम के नाम पर नर और पशुओ के वध से खून की नदिया बह रही थी और यही सबसे बडा धम माना जाता था। ईश्वरीय सत्ता कुछ लोगो के हाथ म थी, जिन्होन मानव–मानव मे भेद की दीवारे पाट रक्खी थी। ऊच और नीच का भेद था। स्त्रिया भेड बकरी की तरह खुले आम अपमानित और तिरस्कृत की जाती थी। सारे धर्मो का सचालन एक ऐसे वर्ग ने अपने हाथ मे ले रखा था जिससे जात्याभिमान बढ गया और धम के नाम पर वर्ण भेद और जाति भेद को प्रश्रय मिल गया।

ऐसे विकट समय म भगवान महावीर का जन्म हुआ। भगवान महावीर प्रारम्भ से ही एक प्रतिभा सम्पन्न स्वय बुद्ध व्यक्ति थे। उनका जन्म एक युग पुरुष के रुप मे हुआ। उन्होने अपने छोटे से जीवन मे उन समस्त समस्याओ का अध्ययन कर डाला जिससे उस वक्त का मानव और पशु जगत दुखी था। उन्होंने एकात मे बैठ कर सकल्प किया कि महावीर तू मानवता का प्रहरी है। तेरा काम देश और राष्ट्र म व्याप्त समस्त विषमताओ को दूर करने का है और इन विषमताओ को दूर करन के लिये तुझे स्वय को महान् क्रांतिकारी कदम बढाना है। इन समस्त समस्याओ का हल करन का माग क्या? महावीर एक बहुत बडे राजकुल म पैदा हुए थे। उनके घराने म अनन्त वैभव था। विशाल प्रासादो म उनका परिपालन हुआ था और पौराणिक कथानको के आधार पर देवकुमार के बीच उनका

जीवन बना था । फिर भी इन व्याप्त समस्याओं ने इनका शान्ति नहीं लेने दी और महावीर ने सोचा इन समस्याओं का हल मेरे वर्तमान जीवन से नहीं हो सकता । इसके लिए बहुत बड़े त्याग की आवश्यकता है । महावीर इन समस्याओं का हल करने के लिए स्थायित्व चाहते थे । इसलिए उन्होंने समस्त राज और वैभव को छोड़कर संयम का मार्ग अंगीकार करने का संकल्प किया ।

भगवान महावीर के 250 वर्ष पहले भगवान पार्श्वनाथ पैदा हुए थे । वे भी एक महापुरुष के रूप में माने गए । लेकिन महावीर जैसा क्रान्तिकारी कदम उन्होंने इस रूप में नहीं उठाया जिससे देश में धार्मिक जागृति को स्थायित्व मिला हो । भगवान पार्श्वनाथ के निर्वाण के कुछ ही वर्षों बाद लोगों में तरह तरह की उलझनें और मतभेदों की दीवारें खड़ी हो गईं । जिन्होंने महावीर के जन्मकाल तक भयंकर रूप ले लिया ।

महावीर एक महान् क्रान्तिकारी युग पुरुष निकले । उन्होंने मानवता को जीवित रखने के लिए आधार बनाया और उनको प्राणवान रखने के लिए अपरिग्रह और अनेकान्त विचार धारा को परिष्कृत बनाया । महावीर ने 12 वर्ष तक मौन जीवन रख कर देश के कोने-कोने में पर्यटन करके इन समस्त विषमताओं का अध्ययन किया और तय किया कि इन समस्त समस्याओं का हल अहिंसा के बल पर ही हो सकता है । अहिंसा एक ऐसा प्राणवान तत्त्व है जिससे मानवता की पुनः प्रतिष्ठा हो सकती है । महावीर चाहते थे कि भेद की दीवार खत्म हो । मानव सही रूप में मानव बने । जहां मानवता है वहां ऊंच नीच की भावनायें, वर्ण भेद और जाति भेद की दीवारें पनप नहीं सकती । अहिंसा समन्वय और समता को जन्म देकर देश में प्राणिमात्र के प्रति सच्चा सौहार्द देखना चाहती है । इसलिए महावीर ने अहिंसा का बिगुल बजा दिया और उन समस्त ताकतों के खिलाफ जबर्दस्त क्रान्तिकारी कदम बढ़ा दिया जिससे सारे विश्व में महान क्रान्ति पैदा हो गई । बड़ी-बड़ी शक्तियां हिल गईं । उन शक्तियों ने भगवान महावीर को हिलाने के लिए कई उपयोग काम में लिए, लेकिन वे सफल न हो सके । लाढ देश में तो भगवान महावीर पर अनेक उपसर्ग आए उन पर अनेक प्रकार के अत्याचार व प्रहार किये गए । लेकिन महावीर महावीर बने रहे, उन शक्तियों को महावीर के सामने पराजित होना पड़ा । अन्त में महावीर अपने मिशन में सफल हुए और वे मानवता के सही रूप में पुजारी माने गये । महावीर के विचारों को सुनने के लिये भूतल के लोग ही नहीं आये लेकिन अलौकिक प्राणियों ने भी उनका मानवोचित संदेश सुनना उचित समझा । महावीर की सभायें सार्वजनिक स्थानों में भरने लगी जिनमें एक मात्र उद्देश्य मानव को मानव बनाने का था । उनकी सभाओं में मानव तो आते ही थे लेकिन बेचारे पशु और पक्षी भी आने लगे । महावीर बहुत बड़े महापुरुष थे फिर भी उनकी वाणी लोक भाषा में होती थी, जिसको पशु जाति भी समझ लिया करती थी । महावीर ने कहा कि सही धर्म मानवता प्राप्त करना है जहां समानतायें और समता का साम्राज्य हो । अहिंसा जीवन का तथ्य है जिसमें विश्व के समस्त प्राणियों का हित निहित है उसमें सह अस्तित्व की भावनायें निहित हैं ।

भगवान महावीर ने अपने व्याख्यानों में पूजा और प्रतिष्ठा को महत्त्व नहीं दिया । उन्होंने कभी भी इन चीजों का अपना आधार नहीं बनने दिया । सच कहा जाय भगवान महावीर एक अलौकिक महापुरुष थे जिनकी आत्मा में मानवता के संरक्षण के लिए उग्र तड़पन थी । इसलिए उन्होंने अपना समस्त जीवन विश्व कल्याण के लिये अर्पण कर दिया ।

भगवान महावीर के समय मे और भी कई महान पुरुष पदा हुए थे। लेकिन वे समन्वय नही कर सके। महावीर ने उनका भी समन्वय किया और इसके लिये उन्होने अनेकात विचार धाराओ को जन्म दिया। महावीर ने उनको भी अपनी दिव्य वाणी मे बतलाया कि व्यक्ति सरक्षण की बात मत कहो। राष्ट्र रक्षण की बात करो। भिन्न भिन्न विचारधाराओ के पोषण से राष्ट्र का अगणित नुकसान होता है। सही मार्ग वही हो सकता है जिस मार्ग मे एकरूपता हो।

महावीर की इन बातो को सब ही ने स्वीकार किया और उन्होने सोचा कि सही मार्ग वही है जिसमे अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकात का दर्शन है। इन विचारो से सहमत होकर हजारो लाखो ने महावीर का शिष्यत्व स्वीकार किया और वे सब इन्ही बातो का प्रचार करने के लिए मदान मे उतर गये। गौतम जसे महाविद्वान भी महावीर की शरण मे आये और उन्होने महावीर के मार्ग का समयन किया।

भगवान महावीर के इन विचारो से राष्ट्रो के कितने ही द्वन्द खत्म हो गये। धम के नाम पर फलाई गई हिंसा और पाखण्डवाद देश से हमेशा के लिए विदा हो गये। देश मे भाई चारा बढा और प्रेम सौहार्द ने जन्म लिया। महावीर के बाद इन विचारो को जीवित रखने के लिए अगणित श्रमणो ने प्रयास किया और साहित्य के रूप मे गूथ डाला। इसी का परिणाम है कि महावीर के सिद्धात 2500 वष बाद भी जीवित है जो सही रूप से मानवता के आधार स्तम्भ हैं।

लोकमान्य पूज्य गाधी जी ने भी अपने जीवन म इन सिद्धातो को सही रूप मे उतारा और राष्ट्र के हित के लिए अहिंसा और अपरिग्रह को मूत रूप दिया जिससे मानवता जीवित रही और देश स्वतत्र हुआ।

महात्मा गाधी के बाद देश मे अगणित नेताओ ने जन्म लिया लेकिन देश को प्राणवान नही बना सके क्योकि वे जीवन मे अहिंसा की साधना को उतार नही सके। आज अहिंसा और शोषण हीन जीवन की बातें तो बहुत होती हैं लेकिन वे जीवन मे पनपती नही। इसी से देश दुखी होता जा रहा है। आज हर व्यक्ति के सामने स्वाथ है त्याग नही है। दृष्टि है 'लेकिन उसम अनेकता विचार धारा नही जिससे देश के टुकडे-टुकडे होते जा रहे हैं। शान्ति खतरे मे परिवर्तित हो रही है। चारो तरफ अस तोष की ज्वाला है। मानवता खिसक रही है। ऐसे समय म यदि शाति मिल सकती है तो महावीर के पावन सदेशो से ही मिल सकती,है लेकिन एक समस्या है कि आगे बढे कौन ?

भगवान महावीर के उदार सिध्दांत और हम

धर्म मे आत्मवाद को स्थान है, जातिवाद को नहीं। धम प्राणी का विकास करता है, अवरोध नहीं । जहाँ परिग्रह है वहाँ याचना है। जहाँ लोभ है वहां तृष्णा है। यह ही तृष्णा सारी बुराईयो की जड है। भगवान महावीर ने हमें ऐसी शिक्षा दी (–) अब हम कहां है यह आत्मसात् करने की बात है।

भगवान महावीर एक ऐतिहासिक महापुरुष थे। भारतीय इतिहास में उनका महत्वपूर्ण स्थान है। वे अहिंसा के एक मात्र प्रचारक रहे हैं। उनके विचारो म सकीर्णता, साम्प्रदायिकता व ऊच नीच की भावना को कोई स्थान नही था। व समन्वय के हामी थे। पूजी और वैभव का उनकी दृष्टि म काई महत्व नही था। वे एक आध्यात्मिक सत थे। उनके सिद्धांत सवप्राणी, समभाव के आधार पर चला करते थे। उनका विश्वास अहिंसा, सत्य और अपरिग्रहवाद में था, जिनके बल पर ससार का काई भी प्राणी सुखी हो सकता था। भगवान महावीर के शासन म किसी भी तरह की रूढी और अधविश्वास को स्थान नही था। उनका शासन कर्तव्य ही को धर्म मानता था। रूढी और अधविश्वास व पाखण्ड वाद के वे घोर विरोधी थे। वे जिस धम का प्रचार करते थे उसे आत्म-धम कहा करते थे क्योंकि उनका कहना था धम ही है जिसके आश्रय से ससार का पतित से पतित प्राणी भी अपना कल्याण कर सकता है। वे कहा करते थे, घृणा पाप से करो पापी से नहीं।

वे वर्ग भेद और जाति भेद को भी नही मानते थे। उनके शासन में जाति वाद को कोई महत्व नही था। बल्कि जातिमद और कुलमद को उन्होंने जनत्व स बाहर माना है। साहित्य में जगह यह लिखा हुआ मिलता है कि जातिमद और कुल मद में मदोन्मत्त प्राणी जैन धम की पहली सीढी पर भी नहीं चल सकता है। जैन साहित्य के देखने से कहीं कही तो ऐसा मिलता है कि पापी से पापी आत्मा का पहले विकास कर लेता है और प्रगट मे धर्मात्मा कहीं न कही लटकता ही रहता है। ऐसे कभी उदाहरण देखने को मिलते हैं जैसे जयकुमार सुलोचना का जीवन और उनका प्रतिद्वन्दी जीव। जैन साहित्य की यह विशेषता रही है कि उसने ऐसे प्राणियों को विशेष महत्व दिया है कि पहले वह पापकर्मी था और फिर सुधर गया, जैसे यमपाल चाण्डाल। ऐसे लोगो की देवताओ तक से पूजा करा डाली है। इससे स्पष्ट जाहिर होता है कि धम मे आत्मवाद को स्थान है, जातिवाद को नही। धम प्राणी का

विकास करता है अवरोध नही। महावीर एक सुधारक महात्मा थे। उन्होंने ससार के हर वर्ग के प्राणी को अपने चरणो मे स्थान दिया है और उनको माग बतलाया है इसीलिए भगवान महावीर पतितोद्धारक महावीर कहलाते है। उनका अहिंसा का सिद्धात खाली कहने का ही नही था, व्यावहारिक था जिससे जीवन मे आचार और व्यवहार मे सच्चाई, ईमानदारी, सहानुभूति और सहिष्णुता नही होती थी उसको अहिंसक नही मानते थे। इसलिए आत्म भावना भाने वाले पाठो मे यह कहा गया कि नित्य अपने कृत्यो की आलोचना करके यह विचार करे कि मैंने आज किसी के साथ ऐसा व्यवहार या आचरण तो नही किया है जिससे दूसरे की आत्मा को ठेस पहुची हो, या किसी के दिल को दुखाया हो, या व्यर्थ किसी की निन्दा की हो और मेरी बढाई।

अहिंसा की तरह अपरिग्रह को भी उन्होने बहुत बडा महत्व दिया। भगवान महावीर स्वय अपरिग्रही रहे। साधना जीवन मे आने के बाद वे पूर्ण नग्न रहे। वस्त्र तक को उन्होने अपने तन से अलग किया वे समझते थे कि जरा भी परिग्रह यदि शरीर पर रही तो आत्मा निर्भीक नही हो सकता क्योकि परिग्रह एक बहुत बडी कमजोरी को पदा करता है। जहा परिग्रह है, वहा याचना है, जहा याचना है वहा लोभ है, तृष्णा है और जहा तृष्णा है वहा ससार की समस्त बुराइया हैं। अत इस तृष्णा को खत्म करने के लिए भगवान महावीर ने धन और दौलत को क्षण भगुर नश्वर और अनित्य बतलाकर उनको हेय बताया और शरीर तथा यौवन को अपावन बतलाकर अरुचि पदा करवाई। इसके लिये सुन्दर से सुन्दर और आत्मीक भावनाओ का पाठ दुनिया के सामने रक्खा। इस तरह भगवान महावीर ने जीवन निर्माण और आत्म विकास के लिए सुन्दर से सुन्दर सिद्धांत का प्रसार किया जिससे ससार के हर वर्ग के प्राणी ने सुख और सतोष की साँस ली। पाखण्डवाद, रूढिवाद तथा धम के नाम पर होने वाले अत्याचारो से छुटकारा पाया। इन महान सिद्धातो से जनो का अपार साहित्य भरा पडा है। लेकिन दुख है कि साहित्य का आज ठीक ठीक उपयोग नही हो रहा है। न उसका प्रसार हो रहा है। जबकि आज का समय इसके लिये बिल्कुल उपयुक्त है।

जैन समाज पर एक बहुत भारी दायित्व है जिसका विचार करने की बहुत बडी जरूरत है। जनो ने यदि इसकी तरफ ध्यान नही दिया तो कहना पडेगा कि वे महावीर की पावन सस्कृति के साथ अन्याय कर रहे हैं। आज कहने के लिये कहा जाता है कि पहले की अपेक्षा जन धर्म का प्रकाश व प्रचार अच्छा है। हो सकता है यह कहना ठीक हो। लेकिन क्या यह सच नही है कि स्वय जैनो मे भगवान महावीर के साहित्य के प्रति उनके महान सिद्धातो के प्रति कितनी रुचि है? सच कहा जाय तो जनत्व खत्म होता जा रहा है। स्वय जनो मे अहिंसा की जगह हिंसा और अपरिग्रह की जगह परिग्रह का बोल बाला हो रहा है। जहा वीतरागी पूजे जाते थे वहाँ आज धन और वभव पूजा जाता है, जन समाज मे आज धन वभव को जितना स्थान है उतना स्थान अन्य विशिष्ठ व्यक्ति को नही। जहा दूसरा जगत आगे बढ रहा है वहा जैन समाज पीछे की तरफ जा रहा है। अब भी इसमे सकीर्ण भावनायें काम कर रही है। जातिमद और कुलमद का इसमे बोल बाला है। बेचारे गरीब का तो इस समाज में कोई स्थान ही नही है। इसी तरह धम

में भी रुढिवाद को स्थान दे रक्खा है। धम के नाम पर हमारा त्यागी वर्ग तक पथभेद और जातिभेद मे फसा हुआ है। आज के इस विकास के युग मे भी त्यागियो द्वारा पथ की लडाई, स्त्री पक्षाल की जिद्द, दस्सा और वीसाओ के भेदभाव कराये जाते हैं। हम नही समझ सकते इन चीजो का महावीर के धम से क्या सम्बन्ध है? जबकि धम पापी से पापी आत्मा को भी विकास की बात कहता है? क्या जन साहित्य की ये बातें असत्य है कि चाण्डाल जसी आत्मा मे भी सम्यक्त जसा महान् चमत्कार पदा हो सकता है। धम तो भेद भाव खत्म करता है। वह तो यह कहता है कि इस पथ भद को पदा करने वाले दुनिया से ऊचे नही उठ सकते। यह एक कषाय है। उन महात्माओ को इनसे क्या मतलब है? उनका काम तो सबको समान भाव से वीतरागता का पाठ पढाने का है। इसी तरह मन्दिरो मे भी यही झगडे चला करते है। कोई भला आदमी वहा बठकर आत्म निरीक्षण का पाठ पढ ही नही सकता है। जन समाज का काम है वह इन चीजो से ऊपर उठे। पतित पावन महावीर के धर्म का इन बातो से कोई मतलब नही।

अब हमे काम करना है। महावीर के सिद्धातो के प्रसार का और हमारे मौलिक इतिहास को ससार के सामने लाने का। आज हमारा इतिहास भी अन्धकार मे है। इसी का यह परिणाम हैं कि इतिहास के बडे-बडे विद्वान भी जैन धम के लिये गलत बात कह जाते हैं। जिससे लोगो मे जैन धम के प्रति गहरा अधकार बना रहता है। आज भी हमे लोग बौद्ध धर्म व हिन्दू धम की शाखा बतलाते हैं। जैनो की मूर्ति को बौद्धमूर्ति मानते हैं। स्तूप और चैत्यो के सबध मे तो इतनी भूल हो रही है कि इतिहासकार कहते हैं कि स्तूप बौद्धो के ही हुआ करते है जैनो के नही। कितनी भूल है यह? दुख है कि इस विकास के युग मे भी जैन महावीर के साहित्य और इतिहास को प्रकाश मे न ला सके। मैं तो कहूगा, विनम्र निवेदन करूगा कि जैन समाज समस्त प्रदशन मेला और प्रतिष्ठाओं, गजरथो को बन्द कर दे। इन प्रदशनो की कोई आवश्यकता नही हैं। इनसे जैनत्व नही जी सकता। जीने के दो ही साधन है एक साहित्य प्रसार और दूसरा इतिहास का अनुसन्धान। यदि हम ऐसा कर सकेगे तो हम भगवान महावीर की पावन सस्कृति को अमर करके अपने कत्तव्य का पालन कर सकेगे। प्रसार का मौका समाज के सामने आ रहा है।

☐ जो जानता है, वह ज्ञान है और जो देखता है, वह दशन है। ज्ञान तथा दशन के समयोग का नाम चारित्र है। —चारित्र पीहुड

☐ सम्यक् दर्शन, सम्यक् ज्ञान और सम्यक् चारित्र ये तीन रत्न हैं। इनमे से प्रथम मोक्ष का प्रथम सोपान है। —दशन पाहुड

भगवान महावीर और हमारा कर्त्तव्य

भगवान महावीर का जीवन सेवामय था। उनकी साधना, उनका त्याग और उनकी कठोर तपस्या सर्वोपरी है। उनके सिद्धात महान ही नहीं अपितु विश्व कल्याणकारी है। उनके प्रति हमारा सबसे महान कर्तव्य है कि जन तथा जैनेत्तर सभी को उनकी सही जानकारी स अवगत कराने के लिये सही तथा तथ्यो के साथ अधिकाधिक साहित्य का प्रकाशन कराये और जीवन मे उसे उतार कर दूसरो को भी प्रेरणा प्रदान करें।

भगवान महावीर जनो के अन्तिम तीर्थ कर थे। उनका भारतीय इतिहास मे एक महत्वपूर्ण स्थान है। भगवान महावीर का जीवन सेवामय था। उनकी साधना, उनका त्याग और उनकी कठोर तपस्या सर्वोपरि है। उनके सिद्धान्त महान ही नही किन्तु विश्वकल्याणकारी थे। विश्व कल्याण के लिए समार के अन्यतम राज्य वभवो एव सासारिक सुख सामग्री को त्यागकर वे घर से निकल वठे और कठिन से कठिन आपत्तियो का सामना करके उन्होने अपने सिद्धातो और विश्व-कल्याणमयी भावनाओ का प्रचार किया था। वे एक युगान्तकारी सुधारक महान पुरुष थे जिन्होने अहिंसा के आधार पर क्रांति का शखनाद किया।

भगवान महावीर का युग आज से भी भीषण और अ धकारमय था। उस युग का प्राणी दो तीन शक्तियो के शिकन्जे म था। एक तरफ धर्म गुरुओ का जोर था और दूसरी तरफ सामन्त शाही शक्तिया का जोर। मानव दानव बना हुआ था। उसकी पाशविक शक्तियाँ काम कर रही थी। स्वार्थ का जोर था। धर्म के नाम पर धर्मगुरु भोले प्राणियो पर अनेक प्रकार के अत्याचार कर रहे थे। पाखण्ड और रूढियो का नग्न नृत्य हो रहा था गरीब प्राणी सताये जा रहे थे। अनाथ और अबलाओ पर अत्याचार हो रहे थे। स्त्रियाँ गुलाम थी वे पशु की तरह सतायी जा रही थी। खुले आम गरीबो का शोषण हो रहा था। पशु और पक्षी भी धर्म के नाम पर मास-भक्षी स्वार्थियो द्वारा सताये जाते थे और पवित्र देवताओ के सामने उनकी गदन पर तलवारे चलाकर खून की नदिया बहाई जा रही थीं। चारो तरफ अन्याय और अत्याचार का जोर था जनता सत्रस्त थी, दुखी थी वह ऊब गई थी। अत्याचारोसे चारो तरफ त्राहि त्राहि मची हुई थी। ससार मे कोई नही था उनकी पुकार को सुननेवाला। ऐसे भीषण युग मे महावीर ने ज म लिया था और इन परिस्थितियो ने महावीर को बचैन कर डाला था। यही एक कारण था जिससे महावीर घर मे नही रह सके।

जगल मे आकर भगवान महावीर एकांत मे बठ गये और विचारने लगे । किस तरह इन हिंसात्मक प्रवतिया से प्राणियो को छुडाया जाय जिससे इन पाखडी धूर्तो से इन दुखी प्राणियो की रक्षा हो । विचारो के सघर्ष के बाद महावीर इसी निर्णय पर आये कि इन दुखी प्राणियो की रक्षा अहिंसा जैसी महान शक्ति से ही सकती है । इसके बिना इनकी रक्षा नही। यही इस युग की माग है। यह महावीर की अन्तरात्मा की पुकार थी । दृढ निश्चयी महावीर आगे बढे। उन्होने अहिंसा के आधार पर क्राति का बिगुल बजा दिया और समस्त प्रतिद्वन्दी शक्तियो को चुनौती दे डाली ।

इस चुनौती ने उनको कपा डाला। सब शक्तिया महावीर को कुचलने के लिये सगठित रूप से उनके सामने आई । महावीर तो वीर थे उन्होने आत्मा के अमरत्व को समझ लिया था । इसमे अनुपम शाति और अहिंसा का प्रकाश था । महावीर के अदम्य उत्साह और निस्वार्थ त्याग के आगे वे सब शक्तिया हतप्रभ हो गई । दुखी जनता महावीर की तरफ दौड पडी और कहने लगी अहिंसा, अहिंसा । अहिंसा के झण्डे के नीचे महावीर ने सब को आश्रय दिया और बिहार के राजगृह नगर के विपुलाचल पर्वत पर विराजमान होकर दुखी और सन्तप्त आत्माओ को सबसे पहले अहिंसा और अपरिग्रह का सदेश सुनाया । भगवान महावीर ने उन दुखी आत्माओ को बतलाया कि दुनिया मे धर्म वही है जिसमे विश्वबधुत्व की भावना है जिसका आदर्श यह जियो और दूसरो को जीने दो, का है। जहा प्राणी हित नही वहा धर्म नही । धर्म आत्मा का स्वभाव है । जहा आत्मा मे कोई विकार नही आ सकता। जहा विकार है वहा कषाय है, जहा कषाय है वहा दुख है और जहा दुख है वहा आत्मशाति हो नही सकती । आत्मशाति अहिंसा से मिल सकती है । धर्म मे प्राणी को विकास मिल सकता है । वह बधन से नही चलता । वह तो बधनों को तोडता है । धर्म मे ऊच नीच कल्पना नही होती । वहा तो राजा और रक को एक लांछन नही लग सकता । उसका काम होता है पतित से पतित आत्मा का उद्धार करना। जिसकी शुद्धि अहिंसा से ही हो सकती है । अत हर प्राणी इस अहिंसा का आश्रय ले कर अपना विकास करे ।

अगर हमे अन्याय और अत्याचारो से छूटना है तो सबसे पहले अहिंसा के साथ-साथ हमे अपरिग्रह का पाठ भी पढना होगा । परिग्रह बुरा है । उसमे शोषण है। परिग्रह मे सुख नही क्यो कि जहा वासना है वहा चाह है, जहा चाह है वहा तृष्णा और जहा तृष्णा है वहा उसकी पूर्ति के लिए कितने ही गरीब और अनाथ सताये जाते हैं । परिग्रह प्राणी अनेको का शोषण करके अपनी वासनाओ का परिहार करते है । अत कभी सग्रह मत करो । इसके अलावा महावीर ने कर्मवाद स्याद्वाद और अनेकान्त ऐसे महान सिद्धान्तो पर भी प्रकाश डाला । ये सिद्धान्त प्राणियो को अधविश्वास सम्प्रदायवाद और दूषणो से छुडाते है और वे ठीक ठीक मार्ग निर्देशन किया करते हैं । वास्तव मे यह महावीर का उपदेश उस युग की जनता के लिए पथ प्रदर्शक बना और हजारो लाखो की सख्या भगवान महावीर की अनुयायी बन गई ।

आज भी महावीर के इन महान सिद्धान्तो की आवश्यकता है क्योकि आज का युग भी युद्ध जैसी हिंसक प्रवतियो की तरफ बढा हुआ है । एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को कुचलना चाहता है । स्वार्थ प्रवतिया बढ चुकी है । चारो तरफ शोषण और काला बाजार का जोर है । लोग अधिक से अधिक दुखी हैं । लोगो का नैतिक पतन अधिक से अधिक हो चुका है । राष्ट्र के नाम पर चारो तरफ लूट खसोट है । अगर इन प्रवतियो से बचा सकते है तो भगवान महावीर के सही सिद्धान्त बचा सकते है जिनके प्रचार की बडी आवश्यकता है ।

इसके लिए भगवान महावीर के एकमात्र अनुयायी जनो को प्रयत्न करने की आवश्यकता है। लेकि" दुख है कि जनो ने आज तक इसके लिए कोई प्रयत्न नही किया। इसी का यह परिणाम है कि आज का विश्व भगवान महावीर के पावनतम सिद्धान्तो से अपरिचित ह और वह सुखी और शात हो ही नही सकता। धर्म वही जीवित रह सकता है जिसके सिद्धा त ससार की किताबो मे नही, प्राणी के जीवन मे और उसकी क्रियाओ मे जीवित रहे। सिद्धान्त पालन करने की चीज है। जहा तक मेरा विचार है आज स्वय जैन भी महावीर के सिद्धान्तो से च्युत होते जा रहे है। कही भी ज नत्व दिखाई नही देता। जनो मे अहिंसा की जगह स्वार्थ, ईर्ष्या, द्वेष, अभिमान, दूसरो की निन्दा, अभक्ष्य भक्षण, काला बजार, घूमखोरी, दूसरो को धोखा देना आदि का काफी जोर देखा जा रहा है। आज इन महावीर के सपूतो मे मतभेद और जातिभद का ही अधिक स्थान है जिनको खत्म करने के लिए महावीर ने अपने आपको खपा डाला था।

आज जैनो के बीच तीन दीवारे तो भयकर चट्टानो के रूप मे ऐसी खडी हैं जिनसे टकरा कर ये जन खत्म हो रहे है। आज वह इनको कहा तोडने का प्रयत्न करता है ? आज इन चट्टानो की रक्षार्थ तीर्थ और मन्दिर के झगडे के रूप म लाखो रुपये समाज के बर्बाद हो रहे है। वे अहिंसा के पुजारी यह नही समझते कि वीतरागता का हनन है। आज उन शात मूर्तियो के नाम पर ऐसा होना क्या हमारे लिए शर्म की बात नही है ? हमारे लिए यह विचारणीय बात है। हम सम्प्रदायवाद के शिकार हो गये है। इसी तरह हममे आज सहानुभूति भी नही है। आज जन जन को नही चाहता। चारा तरफ फूट नजर आ रही है। कोई घर इससे बचा नही। जिस धर्म म धर्मात्मा की चाह नही वह कसे जी सकेगा? आज इस समाज म गरीबो की भी कमी नही लेकिन उनको कोई छाती से लगाने वाला नही। चाहे वह रोटी के टुकडे के लिए तरसता रहे या भूखा ही मर जाय। क्या यह ज नत्व है ? भगवान महावीर ने कही भी यह नहो कहा कि तुम मन्दिर और मूर्तियो के सामने लाखो मन चावल, सोना और चादी चढाओ तो ही धर्म होगा। उन्होने तो प्राणि हित का धर्म माना है। लेकिन आज जनी कहा समझता है? यह तो भगवान महावीर को भी अपनी तरह परिग्रहधारी बनाना चाहता है। आज मन्दिर के धन का उपयोग क्या होता है ? मन्दिर के धन से आज समाज के पूजीपतियो का ही पोषण हो रहा है जबकि गरीबो के पेट मे रोटी भी नही। समाज को सोचना चाहिए अगर हम इन बुराईयो को निकाल दे तो हम जैनत्व का प्रचार करने के लिए आगे बढना चाहिए।

महावीर के धर्म प्रचार के लिए साहित्य प्रसार की जरूरत है इसके बिना प्रसार नही हो सकता। इसमे भी जैन लोग असफल हो रहे हैं। प्रति वर्ष महावीर जयन्ती उत्सव होता है। हजारो रु० उस महान आत्मा के नाम पर व्यय होते है। लेकिन कभी हमने सोचा कि उनके सिद्धान्तो क प्रचार के लिए भी हमने कोइ खास प्रयत्न किया। वास्तव मे हमारे द्वारा कोई प्रयत्न हो रहा है और तो क्या हम स्वय महावीर भगवान का कोई ऐसा जीवन ग्रथ भी प्रकाशित नही करा सके जिससे जनता भगवान महावीर और उनके सिद्धान्तो को ठीक ठीक समझ सके। अगर ऐसा एक भी साहित्य निकल जाता तो जैनो के सबध मे समय समय पर प्रकाशित होने की ही भ्रामक बातें इधर साहित्य म नही निकलती इस पर जैनो को ध्यान देना चाहिए।

इसी तरह हम मे और भी कमी है जिससे हमारा जैनत्व खत्म हो रहा है। अत जैन समाज के विख्यात साहित्यिक और विद्वानो को कदम बढाना चाहिए जैन धर्म परिग्रह धारी विलासी नताओ से बढकर विकास नही पा सकता उनके विकास के लिए कर्मठ त्यागियो और साहित्यकारो की जरूरत है। आशा है समाज मेरे निवेदन पर ध्यान देगा और वह ठीक ठीक सोचने की चेष्टा करेगा कि भगवान महावीर के प्रति हमारा क्या कर्तव्य है ?

भगवान महावीर का समाजवाद

भगवान महावीर के जीवन का आधार संयम, तप और त्याग से परिपूर्ण था। उनके आचार, विचार एवं व्यवहार में पूर्ण समता का भाव था जिसे आप समाजवाद भी कह सकते हैं।

भगवान महावीर के जीवन से व उनके सिद्धान्तों से सम्बन्धित साहित्य काफी प्रकाशित हो गया है और वर्तमान में भी प्रकाशित किया जा रहा है। भारतीय जनमानस ने उनके प्रति अगाध श्रद्धा पैदा करने के लिए उनकी प्रतिमाओं का निर्माण कराया व मन्दिर जैसे एकांत साधनागृहों का निर्माण करवा करके उन साधनागृहों में प्रतिष्ठा पूर्वक मूर्तियों को विराजमान किया। प्राचीन कवियों ने उनकी प्रतिष्ठा देने के लिए स्तुति के रूप में अनेक स्तोत्रों और काव्यों की रचना की। उनके नाम बहु चर्चित करने के लिए अनेक चमत्कारिक घटनाओं का गठन किया। लेकिन आज के मानव ने विश्व वंद्य भगवान महावीर को व उनके पवित्र सिद्धान्तों को समझने का व जीवन में अवतरण करने का प्रयास नहीं किया, जिससे सही रूप में राष्ट्र का निर्माण नहीं हो सका और न राष्ट्र के प्राणियों में चारित्रिक चेतना आ सकी। महापुरुष का व्यक्तित्व भक्ति और स्तुतियों से नहीं नापा जा सकता, उनके व्यक्तित्व का सम्बन्ध उनके सिद्धान्तों और आचरणों से है।

विश्व की इस विशाल धरती पर अनेक महापुरुषों ने जन्म लिया है लेकिन महावीर के जीवन में बड़ी विभिन्नतायें रही हैं। अन्य महापुरुषों का अवतरण ईश्वरवाद को लेकर हुआ है। महावीर का जन्म हुआ है राष्ट्र के प्राणी मात्र के विकास के लिए और उनके उत्थान के लिए। महावीर की आत्मा में मानवता का विकास था। जिसका आधार अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त जैसे महान सिद्धान्त थे।

महावीर एक विशाल लोकप्रतिष्ठित राजघराने में पैदा हुए। विशाल प्रासाद उनको रहने के लिए मिले। लेकिन मानवतावादी महावीर ने इनको स्वीकार नहीं किया। वे नहीं चाहते थे कि राज्य भोग करूं और विश्व के प्राणी अपमानना का जीवन लेकर दुखी बने रहें। इसलिए महावीर ने माता-पिता आदि की समस्त प्रार्थनायें अस्वीकार करते हुए एक ऐसा जीवन जीया जिस जीवन का लक्ष्य समता का आधार था।

भगवान महावीर एक अहिंसक समाज की रचना करना चाहते थे। वे नहीं चाहते थे कि देश साम्प्रदायिकता या जातीयवाद के आधार पर जीवित रहे। उनकी अहिंसा का लक्ष्य था प्राणिमात्र

का सरक्षण वे चाहते थे राष्ट्र मे भाई चारा, प्रेम और सहअस्तित्व की भावनायें पदा हो। भगवान महावीर जातिवाद और ऐश्वर्य्यवाद के घोर विरोधी थे। उन्होने अपने सयमी जीवन मे सबसे पहले जातिवाद पर जबदस्त प्रहार किया। वे नही चाहते थे कि राष्ट्र के प्राणियो मे ऊ च-नीच, राजा और रक की भावनायें पनपें। इन भावनाओ मे राष्ट्र जीवित नही रह सकता। इसीलिए महावीर ने अपने प्रवचनो मे और सभा स्थानो मे सब ही जगह के प्राणियो को समान स्थान दिया और उन्होने घोषित किया कि इस विशाल राष्ट्र मे पदा होने वाले समस्त प्राणियो को समान रूप से जीने का हक है। इस अहिंसक राष्ट्र मे उत्पन्न होने वाली हर सम्पत्ति राष्ट्रीय सम्पत्ति है। उनको नष्ट करने का हक किसी भी वर्ग विशेष व शक्ति विशेष को नही है। अहिंसक समाज की स्थापना मे भी भगवान महावीर ने इन्ही सिद्धान्तो को प्रमुखता दी और उन्होने राष्ट्र मे दो सज्ञाओ को जन्म दिया एक श्रावक और एक साधु। साधु जीवन पूण अहिंसक और पूण अपरिग्रही रहा और श्रावक एक देश अहिंसक रहा। इन दोनो सज्ञा-ओ से राष्ट्र पनपा और वह प्रगति के पथ पर बढा। सुखी और समृद्धिशाली बना। महावीर ने इन विचारो को मूत रूप देने के लिए अपना समग्र जीवन अर्पित किया।

आज उन्ही विश्व वद्य भगवान महावीर के जयती समारोह पर राष्ट्र के प्राणियो को आत्म निरीक्षण करना है कि आज हम कहा तक महावीर की उक्त वाणी का समादर कर रहे हैं ? महावीर भक्त नही चाहते। महावीर चाहते हैं सिद्धान्तो का परिपालन और राष्ट्र का पूण सरक्षण। आज इन पवित्र सिद्धान्तो के परिपालन की उपेक्षा से समस्त राष्ट्र और देश दुखी है। राष्ट्र मे महावीर जैसे सही नेता नही है। महावीर एक ऐसे महामानव थे जिनके जीवन का आधार सयम, तप और त्याग था, जिनके जीवन मे शोषणहीन जीवन का महात्म्य था। उनका लक्ष्य महान था, हृदय विशाल था। प्राणि मात्र के उद्धार के लिए वे पदल विहार करते थे, गरीब और अमीर की झोपडी म समान रूप से जाते थे। जन सपर्क उनका लक्ष्य था वे पूण दिगम्बर थे, न उनको खाने की चिता थी और न पहनने की। महिलाओ के विवाह के लिए उनके शासन म समान अधिकार थे, चदना जैसी दासी के उद्धार के लिए जो कदम उन्होंने बढाये उनका समथन स्वर्ग के देवो तक ने किया। आज राष्ट्र के प्राणियो को और स्वय जैन समाज को सोचना चाहिए कि हम कहा पर हैं ? और हम राष्ट्र के प्रति, समाज के प्रति कितने वफादार हैं ? आज राष्ट्र मे अन्न और जल तक का अभाव है। इन समस्याओ को हल करने के लिए महावीर ने हमको अनशन और रस परित्याग जैसे तपो के परिपालन के लिए आदेश दिये लेकिन आज हम इन समस्त आदेशो को भूल गये। आज राष्ट के सामने अन्न पानी और चीनी की समस्यायें मु ह बाये खडी है वहा हम अधिक खाने लग गये है और हमारा जीवन स्तर गिरता जा रहा है। क्या आज का जैन समाज इन बातो पर विचार करेगा ? देश म समाजवाद का नारा दिया जा रहा है वह नारा सही रूप मे महावीर के सिद्धान्तो के परिपालन से ही साथक हो सकता है ? आशा है जैन समाज मेरे विचारो पर अवश्य ध्यान देगा। □

महान क्रांतिकारी भगवान महावीर

समाज मे व्याप्त रूढियो को समाप्त कर भगवान महावीर ने अहिंसा, अपरिग्रह, अनेकात और स्यद्वाद के सिद्धातो को साव भौमिक और सावकालिक सिद्धात प्रतिपादित किया, आज हमारा ज्ञान अज्ञान मे परिणित है उसमे आत्म निरीक्षण नहीं। इसी से हम दुखी हैं।

भगवान महावीर ऐतिहासिक महापुरुष तो हैं ही लेकिन वे अपने युग के क्रांतिकारी महामानव भी थे। अपने समय मे भगवान महावीर ने धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याओ को हल करने के लिए असाधारण कदम उठाया और उसम वे पूर्ण रूप से सफल हुए।

भगवान महावीर ने वैशाली के पास क्षत्रिय कुण्डग्राम मे राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर पर जन्म लिया था। उनके जन्म समय पर कितने ही आश्चर्यकारी चमत्कार हुए जिनसे महावीर का जन्म असाधारण पुरुष जैसा माना गया था। सब जगह उनके जन्म की खुशिया मनाई गई। कुछ बाहर के लोग भी आये और उन्होने भगवान महावीर को अपने हाथो मे उठाकर अपूर्व नृत्य के साथ खुशिया मनाई। भगवान महावीर के बाल्यकाल मे कई असाधारण घटनायें हुई जिनसे वे सन्मति-वीर अतिवीर और वर्धमान के नाम से पुकारे जाने लगे। इन घटनाओ के कारण वे काफी लोकप्रिय हो गये और सर्वत्र उनकी ख्याति फैल गई। उनके साथ उनके ज्ञान का विकास भी अपने आप होता गया जिस से वे स्वयभू कहलाये। बाल्यकाल से ही उनमे करुणा थी और लोकहित के कार्यो मे उनकी अभिरुचि थी। वे हमेशा चाहते थे कि विश्व के समस्त प्राणी सुखी और समृद्धिशाली हो। लेकिन वह समय भी बडा विकट था। धर्म के नाम पर बडे बडे अत्याचार किये जाते थे। अबलायें सताई जाती थी। मन्दिर और मठो के अन्दर धर्म के नाम पर खून की होलिया खेली जाती थी। चारो तरफ त्राहि-त्राहि की आवाज थी। लोग बडे दुखी और त्रस्त थे। इन सब अत्याचारो ने महावीर का हृदय हिला दिया था और वे बडे बेचैन थे। इन समस्याओ को हल करने के लिए कभी कभी वे एकात चितन करते थे और वे सोचते थे कि इन सबके लिये क्या कदम उठाया जाय?

भगवान महावीर एक सम्पन्न एव वैभवशाली घराने मे पैदा हुए थे किन्तु वह वैभव उनको खीच नही सका। उनका एक ही सकल्प था कि मैं इन समस्याओ से विश्व के प्राणियो को मुक्त करू। एक दिन भगवान महावीर चितन मे बैठे थे। माता त्रिशला उनके पास आई और बोली 'बेटा, मैं एक निवेदन करना चाहती हू।' भगवान महावीर बोले "मा, क्या कहना चाहती हो'। माताने कहा, 'अब तू

युवा हो गया है मैंने एक योग्य राजकुमारी की खोज की है, मेरी इच्छा है कि तू विवाह बधन को स्वीकार कर।" इन शब्दो को सुनते ही महावीर का माथा ठनक उठा। उन्होने कभी सोचा ही नही था कि मुझे किसी बधन मे बधना है। वे माता से बोले, मा अब मैं किसी बधन मे नही बधना चाहता। मेरा पथ दूसरा है मुझे लोकहित के लिए आगे बढना है। विश्व के समस्त प्राणी यह देखना चाहते है कि मेरा कदम किस ओर उठता है।" अत यह प्रस्ताव मैं स्वीकार करने के लिये तयार नही। माता त्रिशला बडी उदास हुई। भगवान महावीर खडे हो गये। इतने मे कुछ समझदार लोग आये। महावीर ने अपने विचारो को रखा। सबने उनके विचारो की सराहना की और महावीर बढ गये एकात स्थल की तरफ जहा बठकर उनको इन समस्याओ के सम्बन्ध मे विचार करना था। उस युग के सामने धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक समस्याये बडा विकट रूप लेकर खडी थी।

भगवान पार्श्वनाथ के बाद धर्म का रूप विकृत हो गया था और क्रियाकाण्डी लोगो के हाथ मे धर्म की बागडोर चली गई थी। धर्म ने रूढी का रूप ले लिया था। मन्दिर और मठो मे धर्म के नाम पर खून की नदिया बहती थी। अबलाओ पर अत्याचार होता था। चारो तरफ त्राहि त्राहि मची हुई थी। भगवान महावीर इन सबके खिलाफ एक सुदृढ कदम उठा कर एक धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांति रखना चाहते थे। वे चाहते थ सब प्राणी सद्भाव।

इसके लिये भगवान महावीर ने ऋजुकुला नदी के तट पर एकान्त साधना की और वहाँ पर वर्षो तक की। तब उन्होने विश्व शान्ति के लिये हल निकाला, अहिंसा और अपरिग्रहवाद। उन्होने अहिंसा का शस्त्र हाथ मे उठाकर विपुलाचल पवत की विशाल सभा मे घोषित किया कि ससार मे व्याप्त विषमतायें यदि दूर हो सकती हैं तो अहिंसा और अपरिग्रह के बल पर ही। अहिंसा मत्री का प्रचार करती है और अपरिग्रह मानव मे व्याप्त असमानता को दूर कर सकती है। इसके बिना विश्व मे शान्ति सभव नही। महावीर की इस घोषणा ने बडी हलचल मचाई। मठाधीशो के आसन डोल उठे। वे सब मिल कर महावीर के खिलाफ विद्रोह के लिए खडे हो गये। उन्होने महावीर के खिलाफ हर उपाय किया लेकिन वे सफल न हो सके।

महावीर ने धार्मिक रूढियो को खत्म किया और विश्व के प्राणी स्वय जीयें और दूसरो को जीने दे यही धर्म का रूप बतलाया। इस सदेश को सुनकर समस्त प्राणी दौड पडे महावीर की तरफ। महावीर कल्याणवान थे। उन्होने सब को गले लगाकर मत्री और प्रेम का पाठ पढाया। सामाजिक विषमता दूर करने हेतु उन्होने जातिवाद को धर्म मे कोई हिस्सा नही दिया। वे कहते थे धर्म वस्तु स्वरूप है। प्राणिमात्र मे वह व्याप्त है। इसमे वर्णभेद और जातिभेद का प्रश्न नही आता। इस परिवतन के लिए उन्होने जबदस्त क्रांति की। सबसे पहले उन्होने चडाल को गले लगाया और कहा कि धर्म मानवता का पाठ पढाता है वह उठाता है। लेकिन गिराता नही। वह विशाल करता है लेकिन सकीर्ण नही। इस सम्बन्ध मे जैन साहित्य मे काफी उल्लेख है।

इस तरह आर्थिक क्रांति भी उस महामानव ने की। इसके लिये वे स्वय अपरिग्रही बने और उन्होने कहा कि सग्रह उतना ही करो जितने की तुम्हे आवश्यकता है। अधिक सग्रह पाप है। इसके लिए उन्होने करुणा दान सम्पत्ति दान बानकर अनेक मार्ग प्रशस्त किये।

इन विचारो के प्रचार के लिये महावीर स्वामी ने भारतवर्ष के कोने-कोने मे विहार किया और उन्होने उन विषमताओ को दूर किया जिससे इस युग मे विश्व शान्ति हुई। महावीर स्वामी के इन विचारो से लाखो प्राणी प्रभावित हुए और वे इनके शिष्य बन गये।

इन सिद्धान्तो को जीवन देने के लिए महावीर स्वामी ने यह बताया कि हम अनेकान्त और स्याद्वाद का सहारा ले जिससे विचार भेद पदा न हो। महावीर स्वामी चाहते थे कि आदमी हठाग्रही न बनें। स्वय चाहते थे कि मैं कहता हू वही ठीक है यह मुझे कदाग्रह नही। मैं तो चाहता हू कि मानव स्वय ही बुद्धि से कसौटी पर हर बात को कसे। लेकिन वह एकान्ती नहीं बनें। इसी के लिए उन्होंने स्याद्वाद का सहारा बतलाया।

महावीर स्वामी के उक्त अहिंसा अपरिग्रह, अनेकान्त और स्याद्वाद के सिद्धान्त सार्वभौमिक और सार्वकालिक हैं। आज भी विश्व को इनकी आवश्यकता है। ससार आज इन सिद्धान्तो को भूल चुका है। इसी का यह परिणाम है कि आज का विश्व दुखित और त्रस्त है। आज का ज्ञान अज्ञान मे परिणत है। उसम आत्म निरीक्षण नही। इसी से हम दुखी हैं।

जैनो का कर्तव्य है कि वे स्वय भगवान महावीर के मार्ग पर चलें और विश्व को इसके लिए प्रेरित करें। ये ही सच्ची श्रद्धाजली उन महामानव के चरणो मे हो सकती है।

☐ जो समर्थ है, वह करता है, किन्तु जो समर्थ नही है, वह श्रद्धान करे।

—दर्शन पाहुड

☐ आत्मा का आत्मा से लीन होना स्पष्ट रूप से सम्यक्दर्शन है, आत्मा का ज्ञान होना सम्यक्ज्ञान है और आत्म रूप परिणमन करना चारित्र है। यह निश्चय रत्नत्रय कहा गया है।

—भावपाहुड

☐ रत्नत्रय को प्राप्त नही करने के कारण यह जीव दीर्घ ससार मे भ्रमण कर रहा है। —भावपाहुड

महावीर की मानवतावादी शिक्षायें

राष्ट्र का सही धम अहिंसा ही हो सकता है। अहिंसा मे प्रेम और वात्सल्य के साथ सह अस्तित्व की विशाल धारा भी प्रवाहित है जिससे राष्ट्र सुख और शांति मे समृद्धि होती है। आज भग वान के यह मानवतावादी शिक्षायें दिन पर दिन लोप होती जा रही है सवत्र ही इसके विपरीत विचारधारा चितन देखने को मिलती है।

जैन साहित्य एक ऐसा विशाल साहित्य है जिसम मानव जीवन क विकास और निर्माण के सम्बध म विस्तृत प्रकाश डाला गया है। जैन साहित्य का दृष्टिकोण विशाल और [illegible]। उसमे मानवीय भावनाओ को विकसित करन क लिय अनेक मार्ग बतलाय है। जैन साहित्य म [illegible] र्णता और अवहेलना को कोई महत्व नही दिया है। उसम वर्णभेद और जातिभेद [illegible] विचारो को तो स्थान दिया ही नही गया है, लकिन पथभेद और धमभेद [illegible] महत्व नहा [illegible] महावीर की विचार धारा हमेशा अहिंसात्मक रही है। [illegible] अहिंसा स दिया है। महावीर चाहत थ कि राष्ट्र का सही धम अहिंसा [illegible] प्रेम और वात्सल्य का प्रादुर्भाव ता है [illegible] विशालधारा [illegible] जिसम राष्ट्र सुख और शान्ति म समृद्ध होता रह।

भी धर्मगुरुओ के हृदय मे कोई हलचल नही होती थी। पशुओ के साथ जन जीवन भी असुरक्षित था। अबलायें सताई जाती थी, वेची जाती थी। खुले रूप म मातृत्व का कोई प्रतिकार नहीं होता था।

महावीर पृथ्वी पर मानव रूप मे आये। राज्य घराने म एक सम्राट के घर मे जन्म लिया। अनेक वैभवो मे उनका परिपालन हुआ लेकिन इन अत्याचारो और अनाचारो ने महावीर को सुख से नही बठने दिया। महावीर बालक था फिर भी विचक्षण था। उनमे विवेक था समझ थी। उनमे तुलना करने की शक्ति थी। वे यह भी समझते थे कि मैं इनका प्रतिकार करू और कोई सुदृढ कदम इसके खिलाफ उठाऊ जिससे राष्ट्र मे शाति स्थापित हो और प्राणियो म स्वावलम्बन की भावना जाग्रत हो। इन विचारो को मूर्त रूप देने के लिए महावीर ने एकात साधना का आश्रय लिया। उन्होंने राज्य और वैभव सब छोडा। वे निस्पृही बने। दिगम्बर रूप धारण करके साधना के क्षेत्र म उतरे। बारह वष तक मौन जीवन म घूमते रहे। ना वे बोले ना ही किसी भी तरह का उन्होंने अपना अभिप्राय प्रकट किया। देश की समस्त परिस्थितियो का अध्ययन करने के बाद उन्होंने यही निर्णय लिया कि इन समस्त अत्याचार धार्मिक रूढियो का प्रतिकार यदि हो सकता है तो अहिंसा से, सघष से नहीं, युद्ध से नही। महावीर ने सही रूप मे अपना कदम उठाया। उन्होंने अपने कण कण मे विचारो मे और व्यवहारो म अहिंसा को स्थान दिया। उसको जीवन मे उतारा और विश्व को उद्घोषित किया कि अहिंसा ही धर्म है और इसी से मानव व प्राणि मात्र को त्राण मिल सकता है। महावीर की वाणी मे स्थिरता थी। आत्मीयता थी। करुणा थी। वात्सल्य और प्रेम का उमडाव था। उनके चारो तरफ शाति कणो का साम्राज्य था। जिससे जनमानस डोलित हो गया। वह दौड पडा उन महान मानव के चरणो मे और कहने लगा "हे महा मानव करुणा मूर्ति, हमे अभय दो, सात्वना दो। हमारा सरक्षण करो।"

महावीर के पास कोई मन्त्र नही था। वे जादूगर नही थे। उनके पास अहिंसा की एक महान साधना थी जिसका सीधा सम्बन्ध मानवता मे था। महावीर ने कहा कि यदि जीना चाहते हो तो जीने भी दो। यही एक मन्त्र है और यही एक धम है। महावीर ने इनके साथ कुछ अन्य भी शिक्षायें दी जो महान थी। जिनसे जीवन का निमाण होता था, विकास होता था और राष्ट्र के प्राणी सुखी होते थे। महावीर चाहते थे कि प्राणी ऐसे जीवन का निमाण करें जिसमे मानवता को आँच नहीं आवे। उन्होने कहा कि सरक्षण के साथ बोलना भी सही रूप से सीखो रहना भी सीखो जिससे दूसरो के हृदय का अपहरण न हो। इनके साथ सयमी बनो और विश्व को सुखी बनाने के लिए शोषण की भावना को खत्म करो। इसके साथ महावीर ने यह भी कहा कि हृदय मे अनेकान्त को भी स्थान दो। जिसमे तुम जिद्दी बनकर किसी को दुखी करने की नही सोचो। हमेशा यही सोचो कि हर व्यक्ति अपनी दृष्टि से ठीक है और मेरी दृष्टि से भी ठीक हो सकता है। महावीर चाहते थे कि हृदय में विशालता, उच्च चितन से ही टिक सकती है। उच्च चितन से विशालता और विनम्रता का प्रजनन होता है। महावीर की इन शिक्षाओ को हर प्राणी ने अपने हृदय म स्थान दिया और वह सुखी बना। राष्ट्र कभी दुखी नही हो इसके लिए महावीर ने सयम और त्याग के नाम पर अनेक नियम व उपनियम बनाये और प्राणी को मर्यादा मे बाधने का प्रयास किया। वे चाहते थे कि कोई उच्छ्रृखल और

भ्रताचारी न बनें। इसके लिए व्रत उपवानों की महत्त्वपूर्ण व्यवस्थायें बांधी। संघ व्यवस्था कायम की। उसका यही परिणाम रहा कि महावीर का शासन सुदृढ़ रहा और समृद्धिशाली भी रहा।

आज भी इन्ही सिद्धान्तो की देश मे आवश्यकता है। आज देश की स्थिति विचित्र है। सारा विश्व दुखी है। विनाश के कगार पर खड़ा है। युद्ध की ज्वालायें फैली हुई हैं। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को खाना चाहता है। भारत की यही स्थिति है। यहा राजनीति के नाम पर राष्ट्र की हालत खराब है। रक्षक ही भक्षक बन गये हैं। भ्रष्टाचार और अनाचार का जोर है। चारो तरफ देश दुखी है। अन्न का अभाव है और शोषण का जबर्दस्त साम्राज्य है। ऊपर से लेकर नीचे तक स्वार्थ का बोल बाला है। धर्म का नाम लिया जाता है लेकिन धर्म और नैतिकता देखने को नही मिल रही है। करों का जोर है और उनको चुराने का भी जोर है। चोर और डाकुओं की हर हर जगह पर भरमार है। जीवन और खानपान, पहनाव और आचार बिगड़ चुका है। मा, बहनें और बेटियां असुरक्षित हैं। खाना-पीना और पहनना ही जीवन है। सन्तोष की जगह तृष्णा का बोल बाला है। ऐसी विषम स्थिति मे भी देश को त्राण दे सकते हैं तो महावीर के सिद्धान्त ही दे सकते हैं। आवश्यकता है सही रूप से महावीर के सिद्धान्तो को जीवन मे उतारने की।

☐ आज भी जीव रत्नत्रय से शुद्ध होकर आत्मा का ध्यान कर इन्द्रत्व (उत्तम पद) को प्राप्त करता है। —मोक्षपाहुड

☐ सम्यक् दर्शन, ज्ञान और चारित्र ही शरण है। इसलिए श्रद्धा के साथ सेवन करें। —कार्तिकेयानुप्रेक्षा

☐ सम्यक्दर्शन, सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र तथा तप ये चार आराधना हैं। ये चारो ही आत्मा में स्थित हैं, इसलिए आत्मा ही मेरे लिए शरण है। —मोक्षपाहुड

भगवान महावीर के सिध्दांत और आज का विश्व

भगवान महावीर एक महान क्रांतिकारी महापुरुष के रुप मे इस पृथ्वी पर आये – उन्होंने उस युग के त्रस्त प्राणी की जो सेवा की, उपदेश दिये, मार्ग प्रशस्त किया–उसकी आज के विश्व मे उस समय से भी अधिक आवश्यकता है, काश – हम उनके सिध्दांत का व्यापक प्रचार – प्रसार कर मानव को सही मार्ग बता सकें।

विश्ववंद्य भगवान महावीर के विश्वव्यापी व्यक्तित्व से आज सारा जगत प्रभावित है और वे एक आध्यात्मिक महापुरुष के रूप मे भारतीय जनता द्वारा पूजे जाते हैं। लेकिन भगवान महावीर के सम्बन्ध मे मेरा चिंतन बिल्कुल भिन्न है। मैं उनको एक राष्ट्रीय महापुरुष के रूप मे मानता हूं। भगवान महावीर एक ऐसे युग मे पैदा हुए थे जिस युग मे मानवता कराह रही थी और राष्ट्र का हर प्राणी त्रस्त और दुखी था। जातिभेद, वर्गभेद और धर्मभेद के नाम मे राष्ट्र का हृदय विदीर्ण हो रहा था। मानव मानव मे भेद की खाइयां पड़ी हुई थी। अबलायें गायों की तरह चौराहों पर खड़ी करके बेची जाती थी। महावीर के सामने राष्ट्र की यही स्थिति मुंह बाये खड़ी थी जिसको देखकर महावीर जैसा महापुरुष उद्विग्न था। राष्ट्र की इस भयावह स्थिति ने महावीर के हृदय को झकझोर डाला था। भगवान महावीर इन सब पर विचार करने के लिए एकान्त कक्ष मे घण्टों तक बैठा करते थे। उनकी अन्तरात्मा उन्हें यही जवाब देती थी कि महावीर इस विशाल वैभव के बीच बैठकर इन समस्याओं का हल नहीं निकल सकता है। इन समस्याओं के हल के लिए स्वयं को राष्ट्र के लिए एक योगी के रूप मे अर्पण करना होगा तब ही राष्ट्र के प्राणियों को शान्ति की श्वासें मिल सकेंगी। अन्तरात्मा की इस आवाज को भगवान महावीर ने स्वीकार किया और वे योगी जीवन के लिए राष्ट्र रक्षा का संकल्प लेकर घर से बाहर निकल पड़े। उन्होंने अपने आप को राष्ट्र के लिए अर्पित किया।

समस्याओं का हल [illegible] के लिए उन्होंने [illegible] शान्ति और सामाजिक शान्ति आवश्यक [illegible] और [illegible]। भगवान महावीर ने [illegible] [illegible] विचार [illegible] और [illegible] [illegible] मानव [illegible], [illegible] और पशु [illegible]। [illegible] साथ [illegible]

और जाति वाद पर उन्होंने प्रहार किये। ऊंच और नीच की भावनायें खत्म की। मानवता का साम्राज्य कायम करने के लिए समता आधार पर समाज की रचना की। योगी जीवन मे आने के बाद भगवान महावीर पूर्ण अपरिग्रही बने रहे। उन्होंने बतलाया कि शोषणहीन जीवन के बिना अहिंसा पनप नहीं सकती। और मानव समता के आधार पर ही जीवित रह सकता है। इसलिए भगवान महावीर ने जबर्दस्त अहिंसक क्राति की और देश व राष्ट्र को अहिंसा के आधार पर ही प्राणवान बनाया, उन्होंने वर्ण-भेद, जातिभेद को खत्म किया और ऊंच नीच की भावनायें खत्म करके एक आदर्श अहिंसक समाज की स्थापना करके राष्ट्र को जीवित किया। भगवान महावीर के समय राष्ट्र अनेक धार्मिक विवादो मे फसा हुआ था। महावीर नही चाहते थे कि राष्ट्र मे इस तरह के विवाद पदा हो, अत उन्होंने वचारिक क्राति के लिए अनेकान्त विचारधारा को जन्म दिया और सब धर्म समन्वय की भावनाये राष्ट्र मे जाग्रत की जिससे देश मे मानवीय भावनाओ के साथ मे आत्मीय भावनायें और सह अस्तित्व की भावनायें जाग्रत हुई और तत्कालीन राष्ट्र पूर्णत सुखी हुआ। पौराणिक साहित्य मे यह मिलता है कि महावीर की पवित्र सर्वहितकारी वाणी को सुनने के लिए उनकी विशाल सभाओ मे मानव मात्र तो बिना किसी भेद के जाते थे लेकिन पशु और पक्षी भी जाकर अहिंसक के व्रत लेते थे। वास्तव मे भगवान महावीर ने बहुत बडे सघर्ष लेकर, राष्ट्र को नवजीवन देकर मानवता की स्थापना की और देश मे अहिंसक क्राति पदा की।

भगवान महावीर एक दिव्यदृष्ट महापुरुष थे। उनकी दृष्टि मे यह आवश्यक था कि राष्ट्र सरक्षण के कुछ नियम और उपनियम बनाये जायें। अत उन्होंने राष्ट्र को भावी सकटो से बचाने के लिए अपने शिष्यो से कहा कि चार महीने मे चार उपवास किये जावें। भूख से कम भोजन किया जाय। महीने मे सात प्रकार के रसो का त्याग किया जाय। व्यर्थ मे एक बूद भी जल नष्ट नही किया जाय वनस्पति जगत को जीवित रखा जाय क्योकि राष्ट्र रक्षा के लिए य आवश्यकीय है। इन नियमो के प्रचार के लिए भगवान महावीर ने हर प्रदेश मे विहार किया और सफल हुए।

आज भी राष्ट्र के सामने कई ऐसी समस्यायें हैं जो महावीर के पवित्र सिद्धान्तो से ही हल हो सकती हैं। महात्मागाधी ने राष्ट्र को स्वतन्त्र कराने के लिए अहिसा और अपरिग्रह का ही सहारा लिया। अहिंसा के बल पर राष्ट्र को एक सूत्र मे गठित किया जिससे परतन्त्र भारत बिना किसी हिंसा के स्वतन्त्र हुआ था, लेकिन कुछ वर्षो से राष्ट्र मे निस्वार्थ त्याग की भावना के अभाव मे देश की स्थिति इतनी भयावह हो गई कि उसका सरक्षण होना बडा मुश्किल हो रहा है। आज विश्व के समस्त राष्ट्र जातीयता, प्रान्तीयता और साम्राज्यवाद की भावना से दुखी और ग्रस्त हैं। मानवता गायब है। अनाचार और अत्याचार का जोर है। महगाई का बोलबाला है। खाने के लिए अनाज, पहनने और जल का अभाव है। ऐसी स्थिति मे मानव को शाति की रश्में महावीर के सिद्धान्तो से मिल सकती है। ऐसे समाज के सन्त चाह तो राष्ट्र सुखी हो सकता है। भगवान के सिद्धात के अनुसार यदि राष्ट्र को प्रेरणायें दी जाय और सयमित जीवन पर आ जाय तो अन्न, कपडा, पानी, तल आदि की समस्या बराबर हल हो सकती है। महावीर ने बतलाया कि एक बूद पानी भी व्यर्थ मे नष्ट न करो। यह कितना उपयोगी सिद्धान्त है। उनका आज का प्राणी विचार करे कि वह व्यर्थ मे कितना पानी बरबाद करता है। यदि हम यह सोच लें कि आवश्यकता से अधिक जल का उपयोग नही करेगे तो आज

जल का सकट राष्ट्र के सामने नहीं आ सकता। इसी तरह हम शक्कर और तेल के सकट से बच सकते हैं क्योकि राष्ट्र के करोडो आदमी महीने मे चार दिन तेल नही खायें तो देश को कितना बल मिल सकता है। आवश्यकता है महावीर के विचारो पर चलने की।

मैं तो चाहता हू कि जन सत अपने अपने सकीर्ण दायरे से आगे बढकर महावीर के इन सिद्धान्तो का प्रचार करे। भगवान महावीर किसी जाति विशेष व समाज विशेष के भगवान नहीं थे। वे विश्व के हर प्राणी के आधार स्तम्भ थे। उन्होने कभी भी अपने आप को सम्प्रदाय विशेष म नही बाँधा। लेकिन आज के सतो ने उस महान आत्मा की बातो का स्वीकार नही किया। वे स्वय सम्प्रदायवाद म फस गये। आवश्यकता है भगवान महावीर के उदार सिद्धान्तो के प्रचार प्रसार की।

☐ जो मति, श्रुत, अवधि और मन पयय इन चार ज्ञानो के धारक हैं, देवो के द्वारा पूज्य हैं, नियम स सिद्ध होने वाले हैं, बल और वीय को नही छिपाने वाले, तप म उद्यत हैं, वे तीर्थ कर हैं। —मूलाराधना

☐ जो शान्त भाव से निमल दश धर्मो सम्यक्त्व, सयम, तप, और ज्ञान को धारण करता है, उसे जिन माग म तीथ कहा है

—बोध पाहुड

☐ सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक् चारित्र म स्थित होना तीथ है। तीथ का करने वाला तीथ कर कहलाता है —मूलाराधना

☐ सम्यग्दर्शन सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र से सहित जीव यही उत्तम तीथ है क्योकि रत्नत्रय रूपी दिव्य नाव स यह ससार का पार कर लेता है। —कार्तिकेयानुप्रेक्षा

भगवान महावीर के मानवोपयोगी सिध्दांत

धर्म मन्दिर मे नहीं धर्म तुम्हारे पास है, स्वय का उत्थान पतन स्वय से होता है, महन्त और सन्तो से नहीं। ऐसे थे भगवान महावीर के मानवोपयोगी सिध्दात। उनके प्रेम, वात्सल्य और आत्मिय भावनाओ का साम्राज्य था, मोह, अधकार और प्रतिष्ठा का आह्वान नहीं था। उन्होने जीवन निर्माण और सामाजिक स्थितियो को सुधारने को ही प्राथमिकता थी।

विश्व वद्य भगवान महावीर के सम्बन्ध मे विपुल साहित्य निर्माण विभिन्न भाषाओ और विभिन्न क्षेत्रा म भारतीय मनीषियो द्वारा अनेक रूप से किया गया है और साथ ही उनके जीवन तथा उनके सिद्धांतो का विश्लेषण विभिन्न रूप से किया गया है क्योकि विद्वानो का दृष्टि कोण एक रूप से नही अनेक रूप से होता है।

महावीर के जन्म के समय सामाजिक और धार्मिक जीवन बडा बिगडा हुआ था। सारे देश म विषमतायें व्याप्त थी। मानवता कराह रही थी। मानव जीवन मुरझा गया था। असतोष की ज्वालायें बढी हुई थी। समाज मे वर्ण भेद पड चुका था। मानव-मानव मे ऊच नीच की भावनायें पदा हो गई थी। स्त्रियो की स्थिति बडी दयनीय थी। अबलायें बडी बाजार मे दासी के रूप वेची जाती थी धन के नाम पर अशाति और चीत्कार के शब्द सुने जाते थे ऐसी विषम स्थिति मे महावीर पदा हुए। महावीर जब आठ और नौ वष के जीवन मे आये तब वे इस जीवन से बडे बेचन हो गये उनका हृदय आदोलित हो गया। गरीब पशुओं के चीत्कारो से वे विह्वल हो गये चिंतित हो गये और बडे अनमने से रहने लगे। ज्यो ज्यो महावीर के जीवन का समय बढता गया उनके जीवन मे इन समस्याओ का समाधान हो सका। उन्होने समाधान खोजने की चेष्टा की। तब उनके हृदय ने जवाब दिया महा वीर इन समस्याओ का समाधान राज्य दभव से नही होगा। ये समस्यायें, ये अत्याचार शाति और परिवतन चाहते हैं जिनके लिए बहुत बडे त्याग और तपस्वी जीवन की आवश्यकता है।

सारा ससार विकृत है तू तीथकर बनकर आया है पूव जन्म का सकल्प है तेरा प्राणी मात्र की सेवा करना इस आह्वान से महावीर जागृत हो गया और उसने सोचा कि परिवर्तन के लिए मुझे घर से निकलना होगा और वे निकल पडे। महावीर ने 12 वर्ष की एकात जीवन जिया। उसमे

उन समस्याओ का हल खोजा ज्ञान का विकास किया अपनी कमियो को निकाला स्वय का मार्जन किया। लिप्साओ को छोड़ा जितेन्द्रीय बने। और बने एक महान आभा।

12 वष राजगृही पवत से एक शांति का विगुल फूका जिसमे महावीर का आव्हान था प्राणी मात्र को अभय देने का, महावीर का स्वय के लिए नही लेकिन विश्व कल्याण के लिए था। उस नाद मे प्रेम, वात्सल्य और आत्मीय भावनाऐ थी। मोह अधकार और प्रतिष्ठा का आव्हान नहीं था। महावीर ने जयघोष के पहले प्राणियो के जावन निर्माण और सामाजिक स्थिति को सुधार ने के लिए आव्हान दिया। महावीर चाहते थे प्राणियो के जीवन का निर्माण किया जाय जिसस समाज मे व्याप्त समस्त बुराइया खत्म हो जाय और आदमी आदमी बन जाय जहा मनवता आवेगी तव अपन आप देश ओर समाज मे व्याप्त विषमताऐ खत्म हो जायेगी।

महावीर की प्रथम देशना मे आव्हान था अहिंसा का जिसमे प्रेम और करुणा आत्मीयता, सहअस्तित्व आदि की भावनाऐ निहित थी। महावीर के इस अहिंसा के निनाद से असख्य जनता दौड पड़ी। महावीर के चरणो मे जहा शांति का, करुणा का, दया का, ध्यान प्रेम और वात्सल्य का साम्राज्य था, वहा महावीर की वाणी मे क्रांति थी, जा परिवतन चाहती थी। महावीरने कहा तुम जियो और दूसरे को भी जीने दो। मानव मात्र ही नही लेकिन विश्व के समस्त प्राणी एक है, सबका जीवन समान है उनम भेदभाव की नीति ठीक नही, दुनिया म ऊच और नीच की व्यवस्थाए वर्ण और भेद पर नही अपितु इनके जीवन और आचरण से है। नीच आदमी कुछ नही। नीच वह है जिसम नतिकता नही मानवता नहीं, सदाचार नही। भाई चारा नही। अहिंसा बुराईया को स्वीकार नही करती। अहिंसा सह अस्तित्व को प्रथम स्थान देती है। उनका हृदय विचार और उद्वार है महावीर ने अपनी वाणी म मानव के अस्त व्यस्त जीवन पर गहरी चोटे मारी और उन समस्त विषमताओ पर प्रहार किया जिनसे सामाजिक जीवन बिगड चुका था। महावीर ने अहिंसा पर बलिदान के लिए और सामाजिक स्वाध्य जीवन के निर्माण के लिए सत्य, अपरिग्रह और अनेकात पर विशेष बल दिया। महावीर न कहा कि मैं चाहता हू वही ठीक है, इस आग्रह को छोडो। सत्य स्वीकार करो शब्दा के जाल म मत उलझा। हर व्यक्ति की बात सुनन का प्रयास करो। धम मन्दिर में नही धम तुम्हार पास है। स्वय का उत्थान पतन स्वय से होता है। महन्त और पादरियों स नही। महावीर के इन विचारा स बहुत बडा परिवतन हुआ और नवीन क्रांतिया हुई समाजिक आर्थिक और धार्मिक। इन सब म जबरदस्त शांति थी धार्मिक। इस धार्मिक क्राति स बड बड मठाधीशो न महावीर स्वामी का तीव्र विरोध किया लेकिन वे सफल न हो सक महावीर का मार्ग सही था। उनके जीवन म कमठता और दृढता थी। बड बड कष्ट उनक प्रचार क समय म आय लेकिन व डिग नही सक। महावीर न अपन जीवन काल म अनक बा गल लगाया उनको त्याग बनाया आग अपन सभा स्थलो म उनको महत्वपूर्ण स्थान दिया। महावीर की वाणी न बिजली जसा काम किया। एस महावीर न अन्य स्थानो पर भी विहार किया। लेकिन राजगृही उनका धाम बन रहा और वहीं महावीर क उपदेशा की धूम रही।

भगवान महावीर के जीवन से प्रेरणाये ले

आचार मे अहिंसा और विचारों मे अनेकांत भगवान के सिद्धात मानव को सुख, शान्ति प्रदान कर सकते हैं - उनको सही ढग से, सही मान्यताओ के साथ सुन्दरतम रूप मे विश्व को बताने के लिए हमे विलासितापूण जीवन को बदलने की आवश्यकता है। क्योंकि स्वय के स्वार्थ के कारण ही हम न अपने बारे मे और न ही दूसरो के बारे मे सोच पाते हैं।

, विश्व बद्य भगवान महावीर का 2500वा निर्वाण महोत्सव जन समाज और उसकी भावी पीढी के लिए अपूर्व उपलब्धि है। निर्वाण महोत्सव ने जन जगत मे ही नही विश्व के कोने कोने मे अपूर्व जाग्रति पदा की है। विद्वानो चिंतको और मनीषियो ने अपने आपके लिए इसको अपूर्व अवसर माना है। जैन धर्म और भगवान महावीर के सिद्धातो को सही रूप से समझने का प्रयास किया है और जन धम के सम्बन्ध म जो भ्रात धारणायें व्याप्त थी वह इस अवसर पर दूर हुई। इस पुनीत अवसर पर जन समाज मे अनेक कार्य हुए है व केन्द्रीय सरकार और प्रांतीय सरकारो द्वारा कई स्थायी कार्यो को मूर्त रूप दिया गया इससे प्रचार के कदम आगे बढे है।

लेकिन मैं यह देखना चाहता हू कि इस पुनीत अवसर पर बाह्य उपलब्धि के साथ हमने व हमारी भावी पीढी ने अपने आपका परिवतन किया या नही। महावीर के सिद्धात सार्वदेशिक और सावभौमिक तो हैं ही किन्तु वे सिद्धात मानव के जीवन मे परिवतन भी चाहते है। सिद्धात अपनी जगह नही रहना चाहते है। वे यह भी नही चाहते कि उनके सिर्फ गीत गाये जाय और बडे बड सम्मेलनो मे उनके नाम ले लिये जायें। भगवान महावीर ने पहले उन सिद्धातो को आत्मसात किया और उसके बाद उनके प्रचार और प्रसार के लिए अपन आपको अर्पित किया। सिद्धात जीवन म परिवतन चाहते है। सिद्धांत चाहते हैं। कि उसका हृदय मे अवतरण हो जिससे मानवता जीवित हो जाय और समाजो और राष्ट्रो मे परिवर्तन आ जाय।

भगवान महावीर ने विश्व को यही कहा है कि आचार मे अहिंसा को लें और विचार मे अनेकात को महत्व दें। महावीर के ये दो सिद्धात ही विश्व के लिए महान सिद्धात हैं क्योकि अहिंसा जियो

और जीने दो की बात करती है और अनेकात मानवता को जीवित रखने के लिए सह्-अस्तित्व की भा वनाओ को जाग्रत होने की बात करता है। इन दोनो सिद्धातो से राष्ट्र मे और समाजो मे अनेकता को महान बल मिलता है जिससे देश का मस्तक ऊचा होता है। नैतिकता राष्ट्र का हृदय है और यही राष्ट्र का सही जीवन है इन दोनो सिद्धातो के प्रचार की आज भी देश को आवश्यकता है। भगवान महावीर स्वय युवक थे। उन्होने अपने आपको सजोया, अपने जीवन का निर्माण किया।

30 वर्ष बाद राज्य से अलग होकर अपने लिये नया मोड लेने के लिये एकात साधना के लिये जगल का मार्ग लिया और वे 12 वर्ष तक मौनी रहे इसके बाद उनकी दिव्यध्वनि खिरी महा वीर का उद्देश्य विश्वकल्याण का था वे मानवता चाहते थे, वे चाहते थे कि देश और राष्ट्र जिसव मैत्री की भावनाये जीवित रहे। मानव-मानव मे भेद की दिवारें न रहे। श्रम धर्म रहे। भगवान महावीर ने जाति भेद, देशगत भेद, भाषागत भेद, वर्ण भेद आदि को कोई महत्व नही दिया। उनके धर्म या विचारो का आधार सामजस्य था। इसलिये अहिंसा को प्रधानता देकर धर्म और समाज का निर्माण अपरिग्रह वाद और अनेकात वाद के आदर्श मार्ग पर किया इससे भगवान महावीर की सघ व्यवस्था हजारो वर्षो तक जीवित रही। आज के युग मे भी महात्मा गाधी ने अहिंसा और अपरिग्रह की ही पकड की और उसी के बल पर देश को स्वतत्र किया देश की स्वतन्त्रता के बाद लोग अहिंसा और अपरिग्रह को जीवन मे न उतार सके। इसका एक मात्र कारण स्वय का स्वार्थ है। मानव स्वय की इकाई पर उतर गया। इससे देश मे शोषण बढ गया और मानवता गिरने लगी और राष्ट्र की आत्मा जर्जरित हो गई जिससे देश मे चारो तरफ अराजकता और अनतिकता का जोर बढ गया। मानव का जीवन असुरक्षित हो गया। इन सब ही स्थितियो को देखकर हमारे देश की प्रधान मत्री श्रीमती इन्दिरा गाधी ने देश मे आपात स्थिति की घोषणा की और 20 सूत्रीय कार्यक्रम भगवान महावीर के सिद्धांतो से बाहर नही।

देश के बडे बडे कर्णधार आज यह कह रहे है कि देश का सही सरक्षण भगवान महावीर के सिद्धात ही कर सकते है। लेकिन आज इनका प्रचार करे कौन, इन 12 महीनो मे जिनके ऊपर दायित्व है भगवान महावीर के सिद्धात का प्रचार और प्रसार का वे ही परिवर्तन नही कर सके ज। समाज और उसका युवक इन दिनो मे आत्म निरीक्षण नहीं कर सका। जन समाज ने अपना मार्ग छोड दिया। उसका युवक भगवान महावीर की शिक्षाओ को न पकड सका। वह आज सिनेमाघरो की तस्विरो को टटोल रहा है और एकात मे उपन्यास पढने म अपने आपको खो रहा है। न उसे अहिंसा की परवाह है और न अनेकात की। उसका जीवन खाना पहनना बन गया है। वह नही चाहताकि महावीर के सिद्धातो का प्रचार हो। वह स्वय उनके सिद्धान्तो से अलग होकर खुलकर रात्रि भोजन और अभक्ष्य भक्षण कर रहा है। उसने पेट को कब्र बना डाला है। उसको आज फशन के आगे कोई फरसत नही तब इन शिक्षाओ का प्रचार करे कौन? होना यह था कि हम स्वय प्रेरणा लेते और विश्व [illegible] भगवान महावीर के सिद्धातो का सही प्रचार करते। विदेशो मे भगवान महावीर के सिद्धातो का सही प्रचार करत। विदेशो म भगवान महावीर की शिक्षाओ का प्रचार हो रहा है। विदेशी चाहता है उनसे सम्बन्धित साहित्य मिले। आज वे इस भौतिक वाद से बिल्कुल घबडा गय हैं। वे चाहते हैं एकात साधना और जीवन का विकास। क्या जन समाज के युवक इस पर विचार करेंगे? और ऐसा प्रयास करग कि वे विदेशो स जो साहित्य आदि की माग है उसको पूर्ण कर सके।

विलासिता जीवन का अंग नही है। जीवन का अंग है सयम का पाठ। सयम के बिना जीवन बिखर जाता है और समस्त बुराइया असयमी के जीवन मे एकत्रित हो जाती है। असयमी जीवन मे चिंतन, मनन और अध्ययन खत्म हो जाता है असयमी कभी भी अपने जीवन को बनाने की नही सोचता। भगवान महावीर ने सयम से ही अपने जीवन को बनाया और वे महान बने। यह असयमित जीवन का ही परिणाम है जिससे देश म बीमारिया बढ रही है और हम दिनो दिन दुखी हो रहे है। आयुर्वेद के सिद्धात भी सयम पर ही आधारित है। आज का विज्ञान भी हमे यही कहता है। जैनो के सिद्धात परिमार्जित है और वह ऐसे सन्तो की देन है जिन्होने एकांत मे बैठकर इनकी खोज की है और फिर उनको जीवन म उतारा है। क्या हम भी इस अवसर पर उनसे प्रेरणायें लेंगे।

—०—

☐ व्यवहार मे ऐसा कहा जाता है कि ज्ञानी के दर्शन, ज्ञान और चारित्र रूप रत्नत्रय हैं। वास्तव मे जीव तीन प्रकार का नही है, वह तो शुद्ध ज्ञायक आत्मा है। —समयसार

☐ जसे नगर मे प्रवेश के लिए द्वार है, मुख पर लोचन है, वृक्ष मे मूल है, वसे ही सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, आत्मशक्ति और तप के लिए आत्मा म प्रवेश के लिए द्वार के समान हैं। —भगवती आराधना

☐ सम्यक्दर्शन, ज्ञान, चारित्र, आत्मशक्ति और तप के लिए सम्यक्त्व ही एक आधार है। —भगवती

महामानव भगवान महावीर

भगवान महावीर का विश्वास सिद्धांतों के प्रचार एव प्रसार मे उतना नहीं था, जितना उन्हे जीवन मे उतारने का था। उनका विश्वास था कि यदि सिद्धातो को व्यवहारिक रूप नहीं दिया गया तो राष्ट्र और समाज का सही निर्माण नहीं हो सकता।

आज विश्व के सामने अनेक समस्यायें हैं। जिनके कारण समस्त राष्ट्र और देश चिंतित और दुखी है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को हड़पना चाहता है। युद्धो के बादल सिर पर म डरा रहे हैं प्रयत्न करने के बाद भी राष्ट्रो म शांति नही हो रही है बल्कि अशांति की ज्वालायें ही भड़क रही है। खान पीने की महगाई, मानव म अनुशासनहीनता, शोषण की भावनायें आदि ऐसी समस्यायें हैं जिनका हल विज्ञान स नहीं हो सका है। अब देश के महान चिंतको की यह धारणा बनती आ रही है कि महामानव भगवान महावीर क पावन सिद्धातो से ही विश्व शांति सम्भव है और उससे ही मानवता क सरक्षण के साथ विश्व शांति होना सम्भव है ऐसे समय म भगवान महावीर का 2500 वा महोत्सव मनाने का स्वर्ण अवसर विश्व के जागृत व प्रबुद्ध मनीषियो को मिला है। देश की जनता का कर्तव्य है कि वह इन महामानव क सिद्धांतों का प्रचार और प्रसार करे और इन पावन सिद्धातो को जीवन म उतारने का प्रयास करे।

सिद्धान्त सिद्धान्त है। ये अमिट और अमर होते हैं धन्य है जो इनको आत्मसात करके अपने जीवन को आगे बढ़ाते हैं। भगवान महावीर का विश्वास सिद्धान्तो के प्रचार और प्रसार मे उतना नहीं था जितना उनको जीवन म उतारने का था। उनका विश्वास था कि सिद्धान्तो को यदि व्यावहारिक रूप म [illegible] दिया जायगा तो राष्ट्र [illegible] और समाज का सही निर्माण नहीं हो सकता। इस लिए [illegible] [illegible] म सुलभ भौतिक सुखों को [illegible] [illegible] और [illegible] [illegible] मानवीय सिद्धान्तो पर चिंतन किया और [illegible] उतारा। महावीर का उन सिद्धान्तो से [illegible] आत्मिक [illegible] का अनुभव हुआ, तब महामानव भगवान महावीर [illegible]।

[illegible] मे भी उन [illegible] समसामयिक [illegible] [illegible] का प्रयास

किया लेकिन वे उसमे सफल न हो सके। उनके पीछे साधना नही थी। महावीर एक महान साधक पुरुष थे। सब लोगो की आखे महावीर की तरफ लगी हुई थी। सब जानते थे कि महावीर मार्ग दर्शक और महान प्रेरक हो सकते हैं क्योकि महावीर ने साधना काल मे उन समस्त समस्याओ का अध्ययन किया और उनको हल करने का मार्ग निकाला।

बारह वर्ष बाद महावीर ने अपनी मूक वाणी खोली और उन समस्त समस्याओ का हल कुछ ऐसे सिद्धान्तो पर आधारित बतलाया जिसके परिपालन से आदमी पहले मानव बन जाय। धर्म का अर्थ उन्होने मानवता प्राप्ति बतलाया। उन्होने कहा कि धर्म वही है जिससे जीवन का मार्जन हो और मानवता दमक उठे। इस मानवता की प्राप्ति के लिए महावीर ने सब व्यवस्थायें कायम की। उनके नियम और उपनियम बनाये। महावीर चाहते थे कि व्यवस्थायें ही जीवन को बांध सकती हैं उनसे अनुशासन का एक तरीका चलता है। जहा अनुशासन होता है वहाँ ही जीवन निर्माण होता है अत महावीर की व्यवस्था को पशु और पक्षियो तक ने माना। उन सब व्यवस्थाओ को कायम रखने के लिए उनका आधार अहिंसा को बतलाया। सब व्यवस्था म समादर की भावनाओ प्रेम व वात्सल्य और सहअस्तित्व की भावनाओ को जन्म देती है। जिस अहिंसा को अपनाने के लिए सत्य, अचौर्य, ब्रह्मचर्य, और अपरिग्रह के सिद्धातो को उसका परिकर बनाया जिनसे आदमी आदमी बना रहे अन्याय और अत्याचार के मार्ग पर न उतरे, राष्ट्र और देश मे शाति बनी रहे।

महावीर ने जितना अहिंसा पर बल दिया उतना ही अपरिग्रह पर भी बल दिया और उसके प्रचार और प्रसार के लिए सही रूप म मानवतावादी सत परम्परा को जन्म दिया। वे कम से कम खाते थे और अपने जीवन से अधिक से अधिक मानवतावादी सिद्धान्तो का प्रचार करते थे। उनके प्रचार म मुख्य बातें थी मास मद्य का उपयोग नही करना, अधिक सग्रह नही करना, जुआ नहीं खेलना दूसरो के साथ असमानता का व्यवहार न करना परस्त्रियो के साथ माता और बहिन जैसा व्यवहार करना और प्राणियो म भाई चारे जैसा व्यवहार करना। इनको करने के लिए कुछ उप नियम बतलाये जिनका खान पान से सम्बन्ध है। उन्होने खाना भी वही उचित बतलाया जिसका सम्बन्ध अहिंसक तरीके से हो।

इसी तरह भगवान महावीर ने दानवता को खत्म करने के लिए धार्मिक पाखण्डवाद के खिलाफ भी कदम उठाया, गहरा सघर्ष किया। अनेक विघ्न बाधाओ का सामना किया। अन्त मे महावीर सफल हुए और इन सबके ऊपर उठने से महावीर महामानव कहलाये। महावीर के इन विचारो का सर्वत्र स्वागत हुआ। प्राणियो को शाति मिली राष्ट्र और देश ने भी शाति की स्वास ली। महावीर के इन विचारो का प्रभाव सामान्य प्राणियो पर तो पडा ही लेकिन बडे बडे सम्राटो ने भी इनका समर्थन किया और उन्होने महावीर का शिष्यत्व स्वीकार किया।

वास्तव मे भगवान महावीर के सिद्धात मानवतावादी थे। इससे देश को बहुत बडा लाभ मिला। उसी का यह परिणाम है कि हजारो वर्ष बाद भी महावीर के इन सिद्धातो की पिपासा है जिनके लिए मनीषी चिंतक लोग फिर आवश्यकता महसूस कर रहे हैं। आज देश व राष्ट्र जिस स्थिति से गुजर रहे हैं उस स्थिति से ऊचा उठने मे महावीर के सिद्धात ही सही दिशा निर्देश कर सकते है।

देश इस वक्त स्वार्थ के ढाचे मे ढल कर रह गयेहै जिससे समूचे विश्वमे अशांति अन्याय और अत्याचारो का साम्राज्य है। लिप्सायें और इच्छायें इतनी बढ गई हैं कि देश मे खाद्य वस्तु भी सरलता से सुलभ नही है। आदमी अपना पेट भरना चाहता है। आज के आदमी ने अपना पेट वसुधरा से भी विशाल ना डाला है जिसकी थाह नही है। इसी लिप्सा ने देश को बेचन बना डाला है।

अत यह एक बहुत बडा प्रश्न है कि इन समस्याओ का हल कैसे हो ? आज भगवान महा ीर हमारे सामने नही। उन महामानव भगवान का आदर्श हमारे सामने है। उनकी संस्कृति व नका पावन साहित्य ही हमारा सही मार्ग है। उनके सिद्धान्त आज भी जिवित हैं हमारा कर्तव्य है क हम मानव बनने की सोचे औ उस महामानव तीर्थकार के चरणा मे श्रद्धा के पुष्प अर्पण करने ोग्य अपने आप को घोषित करे।

—०—

☐ सम्यक्त्व सब रत्नो मे महारत्न है, सब योगो म उत्तम योग , सब ऋद्धियो मे महाऋद्धि है और सब सिद्धियो का करने वाला है।

—कार्तिकेयानुप्रेक्षा

☐ सम्यक्त्व के बिना नियम से सम्यक्ज्ञान और सम्यक्चारित्र नही होते, इसलिए जिनेन्द्रदेव ने रत्नत्रय मे सम्यक्त्व को उत्कृष्ट कहा है।

—रयणसार

☐ सम्यक्त्व रत्न से भ्रष्ट लोग अनेक प्रकार के शास्त्रो को जानते हुए भी आराधना से रहित होने के कारण बार-बार ससार म भ्रमण करते रहते हैं।

—दर्शनपाहुड

☐ सम्यक्त्व के बिना तत्व में रुचि नहीं होती। —रयणसार

भगवान महावीर और युवावर्ग

प्रेम और भाईचारा न होने से ही आज इतने अत्याचार भ्रष्टाचार बढ रहें हैं। यदि इन अत्याचारो, भ्रष्टाचारों का हमें प्रतिरोध करना है तो महावीर के सिद्धातों का आत्मसात कर नवयुवको को आगे आना होगा। उन्हें बलिदान के बल पर समाज व राष्ट्र के लिए अपने आपको समर्पित करना होगा।

भगवान महावीर का 2500 वा निर्वाण महोत्सव एक ऐसे विकट समय मे मनाया जा रहा है जबकि भारत वर्ष के कोने-कोने मे भुखमरी, महगाई और अकाल को लेकर त्राहि-त्राहि मची हुई है। कही भी शाति की छोटी सी रेखा भी दिखाई नही पडती। हर व्यक्ति लूट खसोट और अत्याचार पर पग बढा रहा है। आस्ते आस्ते-अनतिकता के साथ मानवता गायब हो रही है। यही स्थिति रही तो राष्ट्र विनाश के कगार पर पहुच जायेगा और स्थिति भयावह बन जायेगी।

परिस्थितियो का निर्माण मानव स्वय करता है। जब उसकी आकाक्षायें बढ जाती हैं और शोषण ही उसका जीवन बन जाता है तब राष्ट्र मे ऐसी परिस्थितियों का निर्माण होता है। आज हर आदमी शोषक बन रहा है जमाखोरी व मुनाफा खोरी की कोई सीमा नही है। देश में न तो अनाज का कमी है और न अन्य चीजो की। बल्कि उत्पादन पहले से ज्यादा हो रहा है, लेकिन पहले की अपेक्षा आदमी की आकाक्षायें और वासनायें इतनी बढ गयी है कि आज वह पूर्ण दुखी हो रहा है। इन परिस्थितियो में राष्ट्र को अगर बल दे सकते हैं तो महावीर के मानवतावादी सिद्धात ही दे सकते हैं।

ये परिस्थितिया पहले भी थी, वे अन्य रूप मे हो सकती हैं लेकिन समस्याओ को हल करने मे सिद्धातों को बदला नही जाता है। भगवान महावीर के उदय काल मे राष्ट्र की स्थिति वीभत्स थी और उनको सवारने के लिए कोई भी आगे बढने को तयार नही था। परिस्थतिया दिनो दिन बढती जा रही थी। मानव अमित होता जा रहा था। बडे बडे राज घरानो की लडकियों का अपहरण होता था और खुले आम चौराहो पर बेची जाती थी। इन परिस्थितियो ने महावीर को बेचेन कर डाला था। उस समय सारे राष्ट्र के लोग एक तरफ थे, और महामानव महावीर का चितन एक तरफ था। महावीर समझते थे कि समस्या विकट है, फिर भी मुझे इनके सामने झुकना नहीं है। मुझे आगे बढना है।

महापुरुषों का लक्ष्य लोक कल्याण का होता है। यहा स्व–स्वार्थ का बलिदान करना होता है। महामानव भगवान महावीर एक सबल दृढ निश्चयी युवक थे। उनका निर्णय अटल था, वे लोक कल्याण के लिए आगे बढे, घर से निकले, उन्होने ऐश्वर्य को तो ठुकराया ही लेकिन अपने शरीर के स्वास्थ्य को भी ठुकरा कर अपने को लोक सेवा मे लगा दिया।

महावीर एक महान क्रातिकारी युवक थे, उन्होने एकात मे बठकर सोचा कि इन समस्त समस्याओ का ऐसा मार्ग निकले जिससे मानव शाति की श्वास लें और वह सही मार्ग पर आ जाये। इसके लिये उन्होने अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकान्त विचारधारा को जन्म दिया और उसके प्रचार व प्रसार के लिये जीवन अपण कर दिया। अहिंसा से विश्व प्रेम की भावनायें बढी, प्रेम, वात्सल्य, भाई चारा और सह अस्तित्व की भावनायें जागृत हुई जिससे बढती हुई अमानवीय भावनाओ के बढते कदम रुके। मानव ने सोचा कि महावीर क्या कहते हैं महावीर के इस सिद्धात ने सबके हृदय को बदल डाला और उनमे परिवतन आ गया। अपरिग्रह के सिद्वात से शोषण की भावनायें खत्म हो गई और अनेकान्त से आग्रही धार्मिक रुढियाँ खत्म हो गई। हर प्राणी ने शाति की श्वास ली। भगवान महा वीर के इस त्याग ने उनको महामानव भगवान बना डाला।

आज भी ये तीनो सिद्धात राष्ट को बल दे सकते हैं क्योकि देश प्रेम और भाईचारे के न होने से आज इतने अत्याचार बढ रहे हैं। अगर इन अत्याचारो का प्रतिरोध करना है तो इन्ही सिद्धान्तो को अस्त्र बनाकर जन समाज के युवको को आगे बढ जाना चाहिये। महावीर तो एक थे, आज आप असख्य हैं। युवक चाहे तो परिस्थितिया बदल सकते हैं। आज के युवक की शक्ति में निर्माण नही है। वह महगाई के नाम पर लूट खसोट मारपीट तो करता है लेकिन सही हल नही निकालना चाहता। जन समाज के यु को पर एक बहुत बडी जिम्मेदारी इस वक्त है। वह चाहे तो अपनी जिम्मेदारी को महसूस करके त्याग और बलिदान के बल पर वतमान समस्याओ का हल भगवान महा वीर के सिद्धातो से कर सकते हैं। महावीर के सिद्धात प्राणवान हैं। उनमे क्रांति है वे परिवतन चाहते हैं। लेकिन आवश्यकता है आगे बढने की। हम 2500 वा निर्वाण महोत्सव तो मना ही चुके हैं लेकिन जयकारो का और जुलुस का न होकर सही महोत्सव यह हो कि इन सिद्धातों को लेकर हम देश को नया जीवन दे सके। पहले हम जन समाज से इन शोषणो की भावनाओ को खत्म करे और इस के बाद प्रबल सगठन के साथ आगे बढ जायें। भगवान महावीर के कुछ ऐसे भी सिद्धांत हैं जिनसे राष्ट्र को बहुत बल मिल सकता है। जैसे अष्टमी ग्यारस, चौदस, दूज और पचमी को उपवास रखा जाय और सात दिन मे तल मीठा आदि रसो का त्याग क्रमश किया जाय। प्राचीन भारत में पर्वों के नाम पर मानव–इन पवित्र दिनो मे उपवास करके राष्ट्र के लिए अनाज और घी तेल की बचत किया करत थे। आज अगर युवक बढे और इन सिद्धातो व विचारो का प्रचार करे और पचपन करोड आदमी सप्ताह मे एक बार भोजन न रस न खाये तो राष्ट्र की कितनी बचत हो सकती है? यह बहुत बडा हल है। क्या समाज के नेता व युवक इसके सबध मे विचार करके वतमान स्थिति मे राष्ट की रक्षा के लिये कदम बढाकर सही रूप म निर्वाण महोत्सव को जीवित रखेगे।

भगवान महावीर और युवक

युवको को महावीर की पावन शिक्षाओ से प्रेरणायें लेनी चाहिये और अपने जीवन का निर्माण करना चाहिये। जीवन को बखेर देना सरल है लेकिन उसको सुधारना बडा कठिन होता है।

विश्व वद्य भगवान महावीर के जीवन और सिद्धांतो पर हजारो वर्षो से काफी लिखा गया है और वतमान म भी काफी लिखा जा रहा है। अभी विश्व के स्तर पर हमने भगवान महावीर का निर्वाणोत्सव मनाया, उनके गुणो का गान किया, अनेक आयोजन किये, जुलुस निकाले, उनके नाम की जय नार से आकाश को गुंजित किया, फिरभी हमे यह देखना है कि हममे, रूढियोमे, व हमारी गलत मान्यताओ म कोई परिवतन आया क्या ? हमने अपने आप को वदला क्या ? कभी हमने एकात मे वठकर आत्म निरीक्षण किया क्या ?

महावीर जव बालक थे तव भी उनमे आत्म निरीक्षण की भावनायें थी। अपने महलो के एकान्त कक्ष मे वठकर एक साधक के रूप म घटो आत्म निरीक्षण किया करते थे और सोचा करते थे उन मानवीय क्षणो के लिये जिन पर अवलम्बित थी इस मानव जीवन की सफलता। अत उन्होने जीवन का एक क्षण भी व्यर्थ मे जाने के लिये नही सोचा, इसलिए छोटी सी अवस्था मे अपने जीवन की समस्त दिशायें वदल दी उन महावीर ने। राज्य पाट और महल महान् तो उनको खींच ही नही सके लेकिन कलिंग देश के राजा की पुत्री, अनिंद्य सुन्दरी भी उनको मोहित नही कर सकी। वे निकल गये राजप्रासादो से और चल पडे जीवन निर्माण के लिये। एकात और बीहड प्रदेशो मे जहा मिलती थी आत्मा को अंतिम शांति।

भगवान पार्श्वनाथ और भगवान महावीर के वीच के समय मे धार्मिक और सामाजिक व्यवस्थायें विगड चुकी थी। भगवान पार्श्वनाथ ने उन व्यवस्थाओ को सुधारने का काफी प्रयास किया लेकिन उनके वाद तांत्रिको का जोर इतना बढा कि उनके प्रभाव मे जनमानस आ गया और उनके द्वारा मानव मानव मे समाजों मे अनेकविषमतायें पदा कर दी गई। उसी समय मे मानव मानव मे वर्ण भेद, जाति भेद, ऊंच नीच की भावनायें पदा हुई। नारी के प्रति अनादर की भावनायें पदा हुई समाज मे नारी का स्थान गिरा दिया गया, वह सिर्फ भोग सामग्री मानी जाने लगी, उनको नगर वधू की उपमायें दी जाने लगी, मन्दिरो में भी धर्म के नाम पर अनेक आडम्बर होने लगे। भगवान महावीर युवक थे। इन सब को देखकर उनमें प्रति क्रिया की भावना पदा हुई और इन सब विभीषिकाओ

खिलाफ युद्ध करने के लिए वे घर से बाहर निकल पड़े। भगवान महावीर युवक थे। उनम अमित उत्साह था, उन्होंने अपने जीवन को चरित्र और सयम से सजा लिया था। उनम अमित शक्ति और साहस था। उन्होंने इन सबमे लडने के लिए अहिंसा और अपरिग्रह का सहारा लिया क्योंकि यही दो प्रबल शक्तियां है। जिसकी आत्मा मे इनका उदय हो जाता है वह आत्मा समस्त बुराइयो से अलग होकर मुक्त हो जाती है। भगवान महावीर ने अपने जीवन को, इन बुराइयो से राष्ट्र को विमुख करने के लिए, अन्त तक अर्पित किया, जिससे राष्ट्र म शान्ति और समृद्धि पदा हुई।

अहिंसा और अपरिग्रह के बल पर राष्ट्र को एक शक्ति मे बाधा। उन्होंने सब व्यवस्थायें कायम की। उनके स्थायित्व के लिये अनेक नियम और उप नियम बनाये गये। जिनसे प्राणी मात्र के लये समता का व्यवहार व्याप्त रहा। महावीर ने एकेन्द्री से लेकर पचेन्द्री तक के प्राणियो को राष्ट्र की सम्पत्ति घोषित की। इसलिये उन्होंने कहा कि वृक्ष और पानी भी जीवन के लिए आवश्यकीय है। अत वृक्ष की एक पत्ती भी व्यर्थ मे मत उखाडो और पानी की एक बून्द भी व्यर्थ मे मत खोवो। इस सद्भाव को कायम रखने के लिये उन्होंने अनर्थ दण्ड व्रत, भोगोपभोग परिमाण व्रत आदि की व्यवस्था की जिससे राष्ट्र प्राणवान बना। महावीर की यह व्यवस्था प्राणी मात्र के लिए थी, किसी विशेष समाज या व्यक्ति के लिये नही। इसलिए हजारो वर्षों तक चली और आज भी किसी तक चल रही है।

आज के युग मे महात्मागाधी ने महावीर के इन सिद्धातो को आत्मसात किया जिससे उनका जीवन बना और उन्ही के द्वारा परतन्त्र भारत स्वतन्त्र बना। महात्मागाधी की हर श्वास मे अहिंसा और अपरिग्रह की ध्वनि थी।

जैसे ही आज के लोग इन सिद्धातो से हटने लगे समूचा राष्ट्र दुखी हो गया और विकीर्ण हो गया। जन समाज के युवको को महावीर की पावन शिक्षाओ से प्रेरणायें लेनी चाहिए और अपने जीवन का निर्माण करना चाहिए। जीवन को बखेर देना सरल है लेकिन उसको सुधारना बडा मुश्किल है।

हम जन हैं" हमारा यह शब्द ही हमे बुराईयो से अलग होने के लिय सम्बोधित करता है। जैन एक आदर्श समाज है। इसका आधार सयम और चरित्र है जो हमे अध्यात्म की ओर प्रेरित करता है। जन का जीवन पवित्र होता है और अच्छाइयो से युक्त होता है। लेकिन आज यह सब हमसे आहिस्ते-आहिस्ते विदा हो रहा है। हमारा जीवन सयम विहीन हो रहा है हमारी सस्कृति धरोहर से आहिस्ते-आहिस्ते हम अलग हो रहे हैं। हम स्वय अपने साहित्य को न पढते हैं और न सजोते है। मन्दिर साधना क्षेत्र रहे है जहा हमे आत्म दर्शन के अवसर मिलते हैं। लेकिन हम उनसे भी दूर होते जा रहे हैं। सिनेमा घर हमारे मन्दिर हो रहे हैं और गन्दा साहित्य हमारा जीवन ही रहा है। दिनो दिन फैशन हमारे जीवन मे घुलती जा रही है। शुद्ध खान-पान से हम अलग होते जा रहे हैं। इस स्थिति से हम मानव बुद्धि भी खोते जा रहे है और शारीरिक स्वास्थ्य भी हमारा दिनो दिन बिगडता जा रहा है। ऐसी स्थिति मे समाज के युवक को आत्म निरीक्षण करना चाहिए। युवक की यह स्थिति होने से समाज मे मृत्यु भोज, दहेजप्रथा और अनेक कुरीतियो ने घर कर लिया है जिससे दिनो दिन समाज का हृदय जर्जरित हो रहा है। क्या इन सब बातों पर ध्यान देकर युवक जाग्रत होगा ? और यह फिर महावीर की तरह आगे बढेगा। आशा है मेरे इस विनम्र निवेदन पर समाज व युवक इन दिनो मे आत्म निरीक्षण के रूप म अवश्य ध्यान देंगे। □

भगवान महावीर ने हमें क्या दिया

महापुरूषो के जीवन का मुख्य लक्ष्य स्वय को स्वस्थ रखना और विश्व की आत्माओ को स्वस्थ रखने का होता है । उनकी प्रेरणायें जीवन के लिये महान होती है । अध्यात्म जीवन है और उससे मानव को शाश्वत शांति मिलती है । ऐसे ही कुछ मान वोपयोगी सिध्दात भगवान महावीर ने हमें दिये हैं जो आज भी हमारे लिये अत्यन्त उपयोगी हैं ।

विश्व के समस्त देशो मे भारत एक आध्यात्मिक देश माना जाता रहा है क्याकि हजारों लाखो वर्षो का इतिहास और पौराणिक साहित्य बतलाता है कि इस महान देश न समय-समय पर ऐसे महापुरुषो को जन्म दिया है जिनका लक्ष्य स्वय को स्वस्थ्य रखना और विश्व की आत्माओ को स्वस्थ्य रखने का था और उनकी प्रेरणायें महान थी । जिनके बल पर भारत का मानव समुदाय ही नहीं लेकिन पशु तक अपने जीवन के चरण बढाकर आत्म शाति प्राप्त करने का प्रयास करता था । अध्यात्म जीवन है और उससे मानव को शाश्वत शांति मिलती है यह एक निश्चित बात है । इनका उदाहरण महावीर भगवान, महात्मा बुद्ध और ईसा तक का हमारे सामने उपस्थित है । जन साहित्य म तीर्थकरो के जीवन के वर्णनो मे अलौकिक चमत्कारो की बात मिलती हैं और अतुल वैभव मयनिया के बीच उनकी उत्पत्ति का वर्णन मिलता है । लेकिन वे चमत्कारिक बातें और वैभव उनके जीवन का खीच नहीं सके क्योकि उसम उनको आत्मशाति की झलक नहीं मिल सकी । दुनिया में जितन भी महान चितक हुए हैं उनकी यही स्थिति रही है और उनको एकात जीवन की तरफ बढना पडा है ।

भगवान महावीर का जीवन तो अन्य तीर्थ करो की अपक्षा और भी विचित्र रहा है । महावीर बाल्यकाल से ही महान चितक रहे हैं । वे छोट से जीवन म अपन विशाल महलो के कक्ष मे एकात मे बैठकर शाश्वत शाति की प्राप्ति के लिए और मानव समुदाय का सही मार्ग बतान की सोचा करते थे । उनके चितन की प्रतिभा इतनी विशाल और विकसित थी कि उनके बाल्यकाल के समय म भी बडे-बडे ऋषि अपनी आकाक्षा का समाधान करन के लिये आते थे और वे समाधान लेकर महावीर का अनेक रूप से सम्बोधित करते जाते थे । महावीर का चितन इतना बढ गया था कि उन्होंने कभी भी

सब चीजें राष्ट के लिये अति उपयोगी है। इनके उपयोग के लिये बन्धन डाले। अनेक नियम उप नियम बनाये और उन पर हजारो वर्षो तक साधक चले। उसी की यह शक्ति है कि आज भी भारत देश मे कही-कही अध्यात्म का चमत्कार दिखाई देता है और उसी से यह जीवित है।

विश्व के लिये यह महावीर की महान देन है जो विरासत के रूप मे हमे मिली। पूज्य महात्मा गाधी ने अपने जीवन मे महावीर के सिद्धातो को साक्षात करने का प्रयास किया। उन्होने अहिंसा और अपरिग्रह से अपने आप को सजोया और भारत देश को मुक्त कराया। महात्मा गाधी के बाद इन सिद्धातो मे ढीलापन आया जिससे देश मे अनेक विध्वसकारी घटनाये हुई। जैन समाज का कर्त्तव्य है कि वह पुन इन नतिक शिक्षाओ से अपने आप को सजोये। हममे से आत्म निरीक्षण की भावना कम होती जा रही है जिससे नेतत्व ढीला हो रहा है। यदि हम एकात मे बठकर आत्म निरीक्षण करे तो महावीर के उक्त सिद्धात ही हमे व राष्ट को बचाने मे सक्षम हैं। मन्दिर साधना स्थल हैं। मूर्तियो मे महान साधको की कल्पना है जिनके चरणो मे बठकर हमे दर्शन के नाम पर आत्मनिरीक्षण करना है। हमारी मूर्तिया भी मूक रूप से यही सकेत करती हैं।

☐ सम्यक्त्व से ज्ञान सम्यक्ज्ञान होता है और सम्यक्ज्ञान से सब ज्ञान होता है सब पदार्थों का ज्ञान होने पर ही श्रेय, अश्रेय को जानता है। —दर्शनपाहुड

☐ जिसे आत्म-श्रद्धान नही है, वह मुक्ति को प्राप्त नही होता। —दर्शनपाहुड

☐ चारित्र से भ्रष्ट एक बार सिद्धि को प्राप्त कर सकते हैं पर श्रद्धा रहित कभी सिद्ध नही होते। —दर्शनपाहुड

समस्याओं का हल भगवान महावीर की अहिंसा

धर्म मानवता की एक अखण्ड ज्योति है जिसका उद्गम अहिंसा से है। अहिंसा सह-अस्तित्व और समता का आदर्श मार्ग बताती है जिसका हृदय उदार है वह महान है। विश्वशांति का अमोघ मन्त्र है। अहिंसा का परिकर अपरिग्रह और अनेकान्त विचारधारा है। अतः प्रत्येक प्राणी में सौहार्द और आत्मीय भावनायें अहिंसा से ही हो सकती है – यही भगवान महावीर की अहिंसा हैं।

आज से करीब 2573 वर्ष पहले इस वसुन्धरा पर मगध देश के अन्तर्गत वैशाली के पास क्षत्रिय कुण्ड में राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर पर एक ऐसे महान पुरुष का अवतरण हुआ जिसने मानवता के संरक्षण के लिये अपना समस्त जीवन अर्पित किया और विश्व को बतलाया कि यदि हमें शांति से जीना है तो हमें अहिंसा के आधार से समता और सह अस्तित्व का संदेश जीवन में उतारें। महावीर का मध्यकाल बड़ा विकट था। समस्त देश और राष्ट्र दुःखी थे। धर्म के नाम पर अनेक कुरुढियों का पोषण हो रहा था। धर्म टुकड़े पंथ भेदों में हो रहे थे। विश्व कल्याण की भावनायें प्रायः लुप्त थीं। मानव ने दानव का रूप ले लिया था। मन्दिरों में धर्म के नाम पर अबाध पशु और पक्षियों का हनन हो रहा था। अबलाओं और अत्यजों पर अत्याचार हो रहे थे देश में सर्वत्र तामसी भावना पनप रही थी, सर्वत्र ऐसे लोगों का बोलवाला था जिनके हृदय से मानवता छूटक गई थी। स्वार्थ का बोलबाला था। वर्ण भेद, जाति भेद और ऊँच नीच की भावना ने उग्र रूप ले लिया था। वह समय आज से भी वीभत्स था।

आज देश में राजनैतिक समस्याओं को लेकर गहरा असंतोष है और उस समय धर्म के नाम पर अन्धविश्वासों के साथ होने वाले अत्याचारों से असंतोष था। ऐसे विकट समय में महामानव भगवान महावीर का जन्म हुआ। महावीर प्रारम्भ से ही एक प्रतिभा सम्पन्न स्वयंबुद्ध व्यक्ति थे। अतः उनका जन्म एक युग पुरुष के रूप में माना गया। पौराणिक साहित्य में तो यहाँ तक लिखा गया है कि इस युग पुरुष के जन्म पर भारत देश में ही नहीं किन्तु जगत के कुछ अलौकिक क्षेत्रों में भी महान

खुशियां मनाई गयी और उन्होंने पृथ्वी पर उतर करके राजा सिद्धार्थ के घर पर अमोलक रत्नो की वर्षा करके गरीबो की गरीबी दूर कर दी और महावीर को अलौकिक महापुरुष घोषित किया और कहा कि यह बालक राष्ट्र का एक महान पथ प्रदर्शक सन्त होगा।

महावीर का बाल्यकाल भी बडा रोचक रहा। बाल्य जीवन मे कई घटनायें घटित हुई जिनसे उनके समय-समय पर कई नाम घोषित किये गये। इसलिये वीर, अतिवीर, सन्मति, वर्द्ध मान आदि नामो स व प्रसिद्ध हुए। महावीर प्रारम्भ से ही महान चिंतक थे। बाल्य जीवन मे ऊपर उल्लिखित घटनाये उनके सामने आती और वे इन घटनाओ से व्यग्र होकर चिंतित हो उठते। कई बार वे एकान्त म वठकर सोचते कि इन समस्याओ का हल क्या हो ? महावीर के बाल्य काल से यौवन अवस्था तक ये समस्यायें और ज्यादा बढ गई और वे जनता मे व्याप्त असन्तोष को नही देख सके। महावीर एक राजघराने मे पदा हुए थे। उनके पास अनन्त वभव था लेकिन वह वैभव महावीर को खीच न सका। महावीर के हृदय मे अपार करुणा का स्रोत था। उनमे आत्मीयता थी। उनके हृदय मे विशालता थी। वे चाहते थे कि विश्व के प्रत्येक प्राणी को स्वतन्त्र रूप से जीने का हक है। अन्याय और अत्याचार से मानवता जीवित नही रह सकती। अत महावीर तेरा काम है इन समस्याओ से ग्रस्त राष्ट्र को स्वतन्त्र करना। लेकिन वतमान जीवन से वभव सम्पत्तियो से या इन राज्य प्रासादो मे वठकर सिर्फ विचार मात्र करने से इन समस्याओ का हल नही हो सकता। ये समस्यायें सघष वलिदान और त्याग चाहती है जिनके लिये दृढ सकल्प और दृढ साधना की आवश्यकता है। महावीर ने गहरे रूप से विचार किया और अन्त म निर्णय लिया कि मुझे ऐसे निद्व द्व जीवन मे जाना है जहा एकाकी वठकर विश्व कल्याण का माग निकाल सकू।

महावीर के पहले भगवान पार्श्वनाथ नाम के एक ऐतिहासिक महापुरुष गये थे उन्होंने भी राष्ट्र को मानवता का सन्देश देने के लिये और उसको जीवित रखने के लिये अथक प्रयास किया था। लेकिन वह प्रयास स्थायित्व नही ले सका और उनके जीवन के 250 वर्ष बाद ही देश और राष्ट्र मे अपना प्रचार धम के नाम पर उच्छ ङ्खलतायें जटिल रूप से इतनी बढ गई कि महावीर के उदय काल तक उन्होंने विकट रूप धारण कर लिया। महावीर ने इन समस्याओ को हल करने के लिये राष्ट्र को त्राण देने के लिये विश्व मे शांति कायम करने के मार्ग को हल करने लिए, अपने आप को माता पिता, राज्य और वभव से मुक्त किया। विवाह के प्रश्न को माता के बार-बार आग्रह करने पर भी ठुकराया और निश्चल ब्रह्मचय जसे दुद्धर तप को अपना लक्ष्य बना कर जगल के एकांत प्रदेश को अपना साथी बनाया और 12 वर्ष तक एकांत मौन साधना मे इन समस्याओ को हल करने के लिए गहरा चिंतन किया।

इस 12 वर्ष के साधन काल मे महावीर ने भूख प्यास शीत और उष्ण तक की बाधाओ को बाधा नही माना। उनका जीवन निर्विकल्प जीवन बन गया, और इस साधना काल मे महावीर ने गहरे चिंतन और अध्ययन के बाद यही तय किया कि इन समस्याओ का हल अगर हो सकता है तो अहिंसा जसे सार्वभौमिक सिद्धांत से ही हो सकता है। अहिंसा ही एक ऐसा सिद्धात है जिससे मानवता की पुन प्रतिष्ठा हो सकती है। अहिंसा वात्सल्य प्रेम और आत्मीयभावनाओं की जननी है। अहिंसा प्रति प्राणी मे ईश्वर दर्शन देखती है और वह चाहती है कि विश्व का प्रत्येक प्राणी स्वय भी जीवे

और दूसरे को भी जीने दे। अहिंसा स्वय एक धर्म है। धर्म का सम्बन्ध जाति और वर्ण से नही। ऊच और नीच से नही। पथ भेद की दिवारो से नही। मन्दिर और मस्जिद से नही। धर्म मानवता की एक अखण्ड ज्योति है जिसका उद्गम अहिंसा से है। अहिंसा सह-अस्तित्व और समता को आदर्श माग देती है। उसका हृदय उदार है वह महान है। विश्व शाति का अमोघ मन्त्र है और इस अहिंसा का परिकर अपरिग्रह और अनेकान्त विचारधारा है। प्रत्येक प्राणी मे सौहाद और आत्मीय भावनायें अहिंसा से ही हो सकती हैं। भगवान महावीर का यह अन्तिम निर्णय था। 12 वर्ष बाद उन्होने उस अहिंसा के के सिद्धान्त को स्वय मे अनुप्रणित किया और विश्व को सन्देश और त्राण देने का निर्णय लिया। यह निर्णय महान था, उनको विश्व को अवबोधित करना था। अत उन्होने तय किया कि मगध देश के राजगृही नगरी के विशाल उत्तॅग गिरिराज के उन्नत मस्तक से यह निर्णय विश्व के सामने रखा जाय। महावीर के दीक्षाकाल के समय अन्य भी कई पुरुष उस क्षेत्र मे विचरण कर रहे थे लेकिन वे दुखित जगत के प्राणी को सान्तवना नही दे सके। अत उस वक्त सबका केन्द्र बिन्दु महावीर थे। बडे बडे सम्राट और राजा भी यह चाहते थे कि महावीर अपनी दिव्य वाणी से त्रस्त प्राणियो को बचाने के लिये क्या माग बतलाते है।

महावीर ने अपनी साधना, उनके पीछे अगणित प्राणियो ने अपनी कदमे बढाई और उस पर्वत के क्षेत्र ने एक विशाल सभा का रूप ले लिया। उस सभा मे मानव ही नही पहुचे लेकिन पशु पक्षियो ने भी अपनी उपस्थिति से उस क्षेत्र को घेर लिया। महावीर के चेहरे पर, अपार शाति थी। अहिंसा का पूर्ण साम्राज्य था। वीतरागिता की अपूर्व छटा थी। महावीर की अतर्दृष्टि थी सभा मे पूर्ण शाति का साम्राज्य था। महावीर ने अपने मौन को तोडते हुए समस्त प्राणियो को समझाते हुए लोक भाषा मे अपनी प्रथम देशना मे स्पष्ट रूप से घोषित किया कि जीवन को जीवित रखने के लिये मैं अहिंसा के सिद्धान्त को ही महत्व देता हू और यही एक ऐसा सिद्धांत है जिससे सन्तप्त और दुखित प्राणियो को त्राण मिल सकता है। अहिंसा प्राणी मात्र मे समता का व्यवहार चाहती है। वह मानव को महत्त्व नही देती, मानवता को महत्व देती है। उसकी दृष्टि मे मनुष्य कीट और पतग एक हैं। वह सबमे आत्म दर्शन देखती है और कहती है सब मे प्राणो की प्रतिष्ठा है। अहिंसा कहती है सबके प्राण समान है इस वसुन्धरा पर सबको जीने का हक है। मानव का एकाधिपत्य नही जो किसी को मार सकता है और किसी को बचा सकता है। अहिंसा धर्म का रूप है। पथ भेद दीवारें है, धर्म नही।

महावीर ने अहिंसा को व्यावहारिक रूप देने के लिये उसके कई भेद और प्रभेद बतलाये और इसको मूर्त रूप देने के लिये अपना सशक्त कदम बढाया। महावीर की इस दिव्य देशना का सबने समादर किया और अगणित लोगो ने उनके चरणो मे लेटकर इस भगवती अहिंसा के सिद्धात को स्वीकार किया और कितने ही लोगो ने सकल्प किया। इसके प्रचार का महावीर ने मुख्य रूप से इस अहिंसा के परिपालन के लिये दो माग बतलाये। एक आशिक अहिंसक और दूसरा पूर्ण अहिंसक। इस अहिंसा का निनाद विश्व के कोने-कोने तक पहुचा कितने ही मठाधीशो ने प्रयास किया। इसके विरोध का, लेकिन वे शक्तिया खत्म हो गई, ढह गई और उनका अस्तित्व खत्म हो गया और महावीर भगवान का मिशन सफल हुआ।

अहिंसा को जीवित रखने के लिये भगवान महावीर ने अपरिग्रह के सिद्धान्त और अनेकात विचार धारा पर बहुत बडा बल दिया। वे समझते थे कि अहिंसा की हत्या शोषण और एकान्त विचार धारा से ही होती है। राष्ट्रो मे विवाद अन्याय और अत्याचार सब शोषण का ही परिणाम है। अत अहिंसा के साथ राष्ट्र और समाजो को जीवित रखने के लिये अपरिग्रह अनेकान्त जसे सिद्धातो का भी जीवन मे आना अति आवश्यक है। इन सिद्धातो को जीवित रखन के लिये अगणित साहित्य का सृजन किया गया और उसी का वह परिणाम है कि 2500 वष वाद भी इन सिद्धातो से राष्ट्र और समाजो को त्राण मिल रहा है। महावीर के इन सिद्धातो की आज भी आवश्यकता है इसके लिये सारा राष्ट्र उन लोगो की तरफ देख रहा है जिनके कधो पर इनके प्रचार और प्रसार की जिम्मेदारी है। आज देश मे सवत्र हाहाकार और चीत्कार है, सारे देश दुखी हैं शाति का नाम नही है। चारो तरफ खुले रूप से अराजकता अनुशासनहीनता बढती जा रही है। पारस्परिक प्रेम और सौहाद का अभाव हो रहा है। भाई चारा और व्यवहार खत्म हो रहा है। उसकी दृष्टि मे मानवता की काई कीमत नही है। ऐसी स्थिति मे महावीर के ये तीन सिद्धात ही देश और राष्ट्र को त्राण दे सकते है। इसके लिये आज हमे विचार करना हैं।

☐ जो मिथ्यात्व अन्धकार को दूर करने के लिए सम्यक्त्व-रत्न रूपी दीपक को प्रज्ज्वलित कर लेता है, वह तीनो लोकों को देख लेता है।

—रयणसार

☐ लोक मे सम्यक्दर्शन रत्न की पूजा सुर-असुर सभी करते हैं।

—दर्शनपाहुड

☐ तत्वज्ञान से दर्शन की शुद्धि होती है और दर्शनशुद्धि होने पर चारित्र की प्राप्ति होती है। —ओघनिर्युक्तिभाष्य

☐ ज्ञानपूर्वक तत्वों का श्रद्धान करने पर सम्यक्त्व प्रकट होता है।

—उत्तराध्ययनसूत्र

महावीर ने बहुत ध्यान से सुना। एकात मे बैठकर सोचा कि मुझे क्या करना है ? समस्यायें विकट थी विकराल थीं। सामने आसुरी वृत्तियो का बहुत बडा प्रभाव था लेकिन आस्था भावनाओ को रोक नही सके और इन सघर्षों से लडन के लिये आगे बढ गये।

महावीर के निर्णय का सब ही बुद्धिजीवी प्राणियो ने तो स्वागत किया ही लेकिन मूक प्राणियो ने भी इस निर्णय से शाति की स्वास ली। महामानव भगवान महावीर ने सोचा कि इन सब समस्याओ के हल के लिये मुझ मेरे जीवन को साधना होगा और उसके बाद मुझ इन सबके प्रतिकार के लिये बढना होगा। महावीर इन विचारो के साथ राजप्रासादो से निकल गये। विपुल साम्राज्य और सम्पत्ति का तो त्याग किया ही लेकिन मा और बाप के ममत्व से भी अपने आप को अलग किया। महावीर अब एक ऐसे जीवन मे आ गये जिस जीवन मे आने पर उनका विराट रूप हो गया। भगवान महावीर उन समस्याओ का हल शाति से चाहते थे। सघर्ष से नही, विरोध से नहीं और न किसी विशेष आग्रह से। महावीर महामानव थे और वे चाहते थे कि देश मे मानवता जीवित रहे, इसलिए महावीर ने इन अत्याचारो से राष्ट्र को बचाने के लिये पाच सिद्धातो का आश्रय लिया। महावीर के पाच सिद्धात ऐसे थे जो सर्वकालीन, सार्वभौमिक और सर्वहितकारी थे जिनसे हर युग मे प्राणी मात्र को शरण मिल सकता था। इसलिये महावीर ने अपने निर्णय मे सर्व प्रथम अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह को महत्व दिया क्योंकि सिद्धात सिद्धात होते हैं। उनमे परिवर्तन नही आ सकता। मानव बुराइयो मे तब फसता है जब उनमे स्वार्थ और हिंसा भावनायें पनपती है और हिंसा भावनाओ के बल पर समस्त ब्रह्माण्ड पर साम्राज्य कायम करना चाहता है।

भगवान महावीर यह नही चाहते थे। भगवान महावीर चाहते थे कि इस वसुन्धरा पर असख्य और अनन्त प्राणी जन्म लेते हैं और उन सबको स्वतन्त्र रूप से अपने ही बल पर जीने का हक है। उनकी स्वतन्त्रता पर किसी को किसी तरह का आघात करने का हक नही। इसलिए उन्होने अहिंसा के सिद्धात पर बल दिया और उन्होने घोषणा कर दी कि तुम भी जियो और दूसरो को भी जीने दो। जहा ये भावना आती है मानव झूठ चोरी व्यभिचार और अधिक परिग्रह के सचय की तरफ बढ नही सकता। इन सिद्धातो को भगवान महावीर ने अपने जीवन मे उतारा और मानव मात्र को इसके लिये प्रेरणा दी और वे इसमे अति सफल हुए। महावीर के इन सिद्धान्तो के प्रचार के लिये हजारो शिष्य आगे आये और वे हजारो वर्षों बाद भी मानव को प्रेरणा देते रहे।

भगवान महावीर ने राष्ट्रहित को लक्ष्य मे रखते हुए अनेक नियमो और उपनियमो का भी प्रचार किया जिनसे राष्ट्र को जीवन मिलता रहा, जैसे तप, त्याग और सयम। महावीर ने इन उप नियमो को जीवन के साथ जोडने का प्रयास किया जिससे अभाव ग्रस्त समय मे भी देश बचता रहा। देश मे नतिकता सदव जीवित रहे और शोषण को बल नही मिले। इसके लिये अपरिग्रह पर तो बल दिया ही। लेकिन भोगोपभोग परिणामव्रत, उपवास, रसपरित्याग आदि तपो पर भी बल दिया और उस समय हर स्थिति मे राष्ट्र को त्राण मिला।

आज समय भी अति विकट है और समूचे राष्ट्र एक विचित्र स्थिति से गुजर रहे हैं। स्वतन्त्रता के बाद आदमी स्वच्छंद हो गया और उसका नैतिक पतन चरम सीमा पर पहुंच गया। आज देश में विचित्र अन्तर्द्वंद मचा हुआ है। चारो तरफ लूट, खसोट, घूस, पाकेटमारी, अपहरण और मार तोड़ का बोल बाला चल रहा है। जिनके हाथ में देश की जबरदस्त जवाबदारी है वे भी पथहीन बन रहे हैं। देश के नौनिहाल युवक विलासी बनकर स्वयं आगे बढ़कर अत्याचारो को जन्म देकर अपना युवक पना सार्थक कर रहे हैं? स्वार्थ इतना बढ गया है कि सहअस्तित्व की भावनायें गायब हो रही हैं। मानव अपने आप को असुरक्षित मान रहा है। कही भी आप जाइये सुरक्षा का अनुभव ही नहीं हो रहा है। महगाई सिर पर मंडरा रही है अन्न के लिये त्राहि त्राहि मच रही है। चारो तरफ प्रमाद नजर आ रहा है। गरीब और अमीर की खाई दिनो दिन मजबूत हो रही है। फिर भी नेताओ के पास कोई मार्ग नहीं है। सिर्फ भाषणो और आश्वासनों से देश में शांति नहीं आ सकती। समस्यायें बढती जा रही हैं और जब तक इन समस्याओ के लिये गहरे रूप से विचार नहीं किया जायगा वे हल नही हो सकेगी। समस्याओ का हल तब ही होगा जब देश के लोग संकीर्ण और स्वार्थी विचारो से आगे बढकर भगवान महावीर के इन पुनीत सिद्धान्तो को फिर जीवन मे उतारेगे। इन समस्याओ के हल में अहिंसा और अपरिग्रह जैसे सिद्धान्तो को फिर अपनाने की जरूरत है। जहा अहिंसा अपरिग्रह आता है वहा मानवता भाईचारा और आत्मीयता अपने आप आ जाती है। देश में संग्रहवृत्ति का कितना बड़ा जोर है। एक को रोटी नही मिलती है और दूसरे के पास अपार भण्डार भरा हुआ है। राष्ट्रहित की भावना जागृत हो जाय तो समस्त समस्याओ का हल हो जाय।

आज देश मे त्यागी और संयमी नेता नही हैं। आज के नेताओ में स्वार्थ है। मैंने कई बार सोचा कि हम सरकार की तरफ देखते हैं, अपनी तरफ क्यो नही देखते? हम अपना मुंह क्यो नहीं बन्द करते? आज हम हिप्पी जैसे बालो को बढाकर तेल की महगाई को क्यो महत्व देते हैं? इन होटलों मे बैठकर रात को दो बजे तक क्यो खाते रहते हैं? हम आज इतने विलासी बनकर सुन्दर चेहरे को सफेद मिट्टी पाउडर और क्रीम के नाम पर क्या पोतते हैं? क्या इनके बिना हमारा जीवन नही चलता। महावीर ने तो हमको यहा तक कहा है कि महीने म आठ दिन उपवास करो। महिने म हर दिन व्रत और उपवास करते हैं तो अन्न की कितनी बचत होती है और रसों के त्याग से तेल और घी की कितनी बचत हो सकती है। इन समस्याओ के हल का यही एक सरल मार्ग है जिसको महामानव भगवान महावीर ने बतलाया है। क्या राष्ट्र के लोग महावीर के इन सिद्धान्तों से अपने जीवन का माप न करेंगे? और अपना आत्म निरीक्षण करेंग? ये हजारो वर्षो के सिद्धान्त सही और शाश्वत हैं।

लोकगीत पूर्वी

साधना और आराधना का पर्वराज पर्यूषण

पर्वराज पर्यूषण आज के परिवेश मे अत्यत व्यस्तता के बावजूद हमे आत्म निरीक्षण करने का आमन्त्रण देता है। साधना और आराधना के इस पर्व पर यदि समाज मे फैली हुई कुरीतियो को समाप्त करने के लिये स्व चिन्तन कर सके तो समाज का रूप ही कुछ और हो जाये। आइये-लेखक के विचार पर ही मनन करते हुये आत्म निरीक्षण करें।

यह पर्वराज कितनी ही बार अपने जीवन म आया है और हमने पर्वराज के दस दिन धूम-धाम स आराधना के नाम पर परिपूर्ण किये हैं। पर्व पवित्रता के सूचक हैं। पर्वराज के पवित्र दिनो म हम पूजा करते हैं, मुनिराजो और बड़े 2 दिग्गज विद्वानो के प्रवचन सुनते हैं। लेकिन कभी एकात साधना के स्थलो म बैठकर हमने यह भी सोचा है कि इन सबके करने के बाद भी समाज की आत्मा म और हमारी आत्मा म कोई मौलिक अन्तर आया है क्या ? साधना और आराधना, गुणगान, पूजापाठ जोर स जयकारो की घोषणा नही चाहते। यह चाहते हैं आत्मशुद्धि, समाज शुद्धि और इनके साथ समता और आत्मीयता की भावनायें। जिनसे स्वय की आत्मा म, समाज की आत्मा म और राष्ट्र की आत्मा म सह अस्तित्व की भावनायें पैदा हो। हमने कभी सोचा है कि इन मन्दिर व मूर्तियो का निर्माण क्यों किया गया है और हम इनकी आराधना क्यो करते है ? यह सासारिक प्राणि सतप्त है, त्रसित है, दुखित है और अनेक आकुलताओ से वेष्टित है। ऐसी स्थिति म कभी 2 हम भी चाहते है कि हमे शांति मिले और हमारे जीवन मे कभी सुख का आभास हो, लेकिन सुख की प्राप्ति आकुलता मय वातावरण म नही मिल सकती। उसकी प्राप्ति के लिय आवश्यक है एकात स्थलो की और ऐसे अवलबनों की जहा जाने पर शांति की रेखाओ का उदय हो।

इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिये हमारे पूर्वजो ने एकात म ऐसे साधना गृह बनाये जहा आत्मा की शान्ति से बैठकर अपने जीवन का अध्ययन कर सके। इन साधनागृहो म ऐसे महान साधुओ ने अपने जीवन मे पूर्ण वीतरागता और अहिंसा की प्रतिष्ठा कर डाली। जब हम साधना गृहो मे जाते

हैं तब मानो मूक रूप से इन महान् सतोके प्रतिविम्बका आव्हान करते है कि साधक क्षण भर हमारे पास मे बैठकर अन्तर्दृष्टि बन और अपने आपका निरीक्षण करे । दर्शन का अर्थ मेरी आराधना और मेरी पूजा नही। दर्शन का अर्थ है आत्म निरीक्षण। इसी निरीक्षण के लिए स्वय के जीवन के निर्माण के लिए पर्वों के नाम पर कुछ ऐसे विशिष्ट दिन आते हैं जिनमे हम निराकुलित होकर तप, सयम, व्रत और त्याग के बल पर बाह्य जीवन से अपने आपको हटाकर कुछ जीवन निर्माण के लिये सोच सके, पर्व दिन इसीलिए आते हैं और इनकी इस आराधना का यही सही उद्देश्य है। लेकिन कुछ वर्षों से जैन समाज ने इस आत्म निरीक्षण की भावना को प्राय खत्म सी कर दी है और इन पर्वराजो की आराधना को हमने एक रूढि का रूप दे डाला है जिससे आज हमारा जीवन निर्माण नही होता। आज तो हमने साधना गृहो का रूप ही बदल डाला है। जिन साधना गृहो का निर्माण आत्म शांति के लिए किया गया था आज वे हमारे प्रदर्शन गृह बन रहे हैं। न उनमे सही रूप से पूजाएँ की जाती हैं और न उनमे कही हमे शांति व वीतरागता की झलक मिलती है। क्योंकि त्याग तप की जगह विविध रूप से शरीर को सजाना और प्रदर्शन मात्र ही मानों हमारा लक्ष्य हो गया है। यह हम कभी नही सोचते हैं कि हमारा यहाँ आने का लक्ष्य क्या है? सही साधक आज इन पवित्र गृहो मे जाकर आराधना भी नही कर सकता। हमें मन्दिरो मे जोर 2 से चिल्लाहट मिलेगी या अधिकतर विकथायें। इस स्थिति मे जिस शांति का हम सोचते हैं वह कहा से मिल सकती है। बल्कि मैं तो कभी 2 यह विचार करता हू मन्दिरो मे विराजमान भगवान भी यह सोचते होगे कि मैं किनके बीच आकर बैठ गया जो न स्वय शांति से बैठ सकते हैं और न मुझे बैठने देते, मैं तो चाहता हू हम पूजा की वर्तमान परिपाटी मे परिवर्तन करे और इन मन्दिरो मे शांति से बैठकर स्वय के सम्बन्ध मे विचार करे।

हमारे स्तोत्रो में और पूजाओ मे कहा गया है कि एक क्षण के लिए भी तुम्हारे परिणामो में निर्मलता आ गई तो तुम्हारा भवबन्धन कट गया। इसी के साथ इन पर्व दिनो मे मन्दिरो मे जो विभिन्न तरह के शृ गार करके हम और महिलायें जाती है उन पहनावा मे भी परिवर्तन करे। वर्तमान ढाचे से हम कितनी ही पूजा करे लेकिन इससे परिणामो मे निर्मलता नही आ सकती। यह वर्तमान पहनाव विकारी पहनाव है। मन्दिरो मे हम लोगो को बहुत ही सादे पहनाव मे जाना चाहिये। आज हमारे भीतर अनेक तरह की अनाचारी प्रवृत्तिया ऐसी बढ गई है जिनका उल्लेख करते हुए भी मुझे शर्म आती है। हम बडे 2 मुनिराजो आध्यात्मिक सन्तो के भाषण सुनते हैं लेकिन समाज मे दिनो दिन रात्रि भोजन, अभक्ष्य भक्षण का प्रचार बढता हुआ आ रहा है हम न स्वाध्याय करते और न कभी एकात मे बैठकर नमस्कार मत्र की माला फेरते समाज की स्थिति तो ऐसी दु खद है कि जो बडी 2 सभाओ मे धर्म के प्रचार की बातें करते हैं उन्ही के घरो मे रात्रि भोजन व अभक्ष्य भक्षण देखा जाता है जिससे आत्मा को बडी वेदना होती है। मैं चाहता हू कि इस बार समाज इन बातो पर विचार करे और प्रवचन स्थलो मे बैठकर संस्कृति को खत्म करने वाली इन पद्धतियो को हमेशा के लिये खत्म कर डालें। इसी के साथ हम सामाजिक कुरीतियो को भी खत्म करने पर विचार करे।

आज दहेज की प्रथा मृत्यु भोज की प्रथा विवाहो के प्रदर्शनो ने समाज की आत्मा को जर्जरित कर डाला है। हम बडी 2 आत्मा और अनात्मा की चर्चायें करते हैं। लेकिन समाज मे

आज अबोध बालिकाओ के विवाह के नाम पर जो शोषण किया जाता है उस पर नही सोचते । क्या यह अमानवीय कृत्य नही है? दूसरी तरफ समाज म जीवित बालिकाओ के नाम पर हजारो रुपये की य धर्मात्मा सौदाबाजी करते हैं। क्या हम इस भयकर बिमारी के सम्बन्ध मे नही सोच सकते। पहले इन कुरीतिया के खिलाफ युवक आन्दोलन करते थ लेकिन आज युवक स्वय बिक रहा है। मैं तो यह चाहता हू कि इन पव के दिनो म महिलायें स्वय का सगठन कर और कु वारी कन्याओ को प्रोत्साहित करे कि वे ऐसे लडके स विवाह न करे जो रुपयो के नाम पर समाज के चौराहे पर खडा होकर अपनी कीमत वसूल करे।

यदि कन्याय स्वय विद्रोह पर उतर जाय तो यह दहेज की प्रथा खत्म हो सकती है ऐसे ही और बहुत सी कुरीतिया हैं। अत मेरा तो विनम्र निवेदन है कि इस बार हम पव दिन इस रूप म मनावें कि मन्दिरा म नही रूप से पूजायें हो। मन्दिरो म वीतरागता की प्राप्ति के लिए महिलाओ के पहिनाव म और हमारे पहनाव म परिवतन हो। युग परिवतन चाहता है—पूजा पाठ के तरीको मे। इसी तरह हम स्वय के परिमार्जन के साथ समाज का मार्जन कर और ऐसे सगठन तयार करे जो समाज सुधार के लिय आगे बढ जाय और दहज जैसी कुरीति, भोडे नृत्यो और अन्याय कुरूढियो को खत्म करन के लिए कृत सकल्प हो जाय तो हम समझेंगे कि इस बार हमन पवराज की सही रूप से आराधना की।

☐ स्त्रियो के रुप को देखकर उनम अभिलाषा की निवत्ति अथवा मथून सज्ञा का निरोध करना चौथा ब्रह्मचर्य व्रत है।

—नियमसार

☐ इस लोक और परलोक मे जितने भी दु ख देनेवाले दोष उत्पन्न होते हैं सब मथुन की इच्छा से होते हैं।

—भगवती

☐ जो मन, वचन और शरीर से परायी स्त्री को माता, बहिन और पुत्री के समान समझता है, वह श्रावक स्थूल ब्रह्मचारी है।

—कार्तिकेयानप्रेक्षा

आत्म विशुध्दि का मार्ग

जहाँ काम, क्रोध, मद, मोह के भाव दुख के कारण है वहीं क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, सोच, सयम, तप, त्याग, आकिंचन्य, ब्रह्मचर्य सच्चे सुख के सही मार्ग है। आत्म विशुद्धि के मार्ग के लिये उन्हे जीवन मे उतारना होगा।

भारत देश एक विशाल देश है। इसमे अनेक धर्म, अनेक भाषा और भिन्न-भिन्न संस्कृति है। सभी धर्मों ने पर्व दिवसो को स्वीकार किया है। पर्व शब्द पवित्रता या ग्रन्थी का द्योतक है जिससे जीवन को प्रेरणा मिलती है। इन धर्मों मे जैन धर्म भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है और उसने इन पर्वो को साधना दिवसो के रूप मे किये हैं। जिनमें यह सतप्त प्राणी एकात स्थलो मे जाकर साधक के रूप मे स्वयं के सम्बन्ध मे विचार कर सकता है व करता है।

ससार का प्राणी सतप्त है त्रसित है और व्याकुल है। अत वह चाहता है कि मुझे सुख और शाति मिले। वह उसके लिये प्रयास भी करता है लकिन वह प्रयास भौतिक उपलब्धियो के लिए करता है। जिससे वास्तविक शाति आज के प्राणी को नही मिलती। जैन धर्म की मान्यता है कि साधना मे सुख और शाति नही मिल सकती। सुख और शाति स्वयं से ही मिलती है जिसका सम्बन्ध अध्यात्म मे है। अध्यात्म जीवन का एक अग है। जो आत्मा का बाह्य जीवन से हटाकर अन्तर की तरफ ले जाता है। जिसमे रमण करने के बाद वह एक अमित शाति और सुख का अनुभव करता है। यह तो निश्चित बात है कि काम, क्रोध, मद मोह के भाव दुखद हैं। ये विकारी भाव हैं अत जैन सन्तो ने बतलाया कि य सद भाव नही। सद्भाव उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव, सत्य, सोच, सयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य है और यही सही रूप मे धर्म है। ज्ञानी प्राणी इन्ही के प्रयास के लिए एकात स्थलों मे जाते हैं और वहा जाकर उनको पूर्ण रूप से उतारने का प्रयास करते हैं।

इन दस प्रकार के धर्मों का वर्णन जैन साहित्य मे विशद रूप मे मिलता है। जिनका एक मात्र उद्देश्य आत्मिक निर्मलता है। धर्म का लक्षण वस्तु स्वरूप है। यह हर व्यक्ति हर प्राणी और हर पदार्थ मे मौजूद है। लेकिन ससार का प्राणी की दृष्टि बाह्य पदार्थ पर रहती है तब उन्ही मे सुख शान्ति की तलाश करता है और अपना समस्त जीवन व्यर्थ की आसक्तता मे ही खो देता है। जिसका परिणाम होता है कि वह वास्तविक शाति और सुख को प्राप्त नहीं कर सकता।

उत्तम क्षमादि दस धर्म, आत्म धर्म है। इनसे जीवन की दृढ़ता होती है। इसीलिये प्रति वर्ष इन दस धर्मों की आराधना की जाती है। इनकी आराधना के लिये बिखरे जीवन को समेटने की बड़ी जरूरत है। यदि जीवन बाहर की तरफ विशृंखलित हो और वह चाहता हो कि मुझे धर्म की या शांति की प्राप्ति हो जाये तो वह नहीं हो सकती।

इन दस धर्मों के सम्बन्ध मे मैंने कई बार चिंतन किया है। इनमें सबसे बड़ा महत्व मैं निष्कपट भाव को देता हू। आर्जव नाम सरलता का है जिसका उद्गम कपट भाव और मायाचार को निकालने से ही होता है। आर्जव धर्म धरातल की शुद्धि चाहता है जिसका चिंतन आत्मा के अन्तस्थल तक पहुचता है और यह अपने निर्मल प्रवाह के द्वारा सिरपी भूमि का शुद्ध करता हुआ बाहर में सूर्य की तरफ प्रस्फुटित होता है। जहा आर्जव धर्म होता है वहा मानव का या साधक चिंतन सम्भाषण और क्रिया एक रूप होती है। क्योंकि धर्म एक रूप का स्वीकार करता है। उसकी प्राप्ति विकल्पो से नही होती। उसकी प्राप्ति के लिये निर्विकल्प साधना की जरूरत है। मायाचार साधना को खत्म कर देता है। ऐसा हमे बड़े-बड़े सन्तो के जीवन से मिलता है। मैं तो यह मानता हू कि धर्म का प्रारम्भ ही आर्जव से है।

जीवन मे धर्म तब ही बन सकता है जब मानव आत्मिक विशुद्धि को ही अपनी निधि मानता है। अनादि से इस प्राणी ने इसके सम्बन्ध मे विचार नही किया। आज भी इस युग म भौतिक विचार धारा को ही अधिक महत्त्व है। धर्म का नाम तो लिया जाता है लेकिन धर्म की तरफ कोई जाता नहीं। आज चारो तरफ अर्थ की लोलुपता बढती जा रही है। कहने मे इस युग को प्रगति का युग कहा जाता है। लेकिन इस अर्थ प्रधान युग मे इसकी प्राप्ति के लिए देश म कितनी अनैतिकता और अनाचार बढ गया है, जिससे समस्त राष्ट्र दुखी है। आज के मानव की दौड सुख और शांति के लिए नही है। देश म हिंसा, छल, कपट का कितना जोर है यह बतलाने की आवश्यकता नही। जिनको हमने देश और धर्म का नेतृत्व दे रखा है आज उनम भी दम्भ, कपट और मायाचार का जोर देखा जाता है। आज के युग म वही होशियार और चतुर माना जाता है जो अधिक कपटी और छली हो। इसी का यह परिणाम है कि दिनो दिन राष्ट्र देश और समाज की स्थिति भयावह होती जा रही है। अत आर्जव धर्म आज भी हमे आह्वान करता है कि हम हमारे जीवन को शल्य रहित शुद्ध बनाये। महापुरुषो ने तो इस जीवन को छूआ तक नही किन्तु आज के युग के मानव महात्मा गाधी और रवीन्द्रनाथ टगौर जैसो ने भी इस जीवन को ठीक नही माना।

अत इन दस धर्मों के नाम पर इन पवित्र दिनो म जैन समाज आत्म निरीक्षण करे और सही रूप से इन आध्यात्मिक धर्म को जीवन म उतारने का प्रयास करे। इन दस दिनो म हम व्रत और उपवास भी करते हैं। वास्तव म व्रतो से अन्तरदृष्टि आती है और उपवास से आत्म परिणामो म स्थिरता आती है। ये उपेक्षणीय नही हैं। यदि इनकी उपेक्षा की जाय और इन्द्रिय भोगो का मार्ग छोड दिया जाय तो साधक साधना क्षेत्र म टिक ही नही सकता। व्रत और उपवास [illegible] है जिसके हृदय म अन्तर की तरफ झुकने की प्यास है। [illegible] जीवन म यहा ना [illegible] है। अन्तर की तरफ झुकने के बाद बाहर विकल्प ही नहीं आता। वहा तो [illegible] कि वह फिर बाहर आने की सोचता नहीं [illegible] है। [illegible] पथ तत्व मे नहीं मिलता। इसकी प्राप्ति के लिए [illegible] एक मात्र साधन है। □

आज के युग में व्रतों का महत्व

आत्मा अजर अमर है वह कभी न मरती है और न कभी जीती है। वह अनन्त ज्ञान और दर्शन का पूंज है। जिसमे शाश्वत शांति और सुख का निवास है। इनको प्राप्त करने के लिये व्रत का अपना विशेष महत्व है। लेखक पव और व्रत पर आत्म निरीक्षण करने की बात को सर्वोपरी मानते हैं आत्मा को अजर अमर बनाने का यही सबसे श्रेष्ठ अवसर हो सकता है।

विश्व के समस्त धर्मों मे जन धम एक विशेष महत्व रखता है, क्योकि यह आत्म धर्म है। इसके सिद्धात उदार सावभौमिक, सावदायिक और सवप्राणी हितकारी है। इस धम की आधार शिला न ईश्वर है और न कोई व्यक्ति विशेप। इसकी आधारशिला वीतरागता वनाम अध्यात्म है। यही एक शाति का माग है। जन धम ने आत्मा को अजर और अमर माना है। वह कहता है कि आत्मा न कभी मरती है और न कभी जीती। वह अनन्त ज्ञान और दर्शन का पूज है। वह निरजन निराकार है और चेतय का अखण्ड पिण्ड है, जिसमे शाश्वत शान्ति और सुख का निवास है। फिर भी उसकी अनन्त अवस्थायें और पर्यायें अनक रूप म नित्य होती रहती हैं। जो विश्व के हर आचल मे हैं। इन अवस्थाओं के परिवतन को ही जीवन और मरण माना है। यह आत्मा जब तक ससार अवस्था मे रहता ह तब तक वन स्पति जगत से लेकर पशुपक्षी और मानव पर्याय तक स्वासें लेता रहता है। जब स्वांस खतम हो जाती है तब उसका मरण माना गया ह और उन स्वासो की पुन प्राप्ति को ही जीना माना गया है और यह जन्म मरण ही ससार है। इससे जीवन म शाति नही मिलती और न शास्वत सुख की प्राप्ति हो सकती है। इस सुख की प्राप्ति के लिए प्राचीन साहित्य मे साधना का माग आराधनीय माना गया है। प्राचीन भारत म जितन भी महापुरुप हुए है उन्होंनें साधना माग को स्वीकार किया है और उसी से उन्होन अत्यधिक सुख की प्राप्ति की है। इसके लिए अनेक नियम और उपनियम वतलायें हैं। जिनम व्रतो को विशेप महत्व दिया गया है। इन व्रतो का श्रेय होता है जीवन निर्माण का सही मार्ग बुराइयो का छोड़कर अच्छाइयो के लिए अपनो कदम वढाना जन धम न जिसका धरातल अध्यात्म है उसने जीवन निर्माण म व्रत-सयम तप त्याग और इन्द्रिय दमन को विशेप महत्व दिया है क्योंकि जीवन में यदि व्रत और सयम न हो तो आत्मा की बिखरी शक्तियो का एकीकरण नही होता और उनके

एकीकरण के बिना वह उस लक्ष्य की तरफ आगे नही बढ सकता जिस लक्ष्य से हम शाश्वत शाति और सुख की प्राप्ति कर सकते हैं । प्राचीन भारत मे मानव आध्यात्मिक शाति के बल पर सुख ही प्राप्त करना चाहता था, उसके सामने भौतिक सुख नगण्य थे । इसलिए भारत के कोने-कोने मे आदर्श सन्त और महात्माओ का निवास था, वे स्वय के जीवन मे इस आध्यात्मिक शाति की प्राप्ति के लिऐ सयम त्याग और तप को स्थान देते थे, और उसी पर विश्व के समस्त प्राणियो को चलाने का प्रयत्न करते थे । उनके सामने विश्व का राज्य और वभव नगण्य था । वे समझते थे वभव और राज्य से शाति और आत्मिक सुख नही मिल सकता । इसका स्पष्ट उदाहरण हमारे सामने भगवान महावीर और भ पार्श्वनाथ का है । जिनके पास अतुल वभव और विशाल राज्य का परिदेश थी । इस वभव से महावीर ने क्षण भर के लिए भी शाति का अनुभव नही किया । यौवन अवस्था मे भी वे अपने महल के एकात कक्ष मे बठकर अपने जीवन निर्माण और विकास के लिये सोचा करते थे । उनका चितन बडा विशाल था । वे चाहते थे मैं उस माग का उस साधना पथ का अवलम्बन करू जिस माग मे जाने से मुझे शाति मिले और विश्व के प्राणियो को भी शाति की प्राप्ति हो ।

इसलिए माता और पिता के आग्रह पर भी महावीर ने विवाह करना स्वीकार नही किया । महावीर सोचा करते थे इस इन्द्रिय सुख की प्राप्ति मुझे अनत बार हुई लेकिन इससे आकाक्षायें बढी, इच्छायें बढी और उनके साथ शोषण की भावनायें बढी । जिनसे मैं दुखी बना सुखी नही हो सका सुख का माग व्रत और सयम मे है सयम और व्रत ही जीवन है । महावीर ने एकात कक्ष मे यह सोचा कि विश्व के समस्त प्राणी पाच प्रकार की बुराइयो मे फसकर अपने आपको खत्म करता है । वे है हिंसा, झूठ, चोरी, व्यभिचार और परिग्रह । इन बुराइयो के रहते हुए मैं स्वय सुखी हो नही सकता और न राष्ट्र के प्राणी यही सोचकर भगवान महावीर घर से बाहर निकले वन के एकात प्रदेश मे बठकर आत्म निरीक्षण के रूप मे सयम माग को अपना कर बुराइयो का त्याग रूप पांच महाव्रतो का अवतरण स्वय के जीवन मे किया । इन पाच पापो या बुराईयो के त्याग को ही व्रत कहते हैं । भगवान महावीर इनके प्रचार के लिए आगे बढे और विश्व के आचल म विहार करके विश्व के समस्त प्राणियो मे इन व्रतो का अणुव्रत और महाव्रत के रूप मे प्रचार किया ।

इन व्रतो के प्रचार से राष्ट्र और विश्व के समस्त प्राणियो मे शाति की प्राप्ति हुई और त्रसित जगत को शाति की श्वास मिली । आज भी इन व्रतो की और ऐसी विचारधारा के साहित्य का आवश्यकता है । आज सारे विश्व मे भाति विचार धारा का प्रवाह-फला हुआ है जिससे समस्त राष्ट्र और प्राणी दु खी और त्रसित हैं । ऐसे समय मे यदि महावीर की इस विचार धारा का प्रचार किया जाय तो राष्ट्र और चिर शाति की श्वासे आ सकती हैं । अत जैन समाज का कत व्य है कि इन पवित्र दिनो मे हम इनको स्वय के जीवन में उतारे और इनके प्रचार के लिए जुट जाय । उत्तम क्षमादि दस धम इन ही व्रतो के रूपान्तर हैं । इनके द्वारा जीवन निर्माण होगा और हम फिर एक बार राष्ट्र म स्वस्थ्य जीवन का सचार कर सकेंगे ।

सौभाग्य की बात है कि इन दिनो मे जैन समाज मे आध्यात्मिक ग्रन्थो के स्वाध्याय की प्रबलता बढती जा रही है किन्तु इसके साथ सयम और व्रतो से अपने आपको सजोया जाय तो हमारे जीवन मे अध्यात्म महक जाय । अध्यात्म के लिए स्थिरता और शाति की नितान्त आवश्यकता है और यह व्रत सयम से ही मिल सकती है । व्रत और सयम से मेरा मतलब है बिखरे जीवन को सवारना और स्वय मे अपने आपको समेटना सिफ हम बोलें नही, भीतर की तरफ देखें । जैसे हमारी प्रतिमायें हम मूकरूप से आव्हान कर रही है । वे कहती है मन्दिर साधन गृह है यही मेरी तरफ बठकर निश्चल दृष्टि बनाकर स्वय की तरफ देखो । □

व्रतो की आवश्यकता क्यो

व्रत और सयम ही जीवन है। अगर समाज व राष्ट्र में नैतिकता समाप्त हो गई तो अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा। अत आज भी व्रत का उतना ही महत्व है जितना पूर्व मे कभी था।

अहिंसा वाणी के विद्वान सम्पादक श्री विरेन्द्र जी ने पर्यूषण पर्व के पुनीत अवसर पर अहिंसा वाणी का व्रत विशेषाक निकाल कर आज के युग के लिए वास्तव म एक अनुपम भेंट भारतीय जनता को अर्पित कर रहे हैं क्योंकि आज के युग म जो राष्ट्र की परिस्थितिया परिवर्तित हो रही हैं उनके लिए यह अत्यावश्यक है। आज के करीब 2500 वर्ष पहले इस वसुधरा पर भगवान महावीर जसे महापुरुष का उदय हुआ था वे एक महान आदर्श युग प्रवतक ऐतिहासिक महापुरुष माने गये हैं। वतमान म जन समाज न उनको एक सकीर्ण दायरा म बाधकर मन्दिरो के जीवन बठा दिया है। किन्तु व एक सत्य हितकारी उदारमना महान आत्मा थे जिनका समग्र जीवन राष्ट्र के छोटे स छोटे प्राणी के लिए अर्पित था एस वे विशाल वभव और लोकोत्तम कुल म पदा हुए थे। लेकिन वे समदृष्टि महामना थे कि उनको यह वभव और राज्य प्रासाद के भौतिक सुख नही खीच सके। उनके युग म भी राष्ट्र के सामने अनेक समस्याए थी। यद्यपि वह धार्मिक युग कहलाता था किन्तु उस वक्त भी सामन्तवादी नीतियो और साम्प्रदायवादी शक्तियो का प्राबल्य था जिनसे राष्ट्र म सवण और अवर्ण, ऊच और नीच की भावनायें सबल रूप म पनप रही थी। इसके अलावा अन्य भी समस्यायें थी जिनका अध्ययन एकान्त कक्ष म बठ कर किया और इन समस्त समस्याओ का हल निकालने के लिए उन्होंने समस्त राज प्रासादो का त्याग करके एक शूरवीर प्रहरी की तरह राष्ट्र उत्थान और प्राणी उत्थान के लिए बाहर निकल पडे उन्होंने एक जीवन का अवलम्बन लिया था जिसका एक जीवन था जिसका आधार समता और करुणा थ।

[illegible] वर्ष तक वे निरन्तर [illegible] म रहे। समस्याओ का अध्ययन करने के बाद उन्होंने [illegible] [illegible] इन समस्त समस्याओ का हल हो सकता है [illegible] राष्ट्र म व्याप्त [illegible] [illegible] के लिए [illegible] अस्तित्व की भावनायें [illegible] [illegible] राष्ट्र म [illegible], [illegible] और [illegible] के प्रसार के लिए [illegible] [illegible] [illegible] नियम [illegible] नियमो का [illegible] [illegible] था। उनकी [illegible] दृष्टि मानव [illegible]

नही रही लेकिन पशु पक्षी जल थल वनस्पति जगत तक सभी पर उनकी दृष्टि गई और उनके सरक्षण के लिए भी अधिक से अधिक वल अहिंसा के आधार पर दिया और बतलाया कि राष्ट्र मे इनको भी जीने का हक है और राष्ट्र के लिए यह आवश्यकीय है। ये मानव की सम्पत्ति नही ये राष्ट्र की सम्पत्ति है क्योंकि ये सब राष्ट्र के लिए जीवन है। इन सबके सरक्षण के लिए भगवान महावीर ने विशाल अनुसधान के बल पर यह बतलाया कि इन सब मे प्राण है और कीटाणु हैं जिनको हमारी तरह जीने का हक है और वे हमारे लिए परम सहायक है।

महावीर के उन आदेशो का परिपालन उस समय के प्राणियो ने किया और उनके आदेशो के बल पर उस समय का राष्ट्र और समाज सुखी समृद्ध बना। महावीर ने इन सबको धर्म के नाम पर व्रतो का रूप दिया। यह व्यवस्था सैकडो वष तक चली। लेकिन मानव ने फिर अपनी जगह छोड दी, वह धम की बात करता है लेकिन धर्म से वह कोसो दूर जा रहा है। उनकी आका क्षायें और लिप्सायें बढ गई है, खाना पीना और ऐश आराम ही उसका जीवन हो गया है।

शोषण इतना बढ गया है कि आज सारा राष्ट्र उससे आतकित और दु खी है। मानव मे स्वाथ भावनाये जागृत हो रही हैं। इस स्वाथ के कारण कौटम्बिक व्यवस्था भी जीण शीण हो रही है। प्रयत्न करने पर भी भ्रष्टाचार खत्म नही हो रहा है। मानव ने अपना जीवन बिल्कुल खुला कर दिया है। इस जीवन मे आस्ते 2 जैन समाज भी आ रहा है और सुधार की जगह धार्मिक उरभृ खलताये बढ रही हैं। अभी कुछ दिन पहले मुझे यात्रा मे बाहर जाना पडा था तब हर जगह सामाजिक स्थिति का अध्ययन करने से यही अनुभव हुआ कि समाज मे दिनो दिन अनतिकता और अनाचार का प्रचार बढ गया है और बढता जा रहा है। हमारे भीतर से दिनो दिन स्वाध्याय और साहित्य प्रेम का अभाव होता चला आ रहा है ऐसी स्थिति मे पुन एक बार व्रत और सयम की तरफ हमें ध्यान देना होगा तो जैन समाज का समस्त जीवन अस्त व्यस्त हो जायगा।

व्रतो से ही जीवन म अच्छाइया आ सकती हैं और बुराइया खत्म होती है। हमारे प्राचीन साहित्य म सात व्यसनो के नाम पर जो प्रकाश डाला गया है जिनका त्याग जैनत्व का पहला चिन्ह माना गया है वे सात व्यसन खुले रूप से समाज के अन्दर पनपते जाते है जिनके लिए समाज म कोई प्रतिक्रिया नही है। समाज मे साधुसन्त और अध्यात्म विचारधारा के विद्वान बडे 2 प्रवचन देते है किन्तु वे प्रवचन सिफ बोलने और सुनने तक ही सीमित रहत है। अत जैन समाज भविष्य मे आने वाले पव दिनो व व्रत दिनो में जीवन निर्माण और समाज निर्माण के लिये अपने जीवन को बाधने का विचार है। व्रत और सयम जीवन है। अगर समाज व राष्ट्र से नतिकता खत्म हो गई तो अस्तित्व ही खत्म हो जायगा। अत वतमान युग म व्रत आवश्यक ही नही किन्तु अत्या-वश्यक हैं।

पर्वराज का वास्तविक स्वरूप

जैनधम का मुख्य आधार वीतरागता है। इसके पव इस वीत राग ता के पाठ को पढाते, जीवन मे उतारने के लिये प्रतिवष आते हैं, पर समाजमे आज इन पर्वो पर वीतरागता के स्थान पर वैभव का खुला प्रदशन होता है जो धम के अनुकूल न तो है, न ही इससे आत्मा को कोई लाभ होन वाला है। आत्म चिन्तन कर बुराईयों को अपने दूर करें—यही मुख्य सदेश है पर्वो का।

पर्यूषण पव राज के आगमन के बहुत पहले ही जैन समाज मे उसके स्वागत के लिए अपूर्व उल्लास होता है और समाज म चहल पहल चालू हो जातीहैं। इस पुनीत अवसर पर हमारे पत्र और पत्र कार भी पीछे नही रहते और वे भी पवराज के सम्बन्ध मे समाज को नव चितवन देने के लिए पत्रो के विशेषाक निकाल कर पर्वराज का मधुर स्वागत करते हैं। पवराज के आगमन पर समाज मे उल्लास और हर्ष तो आता है लेकिन उसके द्वारा जीवन को ऊचा उठाने के लिए स्थायित्व होना चाहिए वह नही होता। पर्वों का जन्म जीवन मे पवित्रता लाने के लिए होना है। इन दिनो मे प्रमादी मानव साधारण जीवन से अपने को ऊचा उठाने की सोचता है और एकान साधना मे तल्लीन होकर कमियो का अध्य यन करता है और साधना के बल पर उन कमियो को निकालने का प्रयत्न भी करता है। दि० जैन धम का आधार वीतरागता पर है क्योकि वीतरागता ही आत्मा का वास्तविक निज स्वरूप है और जिस प्राणी उसी की प्राप्ति के लिए धम की शरण जान का प्रयत्न करता है।

माननीय प दौलतराम जी साहब ने अपने सर्व प्रिय छहढाला मे इस प्राणी की समस्त अवस्थाओ को दिग्दशन कराने के पहले यह बतलाने का प्रयत्न किया है कि इस विशाल जगत मे यदि कोई सार चीज है तो वह वीतरागता है जो साक्षात मोक्ष का रूप है। यदि कोई इसको नही समझेगा का प्रयत्न नही करेगा तो धम की प्राप्ति व स्वरूप को प्राप्ति नही कर सकेगा। इसी बात को समझने के लिए हमारे तीर्थकर जैसे महान सन्तो ने भी अपूर्व वैभव को त्याग दिया और उन्होने भी इस परम पूज्य वीतरागता को धारण किया। उसी की प्रतीक म हमारी चिर आराध्य दि जन सन्तो की प्रतिमा म है जिनके सान्निध्य म चरणो म बठकर हम उस वीतरागता को प्राप्त करना है। ये दस दिन इसी के प्रतीक हैं। इन दस दिनो म जितनी भी हमारी आराधना पूजा अचना है वे सब इसकी प्राप्ति म लिए है। इस वीतरागता का सीधा सम्बन्ध हमारी आत्मा से है। जो प्रत्येक आत्मा के अ श प्रश म

यह सत्ता रूप म विद्यमान है। फिर भी प्रमाद और अज्ञान के कारण ससारी आत्मा इस स्वाभाविक सत्ता को भूल जाता है और विकारो म उलझकर इतन विकल्प वालो को अपने पास मे एकत्रित कर लेता है जिनसे स्वभाव की रुचि हठ जाती है।

उसी या फिर से प्रबवोध करने के लिए इस पर्वराज का आगमन होता है। जन समाज का यह कर्तव्य है कि वह इस पर्वराज का स्वागत सही तरीके से करे क्योकि जन धम उन न गे फकीरो का धम है जिन्होने सन्त जीवन के आधार पर जन धम के सिद्धाता व आचारो को साक्षात्कार किया और उसी माग पर चलने के लिए हम सबको आह्वान दिया। जन धम चाहता है जीवन निर्माण। वह नाटकीय जीवन को कभी पसन्द भी नही करता और न उसको कोई महत्व देता। इसीलिए दि जैनो की और उनके महान सन्तो की जीवन चर्चा विश्व के समस्त धर्मो से भिन्न ही नही किन्तु निर्विकार भी है। जैन धम के सम्बन्ध म कई लोग तरह की समालोचनायें करते है और सत्यभक्त जी जैसे विवेकी व्यक्ति भी इस समालोचना म अपने आप को खो डालते है। जैन धम ससार को असार इसलिए नही बतलाता कि उसे किसी को निकम्मा या अलहदा बनाना है। जैन धम ससार को असार तब ही बतलाता है जब यह प्राणी मानवता को छोड कर दानवता म उतर जाता है और विश्व का शोषण करके स्वय को अलाहदा बनाना चाहता है। जैन धम की आत्मा स्वालम्बन और अपरिग्रह के ऊपर आधारित है जिससे न वह स्वय दबना पसन्द करता है और न दूसरो को दबोचना चाहता है। पर्वो के दिनो म यही बतलाया जाता है और विज्ञ प्राणी यही समझने का प्रयत्न करता है।

लेकिन इस युग की चोट ने जैनो को भी लक्ष्य से च्युत कर डाला है और आज वे भी इस जगत् की चकमकाहट म फसते जाते है। जिससे पर्वो की आराधना सही तरीके से अलग होती जा रही है। आज हमारी आराधना मे विकार घुसते जा रहे है इन दिनो मे आत्मा को सजाने का प्रयत्न नही किया जाता है प्रयत्न किया जाता है। अधिक से अधिक शरीर को और वह भी प्रतिस्पर्धा के साथ मन्दिरो म भक्तो की भीड के साथ हम चारो तरफ वैभव गहना आभूषण और सरागता का ही बोल बाला दिखाई देता है और घरो मे सुन्दर से सुन्दर खाना। वीतरागता ढूढने पर भी दिखलाई नही देती। इससे पर्वराज का वास्तविक स्वरूप ओझल होता जा रहा है। जैनो के लिए एक विचारणीय प्रश्न है मैं चाहता हू। जैन समाज इसका विचार करे। जन धम मन्दिर और मूर्तियो मे नही है। उसका जीवन हमारे जी पर आधारित है। मूर्तिया तो धम का एक प्रतिबिम्ब है जिसका सरक्षण करना हमारा कर्तव्य है। जन समाज पर्वराज के वास्तविक स्वरूप पर विचार करेगा।

☐ जो स्त्री के सग से बचता है, उसके रूप को नही देखता, काम की कथा-वार्ता नही करता, उसके नवधा ब्रह्मचर्य होता है। —कार्ति०

☐ जो तरुणी के कटाक्ष रूपी बाणो से बेधे जाने पर भी विकार को प्राप्त नही होता, वही सच्चा शूर है, सग्राम मे शूर शूर नही है।

—कार्ति०

पर्यूषण पर्व में हम क्या करें ?

भगवान महावीर के बताये तीन प्रमुख गुण अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत को जीवन में उतारते हुये सकीर्णता के दायरे से बाहर निकल कर प्राणीमात्र के उद्धार और उत्थान के लिए काय करने का सकल्प इन पर्यूषण पर्व पर लेना चाहिये।

विश्ववद्य भ महावीर के 2500 वें निर्वाण महोत्सव के समय व उसके पहले व बाद में उनके जीवन से सम्बन्धित काफी साहित्य प्रकाशित हो चुका है और आज भी समय समय पर स्मारि कायें आदि के नाम पर प्रकाशित करने का विपुल प्रयास किया जा रहा है। ये प्रयास वास्तव म स्तुत्य और अभिनन्दनीय है। लेकिन लेखक यह चाहता है कि भगवान महावीर के सिद्धान्तों को सिफ गुण गान ही नही किया जाय उनको आत्म सात करने के लिय कदम भी बढाये जाय, जिससे राष्ट्र व समाज को प्रेरणायें मिल सके। पर्यूषण पर्व जसे पवित्र दिन आत्मनिरीक्षण के रूप मे हमारे सामने आते रहे हैं। ये पवित्र दिन हमे जीवन निर्माण की दशा मे कदम बढाने के लिये इशारे के रूप मे प्रति वर्ष आते है, आमोद प्रमोद और उछल कूद के लिए नही। जन समाज के युवको का कत व्य है कि वे राष्ट्र की वत मान स्थिति म महावीर के पवित्र सिद्धान्तो को लेकर आगे बढें और उन्ही के आधार पर राष्ट्र का सरक्षण करने के लिए कृत सकल्प हो। आज राष्ट्र की वतमान स्थिति मे ऐसे नेताओ की जरूरत नही जो सिफ बाते करते हो और भाषण देकर अपन स्वार्थो का पोषण करते हो।

आज आवश्यकता है ऐसे समर्पित जीवन की जिस जीवन म तडपन है समाजो और राष्ट्रों को प्राणवान बनाने की। भगवान महावीर क जीवन से और उनके पवित्र सिद्धातो से ही वतमान जनता को शाति की श्वास मिल सकती है। महावीर का युग भी एक विचित्र युग था। महावीर के उदय क पहल धार्मिक और सामाजिक मान्यताये खत्म हो चुकी थी मानव दानव बन गया था, राष्ट्र की आत्मा का धार्मिक और सामाजिक [illegible] न [illegible] कर दिया था। मन्दिर और देवालयो म धर्म क नाम पर खून की नदिया बहाइ जाती थी। वर्ण भेद और जाति भेद के नाम पर गहरे अत्याचार हो रह थे मानव मानव म गहरी भेद की खाइया डाल दी गइ थी अवलायें सताई जाती थी। अति सुन्दरी क नाम पर [illegible] नगरों के चौराहों पर उनकी बिक्री होती थी, और जबरदस्ती ये नगर वधुये घोषित कर दी जाती थी मानवता खत्म हो चुकी थी ऐसे समय म महावीर जैसे महापुरुष का उ।

इस वसुंधरा पर राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर पर क्षत्रिय कुण्डग्राम मे हुआ। महावीर बालक से युवा बने। उनसे यह राष्ट्र की स्थिति देखी नहीं गई, वे राष्ट्र निर्माण के लिये आगे बढे, उनके निर्णय को विशाल वभव सम्पत्ति और विशाल प्रासाद बदल नही सके और वे बढ गये एकांत स्थल मे।

उन्होने अध्ययन किया उस युगीन समस्याओ का और सोचा इन समस्याओ का हल भगवान महावीर मानवतावादी विचार धारा के महापुरुष थे, वे चाहते थे विश्व के समस्त प्राणी समानता के आधार पर जीवित रहें। उनमे न वर्ण भेद हो मानवता के आधार पर विशाल राष्ट्र म सब ही जीवित रहे, महावीर चाहते थे धार्मिक और सामाजिक क्राति। महावीर की क्राति का अर्थ तोड फोड व राष्ट्र व राष्ट्र की सम्पत्ति को खर्च करने का नही था उनकी क्राति का अर्थ था सिर्फ परिवर्तन जीवन म परिवर्तन विचारों में परिवर्तन और अचार मे परिवर्तन। महावीर ने सबसे पहिले धार्मिक क्राति की। धर्म को मन्दिर की दिवारो से निकाला और कहा कि धर्म का सबध स्वय की चीज है जिससे स्वय का राष्ट्र का और समस्त प्राणियो के जीवन का निर्माण होता है व सरक्षण होता है।

धर्म न स्वय का हनन चाहता है और न पर का हनन। धर्म चाहता है समानता का व्यवहार, जिसन सह अस्तित्व की भावनाये निहित हैं। महावीर ने धर्म को पथ भेदो व वर्ण भेदो की सकीर्ण दीवालो से नही बाधा, महावीर स्वय सब के थे और सब के महावीर थे इसीलिए महावीर प्राणि मात्र के आस्था के एक महान प्रतीक थे। महावीर की सभाओ म उनके प्रवचन स्थला म मानव तो जाता ही था लेकिन पशु प नी भी उनकी सभाओ मे जाकर शाति की श्वासे लेते थे। भगवान महावीर के लोक कल्याण कारी तीन सिद्धान्त थे, अहिंसा अपरिग्रह और अनेकान्त। इन तीनो सिद्धान्तो का सम्बध प्राणी मात्र से था। इन सिद्धान्तो के बिना राष्ट्र जीवित नही रह सकता था। महावीर की अहिंसा का अर्थ था स्वय भी जीयो और दूसरो को भी जीने दो। यदि जीवन का आधार अहिंसा न हो तो राष्ट्र जीवित ही नही रह सकता। अहिंसा मे ही प्रेम वात्सल्य, सगठन करुणा और सहअस्तित्व की भावनाये पनप सकती है, नही तो कोई राष्ट्र जीवित नही रह सकता। इस अहिंसा की पूर्णता मे ि महावीर ने अपरिग्रह और अनेकात विचार धारा को जन्म दिया क्योकि जहा शोषण और विचारो से विभिन्नताये होती है वहा अहिंसा पनप नही सकती।

इसलिए महावीर ने शोषणहीन जीवन के लिये अपरिग्रह अनिवार्य बतलाया और राष्ट्र में भाषागत विवाद जातिगत विवाद न हो इसके लिए अनेकान्त चिंतन दिया। इन तीनो सिद्धांतो के प्रचार के लिये महावीर ने राष्ट्र के लिए अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। महावीर म जीवन म विशाल त्याग और सयम था। वे एक वक्त भोजन करते थे, पदल उनकी यात्राये होती [illegible] भोजन कर जाते थे वे पूर्ण स्वावलम्बी थे। [illegible] दाढी मूछ बढन पर भी हाथ मे [illegible] उनका एक ही लक्ष्य था। पदल घूमना जन सपर्क करना, [illegible] तथा राष्ट्र म नतिकता का प्रचार करना। इस प्रकार महावीर ने [illegible] का भी उठाया, उनको सही दृष्टि दी उनकी दृष्टि मे राजा [illegible] राजधानी मे शायद ही हुआ हो बन्दिनी चदना जसी महान [illegible] हुआ है।

महावीर अपने क्रान्तिकारी विचारो मे सफल ही नही हुए किन्तु राष्ट्र मे वे सर्वोपरि महा मानव माने गये जिनकी प्रति मूर्ति विश्व के कोने कोने मे भगवान के रूप मे आज मानी जाती है और पूजी जाती है। उन मूर्तियो के निर्माण मे भी आज अहिंसा अपरिग्रह और अन्त दृष्टि के ही दर्शन हमें होते हैं। आज भी राष्ट्र की स्थिति विचित्र है। मानव अपनी जगह को छोडकर गुमराह हो रहा है। त्याग और सयम की जगह विलासिता का अखण्ड साम्राज्य बढता जा रहा है जिसकी पूर्ति के लिए देश मे नित्य लूट पाट, हत्यायें, बलात्कार और अनैतिकतायें बढती जा रही है। राष्ट्र का हर व्यक्ति अपने स्वार्थ की तरफ स्वय के पोषण के लिए आख मीच कर बढता जा रहा है। अबलाओ का अपहरण शील हरण नित्य की घटनाये हो रही हैं जिनके हाथो मे राष्ट्र का नेतृत्व है। वे भयकर विवादो मे, उलझे हुए हैं। ऐसी स्थिति मे जैन समाज के युवक साधु और सन्त अपने सकीर्ण दायरे से बाहर निकल कर निर्भयता के साथ महावीर की तरह कदम बढाते हुए महावीर के सिद्धातो को जन जीवन तक पहुँचाने के लिए इन पव दिनो मे सकल्प करे तब ही हमारे ये पर्यू पण पव सफल होंगे।

☐ सर्पदश से मनुष्य को सात विष वेग उत्पन्न होते हैं, किन्तु काम रूपी भुजगम के डसने से मनुष्य की दस कामावस्थाए प्रकट होती हैं।

—भगवती

☐ काम पिशाच के वश मे हुआ मनुष्यहित, अहित और आत्मा को नहीं जानता। भगवती०

☐ इन्द्रियो के विषय रूपी पिशाच से ग्रस्त हुआ मनुष्य यदि कार्य-कुशल हो तो भी मन्द बुद्धि हो जाता है। —भगवती०

दसलक्षरण पर्व और कर्तव्य

पव का उद्देश्य मानव जीवन का सर्वांगीण विकास और राष्ट्र का सरक्षण है। यह पवित्रता का द्योतक है। इस अवसर पर की गई पूजा-पाठ से आत्मशाति के साथ राष्ट्र के प्राणी सुखी और समृध्द शाली बनते हैं। पव के अवसरो पर होने वाली आडम्बरी उपासनायें, पूजायें हमे कहीं का नहीं रखेगी। यदि हमारे कण धार पूज्य मुनिवर, विद्वान, त्यागी अपने से थोडा ऊपर उठकर सही मागदशन प्रदान करें तो प्राणी मात्र का कल्याण अवश्य हो सकता है और साथ ही इन पव की उपादेयता भी सिध्द हो सकती है।

चतुर्मास के प्रारम्भ से ही उसके साथ मानव जीवन को दिशानत देने के लिए अनेक पर्वों का उद्गम होता है। उन पर्वों मे सबसे महत्वपूर्ण पर्व रक्षाबन्धन, सोलह कारण और दसलक्षरण पव माने जाते है। इन तीनो पर्वों का एक ही उद्देश्य है, मानव जीवन का सर्वांगीण विकास और समाजा व राष्ट्रो का सरक्षण। पव शब्द पवित्रता का द्योतक है। इन पर्वों की आराधना मे पूजा से आत्म शाति के साथ साथ समाजो मे और राष्ट्रो मे शाति का तथा अभय की भावनायें पदा होती हैं जिनसे राष्ट्र में रहने वाले प्राणी सुखी और समृद्धशाली बनते है।

आज सारे भारतवष मे रक्षाबन्धन पव बडे उत्साह के साथ मनाया जाता है। लेकिन वह इतना सकीर्ण भावना तक पहुच गया कि उसका दायरा सिफ भाई-बहन तक ही पहुँच गया है। रक्षा बन्धन पव एक राष्ट्रीय पर्व है जिसके अन्तस्थल मे वे हीन भावना निहित है जिनका सम्बन्ध राष्ट्र समाज व उससे सम्बन्धित समस्त प्राणि मात्र का है। वह नही चाहता कि राष्ट्र म असन्तोष, शोषण की भावनाये, ऊच नीच की भावनाये, एक दूसरे पर प्रादुर्भाव की भावनायें तथा चारित्रिक हनन की की भावनायें पनपे। रक्षा बन्धन का पवित्र उद्देश्य है वात्सल्य भाव प्रमोद भाव और कारुण्य भाव का उदय जिससे राष्ट्र समाज और प्राणि मात्र सुखी और समृद्धिशाली बने। पव का यही आदर्श है। इसी पव के तुरन्त बाद सोलह कारण पव का आगमन होता है और इनके बाद परम पावन पर्व पर्युषण पवराज का। इन दोनो ही पर्वों का सम्बन्ध जन समाज से है मैं यह मानता हू कि ये पव पूजा और आराधना के लिए नही आते। इन पर्वों का आगमन आत्म निरीक्षण के लिए है। साधक व विवेकी मानव इन पवित्र दिनो म एकान्त मे बैठकर स्वय के विकास के सम्बन्ध म सोचे।

इस के साथ समाज देश व राष्ट्र के विकास के सम्बन्ध मे विचार करे । मानव जीवन एव चिंतनशील जीवन है । जिसे जीवन के लिए बहुत ही मौलिक व अपूव माना गया है । यही एक एसा जीवन है जिसमे मानव इन पवित्र दिनो मे साधक बन कर स्वय के जीवन का निर्माण कर सकता है और राष्ट्र की आत्माओ के लिए विचार कर सकता है । इस महान जीवन की प्राप्ति के लिये सब प्रथम सोलह कारण भावनाओं मे दर्शनविशुद्धि भावना का उल्लेख किया है । जिसका सरल अर्थ है मानव अपनी दृष्टि चिंतन और विचारो की सकीर्णता से निकल कर निर्मल और पवित्र बनावें । इस दृष्टि को ही अपर नाम से सम्यग्दर्शन कहा गया है । आज का सारा मानव समाज इस दृष्टि की विषमता के कारण ही दुखी है क्योंकि उसकी दृष्टि सामने की तरफ है, अपनी तरफ नही । वह पर की कमियो को देखता है । अपनी गल्तियो के सम्बन्ध म सोचता नही । इस विपरीतता का कारण है समस्त राष्ट्र म अनाचार और अनतिक वातावरण का पोषण । आज मानव दानव बनता जा रहा है । वह बात करता है समाज वाद लाने की और स्वय बन रहा जबदस्त शोषक । यह स्थिति सारे देश की हो रही है। एसी स्थिति म परिवर्तन लाने म यदि सक्षम है तो हमारे ये पर्व । इन दोनो ही पर्वो का उद्देश्य आत्म निरीक्षण और परिवर्तन का है ।

इन पव दिनो मे हम सकल्प करना चाहिए स्वय के जीवन का निर्माण कर मार्जव करने का और समाज के जीवन का निर्माण करने का भगवान महावीर ने अपने जीवन का मार्जव करने के लिये सयम और तप का मार्ग अपनाया । एकान्त स्थल मे 12 वर्ष तक यौगिक साधना की उस साधना काल मे महावीर मौनी रह आत्म निरीक्षण किया स्वय को टटोला । जो भी विकारी भावनायें थी उनका निवारण करने का प्रयास किया तब वे महान मानव बने । और इसके बाद समाजो के निर्माण और राष्ट्र के निर्माण के लिए उन्होंने अपनी कदमे बढाई । मै नही मानता कि महावीर आध्यात्मिक थे मेरी स्पष्ट मान्यता है कि भगवान परम सामाजिक और सही राष्ट्रीय पुरुष थे । जिन्होने पूर्ण शोषण हीन जीवन बनाकर दन को अभय देने के लिए अपनी कदम बढाई । मगर महावीर आत्मा और शरीर की भिन्नता की ही चर्चा करते रहते हैं । तो समाज म व्याप्त साम्प्रदायिक विद्वेष धर्म के नाम पर होने वाले [illegible] अबलाओ पर होने वाले अत्याचार मानव मानव म व्याप्त असमानताओ की भावनाओ का कौन [illegible] इन तमाम असमानताओ का खत्म करने के लिए भगवान महावीर ने क्रांतिकारी कदम बढाई । उन्होंने देश म प्रेम वात्सल्य और समाज वाद का लाने म अहिंसा अपरिग्रह और अनेकान्त [illegible] और उनके इन विचारो ने सिद्धान्त का रूप लिया । मानव ने और राष्ट्र [illegible] । जिससे राष्ट्र और समाज सुखी बने । आज भी देश और समाज की स्थिति [illegible] और [illegible] है । जन समाज [illegible] [illegible] समाज और राष्ट्र का निर्माण करने के लिए पवित्र [illegible] । आज हमारे [illegible] । [illegible] और [illegible] है ।

अहिंसा प्रेम वात्सल्य और सद्भावनाये फलेगी या समाज की आत्माये जर्जरित हो जायगी। इन पथ भेदो म आज महाव्रती मुनीराज और आध्यात्म के गीत गाने वाल, अनेकांत की आवाज लगाने वाले विद्वान भा उल्झ हुए है, यह एक बहुत बडा आश्चय है। मैं तो चाहता हू कि पर्वो के पुनीत अवसर पर समाज क कणधार मुनीराज, विद्वान और त्यागी वर्ग अपने प्रवचनो को बन्द करके एकात में बठकर यह साचे कि हम कसे जिये और इसके साथ कदम उठाने का प्रयास करे अपनी प्राणवान सस्कृति को जीवित करने के लिए। आज युवा पीढी का बिखराव हो रहा है। रात्रि भोजन ही नही किन्तु समाज म आभिष भोजन, मद्यपान, दिखावा दहेज जसी राक्षसी प्रथाये बिना विश्राम के बढ रही है यदि इनको रोकने का हमने प्रयास नही किया तो पर्वो की आडम्बरी उपासनाये पूजार्ये हम कभी भी जीवित नही रख सकेगी। आशा है समाज के कण धार मुनीराज, त्यागी, विद्वान मेरे इस विनम्र निवेदन पर ध्यान देगे। जिससे हम को राष्ट्र को और समाज को शांति की श्वास मिल सके।

☐ जो मिट्टी के ढेले और स्वर्ण मे तथा जीवन मरण में समान भाव रखता है, वह श्रमण है। —प्रवचन०

☐ शुद्धोपयोगी को श्रमणत्व कहा गया है और शुद्ध को दर्शन तथा ज्ञान। शुद्ध को निर्वाण होता है और वही सिद्ध होता है। उस सिद्ध को नमस्कार है। —प्रवचन०

☐ जो तपस्वी श्रमण है शील-गुण तथा ब्रह्मचर्यको धारण करते है, उनको वन्दना करता हू। —दर्शनपाहुड

पर्यूषण पर्व में राष्ट्र रक्षा का सकल्प लें

मानव आज त्याग और सयम को छोडकर विचित्र दशा मे खडा है-यह क्या कर रहा है-उसका परिणाम क्या होगा-राष्ट्र को उसके क्या परिणाम भुगतने होंगे-यह विचार ही नही कर रहा। राष्ट्र को सही मायने मे राष्ट्र बनाये रखना है तो हमे भगवान महावीर के अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत सिद्धात को जीवन मे उतारना होगा-यही इस भौतिक युग मे शांति एव आत्मशुद्धि के लिए सही आधार हो सकते हैं।

विश्व वद्य भगवान महावीर का 2500 वा निर्वाण महोत्सव समय व उसके पहले व बाद मे जीवन से सम्बन्धित काफी साहित्य निकाला जा चुका है और आज भी समय समय पर स्मारिकाए आदि के नाम पर निकालने का विपुल प्रयास किया जा रहा है, ये स्तुत्य और अभिनन्दनीय है, लेकिन लेखक यह चाहता है कि भगवान महावीर के सिद्धातो को सिफ गुण गान ही नही किया जाय, उनको आत्मसात करने के लिए कदम भी बढाई जाय, जिससे राष्ट्र व समाज को प्रेरणाये मिल सके पयू षण पव जसे पवित्र दिन आत्म निरीक्षण के रूप मे हमारे सामने आते रहते है ये पवित्र दिन हम जीवन निर्माण की दिशा मे कदमे बढाने के लिए इशारे के रूप मे प्रतिवर्ष आते है। आमोद-प्रमोद और उछलकूद के लिए-नही जन समाज के युवको का कत्तव्य है कि ये राष्ट्र की वत मान स्थिति मे महावीर के पवित्र सिद्धातों को लेकर आगे बढे और उन्ही के आधार पर राष्ट्र का सरक्षण करने के लिए कृत सकल्प हो। आज राष्ट्र की वतमान स्थिति मे ऐसे नेताओ की जरूरत नही जो सिर्फ बाते करते हो और भाषण देकर अपने स्वार्थो का पोषण करते हो। आज आवश्यकता है ऐसे समर्पित जीवन की जिस जीवन मे तडफन है समाजो और राष्ट्रो को प्राणवान बनाने की।

भगवान महावीर के जीवन से और उनके पवित्र सिद्धान्तो से ही वर्तमान जनता को शांति की श्वासे मिल सकती है। महावीर का युग भी एक विचित्र युग था। महावीर के उदय के पहले धार्मिक और सामाजिक चेतनाय खत्म हो चुकी थी। मानव दानव बन गया था राष्ट्र की आत्मा को धार्मिक और सामाजिक रूढिया ने जर्जरित कर दिया था। मन्दिर और देवालयों मे धर्म के नाम पर खून की नदिया बहाई जाती थी पर वर्णभेद और जाति भेद के नाम पर गहरे अत्याचार हो रहे थे। मानव मानव म गहरी भेद की खाईया डाल दी गयी थी। अबलाये सताई जाती थी। आविद्य सुन्दरी के नाम

पर कौशाम्बी जसे नगरो के चौराहो पर उनकी बिक्री होती थी और जबदस्ती ये नगर वधूये घोषित की जाती ी। जिससे चारो तरफ हाहाकार और चित्कार था, मानवता खत्म हो चुकी थी। ऐसे समय म महा ी(ौन महापुरुष का उदय इस वसुधरा पर राजा सिद्धार्थ और रानी त्रिशला के घर पर क्षत्रिय कुण्डग्राम मे हुआ था।

महावीर बालक से युवक बने उनसे यह राष्ट्र की स्थिति देखी नही गयी, वे राष्ट्र के निर्माण के लिए आगे बढे उनके निर्णय को विशाल वभव सम्पत्तिय और विशाल प्रसाद खीच नही सके और वे बठ गये एकात स्थल म। उन्होने अध्ययन किया उस युग। समस्याओ की ओर सोचा कि इन समस्याओ का हल क्या ? क्योकि भगवान महावीर मानवतावादी विचारधारा के महापुरुष थे। वे चाहते थे विश्व के समस्त प्राणी समानता के आधार पर जीवित रहे। न उनमे वण भेद हो और न जातिभेद ही। मानवता के आधार पर इस विशाल राष्ट्र मे सब ही जीवित रहे। महावीर चाहते थे धार्मिक और सामाजिक क्राति। महावीर की क्राति का अर्थ तोड फोड व राष्ट्र की सम्पत्ति को नष्ट करने का नही था। उनकी क्राति का अथ था सिफ परिवतन जीवन मे परिवर्तन, विचारो मे परिवतन और आचार मे परिवतन। महावीर ने सब से पहले धार्मिक क्राति की धम को मन्दिर और देवालयो की दिवालो से निकाला और कहा कि धम का सम्बन्ध व्यक्ति से नही, मन्दिर और देवालय से नही, धर्म का सम्बन्ध स्वय से है, स्वय की चीज है। जिससे स्वय का राष्ट्र का और समस्त प्राणियो के जीवन का निर्माण होता है व सरक्षण होता है। धर्म न स्वय का हनन चाहता है और न पर का हनन चाहता। धम चाहता है समानता का व्यवहार, जिसमे सह अस्तित्व की भावनायें निहित है। महावीर ने धम को पन्थ भेदो व वण भेदो की सकीण दीवालो से नही बाधा। महावीर एक उदार मन महापुरुष थे। उनका जीवन बडा विशाल था, इसलिये वे स्वय भी किसी वग विशेष के बन्धन मे नही आये महावीर स्वय सबके थे और सबके महावीर थे। इसीलिए महावीर प्राणि मात्र के आस्था के एक महान प्रतीक थे।

महावीर का सभाओ मे उनके प्रवचन स्थलो मे मानव तो जाता ही था लेकिन पशु पक्षी भी उनकी सभाओ मे जाकर शाति की श्वासे लेते थे। भगवान महावीर के लोक कल्याणकारी तीन सिद्धात थे। अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकात। इन तीनो सिद्धातो का सम्बन्ध प्राणिमात्र से था इन तीनो सिद्धातों के बिना राष्ट्र जीवित नही रह सकता था। महावीर की अहिंसा का अथ था स्वय भी जीयो दूसरो को भी जीने दो। यदि जीवन का आधार अहिंसा न हो तो राष्ट्र जीवित ही नही रह सकता। अहिंसा से ही प्रेम, वात्सल्य, सगठन, करुणा और सह अस्तित्व की भावनाये पनप सकती है। नही तो कोई राष्ट्र जीवित नहीं रह सकता। इस अहिंसा की पूर्णता के लिए महावीर ने अपरिग्रह और अनेकात विचारधारा को जन्म दिया। क्योकि जहाँ शोषण और विचारोंमे भिन्नताये होती हैं। वहा अहिंसा पनप नही सकती। इसलिए महावीर ने शोषण हीन जीवन के लिए अपरिग्रह अनिवार्य बतलाया और राष्ट्र मे भाषागत विवाद, जातिगत विवाद न हो इसके लिए अनेकान्त चिंतन दिया।

इन तीनो सिद्धातो के प्रचार के लिए महावीर ने राष्ट्र के लिये अपना समस्त जीवन समर्पित कर दिया। महावीर के जीवन मे विशाल त्याग और सयम था। वे एक बार भोजन करते थे पैदल उनकी

यात्राये होती थी। खड़े 2 भोजन कर जाते थे। ये पूर्ण स्वावलम्बी थे। अत दाढ़ी मूछ बढ़ने पर भी हाथ से ही उखाड़ फेंकते थे। उनका एक ही लक्ष्य था पदल घूमना, जन सम्पर्क करना, असहाय, अछूत और पतितो को मार्ग पर लाना तथा राष्ट्र मे नतिकता का प्रचार करना। इस प्रचार मे महावीर ने अल्पजीवी और नारी जाति तक को ऊचा उठाया। उनको सही दृष्टि दी। उनकी दृष्टि मे राजा-रंक कीट-पतग सब एक थे। महावीर का आहार राज घरानो मे शायद ही हुआ हो महावीर अपने क्रांतिकारी विचारो मे सफल ही नहीं हुए किन्तु राष्ट्र मे वे सर्वोपरि महामानव माने गये। जिनकी प्रतिमाये विश्व के कोने 2 मे भगवान के रूप मे आज मानी जाती है। उन मूर्तियो के निर्माण में भी आज अहिंसा अपरिग्रह और अनन्त दृष्टि के ही दर्शन हमे होते है। आज भी राष्ट्र की स्थिति विचित्र है। मानव अपनी जगह को छोड कर गुमराह हो रहा है। त्याग और सयम की जगह विलासिता का अखण्ड साम्राज्य बढता आ रहा है।

जिसकी पूर्ति के लिए देश म नित्य लूटपाट, हत्याये, बलात्कार और अनैतिकताये बढती आ रही है। राष्ट्र का हर व्यक्ति अपने स्वार्थ की तरफ स्वय के पोषण के लिए आख मीच कर बढता आ रहा है। अबलाओ का अपहरण, शीलहरण नित्य की घटनाये हो रही है। जिनके हाथो मे राष्ट्र का नेतत्व है वे भयकर विवादो मे उलझ हुए हैं। ऐसी स्थिति मे जन समाज के युवक, साधु और सन्त अपने सकीर्ण दायरे स बाहर निकल कर निर्भयता के साथ महावीर की तरह कदमे बढाते हुए महावीर क सिद्धान्तो को जन जीवन तक पहुचाने के लिये इन पर्व दिनो में सकल्प करे तब ही हमारे ये पर्युषण पर्व सफल हैं।

☐ देह की वन्दना नही की जाती, कुल और जाति भी वन्दन योग्य नही होत। गुणहीन की कौन वन्दना करता है ? चाहे वह श्रमण हो या श्रावक।

—दर्शनपाहुड

☐ असयमी की वन्दना न करे।

—दर्शनपाहुड

☐ श्रमण वस्तुओ पर ही नहीं, अपने शरीर पर भी ममत्व नही रखते।

—दशवकालिकसूत्र

☐ सयम से रहित ज्ञानी को भावश्रमण समझना चाहिए।

—उत्तराध्ययनसूत्रनियुक्ति

पर्वराज की आराधना कैसे करें

पर्वराज पर्यूषण अनादि पर्व है–अनादि पर्व आत्मिक विकास और शास्वत शांति की प्राप्ति के लिये है। जब स्वयं का विकास हो जाता है तो समाज और राष्ट्र का विकास स्वतः ही होने लगता है। पर्वराज दिखावा नहीं–चिन्तन का पर्व है।

पर्वों का उद्गम अनादि का है, भारतवर्ष के समस्त धर्मों ने इन पर्वों को महत्व दिया है। इन पर्वों के विविध नाम हैं और उन नामों के अनुरूप ही उनकी पूजायें और अर्चना की की जाती है।

जैन धर्म ने दो प्रकार के पर्व स्वीकार किये हैं। एक आदि और दूसरा अनादि। आदि पर्वों का उदय किन्हीं विशिष्ट घटनाओं व महापुरुषों के जीवन से सम्बन्धित आदर्श को लेकर हुआ है। लेकिन अनादि पर्वों का उदय आत्मिक विकास और शाश्वत शांति की प्राप्ति के लिए हुआ है। जैन धर्म एक आध्यात्मिक धर्म है, जिसका लक्ष्य है आत्मिक गुणों की प्राप्ति। जैन धर्म ने आत्मा की सत्ता को अनादि स्वीकार की है। वह पर्याय का नाश मानता है लेकिन द्रव्य को ध्रुव और अविनाशी मानता है।

उसकी मान्यता है ये बाह्य पर्यायें अज्ञान से मिलती हैं और उन पर्यायों को वो ही अपना जीवन मानकर यह अज्ञानी आत्मा सुखी दुखी होता रहता है। जिससे इन पर्यायों के साथ अनुकूलतायें बनी रहती हैं और जीवन में कभी शांति नहीं मिलती है। इस शांति को प्राप्त करने का मार्ग ही एक मात्र पर्व है।

जिसके नाम पर यह संसारी आत्मा एकान्त कक्ष में बैठकर अपने जीवन का नाप तोल करता है और उसके साथ ही जीवन निर्माण व विकास के लिए आत्म निरीक्षण करता है। पर्व आराधना और पूजा नहीं चाहता पर्व चाहता है – मानव जीवन निर्माण की दिशा की तरफ आगे बढ़े। जिसमें स्वयं में आत्मिक गुणों का विकास हो और उसी के साथ राष्ट्र और समाज का भी विकास हो।

यही लक्ष्य परमपावन पर्यूषण पर्वराज का है। पर्यूषण पर्वराज आत्म निरीक्षण के रूप में हमें जाग्रत करने के लिए प्रति वर्ष आता है। इसका इतिहास बड़ा विशाल है। यह पर्व भाद्र शुक्ला पंचमी से शुभारम्भ होता है और इसका समापन भाद्र शुक्ल चतुर्दशी को होता है। इस पर्वराज को पर्यूषण पर्व के नाम से भी पुकारा जाता है और दसलक्षण धर्म के नाम से भी पुकारा जाता है। इन महान पर्वराज के दिनों में विवेकी प्राणी साधना स्थानों में जाकर एकांत कक्ष में बैठकर इनकी आरा

मनाये और पूजा करते हैं। आराधना और पूजा का अर्थ है पर्व के सही रूप मे जीवन मे उतारना और उसी रूप अपने जीवन का निर्माण करना। इन दस दिनो मे विवेकी प्राणी आत्मीक सम्पदाओ का वर्णन करने का प्रयास करता है। क्योकि आत्माओ पर पदार्थों के ससर्ग से कुछ ऐसे विकारी भाव पैदा हो जाते हैं जिनसे यह आत्मा रात दिन दुखी और चिंतित रहती है और स्वय की शांति अशांति मे परिणमित रहती है जिससे सही सुख की प्राप्ति नही होती।

दुःख के कारण क्रोध के भाव, मान के भाव मायाचारी के भाव शोषण के भाव। इन भावो को ही विकारी भाव माना जाता है। इन विकारी भावो को दूर करने के लिए और आत्मिक सम्पदा को प्राप्त करने के लिए उत्तम क्षमा मार्दव आर्जव और अकिंचन्य धर्म की आराधना से जीवन निर्मल बनती है और मानव को मानवतावादी प्राप्ति होती है। इसी मानवता की प्राप्ति के लिए इन पर्व राजो की आराधना अनिवार्य है।

लेखक का मत है कि इन पर्वराजो की आराधना हम आत्म निरीक्षण के रूप मे करें। आज समाज मे इन पर्वों ने रूढि का रूप ले लिया है और इनके नाम पर मन्दिर और मूर्तियो के सामने आध्यात्मिक सन्तो के सामने इतना विकृत रूप ले लिया है कि आज का जन जनत्व से दूर होता जा रहा है। जैन समाज मे इन आध्यात्मिक पर्वों के नाम पर खाना पहनना और बाह्य दिखावा ही अपना जीवन का अंग बन रहा है।

कर्तव्य यह होता है कि यदि हम एकान्त मे बैठकर कुछ उन बातो के सम्बन्ध मे चिंतन और मनन करें, गोष्ठियो का आयोजन करें जिससे समाज का हृदय विशाल बने। और समाज में एकता संगठन जाग्रत हो और वात्सल्य गुण का प्रादु भाव हो।

आज विविध मत भेदो को लेकर समाज की अंतरात्मा झकझोरी हुई जा रही है और दिनो दिन उनकी संगठन शक्ति क्षीण होती जा रही है।

इस संगठन शक्ति को क्षीण करने मे ऐसे लोगो और व्यक्तियो का हाथ है जिनके हाथ मे समाज का नेतृत्व है। पहले यह समाज बीसपन्थ और तेरह पन्थ जैसे द्वन्द मे फसकर अपनी शक्ति को क्षीण कर रहा था। अब यह निश्चय व्यवहार निमित्त और उपादान के नाम पर अपनी शक्ति को क्षीण कर रहा है और यह द्वन्द दिनोंदिन ऐसे लोगो द्वारा बढाया जा रहा है जो नित्य मन्दिरो मे शांति भावना से बोलते हैं और विश्व के समस्त प्राणियो के प्रति सुखी रहने का उद्गार भगवान महावीर के सामने घोषित करते रहते हैं। इन भेदो मे ऐसे लोगो का भी प्रबल हाथ है जो अदेही बनने का और मुक्त होने पर उपक्रम कर रहे हैं।

मुझे बडा आश्चर्य है कि हम अनेकांत की दुहाई देने वाले जन किधर जा रहे हैं और अपने हाथ से अनेकांत जैसे सिद्ध होता है? खत्म करते जा रहे हैं। जिस निश्चय और व्यवहार की कथनी से द्वन्द खत्म किये जाते हैं आज वह कथनी स्वय विवाद मे फसा दी गई है क्या यह कम दुख की बात है। मैं कई बार सोचता हू कि यह हमारा धर्म ज्ञान और तत्वज्ञान सिर्फ कहने के लिए है क्या? जीवन निर्माण के लिए नहीं। क्या सम्यक्त्व ज्ञान और चरित्र की चर्चा करने वाले ये विद्वान साधु और महात्मा भूल जाते हैं कि हमारा स्थितिकरण वात्सल्य और प्रभावना? क्या व्यवस्था देते हैं और हम

किधर जा रहे है ? धर्म वस्तु का स्वाभाव है कि भाव न हो, विभाव न हो वह पथभेद मतभेद और जातिगत भेद नही चाहता। धम धम है, और वह अभेद है। मैं तो समाज से करबद्ध प्राथना करता हू कि वह पर्वराज को सही रूप से मनायें। जिससे समाज मे समता और शांति का प्रचार हो। जैन धम एक सुथरा धम है, जहा मानवता जागृत होती है। जैन धम मे पाशविक भावनाओ को कोई स्थान नही है।,अत हम कोई ऐसी प्रयास करें जिससे ये अन्तद्व द खत्म हो जाये और समाज मे शांति की रेखायें जागृत हो ।

अगर हम ऐसा कर सकें तो हमारी यह पर्वाराधना सफल होगी। इसके लिए समाज के उन अग्रदूतो को आगे बढाना चाहिए जिसके हृदय मे समाज के विकास के लिए, उसकी समृद्धि के लिए सही भावना हो। भगवान महावीर की अहिंसा और उसका अपरिग्रहवाद हमे इसी दिशा का निर्देश करता है। अहिंसा, प्राणिवध न हो यह तो है ही लेकिन सबसे पहले उसके द्वारा स्वय का हनन न हो इसकी तरफ है। समाज दहलता रहे, हम नेतृत्व करते रहे पर्व मनाते रह, और अभिमानिक भावनाओ को पन पाते रहें यह पवराज की आराधना किसी भी स्थिति मे सभव नही हैं।

मैं इस अवसर पर उन प्रथम भावनाओ को आव्हान करता हू कि वे जागृति का शख लेकर महावीर की तरह आगे बढें और अनेकांत शख समाज मे फूकें। जैन मान्यता एकात पक्ष किसी नयको नही चाहती। वह अपेक्षावाद पर आधारित हो।

☐ आगम के ज्ञान बिना श्रमण न आत्मा को जान पाता है और न अन्य को। —प्रवचनसार

☐ समता से श्रमण होता है, ब्रह्मचय से ब्राह्मण होता है, ज्ञान से मुनि होता है और तप से तापस होता है। —उत्तराध्ययनसूत्र

☐ जिसका मन सभी ओर सम रहता है, वह श्रमण है।

—उत्तराध्ययनचूर्णि

☐ श्रमणो की सभी चेष्टाए (क्रियाए) सयम के निमित्त होती हैं।

—निशीथभाष्य

☐ सूत्रके अथ जाननेके प्रयोजन रूप सूत्रसे श्रमण परमाथ साधन है।

—सुत्रपाहुड

पर्व आराधना के बाद

पर्वराज पूजा-पाठ, आराधना के लिये तो श्रेष्ठ दिन माने जाते हैं किन्तु हम इसके साथ राष्ट्र और समाज में व्याप्त बुराईयो की ओर देखकर स्वय से ही उसका प्रतिकार करने लगे तो पूरा राष्ट्र स्वर्ग बन सकता है और यहा रहने वाले अधिकाश मानव अपने आत्मा के कल्याण के लिये आत्म निरीक्षण कर सकेंगे।

भगवान महावीर के सिद्धात व अन्य नियम उपनियम ऐसे दृष्टिकोण से प्रसारित है व्यापक है जो किसी भी युग में मानव के जीवन को आगे बढाने के लिए सहायक हो सकते हैं। ये सिद्धान्त शाश्वत है और सर्व-सर्व प्राणि हितकर है। इन नियम और उपनियमो के प्रतिपादन म पर्युषण पर्व भी एक बहुत बडा आधार है जो वर्ष मे तीन बार मानव को प्रेरणायें देने के लिए नियत हैं। इन तीनों म वर्तमान पीढी के लोगो ने भाद्र मास म आने वाले पर्युषण पर्व को अत्यधिक महत्त्व दे रखा है। यह पर्व राज भाद्र शुक्ला ५ से प्रारम्भ होता है और भाद्र शुक्ला १४ को विसर्जित होता है। जैन समाज इन दस दिनो म काफी उत्साहित होकर इनकी आराधना-पूजा और सस्तवन करता है। मन्दिरो मे भी इनके नाम पर काफी लोगो की भीड रहती है। स्त्री-पुरुष दोनो ही रगबिरगे सुन्दर-सुन्दर वस्त्रो मे सुसज्जित होकर इनके नाम पर पूजा और पाठ उच्चारण करते है। लेकिन वे सही रूप मे यह अकरन करने के लिए तैयार नहीं है कि यह सब कुछ कर देने के बाद भी हमारे जीवन मे कही भी, किसी भी रूप मे परिवर्तन आया है क्या? जैन धर्म व उसकी महान आत्माओ का एक ही लक्ष्य रहा कि उन सब क्रियाओ के नाम पर मानव अपने जीवन म परिवर्तन लाकर आध्यात्मिक जगत मे प्रवेश करके शाति और अहिंसा की प्रतिष्ठा करे। जैन धर्म शाति प्राप्ति का आदेश देता है इसीलिए उनका मूल सिद्धात अहिंसा है। पर्युषण पर्व मे भी शातिप्राप्ति का ही लक्ष्य है अत लेखक यह चाहता है कि इन पर्व दिनो म सिर्फ हम पूजापाठ तक ही सीमित न रहें। उनको आत्मसात करने का प्रयास करें। पर्युषण पर्व की सार्थकता का आधार उत्तम क्षमा, मार्दव, आर्जव सत्य, शौच सयम, तप, त्याग, आकिंचन्य और ब्रह्मचर्य ये दस धर्म हैं यह दसही आकर के धर्म प्रतिवर्ष इशारे के रूप मे हमारे सामने आते हैं और हमें प्रेरित करते हैं कि हम जीवन निर्माण की दिशा मे अपने कदम बढावें। जैन धर्म के पूजा और पाठ आध्यात्मिक सतो के जीवन से सबधित है। जिनसे मानव की मानवता जाग्रत होती है और वह इनकी आराधना से महान राष्ट्र का प्रेरणा स्रोत बन जाता है। मैं तो यह मानता हू कि इन दस दिनों मे ही यह जीवन को मिलता है कि हम क्रोध न करें, ऐसे वचन भी न बोले जिन वचनो के बोलने से मानव के हृदय को य

राष्ट्र के हित को आघात पहुँचे। हम ऐसे कार्य न करें, जिससे किसी का शोषण हो या किसी को गिराने की भावना पैदा हो। हम राष्ट्र की आवश्यकताओं को समझते हुए संयमी बनकर अनावश्यक रूप से किसी भी चीज का उपयोग न करें। हर वस्तु को राष्ट्र की सम्पत्ति समझकर कम से कम उसका उपयोग करें। व्यर्थ में एक बूंद पानी भी जमीन पर नहीं गिरावें। खाना भी हम जीने के लिए खावें, खाने के लिए न जीवें। इस जीवन की प्राप्ति के लिए हम हमारी इच्छाओं पर नियंत्रण करें। आवश्यकता से अधिक यदि कोई वस्तु हमारे पास है तो हम उसको दूसरे के लिए विसर्जित कर दें। यह तब ही होगा जब यह समझ लेंगे कि मेरा समस्त जीवन राष्ट्र के लिए समर्पित है। स्वयं का कुछ भी नहीं है—एक व्यक्ति अंत में स्वयं को स्वयं में समर्पित करके महामानव बन जाते हैं। यही उद्देश्य इस पवित्र पर्यूषण पर्व का है।

आज राष्ट्र की स्थिति विचित्र है। चारों तरफ हाहाकार और चीत्कार है मानवता का स्तर गिरता जा रहा है। वर्ग भेद और जाति भेद का बोलबाला है, हर मानव पूंजी के शोषण में लगा हुआ जिसके फलस्वरूप डाकेजनी, बलात्कार, लूट और खसोट का जबरदस्त बोलबाला है। अतः जैन समाज का कर्तव्य है कि वह इन पर्व दिनों में मन्दिरों व पूजा पाठ तक ही सीमित न रहे। वह उदात्त भावनाओं के बल पर इन संकीर्ण दिवालों को तोड़कर मानवता की मशाल लेकर आगे बढ़े। जैन धर्म आर्हत धर्म है। सिर्फ नामधारी जैनियों का नहीं। प्राचीन भारत में इस धर्म का प्रचार मानव तक ही सीमित नहीं था—पशु और पक्षी भी इसका आधार लेकर अपने जीवन में शांति की सांसें लेते थे। इस तरह के उदाहरण पौराणिक साहित्य में जगह जगह मिलते हैं। जैन संतों के पैदल विहार का अर्थ ही यही था कि उनके विहार में प्राणिमात्र का सम्पर्क मिलता रहे और वे उनको सही मार्ग में लाने का प्रयास करते रहें। आज जैन समाज में संतों की कमी नहीं है वे हजारों की संख्या में होंगे, लेकिन वे ऐसे दायरे में बंधे हुए हैं कि वे यह समझने के लिए तैयार नहीं कि इस संत-जीवन का उद्देश्य क्या है। आज तो श्रावकों की स्थिति इन संतों ने ऐसी बना डाली है कि वे इतने जबरदस्त जाति-भेद और पंथ-भेद में जकड़े गये हैं कि वे सोच ही नहीं सकते कि हमें क्या करना है। इसी का यह परिणाम है कि हम अल्पसंख्यक के रूप में माने जा रहे हैं, जिससे राष्ट्र में हमारी स्थिति नगण्य सी हो गई है।

भगवान महावीर मानवतावादी विचारधारा के महापुरुष थे। वे चाहते थे कि विश्व के समस्त प्राणी समता के आधार पर जीवित रहें। इसके लिए वर्ग भेद और जाति भेद आवश्यक नहीं। वे समस्त प्राणियों को एक राष्ट्र के रूप में देखना चाहते थे। उसी का परिणाम है यह पर्यूषण पर्व जैसा आध्यात्मिक पर्व, शांति-पर्व। इन धर्मों की प्रतिष्ठा के लिए ही महावीर ने अपने जीवनकाल में धार्मिक, सामाजिक और आर्थिक क्रांतियां कीं। जो इन दस प्रकार के सिद्धान्तों में निहित हैं। महावीर की अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकांत विचारधारा इस ही का प्रतीक है। मैं विनम्र निवेदन करता हूं कि इन दस दिनों में जैन समाज का युवक संकल्प विकल्पों से अलग होकर एकांत में बैठकर आत्मनिरीक्षण के रूप में जैन समाज का महान पर्व की आराधना करके निर्णय ले कि अब हमारा अगला कदम क्या हो? जिससे हम राष्ट्र को कुछ देकर मानवता की प्रतिष्ठा कर सकें। □

धर्म के ये दस दिन

पर्वराज के दिन हम पूजा-पाठ करते हैं लेकिन आराधना नही करते, क्योंकि पूजा करने की चीज है और आराधना जीवन मे उतारने की चीज। आचार और विचार को जीवन की पूर्णता के लिये हमे जीवन मे उतारना होगा।

पर्यूषण पर्वराज का इतिहास बहुत लम्बा है। सदियो से इस पर्वराज के गुणो की गाथा मे अपार साहित्य भरा पड़ा है। वर्तमान मे भी इस पर्वराज की आराधना अपूर्व उल्लास के साथ की जाती है।

पर्वो की आराधना का सब ही धर्मों मे महत्त्व है क्योंकि इनका सबध विश्व के हर प्राणी मे है और वह इनकी आराधना से शाश्वत शाति और सुख को चाहता है। जो इनके नजदीक पहुचता है वास्तव मे उसके जीवन का माजन होता है और एक पुष्प की तरह वह खिल उठता है।

जन धर्मों मे पर्वो को स्थान है और वे समय समय पर आते रहते है मानव को प्रेरणा देने व जाग्रत करने को। उन पर्वों म पर्यूषण पर्व का नाम विशेष उल्लेखनीय है इसीलिए जन धम मे यह पर्वराज के नाम से पुकारा जाता है। पर्व आते है मानव जीवन मे पाशविकताओ को सुलाने के लिए। पाशविकता आती है अज्ञान से। अज्ञान का सबध है काम-क्रोध आदि से। अनादिकाल से इस प्राणी ने इन्ही भावो को प्रश्रय दिया और इनको अपने रूप मे देखा इसम वह विकारो का राजा बन स्वभाव की प्राप्ति नही कर सका। स्वभाव की प्राप्ति के लिये उसे पुरुषार्थ की जरूरत रहती है जिससे आत्मा सबल बनकर वीतरागता प्राप्त कर सकता है। क्योंकि वीतरागता ही आत्मा का निज स्वरूप है। उसकी प्राप्ति के लिए जीवन म धर्म की आवश्यकता है।

वीतरागता की प्राप्ति सतत आराधना से हो सकती है। वह आराधना निष्काम होती है। जिसमे यह आडबर एव क्रिया कलाप क लिए दस दिन के रूप म पर्वराज आता है और सच्चा साधक इन दस दिनो म अपने आपको स्वरूप की प्राप्ति के लिए अर्पण कर देता है। इस दस दिनोम दस प्रकार के गुणो का चिंतवन किया जाता है। जो आत्मा के ही धर्म है आत्मा मे ही रहते हैं लेकिन अज्ञान भाव से आत्मा म ही रहते है लेकिन आत्मा उनको भूल गया है और विपरित भावो म लगा हुआ है। यह पर्वराज इन दस दिनो मे फिर आत्मा का आह्वान करता है कि मेरे सम्पर्क मे आओ और अपने स्वरूप का निर्णय लो। इस आह्वान को सुनते ही विवेक कहता प्राणी जाग्रत होते हैं और एक सच्चे साधक के रूप में पर्वराज की शरण मे आते है। उनकी यह साधना व्यर्थ नही जाती उसका सारा जीवन बदल जाता है और वह एक वीतरागी महान सन्त बन जाता है।

वर्तमान मे भी जैन समाज इस पर्वराज की पूजा करता है। लेकिन आराधना नही करता। क्योकि वर्तमान पूजा मे आराधना का रूप नही है पूजा करने की चीज है और आराधना जीवन मे उतारने की चीज है। हम वर्षो से पर्वराज की पूजा करते आये है लेकिन आराधना नही की। इसीलिए जैन समाज म वीतराग की जगह सरागता पनप रही है। वीतरागता देखने को नही मिलती। इन पवित्र दिनो मे भी हमारा जीवन बदलता नही। हम अधिक खाते ह और सुन्दर से सुन्दर कपडे पहनकर साधनागृहो मे आते हैं जहा सिर्फ सरागता के चिन्ह नजर आते हैं। जिनसे विकार अधिक पनपता है। जैन समाज का कतव्य है कि वह इसके सबध म विचार करें और एकात साधना मे बठकर आत्म निरीक्षण करें।

जैन समाज की स्थिति पहले से भयकर है। दुनिया आगे बढी है हम पीछे जा रहे हैं। हमारे दो सिद्धात प्रमुख थे एक आचार दूसरा विचार। ये दोनो ही सिद्धात जैन समाज से दूर होते जा रहे हैं। आचार मे अहिसा का प्रमुख स्थान है और विचार मे अनेकात है। लेकिन ये दोनो ही देखने को नही मिलते। आज जैन समाज का खान पान व्यवहार गिरता हुआ जा रहा है। न उसमे बाह्याचरण है और न अन्तरग आचरण। जिसमे अहिसा श्वास ले रही है। अनेकात के तो दशन भी नही। छोटे से समाज मे पथ भेद और मतभेद की बाढ सी आ रही है। कही भी जैन समाज मे एकता, प्रेम वात्सल्य दिखाई नही देता और धम की बात सब करते हैं। हम यह नही समझते कि जहा कषाय है वहाँ, धम कहा धर्म तो शाति और स्थिरता की बात करता है। आज इस दस धर्मो मे भी हमे सबसे पहले क्षमा नाम का गुण पढने को व मनन करने को मिलता है। यदि वह गुण धर्मो म नही आता तो धर्म नही मिलता।

समाज मे जगह जगह बडे बडे मुनिराज और सतो के चातुमास है उनके सत्सग से समाज मे नया परिवतन आना चाहिए। यदि समाज जिन्दा रहना चाहता है साधु और त्यागियो का कतव्य है कि वे धम की व्याख्या पथो के पोषण के रूप मे न करे। पथ से विकास नही होता। चाहे वह कोई भी पथ हो धम बाड नही चाहता। धर्म प्राणी विकास चाहता है। यही ज्ञान सिखलाने के लिए यह पर्व-राज आता है इस बार हमे सही माने मे स्वागत करके जीवन कषायो से अलग करके जागृत करना है यानी हम ऐसा कर सकेंगे तो हम कह सकेंगे कि हमने पर्व की सच्ची आराधना की है।

—o—

☐ श्रमणत्व का सार उपशम है। —बृहत्कल्पभाष्य

☐ सिर का मुण्डन करा लेने से कोई श्रमण नही हो जाता, ओंकार का जप करने से कोई ब्राह्मण नही बन जाता, वन मे रहने से कोई मुनी नही हो जाता और कुश-चीवर धारण करने से कोई तापस नही बन जाता।

धर्म मे आर्जव का महत्व

भगवान जिनेन्द्र की वाणी का अवलम्बन लेकर दस धर्मो मे आर्जवधर्म है, जिसका सीधा अर्थ है सरलता। जिसमे यह होगा-वह साधक बनकर जीवन मे कुछ उतारने का प्रयास कर मानव से महामानव बन सकता है।

भारत देश आध्यात्मिक देश है। जिसकी भूमि को अनेक महापुरुषो ने जन्म लेकर पवित्र किया है। उनमे राम कृष्ण, बुद्ध और महावीर का नाम उल्लेखनीय है इन सब ही पुरुषों ने प्राणी हित के लिए कल्याणकारी मार्ग बतलाये, जो कालातर मे धर्म के रूप मे परिवर्तन हो गये। लेकिन दुख है कि वे एक रूप मे नही रह सके।

यह निश्चित है धर्म धर्म है। उसको समझने लिए भेद हो सकते है। लेकिन धर्म धर्म ही रहता है। यदि उसमे विकार आ जाता है या सम्प्रदायिकता का मोह आ जाता है तो वे धर्म नही रहते। वे सम्प्रदाय बन जाते है जिनके द्वारा अज्ञानी प्राणी अहका पोषण करता रहता है। उसी का यह परिणाम है कि भारत देश धर्म के नाम पर अनेक टुकडो मे विभक्त हो गया है और यह भयकर से भयकर स्थिति मे भी एक न हो सका।

भगवान महावीर ने अपने समय से इसके लिए काफी प्रयास किया और देश राष्ट्र और मानव हित के लिए उन्होंने स्याद्वाद जसे महान सिद्धातो का उद्गम किया है। इसके प्रचार के लिए महावीर ने अपना समस्त जीवन राष्ट्र के लिये अर्पण किया और वे इस मिशन म काफी सफल हुए।

भगवान महावीर का कोई भिन्न धर्म नही था। वे अपनी बात नही करते थे। उनका स्वय एक ही सिद्धात था अहिसा का। जिसकी महान साधना मे भगवान महावीर ने अहकार और भयकार को प्रारम्भ मे ही खत्म कर दिया था। उन्होने धर्म के सम्बन्ध मे एक विशाल दायरा अपनाया और कहा कि धर्म मन्दिरो की चीज नही है। धर्म प्राणी की स्वय की चीज है। जो हर प्राणियो मे है और वह साधना के बल पर प्राप्त कर सकता है।

महावीर स्वामी ने वस्तु के स्वाभाव को ही प्रकट रूप म दस प्रकार मे विभक्त किया। जिसको आज हम दस लक्षण धर्म के रूप मे पहिचानते है। ये दस धर्म आत्मा ही के स्वाभाविक भाव है। जो विकारो के अभावो म पदा होते है। यदि मानव मे सही रूप से दस धर्म पदा हो जाये तो वह मानव रूप म महामानव का रूप ले लेता है।

जन समाज इन दस धर्मो की आराधना प्रतिवर्ष करता है। क्योकि ये आत्मधर्म है। मैं इन दस धर्मो की व्याख्या म आप लोगो को ले जाना नही चाहता। मैं तो यह बतलाना चाहता हू कि ये मानव शरीर म सही रूप से किस तरह प्रस्फुटित हो।

यह तो जन समाज का बच्चा बच्चा जानता है कि इन धर्मों के नामो के पीछे उत्तम शब्दो का प्रयोग है। अत इनकी प्राप्ति मे सही रास्ते की आवश्यकता है अत कहा गया है कि निमल दृष्टि स यदि आराधना की जाती है तो इन धर्मों का अवतरण आत्मा मे अति शीघ्र हो जाता है।

मैंने इन दस धर्मों के सम्बध मे कई बार विचार किया और इस बार फिर जन मित्र के विद्वान सम्पादक महोदय ने मुझे अवसर दिया कि मैं इन धर्मों के सम्बन्ध मे कुछ लिखू ।

मैं पाठको से विनम्र निवेदन करूगा कि मेरी स्वय की तो यह मान्यता है कि इन दस धर्मों के समानता होते हुए भी म आजव धम को महत्व देता हू । आजव सरलता का नाम है। कपट व माया का अभाव ही उत्तम आजव धम है, जिसका चिन्तन आत्मा के अन्तस्थल तक पहुचता है और वह अपने निमल प्रवाह के द्वारा समस्त विकारो को निकालता हुआ बाहर से सूय के प्रकाश की तरह प्रस्फुटित होता है। यह धर्म एक शुद्ध धर्म है। जिसकी प्राप्ति शुद्ध निर्विकल्प जीवन से ही हो सकती है। इसलिए आजव धम धरातल की शुद्धि चाहता है। आर्जव धर्म कहता है कि तेरा चिन्तन सम्भाषण और क्रिया एक रूप हो।

यदि इनमे विभिन्नता होती है तो वहा धर्म नही आता। धर्म का प्रारम्भिक पाठ ही आर्जव धर्म से होता है। जहा आर्जव नही वहाँ उत्तम क्षमा और उत्तम मादव हो ही नही सकता। ये सब सहभावी धर्म है। धर्म की आराधना शांति के लिए है।

जहा छल कपट है वहा स्थिरता नही तब धर्म कहा से हो सकता है। धर्म अन्तर-आत्मा की आवाज है, जिसका स्थान उत्तम क्षमा है।

क्षमा का अर्थ अपराधो की माफी नही है। क्षमा का अर्थ है स्वय में क्षमा की प्रतिष्ठा। जहा क्षमा की प्रतिष्ठा है वहा अहिंसा का साम्राज्य है और जहा अहिंसा है वहा ही शाति का पूण अवतार है। अत साधक यह तप करता है कि धर्म की आराधना में आर्जव ही साधनाभूमि है। यदि यह नही तो मायाचारो के जीवन में धर्म नही उतर सकता। आर्जव धर्म के सम्बन्ध मे जन साहित्य में काफी प्रकाश डाला गया है।

मैं तो इतना ही कहना चाहता हू कि जैन धर्म बाह्य जीवन को नही पकडता व वह अन्तरग निर्मलता की बात करता है। जैन धर्म परिणामी धर्म है। उसकी समस्त व्यवस्थाये आत्म परिणामो पर अवलम्बित है और उन्ही पर समस्त दामोदार बध और मोक्ष का है। अत परिणामो में शल्य है, मायाचार है, कपट है तो धर्म तो दूर रहा वहा व्रत भी नही बन सकते।

अच्छाइयो का नाम ही व्रत है और पूण निर्मलता और शुद्धता का नाम धर्म है। धर्म प्राप्ति का एक क्रम है। अत जन साहित्य मे यह सही रूप मे प्राप्त हो सकें इसके लिए तप, सयम, व्रत को इनका परिकर बतलाया है। यदि कोई धर्म की बात करे और इनका सहारा नही ले तो धर्म की प्राप्ति नही हो सकती। लक्ष्य की प्राप्ति के लिए इनका सहारा आदर्श सहारा है।

बहुत से लोग इनके समझने मे गलती करते हैं मत वे इनको पुण्य भाव कहकर निषध करते है।

पाठको को समझना चाहिए कि लक्ष्य की स्थिरता के लिए हमारा आधार क्या है? आत्मा स्वय का आधार है लेकिन कम है जब वह स्वय मे पूण रूप से रमण कर लेता है। इसके पहले व्रत और उपवास का आदर करना ही होगा। वातो से या पोथी के पाने उलथने से धम की प्राप्ति नही हो सकती। ऐसे लोग धम की उत्थापना कर सकते हैं।

जैन समाज का कत्त व्य है कि वह इन पर्व दिनो मे भगवान जिनेन्द्र की वाणी का अवलम्बन लेकर इन दस धर्मो मे आजव धर्म का महत्व समझें और शब्द रहित परिणामो के साथ धर्म की साधना करें। ये दस दिन साधना के रूप मे हमारे सामने आते हैं और हम उन वीतराग सतो के चरणो के सानिध्य मे बठकर आत्मा निरीक्षण करते हुए साधक बनकर जीवनम उतारने का प्रयास कर तो हम कह सकत है कि हमने आजव धम की आराधना की।

☐ भीतर और बाहर की सम्पूण ग्रन्थियो के उन्मोचन का नाम अपरिग्रह है। —भगवती-आराधना

☐ इच्छा रहित होना अपरिग्रह है। —समयसार

☐ वास्तव म आत्मा ही अपना परिग्रह है। —समयसार

☐ यदि यह शरीर आदि मेरा परिग्रह हो जाये तो मैं अचेतनपने को प्राप्त हो जाऊ गा? —समयसार

सत्य जीवन का एक आवश्यकीय अंग

ऐसे वचन बोलने चाहिये जो बहुत कड़वे और कठोर न हो, अहिंसा परक हो, जिसके कारण आत्मा के परिणामो से आकुलता पैदा न हो-यह सब तब ही होगा-जब हम सत्य धम को जीवन मे आत्मसात कर लेंगे।

दसलक्षण धम के पवित्र अवसर पर अनेक पत्र अपने विशेषाक प्रकाशित करके आज के सभ्रात मानव को सही दिशा निर्देश देने का प्रयास करते है और यह जीवन के लिए आवश्यक भी है। आज के मानव की खुराक समाचार पत्र मुख्य खुराक हैं। जैन पत्रो की खुराक अधिक आध्यात्मिक होती है जिनके अध्ययन से मानव को शाति की झलक मिलती है और वह एक समय के लिए अन्तमुर्ख बनकर सही सुख का अनुभव कर सकता है। इसी सही सुख का अनुभव कर सकता है। इसी सही सुख उद्बोधन के लिए मानव समाज की बीच प्रति वर्ष पयू पण पवराज आता है और पर्वराज के दस दिनो मे मुमुक्षु आत्मायें साधना के रूप मे अपने जीवन निर्माण के लिए दस प्रकार के धर्मों की आराधना, चिन्तन और मनन करती है।

ये दस प्रकार के धम बाहर से नही आते। इनकी उपलब्धि स्वय को स्वय से ही होती है। आत्मा मे दो शक्तियें मानी गई है। एक वैभाविक शक्ति और दूसरी स्वाभाविक शक्ति, व भाविक शक्ति से विकारो भाव पदा होते है जिस क्रोधादिक और स्वाभाविक शक्ति से लगा दे। ये धम दस प्रकार केहैं। उन दस प्रकार के धर्मो मे सत्य भी एक धम माना गया है। सत्य धर्म पर जन साहित्यमे काफीलिखा गया है और बतलाया गया है कि सत्य ही मानव जीवन का एक आवश्यकीय अ ग है। जन साहित्य मे सत्य की व्याख्या मे सही शब्द कहना सत्य नही बतलाया गया है।

सत्य एक मानव का सही सिद्धात है, जिसको शब्दो द्वारा प्रकट किया जाता है। वे शब्द कड़वे और कठोर न हो अहिंसा पर हो, जिसमे किसी भी आत्मा के परिणाम मे आकुलता पदा न हो। इसलिए कहा गया है कि यदि तू बोलना चाहता है तो हित मित और प्रिय वचन बोल। जिन वचनो को सुनने से मानव को शाति मिले और सही बात समझने का अवसर मिले, यही धम है। जिस भाषा व सत्य के बोलने से राष्ट्रो समाजो व देशो का नाश हो जाय ऐसे शब्द भी जन साहित्य की दृष्टि मे असत्य है। क्योंकि जन साहित्य की भावना देश और राष्ट्र का निर्माण करना है और मानव को सही दिशा निर्देश देना है। ऐसा सत्य शब्द किस काम का, जिसके कहने से राष्ट्र का विघटन हो जाय, प्राणियो मे विसवाद बढ़ जाय। सही साहित्य म जो भी उल्लेख है वह प्राणिहित और राष्ट्रहित के लिए है। इस सत्य के समझने के लिए माननीय प सदासुखजी कासलीवाल ने रत्नकरण्ड श्रावकाचार

की वचनिका मे काफी प्रकाश डाला है जो वास्तव मे पठनीय है और जीवन के लिए उपयोगी आवश्यकीय है।

उन्होंने सत्य की व्याख्या करते समय सत्य को जीवित रखने के लिए बतलाया है कि तू दो प्रकार की भाषाओ का प्रयोग मत कर, जिन भाषाओं का प्रयोग करने से मानव के हृदय को त्रास पैदा हो, वे दस प्रकार की भाषायें आज भी कई अज्ञानी लोगों द्वारा उपयोग मे लाई जाती है। जैसे मैं तेरा नाके काट लेस्यू। मार नाखस्यू। मेरे हाट लगा है, यू आदि आदि। ये ऐसे शब्द है या भाषा है जिनसे मानव का पतन हो जाता है और भावी पीढी का बहुत बडा नुकसान हो जाता है। इस सत्य व्रत की प्राप्ति के लिए मानव को साधना क्षेत्र मे आना आवश्यक है। साधना का अर्थ है जीवन निर्माण की दिशा मे अपना कदम बढाना।

सत्य वचन साधना के लिए मौनी जीवन आवश्यकीय माना गया है। इसके बिना सत्य की प्राप्ति नही हो सकती। साधना में वचन शुद्धि आवश्यकीय है। प्राचीन भारत मे इसके लिए बडे-बडे संत एकात स्थलो मे जाकर वर्षो तक मौन समाधि लेते थे। जिसका स्पष्ट उदाहरण भगवान महावीर का है। भगवान महावीर समझते थे शब्द कितना मौलिक है और उसका उपयोग क्यो और कब करना है। क्याकि मानव की प्रमाणिकता या मौलिकता का आधार शब्दो की प्रमाणिकता ही है। इस लिए भगवान महावीर ने १२ वर्ष तक एकात मौन साधना की।

जिस मौन साधना म महावीर ने अपनी अनन्त आत्मीय शक्तियो को बटोरा और सही सत्य व्रत की प्राप्ति की ओर पूर्ण ज्ञान का प्रकाश दिया उसी का यह परिणाम था कि भगवान महावीर का एक एक शब्द राष्ट्र के प्राणियो के लिए प्रेरणादायक बना। भगवान महावीर की दिव्य वाणी को सुनने के लिए बडी बडी सभायें भरने लगी, जिनको सुनने के लिए मानव तो आता ही था लेकिन पशु पक्षी भी सभा स्थल मे आकर आत्म शांति प्राप्त करते थे। यह प्रभाव महावीर की दिव्य वाणी का नही लेकिन सत्य व्रत की महान साधना का था।

भगवान महावीर बहुत कम बोलते थे लेकिन वह हितकारी होता था और प्राणियो के लिए प्रिय होता था। इसी का यह परिणाम है कि अढाई हजार वर्ष बाद भी भगवान की दिव्य वाणी श्रद्धा और आस्था के साथ पूजी जाती है। इस सत्य की आध्यात्मिक क्षेत्र की तरह लौकिक क्षेत्र म भी आवश्यकता है। इसके बिना जगत का कोई व्यवहार नही चल सकता जीवन का सत्य एक आवश्यकीय अंग है। जितना लेन देन का व्यवहार होता है वह सब सत्य पर ही आधारित है। लेकिन आज इस सत्य की प्रामाणिकता आस्ते आस्ते खत्म होती जा रही है। देश के बडे-बडे नेता सभाओंमे खूब बोलते है लेकिन आज उनके वचन की वही भी मौलिकता नही है। सारे राष्ट्र म नैतिकता खत्म होती जा रही है। क्योंकि मानव स्वय कहता है उनका आचरण स्वय मे नही, जो आवश्यकीय है। इसी से राष्ट्र का आज बहुत बडा अहित होता जा रहा है। क्योंकि जिनके हाथ म राष्ट्र नेतृत्व है व स्वय सत्य आचरण मे दूर है। सत्य की प्राप्ति त्याग, तप और साधना मे होती है।

आज के मानव म सत्य नाम का कोई व्रत नहीं जिसको हम देश का आधार मानते है वे ही आचरणहीन बनते जाते है ऐसी स्थिति में अच्छा है जन समाज इस दिशा में सत्य की आराधना करके राष्ट्र का कल्याण बनाने में निज भागी बने। ☐

जीवन में त्याग का महत्व

त्याग धन के दान देने से ही माना जाने का वर्तमान समाज में प्रचलन है किन्तु त्याग, वास्तविक त्याग अहंकार, प्रतिष्ठा के त्याग करने से ही प्राप्त होता है और जब त्याग जीवन में आ जाता है तो मानव से महामानव तीर्थंकर बन जाता है। जैन साहित्य में तो 24 प्रकार के परिग्रह के त्याग को त्याग माना है। जीवन की उत्कृष्टता के सबसे बड़ा उपाय त्याग ही है।

भारतीय साहित्य मे जीवन के विकास के लिए एकांत साधना को बहुत महत्व दिया है। और उसके लिए ऐसे कुछ दिन भी नियत किये जाते हैं जिन दिनो मे आकुलित प्राणी समस्त विकल्प वालो से अलग होकर अपने विकास के सम्बन्ध मे चिंतवन, मनन व अध्ययन कर सकते हैं। ये विशेष दिन कहलाते हैं। जिनको शास्त्रीय भाषा म पर्व नाम से संबोधित करते हैं। जैन साहित्य मे भी इन धर्मों को काफी महत्व दिया गया है, जिनके महत्व के संबंध म कथा साहित्य मे भी उल्लेख मिलता है। जिनसे मालूम होता है कि साधना के बल पर यह प्राणी मानव से महान मानव बनकर अपने सही स्वरूप की प्राप्ति कर लेता है और यही सही धर्म है। स्वयं की प्राप्ति ही धर्म आराधना कहलाती है। इसको समझने के लिए ऋषी और वीर संतो ने परम्परा अनुसार दसलक्षण धर्म को विशेष महत्व दिया है। इसका नाम पर्यूषण पर्व भी कहलाता है। जिसका अर्थ होता है मानवता प्रकाशक महापर्व। धर्म का सही अर्थ भी यही होता है। जिससे जीवन का निर्माण होता है और मानवता दमक उठती है।

आज की भाषा मे धर्म के लिए हम कई अलौकिक कल्पनायें करते हैं। जिनसे मानव विचलित हो जाता है। जैसी धर्म की परिभाषा दी जाती है उनसे यह भ्रम होना है कि धर्म एक दुर्लभ चीज है और वह इन कल्पनाओ के बाहर की चीज है। जिनकी प्राप्ति इस युग म असम्भव है। लेकिन आचार्य उमास्वामी ने अपने महान ग्रन्थ तत्त्वार्थसूत्र म स्पष्ट इन धर्मों के दस प्रकार के नाम निर्देश करके बतला दिया है कि आदमी साधना क्षेत्र म प्रवेश करके इनके दस धर्म से आज भी जीवन की शुद्धि कर विकार अवस्था और दूसरी स्वयं की अवस्था, विकारी अवस्था ही तब तक रह सकती है जब तक अज्ञान वश इस अवस्था को स्वयं की स्वयं अवस्था मानी जाती है लेकिन ज्यों ही वह स्वयं की अवस्था का ज्ञान करता है तब अपने आप विकारी अवस्था से छूट जाती है। ये विकारी अवस्थायें बनती है काम मोहादिक परिणित भावों म।

है साधना और सयम जिस जीवन की परिधि है। सत जीवन प्रतिष्ठा और पूज्यता के लिए नही आता। उस जीवन मे ज्ञान और वैराग्य की अपूर्व छटा रहती है। जिसका आधार मानवतावादी त्याग है जहा न लिप्सा है और न किसी भी प्रकार की आकाक्षा। सेवा ही जिनका व्रत है और अध्ययन मनन और चिंतन ही जिनका आधार है।

समाज ने आज त्याग के इस महत्व को गौण कर दिया और उसने धन के दान को महत्व दे डाला। जिससे त्याग की जगह केवल वैभव की पूजा और प्रतिष्ठा होने लगी। इससे मानवता सिसकने लगी और दानवता का प्रचार बढ गया। लाखो रुपया दान देने पर भी गरीब भाई और बहिनो की स्थिति क्या है यह लोग नही देखना चाहता स्थिति यह हो रही है कि धम की उपासना करने वाले इन धर्मात्माओ को न कोई स्थान है और न कोई स्थायित्व है। क्योकि व गरीब है।

समाज मे इन गरीबो की बच्चियो को भी लेने के लिए कोई तयार नही। इधर लाखो का दान करके समाज मे प्रतिष्ठा बटोरते हैं और उधर लाखो का दहेज लेकर कितने ही गरीब घरो को बर्बाद करते हैं और कई कुमारी कन्याओ का सवनाश करने मे अग्रसर हो रहे है। समाज को इस पर्यूषण पव पर साधना के नाम पर सोचना है कि क्या यही त्याग धम है और क्या इससे मानवता जीवित रह सकती है सबसे बडा त्याग गरीबो का सरक्षण है। जिसको आहारदान और अभयदान के नाम पर महत्व दिया है।

सही त्याग अहकार का और प्रतिष्ठा का त्याग है। इस तरफ समाज को ध्यान देना चाहिए, आज जगह जगह आध्यात्मिक शिविर लग रहे है उनका उद्‌घाटन भी इन्ही शोषणकर्ताओ के हाथो से हो रहा है और शिक्षण शिविर मे भी इन्ही को महत्त्व दिया जाता है। जिनके जीवन मे अन्य कोई आदश नही, साधना और सयम का कोई ठिकाना नही। बातें आत्मशुद्धि और निर्विकल्प की जाती हैं लेकिन इस सबकी प्राप्ति के लिए अनत स्थिरता के लिए महान त्याग की आवश्यकता है उसकी भूल कर के भी चर्चा नही की जाती। अत समाज इस त्याग धर्म को महत्व देकर सही मानवता प्राप्त करने का प्रयास करें।

- ☐ आसक्ति को परिग्रह कहा गया है। —दशवकालिकसूत्र

- ☐ बालके अग्रभागकी अनी मात्र परिग्रह भी साधु नही रखते। —सूत्रपाहुड

- ☐ मिथ्यात्व, पुरुष-स्त्री-नपुसकमे अभिलाषा, हास्य, रति, अरति, शोक, भय जुगुप्सा, क्रोध, मान, माया और लोभ ये चौदह अन्तरग परिग्रह हैं।

दान का सही उपयोग कैसे किया जाय?

शोषणहीन जीवन और संचित द्रव्य का उचित वितरण ही सच्चा दान है। यह दान यदि वर्तमान परिस्थितियों को देखकर दिया जाये तो अति उत्तम रहेगा। हमारे पूर्वजों ने ही इसे धर्म का ही रूप माना है।

दान शब्द से बालगोपाल सब ही परिचित हैं व जैन समाज का बच्चा-बच्चा इस दान से प्रभावित है, इसीलिए वह किसी भी रूप में दान देकर अपने आपको कृतकृत्य मानता है। प्राचीन जैन साहित्य में इसका उपयोग अनेक रूप में देखा जाता है। लेकिन प्रधानतया आहारदान, ज्ञानदान, औषधिदान और अभयदान के नाम से पुकारा जाता है। वास्तव में दान का स्वरूप है, शोषणहीन जीवन और संचित द्रव्य का उचित वितरण।

दान का स्वरूप हर युग में बदलता आ रहा है और आज भी युगानुसार इसके बदलने की आवश्यकता है। प्राचीन भारत में आहारदान, ज्ञानदान, औषधिदान, और अभयदान मुनि अर्जिका, श्रावक और श्राविका रूप में ही सीमित था। इन्हीं को सत्पात्रों के नाम से महत्व दिया गया है और इन्हीं को दान करके श्रावक अपने आपको भाग्यशाली मानता आ रहा। बीच के युग में इन पात्रों की कमी होने से श्रावकों ने दान की दिशा में परिवर्तन किया और उसका उपयोग मन्दिर और मूर्तियों के निर्माण में किया जाने लगा। वास्तव में मन्दिर और मूर्तियों के निर्माण से जैन इतिहास और जैन संस्कृति को बल [illegible] जैन समाज ने अपना अपूर्व इतिहास कायम किया, भारतीय इतिहास के विद्वान [illegible] जैन [illegible] साहित्य और [illegible] को आश्रय देकर उसको जीवित रखा।

का प्रतीक है इसलिए दस धर्मों मे इसको महत्वपूर्ण स्थान दिया। आज जैन समाज की स्थिति में कुछ परिवर्तन है जिसके लिए समाज को आत्म निरीक्षण के रूप मे देखना अनिवार्य है। जैन समाज में आज भी बडे-बडे दातार और दानी है उसी के साथ साथ समाज मे हजारो ऐसे जन भी है जिनकी स्थिति दयनीय है, अनाथ है, असहाय है और बेकार है। उनमे कई ऐसे लोग भी है जिनके बच्चो को पहनने के लिये पूरे वस्त्र नही है और पढने के लिए पुस्तकें नही है। कई ऐसे है जिनकी आजीविका नही होने से उनके बाल बच्चे दुखी है ऐसी स्थिति मे इन परम्पराओ के अवसर पर जन समाज को आत्म निरीक्षण के रूप मे विचार करना चाहिए और इन जीवन्त जन भाइयो को अभय देकर सरक्षण करना चाहिये। इसके साथ-साथ जनधर्म के जीवन्त प्रचारक साहित्य प्रचार और प्रसार की तरफ भी समाज को ध्यान देना आवश्यक है।

दुनिया मे वही धर्म जीवित रह सकता है जिसका साहित्यकार अमर है और उसके प्रचार के लिये प्रयत्नशील है। जैन समाज मे बडी-बडी अनेक सस्थाये है। उनम बडे-बडे नेता उनके यहा पर बठे हैं लेकिन आज भी जन साहित्य के प्रकाशन की ओर, प्रचार की हमारे पास कोई समुचित व्यवस्था नही है। अत जन समाज का कर्तव्य है कि वह हमारे धन का उपयोग साहित्य प्रचार म करें। जन साहित्य एक जागरूक साहित्य है, जिसमे समस्त शिक्षाये जीव निर्माण के लिये दी गई है। यदि इन शिक्षाओ का सही रूप मे प्रचार किया जाय तो बहुत बडा काम इस युग म हो सकता है। सही साहित्य के अभाव मे आज सारा देश और राष्ट्र त्रासित और दुखी है।

मानवता सिसक रही हैं ऐसी स्थिति मे जैन साहित्य ही राष्ट्र का सही दिशा निर्देश कर सकता हैं। इसके लिये हमारे वतमान साधु और साहित्यिको को भी अपने चरण आगे बढाना चाहिये। साधु किसी जाति विशेष के कार्य विशेष के लिए साधुता ग्रहण नही करते।उनका समस्त विश्व बन्धु है और वे सबके लिये अपने आपको समर्पित करते है। जन साधुओ को घेरे से निकलकर बाहर आना चाहिये और हमारे मानवता सूचक सिद्धान्तो का प्रचार करन के लिये आगे बढना चाहिए। आज देश म नतिकता की आवश्यकता है। नतिकता आज के नेता नही दे सकते वे खुद अनतिक है, जिससे सारे राष्ट्र म स्वच्छन्दता और अनतिकता का बोलबाला है। जन सन्त पद यात्रा कर लोक को धर्मोपदेश देत। वनो मे उनस मानव ही नही पशु तक सम्बोधित होत थे।

☐ जो साधु सभी वस्तुओ की आसक्ति से मुक्त होता है, वही जितेन्द्रिय तथा आत्मनिभर होता है।

—मूलाराधना

☐ परिग्रह से रहित मनुष्य स्वाधीन और निभर रहता है।

—मूलाराधना

सोलह कारण भावना —एक चिंतन

भावनाओ के पूर्व उदय से तीर्थ कर जैसा महान् पद मिलता है। जिससे मानव महामानव बनकर लोक कल्याण करता है-यह मानव के लिये हितकारी है-हम इनका चितवन कर जन जीवन को ऊचा उठा सकते है।

जन धर्म की हर मान्यता व उसके सिद्धात सामयिक ही नही है किन्तु वे सवकालिक और सर्वजीव हितकारी भी है। जन सिद्धात के प्रमुख सिद्धान्त अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकाठ सब प्रसिद्ध है। इनके सबध मे काफी लिखा गया है। अत मैं यहा उनका पिष्ठ पेषण नही करना चाहता।

इनके अलावा भी सोलह कारण भावना, बारह भावना,तप और सयम आदि कुछ ऐसी मान्यताएँ है जिनके चितन-मनन और अवधारण करने से मानव को मानवता की प्राप्ति होती है और उनसे मानव महान बन जाता है। जन धम का लक्ष्य ही प्राणी विकास है। इन सिद्धातो से या विचारो से मानव का जीवन बनता ह वह राष्ट्र, धम और समाज की सेवा के लिए अपनी राह में आगे आगे बढ़ता है। मैं एक स्वाध्यायी विद्यार्थी हू। अध्ययन और मनन मेरे जीवन का एक लक्ष्य है। जो भी मुझ आज प्राप्ति हुई है वह सब देन साहित्य अध्ययन की है जन साहित्य की यह भी एक विशेषता है कि ज्यो-ज्यो उसका अध्ययन किया जाता है त्यों-त्यो नई-नई उपलब्धिया मिलती है जिससे मानव का नया निर्माण होता रहता है।

इस बार मैं भाद्रपद माह मे सोलह कारण भावनाओ का पाठकर रहा था। तब इनके सबध मे मेरे हृदय मे यह विचार पदा हुआ कि वास्तव म सोलह कारण भावनाओ से मानव मे मानवता की प्राप्ति होती है और उनके अध्ययन से मानव को जीवन परिवतन करने के लिए नई दृष्टि मिलती है। तीथकर जसे महापुरुषो का उदय भी इन भावनाओ के बल पर ही होता है। उच्च जीवन की प्राप्ति के लिए इन सोलह कारण भावनाओ की साधना अनिवाय है।

इन भावनाओ से मानव को एक नई दृष्टि मिलती है। जिससे मानव स्वय का विकास तो करता ही है लेकिन ऐसे मानव मे सदहृदयता का एक अकुर भी पदा होता है। उसमें विश्व सेवा जसा सकल्प का उदय होता है।

विश्व की सेवा की भावना जहा होती है वही मानव तीर्थकर जसे महान पद को प्राप्त होता है। ये भावनायें सोलह होती है भावना का अर्थ है बार-बार चिंतन करना, मनन करना स्वय को कर्त्तव्य पथ की ओर एक साधक के रूप मे आगे बढाते जाना। इस साधना क्षेत्र म साधक के लिए यह बतलाया गया है कि साधक सबसे पहिले अपनी दृष्टि मे परिवर्तन लावे। इसी दृष्टि मे परिवर्तन के लिए सबसे पहले दर्शनविशुद्धि नामक भावना का उल्लेख है। इससे स्पष्ट है मानव यदि किसी भी क्षेत्र मे आगे बढना चाहता है तो सबसे पहिले स्वय की शक्ति को समझे और सही मार्ग पकडने का प्रयास करें क्योंकि मानव मे सासारिक व इनसे सम्बन्धित अनेक कमजोरिया होती हैं जिनसे मानव सही राह पर नही चल सकता। इसके लिए आवश्यक ह कि साधक साधना क्षेत्र मे यह समझने का प्रयास करें कि मैं कौन हू और मुझे क्या करना ह।

मानव हृदय मे अहकार, ममकार, अज्ञान की कई विषमतायें भरी पडी ह जिनसे उसका सही चिंतन नही बनता ह। अत आवश्यक है आत्मदर्शन होने से हृदय की समस्त विसगतिया, विषमतायें, अहकार-ममकार की भावनायें अपने आप खत्म हो जाती ह।

ऐसी आत्माओ म न मूढता रहती ह, न अभिमान की भावनायें होती और न मिथ्या विकल्प की भावना होती ह। दर्शन विशुद्धि होने से आत्मा स्फटिक माग की तरह निर्मल और पवित्र हो जाता ह।

यह एक ऐसी दृष्टि ह जिसमे मानवता अपने आप निखर उठती ह। ऐसे महामानव मे न किसी प्रकार का हठ रहता ह और न किसी प्रकार का कदाग्रह। ऐसे मानव सकीर्ण दायरे से ऊपर उठ जाते हैं। उनम सिर्फ एक ही भावना रहती ह स्वय के विकास की और उसके साथ-साथ मानव सेवा व प्राणी सेवा की। ऐसे मानवो मे प्रातीयता, जातीयता आदि का कोई आग्रह नही होता, विश्व सेवा ही उनका लक्ष्य होता ह। इसीलिये सबसे पहिले दर्शन विशुद्धि भावना बतलाई गई ह। जहा दर्शन विशुद्धि होती ह, वहा विनय सम्पन्नता अपने आप पदा होता ह।

एसी आत्माओ का हृदय विनयी होता हैं। उनमें किसी प्रकार का अहकार ममकार नही होता। उनके हृदय में अपार शक्ति होती ह और चेहरे पर सौम्यता तथा वीतराग भावना का उदय हो जाता ह। इसी तरह उत्तरोत्तर सोलह भावनायें हैं।

इन भावनाओ के पूर्ण उदय से तीर्थकर जसा महान् पद मिलता ह और इसी पद की प्राप्ति से मानव महामानव बनकर लोक कल्याण भी करता है। ये भावनायें आज भी मानव के लिए हितकारी हैं। यदि इन भावनाओ का हम लोग किंचित भी चिंतवन करें तो जन जीवन ऊचा उठ सकता ह। पूजा पाठ की प्रणाली में साधक महापुरुषो की भगतिया हमें सिर्फ उनकी प्रतिष्ठा के लिये नहीं ह। इनसे हमें स्वय का मार्जन करना चाहिये। हम स्वय का मार्जन करें जिससे राष्ट्र, समाज व जीवन में परिवर्तन आवे। दु ख इस बात का ह कि हमारी प्रवृत्ति ने रूढि का रूप ले लिया जिसम हम सही बात स दूर होते जा रहे हैं और हमारा जनत्व मुर्झाता हुआ चला जा रहा है। आशा ह पाठक गण हृदय की भावना को समझकर उचित चिंतन के लिए कदम उठायेंगे। मेरे लेख का यही एक मात्र उद्देश्य ह। □

पं. सत्यंधर कुमारजी सेठी द्वारा पुष्पित व पल्लवित संस्थायें

(1) श्री सूर्यसागर दि० जैन उच्चतर विद्यालय उज्जैन के संस्थापक एवं वर्तमान में उपाध्यक्ष।

(2) श्री ज्ञानसागर कन्या विद्यालय उज्जैन के संस्थापक एवं वर्तमान में मन्त्री।

(3) मालवा प्रांतीय दि० जैन पुरातत्व संग्रहालय के जन्मदाता एवं मन्त्री।

(4) मालवा दि० जैन छात्रावास बडनगर के मन्त्री।

(5) मालवा प्रांतीय दि० जैन सभा बडनगर के वरिष्ठ सदस्य।

(6) ऐलक पन्नालाल दि० सरस्वती भवन उज्जैन के संचालक।

(7) अखिल भारतीय दि० जैन परिषद् दिल्ली के मन्त्री।

(8) वस्त्र व्यवसायी पारमार्थिक औषधालय उज्जैन के अध्यक्ष।

(9) दि० जैन महासमिति दिल्ली की कार्यकारिणी के सदस्य।

(10) दि० जैन महासमिति समन्वय समिति दिल्ली के सदस्य।

(11) दि० जैन मन्दिर नमक मण्डी उज्जैन के मन्त्री।

(12) महावीर जैन सभा—माडल की सलाहकार समिति के सदस्य।

(13) अखिल विश्व जैन मिशन के संचालक सदस्य, वरिष्ठ उपाध्यक्ष एवं प्रचार मन्त्री।

(14) जैन शिक्षण समिति उज्जैन के उपाध्यक्ष।

(15) गरीब असमर्थ सहायता फण्ड उज्जैन के संचालक एवं मन्त्री।

(16) महावीर ट्रस्ट मध्यप्रदेश की प्रबन्धसमिति के सदस्य।

(17) दि० जैन अतिशय क्षेत्र मक्सी के प्रबन्धसमिति एवं गुरुकुल के सदस्य।

(18) उज्जैन जिला पुरातत्व राज्यस्तरीय प्रबन्ध समिति के सदस्य।

(19) महावीर जयन्ती उज्जैन के संयोजक।

(20) थोक वस्त्र व्यवसायी सहकारी समिति उज्जैन के जन्मदाता व मैनेजिंग डाइरेक्टर (भू पू)

(21) होलसेल क्लाथ मर्चेन्ट एसोसियेशन उज्जैन के जन्मदाता व प्रबन्ध समिति के सदस्य। 10

(22) विश्व हिन्दू परिषद् उज्जैन के उपाध्यक्ष।

(23) उद्योगपुरी उज्जैन के डिप्टी मैनेजिंग डाइरेक्टर (भू पू)

(24) गृह निर्माण समिति उज्जैन के सदस्य।

(25) अखिल भारतीय भगवान महावीर निर्वाण महोत्सव समिति के सदस्य।

जैन सन्त

बीसवीं शताब्दी के प्रमुख संत परमपूज्य आचार्य सूर्यसागर महाराज

बीसवीं शती मे जैन सतो की परम्परा मे आचाय सूय सागरजी को यदि सर्वोपरि रखा जाये तो अतिशोक्ति नही होगी-वे महामानव थे-जिसके काय, आचरण आत्म कल्याण से परिलक्षित थे-वे मानवता व समता के महान् पोषक थे।

भारतीय साहित्य म ही नही किंतु विश्व के हर साहित्य मे सत जीवन का बहुत बडा महत्व आका गया है और साहित्य जगत मे भी उसी साहित्य का समादर हुआ है जिसमे सत जीवन प्राप्त महापुरुषो का जीवन चित्रित है। क्योकि सत जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिससे देश, समाज और राष्ट्र को नवचेतना, जन जागृति ही नही किंतु नतिकता जैसा सदाचार मिलता रहा है। भारत को विश्व के देशो मे मुख्य रूप से जो आदर मिला है उसका कारण ही यही है कि भारत मे सहस्राब्दियो से ही ऐसे सत होते रहे हैं जिन्होने विश्व को अपन नतिक जीवन द्वारा माग दशन किया है। इन सतो मे जैन सतो का प्रमुख हाथ रहा है। इतिहास के पृष्ठ इसक साक्ष है। जन सतो की परम्परा श्रमण सस्था के नाम से या श्रमण सस्कृति के नाम से स्वीकार की गई है।

इस परम्परा मे भगवान महावीर जसे महापुरुष भी पदा हुए हैं जो महा श्रमण के नाम से पुकारे जाते हैं। इसी परम्परा मे भगवान कुन्दकुन्द, भगवान उमा स्वामी जैसे महान सत भी पदा हुए, जिन्होने अपार साहित्यका सर्जन करके साहित्य जगत की अपूर्व सेवा की हैं। इसी तरह बीसवी शताब्दी मे होने वाले सतो म दिगम्बराचाय परम पूज्य आचाय सूय सागर महाराज का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। आचार्य सूय सागर महाराज ने इस बीसवी शताब्दी मे देश व समाज की जो सेवायें की है वह वास्तव मे स्तुत्य ही नही किंतु अन्य सतो के लिए अनुकरणीय भी हैं। यद्यपि वे भेष म दिगम्बर साधु थे लेकिन वास्तव मे उन्होने कभी भी अपने आपको एक जमात मे नही बाधा था।

वे महा मानव थे और हर मानव को अपना समझकर मानवता का पाठ पढाया करते थे। उनके हृदय मे समता के भाव थे। वे एक ऐसे सत थे जो रूढियो को कभी प्रोत्साहन नही देते थे। जहा भी इस महान सत का पदापण होता वहा समता और शाति अपने आप आ जाती। इन महान सत के पदार्पण से जन समाज के कई स्थानो के झगडे शात हुए। जिसमे जयपुर जन समाज के वे झगडे

भी सम्मिलित है जिनका मिटना वास्तव मे मुश्किल था। भाई-बहन अलग-अलग हुए, एक दूसरे के आने जाने के व्यवहार खत्म हुए, घर-घर मे अशान्ति की ज्वालायें धधकी। ऐसे भयकर झगड़े को भी इस सत ने एक निमिष मात्र में दूर किया। इन महान सत के दर्शन करने का सौभाग्य लेखक को जयपुर मे मिला, जब मेरे मित्र द्वारा यह सुना कि एक मुनिराज आये हुए है जो वास्तव मे सत है, मेरी भी उत्कण्ठा बढी। उस समय सूर्य सागरजी महाराज का सभा स्थल पाटोदियो का मन्दिर था, मैं गया, मैंने देखा एक प्रशात मूर्ति, महान वीतरागी, अपरिग्रह का महान उपासक, हजारो उपासको के बीच बैठा हुआ है एक साधारण आसन पर और कह रहा है समाज और धर्म के विनाश की बात।

उस व्याख्यान ने सहज ही मेरे हृदय को झुका लिया। मैं भी बैठा-मत्र मुग्ध की तरह सुनता रहा, उस दिन उस व्याख्यान मे जैन समाज की वर्तमान दशा का इतने अच्छे ढग से चित्रण किया था कि सब की आखो मे अश्रुधारा बह आई थी। उनका कहना था कि जैन जीवन वर्तमान जीवन नही, यह जो जनत्व की विडबना है। जैन जीवन एक आदर्श जीवन होता है जिससे विश्व निखर उठता है। इसी व्याख्यान ने वहा एकता की भावना पैदा की थी। मैंने कई दिनो तक प्रथम श्रोता का स्थान ग्रहण करने के बाद भी नमस्कार नही किया लेकिन उन महान सत का इस तरफ लक्ष्य भी नहीं गया और इसी भावना ने उनके चरणो मुझे झुका डाला। समाज मे वे भेदभाव कभी नही देखना चाहते थे वे कहते थे जैन धर्म मानवतावादी धर्म है। उसकी वर्ण व्यवस्था कार्य भेद से है। उससे धर्म भेद नही पैदा होता, ऊच नीच की भावना कल्पित है। धर्म मे ये भावनायें कहा पनप सकती।

यह उनका कथन ही नही था लेकिन इसको उन्होंने करके भी बताया था-जिस समय महाराज जयपुर मे थे खडेलवाल समाज में लोहड साजन बड साजन का झगडा चल रहा था और कुछ लोगों का सकल्प था कि वे दोनो को एक नही होने देंगे। यह प्रश्न महाराज सूर्य सागरजी महाराज के सामने भी आया, आपने इसका गहरा अध्ययन किया और समाज के सामने स्पष्टीकरण करके डके की चोट लोहड साजन भाईयो के यहा आहार लिया। कुछ रूढिवादियो ने इसका घोर विरोध ही नही किया लेकिन महाराज श्री की इसके विरुद्ध आदोलन भी किया लेकिन वे सफल नही हो सके और समाज मे महाराज श्री की इस उदारता पूर्वक कदम से एक नया जीवन और नई क्रान्ति का बीजारोपण हुआ लोहडसाजन भाईयो का स्थितिकरण तो हुआ ही लेकिन समाज ने बेटी-रोटी व्यवहार भी चालू किया-ऐसे उनके जीवन के एक नही अनेको उदाहरण हैं। वे कषायो और सघर्षों को कभी प्रोत्साहन नही देते थे।

उनके आचार मे और विचारो मे एक रूपता थी उनका आहार और विहार बड़ा सरल था, उनके द्वारा समाज को कोई तकलीफ नही होती थी। क्योकि उनके जीवन की समस्त क्रियायें आडबर विहीन थी जिससे श्रावको को परेशानी नही होती थी। वे रूखा सूखा भोजन करते थे उन्होने कभी भी गरिष्ठ भोजन लेने का प्रयत्न नही किया। लेखक को महिनो तक उनकी सेवा मे रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। सूर्यसागर महाराज मे यह भी विशेषता थी कि वे किसी भी तरह के आडबर को पसद नही करते थे जब कहीं उनका पदार्पण हुआ विहार के समय कभी श्रावको को यह नहीं

कहा कि म आज जाऊंगा और प्रवेश के समय न कभी ऐसी घोषणा की कि मैं आज अमुक स्थान पहुंचूंगा, वे एक सच्चे रूप म अतिथि थे।

मुझे याद है एक बार उनका आहार के समय फोटो उतारने का प्रयत्न किया गया, लेकिन उन्होंने इसे पसद नही किया, उनका फोटो सामायिक के समय उनकी अजानकारी मे ही लिए गये। यही बात केशलोच के सम्बन्ध मे थी, उन्होंने केशलोच क्रिया के लिए कभी ऐलान नही किया, वे एकात म बैठकर अन्य आवश्यकीय क्रियाओ की तरह इस क्रिया को भी कर लिया करते थे, उनमे किसी भी प्रकार का ढीलापन नही था। वे सच्चे माने म आत्मार्थी सत थे उनका लक्ष्य आत्म-कल्याण का था। उनका मार्ग ऊंचा था वे कभी जन कोलाहल को पसद नही करते थे, ध्यान के लिए भी वे एकात स्थानो को पसद करते थे।

मैंने लाडनू के अन्दर देखा था कि भयकर वर्षारात्रि म भी श्मसान भूमि पर जा करके ध्यान करते थे, उनकी योग शक्ति विलक्षण थी। आत्म श्रद्धा ऊंची थी। उनका आत्म निरीक्षण मे बड़ा विश्वास था। वे आचार ग्रथ और प्रायश्चित ग्रथो का बराबर अध्ययन करते थे और अपनी त्रुटियो का सुधारने म हमेशा सतक रहा करते थे। वे इस बीसवी शताब्दी के महान सत थे, जिन्होने जीवन के अत तक इस सत जीवन को विकसित किया। सच कहा जाय तो आज ऐसे सत के दशन भी दुलभ है, मैं उनके पावन चरणो मे श्रद्धा पूवक शत शत अभिनन्दन करता हू।

——*——

☐ स्वाध्याय से ज्ञान का प्रसार होता है और इन्द्रियो का व्यापार रुक जाता है—जैसे प्रात काल म सूर्योदय होते ही उल्लू-कुल निष्प्रभ हो जाता है।

—सावयधम्मदोहा

☐ जैसे नौकर राजा की सेवा करता है, उसी प्रकार से गुरुजनो की भक्ति करना उपचार विनय है।

—कार्तिकेया

☐ गुरुजनो के साथ विनय का व्यवहार करो।

—दशवैकालिकसूत्र

श्रमण संस्कृति के चरम पोषक विमल सागरजी महाराज

आचार्य विमलसागर जी महाराजा मानव के वास्तविक अभ्युत्थान के लिये आत्मिक समुन्नति के प्रबल समर्थक थे। आपने जन जन मे जो अमर ज्योति प्रज्ज्वलित की—उससे श्रमण संस्कृति धन्य हुई है।

इतिहास के विद्वानो ने भारतीय सस्कृति म जन सस्कृति को सबसे प्राचीन सबसे स्वतन्त्र और एक अत्यन्त महत्वपूण सस्कृति के रूप मे स्वीकार किया है। यह सस्कृति हजारो वर्षो पूव से आज तक अक्षुण्ण रूप मे सजीव रहकर मानव-जीवन को पवित्र और समुन्नत बनाती रही है। ऐसी महत्वपूण एव अप्रतिम सस्कृति मे यदि कोई महापुरुष जन्म लेता है तो उसकी शिक्षाए उसके आदश मानव के लिए महान् प्रेरक तत्व सिद्ध होते हैं। आचाय श्री विमलसागरजी महाराज का नाम भी इसी परम्परा मे उल्लेखनीय है।

बाल्यावस्था से ही आपको एक सुसस्कृत एव धार्मिक वातावरण मिला। परिणाम-स्वरूप वीतराग धम के प्रति आपके हृदय म गहरी आस्था दृढतर एव दृढतम आस्था के कारण बनते गये। मोह पाश तोडते गये, प्रवृत्ति से निवृत्ति की ओर सदव सतत बढते गये। सम्यक्त्रय की प्राप्ति को ही अमूल्य निधि माना और इसकी प्राप्ति के लिए कटिबद्ध हो साधना के राजमार्ग पर निकल पडे। उनका यह राजमार्ग अहिंसा का राजमार्ग था जिसमे कि पन्थ भेद के छोटे-छोटे गली कूचो को आकर मिलने का स्थान नही था।

आपने जहा भी जिधर भी विहार किया वहा अनुपम शान्तिमय वातावरण निर्मित हुआ और धर्म की अपूव प्रभावना भी दिवगत आचाय श्री के दशनो का सौभाग्य मुझे अनेक बार मिला। प्रथम दशन के समय म उनसे कुछ दूरी पर बैठ गया। अन्य साथियो ने मेरा परिचय दिया वे मुस्कराते हुए बोल भया! दूर क्यो बठे हो। मेर पास आओ। तुम बडे सज्जन व्यक्ति हो। इस समय करीब एक घट तक मेरी उनसे चर्चा हुई। इस बीच म मन पाया कि इनम न विद्वता का अह है न तप एव त्याग का मिथ्या दम्भ, मात्र सरलता है, निस्पृहता है और है मानव मात्र के लिए कल्याण तथा स्वात्मोद्धार की अद्भुत एव अदम्य भावना। स्वाध्याय मे तो वे सतत् निरन्त रहते थे लेकिन साथ ही शका-समाधान के मामले मे भी एकमपट थे। मैने जो भी शकाए उनके सामने रखी उन्होने बडे सरल व अनुपम ढग स समाधान प्रस्तुत किया

कारण उनके दार्शनिक विचार बडे सुलझे हुए थे। इसीलिए तभी से मैं उनसे अतीव प्रभावित रहा हू। मैंने जब भी उनके व्याख्यान या प्रवचन सुने तब ऐसा लगता था कि वे हमे उद्बोधित कर रहे हैं, हृदय की मार्मिक बात हृदय से बडे मार्मिक ढग से कह रहे है। मानव के यथार्थ अभ्युत्थान के लिए वे आत्मिक समुन्नति के प्रबल समर्थक थे। इसी आत्मिक-जागरण का दिव्य सन्देश लेकर भारत भूमि के विस्तृत क्षेत्र मे परिभ्रमण करते रहे और भव्यात्माओ को सन्मार्गोन्मुखी बनाते रहे। जन-जन मे विमल ज्ञान की अमर ज्योति प्रज्वलित करते रहे जीवन यात्रा के अन्त तक। श्रमण सस्कृति धन्य हुई ऐसे महामुनि को पाकर लेकिन खोकर निरालम्ब एव क्षति भी। वीतराग प्रभु हमे ऐसे महान् गुरुदेव के द्वारा ग्रहित पुनीत राज माग पर अग्रसर होने का शुभावसर प्रदान करने की अनुकम्पा करे।

☐ मनुष्य के परिग्रह सम्बन्धी सभी दोष लोभ से होते हैं।

—मूलाराधना

☐ विनय के पाच भेद हैं—दर्शन, ज्ञान, चारित्र, तप और उपचार विनय।

—कार्तिकेया

☐ दर्शन, ज्ञान और चारित्र के विषय मे तथा बारह प्रकार के तप के विषय मे जो विशुद्ध परिणाम होता है, वह विनय है।

—कार्तिकेया

☐ जिससे आठ तरह के कर्म दूर होते है, चारो गतियो का एव ससार का विलय होता है, इसीलिए उसे विनय कहते हैं।

—स्थानागसूत्रटीका

☐ जो अनेक शास्त्र पढता है और बहुत तरह के चारित्र का भी पालन करता है, किन्तु यदि आत्मस्वभाव से विपरीत है तो वह सब बालश्रुत तथा बालचारित्र है।

—मोक्षपाहुड

—*—

परमपूज्य आचार्य धर्मसागरजी महाराज बढते हुए शिथिलाचार को रोके

दिगम्बर जैन सत निष्परिग्रह जीवन के अपने आदश को बनाये रखें-जिससे श्रावक उन्हे सदा की भाँति अपना आदश मानकर श्रद्धानत होता रहे-कहीं शिथिलाचार के प्रभाव मे श्रावक उनके प्रति श्रद्धानत व आदश के स्थान पर और कुछ न समझ बढे और ऐसा न हो कि समय की आधी मे वह कही का भी न रहे।

दिगम्बर जन समाज का भारतीय समाजो मे एक आदश स्थान है जिसका आधार है उनका दिगम्बरत्व और सतो की परम्परा। आज भी दिगम्बर जन साधुओ का जीवन जितना आदर्श है वैसा कही भी किसी भी रूप मे देखन को नही मिलता। इन सतो में परम पूज्य आचाय धमसागरजी महा राज, परमपूज्य विद्यासागरजी महाराज, परमपूज्य एलाचाय विद्यानदजी महाराज और परमपूज्य आचार्य अयसागरजी महाराज आदि का नाम उल्लेखनीय है जिनके ऊपर आज हमें गव है। इन्ही सतो के चरणरज से हम पवित्र है और उनके आशीवाद से हम सिंचित हैं। इन सतो का जीवन इतना उच्च है कि इनके पास हम किसी भी प्रकार आडम्बर देखने को नहीं मिलता, न इनके पास किसी भी प्रकार की सवारिया है और न किसी भी प्रकार की अनेक सग्रहित सामग्रिया हैं। जहा तक मेरा ख्याल है इनके साथ न कोई परिचायिका महिलायें हैं। डोरा तत्र-मत्र और नेत्रादायी इनक पास किसी भी प्रकार का विकल्प नही है।

मुझे कई वार आचार्य धमसागरजी महाराज के प्रत्यक्ष दशना का सौभाग्य मिला है। मैंने अनुभव किया कि वे एक निर्लिप्त सत है। हृदय के विशाल और विचारो म उदार। सघ व्यवस्था मे अवश्य कठोर हैं। वे एक क्षण के लिए भी सत मण्डली म किसी भी प्रकार का शिथिलाचार सहन को तयार नही है। उनका एक ही लक्ष्य है आत्मविकास अध्ययन और चितन।

महाराजश्री को अपनी तरफ खीचने के लिए कुछ भक्तो ने प्रयास किया था आपको अभिनदन ग्रन्थ भेंट करन का। उसकी तयारी भी की गई-विमोचन भी बडे ठाट-बाट से किया गया, जब वे भक्त महाराजश्री के चरणो म अपण करन के लिए पहुचे तव महाराजश्री ने यह कहकर ठुकरा दिया कि मुनियो का अभिनदन नही होता तुम श्रावक लोग इस तरह के आयोजन करके हमको डुवो दोगे। आप लोग जाइये मुझे यह स्वीकार नही। कितने सुन्दर उद्‌गार है इन महान सत के इसी तरह अनी पत्रो से ज्ञात हुआ है कि वे साधु समाज म जरा भी शिथिलाचार देखना नही चाहते। इस

लिए महाराजश्री ने एकल विहारी साधुओ को अपने सघ मे स्थान नही दिया, उन्होने साफ कह दिया बतलाते हैं कि इस युग मे साधु एकल विहारी नही रह सकता।

महाराजश्री की मान्यता है कि एकल विहारी साधु स्वय का सरक्षण नही कर सकता। आज दिगम्बर जैन समाज मे कई ऐसे साधु है जो वर्षो से एकल-विहारी है और उनके साथ एक एक महिला या ब्रह्मचारिणी बाई है, जो उनके खाने पीने की व्यवस्था करती है। इसी तरह कई ऐसे बडे-बडे सघ है जिनके साथ मोटरें मेटाडोर गाडिया आदि हैं जिनमे खाने पीने का सामान लदा रहता है। और है ऐसी ब्रह्मचारिया जो सघ के नाम पर समाज से आहार दान के बहाने हजारो रुपये बटोरती है। जिनका उपयोग स्वय के कुटुम्ब के सरक्षण मे होता है।

समाज की महिलाए धर्म के नाम पर इतनी भोली होती है कि वे यह सोचने के लिए तयार नही है कि निग्रन्थ दिगम्बर सतो के व्यवहार के लिए चन्दा क्यो ? जहा उद्दिष्ट का त्याग होता है वे साधु चदा के रुपयो का आहार कसे लेंगे। आज तो इन ब्रह्मचारिणी बाईयो के नाम पर बकों मे खाते भी चल रहे हैं और हमारा साधु समाज इनके इशारो पर उठते है और बठते है। ये ब्रह्मचारिणी बाईयाँ पर्व के दिनो मे भी कार मे बठकर लश्कर जैसे शहर मे सिनेमा देखने को जाती है और मुनि निंदा के भय से बचारे श्रावक चुप रहते है। श्रवणबलगोला के महामस्तकाभिषेक के समय मैंने स्वय ने प्रत्यक्ष मे देखा है और अनेको श्रावको ने भी देखा होगा कि एक सघ के आचार्य महाराज के सघ मे स्वर्णकार भी था और वह दिन भर बीटिया मत्र तत्र के लिए घडा करता था, और उनको मत्रकर महिलाओ को दिया करते थे। उनके रुपये ऐंठा करते थे। क्या यह उचित है ? यह दृश्य देखकर मेरा हृदय रो उठा। कहा इन साधुओ का प्रभारद हित जीवन और कहा अवस्था ? पू जी के पीछे साधुता का यह उपहास ? और भी कितने ही ऐसे साधु है, त्यागी ब्रह्मचारी हैं, जो इन चमत्कारो के नाम पर हजारो रुपया बटोरते है और समाज मुनि भक्ति के नाम पर हजारो रुपये दे डालती है।

इसी का यह परिणाम है कि कई क्षेत्रो पर ऐसे साधु बठ है जो आहारदान के नाम पर स्वय चदा माग रहे है। समाज की इस लापरवाही का यह परिणाम ह कि साधु डोलियो म घूमकर विहार कर रहे है और क्षुल्लक महाराज धर्म प्रचार के नाम पर कारो और रेलगाडियो म घूम रहे है। जबकि परिग्रह त्याग प्रतिमा के बाद ही ये सब स्थितिया बदल जाती है। श्रावको की इस स्थिति ने साधुओ म और भी शिथिलाचार पदा कर दिया है। कई सत रात्रि म बिजली पखा और मच्छरदानी तक का उपयोग करने लग गये हैं। शीतकाल मे हीटर का उपयोग भी करते हैं। क्या ऐसी स्थिति म ये ही साधु आहिस्त-आहिस्ते वैष्णव साधुओ की पक्ति मे नही आ जायेंगे।

ऐसी स्थिति मे मुझे परमपूज्य आचाय धर्मसागरजी महाराज से ही विनम्र निवेदन करता है कि वे इस बढते हुए शिथिलाचार को रोकें। आप ही हमारी आशा के मार केन्द्र बिंदु हैं जिन पर समस्त दिगम्बर समाज की श्रद्धा है। नही तो यह साधु सस्था एक दिन बदनाम हो जायेगी।

मैं स्वय दिगम्बर सतो का पूर्ण भक्त हूं। जहा भी सत विराजते है मैं भक्ति पूर्वक उनके चरणो मे जाता हू। मुझ दिगम्बर सतो के जीवन पर बडा गर्व है। बडी-बडी सभाओ म दिगम्बर सतो की चर्या उनके जीवन और साधना पर बोलता हू सिर्फ मेरी एक ही भावना है कि दिगम्बर सत निष्परिग्रह जीवन के साथ अपने आदश का सरक्षण करें। जिसम हमारे दिगम्बर साधु सतो का आदर्श अक्षुण्ण बना रहे। □

श्रमण सस्कृति के आदर्श मुनि विद्यानंदजी महाराज

सर्व धर्म समन्वय के महान् सन्त एलाचार्य विद्यानन्द जी महाराजा भारत की महान् भूमि मे ऐसे सन्त है जो जन धम के अनेकात और स्याद्वाद के महान् सिद्धान्त को विश्वधम रूप मे भारत के दक्षिण से उत्तर, पश्चिम से पूर्व तक फलाकर मानव को मानव बनाने मे प्रयत्नशील है। यह धम, साहित्य, प्रवचन, लेख और चिन्तन द्वारा जो मगल कार्य कर रहे हैं-वे आत्म कल्याण करते हुये कई वर्षों तक हमे आशीर्वाद देते रहे-यही हमारी मगल कामना होनी चाहिये।

भारतीय समस्त धर्मों ने सत जीवन को सर्वोपरि आदश जीवन स्वीकार किया है, क्योकि यही एक ऐसा जीवन है जिससे सही रूप से साधक अपने साधना के बल पर पद चिह्नो को बढाता हुआ निद्व द्व बनकर निर्विकल्प जीवन की प्राप्ति करता है और अन्त मे जीवन की पूणता को प्राप्त करके समस्त विकारो से अलग होकर पूण मुक्त अवस्था को प्राप्त होता है। यही श्रमण सस्कृति का आदर्श है।

भारतीय चिंतको ने वदिक सस्कृति को महत्व देते हुए जैन श्रमण सस्कृति को विशेष महत्व दिया है। जिसका आदश आज भी दिगम्बर जन सन्तो मे अबोध रूप से देखा जाता है। जिसका स्पष्ट उदाहरण परम पूज्य मुनी विद्यानन्दजी महाराज है। जिन्होंने अपनी प्रतिभा, बुद्धि की विशालता, हृदय की उदारता, तप और त्याग के बल पर विश्व की दृष्टि मे श्रमण परम्परा के प्रकाश पुज को फला करके आदश रूप से प्रस्फुटित कर दिया है।

भगवान महावीर की परम्परा मे भगवान कुंदकुन्द को लेकर अगणित ऋषियो ने इस वसुधरा को अपने चरणरज से पवित्र किया व उन्होने आत्मकल्याण के लिए अथक प्रयास किया जिनमे परम पूज्य समन्तभद्र आचार्य का नाम विशेष उल्लेखनीय है। समन्तभद्राचार्य एक ऐसे युग मे पदा हुए थे जिस युग म शैव मत का बोलबाला था और अज्ञात के गहरे अधकार म मताध लोग डूबे हुए थे। तब समन्तभद्र ने विश्व के कोने कोने मे जन धर्म का प्रद्योत करके इस श्रमण परम्परा को सम

त्कृत किया। उसी का यह परिणाम है कि भारतवर्ष मे जैन धम गौरव के साथ टिका हुआ है। समन्तभद्र स्वामी के बाद इस परम्परा मे अनेक स तो ने जन्म लिया, उन द्वारा जैन धम और जैन साहित्य की अनुपम सेवायें हुई लेकिन समन्तभद्र के बाद, मैं ऐसा मानता हू कि मुनिश्री विद्यानदजी का अवतरण आज दिगम्बर जैन समाज म समन्तभद्र के ही रूप मे हुआ है। जिन्होंने इस महान साधना के क्षेत्र मे आकर पुन श्रमण सस्कृति को चमत्कृत किया और दिगम्बर जैन धर्म को विश्व धम घोषित करके हृदय की विशालता का परिचय दिया।

उन्होने भगवान महावीर के परिनिर्वाण महोत्सव जैसे अपूर्व आयोजन के माध्यम से बतला दिया कि जैन धम एक उदारता धर्म है जिसके सिद्धात सार्वभौमिक और सर्व प्राणि हितकारी है। धर्म म भेद नही होता है। धम का सबध प्राणीमात्र से है जिससे जीवन का निर्माण होता है और सही मानवता का उदय होता है।

सबसे बडी प्रसन्नता की बात यह है कि मुनि श्री विद्यानदजी के सयम के भीतर मानवता के दर्शन होते हैं और वे ऐसे पहु चे हुए स त है कि उनके विचारो मे जातिगत भेद, पथ-भेद जैसे सकीर्ण विचारो को कोई स्थान नही है। वे चाहते है कि जन धम एक विश्व के प्राणीमात्र का स्थान है। अत जन धम को इस सकीण घेरे से या परिधि से निकल कर विश्व के प्रकाश मे लाकर आलोकित किया जाय और इस धम के श्रेष्ठतम सिद्धांतो का अधिक से अधिक प्रचार किया जाय। आज उसी का परिणाम है कि मुनिश्री के प्रवचन सभाओ मे बिना किसी भेद के हजारो और लाखो की सख्या मे जनता एकत्रित होती है और घण्टो तक उन महान सत के चरणो मे मत्र मुग्ध की तरह बठकर अमृतवाणी को सुनती है। मुनिश्री का एक आदर्श व्यक्तित्व है। उनकी वाणी मे ओज है और मानव कल्याण के लिए उनके हृदय मे तडफन है। वे एक सही तपस्वी और अभीक्षण ज्ञानोपयोगी है। उनका चितन ऊचा है। ज्ञान, ध्यान और तप ही उनका जीवन है। मैंने कई बार देखा है वे कभी भी व्यथ की बातो म अपना समय नही देते। समय के बडे पाबद है, कितना ही बडा आदमी, ज्ञानी उनके पास बठा हो लेकिन जैसे ही उनके हृदय म अध्ययन विकल्प आता है वे यह कह कर उठ जाते है कि अब कल चचा करेंगे और फिर वे एकाकी होकर बठ जाते है एकात चितवन मे।

मुनिश्री विद्यानदजी का जन्म दक्षिण भारत मे हुआ था। माता पिता का प्यार प्राप्त हुआ, सम्पन्न घर मिला, फिर भी वे सब उनको खीच न सके। प्रारम्भ से ही उदावृत्ति की तरह इनका बाल्य जीवन रहा। अवसर मिलते ही उन्होने अपने जीवन का परिवतन कर डाला। कोई नही समझता था कि इस छोटे से बालक का जन्म इस विराट रूप म होगा। जिसके चरण रज से यह भारत वसुधरा पवित्र होगी। विद्यानद जी महाराज ने अपने पावन विहार से दक्षिणाचल से लेकर उत्तर भारत तक विहार करके दिगम्बर धर्म और मुद्रा का जो चमत्कार बताया है वह सदियो तक इतिहास के पन्नो मे अकित रहेगा। जिस हिमाचल प्रदेश मे सकडो वर्षो से दिगम्बर जैन का विहार नही होता था जिसको हमने उपेक्षित कर दिया था उस प्रदेश मे भी इन मुनिराज ने विहार किया और हिमाचल पहाड के विकट मार्गो मे भयकर ठण्ड मे जाकर के भी जो जनत्व को चमकाया, यह वास्तव मे हमारे लिए गौरव की बात है। जस बद्रीनाथ के मदिर म आज तक कोई नग्न प्रवेश नही कर सका वहा मुनिराज के व्यक्तित्व सबके हृदय को हिला डाला और वहा के सतो और पण्डितो न

वहा पर प्रवचन करवाकर अपने आप को धन्य माना। आपने यह भी बतलाया कि श्री बद्रीनाथ की प्रतिमा ऋषभ देव का निर्वाण स्थल है। हिमालय की पवित्र भूमि ने महाराज श्री के हृदय को इस तरह से प्रभावित किया कि महाराज श्री ने कई महिनो तक वहा ही विराजमान रहकर योग साधना की और यह प्रदेश आज तीर्थ के रूप प्रकाश म आया।

महाराज श्री एक सफल प्रचारक ही नही हैं। लेकिन सफल लेखक और साहित्यकार भी है। आज आपने अनेक ग्रन्थो की टीकाये की हैं और कितने ही ग्रन्थो को लिखकर आज के मानव को नया चिंतन दिया। आप द्वारा लिखित कितना ही साहित्य प्रकाश म आ गया है, जो पठनीय और संग्रहणीय है। जैन धर्म और जैन साहित्य के प्रचार म आपका योगदान कम नही है। महावीर परिनिर्वाण महोत्सव जैसे अपूर्व आयोजन म जो अपने प्रेरणाय दी है उसमे भारतीय नितको को यह समझने का अवसर मिला है कि जैनो का अनेकात सिद्धात, स्याद्वाद जैसे महान सिद्धात को अपने जीवन मे उतारकर सर्व धर्म समन्वय की जो भावनाये पैदा की है वह वास्तव म अनुकरणीय है। महाराज श्री सही रूप से अहिंसक और समतवादी सन्त है। जिनके चरणो म बैठकर बडे सतो ने समन्वय का पाठ सीखा है।

महाराज श्री का जिधर भी विहार हो जाता है वह वसुधरा तो पवित्र होती ही है लेकिन वहा का प्राणि-जगत भी उनकी प्रशात मुद्रा को देखकर अपने जीवन को पवित्र मानता है। मालव भूमि पर उनका प्रथम विहार हुआ और उस विहार म लाखो की सख्या म मानव ने आपके दर्शनो का लाभ उठाया। लेकिन उनके नेत्र तृप्त न हो सके।

मुझे उज्जैन का दृश्य आज भी याद है जब नगर म इन सत का प्रवेश हुआ तब नगर म एक अपूर्व उल्लास और ऐसा वातावरण बना कि लाखो की सख्या म जनता उमड पडी। इस उदारमना सत के दर्शनो के लिए। आज भी उज्जैन की जनता के हृदय पटल पर उन महामानव का चित्र अकित है और वे बार बार हमको आगाह करते है कि उन महामानव को एक बार ऐतिहासिक नगर मे लाओ और हमारे जीवन को सफल बनाओ। हम भी उन्हे आश्वासन देते है कि वह महामानव अवश्य पदार्पण करेंगे और आप म हमको कृतार्थ करेंगे।

जैन समाज मे इन महान सत की प्रेरणा से कई ऐतिहासिक कार्यों का शुभारम्भ हुआ है साहित्य प्रकाशन, विद्वानो का सन्मान, कार्यकर्ताओ का सन्मान आदि गणनीय है। ऐसे महान सत का उदय जिस समाज, राष्ट्र और देश मे होता है वह वास्तव म धन्य है।

लेखक भी उन महामानव के चरणो मे श्रद्धा अर्पित करता हुआ अपने आपको धन्य मानता है और कामना करता है कि यह महामानव इस धरा पर अबाध रूप से विहार करते हुए बिना किसी दीवार के मानवता के आधार पर मानवता का सदेश देते हुए राष्ट्र और समाज का कल्याण करते हुए अमरतत्व को प्राप्त हो। □

श्रमण परम्परा में आदर्श मुनि श्री विद्यानन्द महाराज

वर्तमान परिपेक्ष मे श्रमण परम्परा के महान् सन्तो में एलाचाय मुनि श्री विद्यानन्दजी का जो स्थान है-उसे लेखनी द्वारा व्यक्त किया जाना असभव है, आपकी वाणी की माधुर्य, विचारो की महानता, आडम्बर रहित जीवन, महान चिन्तन एवं विचारको को बारम्बार नमन

परम पूज्य विश्व धम के उदघोषक आदश सत मुनि श्री विद्यानन्द जी महाराज के चातुर्मास का सौभाग्य मध्यप्रदेश के सुप्रसिद्ध इन्दौर नगर को प्राप्त है। महाराज श्री के पदापण से इस महान नगरी का क्षण क्षण धममय हो रहा है और नगर के जन मानस का केन्द्र विद्यानन्दजी महाराज हो रहे है। इन्दौर नगर एक धार्मिक स्थल है। इस नगर ने जन समाज के लिए अनेक विभूतियो को जन्म दिया है जिनकी सेवा से जन समाज हमेशा उपकृत रहेगा। मुनिश्री का इस महानगर म पहले भी पदापण हुआ है और आज भी, इस नगर को यह सौभाग्य मिला है। मुनिश्री विद्यानन्दजी महाराज का वतमान साधु सस्था मे एक उच्चतम स्थान है मै तो इनको इस युग का आदश सत मानता हू। जिन्होने दक्षिण भारत से विहार कर के उत्तर भारत तक जन धर्म और जन साहित्य का गौरव बढाया है और जन साधारण के हृदय मे जन धम और साहित्य की तरफ श्रद्धा के अकुर पदा किये है।

मुनिश्री के आतिथ्य म रहने का मुझे अभी जयपुर नगर मे करीब $1\frac{1}{2}$ महिने का सौभाग्य मिला है। मनें बहुत ही नजदीक से महाराज श्री के जीवन और विचारो का अध्ययन किया, उनसे मने निणय लिया कि वतमान युग मे श्रमण परम्परा मे ये एक आदश सन्त है। जिनके विचारा म उदारता, हृदय मे विशालता है। न व्यय के आडम्बर है और न किसी भी प्रकार की व्यथ की चर्चायें। न अभिमान की भावनायें और न किसी प्रकार का छल और प्रपच। उनके हृदय मे दिगम्बरत्व के प्रति अपूव श्रद्धा और अहर्निश एक ही भावना देखी भारतीय जन मानस यह समझें कि जन धम का तत्वाव धान और उसके सिद्धान्त कितन सावभोमिक नाव प्राणि हितकारी है। इसके लिए उनके हृदय म कितनी तडफन है यह मने प्रत्यक्ष मे अनुभव किया महाराज श्री एक महान चितक और विचारक सन्त है।

अभीक्षण ज्ञानोपयोगी हैं। उनका अध्ययन आध्यात्मिक और वैज्ञानिक है। वे वस्तु के स्वरूप को समझने के लिए उसके तह तक पहुचते हैं और उसकी वास्तविकता अंकरन करते हैं।

उनका अध्ययन भी तुलनात्मक है वे अपने प्रवचनो म स्पष्टत सवधर्मो के सिद्धान्तो के प्रति सम्भावना रखते हुए अपने विचारो को रखते है। जिससे मानव यह समझ लेता है कि सही मार्ग क्या है। मने मुनिश्री के पचासो भाषण सुन है। लेकिन आपके भाषणो मे कभी भी पथ मोह और समाज मोह का आग्रह नही देखा, आप एक मानवतावादी विचारधारा के सन्त हैं जिसमे प्राणी मात्र के विकास की भावना है। आपके अधिकाश प्रवचन सव धम समन्वय के होते हैं।

अनेकात और स्याद्वाद ही उन प्रवचनो का आधार होता है। इनके बाहर न कभी बोलते हैं और न एक कदम आगे बढते हैं। मुनिश्री जब अनेकात और स्यादवाद जस गहन सिद्धात पर विवचन करते हैं तो मानव का मस्तक इन महान सत के चरणो मे अपने आप झुक जाता है। जिस विवेचन म राष्ट्रहित और प्राणि हित के अलावा अन्य कोई ध्वनि नही।

महाराज श्री को भगवान महावीर की अहिंसा म और उनके अपरिग्रह सिद्धात पर बड़ा गव है। जब वे अहिंसा की गहराई तक उतरते हैं तब बडे-बडे विद्वान आपकी प्रतिभा पर आश्चय करते है। वास्तव मे आपकी खोज तलस्पर्शी है। पढी पढाई नही।

मुनिश्री की वाणी मे अपूर्व मधुरता है स्नेह है प्राणि हित की भावनायें है। जिनम प्रभावित हर पथ का प्राणि उनके वचनामृत का पान करने के लिए उत्सुक रहता है। मुनिश्री की सभाओ का दृश्य समोसरण जसा बन जाता है। जहा हजारो की सख्या म स्त्री और पुरुष मत्र मुग्ध की तरह उनके वचनामृत का पान करके अपने जीवन को धन्य मानत है। महाराज श्री का प्रवचन तलस्पर्शी होता है। और वह इतना प्रभावक होता ह कि आज का युवक उनक प्रवचन स्थल पर भारे की तरह मडराता ह और चाहता ह कि इन महान सत का सानिध्य बना रह। महाराज श्री एक निर्भीक सन है।

उनके जीवन म कई एसी घटनायें आई है जहा नग्न साधु का विचरण सम्भव नही था। लेकिन महाराज श्री ने एकाकी वहा पर विहार किया। जहा आज तक कोई सत नही गया वहा आपने अपनी कदम बढाई। बद्रीनाथ के मन्दिर म आपके प्रवचन के दिगम्बरत्व का चमत्कृत करके मानव के लिए नया इतिहास कायम किया इस युग म मुनिश्री ही की शक्ति है जिसन हर क्षेत्र म जनत्व क अकुर पदा किय। अन्त म पूज्य ऐलाचाय मुनिश्री के चरणा म मेरा सत्-सद् नमन् वदन नमोस्तु। □

आर्ष परम्परा के रुप में आदर्श जीवन
आचार्य विद्यासागरजी

ज्ञान, ध्यान और तप की साक्षात् दिगम्बर जैन परम्परा की किसी मुनिराज के दर्शन करने हो तो–वर्तमान मे आचार्य श्री 108 विद्यासागरजी महाराज को देखकर किये जा सकते है। आप सही वीतराग धर्म के पोषक और पूर्ण अहिंसक है जिनमे न कोई दिखावा है ना ही कोई आडम्बर।

दिगम्बर जैन समाज मे आज भी सैंकडो दिगम्बर मुद्राधारी दिगम्बर सत मौजूद है जिनसे श्रमण सस्कृति आज भी जीवित है। इस सस्कृति की परम्परा मे इस वक्त अनेक सत है फिर भी ये परम पूज्य 108 आचार्य विद्यासागरजी महाराज का नाम उल्लेखनीय मानता हू। दि० जन मुनियो मे वे एक बाल तपस्वी है परम पूज्य आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज के शिष्य होने का उनको सौभाग्य प्राप्त हुआ है। 108 आचार्य ज्ञानसागरजी महाराज समग्र जीवन साधनारत रहा है। योगी जीवन मे आने के बाद उनका जीवन एक आदर्श सत के रुप मे रहा है। वे गृहस्थ जीवन से ही महाविद्वान थे। बाल ब्रह्मचारी थे। समय के परिवर्तन ने उनमे बहुत बडा परिवर्तन ला दिया और वे इस युग मे एक आदर्श सत के रूप म जन धर्म के पथ प्रदर्शक स्तम्भ बने।

मारवाड प्रात मे ही उनका विहार रहा, उनके द्वारा अपार धर्म प्रभावना हुई समाज मे व्याप्त विषम अधकार और शिथिलाचार उनके द्वारा नष्ट हुआ और समझने को मिला कि सही मुनी धर्म क्या ? उन्ही महान् सत के शिष्य है परमपूज्य आचार्य विद्यासागरजी महाराज जिन्होने अपनी छोटी सी उम्र मे साधु सगत मे एक नया चमत्कार पदा कर दिया है। उनका जीवन आदर्शमय है, आर्ष परम्परा के रूप मे उनका चारित्रिक जीवन है।

जिस जीवन को हम सही आध्यात्मिक जीवन कह सकते हैं। उनका जीवन परिष्कृत और आडम्बर विहीन है। वे बडे अध्ययनशील है। सस्कृत भाषा के प्रकाण्ड विद्वान है। उनकी वाणी मे सरस्वती का निवास हैं। उनका हर शब्द सीमित है, प्रिय है, और वाणी हितकारी है। व निर्मोही सत हैं। सही रूप मे उनकी आत्म दृष्टि है। शरीर दृष्टि नही। वे सचेता ऋषि हैं। उग्रचितक और महा मनीषी हैं। ज्ञान, ध्यान और तप ही उनका जीवन है। एकात ही उनको प्रिय है। न उनमे दिखावा है

और न उनमे कोई प्रतिष्ठा की भूख। उनकी साधना बडी ऊची है। उनके साधनाकाल म अनेक विचित्र घटनाए आई है लेकिन उन घटनाओ मे वे कभी भी प्रभावित नही हुए।

वे दिल के अहिंसक सर्व प्राणी हितकर सत है इसका उदाहरण एक सप का है। जो कुण्डल-पुर चातुमास समय घण्टा तक मत्रमुग्ध की तरह उनके चरणो म बठा रहा और वे तल्लीन रहे अपनी साधना म। ऐसी ही एक घटना मेरे सामने की है। महाराज श्री अपने पूज्यगुरुवर्य के साथ राजस्थान मे विहार करत हुए एक छोटे से ग्राम मे पहुचे। जिसका नाम कुली था-मेरा भी वहा ससुराल था। उनका नाम सुनकर मे भी गया, भाग्य से मेरी ससुराल मे ही आहार के लिये उनका पदार्पण हो गया, मैं उनको देखकर एक तरफ खडा हो गया, मैने उनको नमस्कार नही किया। मेरे साले श्री हनुमानवक्सजी ने कहा नवधा भाई। महाराजश्री रसोई घरमे पधार गय और अ जुली कर ली। दानदाता ने गरम पानी को ठडा नही किया और भयकर गरम पानी उस अजली में उडल दिया। यह भयकर उपसर्ग था। सो उस दिन सत के चेहरे पर जरा भी विषाद की रेखा नही आई और न उस दाता पर किसी प्रकार की कही भी किन्ही शब्दो मे नाराजगी जाहिर की।

वे बाहर आकर विराज गय मैं उनकी चेहरे की भावभगीमा का अध्ययन खडा खडा कर रहा था-इस रूप ने मेरे हृदय को बदल डाला। मेरा सौभाग्य उन पर अपार श्रद्धा हो गई और मैंने सोचा कि यह एक है जो यहा उपस्थित हुआ। मैं श्रद्धा के साथ उन सत के चरणो मे लेट गया। मैंने वह हाथ पकडा बडी मुश्किल से अनुनय करने पर महाराज श्री ने मेरे हाथ मे हाथ दिया, सारा हाथ फूल गया था। मैने कहा-महाराज बडी भूल हुई। महाराज श्री ने कहा- यह तो अशुभ का उदय है। जीवन म आता है। सत हर्ष और विषाद नही करते।

वहा से जाने के बाद भी महाराज श्री ने कही भी चर्चा नही की। दोपहर मे जब मेरा प्रवचन रखा तब मैंने कहा आज मैंने मेरे जीवन म एक सत का दर्शन किया जिनके दर्शनो से मैं धन्य हो गया-ऐसे है ये महान सत आचार्य विद्यासागर जी महाराज जिनके हृदय म इतनी विशालता और सहनशीलता के दर्शन हुए। महाराज ज्ञानसागर जी महाराज के स्वर्गवास बाद आपका विहार उत्तर भारत म काफी हुआ और उस विहार से लोगो को अपूर्व धार्मिक लाभ हुआ आपकी वक्तत्व शक्ति और तत्व ज्ञान से प्रभावित होकर हजारो भक्त आपकी सभाओ म उपस्थित होते हैं और उनको आत्म बोध होता है।

आप इस युग के महान सत है। सही वीतराग धर्म के पोषक हैं, पूर्ण अहिंसक है। आप निर्द्वन्द विचरण करने वाले सत है। आपके साथ किसी भी प्रकार का दिखावा या कोई आडम्बर नही है। आपके सघ म जो साधु है वे भी पूर्ण तपस्वी है। समाज को आपसे बहुत बडी आशायें हैं। साथ ही हर प्रात के भक्त जीव यह चाहते है कि आपका पदार्पण हमारी तरफ हो। ऐसे महान सत के चरणो म नमन करता हुआ मैं अपने आपके जीवन को सार्थक मानता हू।

महाविद्वान प. टोडरमलजी

मोक्षमार्ग ग्रंथ के रचियता श्रद्धेय प टोडर मलजी जैन साहित्य धर्म, दर्शन के अद्वितीय विद्वान हुये हैं उन्हे निश्चयनय और व्यवहार-नय को जिस सुन्दर ढग से प्रकट किया है उसके लिये शब्दो में कहना बहुत कठिन है जैसे इन दोनो के बिना जीवन भी अधूरा ही रह जाता है-जो लोग वर्तमान मे पंडितजी के इन विचारो का प्रचार कर रहे हैं-वे भी वास्तव में सच्चे जिन भक्त कहे जा सकते हैं

19 वी शताब्दी क महाविद्वान आचार्य-कल्प प टोडरमलजी का यह द्विशत।ब्दि एव टोडरमल स्मारक का निर्माण महोत्सव वास्तव म जयपुर जन समाज के इतिहास म अमर रहेगा। जयपुर वास्तव म जन इतिहास म एक गौरवशालीनगर रहा है। जिससे समय-समय पर विद्वानो का जन्म दिया और उनके द्वारा जिनवाणी तथा हिन्दी साहित्य की अपूर्व सेवायें हुई। उन विद्वानो म श्रद्धेय प टोडरमलजी का नाम गौरव के साथ लिया जा सकता है। क्योकि पडित टोडरमलजी विद्वान तो थे ही लेकिन व एक एस विद्वान थे जिन्होने अपन जीवन का हर क्षण साहित्य सजन और न उसक पठन पाठन म दिया। व एक अध्ययनशील विद्वान थे जिनकी प्रतिभा विद्वता थे जिनकी प्रतिभा विद्वता त्याग और सच्चारित की छाप सारे धार्मिक जगत पर पडी हुई थी। वे उम्र के छाटे थे फिर भी ज्ञान वृद्ध थ। उनकी शास्त्र सभाओ म सैकडो की सख्या मे श्रोता आते थे और अगणित पत्र बाहर से बडे-बडे मनीषियो के आत थे जो जन दशन के सबध म अपनी शकाओ का निराकरण चाहत थ। श्रद्धेय पडित जी की जीवनी आज हम पूण रुप से उपलब्ध नही हो रही है। उनकी जीवनी का अगर काई नमूना है तो उन द्वारा रचित मोक्षमार्ग प्रकाशक नाम का ग्रन्थ है। जो हिन्दी साहित्य का ढूढारी भाषाम अनुपम ग्रन्थ रत्न है।

इस ग्रन्थ के अध्ययन से पता चलता है कि उनका जीवन कसा था। इस ग्रन्थ का प्रचार उनक जीवन काल म कितना हुआ यह तो नही कहा जा सकता, लकिन इस ग्रन्थ की प्राचीन प्रतिया कई ग्रन्थो भडारो म उपलब्ध है इससे पता चलता है कि जन जगत मे उनके प्रति काफी श्रद्धा थी व महान आदर की दृष्टि से देखे जात थे। इस महान आदर का पठन पाठन बहुत जल्दी जन समाज म प्रचलित हो गया और उसने काफी स्थान प्राप्त कर लिया।

इस ग्रन्थ की रचना अपूर्व है। इसमें प्रारभ से लेकर अत तक मोक्षमार्ग मे प्रयोजनभूत तत्व क्या है–यह समझाने का प्रयत्न किया है। साथ मे निश्चयनय और व्यवहारनय का भी अपूर्व ढग से वर्णन किया है। यदि इस कथन को पढा जाय तो यह समझ मे आता है कि इन दोनो के बिना जैन तत्व का ज्ञान अधुरा है। मोक्ष मार्ग मे प्रवेश करने वाले मुमुक्षु के लिए निश्चय व्यवहार एक नि सरणी है–इनको समझन मे यदि कोई भूल करता है तो वह एकाती बनकर व्यवहाराभासी बन जाता है। मल्लजी ने इस पर काफी प्रकाश डाला है। इसी तरह बधआश्रव सवर और निजरा तत्व भी समझाया गया ह। श्रद्धेय पडित जी इस ग्रन्थ रत्न को पूर्ण नही कर सकें और वे अल्प अवस्था म ही मृत्यु के शिकार बन गये।

महा पुरुष जहा उदार और सहृदयी होते हैं वहा कुछ ऐसे पुरुष होते है जो उनकी विद्वत्ता, त्याग और प्रतिभा से ईर्ष्या करते है। ऐसे कई उदाहरण भारतीय इतिहास म धार्मिक जगत मे मिलते हैं। पडित जी को भी इसका शिकार होना पडा। पडित जी विचारो मे उदार और क्रातिकारी साधु पुरुष थे। वे चाहते थे श्रम–मय जीवन।

आज भी इस महान ग्रन्थ का घर घर मे प्रचार है और मुमुक्षु लोग आदर से इसका पठन पाठन करके अपना कल्याण कर रहे हैं।

आध्यात्मिक जगत के महान सत कानजी स्वामी का वह ग्रन्थ हृदय का हार है। उनके हृदय म इस ग्रन्थ के प्रति अपार श्रद्धा है। उन्होने लाखो की सख्या मे इसका प्रचार किया है और करवा रहे है।

मैं इस अवसर पर वीरवाणी के सम्पादक मण्डल व विशेष कर श्रद्धेय पूज्य पडित चैनसुख दासजी साहब के प्रति आभार प्रकट किये बिना नही रहूगा जिनकी महान प्रेरणा से ही यह समारोह और वीरवाणी का विशेषाक प्रकाशित हो रहा है। श्रद्धेय प चनसुखदासजी ने प टोडरमलजी के के सबध मे काफी साहित्य प्रकाशित किया है। और वे मानते है कि यदि टोडरमलजी नही होते तो जन धम मे कई अध श्रद्धायें घर कर जाती है और धर्म का रूप ही विकृत हो जाता है। मल्लजी कट्टर सुधारक थे। –उनके विचारा मे क्राति थी उनको शिथिलाचार पसद नही था वे सिफ यह चाहते थे कि जन धर्म निमल बना रहे, और मलिनता से दूर रहे। मल्लजी के समय मे शिथिलाचार आ गया था, साधुओ म भी उसका असर हो गया था ऐसा उनके साहित्य से प्रतिभासित होता है। उनका पुत्र भी अपने पिता के सदश ही क्रातिकारी था जिससे गुमानपथ चलाया और इस पथ की भी अपनी कुछ विशेषताए ह।

आज भी साधु और कुछ श्रावक इस पथ को खत्म करने के लिए आगे बढ रहे है। वे चाहते है कि समाज म शिथिलाचार बढे। इसलिए कुछ वर्षो पहले एक विद्वान ने टोडरमलजी व मोक्षमार्ग प्रकाशक ग्रन्थ के सबध में अपने अविवेक पूर्ण विचार प्रकट किये थे और समाज ने विरोध के रूप मे उनसे वे शब्द वापस लेने को कहा था

इस अवसर पर श्रद्धेय प जी के चरणो में विनम्र श्रद्धाजली अर्पण करता हू और चाहता है कि श्रद्धेय पडितजी की य कृतिया अमर बनी रहे और विश्व के लिए मोक्षमार्ग प्रशस्त करती रहे। ☐

स्वाभिमानी विद्वान
पडित चैनसुखदासजी

स्वनाम धन्य प चैनसुखदासजी चहु मुखी प्रतिभा के धनी थे-वे विद्वान, लेखक, वक्ता, साहित्यसेवी, इतिहास प्रेमी, अनाथो और विधवाओ के दास, क्रांतिकारी विचारधारा के पोषक, शुद्धाचार के प्रबल समर्थक, आदर्श अध्यापक, निस्वार्थी मूक सेवक थे-वह स्वय एक मानवोचित सस्था थे। उनकी स्मृति मे जो कुछ नहीं हुआ है-उसको करके हमे उनके प्रति श्रद्धाजली अर्पित करनी चाहिये।

भारतीय दर्शन शास्त्र के महाविद्वान सदाचार की प्रति मूर्ति अनुपम साहित्य सेवी मा सरस्वती के निरतर आराधक महान क्रातिकारी विद्वान प चनसुखदासजी के निधन से समस्त जन समाज का हृदय हिला डाला। उनके मत्यु के समाचारो से जयपुर नगर मे कोहराम सा मच गया ज्योही मृत्यु के समाचारो से लोगो के कानो मे अर्द्ध रात्रि के बाद पहुचे व भयकर ठड मे भी हजारो की सख्या मे पडित जी के घर की तरफ दौड पडे। किसी को भी यह नही मालूम था कि 26 जनवरी का प्रात काल जयपुर वालो के लिए दुर्भाग्य पूर्ण होगा 25 जनवरी के रात्रि के 8 बजे तक पडित जी स्वस्थ थे। उनको स्वय को यह आभास नही था कि मैं चल पडु गा। उनका छोटा भाई श्री कलाशचन्द्र जन न्यायतीर्थ 25 के प्रात उनस अनुमति लेकर वायुयान द्वारा जोधपुर गये थे और वे उसी शाम को लौटने के लिए कह गये थे। रात्रि को हठात् घबडाहट हुई और रात्रि को 1 5 बजे नमस्कार मत्र का स्वय उच्चारण करत हुये स्वगधाम पधार गये।

प्रात आपकी अर्थी प्रागण मे रखी गई। हजारो माला म श्र द्धा के रूप म जयपुर क नागरिको द्वारा उनके चरणो मे अर्पित की गई। और इसके बाद खादी क तिरगे म लपेट कर आपका शव खुले रूप मे कार पर रखा गया। जयपुर के जना जन हजारा लोगो न आपके शव यात्रा जुलूस म भाग लिया छतो पर से अश्रु पूर्ण नेत्रो से महिलाओ आर बच्चो ने पुष्प वर्षा करक महान आत्मा क प्रति श्र द्धा प्रकट की।

जयपुर मे यह पहला शव यात्रा का जुलूस था जिसमे हर समाज और कौम के व्यक्ति ने उपस्थित होकर अपने आपको धन्य माना हर व्यक्ति ने इसको महान क्षति मानी। करीब जयपुर की 40 संस्थाओ ने एक विराट शोकसभा मे आपके प्रति श्रद्धाजली अर्पित की। इस शोकसभा का नेतृत्व वनस्थली जैसे संस्था के संस्थापक महान् तपस्वी हीरालालजी शास्त्री ने किया था। पण्डितजी के प्रति श्रद्धाजली अर्पित करने वालो मे राज्य के मन्त्री विधान सभा के अध्यक्ष, जनसघ, कांग्रेस आदि सार्वजनिक और राजनैतिक पार्टियो के नेतागण थे। जैन समाज के माननीय सर सेठ भागचन्दजी साहब सोनी भी तुरन्त पहुच गये थे।

इससे मालूम होता है कि श्रद्धेय पण्डितजी का व्यक्तित्व सर्वतोमुखी था। उन पर हर एक व्यक्ति की श्रद्धा थी। इसका कारण एक ही था कि श्रद्धेय पडितजी एक निःस्वार्थ मूक सेवक, सफल वक्ता विद्वान गरीब छात्रो और विधवाओ के दास थे। उनमे गरीबो के प्रति अपार सहानुभूति थी। वे बहुत बड़े विद्वान थे लेखक थे सदाचार और निरभिमानता के पुतले थे। वे निस्पृह थे। वे अपनी प्रशसा और प्रतिष्ठा से दूर रहते थे। कभी भी सभा मे अपना नेतृत्व नही चाहा।

राष्ट्रपति द्वारा सम्मान प्राप्त करने के बाद आपका सार्वजनिक अभिनन्दन करने के लिए कई बार प्रयास किया गया लेकिन आपने अपनी स्वीकृति प्रदान नही की। मालवा प्रान्तिय सभा ने अपनी प्रबन्धकारिणी कमेटी मे तय किया कि सभा के वार्षिक अधिवेशन पर सिद्धवर कूट क्षेत्र पर आपका मालवा प्रान्त मे सम्मान दिया जाय—इसके लिये बहुत लिखा पढी की गई। जब मैने अति आग्रह किया तो यही जवाब लिखा ... नश्वर जितना समय ... हो उतना मुझे कुछ काम करने मे लगाने दो। मुझे ये व्यर्थ के सम्मान और प्रदर्शन पसद नही। कितने ऊंचे उद्गार थे उस महा मानव के।

ज्ञान

☐ मनुष्य का सार ज्ञान है।

☐ जो जानता है वह ज्ञान है।

☐ ज्ञान प्रकाश को नष्ट नही कर सकता।

☐ ज्ञान की उपासना से मुक्ति होता है।

☐ ज्ञान जीव का स्वरूप है।

☐ इन्द्रियो से उत्पन्न होने वाला ज्ञान मतिज्ञान है।

☐ जीव के एक समय मे एक ही ज्ञान का उपयोग होता है।

☐ जो ज्ञान द्रव्य को पर्याय सहित तथा समस्त लोक और अलोक को प्रकाशित करता है, वह सब प्रत्यक्ष केवल ज्ञान है।

☐ जो अनेक धर्मो से युक्त अपने को तथा अनेक धर्मो से सहित योग्य सम्बन्ध वाले पर पदार्थो को जानता है उसे निश्चय (परमार्थ) से ज्ञान कहते हैं।

☐ इन्द्रियो के व्यापार और शरीर की चेष्टाओ से जो जीव को जानता है, वह अनुमान ज्ञान है। यह भी नय है। इसके अनेक भेद हैं।

☐ ज्ञान से सम्पन्न जीव द्वारा गति रूप संसार-अटवी मे विनाश को प्राप्त नहीं होता।

ज्ञान के प्रकाश मे जिन्होंने परम तत्त्व को देख लिया है, वे ही ज्ञान लोचन या [illegible] कहलाते हैं।

जैन धर्म और दर्शन

तीर्थंकर जीवन की विशेषतायें

तीर्थङ्कर का प्रादुर्भाव जब धरातल पर होता है। वह मगलकारी क्षण होते हैं। उनके आगमन से भूतल पर ही नहीं नरक तक मे भी हर्ष हो जाता है। क्योंकि उनका जीवन स्वय हित के स्थान पर परहित हेतुहोता है। उनके उपदेश उस युग मे भी जितने जरुरी थे। आज भी जरुरी है वह आत्मसात योग्य है।

भारतीय इतिहास मे भगवान महाप्रभु व सुपार्श्वनाथ का उल्लेख नही आता है। अत आज ये ऐतिहासिक महापुरुष नही माने जाते है। लेकिन फिर भी विश्व के द्वारा अभिमानित जन साहित्य बड़े गौरव के साथ इन महापुरुषो का नाम ही नही मिलता लेकिन इनके महान जीवन और इनके आचार विचार तथा उदात्त सिद्धान्तो के सबध मे भी कई रुची पूर्ण घटनाओ के साथ उल्लेख मिलता है। अत इनका होना सभव है इनका काल पौराणिक काल माना जाता है। जन मान्यता नुसार इन तीथकरा का जन्म इस भूतल पर हजारो लाखो वर्ष पूर्व हुआ है, और इनके द्वारा अधिक लोक कल्याण के काय किये गये है जिनमे प्रभावित व्यक्ति आज भी एक समाज के रुप म उनकी अर्चना और आराधना किया करता है।

तीथकरा का जन्म आत्महित की अपेक्षा परहित के लिए होता है और वे सब कुछ छोडकर अपना समस्त जीवन लोक कल्याण के लिए अपरण कर देते है जिसमे उनका जरा भी स्वार्थ निहित नही है। उनके पूर्व जीवन की वृत्तिया भी त्याग मय होती हैं और जब उनके जीवन की अ तिम घडिया आती है तब वे किसी भी प्रकार की इहलौकिक व पारलौकिक अपक्षा नही रखते है। उनकी एक ही भावना थी कि यदि फिर मुझे मानव जीवन प्राप्त हो तो इसमे भी सेवा करने का अवसर मिले। यह भावना उच्च भावना कहलाती है और इसी के बल पर तीथकर जैसा महान पद प्राप्त करके मानव जीवन मे जन्म लेते है। इस भावना का अवसर उस आत्मा तक ही नहीं रहता लेकिन उसके कण तीनो लोक मे व्याप्त होते है और उस आत्मा के जन्म लेन पर विश्व के समस्त प्राणी खुशिया मनाते ह यहां तक कि स्वग लोक के प्राणी उस खुशी को प्रकट करन के लिए मत्यक लोक मे आते है और उसी वक्त उस नवजात शिशु को हाथ मे उठाकर ऐसे उच्च स्थान पर ले जाते है जहा कि शिशुओ को स्नान करा के उनका सस्कार करत है और स्वग का इन्द्र हजारा नत्र बनाकर

उनके रूप को देखकर इतना प्रसन्न होता है कि उसके शरीर का अग अग अपने आप उछलने लगता है जिसको ताण्डव नृत्य कहा गया है। इसी तरह उस महामानव की उत्पत्ति से नरक के नारकियो को भी इतना हर्ष होता है कि वे एक समय के लिए समस्त दुखो को भूलकर सुख की श्वास लेते है और सोचते है विचारते है कि आया है कि एक महामानव जो कि विश्व हित के लिए नव निर्माण, नव चेतना व नव सन्देश देगा और उस सन्देश से विश्व मे फिर लोक कल्याणकारी भावनायें फैलेंगी और उन भावनाओ मे यह सकटग्रस्त प्राणी फिर अपने माग का निर्माण करके सुखी बन सकेगा।

ऐसी ही अपेक्षा प्राणिया के भगवान महाप्रभु व सुपार्श्वनाथ के लिए भी इन दोनो महात्माओ का जन्म दो लोकमान्य प्रतिष्ठित राज घरानो में हुआ दोनो ही के जन्म पर खुशिया मनाई गई। ये महामानव शिशु से युवा बने। युवा बनने के बाद इनमे एक जाग्रति पैदा हुई जिसको विवेक कहते है। ऐसे तो तीर्थकर प्रारभ से ही महाज्ञानी होते है। लेकिन फिर भी जाग्रति उनके हृदय म एक प्रेरणा पैदा करती है और प्रेरणा पव सकल्पित सस्कार की तरफ खीचती है। इस प्रेरणा क पदा होते ही ये महामानव न राज्य के प्रभाव मे प्रभावित होते है। और न भोगों के प्रभाव से, सजग हो कर सब कुछ छोडकर वे दोनो ही प्रभु वनने निजन प्रदेश मे चले जाते है। और वहा एकात प्रदेश म बठकर आत्महित व परहित क माग को टटोलते है। यह उनकी महान साधना होती है। जीरण आकाक्षाए इच्छाए समाप्त होती जाती है और उनकी जगह सयम, त्याग और तप की शक्ति से आत्मबल बढाया जाता है और आत्मबल बढने से आत्मज्ञान की प्राप्ति होती है। इस ज्ञान के प्राप्त होते ही ये महामानव एकात स्थनो से निकल कर सभी स्थलो पर आ जाते है।

इनकी सभाओ मे सख्यात असख्यात प्राणी विना भेद भाव के एकत्रित होते ह। यहा कोई बुरी भावना रहती थी। इन आत्माओ का इतना प्रभाव होता था कि इनकी सभाओ म बुरी भावना बुरे विचार वाला व्यक्ति आता ही नही है क्योकि इनके जीवन मे त्याग तपस्या के साथ साथ अहिसा और अपरिग्रह की प्रतिष्ठा रहती ह। जहा वर विरोधी प्राणी आ ही नही सकता। साहित्य मे तो यहा तक उल्लेख है कि जहां भी उनकी सभायें भरती थी वहां योजनो तक वैर विरोध वाले प्राणी नही रहत थे दुर्भिक्ष नहीं पडता था, हमेशा सुकाल रहता समय पर वृष्टि होती रहती थी, दरिद्री, रोगी सव सुखी हुआ करते थे। ये सब तीर्थकर जीवन और उसमे प्रतिष्ठित होने वाली अहिंसा का ही चमत्कार था।

महात्माओ के सिद्धात हमेशा एक होते है जहा स्वार्थ होता है वहा माग भी बदलता है और सिद्धांत भी वदलते है। और एक विशेषता हजारो लाखो वर्षो तक एक ही रूप मे चला करती है अत इन दोनो महात्माओं का एक ही लक्ष्य था। जिसम जीव कल्याण की भावना काम कर रही थी। इन दोनो ही महात्माओ ने विश्व को जो सदेश दिये उनम मे दो ही सदेश मुख्य रूप से एक अहिसा का और दूसरा अपरिग्रह का। इसका अथ यह माना यदि तुम सुखी होना चाहते हो तो सब जीव समभाव क लिय इन दोनो सिद्धांतो पर अमल करो। ये दो ही सिद्धांत एस है जिनक

अमल मे आने से जीओ और जीने दो की भावना विश्व मे फैलेगी। इस भावना से प्रभावित प्राणी न अत्याचार अनाचार करेगा, और न इस का प्रचार व प्रसार ही होने देगा और विश्व मे सवजीव समभाव सवजीव मातृभव की लहर फैल जायगी।

इन सदेशो को दोना ही महात्माओ ने विश्व के कोने कोने तक फैलाने का प्रयत्न किया और वे इसमे पूर्ण सफल हुए। हजारो लाखो अहिंसक और अपरिग्रही साधु उनके शिष्य बने व अहिंसा के प्रभाव से प्रभावित पशु पक्षी भी इनके चरणो मे बठकर अहिंसा का पाठ पढते गये।

अत मे ये दोनो तीथकर महाप्रभु सम्मेद शिखर जसे तीर्थ की शिखरो पर बैठ कर समस्त विचारकरणो को समेट कर ऐसी समाधि मे लीन हो गये जिसने इनको अपने आप मे मिला दिया और हमेशा के लिये इस विश्व से अपना सबध तोड कर एक अलौकिक स्थान मे जा विराजे जिनकी पावन पद धूलि से आज तीथ बन गया जो हजारो वर्षों तक उनके पवित्र सदेश को स्मरण करता रहेगा।

केवली भगवान आत्मरूप को देखते हैं, लोक-परलोक को नही।

—नियमसार

❀

इन्द्रीयो के व्यापार और शरीर की चेष्टाओ से जो जीव को जानता है, वह अनुमान ज्ञान है। यह भी नय है। इसके अनेक भेद है।

—कार्तिकेय०

❀

विश्व मे विरले मनुष्य ही तत्व को सुनते है। सुननेवालो मे से भी विरले मनुष्य तत्व को तत्व रूप मे ठीक से जानते है। जानने वालो मे भी विरले मनुष्य तत्व को धारण करते हैं।

—कार्तिकेय०

जैन सन्त जीवन

सच्चा सन्त आत्म विकास के लिये सन्त होते है। लोक-कल्याण मे वे अपना अमूल्य समय देते है। सन्त को किसी धर्म, जाति मे नही बाधा जा सकता।

भारत मे तीन विचार धाराए प्रमुख रूप से साहित्यक क्षेत्र मे स्वीकार की जाती है। वैदिक, बौद्ध और जैन। इन तीनो के पोषण मे अपार साहित्य का सर्जन हुआ है, जिनका एक मात्र उद्देश्य है मानव को मानवता देना। वास्तव मे मानवता की पूर्णत प्राप्ति ही सत जीवन का अ तिम आदर्श है। एक उददेश्य होते हुये भी तीनो विचार धाराओ का सम्मिश्रण नही हो सका। फिर भी तीनो ही विचार-धाराओ को विश्व के महान लोगो ने अपने हृदय मे स्थान दिया और मानस को उनसे अभिषिक्त करके अपने जीवन को धन्य माना। वदिक विचार धारा आहिस्ते 2 कर्मकाण्ड पर झुक गई। लेकिन बौद्ध और जैन विचार धारा श्रमण सस्कृति के ऊपर अवलबित हो गई। प्राचीन भारत मे श्रमण या साधु की जगह बहुत कम सत शब्द का उपयोग किया गया है। आज श्रमण शब्द गौण हो गया है और उसकी जगह सत शब्द ने अपना स्थान ग्रहण कर लिया है। जहा भी सत शब्द का उपयोग होता है वहा यही समझा जाता है कि वे एक उठे हुए कोई महात्मा होंगे, जिन्होंने सासारिक सुखो को लात मारकर आध्यात्मिक सुख की तरफ अपना कदम बढाया है। आध्यात्मिक का अर्थ है स्वय की प्राप्ति के लिए प्रयास इसके सम्बन्ध मे जन साहित्य मे काफी लिखा गया है। जैन साहित्य एक पुरस्कृत साहित्य है, जिसने मानव जीवन के निर्माण के सम्बन्ध मे आरभ से कलम उठाई है और उसका चरण विकास करके अन्त किया है। जन साहित्य मे ससार की ऊ ची से ऊ ची सामग्री राज्य सम्पदा और वैभव को कोई स्थान नही दिया है। उसकी दृष्टि म य सब चीजें भौतिक हैं नश्वर है। इनसे मानव को कभी भी शाति नही मिल सकती।

जैन साहित्य कहता है कि शाश्वतशाति ही शाति है। जिसकी प्राप्ति के बाद मानव आकुलित, व्याकुलित व दु खी नही होता। इन सबसे अलग हाकर अपन जीवन की शुद्धि और शांति के लिए प्रयास करना है जन साहित्य इसी का मत स्वीकार करता है। मन जीवन का अन्तिम उददेश्य है मुक्ति। सुखी करना। निराश न करना। वासनाओ मे डूबना और आकुलताओ म डूबना। यह

बात सीधी नही है फिर भी असाध्य नहा है। इसकी प्राप्ति के लिए एक सकल्प होना है और उसकी पूर्णतया सन्त जीवन ही कर सकता है। जन साहित्य म सन्त जीवन का बडा अटपटा वरणन है जिम जीवन मे जान के बाद वह आगे की तरफ देखता है, पीछे को भूल जाता है। वह योगी बनता ह साधु बनता है और साधक बनकर रिमच के विद्यार्थी की तरह पूर्णता की प्राप्ति के लिए अपन आप का अर्पित कर देता है। इसके पहले वह साधक विश्व के समस्त द्वन्द्वो से अपन आपको अलग करता है और मनसा वाचा कमणा अपने सम्पूर्ण जीवन का समर्पण कर देता है। यह साधक यहा तक आगे चलता ह कि वह खान पीने की प्रक्रिया को भी खतम कर देता है। देह की सुध तो यहा तक खो देता है कि वह शरीर नगा होन के बाद वस्त्र की तरफ नही देखता। यदि वह वस्त्र और शरीर की तरफ जरा भी लक्ष्य देता है तो यह अपने बढ हुए लक्ष्य से च्युत होता है और नीचे गिर जाता है। जन सन्तो का जहा भी वर्णन है वहाँ लिखा है कि वे वस्त्र नहीं पहनते, हजामत नही बनाते, भोजन की कभी चिंता नहीं करत। भोजन के लिए वे अधिक परिकर नही करत जहा भी भोजन मिलता है वे खडे रहते या बैठकर खान की नही सोचते। वे सिर्फ इतना ही सोचते हैं कि मुझे उदर रूपी गत भरना है, और फिर मेरे लक्ष्य पर डटना है। एक आसन से सोते है फिर भी अपन कतव्य मे पूर्ण जाग्रत रहते हैं। इन तरह के सन्ता को आरम्भ सन्त कहत है। पौराणिक युग म इस तरह के सन्ता का काफी उल्लेख मिलता है जिन्हाने आत्म विकास के लिए इस तरह के जीवन को अपनाया है विश्ववधु भगवान महवीर के बाद भी हजारो सन्त ऐसे हुए है जिन्हाने आत्मविकास के साथ साथ पर विकास के लिए भी साधा है और उन्हाने लोक कल्याण के लिए अपना अमूल्य समय दिया है। जिनम भगवान कुन्दकुन्द, उमास्वामी, पद्मनन्दी, समतभद्र, अकलक आदि के नाम उल्लेखनीय ही नही किंतु वदनीय भी हैं। इन सन्तो के बाद भट्टारक परम्परा मे अनक सन्त ऐसे हुए है जिन्होन लोक जीवन के लिए अपना समस्त जीवन अर्पित किया। इन्होने जैन धम और सस्कृति की विविध रूप से सेवायें की। इन सन्ता ने जैन साहित्य को काफी रूप म परिवर्तित करके उसका इतना रोचक बनाया कि वह सब साधारण के उपयोग का साहित्य हो गया।

इस कथा साहित्य मे उन्होने पुण्य पाप की कहानिया मे प्राणी को न उलझाकर योगी जीवन तक बढाया और यह बतलाया कि इस जीवन के बिना कही भी शाति नही। भट्टारक सन्तो ने जैन सस्कृति के सरक्षण के लिए अगाध प्रयास दिया और उन्होन साहित्य सजन के साथ साथ जैन इतिहास को महत्त्व देने के लिए मूर्तिकला, मन्दिर निर्माण और प्रतिमाओ को भी महत्त्व दिया और इनके लिए काफी प्रयास किया। इस प्रयास मे भट्टारक सकल कीर्ति का सर्वोपरि स्थान रहा। अपने काल मे सकलकीर्ति भट्टारक परम पूज्य माने गये। इनके पास सघ व्यवस्था रही और सघ व्यवस्था को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिए इन्होन अथक परिश्रम किया। आज भारतवष मे इनकी कृतियें आदर के साथ पढी जाती है जिनकी सख्या करीब 35 है। ये स्वय नग्न रहते थे और इनके साथ रहन वाले साधु भी नग्न रहते थे। इन्होन अपने जीवन के 56 वष म अपूव सेवायें की हैं। इनका व्यक्तित्व सवमान्य था। इनके बाद भी सन्त परम्परा चली और आज दि जन समाज मे सुलझे हुए सन्तो की कमी नही है। जिनका जीवन उच्च चितन और मनन मे जाता है। ऐसे सन्त जिस समाज, देश और राष्ट्र म मौजूद है वह कभी भी गिर नही सकता। आशा है पाठकगण सन्त जीवन की उपयोगिता समझकर अपन जीवन का निर्माण करने का प्रयास करेंगे।

मानवतावादी
जैन साहित्य

जैन साहित्य लोकहित, मानव कल्याणकारी साहित्य है। जैन साहित्य भारतीय संस्कृति और सभ्यता की एक महत्वपूर्ण कड़ी है। हमें उसके अधिकाधिक प्रचार एवं प्रसार करने की आवश्यकता है।

भारतीय समाजो म सा धर्मो मे जन धर्म का एक महत्वपूर्ण स्थान है और इस धर्म का आधार मानवतावाद सिद्वात है। जैन धम ने अपने साहित्य मे वभव सम्पदा को कोई महत्व नहीं दिया है– वह एक सुथरा साहित्य है जिसम प्राणिहित को ही भावना निहित है। इस धम का प्राचीन इतिहास भी गौरवपूर्ण है और वतमान भी उससे कम नहीं। आज भी इस समाज मे आदर्श त्यागी विद्वानो और प्रतिभा-सम्पन्न व्यक्तियो की कमी नही है। जैन धम का साहित्य विशाल है, भारतीय विद्वानो की दृष्टि मे जन साहित्य को स्थान नही दिया जाय तो वह साहित्य-साहित्य नही है। जैन साहित्य के लेखक महान चितक थे। देशकाल की स्थिति का अध्ययन करने वाले थे। वे एकात स्थलो में रहकर चिंतन और अध्ययन करते थ। उन्होंने अपन अगाध साहित्य मे मानव जीवन के विकास और उत्थान के सम्बन्ध म काफी प्रकाश डाला है। जन साहित्य मे अधिकतर निवृत्ति की तरफ प्रेरणा दी गई है। प्रवृत्ति उसमे मिल सकती है लेकिन वह स्वीकार नही की गई। यह साहित्य प्रथमानुयाग चरणानुयाग करणानुयोग और द्रव्यानुयोग के रूप मे 4 प्रकार से स्वीकार किया गया है। इन चारो ही अनुयाग साहित्य का मूल सिद्धात एक ही है। फिर भी रचना भेद ने इनका भिन्न रूप दे डाला है।

जन धम आत्मधम है। उसने अपन साहित्य म प्राणिमात्र को विकास करने का अवसर दिया है। जन धम की मान्यता है कि छोटा से छोटा प्राणी भी जन धम के मानवतावादी सिद्धातो का आश्रय लेकर किसी भी समय किसी भी अवस्था म महामानव बन सकता है। जन साहित्य म मनीगाना का [illegible] स्थान नही है। यही बात हम प्रथमानुयाग क साहित्य म [illegible] मिलती। प्रथमानुयोग का पूरा साहित्य कथनको म भरा पडा है जिसम पशु पक्षी कीट

पतग हाथी सिह नेवले तक की साधना का वर्णन मिलेगा, इसके कई उदाहरण हैं। जैसे भगवान महावीर का जीव पहले भवों मे सिह व मेढक का जीवन था। भगवान महावीर के समय मेपहले स्वग का देव। समन्तभद्र आचार्य ने तो अहिंसा का वरान करते हुऐं यहाँ तक लिख डाला है कि वतमान युग मे यदि कोई अहिंसा मे प्रसिद्धि प्राप्त की है तो यमपाल चाण्डाल ने की है। इसका विस्तृत उल्लेख इसी प्रथमानुयोग में बतलाया है कि मानव नीचे से कसे उठता है और वह आगे कैसे बढता है। यह तरीका बडा सुदर है। इसी का यह परिणाम था कि विश्व के कोने कोने मे अहिंसा और सत्य का निनाद था। व्यक्ति का निनाद नही था। धन वैभव सम्पन्न लोगो का वर्णन भी कथा साहित्य मे मिलता है लेकिन ऐसे लोगो को प्रथमानुयोग ने तीन रास्ते बतलाये है। धन वैभव का मानव ने सही उपयोग नही किया तो उसको सीधा नर्क भेजता है। यदि कुछ उपयोग किया है तो स्वग। और लोकहित के लिये पूरा त्याग करके सेवा के क्षेत्र मे जो आगे बढ गये उनके लिए मोक्ष। जन साधना यही बात कहती है।

लोकहित म उतरने वाले आगे आपको सही समझे इसके लिए करणानुयोग निर्माण किया गया। करणानुयोग आत्म परिणामो को ठीक रखने के लिए अलोक तक का चितन करता है इसके बाद वह जो सोचता है विचारता है और मनन करता है तब वह चरणा नुयोग साधक को कहता है कि बोलने के पहले स्वय का निर्माण कर। चरणानुयोग म जो तन के मार्जन से सही निर्देश है। जिनसे जीवन ऊचा उठता है। वे निर्देश विकल्पमयी या उलझन के नही होते। उन निर्देशो मे निवृत्ति की ही बात मिलती है। जिनसे बिगडे जीवन की शुद्धि होती ह। चरणानुयोग समझता है कि मानव मे कई कमजोरिया हाती ? लेकिन चरणानुयोग प्रेरणा करता है कि मानव अपनी कमजोरियो को समझ इन कमजोरियो का दूर करने के लिए व्रत सयम तप त्याग आदि के रूप मे अनेक माग बतलाये हैं। जिनके आधार से साधक मजबूत बनता है और अपने धरातल को दूर करके स्वय जीवन को शुद्धि करता है और इसके बाद वही प्रेरणा देन क लिए सेवा के क्षेत्र मे आगे बढकर प्राणिमात्र को दिव्य माग बतलाया है। अगर कोई साधक स्वय को इससे ऊचा उठाना चाहता है।

यदि वह बाहरी जीवन म कही भी नही उलझना चाहता है तो स्वय की स्थिति स्वय मे ही रखना चाहता है तो फिर उसको द्रव्यानुपयोग के साहित्य का देखना पडता है। द्रव्यानुयोग जैन साहित्य का अमूल्य और अलौकिक भण्डार है जिसम सिर्फ शुद्ध आत्म द्रव्य का ही वर्णन है। इस साहित्य मे आत्मा को पूर्ण स्वतन्त्र शुद्ध चैतन्य के रूप म रखा है। द्रव्यानुयोग का विश्वास है कि आत्मा की अ तिम सही स्थिति यही ता है। यदि इस स्थिति के लिए कोई साधक तैयार नही तो वह उसको साधक नही मानता। द्रव्यानुयोग कहता ह कि स्वय म स्वय को मिला देना ही सच्चा सुख और शाति है। इसकी प्राप्ति निर्विकल्प जीवन न ही मिल ती है। इस स्थिति को समझने के लिए जैनो के पास द्रव्यानुयाग का अपार साहित्य ह। उसम निमित्त का महत्व नही है। स्वय के लिए स्वय का आधार ही स्वीकार किया गया है ध- -नके -

चिंतन से मानव को एक बहुत बड़ा चिंतन मिलता है स्वयं के जीवन के लिए। प्राचीन भारत में जैन चिंतको ने यही दिया। वे सब कुछ छोड़कर एकांत स्थलों में गये, अपने जीवन के विकास व शांति के लिए पूर्ण स्थिरता के लिए। आज भौतिक युग है, उन महान चिंतकों के और इस महान साहित्य के आराधकों में भी आस्ते आस्ते इस भौतिक युग का प्रभाव आ रहा है और वे आस्ते आस्ते पूर्ण भौतिक होते जा रहे हैं। पर्यूषण पर्व नाचने कूदने के पर्व नहीं हैं। ये पूर्ण आध्यात्मिक पर्व हैं। इन पर्वों में प्रत्येक जैन साधना-स्थलों में उन महामानव तीर्थंकरों के चरणों के सान्निध्य में बैठकर एक साधक के रूप में स्वयं का निरीक्षण करें अन्तरंग स्थिति को देखें। व्रत और उपवास स्वयं के माजन और शुद्धि के लिए करें। व्रत उपवास भूखे मरने के लिए नहीं है अन उपवास वह करने का अधिकारी है जो स्वयं को नूतन गढ़ना चाहता है। पर्वराज हमें आमोद प्रमोद या विलासी पहनाव पहनने का आदेश नहीं देता। सही जैन वह है जो इन दस दिनों में सही रूप में अपने जीवन का मापन करता है वही जीवन माजन की बातें विधान और जैन साहित्य में उल्लिखित हैं। जैन साहित्य लोक हितकारी मानव कल्याणकारी साहित्य है। जन लोगों की संकीर्णता छोड़कर इस मानवतावादी साहित्य के प्रचार के लिए आगे बढ़ना चाहिये।

आत्म ज्ञान प्रमाण है ज्ञान ज्ञेय प्रमाण कहा गया है। ज्ञेय लोक-परलोक में व्याप्त है, इसलिये ज्ञान सर्वगत है।

—प्रवचनसार

卐

वस्तु का एक धर्म, उस धर्म का वाचक शब्द और उस धर्म को जानने वाला ज्ञान, ये तीनों ही नय के भेद हैं। (नय के तीन रूप है—अर्थ, शब्द और ज्ञान)

—कार्तिकेया०

जैन धर्म और भावनायें

जैन धर्म आत्म धर्म है। यह धर्म प्राणियो के भावो को महत्व देता है और उनके उतार चढाव को बंध और मोक्ष का आधार मानता है। यह भाव प्रधान धर्म है।

जैन धर्म के सिद्धान्तो एव साहित्य का अध्ययन करने से यहा ज्ञात होता है कि यह धर्म प्राणियो के भावो को महत्व देता है और उनके उतार और चढाव पर बध और मोक्ष का आधार मानता है इसलिए भी कहा जाता है कि जैन धर्म भाव प्रधान है, क्रिया धर्म नही।

सच बात यह है कि जैन धर्म आत्म धर्म है। इसका सम्बन्ध प्राणीमात्र से है। ससार का कोई प्राणी चाहे वह पशुयोनि रूप म हो और चाहे वह मानव रूप म हो, जैन धर्म की तत्व व्यवस्था का सहारा लेकर अपना उत्थान कर सकता है। इस धर्म म महत्व आत्मा को दिया है। बाह्य रूप और बाह्याचार को नही।

जैन धर्म ने आत्मा की दो अवस्थायें स्वीकार की है एक अशुद्ध आत्मा जो कर्मबध से वेष्ठित है और ससार मे जन्म मरण करता रहता है और दूसरा शुद्ध आत्मा जो कर्म बध से मुक्त है। मुक्त आत्मा का रूप शुद्ध चैतन्य का पिण्ड अमूर्तित्व एव ज्ञान शरीरी माना है। इस आत्मा के साथ शरीर का सम्बन्ध नही रहता शुद्ध अवस्था को प्राप्त होने के बाद ससार मे रहता हुआ भी ससारी जीवन अलग रहता है और यह पुन शरीर का ग्रहण नही करता। इस अवस्था का नाम सिद्ध अवस्था के गुणो के वर्णन म अगाध साहित्य भरा पडा है और समूचे जैन वाङमय म इसी अवस्था को पूर्ण महत्त्व है।

जैन धर्म मे दीक्षित बालक और सन्त की पूर्ण साधना तभी सफल मानी जाती है जब वह शुद्ध अवस्था के लक्षण को लेकर साधना मे लीन होता है और अपने लक्षण की पूर्ति म अपने आपको अर्पित कर देता है। लेकिन ऐसा होना सरल नही किन्तु वह असाध्य भी नही।

जैन धम ससारी अवस्था के सबध म अन्य धर्मों की अपेक्षा भिन्न मत रखता है। वह आत्मा को अनादि अनन्त मानता है। इस मामले म ईश्वर दखल दता है यह बात जन धम नहा मानता। जन धम कम सिद्धान्त को स्वीकार करता है और साथ म आत्मा के शुभाशुभ भावो को। उन दोना प्रकार के भावा म यदि आत्मा उलझता है तो कमबध करता है और इन्ही क बल पर जन्म मरण करता रहता है। शुभ और अशुभ भाव आत्मा म ही होते है फिर भी जन धम कहता है कि ये विकार भाव हैं। आत्मा के स्वभाव भाव नही। इन विकारी भावा के कारण आत्मा पुन्य व पाप की करणी को अज्ञान के बल पर अपनी अवस्था मानता है इस गलत धारणा से विभिन्न पर्यायो मे जन्मता है और मरता है। कई बार पशु पक्षी पर्याय धारण करता है और कभी नक स्वग की पर्याय। लेकिन इन पर्याया म शान्ति और सुख की प्राप्ती नही होती क्योकि वे पर्याय नश्वर के है, बदलती है और इनम कही सुख की झलक होती है तो तुरन्त अधिक मात्रा मे दुख की प्राप्ती होती है। बडी मुश्किल से मानव शरीर मिलता है व मानव जीवन ही एक ऐसा जीवन है जिसमे यह अपने सम्बन्ध म विवेक से काम लेता है। यहा विवेक जागृत होता है। यहा इस अनादिकाली अज्ञानी आत्मा मे एक नवीन क्रान्ती पदा होती है। जो आत्मा को सावधान करती है और सम्बोधित करती है कि आत्मा आज तक अज्ञान स जिस स्वरूप को तूने स्वीकार किया वह स्वरूप तेरा नही। तू तो अनन्त ज्ञान दर्शन व सुख का धनी अखड चतन्य स्वरूप अविनाशी ज्ञान घन आत्मा है इस रूप से तेरा भिन्न रूप है जिसके लिये तेने कोई प्रयास नहीं किया। वतमान रूप तेरा नही।

इसका परिवार भी तेरा नही। यह नश्वर ह। इसके सबध से तुझे शाति नहा मिली। तृष्णायें बडी जो अगाद ह जो जो तृष्णा बढी त्यो त्यो दुखी होता जा रहा ह। अत इस विभाव से ऊचा उठकर स्वभाव की बात कर इन विचारो का नाम ही भावना है। यह भावना सुप्त प्राणी को जगाती ह उसके जीवन मे अमूल्य परिवतन करती ह और उसको एक ऐसे नवीन माग म ढकेलती ह जिसके ऊपर यह आत्मा बढ़ता हुआ स्वय की प्राप्ती कर लेता है।

भावना आत्मा की असली आवाज होती ह जो जीवन का मार्जन कर देता ह। इस भावना मे ही पतित से पतित आत्मा को ही माग पर लगाया वह महान बन गया।

तीर्थंकर जैन महान व्यक्तियो म भी इन्ही भावनाओ का उदय हुआ और इन भावना मे ही उसको कतव्य की ओर आरूढ किया जिससे जन शास्त्रो मे इनका सुहावना वर्णन है।

यद्यपि ये भावनायें आत्मा की ही आवाज हैं। उसीमे से इसका विनाश ह। फिर भी कुछ प्राणियो क लिये आराध्य भी हैं। साधक इनकी आराधना करता है। जब तक करता है तब तक वह अपना लक्ष्य की प्राप्ती के लिये आगे नही बढ पाता। भावना क्षणिक नही। इनकी जड गहरी होती है। होने के बाद छुटती नही। इस तरह की भावनाय दो प्रकार की होती हैं। एक बारह भावना और दूसरी सोलह कारण भावना। बारह भावना का अपर नाम अनुप्रेक्षा भी ह जिसका मतलब होता है बार-बार मनन एव चिन्तन करना।

वारह भावनाये ससार अवस्था की अनित्यता आदि पर वल देती है और साथ मे इस अवस्था मे छूटन पर वल देती है–ये अनित्य, अशरण, ससार एकत्व, अन्यत्व, अशुचि आश्रव, सवर, निजरा, वोधिदुलभ, धर्म और लोक भावना के रूप मे है ।

1 – अनित्य –ससार बाहर पदाथ क्षणिक है, ये तेरे नही । तू शाश्वत है ।

2 – अशरण – जिनको तू अपना मानता है वे तेरे नही । स्वय मे दु ख सुख का साथी तू ही है। जिस शरीर को अपना मानता है वह भी तेरा नही ।

3 – ससार – इसमे जन्म मरण के दु ख तुझे ही भोगना होता है ।

4 – एकत्व – अकेला ही ज मता है और अकेला ही मरता है ।

5 – अ यत्व – यह शरीर भी तेरा नही । तू तन से अखण्ड निराला है ।

6 – अशुचि – यह शरीर महा घिनावन अपवित्र है । इसका स्वभाव तेरा नही । यदि भीतर का स्वरूप दव योग से वाहर आ जाय तो एक क्षण भी रहना तू पसद नही करेगा ।

7– अज्ञान – भाव से इन सबको अपना मानने से कर्मो के अपने रास्ता खुला रहता है यह आश्रव भावना है ।

8– सवर – विवेक के वल पर आने वाले शुभाशुभ भावो को रोकना ।

9– निजना – रागादिक भावो के वल पर जिन रजकणो को बाधा उनको शुद्ध विचारो के वल पर आस्ते आस्ते खत्म करना ।

10– वोधिदुर्लभ – मानव जीवन प्राप्ति के साथ साथ रत्नत्रय की प्राप्ति भी महा–दुलभ इसके सम्ब ध मे चिन्तवन करना ।

11– धम– स्वभाव ही मेरा रूप है । अन्य नही ।

12– लोक– तीन लोको के स्वरूप का चिन्तवन करना । उपरोक्त वारह भावनायें जीवन को आगे वढाती हैं । आत्मा को वल देती ह । इससे मानव महामानव बन जाता है ।

इन वारह भावनाओ से विश्र खलित जीवन स्वस्थ और सुन्दर बन जाता है और आत्मा अपनी साधना मे सफल होता है ।

इसी तरह सोलह कारण भावनायें मानव जीव न को प्रदीप्त करती हैं और इतना निमल बना देती है कि वह मानव के रूप मे महामानव वन जाता है । इन सोलह कारण भावना के चिन्तवन का बडा महत्त्व है । इनका आराधक के हृदय मे तीथकर पगति का उन्य होता है और ऐसी आत्मा से विश्व का उद्धार होता है । इन भावनाओ का सहारा आज भी मानव को लेने की जरूरत है । आज ससार विषमता मे जा रहा है । वह दुखित और अतिभाषित जैन

शासन के आराधक सन्त और श्रावक ने भी मार्ग को छोड़ दिया है। सिर्फ नक पाठ चलते हैं। जो सिर्फ वाचनिक होते हैं। इनसे आत्मा का लाभ नही। पर्युषण पर्व आज हमारे सामने है। यह पर्वराज शुद्ध जीवन को जगाने के लिए प्रतिबोधित करने के लिए प्रति वर्ष आता है। लेकिन जनियों ने इसको भी निर्जीव बना डाला है। यह पर्व भी जो त्याग, सयम और साधना का प्रतीक था। विलासिता की भावनाओं से पूर्ण किया जाता है। राग बढ़ता है खान-पान और पहनाव की मुख्यता इसमे आज का जैन विशेष करता है। सबकी शरीर दृष्टि नती जा रही है। क्या हम यह विचारणीय नही है ?

जैन समाज म अनगिणत सत है। उन्हे चाहिए कि वे जन समाज को नई दिशा दें और फिर वह इन भावनाओ का महत्व को अकित करके अपने आप का महान बनाने का प्रयत्न करें।

जो सम्यग्दृष्टि गृहस्थ है वह मोक्ष मार्ग मे स्थित है, परन्तु मिथ्या दृष्टि मुनि मोक्षमार्गी नहीं है, इसलिये मिथ्यादृष्टि मुनि की अपेक्षा सम्यग्दृष्टि गृहस्थ भी श्रेष्ठ है।

—रत्नकाण्ड श्रावकाचार

❀

सिद्धिकर्ता—ऐसे सम्यक्त्व को जिसने स्वप्न मे भी मलिन नही किया है उस पुरुष को धन्य है, वह सुकृतार्थ है, वही वीर है और वही पण्डित है।

—मोक्षपाहुड

❀

हे श्रावक! ससार के दु खो का क्षय करने के लिए परम शुद्ध सम्यक्त्व को धारण करके और उसे मेरु पर्वत समान निष्कंप रखकर उसी को ध्यान मे ध्याते रहो।

—मोक्षपाहुड

जैन समाज को चुनौती

भगवान महावीर का निर्वाण महोत्सव हो या कोई पंच-कल्याण प्रतिष्ठा महोत्सव। इनको कितने ही भव्य रूप मे हम आयोजित करे। पर समाज की दशा को ध्यान पर रखकर उसके उद्धार और उन्नति के लिये कोई ठोस कार्यक्रम बनाने होगें। भगवान महावीर का सन्देश जीवो, पर दूसरो के लिये जीवो, आत्मसात करना होगा।

भगवान महावीर का 2500 वो निर्वाण महोत्सव का आयोजन विश्व के स्तर पर मनाया जाय इसके लिए समाज के मूर्धन्य नेताओ, विद्वानो व कार्यकर्ताओ द्वारा अपूर्व उत्साह के साथ प्रयास किया जा रहा है और देश के कोने-कोने मे इसके सम्बन्ध मे अपूर्व कार्यक्रमो की रुपरेखा भी तैयार की गई है। इन तैयारियो मे स्मारिका प्रकाशन, ग्रन्थ प्रकाशन, स्मृति मन्दिरो की स्थापना और कीर्ति स्तम्भो का निर्माण आदि के रुप मे हो रही है। मेरी समझ से यह महोत्सव इन रूपरेखाओ मे सफल नही माना जा सकता। भगवान महावीर की प्रथम देशना मे जीओ और जीने दो का निर्देश था जिसम विश्व के समस्त प्राणियो के लिए अभय का नारा था और अहिंसा का गहरा तथ्य छिपा हुआ था। लेकिन इस छोटे से निवेदन मे मै तो यह चाहता हू कि जहा हमारी अनेक योजनाय है उनमे कुछ ऐसी योजनाये भी हो जिनसे जैनत्व जिन्दा रहे और समाज के हजारो गरीब जन भाईयो और बहनो को राहत मिल सकें व गरीब भाईयों को इन बेकारी से मुक्त कर सके। आज राष्ट्र के सामन भी गरीबी और बेकारी की विकट समस्या मुह बाये खडी है। वही समस्या जैन समाज के सामन भी गरीब असहाय भाईयो को लेकर खडी है।

समाज का निर्माण व्यक्तियों से होता है और धर्म का अस्तित्व धार्मिक व्यक्तियों से रहता है। यदि समाज के भाई स्वस्थ नहीं होंगे तो समाज जिन्दा कैसे रह सकेगा। प्रतिष्ठा और विद्वानो से जैनत्व जिन्दा नहीं रह सकता। हजारों और लाखों मूर्तियां आज भी भूगर्भ में बिखरी पड़ी है इन धार्मिक अनुष्ठानो से समाज को जीवनदान नही मिल सकता। प्रतिवर्ष अनेक प्रतिष्ठाये होती है फिर भी हमारा धार्मिक जीवन और सामाजिक चेतनायें ढीली होती जा रही है। मेरा ख्याल से प्रतिष्ठाओं का उद्देश्य सही रूप में आत्म निरीक्षण का होना चाहिये। लेकिन आज स्थिति बिल्कुल विपरीत है समाज मे आज पहले जैसा न वात्सल्य है और न भावनायें है। वीर पत्र मे 15 जुलाई के सम्पादकीय लेख मे आज के समाज की स्थिति का नग्न दिग्दर्शन कराया गया है जिसको पढ़ कर मानव हृदय दहल उठता है और रो उठता है। सच कहा जाये तो आज की यह स्थिति सारे समाज के सामने एक चुनौती है। इसके सम्बन्ध मे प्रबुद्ध समाज को विचार करना चाहिये। वास्तव में वीर पत्र के सम्माननीय सम्पादक ने इन तथ्यों का सही रूप में परीक्षण किया है और उसको समाज के सामने रक्खा है।

हम सबका यह कर्तव्य हो जाता है कि हम समाज के कमजोर वर्ग की ओर ध्यान दें और ऐसे ठोस कार्यक्रम बनायें जिनसे इन गरीब भाइयो को राहत मिले। उज्जैन की जैन समाज वर्षो से इसके लिए कृत सकल्प है। उसने एक पेटी खोल रखी है जिससे गरीब जैन भाइयो को हर तरह से सहायता दी जाती है। इसी प्रकार हर नगर व ग्राम के अन्दर कोई ठोस कार्य होना चाहिए तभी 2500 वां निर्वाण महोत्सव मनाना सफल समझा जा सकता है।

> जिस प्रकार नगर की शोभा दरवाजो से है, मुख की शोभा आंखो से है और वृक्ष की स्थिरता मूल से है उसी प्रकार ज्ञान, चरित्र तप और वीर्य की शोभा सम्यग्दर्शन से है।
>
> —भगवती आराधना
>
> ❀
>
> शांत भाव, ज्ञान, चरित्र और तप यह सब यदि सम्यग्दर्शन रहित हो तो पुरुष को पत्थर की भांति बोझ समान है, परन्तु यदि उनके साथ सम्यग्दर्शन हो तो वे महामणि समान पूज्य है।
>
> —आत्मानुशासन

उदार जैन धर्म

जैन धर्म आत्मधम है। किसी व्यक्ति जाति की यह धराहर नही है। उसके प्रवर्तको ने सप्तभगी स्याद्वाद का सिद्धांत प्राणीमात्र के कल्याण के लिये प्रतिपादित किया है। जैन धम के नये ठेकेदारो को जैन धर्म को जीवित रखने के लिये भगवान महावीर के युग का वर्णन पढकर भगवान द्वारा बताये गये उपायों पर चलना होगा। यह धर्म है जाति नही यह मानना होगा। इसमे जैन धर्म का कल्याण है साथ में मानव मात्र का भी।

जैन समाज सार्वभौमिक है। अत यह आत्मधर्म है। इस धर्म के आश्रय से प्राणीमात्र अपना कल्याण कर सकता है। प्राचीन समय मे सब ही वर्ग वाले इस धर्म की आराधना किया करते थे। इस धर्म के सिद्वात बडे उदार हैं। अत पशु पक्षियो ने भी इस धर्म को धारण करके अपना कल्याण किया है।

एक समय भारत के कोने कोने तक इस धर्म का प्रचार था। प्राचीन समय मे बडे 2 राजाओ ने इस धम के प्रचार म अपना जीवन दिया है इसका इतिहास भी साक्षी -। जनी लोग इस धम को अनादि मानते है और कहते है कि इस धर्म को किसी ने भी नही चलाया क्योंकि यह एक प्राणियो का स्वभाव जात धम है। जब प्राणियों के स्वभाव मे विकार होता है तब इस धम मे भी विकार पदा हो जाता है। अत किसी अवस्था मे इस धम के उद्धारक भी अवतीर्ण होत है, जिनको जनी लोग विशेष महत्व देकर चौबीस तीथकरो के रूप मे मानते है और बडी भक्ति से उनकी आराधना करते है।

इस धम के अ तिम प्रचारक परम पूज्य भगवान महावीर मान गये है। य एक एतिहासिक महापुरुष हैं। इस महापुरुष का जन्म वदिककाल म हुआ था। जबकि भारत के कोन 2 म वर्म के

नाम पर गरीब पशुओं का बलिदान होता था। यही नहीं किन्तु धन के विचित्र ढाग मे मनुष्य जैसा उपयोग प्राणी भी बलिवेदी पर चढा दिया जाता था। इन्ही के करुणाक्रन्दन ने भगवान महावीर को विचलित कर दिया था। अत वे तीस वर्ष की अवस्था म ही गृहत्यागी बन गये थे। भगवान महावीर आजन्म ब्रह्मचारी थे। उन्होंने विवाह के प्रस्ताव को एक बधन समझ कर ठुकरा दिया था। भगवान महावीर अपने जीवन को प्राणीमात्र की सपत्ति समझते थे। अत गृहत्याग समय उन्होंने दृढ सकल्प किया था कि मैं प्राणीमात्र को कल्याण के मार्ग म लगा दू। इसी सकल्प ने जैन धर्म को और भी उदार बना दिया। जिससे इस धर्म का गौरव और भी बढ गया।

भगवान महावीर का उपदेश सब जीव हितकारी होता था। अत उनका उपदेश श्रवण करने के लिये पशुपक्षी तक भी बिना रोक टोक के पहुचते थे। भगवान महावीर की सभा म 12 कोठे होते थे। भगवान की दृष्टि म वे एक थे। अत उनके लिये धर्मोपदेश भी भिन्न 2 नही होता था।

भगवान महावीर ने प्राणीयो को धर्मोपदेश में सबसे पहले यह शिक्षा दी कि तुम प्राणी मात्र से प्रेमभाव रखो। किसी को तकलीफ मत दो। दूसरे के प्राणो को अपने प्राण तुल्य समझो। किसी को नीच और घृणा की दृष्टि से मत देखो। झूठ मत बोलो। चोरी का त्याग करो। ब्रह्मचर्य का पालन करो और विषयो की लोलुपता का त्याग करो। इन पाच व्रतों के परिपालन मे ही उक्त महात्मा ने जैन धर्म का सार बतला दिया था। पाच बात ऐसी है जो प्राणीमात्र के लिये हितकारी है। ये पाचो बातें सम्प्रदायो से सबध न रखकर प्राणियो के साथ स्वतत्र सबध रखती है। अत उन वक्त भगवान महावीर ने इस धर्म का आत्म धर्म घोषित कर दिया था।

बिर नग ता भगवान महावीर स्वामी न आत्म धम बतलाया था। दुःख है कि आज जनी लोग पानीनाद ता इसरा दर्शन पढ़ जाना पाप समझ रहे है। यदि अन्य जानिया इसका परिपालन करेंगी तो यह धम अपवित्र हो जायगा और इस धम का महत्व जाता रहेगा। अत साफ 2 पद रे धन इस पर छिपाया करते है। वे रात दिन ऐसी चिन्ता मे रहते है कि चाहे हम घट जाय किन्तु हमारे जैसा जनी नहीं बन जाय। व यह नही सोचते है कि अगर भगवान महावीर के विचार हमारा ...... अपने उपदेश म पशुपक्षियो तक को कैसे स्थान देते ? क्या जन शास्त्रो म यह नही लिखा है कि अनीतधारी चाण्डाल की पूजा के लिये उच्च गोत्रीय देवता भी स्वग म आकर ... गाना न भी अभिषेक पूवक उसकी स्तुति की है। अगर जनी लोग इन बातो को ध्यान पूवक पढ़ें तो जन धम का आज कितना महत्व बढ़े। जन शास्त्र म मनुष्य के उच्च गोत्र का ...... और पशुओ के नीच गोत्र का। नीच गोत्री पशु भी इस धम को धारण करके 12 व स्वग म ... जाते है। भगवान महावीर की पूजा की भावना मात्र से मढक जैसे क्षुद्र प्राणी ने भी स्वग प्राप्ति की है। वास्तव म ये सब बात जन धम की उदारता का परिचय कराती है। जनी अब भी ... पौराणिक बातो पर ध्यान देकर आगे बढ़ें तो ससार का कितना कल्याण हो।

जन धम हमेशा उदार धम रहा है। इस धम ने पतितो का उद्धार किया है। न कि जो पावन थे उनका, इसीलिए यह पतितोद्धारक कहलाया है। इसलिए जैनो को अपनी सकीर्णता मिटा कर पुन इस धम को विश्व भर म लाना चाहिये किन्तु यहा तो उल्टी गगा बह रही है। अजैनो को जनी बनाना तो दूर रहा ये तो जनियो को भी दूतकारने की फिक्र म लगे हुए है। इनका जाति बहिष्कृत करने का शस्त्र भी बड़ा तीक्ष्ण है। यही इनका स्थितिकरण अग है।

जनी लोग आज एकता नही चाहते। ये अपने आपको अनेक टुकडो मे विभजित देखना चाहते है जनी लोग चाहे अपने आपको भगवान महावीर के भक्त माने। किन्तु जब तक ये भगवान महावीर के सत्य सदेश को उपयोग म नही लावे गे तब तक उसके भक्त नही कहलाये जा सकते। भगवान महावीर के समय असख्यात सख्या मे इस धर्म के परिपालक होते हुए भी कोई भेद नही था। पर 12 11 लाख अब करीब थोडी सी सख्या मे होने पर भी सकडो भेद यहा दिखलाई देते है। जहा 2 म भी आज ऊच और नीच का प्रश्न है वहाँ धर्म कहा। वहा अभिमान ही नग्न नत्य करेगा। अभिमानियो म धर्म का निवास नही रहता। धर्म के उदार वक्षस्थल म इस भेदभाव का पदा होना ही कलक है। इस भेदभाव ने इस धर्म का महत्व गिरा दिया। लोगो ने इसको एक तुच्छ समझ लिया। अत यह सब हितकारी धर्म भी लोगो की दृष्टि म कण्टक बन गया। कोई इसे नास्तिक बतलाते है। कोई स्वतत्रता मे बाधक और कोई यह कहते है कि भारत म कायरता का पाठ ही इस धर्म ने पढाया है। यद्यपि यह जनता की अनभिज्ञता का ही दोष है किन्तु इसमे सब प्रथम हम ही दोषी है क्योकि हमारी सकीर्णता ने उनको जैनतत्व से अनभिज्ञ रख दिया।

आज भी अगर जैन धर्म के सच्चे सुधारक आगे बढ़ें और इसके उदार सिद्धान्त को उपयोग मे लावें तो ससार का कितना कल्याण हो। यह धर्म पुन सजीवित होकर सर्व प्रिय बन जाय। जैनियो को रुढियो का त्याग करके सच्चे धर्म म आरुढ होना चाहिये। इस वक्त ढोंग की आवश्यकता नही, ढोंग ही मनुष्य को कर्तव्य से च्युत कर देता है। कर्तव्य से च्युत होना ही पतन है और यही एक सबसे बड़ा पाप है। इस वक्त उदारता से काम लेकर हमको आगे बढ़ना चाहिये। थोड़ी सी गल्ती को लेकर किसी को अलग नही करना चाहिये। नही तो हम सम्यक्त्व भ्रष्ट होंगे। जैन धर्म के त्यागी वर्ग का भी यह कर्तव्य है कि वे भी अपने सकीर्ण विचारो का त्याग करके लोहाचार्य की तरह उदारता प्रकट करें। वे अजैनो को जैन धर्म म दीक्षित करें - इस वक्त शास्त्र विरुद्ध प्रतिज्ञायें दिलवाने की आवश्यकता नही। ऐसी प्रतिज्ञाए दिलवाना जैन धर्म के लिए घातक सिद्ध हो चुके है। ऐसा करना जैन धर्म के विरुद्ध है। आशा है जैनी भाई इस तुच्छ विज्ञप्ति पर ध्यान देकर विवेक पूर्वक पुन उदार बनने की चेष्टा करेंगे।

हे जीव, यदि तू चार गति के भ्रमण से डरता हो तो परभावो का त्याग कर। और निर्मल आत्मा ध्यान कर। जिससे तुझे शिवसुख की प्राप्ति हो।

—योगसार

❁

हे जीव यदि तू आत्मा को न जाने और मात्र पुण्य-पुण्य ही करता रहेगा तो भी सिद्धिसुख को प्राप्त नही कर सकेगा। किन्तु पुन पुन ससार मे परिभ्रमण करेगा।

योगसार

श्रावक धर्म बनाम राष्ट्र सरक्षक धर्म

जीवन के सही दिशा निर्देशन हेतु अहिंसा, अपरिग्रह और अनेकता सिद्धान्तो को केवल पढने सुनने, लिखने, से काम नहीं चल सकता उसके लिये आवश्यकता है कि हम उसे अपने जीवन उतारें।

श्रावक धर्म पर जैन साहित्य मे बड़े-बड़े आचार्यो ने काफी प्रकाश डाला है और इसी विषय पर बड़े-बड़े ग्रन्थ लिख डाले है। कई आचार्यो व विद्वानो ने बहुत से ऐसे कथानक भी लिखे है जिनमे कई श्रावको ने अपने जीवन मे इस श्रावक धर्म को उतारा है और उसी से जीवन निर्माण किया है। धर्म विश्व मे एक ही माना गया है और उसके भाग भी विभिन्न न होकर एक ही होता है फिर भी जैनाचार्यो ने प्राणी की शनाद्रियो का मूल्याकन करते हुए उसको दो भेद मे विभाजित किया है। एक मुनि धर्म और दूसरा श्रावक धर्म। इन दोनो ही धर्मों का मूल स्रोत अन्त प्रेरणा है, जो प्रमादी प्राणी को ढकेल करके साधना क्षेत्र मे उतार देती है। धर्म कोई अद्भुत चीज नहीं है। वह प्रसुप्त आत्म शक्ति जागृत होती है तब वह धर्म के रूप मे बाहर आती है। और इस शक्ति के बल पर यह प्राणी अपने जीवन के तरीको को अपनी शक्ति द्वारा बढ़ाता है। वह पूर्ण शक्ति के साथ साधना क्षेत्र मे उतर कर समस्त दुविधा से अलग होकर पूर्ण जीवन निर्माण के लिए साधु के रूप मे आगे बढ़ता है और वह पूर्ण वीतराग अवस्था को प्राप्त कर लेता है। यह जीवन सिद्ध स्व जीवन होता है और इस का लक्ष्य एक मात्र आत्म सिद्धि का होना है जो इस जीवन मे पूर्णत उतरने के लिए सक्षम नहीं होता। वह श्रावक धर्म के नाम पर साधना के क्षेत्र मे साधक के रूप मे आता है और वह वही प्रयास करता है जिससे उपरोक्त साधना की प्राप्ति कर सकता है। जैन धर्म ने मुनि-मार्ग स्वीकार किया है। और इसी मार्ग की प्राप्ति के लिए अपार साहित्य का सर्जन किया गया है। लेकिन मुनि मार्ग की प्राप्ति विराग जीवन से ही मिल सकती है। श्रावक गृहस्थी को नहीं कहते। श्रावक वह कहलाता है जिसको अन्तर मे अहर्निश एक भावना रहती है कि मैं पूर्ण आत्म शुद्धि को प्राप्त करूं।

श्रावक सावधान व्यक्ति होता है जो सजग होकर अपनी कर्मों को सुधारने की सोचता है। वह कभी किसी अनैतिक कदाचार में जाने की नहीं सोचता और न कभी वह स्वप्न में भी परपीड़ा का विचार करता। श्रावक स्वयं के प्रति सजग रहता। आत्म हनन की किसी प्रक्रिया में भी वह दिलचस्पी नहीं लेता। उसका आधार संयम, तप और त्याग ही होता है। संयम शरीर और मन को बांधने का एक स्वरूप। जो आत्मा में आने वाले श्रावक को खत्म कर देता है। जहां संयम होता है वहां तप अपने आप हो जाता है और तप के बाद शुभ और अशुभ की ज्वाला में जाने की वह आत्मा सोचता ही नहीं इसलिए त्याग अपने आप बनता है। इन तीनों ही प्रक्रियाओं में प्रमाणिक श्रावक अपने आपको समेटता रहता है और व्यय की विकथाओं और विकृतियों से अपने आपको अलग करता है। मेरे विचारों से भगवान महावीर ने अपने जीवनकाल में जो भी व्यवस्थायें दी वे व्यवस्थायें मानव जीवन के ही लिए नहीं पशु जीवन के भी संरक्षण के लिए दी है। उन्होंने अपनी दिव्य देशना में जो भी कुछ कहा है और उसको दो विभागों में बांट दिया है। मुनि धर्मी तो विश्व में रहता हुआ भी विश्व से अलग रहता है लेकिन श्रावक धर्मी सबके बीच में रहकर भी अपने आप को बचाता है और अपना आदर्श जीवन का उदाहरण विश्व के सामने रखता है। श्रावक धर्म को जीवित रखने के लिए भगवान महावीर ने तीन बातों पर अधिक बल दिया। एक अहिंसा, दूसरा अपरिग्रह और तीसरा अनेकान्त। ये तीन बातें अद्वितीय सिद्धांत है। इनसे मानवता सजग होती है और राष्ट्र समुन्नत होता है। आज भी इन बातों पर विचार करने की बड़ी आवश्यकता है।

देश में बड़े बड़े आयोजन होने के बाद भी सही धर्म कहां है इसका पता नहीं चलता। श्रावक वह नहीं जो मन्दिर जाता है या मन्दिरों में बैठकर तत्वचर्चा कर लेता है। श्रावक वह है। जो महावीर की शिक्षाओं को जीवन में उतार कर राष्ट्र को सही रूप देता है आज श्रावक धर्म विलुप्त है। इसी का यह परिणाम है कि सारे विश्व में असंतोष की ज्वालायें धधक रही हैं और अनुशासनहीनता बढ़कर कदाचार व अनाचार का दुःशासन हो रहा है। व्यक्ति मानव धर्म की बात करता है, स्वाध्याय पढ़ता है तत्व ज्ञान की चर्चायें करता है लेकिन फिर भी वह बड़ा भारी शोषण करके गरीब जनता और राष्ट्र को धोखा देता है। जैनाचार्यों ने इन सब बातों को हजारों वर्ष पहले ही अपने दिव्य ज्ञान में देखा है अतः उन्होंने श्रावक धर्म का उल्लेख करके मानव को बचाने के लिए अणुव्रतों के रूप में सप्त व्यसनों से बचने के नाम पर विशाल साहित्य का सृजन किया और उसको श्रावक धर्म का रूप दिया। श्रावक का संबंध किसी व्यक्ति और समाज से नहीं। श्रावक इन बातों से ऊंचा उठता है और वह स्वयं के संरक्षण के लिए या पर के संरक्षण के लिए एक मात्र शुद्धि का मार्ग पकड़ता है आज के युग में महात्मा गांधी का नाम उल्लेखनीय है जिन्होंने अपने जीवन को सुलझाया और राष्ट्र को भी इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणायें दी। आज भी देश की वर्तमान स्थिति को देखते हुए इस श्रावक धर्म की अति आवश्यकता है। जो देश को सही दिशा निर्देश देकर बचा सकता है मैं चाहता हूँ कि देश के कर्णधार और नेतागण इस श्रावक धर्म की पावन पद्धतियों को पढ़ें और उससे अपने आपको अभिमंडित करके राष्ट्र का उद्धार करें।

जैन कथाओ में
चाण्डाल को स्थान

जैन साहित्य चार भागो में विभक्त है प्रथमानुयोग, चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोग। प्रथमानुयोग में कथा साहित्य है। जैन साहित्य आत्मा के पूर्ण विकास को ही मुक्ति मानता है। उसमे बडे छोटे, ऊंचे नीचे आदि का भेद नही है, यहां तीर्थंकर की कथा भी है तो चण्डाल यमपाल की कथा भी। उसका मूल उद्देश्य पाप से घृणा कराने का है प्राणी से नही।

जैन साहित्य एक मौलिक साहित्य है। विश्व के समस्त मनीषियो ने यह स्वीकार किया है कि यदि विश्व के साहित्य से जैन साहित्य अलग कर दिया जाय तो साहित्य रहता ही नही। क्योकि जैन साहित्य मे अपनी एक विशेषता है। जिसमें प्राणी के विकास और उत्थान की चर्चा को छोडकर अन्य कोई व्यर्थ की बात नही। जैन साहित्य का निर्माण ऐसे चिन्तको द्वारा हुआ है जिन्होने त्याग और ज्ञान की पूर्णतया आधार पर उसका निर्माण किया है। जैन साहित्य एकाकी नही। वह चतुर्दमुखी है। हर विषय पर उसने लक्ष्य किया है। ऐसा कोई पदार्थ नही बचता जिस पर जैन साहित्य मे विवेचन नहीं मिलता। जैनाचार्यो ने इस साहित्य का चार भागो मे विभक्त किया है। प्रथमानुयोग चरणानुयोग, करणानुयोग और द्रव्यानुयोग। इनमें प्रथमानुयोग मे कथा साहित्य आ जाता है। जैन धर्म का मूल उद्देश्य बाह्य और अन्तरग विकृतियो से आत्मा को अलग करने का है।

क्योकि आत्मा के अत्यन्तिक विकास को ही जैन ने मुक्ति के रूप मे स्वीकार किया है। कथा साहित्य मे महापुरुषो के जीवन का उल्लेख तो मिलता ही है लेकिन ऐसे पुरुषो का भी उल्लेख मिलता है। जो अन्त्यज और अकिंचिरकर थे। फिर भी व अपनी साधना के बल पर बढे इस तरह के उन्नित

का निर्माण जैनाचार्यों ने किया है और इन्होंने बतलाया है कि धर्म व्यक्ति की चीज नहीं। वह हर आत्मा का स्वभाव है, जिसको वह अपने स्वरूप की तरफ लक्ष्य बांधकर किसी भी स्थिति में प्राप्त कर सकता है। इसमें जाति की उच्चता और नीचता साधक या बाधक नहीं बन सकती है। जैन कथा साहित्य में चाहे तीर्थंकरों का वर्णन हो और चाहे जन साधारण का। उसमें पाठकों को यही पढ़ने को मिलेगा कि वह किस अवस्था और पर्याय में था और साधक अवस्था प्राप्त करके वह क्या बन गया। जैसे भगवान पार्श्वनाथ का जीव और भगवान महावीर का जीव। जैन साहित्य में न व्यक्ति का महत्त्व दिया और न प्रभुता, राज्य ऐश्वर्य और भोग विलास को। प्रत्युत इसमें जो उलझ गया उसी को सीधा नरक भेजा और जिसने इनको छोड़ा उसको सीधा स्वर्ग व मुक्ति की तरफ भेजा। सुभौम चक्रवर्ती का उदाहरण है जिसने वैभव को ही अपना जीवन माना आत्म साधना के लिए एक क्षण भी नहीं दिया उसका सीधा सातवां नरक का रास्ता बतलाया। इसका मतलब यही कि मानव को मानवता की प्राप्ति के तरीके धन वैभव नहीं कहा। इन सबसे परे ऊंची भावनायें हैं ऐसी ही जिनसे मानवता से ऊंचा उठकर महा मानवता प्राप्त कर लेता है।

इन सब बातों का सुन्दर चित्रण जैन कथा साहित्य में जगह जगह मिलता है। जिनको पढ़कर अल्पज्ञ प्राणी भी समझ सकता है कि उठने के तरीके सही माने में क्या हैं। जैन साहित्य ने इस वर्णन में पक्षपात का तरीका नहीं अपनाया वहां भी उन्होंने नीचे से नीचे प्राणी का चित्रण दिया है और बतलाया कि मानव कैसे उठ सकता है जैन साहित्य में एक यमपाल चाण्डाल की कहानी आती है वह बड़ी मनोरंजक है। लेखक का मत है कि लोग इसको पढ़ें और समझें कि पाप बुरा है या पापी जाति बड़ी या कमजोर। भगवान समन्तभद्र से शिष्य ने पूछा कि भगवान अहिंसा जैसे महान सिद्धान्त को जीवन में सही माने में किसने उतारा। इस पर शिष्य को समन्तभद्र ने कहा कि यमपाल नाम के चाण्डाल ने। इस उत्तर को सुनकर शिष्य ही क्या सब अवाक हो गये। सब सोचने लगे कि महाराज नहीं, बड़े बड़े सन्त नहीं, श्रावक नहीं, चाण्डाल कैसे ? तब समन्तभद्र ने कहा कि धर्म में मान, [illegible], पद और प्रतिष्ठा से महान नहीं होता धर्म का नाम [illegible] के निर्मल परिणामों से होता है, जिसका सम्बन्ध स्वयं के महान त्याग से है।

समन्तभद्र ने बतलाया कि यमपाल जाति से अन्त्यज था लेकिन वह अपनी जगह महान था—उसने एक दिगम्बर मुनि से जीवन का भाग बनाने के लिए गुरुजी के सामने प्रतिज्ञा की थी कि [illegible] भी प्राण जायें [illegible] नहीं करूंगा। पाठकों को याद रहना चाहिए कि चाण्डाल की आजीविका प्राणीवध से ही चला करती थी। यह घटना पोदनपुर नगर की है जिसका उल्लेख पुण्याश्रव कथाकोष में मिलता है। पोदनपुर का राजा महाबल था। उसके पुत्र का नाम बल कुमार था। राजा धार्मिक था। अष्टाह्निका पर्व के आगमन पर राजा ने नगर में [illegible] राज्य में [illegible] करें। प्रजा ने इस आज्ञा का [illegible] किया।

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

किया। राजा द्वारा नगर कोतवाल बुलाया गया। उसे आदेश दिया गया कि वह पता लगाये किसने बकरे का वध किया। कोतवाल गुप्त रूप से रात्रि में बगीचे के पास पहुंचा वहां बगीचे की मालिन अपने पति के पास बकरे मारने की चर्चा कर रही थी जिसको कोतवाल ने सुना। कोतवाल कर्तव्य परायण था। निर्भीकता पूर्वक राज्य सभा गया और राजा से कहा कि आपही के पुत्र ने बकरे का वध किया है। राजा सुनकर अवाक् हो गया। मेरे पुत्र ने यह वज्रपात किया ? राजा के लिए असह्य हो गया। राजा ने पुत्र का मोह नहीं करके उसे सूली पर चढाकर मारने का आदेश दिया। वह दिन चर्तुदशी का था कोतवाल सीधा उसी चण्डाल के यहां गया चाण्डाल ने कोतवाल को देखकर अपनी स्त्री से कहा कि चतुंदशी है मैं दिगम्बर सत से पव के दिन जीवहत्या नहीं करने की प्रतिज्ञा कर चुका हूं।

अत आज म प्राणी बध नहीं करूगा। अत कोतवाल घर आया स्त्री ने मुह से कह दिया घर नहीं है। लेकिन राजकुमार को फासी देनी थी। अमूल्य वस्त्र आभरण थे। चाडाली इस लोभ का का सवरण नहीं कर सकी और उसने इशारे से चाण्डाल को वतला दिया। चाण्डाल को पकडकर राजा के सामने उपस्थित किया।

वहां राजा को स्पष्ट बता दिया मे प्राणि वध नहीं करूगा चतुदशी का पवित्र दिन है। राजा क्रुद्ध था उसने एक नहीं सुनी। क्रोध के आवेश मे राजा न कमचारियो का आदेश दिया कि इन दोना को गठरी मे बाध तालाव मे फेंक दिया जावें। कमचारियो ने ऐसा ही किया वहां पर जन आचार्यों ने मौन नहीं रखा। उन्होंने उदात्त भावना का परिचय देते हुए बतलाया कि वह चाण्डाल था लेकिन पूर्ण निर्मल परिणामी था। इसलिए उन्होन अहिंसा का महात्म्य बतलाते हुए बहुत सुन्दर ढग से चित्रण दिया है कि उस व्रत के महात्म्य से अहिंसा के निनाद से वातावरण इनका पवित्र बना है। वह निनद स्वर्ग में भी पहुंचा। वहां के देवताओ के आसन डोल उठे वे उस निनाद से चोक उठे। सोचा यहां मृत्यु लोक का निनाद है वहां कोई महत्वपूर्ण घटना है। अत हमारा काम है कि हम भी वहां पहुचे। देवता आये उन्होंने देखा कि एक हिंसक के साथ अहिंसक भी उसी ढग से सताया जा रहा है ऐसा नहीं हो सकता। एक दानव है दूसरा महामानव है जिसके हृदय मे अहिंसा की प्रतिष्ठा है हमारा कर्तव्य है कि हम उसे इस रूप मे नहीं करने दे। देवता आग बढे ओर उस चण्डाल को हाथो मे उठाकर चूम लिया।

उन्होंने प्रतिष्ठा की उस अहिंसा की निर्मलता की जिसमे मानवता के दशन हो रहे थे। देवताओ ने उसको स्वर्ण निर्मित सिंहसन पर बैठाया लोगो बतलाया कि इसका देह जाति न बधा है लेकिन आत्मा नहीं। आत्मा न ऊच होता है आ न नीच। वह अनादि अनन्त तक एक रूप ह और एक रूप रहेगा। लोगो ने देवताओ की वाणी को स्वीकार किया। राजा भी आया उसन उस चण्डाल का सम्मान किया और उसके साथ वात्सल्य प्रगट किया। पाठको न समझ लिया होगा इस कथन का उद्देश्य। जैन सतो ने ऐसी अनेक कथाओं का चित्रण दिया। जिनका एक मात्र उद्देश्य पाप स घृणा करवाने का है। प्राणी से नहीं। ✕

अभिनन्दन ग्रंथ के हमारे परम आर्थिक सहयोगी जिनकी प्रेरणा से यह कार्य प्रतिपादित हो सका

3101 00 श्री जेठमल जी काला, गोहाटी (आसाम)

3101 00 श्री हनुमान बक्स जी गंगवाल, कुली (सीकर)

3001 00 श्री हरकचन्द जी मानिक चन्द जी काला, भगतपुरा (सीकर)

1500 00 श्री सूर्यसागर, दिगम्बर उच्चतर माध्यमिक विद्यालय परिवार, उज्जैन

1100 00 श्री नथमल जी सेठी, कलकत्ता

1001 00 श्री पन्नालाल जी बोहरा, लश्कर ग्वालियर

1001 00 श्री किशनलाल जी सेठी, डीमापुर

1000 00 श्री रतनलाल जी गंगवाल, कलकत्ता

501 00 श्री कैलाश चन्द जी शास्त्री, जयपुर

501 00 श्री अखिल विश्व जैन मिशन-केन्द्रीय समिति

501 00 श्री ज्ञानसागर दि० जैन कन्या माध्यमिक विद्यालय परिवार, उज्जैन

501 00 श्री सोहन लाल जी काला, डीमापुर

500 00 कॉटन मर्चेन्टस् एजूकेशनल एण्ड चैरिटी ट्रस्ट, उज्जैन

500 00 श्री वीरेन्द्र कुमार जी सुरेन्द्र कुमार जी बोहरा, करौली

251 00 श्रीमती ब्रह्मचारणी कमलाबाई, श्री महावीर जी (राज०)

संस्कृति और

सभ्यता के

केन्द्र :

तीर्थ

और

मन्दिर

है। हम कार्य करना चाहते है। समाज का कर्तव्य है कि इस महत्वपूर्ण काय मे हमे सहयोग दे। समाज के पास इस महान काय की सफलता के लिए कोई साधन नही है जिससे काम करने वाले काय कर सके। महामालव प्रान्त के सुप्रसिद्ध इतिहासवेत्ता प सूर्यनारायण जी साहब व्यास से भी हमने भेट की थी। उन्होने जैन पुरातत्व के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण उद्गार प्रकट किये। आपने बतलाया कि मालव मे 90 प्रतिशत जैनो का इतिहास है। एक गवावस मे ही आप लोगो की दस हजार प्रतिमायें हैं जिनके सम्बन्ध मे मै चिंतित हू। मै इस सम्बन्ध मे सरकार का ध्यान खीचने वाला हू। दुख है कि जैन समाज ने अभी तक कोई ध्यान नही दिया है। जैन बहुत सकीर्ण विचारो के हैं। हमेशा उन्होंने अपनी सामग्री को छिपाई जिसका मुझे पूर्ण रज है। उनके इन उद्गारो से हमे बहुत रज हुआ। वास्तव मे आपका कहना ठीक था। जैन ने सकीर्णता से काम लिया उसी का यह परिणाम है कि ससार इस महान धम के सिद्धान्तो से अनभिज्ञ रहा। जैन को अब तो चेतना चाहिये। इस महान् धम की सस्कृति से यदि हमे प्रेम है तो उसको प्रकाश मे लाने का प्रयत्न करे। इस पुरातत्व जैसे महत्वपूर्ण काय म योग देकर इनका उद्धार करके अपने का अमर बनाना चाहिए।

जिस प्रकार प्रत्येक रात्रि को प्रत्येक वृक्ष पर आकर पक्षी बैठते हैं, उसी प्रकार प्रत्येक जन्म में उत्पन्न होने वाला प्राणी लोक का समागम प्राप्त करता है।

—भगवती आराधना

जो इनके धर्मों से युक्त अपने को तथा अनेक धर्मों से सहित योग्य सम्बन्ध वाले पर पदार्थों को जानता है उसे निश्चित (परमार्थ) से ज्ञान कहते हैं।

—कीर्तिकेया०

ससार पाच तरह का है –द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव।

—द्वादशानुप्रेक्षा

गया। इस निर्णय का प्रदेश के प्रबुध्द वर्ग ने स्वागत किया और कार्य की प्रगति देने के लिए सर्व प्रथम श्रीमान् सेठ लालचन्द जी साहब ने अपनी धर्म पत्नी रत्नप्रभा देवी के नाम से 501 रुपयों के दान की घोषणा की। इसके साथ ही श्रीमान सेठ रामलाल जी जवाहरलाल जी ने 501 रुपये, सेठ गजराज जी गंगवाल कलकत्ता ने रु 501, सेठ सूरजमल जी साहब पाटनी ने 201 रुपयों की घोषणा की। इन घोषणाओं से कार्यकर्ताओं ने द्रुतगती के साथ संग्रहालय का कार्य आगे बढाया और तत्कालीन शासन ने भी उज्जैन, धार और देवास जिला की सामग्री एकत्रित करने के आदेश देकर महत्वपूर्ण सहयोग प्रदान किया।

यह लिखते हुए हमे जरा भी हिचकिचाहट नहीं होती है कि हमने अल्प समय व अल्प साधनों के होते हुए भी बीहड जंगलों से अल्पव्यय मे आशातीत सामग्री एकत्रित की। आज इस संग्रहालय मे करीब 419 मूर्तियो का अपूर्व संग्रह है जो समय, काल, कला और स्थापत्य की दृष्टि से महत्वपूर्ण है। इतिहास के विद्वानो, पुरातत्व अधिकारी, विश्वविद्यालय के कुलपति और जिलाध्यक्षा ने अपनी बहुमूल्य सम्मतियो मे बतलाया है कि यह मध्य प्रदेश मे अभूतपूर्व संग्रह है।

यह महामालव की स्वर्णिम निधि है, इनमे जर्मन विद्वान राठ, भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के अधिकारी डा बहादुर चन्द्र जी छावडा, श्री इलाचन्द्र जी साहब जोशी, पब्लिक इन्फोर्मेसन युनायटेड नेशंस, न्यूयार्क के डायरेक्टर श्री टी ए रमण, यू एन ओ पीटो युनिवर्सिटी जापान, महाविद्वान विक्रम विश्व विद्यालय के कुलपति डा शिवमंगलसिंह सुमन, इतिहास के महान विद्वान डा भगवतशरण उपाध्याय, मध्य प्रदेश के पुरातत्ववेत्ता विद्वान श्री श्री विष्णुधर वाकणकर साहब और जिलाध्यक्ष, श्री समरसिंह जी साहब कलेक्टर उज्जैन आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

इस संग्रहालय की व्यवस्था मे सबसे बडा योगदान माननीय वाकणकर साहब और डा सुरेन्द्रकुमार आर्य का है। इन्ही का प्रयास है कि भारतीय ज्ञानपीठ के ग्रन्थ मे इस संग्रहालय का विस्तृत परिचय प्रकाशित हो रहा है। इस संग्रहालय का एक अपना विशाल भवन है। जिसके लिए हम उज्जैन के प्रसिद्ध व्यवसायी सेठ रामलाल जी और सेठ सूरजमल जी पाटनी के आभारी है जिन्होंने इस महान कार्य को संजोने मे भवन निर्माण कराकर महान योगदान दिया है।

यह संग्रहालय जयसिंहपुरा, उज्जैन मे स्थापित है। अनुसंधान के पचासों विद्यार्थियों ने इससे बराबर लाभ उठाया है। विश्व विद्यालय के कुलपति माननीय डा "सुमन" साहब का इस पर वरदहस्त है। आज भी उनकी भावना है कि यह संग्रहालय वटवृक्ष की तरह विशाल रूप लेवें। जिले की पुरातत्व समिति के सम्मानीय सदस्यों ने भी इसका निरीक्षण करके राय दी है कि इसको विशाल रुप दिया जाय। संग्रहालय के वर्तमान संरक्षक है माननीय बाबू भूपेन्द्रकुमार जी साहब सेठी। हमारी हार्दिक भावना है कि उज्जैन जसे नगर मे यह संग्रहालय महत्वपूर्ण स्थान ले और भेदभाव की परम्परा से ऊंचा उठकर भारतीय इतिहास की पुरातन सामग्री के संरक्षक की अग्रपंक्ति के रूप मे खडा हो।

जिलों की मूर्तिया एकत्रित करने के हमें तुरन्त आदेश दिये, सौभाग्य से उनसे हम इन मूर्तियों का लाने में सबसे बडा सहयोग मिश्रा... साहब पिडावा का मिला, जिन्होंने थोडी भी मेहनत लेकर इस विशाल संग्रहालय का व... सहयोग दिया।

आज इस संग्रहालय में करीब 551 मूर्तियों का अभूतपूर्व संग्रह है जो ... कला और समय दृष्टि से हर तरह से महत्त्वपूर्ण है। इस संग्रहालय में विभिन्न काल की अद्भुत मूर्तिया हैं। इतिहास के विद्वानों ने अपनी बहुमूल्य सम्मतियों में बतलाया है कि यह अभूतपूर्व संग्रह है, भारतवर्ष में जैन मूर्तियों का इतना बडा संग्रहालय कहीं भी नहीं है। उन्होंने लिखा है कि महामालव की यह सर्वोत्तम निधि है। सम्मतिदाताओं की बहुमूल्य सम्मतियां को हम अविलम्ब अलग प्रकाशित कर रहे हैं। जर्मनी के इतिहास के महाविद्वान राठ भारत सरकार के पुरातत्व विभाग के डायरेक्टर श्री बहादुरमलजी छाबडा श्री इन्द्रचन्द जी शास्त्री, पब्लिक इन्फार्मेशन युनाइटेड नेशन्स न्यूयार्क श्री टी ए रमन, डायरेक्टर डिपार्टमेंट न्यूयार्क मिस्टर यू एन मा का थोटो युनिवर्सिटी जापान आदि ने काफी प्रशंसा की है। भारतवर्ष के इतिहास के प्रसिद्ध महाविद्वान भागवतशरण उपाध्याय मध्यप्रदेश के पुरातत्व वेत्ता विद्वान वाकणकर साहब, डा एन, श्री सुरेन्द्र कुमार आर्य आदि महानुभावों ने इसके प्रति उद्गार ही प्रकट नहीं किये हैं लेकिन इस संग्रहालय में पूर्ण योगदान दिया है। इस संग्रहालय का एक विशाल भवन है जिसके लिए उज्जैन के प्रसिद्ध व्यवसायी श्रीमान सेठ रामलाल जी जवाहरलाल जी व श्रीमान सेठ सूरजमल जी साहब पाटनी ने अपनी चंचला लक्ष्मी को दान देकर उपयोग किया है जिनका उद्घाटन भारत सरकार के गृहमंत्री माननीय डा कैलाशनाथ जी काटजू के कर कमलों से ता 4-1-54 को हुआ। यह संग्रहालय उज्जैन जैसे ऐतिहासिक नगर में स्थापित है। अनुसंधान के विद्यार्थी बराबर इनसे लाभ उठाते हैं। विश्वविद्यालय के कुलपति माननीय डा शिवमंगलसिंह साहब सुमन इसकी तरफ काफी आकर्षित हैं। आज भी वे चाहते हैं कि यह संग्रहालय विशाल रूप लेवें। उनका जैन साहित्य और इतिहास पर गहरा प्रेम है। स्थानीय कलेक्टर साहब समरसिंह जी जिला उज्जैन जिनके संरक्षण में जिला पुरातत्व कमेटी बन चुकी है। वे भी चाहते हैं कि इस संग्रहालय को विशाल रूप दिया जाय। संग्रहालय के वर्तमान संरक्षक माननीय बाबू भूपेन्द्रकुमारजी सेठी हैं। हम चाहते हैं कि उनके नेतृत्व में यह संग्रहालय आगे बढे। उज्जैन स्वयं एक ऐतिहासिक स्थल है। जैन साहित्य और जैन इतिहास से इसका बहुत बडा सम्बन्ध है। यहां पर इतनी विशाल पुरातन सामग्री आज भी उपलब्ध है जिससे जैन इतिहास का मार्ग मिल सकता है, जैसे शहर के बीच का नती दरवाजा रामघाट पर प्राप्त जैन अवशेष महाकाल मन्दिर अवंती पार्श्वनाथ मन्दिर के आस-पास के प्रदेश का स्थान। आशा है विद्वान इस पर अवश्य ध्यान देंगे।

तीर्थ और मन्दिर

हडप्पा, मोहनजोदडो, सिन्धु नदी की खुदाई से प्राप्त सामग्री ने यह तो सिद्ध कर दिया है कि जैन धर्म और जैन संस्कृति इतिहास काल से पूर्व मे थी। मालव ने इस संस्कृति की वृद्धि मे अपना महत्वपूर्ण योग दिया है। आज उन्हें जीवित रखने तथा सुरक्षा प्रदान करने के लिए श्री दिगम्बर जैन संग्रहालय, उज्जैन अहम भूमिका का निर्वाहन कर रहा है।

भारत वर्ष मे अनेक धर्म है उनकी विभिन्न संस्कृतिया है। उनमे जैन, बौद्ध और वैदिक संस्कृतिया प्राचीन मानी जाती हैं जिनके महान योगदान से भारत वर्ष का इतिहास सदैव ही गौरवपूर्ण रहा है।

इन संस्कृतियो मे और धर्मो मे जैन धर्म भी अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है जिसके महान् साहित्य, स्थापत्य और मूर्ति कला ने भारतवर्ष का मस्तक ऊंचा किया है। भारतवर्ष के ही नही किन्तु विदेशी विद्वानो तक ने यह स्वीकार किया है कि कला के और स्थापत्य के विकास मे सर्वोपरि योगदान जैनो का है जिसने इतिहास के पन्नो मे अभूतपूर्व परिवर्तन किया है। फिर भी हम यह लिखते हुए दुख होता है कि जैनो का देश मे इतना बडा स्थापत्य और कला पूर्ण वैभव होते हुए भी उसकी खोज की तरफ शताब्दियो तक भारतीय व विदेशी विद्वानो का ध्यान तक नही गया और जैन इतिहास अंधकार मे पडा रहा। इसी का यह परिणाम रहा कि जैन धर्म की प्राचीनता के सम्बन्ध मे विभिन्न प्रकार की भ्रांत विचारधाराएँ चलती रही और यह स्थिति 18 वी शताब्दी तक बराबर बनी रही।

कलकत्ता के रॉयल एशियाटिक सोसायटी की सन् 1774 स्थापना की गई थी। इसके प्रमुख विद्वानो ने भारतीय इतिहास के अनेक अंगो पर अनुसंधान किया। लेकिन जैन इतिहास की तरफ जिस रूप मे ध्यान दिया जाना चाहिए, वह नही गया। सिर्फ उनका ध्यान वैदिक साहित्य और बौद्ध साहित्य पर गया। इससे देश की महान श्रमण संस्कृति उपेक्षित रही है जिनसे भारतवर्ष का हजारो वर्षो का इतिहास सर्वांगीण नही बन सका। हा, डा हर्मन याकोबी आदि कुछ विदेशी विद्वानो का ध्यान इस तरफ अवश्य गया था। उनके कारण जैन इतिहास प्रकाश मे आया। इसके बाद जैन इतिहास की तरफ आकर्षण होने का कारण मथुरा का कंकाली टीला बना जिसकी खुदाई मे तीर्थंकर प्रतिमा का

भारत हमेशा जैन साहित्य निर्माण, मूर्ति कला और स्थापत्य कला का केन्द्र रहा ही है लेकिन स्थापत्य और मूर्ति कला म आज का मध्यप्रदेश व पूव का महामालव भी पीछे नहीं रहा। इस मध्यप्रदेश का गम्बन्ध पाराणिक माहित्य से तो हजारो लाखो वर्षो का उपलब्ध होता है लेकिन वर्तमान प्राप्त पुरात्व सामग्री के आधार से भी कहा जा सकता है कि यहा चौथी शताब्दी से लेकर पन्द्रहवी शताब्दी तक जैनो का चरम सीमा पर उत्कर्ष रहा है जिसका प्रमाण है यहा की कण 2 भूमि पर प्राप्त पुरातत्व सामग्री। आज भी यहा कुछ ऐसे स्थल है जहा हजारा की सख्या म मूर्तिया बिखरी पडी है जिनमे गधावल, भव-रासा, बैजवाड, बदनावर, जामनेर, गोदलमऊ का तालाब, सुन्दरसी, पानीगाव, राजगढ, खिलचीपुर, इच्छावर, इन्दौर, ईसागढ, गुना के आसपास के स्थल, बारछा, पचौर आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। मालव भूमि पर कुछ ऐसी पुण्य भूमिया भी है जो हमारे सिद्ध क्षेत्र है जिनमे बडवानी, सिद्धवरकूट, ऊन आदि के नाम प्रमुख है। लेकिन इन का भी हमारे पास कोई प्रामाणिक इतिहास नही है। सिद्धवरकूट का वर्तमान स्थल भी सदिग्ध है क्योकि वहा पर हमारा कोई प्राचीन अवशेष नहीं है। सही रूप से अगर सिद्धवरकूट हमारा हो सकता है तो नदी से परे का पहाडी स्थान, जहा पर आज भी हमारी मूर्तिया और मन्दिरो के अवशेष मिल रहे हैं। लेकिन दुख है कि जन समाज का ध्यान आज तक भी अपनी प्राचीन सम्पत्ति का बटोरन की तरफ नहीं गया। उसने हमेशा ही इन टुकडो को उपेक्षा से ही देखा और वह इनका मूल्य नही आक सका इसी का यह परिणाम रहा कि साहित्यिक क्षेत्र और ऐति-हासिक क्षत्र म हम पिछड गये और शताब्दियो तक हम वचित हो गये। आज भी इतिहास के पन्ना पर हम राधे जाते हैं।

मध्यप्रदेश व मालव प्रात अवतिका नगरी के सबध मे कई एतिहासिक लख निकले है लेकिन उनम जैनो का उल्लेख तक नहीं मिलता है। वतमान मध्यप्रदेश म करीब 50 वर्ष से मालवा प्रातीय दि जन सभा काय कर रही है और इसका एक पुरातत्व विभाग भी था लेकिन उसमे कोई कार्य नही हो सका। स 1948 मे बडनगर म उसका अधिवेशन था और उस विभाग का मै मत्री बनाया गया जो आज तक हू लेकिन उक्त सभा ने इस पुनीत काय मे कोई रूचि नहीं दिखाई। उज्जैन म श्रीमान प अनतराजी साहब आयुर्वेदाचार्य और स्वर्गीय हकीम फूलचन्द जी साहब ऐसे व्यक्ति म थ जिनको इस विषय म काफी रूचि थी और वे बराबर पुरातत्व सामग्री के सरक्षण के लिए प्रयत्न करत थे और उन्ही के पूर्ण सहयोग से इस विशाल सग्रहालय की विधिवत् स्थापना स 1948 मे की गई। इन महत्वपूर्ण कार्य मे स्थानीय डा महाडिक साहब और दौलतराम जी साहब मत्री एडवोकट का भी पूर्ण सहयोग रहा। इनका एक घुमक्कड क्लब था और इन साथिया का मूल उद्-देश्य प्राचीन सामग्रियो का अनुसधान था। स्वर्गीय स्वनाम धन्य रायबहादुर सेठ लालचन्द जी साहब न उक्त निर्णय का स्वागत किया और इस कार्य को चलाने के लिए सब प्रथम अपनी धमपत्नी सठानी रत्नप्रभा देवी के नाम से 501/ पाच सौ एक रुपये प्रदान किय। इसी तरह 501/- श्रीमान् सेठ रामलाल जवाहरलालजी, 501/ सेठ गजराज जी साहब गगवाल कलकत्ता और 201/ सेठ सूरज मलजी साहब पाटनी ने प्रदान किये व सेठ लालचन्द जी साहब सेठी के प्रयत्न से 501/- प्रति वष दन की स्वीकृति जे एन जनी ट्रस्ट फड इन्दौर से भी मिली। जिससे इस सग्रहालय का कार्य द्रुतगति से साथ आगे बढ गया। तत्कालीन शासन न भी हम पूरा सहयोग दिया और उज्जैन बाग, दवास आदि

जैन पुरातत्व के सम्बन्ध में महत्वपूर्ण मुलाकात

जैन धर्म और सस्कृति से हमे अति प्रेम है तो हमें उसे प्रकाश मे लाने के लिए उसकी रक्षा करनी होगी। यह पुरातत्व सग्रहालय आदि के द्वारा भी रक्षा करने का एक माध्यम हो सकता है।

महामालव प्रात के माननीय शिक्षा सचिव प० काशीनाथजी साहब त्रिवेदी का उज्जैन मे ता 8–8–48 को शुभागमन हुआ। जैन पुरातत्व के सम्बन्ध मे आवश्यकीय बातें करने के लिए हमने आपसे समय मागा। आपने हमें सहर्ष स्वीकृति दी। शाम को 7 बजे हम ने श्रीमान् हकीम फूलचन्दजी साहब व पडित अनन्तराजीजी साहब आदि ने आपसे भेंट की। आपने हमारी सब बाते ध्यान से सुनी तथा एक क्लर्क के साथ हमको पुरातत्व विभाग के डाईरेक्टर साहब के पास भेज दिया और कहा कि आप उनसे मिलिये। सतोष न हो तो उनको साथ लेकर फिर मेरे से मिलिये। हमने डाईरेक्टर साहब से भेंट की। करीब आधे घण्टे तक डाईरेक्टर साहब से हमारी बातें हुई। महामालव प्रान्त के प्राचीन इतिहास के सम्बन्ध मे उनको पूर्ण जानकारी कराई गयी और कहा गया कि उन महत्वपूर्ण सामग्री का एकत्रित करने के लिए हम लोगो ने दृढ संकल्प किया है। हमारी बातो से डाईरेक्टर साहब को बहुत प्रसन्नता ही नहीं हुई किन्तु जैन इतिहास के सम्बन्ध मे बतलाई हुई बातो से वे प्रभावित भी हुए हमने आपके सामने दो मागें रखी थी। जिनमे मुख्य थी सरकार के सहयोग की।

इस पर प्रसन्नता प्रकट करते हुए आपने कहा कि सरकार आपके साथ है। आपके इस कार्य से मुझे खुशी हुई है। सरकार इस कार्य के लिए जल्दी से जल्दी महत्वपूर्ण कदम उठाने वाली है। जैन पुरातत्व से हमें काफी प्रेम है, महामालव मे उनकी बाहुल्यता है। आप विश्वास रखिये सरकार आपके कार्य मे दिलचस्पी लेगी। आप काम करिये।

अपना काम या सरकार के सामने रखिये। हमें बराबर रिपोर्ट भेजिए। मैं पुरातत्व सामग्री का स्वयं आकर देखूगा। उसका उचित व्यवस्था करना अपना कर्तव्य समझूगा। पता है उन स्थानो की हमसे सूचि मागी जहां हमने अन्वेषण किया। हमने सूचि पेश की। उसे देखकर आप प्रसन्न हुए और वहा का [illegible] हम सहर्ष स्वीकृति दी। इस तरह [illegible] महत्वपूर्ण [illegible] मिला

चिर उपेक्षित तीर्थ

कोल्हुवा पहाड़ (कोटि शिला)

कोल्हुवा पहाड (कोटि शिला) बिहार मे गयाजी से 60 किलो मीटर दूर स्थित एक ऐसा महान् चिर उपेक्षित जन तीथ स्थान है जिसकी खोज से हमे एक महान तीथ का पता लग सकता है। यहां जैन सस्कृति के अनुरुप भव्य देवालय, मूर्तियो, पादुशिला आदि सब कुछ विद्यमान है। तीथ सरक्षक उस ओर कार्य कर एक नवीन क्रांति कर सकते हैं और लोगो को एक ओर तीथ के लिये आकर्षित कर सकते हैं।

बिहार प्रांत जैन सस्कृति और जैन तीर्थों के लिए आदर्श प्रात है जिसने अपनी गोद में महान् पुरुषो को जन्म दिया और उनके चरण रज से पवित्र हुआ। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध का प्रमुख विचरण स्थल होने से ही इस प्रदेश का नाम विहार पडा। आज भी इस प्रांत मे जैन सस्कृति के प्राण अनक तीर्थ है जिनमे सम्मेद शिखर, पावापुर, राजगृही, पटना, बनारस, अयोध्या आदि क नाम उल्लेखनीय ह। फिर भी इस प्रात म कुछ ऐसे तीर्थ मौजूद हैं जिनका पुरातत्व की दृष्टि से अति महत्त्व हैं और व उपेक्षित है। उन उपेक्षित तीर्थों मे प्रमुख रूप से कोल्हुआ पहाड हजारीबाग जिला म ह और गयाजी से चालीस मील दूर एक बीहड जगल मे है। इस महान् तीर्थ के सम्बन्ध मे अभी 2 दि जैन महासमिति के बुलेटिन के जुलाई मास के अक मे इतिहास के महान विद्वान प्रोफेसर राजारामजी डाक्टर ने प्रकाश डाला है। यह बिल्कुल सही बात है कि यह दि जैन समाज का अति प्राचीन तीर्थ स्थान है और इसके सम्बन्ध मे विद्वानो द्वारा खोज होना अनिवार्य है। करीब 10 12 वर्ष पहले इतिहास के सुप्रसिद्ध रिसर्च इन्स्टीट्यूट पक्तमाल के सचालक माननीय डी जी महाजन साहब का उज्जैन म पदार्पण हुआ था और आतिथ्य का सौभाग्य 2 3 दिन तक मुझे मिला था। उस समय एतिहासिक स्थानो की चर्चा के दौरान मे उन्होने अति उत्सुकता के साथ मुझे कहा कि "सेठीजी जितने भी जैन अभी तीथ देखे हैं उन सब म प्राचीन तीथ कोल्हुआ पहाड है जिसका नाम

अभी तक जैन समाज न सुना नहीं है। मेरी दृष्टि से यह कोल्हुवा पहाड़ ही सम्मेद शिखर का कोट मिला होना चाहिए। दुख है कि जैन समाज लाखों रुपये अन्य कार्यों म खर्च कर देता है लेकिन अपने प्राचीन गौरवमय स्थानों की खोज के लिए एक पैसा भी खर्च नहीं करता।" उनके हृदय म एक दर्द था और वास्तव मे वह सही था। तब ही से मेरी इच्छा थी कि मैं 2-3 मास का समय निकालकर बिहार के अन्य तीर्थों के साथ इस महान ऐतिहासिक स्थल के दर्शन करके अपने आपको धन्य मानू। गत वर्ष इसी लक्ष्य को लेकर मैं, मेरी धर्म पत्नी और सुपुत्री नानकवरी के साथ इन ऐतिहासिक स्थानों के दर्शन करने के लिए निकल पड़ा। मेरी यह यात्रा काफी लम्बी रही। इस यात्रा का उद्देश्य सिर्फ तीर्थ वदना का नहीं था, उद्देश्य था ऐतिहासिक दृष्टि से हर तीर्थ का निरीक्षण और वहा की प्राचीन अर्वाचीन स्थितियों का अध्ययन। मैं बिहार और उड़ीसा के सब ही तीर्थों पर घूमा, मैं इन सबकी स्थितियों के सम्बन्ध मे समय मिलने पर अलग ही प्रकाश डालूगा। इस यात्रा मे सबसे बड़ी उत्सुकता कोल्हुवा पहाड़ के दर्शनों की थी और इसके लिए मैं गयाजी गया। वहा के समाज के व्यक्तियों से सम्पर्क किया लेकिन इस महान् तीर्थ के प्रति सिर्फ मुझे उपेक्षा के अलावा कुछ नहीं मिला जिससे मुझे असीम वेदना हुई। इस तीर्थ के मत्री श्री दीपचन्द जी सेठी थे। मैं उनके पास गया और थोड़े मे समय मे उन्होंने इस पहाड़ की समस्त कहानी मुझे सुना दी। उनसे यही मालूम पड़ा कि यह तीर्थ अभी भी उपेक्षित है। इस तीर्थ पर ब्राह्मण पडों का राज्य है। वहा पर भगवान पार्श्वनाथ की प्रतिमा के सामने बकरों की बली होती है, और वह भैरो के नाम से पूजी जाती है। उन्होंने मुझे यह भी बतलाया कि हमने इस तीर्थ को कब्जे मे लेने के लिए बिहार सरकार और केन्द्रीय सरकार से काफी लिखा पटी की। केन्द्रीय सरकार ने एक कमेटी का गठन भी किया कि वह कमेटी निर्णय दे कि जिस प्रतिमा के सामने बलिदान होता है वह प्रतिमा कौन की है। आदेशानुसार भारतीय पुरातत्व एव सर्वेक्षण विभाग तथा विधि विभाग बिहार सरकार के सदस्य वहा पर पधारे। उन्होंने मूर्ति का निरीक्षण किया लेकिन वे पडों के प्रभाव मे आ गये। वे सही निर्णय न दे सके। उसी कमेटी के अनन्य सदस्य श्री रघुनदन प्रसाद अपर सचिव बिहार सरकार का 11 फरवरी, 1975 का पत्र मिला जिसमे उन्होंने लिखा कि विवादग्रस्त मूर्ति की जाच राजकीय स्तर पर भारतीय पुरातत्व एव सर्वेक्षण विभाग की सहायता से की गई लेकिन सरकार इस निष्कर्ष पर पहुची है कि वर्तमान स्थिति मे विवादग्रस्त मूर्ति के सम्बन्ध मे कोई हस्तक्षेप करना उचित नहीं मानती। अत प्रचलित व्यवस्था ही कायम रखी जाय। यह निर्णय वास्तव म पक्षपातपूर्ण था। मैंने स्वय ने उस पत्र को देखा व उसकी नहीं प्रतिलिपि भी मैंने ली जो आज भी मेरे पास सुरक्षित है। इस जानकारी से मेरे हृदय म वेदना हुई। मैंने श्री दीपचन्द जी साहब से आग्रह किया कि वे मेरे साथ चले और इस महान तीर्थ के दर्शनों का अवसर द। गयाजी से यह तीर्थ सिर्फ 40 मील है। लेकिन वहा जाने के लिए कोई सुगम मार्ग नहीं है अत उनका आग्रह था कि आप साथ म महिलाओं को न लेकर स्वय एकाकी चले। हम दोनों गया जी से चतरा जाने वाली बस म बैठे। वहा से हटरगंज ग्राम गये और हटरगंज से 6 मील दूर [illegible] नाम के ग्राम म पैदल पहुचे। यह एक छोटा सा ग्राम है। कुछ घरों की बस्ती है। धर्मशाला म उस समय न [illegible] था और न कोई नौकर। हम करीब 2 बजे धूप [illegible] गर्मी म दालार [illegible] म पहुचे। वहा से [illegible] तीन और [illegible] नाथ [illegible] से [illegible] है। आ

ौमचन्द जी साथ न जान क लिए असमर्थता प्रकट की। म एकाकी था। रास्ते से बिलकुल अपरिचित। गाव म एक साहब थे जो बडे सभ्य थे। उनको मैंने मेरी गाथा सुनाई। उन्होने मेरे साथ एक लडके को तयार कर दिया जिसका नाम मोहन था। जब हमने प्रस्थान किया 3 बज चुके थे। धूप अपनी प्रखरता पर था। लेकिन हृदय का उत्साह अदम्य था। प्रकृति ने थोडी दूर चलने पर हमारा साथ दिया और बादलो ने छाया कर दी। पवत का रास्ता बडा ऊबड खाबड है। चढाई करीब दो मील की है। लकिन चलने म कठिनाई अवश्य होती है क्योकि आवागमन का अभाव होने से मार्ग बना हुआ नही है।

करीब चार बजे हम पहाड पर पहुचे। पहाड पर चारो तरफ एक विशाल शिलाखण्डो का परकोटा है। यह पूरा पहाड विशाल शिलाओ और चटटानो से ही भरा पडा है। परकोटा के पास हम एक देवी मूर्ति मिली जो खण्डित थी। वहा से लोग उसको नक्कटी देवी कहते है। परकोटे मे घुसते ही विशाल चटटानो के दशन तो होते ही है लेकिन इन चटटानो के आस पास मन्दिर और मूर्तियो के ध्वस्त प्राचीन अवशेष भी प्रचुर मात्रा म बिखरे पडे है। जिनके देखने से पता चलता है कि यह क्षेत्र या स्थान किसी समय जैन सस्कृति का प्रमुख केन्द्र व तीथ स्थान रहा है। इस स्थान से आगे बढने पर हम एक चटटान पर पहुचते ही छोटा सा दिगम्बर जन मन्दिर दिखलाई दिया। वह बद था। उसम भगवान पाश्वनाथ की एक प्रतिमा विराजमान थी। लेकिन हम दशन नही कर सके। और न ही यह जानकारी ले सके कि वह कितनी प्राचीन है। माननाय प्रोफेसर साहब ने इस मन्दिर का निर्माण का 1682 का अनुमानत बतलाया है इसी मन्दिर के पास एक विशाल चटटान है। यह चटटान सभा मण्डप के नाम से पुकारी जाती है। यह एक ऐसी चटटान है जिस पर हजारो सत बैठकर कभी आत्म चिन्तन म बैठत होग। इसी चटटान से पवत की सारी स्थिति व उसका दृश्य इतना मनोरम दिखलाई देता है कि दशक घण्टो तक मन्त्र-मुग्ध की तरह इस प्राकृतिक छटा म अपने आप को खो देता है और उसे गहरी शान्ति का अनुभव होता है। इस पहाडी पर अनेक छोटे मोटे सरोवर है और कई कन्दराए और गुफाए है। उन गुफाओ म दिवारो पर ही प्राकृतिक खडगासन और पद्मासन मूर्तियें अ कित हैं जिनकी सौम्यता, वीतरागता और अन्तदृष्टि अति विलक्षण है। इस तरह की मूर्तिया पहाडो की चट्टानो पर इस रूप म अ कित बहुत कम दिखलाई देती है। मेरी दृष्टि म इन मूर्तियो का इतिहास हजारो वर्ष पहले का हो सकता है और इससे इस तीथ की प्राचीनता का भी मौलिक इतिहास सामने आता है। जितनी भी मूर्तिया वहा अ कित है वे सब तीथकर प्रतिमायें है। इन प्रतिमाओ के दशन के बाद दशक को आगे बढने की इच्छा नही होती, वह घण्टो तक खडा रहने पर भी तृप्त नही होता। मुझे भी बडी मुश्किल से यह जगह छोडनी पडी। इसके बाद का रास्ता बडा ही सकटपूर्ण था। फिर भी हृदय की उत्सुकता ने हम पीछे पर उठाने के लिए आग्रह नही किया। हम गिरते फिसलते एक ऐसी पहाडी के पास पहुचे जिस पर चढना आसान नही था। फिर भी मैंने साहस किया। उस शिला के उतार पर दो चरण चिन्ह उकेरे हुए मिले जिन्हे देखकर यह अनुभव हुआ कि ये चरण चिन्ह किन्ही महान् साधक के है जिन्होने यहा से आत्म-साधना करके निर्वाण की प्राप्ति की है।

इसी स्थान के आगे एक शैलेश्वरी देवी का मन्दिर है। मेरी दृष्टि मे वह एक जैन देवी है। इस देवी मन्दिर पर पडो का साम्राज्य है। यहा पर हमको तीन पडो के दशन हुए। उन्होने यहा

बतलाया कि हमारे पंडा के घर करीब 200 ह जिनकी आजीविका का आधार यह देवी और भैरु महाराज है। रामनवमी पर यहा प्रतिवर्ष मेला भरता है। हजारो यात्री आते है। पंडा ने बतलाया कि यह स्थान राजा विराट का है। यहा अज्ञात वास मे पाचो पाण्डव भी आये है और राम लक्ष्मण ने भी अपने परो से इस भूमि को पवित्र किया है। यहा पर एक ऐसी विशाल चट्टान है जिसका नाम भार शिला कहते है। इसी चट्टान के पास एक गुफा है जिसमे 11 फणयुक्त पार्श्वनाथ की पद्मासन प्रतिमा विराजमान है। यह प्रतिमा अति सुन्दर और मनोज्ञ है, सम्भव है इसी प्रतिमा के सामने आगे बकरो की पहले बली होती थी। आज भी यह प्रतिमा पडो के अधिकार मे है। मेरी दृष्टि मे यह प्रतिमा करीब 2000 वर्ष प्राचीन होना चाहिये। इसके बाद हमने पहाड के प्रत्येक हिस्से पर घूम कर देखा तो हमे कई जगह जैन मूर्तिया के अवशेष और मन्दिरो के अवशेष दिखलाई दिये। मैंने यह निर्णय लिया कि यह तीर्थ एक अति प्राचीन तीर्थ है। जैन विद्वानो का कर्तव्य है कि वे इस महान् तीर्थ की तरफ ध्यान दे और इसको प्रकाश मे लाने का प्रयास करें। मेरे ख्याल मे यह स्थान कोटि शिला का भी हो सकता है क्योकि यह पहाड शिला और चट्टानो मे ही व्याप्त है, यह वही कोटि शिला हो सकती है जिसका उल्लेख निर्वाण काण्ड मे किया गया है, क्योकि इस पहाड के पास आज भी कलिंग देश की सीमायें लागू पडती है।

इस तीर्थ के सम्बन्ध मे मैंने सुप्रसिद्ध समाज सेवी नथमलजी साहब सेठी कलकत्ता से भी चर्चा की और श्री प्रकाश जी जैन सम्पादक युगवीर पटना से भी चर्चा की। मैंने उनको कहा कि इसके लिए बंगाल बिहार प्रांतीय तीर्थ क्षेत्र कमेटी के आगे बढे। लेकिन अभी तक भी इसकी तरफ किसी का ध्यान नही गया। मैं समाज से सविनय निवेदन करता हू कि वे समय की गति देख के अपने जीवन मे परिवर्तन लावें और अपने प्राचीन वैभव को बटोरने का प्रयास करें। वही समाज जिंदा रह सकेगा जिसका इतिहास और साहित्य जिंदा है। आज युग बिम्ब प्रतिष्ठायें और मूर्तियो को बढाने का नहीं है। इनसे समाज के जीवन मे कोई परिवर्तन नही आया है और न आ सकता है। समाज का कर्तव्य है कि इन बातो को सोचे, आत्म निरीक्षण करें और गहन अन्धकार मे पडे हुए इन जीवन्त तीर्थ स्थलो के विकास मे अपनी शक्तियो को लगाने का प्रयास करें। समय मिलने पर मै अन्य तीर्थ स्थलो के सबंध मे भी विचार प्रकट करूगा। यह निश्चित है कि दि० जैन समाज के तीर्थों मे सिर्फ मांगी तुंगी गजपंथा को छोडकर कही भी इतने प्राचीन अवशेष नही मिलते जितने प्राचीन अवशेष मूर्तियो की उपलब्धिया इस कोल्हुवा पहाड पर है। विशेषता यह है कि यहा पर समस्त मूर्तिया पहाड की विशाल चट्टानो पर अंकित है। आशा है समाज के इतिहास के विद्वान इनकी तरफ ध्यान देंगे और निर्णय लेंगे कि वास्तव मे कोल्हुवा पहाड का सही इतिहास क्या है ?

❁ ✻ ❁

जामनेर एक उपेक्षित स्थल

मालवा के कोने-कोने में जैन सस्कृति, सम्यता बिखरी पडी है। उनमें से एक महान् स्थान है जामनेर जहा असख्य जैन मूर्तिया और अवशेष यह बता रहे है कि यह किसी जमाने में जन-श्रवण सस्कृति का महान केन्द्र रहा होगा। सरकार और समाज उन्हें सुरक्षित करने के लिए ठोस कदम उठाले तो समयोचित काय होगा।

मध्यप्रदेश मे जगह 2 जैन मूर्तिये व उनके अवशेप इतने विखरे पडे है, जिनका देखकर हृदय रा उठता है और दु ख होता है कि इन सास्कृति चेतना के प्रतीक प्रेरणा स्त्रोत कला पूर्ण अवशेषो को वटोरने के लिए न सरकार का सकल्प और न समाज का। इनके वटोरने के लिए उज्जैन मे कुछ सम्मानीय मित्रो व पुरातत्व प्रेमियो के सहयोग से एक सग्रहालय की स्थापना की गइ थी। तत्कालीन मध्य भारत सरकार के सहयोग से कई जिलो मे विखरे इन अवशेपा का वटोरने का प्रयास किया गया था और इस सग्रहालय न कुछ ही समय मे एक विशाल रुप ले लिया। आज इस सग्रहा-लय मे करीव 501 प्राचीन और वहुमूल्य अवशेषो का आदर पूर्ण सग्रह है जिसको देखकर दश और विदेश के विद्वानो ने समस्त को अमूल्य निधिया घोपित किया है और इन सग्रह को जा सग्रहालयो म आदश सग्रहालय वतलाया है, लेकिन मध्य प्रदेश शासन वनने के वाद यह सग्रहालय कुछ भी काम नही कर सका और इसकी प्रगति रुक गई। जिससे आज मध्य प्रदेश म यह अमूल्यनिधि चारा तरफ विखरी पडी है और यह प्राय नष्ट सी हो रही है। हमने 2500 वा निर्वाण महोत्सव समिति के केन्द्रीय कार्यालय से भी इस सग्रहालय के विकास के लिए विनम्र निवेदन किया था और उनके कायक्रम म भी इनको लिया है लेकिन अभी तक इस सग्रहालय को विशाल रुप देन के लिए कोइ कदम नहा उठाया गया है। मध्य प्रदेश शासन और केन्द्रीय पुरातत्व विभाग ने भी कितनी ही वार निवेदन किया गया है लेकिन वहा से भी कोई उचित जवाव नही आया है जिनसे हम इस काम को आगे वढा सकें। मध्य

प्रदेश शासन द्वारा भगवान महावीर क 2500 वा निर्वाण महोत्सव के उपलक्ष्य म राज्य स्तर पर एक कमेटी गठित की गई है।

इस समिति ने अवश्य कायक्रम मे इस सग्रहालय को सम्मिलित किया है। मध्यप्रदेश म शाजापुर जिला में एक जामनेर नामक ऐतिहासिक स्थान है। किसी समय यह स्थान अतिशय क्षत्र म माना जाता था। लेकिन बहुत समय से जैन समाज के द्वारा यह स्थान भूला दिया गया और सैकडो वर्षो से यह उपेक्षित ही नही हो गया लेकिन विस्मरणीय भी हो गया। यह स्थान भोपाल और उज्जैन के बीच मे सुजालपुर मण्डी स्टेशन से करीब 15-20 मील पर है। इस स्थान से 2-4 मूर्तिया उज्जन सग्रहालय मे कई वर्षो पूव आई थी जो परमारकालीन थी। फिर भी राज्य की तरफ से खास ध्यान नही दिया गया। मेरे आन वाले अजैन कपडे के व्यापारियो न कइ बार मुझे आग्रह दिया कि आप जामनेर आइये और आपके यहा की अमूल्य उस कला पुरा निधियो को आकर देखिए जो वे नष्ट भी हो रही हैं जिनको सजोने वाला कोई नही है। उनकी प्रेरणा से हमन व मित्र श्री फूलचन्द जी साहब भाभरी मन्त्री श्री पाश्वनाथ मक्सी क्षेत्र ने तय किया कि जामनेर ही नही किन्तु उसके आसपास के ग्राम स्थानो को भी देखा जाय जहा यह सास्कृतिक चेतना की महत्व पूर्ण सामग्री बिखरी पडी है। श्री भांभरी जी ने हमारी बात स्वीकार की और हमने जान के पहल विक्रम विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग के महान विद्वान और मध्य प्रदेश के सुप्रसिद्ध पुरातत्व वेत्ता श्री डा वाकर जफर साहब और उनके साथी माननीय डा सुरेन्द्र कुमार आय से भी निवेदन किया कि आप पधारें और इन अमूल्य सामग्रियो को दखकर हमे परामर्श दें। हमारी प्रार्थना स्वीकार की और हम सब एक फोटोग्राफर को साथ लेकर मक्सी, शाजापुर आदि स्थला का निरीक्षण करते हुए कार टा जा पहु च वहा क लोगो के सहयोग मे हम उस स्थान पर पहुचे जहा एक गुफा मे ये अमूल्य निधिया थी जिनका देखकर हम आश्चय चकित हो गये। मूर्तियें समय की दृष्टि से करीब 1500 वर्ष प्राचीन तो थी ही लेकिन इतनी कलापूर्ण व आकषक थी कि हम घण्टो तक उनको देखते रह और कितनी ही फोटो लत रह। जहा ये मूर्तिया ह वह एक गुफा है। चारो तरफ बिखरी पडी है। पुरी

हम लोग तुरन्त उस स्थल को देखने के लिए निकले। पूरे रास्ते मे जगह-जगह इन परमपूज्य तीथकरो की मूर्तियो को बुरी हालत मे टट्टी पेशाब घर के स्थलो पर बिखरी देखी और ज्यो ही हमने उस गढी को जाकर देखा तो हम रो पडे। क्या स्थिति थी इन महान श्रामणो की मूर्तियो की ? इतनी विशाल मूर्तिया और इनकी यह दुर्दशा। हम विवश है उन मूर्तियो मे से एक भी अवशेष उठाने के लिए। मैं इस लेख द्वारा जैन समाज और जैन समाज के प्रमुख नेताओ से निवेदन करता हूँ कि वे इन उपेक्षित स्थानो की तरफ देखे। ये आपकी अमूल्य निधिये है। जिनसे हमारा इतिहास बनता है और हमारी सस्कृति को बल मिलता है। विश्ववद्य भ महावीर के 2500 वा निर्वाण महोत्सव के इस पुनीत अवसर पर हमारा कर्त्तव्य होता है कि जामनेर जैसे उपेक्षित अतिशय क्षेत्रो के विकास पर हम ध्यान दें और इनका सरक्षण करे।

जो ज्ञान द्रव्य को पर्याय सहित तथा समस्त लोक और अलोक को प्रकाशित करता है, वह सर्वप्रत्यक्ष केवल ज्ञान है।

— कीर्तिकेया

ज्ञान से सम्पन्न जीव चारा गति रूप ससार अटवी म विनाश को प्राप्त नही होता।

— उत्तराध्ययनसूत्र

जो ससार के दु खों को जानता है, वह ज्ञानी कभी पाप नही करता।

— आचारागसूत्र

ज्ञान जगत् के समस्त रहस्यो को आलोकित करने वाला है।

— ब्रह्म शास्त्र

गंधावल की प्राचीन शिल्प कला

गंधावल के कण कण से जैन मूर्तियों का भंडार उपलब्ध है। लोगो ने उसके अवशेषो को अपने घरो, पखानो तथा पेशाबघरो तक मे लगा लिया है। सरकार न तो स्वय उसकी व्यवस्था करती है ना ही करने वालो को सहयोग। संस्कृति को जीवित करने मे इस विडम्बना को शीघ्र दूर किया जाना चाहिये।

वीरवाणी के अक्टूम्बर 1956 के अंक में गंधावल की प्राचीन शिल्पकला शीर्षकला शीर्षक एक लेख भाई अगरचन्दजी नाहटा ने प्रकाशित करवाया है। उन्होंने उस लेख मे गंधावल की प्राचीन शिल्प कला पर प्रकाश डाला है और साथ में उज्जैन के भाईयो से अपेक्षा की है कि वे वहां की स्थिति पर प्रकाश डाले और उसके संबंध में कुछ भी प्रयत्न करें।

मैं गंधावल और उसके पास के अन्य स्थानो के संबंध में पत्रो मे कई बार प्रकाश डाल चुका हूँ। शायद नाहटाजी ने उन लेखो का पता नहीं है। मैं गंधावल स्वयं गया हूँ। गंधावल एक छोटा सा कस्बा है। लेकिन वहा एतिहासिक सामग्री के देखने से अनुमान किया जा सकता है कि किसी समय यह एक समृद्धशाली विशाल नगर रहा और नौवीं या दशवीं शताब्दी में यह काफी उन्नत था। आज गंधावल मे हजारो मूर्तियां जमीन के ऊपर चारो तरफ ही नही बिखरी पडी है अपितु उन मूर्तियों का इतना घोर अविनय हो रहा है कि लोगो ने उन पवित्र आराध्य एवं महत्वपूर्ण अनुपम सौन्दर्य वाली मूर्तियो को घरो की देहली, पाखाना घर तथा पेशाब घरो तक में लगा डाली हैं जिनको देखकर मेरी आंखो मे अश्रु धारा बहने लगी थी। उस समय मैं अकेला ही नहीं गया था किन्तु मेरे साथ इन्दौर, उज्जैन और के कई समाज प्रसिद्ध प्रतिष्ठित व्यक्ति थे। उसी समय मैंने प्रण किया था कि मध्य भारत में एक पुरातत्व संग्रहालय खोला जाय और उसमें इन प्राचीन बिम्बों का संग्रह किया जाय। आज उज्जैन में [illegible] संग्रहालय मौजूद है जिसमें करीब 400 मूर्तियें शिलालेख और 2600 वर्ष पुराने [illegible] सिक्के सुरक्षित है। इनमें [illegible] मूर्तियें तो काफी प्राचीन और शिल्पकला पूर्ण है।

गंधावल में [illegible] अनुपम मन्दिर और विशाल प्रतिबिंब आज भी खंडहरों में खड़े हुए हैं [illegible] 20 20 [illegible] जहां तक मैं जानता हूं गंधावल व उसके आस पास [illegible] प्रतिदिन नष्ट [illegible]।

गधावल की सामग्री को बटोरने के लिए हमने काफी प्रयत्न किया है लेकिन हम इसमे सफल न हो सके क्योंकि सरकार से हमे बिल्कुल भी सहयोग न मिला। गाधवल की प्रतिमाओ के उद्धार के लिये कई बार इस विभाग के सबंधित व्यक्तियो से व अन्य उच्च अधिकारियो से मिले लेकिन उन्होन हम कोई सहयोग देने का आश्वासन नही दिया। मध्य भारत मे जन पुरातत्व सामग्री की जो दुव्यवस्था है वह कही भी अन्यत्र देखने को नही मिलेगी। मध्य भारत सरकार की तरफ से पुरातत्व विभाग अवश्य है लेकिन दु ख है कि जैन सामग्री के सरक्षण के लिए विल्कुल तत्पर नही है। न वह हम उस सामग्री को लाने का आदेश देता है और न वह स्वय कुछ व्यवस्था करता है।

एक बार हम गुना क्षेत्र से कुछ मूर्तिये जो बीहड जगल मे पडी हुई थी, उठा लाये थे। सरकार को मालुम हुआ तब पुलिस कायवाही करने तक का हम को नोटिस मिला था उस समय भी हमने अधिकारी वग को काफी लिखा था कि हमने ऐसा अ धकार नही देखा कि न स्वय व्यवस्था करते है और न दूसरो को करने देते है। सच कहा जाय तो मध्य भारत सरकार का पुरातत्व विभाग पूर्ण उदासीन है।

गधावल माननीय डॉ० कलाशनाथजी रक्षा मत्री भारत सरकार स्वय पधारे थे। वहा के प्रतिविम्वो की दयनीय स्थिति को देखकर उनको बडी वेदना हुई थी। उन्होने सरकार को भी इसके लिये इशारा किया था और उज्जैन मे प्रान्तीय काग्रेस के जल्से म भी कहा था कि इतनी महत्वपूर्ण सामग्री हमारे प्रात गधावल मे नष्ट हो रही है। उसके सरक्षण की व्यवस्था शीघ्र होनी चाहिए, लेकिन आज तक भी उसकी तरफ सरकार का कोई ध्यान नही गया।

उज्जैन सग्रहालय मे मूर्ति विराजमान करने का आरभिक मुहूर्त माननीय काटजू महोदय के कर कमलो द्वारा ही कराया गया था और जैन पुरातत्व सामग्री पर उन्होने काफी प्रकाश डाला था।

मध्यभारत मे गधावल ही नही लेकिन कई ऐसे स्थल है जहा जैन पुरातत्व सामग्री प्रचुर मात्रा मे बिखरी पडी है। उज्जैन के पास एक पचोर नाम का कस्वा है जहा मैं स्वय गया था। वहा मैंने देखा कि एक विशाल गढी सिर्फ जैन मूर्तियो के मस्तको एव धडो से ही चुनी गई है मैंने पचोर के भाईयो से पूछा कि यहा ऐसा क्यो हुआ तो उनसे यह जवाब मिला कि किसी समय मध्य भारत मे जैन भजन दिवस माना गया था और एक ही दिन मे जैन मूर्तियें और मन्दिर खत्म किये गये थे। पचोर म कई स्थलो पर जैन मूर्तियों के मस्तक, धड और विशाल पादपीठ बिखरे देखे।

इस तरह की हालात भवरासी, मानपुरा, नरवर, देवास, विक्रमपुर, पनलावाद, वेरछा-सुदरसी, जाननेर, उन्हेल, असभैरा आदि स्थानो की है।

उज्जैन सग्रहालय इन सव पुरातत्व सामग्रिया का जुटाने के लिए प्रयत्नशील है, सजग है और वह सग्रह कर रहा है। यदि सरकार का याग होता तो आज यह सग्रहालय काफी तरक्की करता और इतनी विशाल सामग्री एकत्रित कर लेता जो देश के लिये गौरव की वस्तु होती।

— स्वाध्याय :—

जो अनेक शास्त्र पढता है और बहुत तरह के चारित्र का भी पालन करता है, किन्तु यदि आत्मस्वभाव से विपरीत है तो वह सब बालश्रुत और बालचारित्र है।

—मोक्षपाहुड

स्वाध्याय से ज्ञान का प्रसार होता है और इन्द्रियों का व्यापार रुक जाता है – जैसे प्रातःकाल मे सूर्योदय होते ही उल्लू-कुल निष्प्रभ हो जाता है।

—सावयधम्मदोहा

हे मूर्ख ! इतना अधिक पढा कि मुख का तालू सूख गया। यदि एक ही अक्षर पढ लेता तो शिवपुरी को गमन किया जा सकता था।

—पाहुडदोहा

हे मूर्ख ! बहुत पढने से क्या लाभ ? केवल ज्ञान स्फुलिंग को प्रज्वलित करना सीख।

—पाहुडदोहा

स्वाध्याय करते रहने से सम्पूर्ण दुःखों से छुटकारा मिल जाता है।

—उत्तराध्ययनसूत्र

स्वाध्याय के समान अन्य तप न है न था और न होगा।

—वृहत्कल्पभाष्य

जो तत्वतः इस अपवित्र शरीर से भिन्न ज्ञायक स्वरूप अपनी आत्मा को जानते है, वह सब शास्त्रों को जानता है।

—कार्तिकेय

जो अनयुक्त है, उसे सीखें, निरर्थक छोड दें।

—उत्तराध्ययनसूत्र

विविध

आत्म सुधार
जीवन का लक्ष्य

भगवान महावीर के सार्वभौतिक सिद्धान्त का सही मायने मे यदि हम पालन करना चाहते है तो हमे वीतरागता और अहिंसा को हमारा लक्ष्य बनाना होगा। वह हमें प्राप्त होगा स्वय के निरीक्षण से। दूसरो को उपदेश देने से पहले स्वय को देखना, पालना व विचारना आवश्यक है।

भारतीय साहित्य क्षेत्र में जैन साहित्य का एक मौलिक अकन किया गया है। जैन साहित्य पुरस्कृत साहित्य है और उसमे मानव जीवन के निर्माण की शिक्षाए दी गई है। जैन साहित्य की हर जगह आत्म सुधार की चर्चा की गई है इसीलिए जैन सन्त कहते है कि पहले अपने हित की चर्चाए करो जो अपना सुधार नहीं कर सकता वह पर का सुधार करने म कभी भी सफल नही हो सकता। आत्म सुधार के लिए जैन साहित्य म अनेक मार्ग बतलाए गये हैं लेकिन सामान्य मानव के लिए सीधा मार्ग दर्शन का बतलाया है। दर्शन एकांत स्थल मे जाकर स्वय का निरीक्षण। इसीलिए जैन मात्र के लिए आदेश है कि वह एकान्त साधना-स्थल श्री मन्दिर जी मे जाव और महान सन्ता के कदमो म बैठकर स्वय के सम्बन्ध म चिन्तवन करें। जैन धर्म ने मूर्ति पूजा स्वीकार की है। जिस मूर्ति की पूजा स्वीकार की है उसमे वीतरागता और अहिंसा का अनुपम अवतरण किया गया है क्योकि वीतरागता और अहिंसा जीवन का अनन्यतम स्वभाव है। यदि मानव जीवन मे वीतरागता न उतार सके या अहिंसा का अवतरण नही हो सके, तो उस मानव के जीवन का सुधार भी नही हो सकता। आत्म सुधार के लिए धन वैभव सम्पत्तिया आवश्यक नही है। इसके लिए आवश्यक है वीतरागता अवस्था और अहिंसात्मक जीवन। इस जीवन की प्राप्ति के लिए मदिरो का निर्माण किया गया और उनमे वीतराग भावनायुक्त अन्तर्दृष्टि मूर्तिया विराजमान की गई है जो साधक बाह्य जीवन से अलग होकर आत्मीय शान्ति की इच्छा करता है तब वह एकान्त साधना स्थल म जाकर भीतर की तरफ उन्मुख होकर अपने जीवन के सम्बन्ध मे सोचता है मूर्तियो की अन्तर्दृष्टि और उनकी वीतरागता मूक रूप म साधक का आह्वान करती है कि साधक मेरी पूजा मत कर एक क्षण के लिए मेरे पास बैठकर अपनी अन्तर्दृष्टि बना और अपने भीतर होने वाली समस्त कमियो का निरीक्षण कर। जैन साहित्य ने आत्मधर्म और जीवन

नर्माण को महत्व दिया है। साहित्य वही है जिसके अध्ययन से मानव का जीवन विकसित होता है और वह विकास के माग मे जुट जाता है। आत्म-सुधार के लिए जैन सिद्धात मे अनेक सिद्धान्तों का वर्णन किया गया है उनमे प्रमुख बल नैतिक सिद्धान्तो को जीवन मे उतारने को दिया गया है। नतिक सिद्धान्त अहिंसा, सत्य, अचौय, ब्रह्मचर्य एव अपरिग्रह बतलाये है। इन सिद्धान्तो का सूक्ष्म निरूपण है श्रावका के लिए इन शिक्षाओ पर अधिक बल दिया गया है। जीवन को सही दिशा म ले जाने के लिए श्रावक का कतव्य है कि वह इन शिक्षाओ का अधिकाधिक पालन करें। इसके कई उदाहरण हमारे प्राचीन साहित्य मे अध्ययन करने मे उपलब्ध होते हैं। भगवान महावीर अतुल वैभव और सम्पत्तियों के बीच पैदा हुए लेकिन वे वैभव सम्पत्तिया उन्हे आकर्षित न कर सकी। महावीर की दृष्टि मे वैभव और सम्पत्तिया भौतिक थी, वे इनमे स्थायित्व नही मानते थे वे राजकुमार की अवस्था मे अपने महल के एकान्त कक्ष मे बैठकर अपने जीवन के विकास के विषय म सोचा करते थे। उनकी दृष्टि मे एक जागृति थी स्वय के सुधार की। वे काम क्रोधादिक भावो को अपने न समझकर विकारी भाव समझते थे इन भावा से आत्मा प्रगति नही कर सकता, उसका सुधार नही हो सकता यह चिंतन बढा और वे घर से निकल गये। जगल के एकान्त मे वे इसे ही लेकर बैठ गये। बारह वर्षो तक एकान्त साधक बने रहे। उन्होंने अपने आपको टटोला और उसे विशुद्ध निर्मल बनाया। द्वादश वर्षों के बीच जीवन मे जो बटोरा उसे देने के लिए 30 वष पर्यन्त भगवान महावीर भारतवर्ष के कोने कोने मे घूमे और पशु पक्षियो तक आत्म सुधार के सिद्धान्तो को फलाते रहे उनकी शिक्षा सभाओ म देव और मानव तो आते ही थे लेकिन पशु-पक्षी भी आते थे, वे भी भगवान की वाणी सुनकर आत्म सुधार करते थे। इसीलिए प्राचीन भारत म जैन धम आत्म धम कहलाता था।

इस आत्म सुधारी धम मे जाति-भेद, वर्ण-भेद और पथ – भेद को कोई स्थान नही था। महावीर की उद्घोषणा थी अहिंसक समाज के निर्माण की जिसमे प्राणी मात्र के लिए कल्याण का आव्हान था। आज के जैन समाज को भी भगवान महावीर के उस पावन माग पर चल कर आत्म सुधार करन का प्रयत्न करना चाहिये। भारतीय समाज मे हमारा बहुत बडा महत्व है और हम पर बहुत भारी जिम्मेदारी है राष्ट्र के विकास म योगदान देने की। किन्तु हम आज गिर चुके हैं। हमम सामाजिक और धार्मिक अनेक बुराइया आ चुकी हैं। वीतरागियो का गुणगान किया पर वीतरागता न पनपाई आध्यात्मिक भाषण सुन चर्चायें की पर निमल अध्यात्मिक का धरातल न आ पाया। आज हम म स्वाथ के भाव अधिक शोषण और पोषण बढ गया है नित्य मन्दिरा मे पूजायें करत हैं। समयसार जसे उच्च और महान ग्रथा का श्रवण एव अध्ययन करते हैं, इसके बाद भी हममे आत्म सुधार की भावना नही है। आज हम अधिक विलासी हैं और अधिक रसना इन्द्री और उपस्थ इन्द्री के अनुगामी हैं। वीतरागी की जगह सरागी और अहिंसक बन गए है। खान पान हमारा बिगड गया भक्ष्या भक्ष्य का विवक जाता रहा। हम आत्म सुधार मे कोसा दूर जा रहे हैं और कहा हमारा लक्ष्य ह सुधार था। वर्षो स समाज मे सुधारक लोग मत्यभोजन और दहज जसी नृशस प्रथाओ क खिलाफ आन्दोलन कर रह हैं लकिन समाज के अग्रणी लोगो न अपन युवक वग ने इसके लिए अभी तक कोई कदम नही उठाया। हम लोग जब युवक थे तब हमन हर बुराई क विरोध मे सक्रिय कदम उठाये और सार दृष्टि म सुधारक कहलाये। हमारे बहिष्कार हुए इसक बाद भी हमन अपन निर्णयो को नहीं बदला। आज लोग पढ़न लिखन म शिथिल हैं स्वाध्याय करत हैं नित्य पूजायें करत हैं फिर भी

समाज में कुरीतियाँ ताण्डव नृत्य कर रही हैं और हम दिल खोलकर उनका स्वागत कर रहे है जिनसे समाज के एक वर्ग का ह्रास हो रहा है। हमारे समाज मे अनेक मुनिराज है और आध्यात्मिक उपदेष्टा है। ये आत्मा की शुभवस्थाओ की चर्चा तो कर रहे है लेकिन जिन बुराईयो और विकारो से आत्मा चारो तरफ से घिरा है उनका उल्लेख तक नही करते। मैं नही समझता इन चर्चाओ से समाज का सुधार क्या हुआ ? हमारे मध्य प्रदेश मे बड़े बड़े नेता है, बड़े विद्वान है। प्रतिवर्ष आत्म सुधार की चर्चाओं के लिए आते है लेकिन वे मत्युभोज और दहेज व अन्य कुरीतियो के सम्बन्ध मे मूक रहते। हमारी दृष्टि बाहर की तरफ है लेकिन अपने सुधार की तरफ नही जाती है। मेरा तो निवेदन है कि हम आत्म निरीक्षण करे और स्वय के सुधार पर बल दें। यदि हम ऐसा कर सके तो राष्ट्र, देश, समाज के उत्थान मे हमारा महत्वपूर्ण योगदान होगा। यही सही आत्म सुधार है। जयकारा से जुलूसो से राष्ट्र का, देश का, समाज का तथा स्वयं का भला नही हो सकेगा। यदि हमारा लक्ष्य आत्म सुधार है तो हमे वीतरागता और अहिंसा का ही लक्ष्य रखना होगा। यही लक्ष्य भगवान महावीर के सार्वभौतिक सिद्धान्तो का है।

पारस रुपी जीव है, लोह रुप ससार।
पारस से पारस भया, परख भया टकसार॥

●

बूंद जो परा समुद्र मे, सो जानत सब कोय।
समुद्र समाना बूंद मे, सो जाने विरला कोय॥

●

हसा तू तो सबल था, हलुकी अपनी चाल।
रग कुरगे रंगिया, तै किया और लगबार॥

●

धार्मिक शिक्षण अनिवार्य है।

धर्म का सही अर्थ है विकास, यह विकास स्वयं से सम्बन्ध रखता है। आज की इस स्वच्छन्दता और उच्छृंखलता से भरे वातावरण को बचाने के लिये हमें धार्मिक शिक्षण जिसे आज की भाषा में नैतिक शिक्षा कहा जाता है, का अध्ययन आवश्यक ही नहीं अनिवार्य होना चाहिये।

भारतवर्ष समस्त देशों में एक उन्नत देश माना जाता था। इसका कारण यही था कि यह एक आध्यात्मिक देश था। इस देश ने ऐसे सन्तों को जन्म दिया था जिनका समस्त जीवन नैतिक और सदाचार की शिक्षाओं के प्रचार और प्रसार में गया था। इन सदाचार की शिक्षाओं ने मानव को मानवता प्रदान की और उन्हीं के बल पर वह महान् या महात्मा बना। शिक्षा जीवन को ऊंचा उठाती है। उससे गिरे हुए मानव को बल मिलता है और वह अपने अस्तित्व को समझता हुआ अपने जीवन का सुन्दर से सुन्दर निर्माण करता है। इन तरह की शिक्षा का नाम ही धार्मिक शिक्षा है और इसका अध्ययन शिक्षण कहलाता है। इन शिक्षाओं के प्रचार और प्रसार के लिए प्राचीन भारत में सन्त और महात्माओं के झुण्ड के झुण्ड जनता जनार्दन के बीच घूमा करते थे। वे जन जीवन में मिलकर उनके विकास की बातें किया करते थे और उनसे लोगों का कल्याण होता था। जब तक देश में इस तरह के निःस्वार्थ महात्माओं का विचरण होता रहा तब तक यह देश नैतिकता और सदाचार का एक आदर्श पुतला रहा, विश्व के समस्त देशों में यह एक महान देश माना गया और हमेशा इसका गौरव अक्षुण्ण रहा। यह एक ऐतिहासिक सिद्धांत है कि विश्व में वही देश जीवित रह सकता है जिस देश के मानव में ही नहीं किन्तु प्राणिमात्र में सदाचार है। हमारे ऋषि मुनियों ने जितना भी साहित्य का निर्माण किया उसमें भरे उन्होंने इन्हीं बातों का निर्देश करके प्राणि मात्र को बचाने का प्रयास किया। कथा साहित्य में भी छोटी छोटी कहानियाँ लिखकर उनके माध्यम से भी इसी सदाचार का प्रचार करने का प्रयत्न किया वह प्रयत्न सफल हुआ और आज तक देश गौरव के साथ डटा रहा। इस बीसवीं शताब्दी में पैदा होने वाले राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने भी इसी सदाचार को महत्त्व दिया, इन्हीं शिक्षाओं का प्रचार किया और इसी के बल पर देश स्वतन्त्रता का प्राप्त हुआ।

लेकिन देश स्वतन्त्र होने के बाद देश की स्थिति वह नही रही। और वह नैतिकता से हटकर इतना गिरता जा रहा है कि यह अनुमान लगाना मुश्किल हो रहा है कि आगे जाकर देश की क्या स्थिति होगी ? और देशो मे स्वच्छन्दता और उच्छृंखलता का इतना प्रचार हो रहा है कि आदमी भूत बनता जा रहा है और उसमे राक्षसीय प्रवृत्तिया बढती जा रही है। आज चारो तरफ हिंसा, झूठ और पाखण्ड धूर्तता ठगाई का इतना जोर है कि आदमी घर से बाहर निकलने के बाद यह सोचकर निकलता है कि घर से बाहर जाने के बाद सकुशल लौटूगा या नही, सारे देश मे अधकार दिखलाई दे रहा है।

पहले की अपेक्षा आज शिक्षा का जोर है देश मे नकली शिक्षित काफी बढे है। पहले बी ए, एम ए, पी एच डी नही के बराबर थे आज इनकी सख्या हजारो-लाखो की है लेकिन इस शिक्षण से देश का नैतिक बल गिरा है। उठा नही। क्योकि इस शिक्षण ने मानव की आकाक्षाओ को बढाया। वह विलासी बना इसके साथ इसकी लिप्सायें बढी। वह इस शिक्षा से इनको रोक नही सका। परिणाम उल्टा निकला, लीविंग स्टेण्डर्ड बढ गया और दुखी हो गया। जब वह इस पूर्ति मे असफल रहा तो अनैतिकता पर उतर गया लूट, खसोट, जुआ, चोरी, पाखण्ड, पाकेटमारी आदि के नाम पर। आज इससे सारा देश दुखी है रोता है, चिल्लाता है। नेतागण भी चिंतित है। उनमे भी ऐसे लोग घुस पडे है जो इनको शान्ति से नही बैठने देते लेकिन इस विनाश से बचने पर मार्ग वे नही खोजते, यदि इसका कोई भी सही मार्ग है तो वह धार्मिक शिक्षा है जिस शिक्षा के प्राप्त करने से जीवन का मार्ग न होता है और उससे आत्मा को शान्ति मिलती है। मैने समस्त धर्मों का साहित्य अध्ययन किया है और उसके साथ 2 जैन साहित्य का भी अध्ययन किया है। मुझे जैन साहित्य मे यही एक विशेषता मिली कि उस साहित्य मे जीवन को सतुलित बनाने की ही बात मिली, कही आडम्बर मे या विषम मार्ग मे जाने की बात नही मिली। जैन साहित्य का मूलाधार अहिंसा और अपरिग्रह पर अवलम्बित है और इनही दो सिद्धान्तो के पोषण के लिए विश्व का समस्त-साहित्य रचा गया है। आज जैन समाज भी इस बात को भूलता जा रहा है। जिसने एक दिन समस्त भूमण्डल को शिक्षायें दी आज उसकी सन्तान इन शिक्षाओ से दूर होती जा रही है। जैन समाज का काम है वह आत्मनिरीक्षण करें और अपनी सतान को धार्मिक शिक्षा देकर उनको योग्य सतान बनावे। धर्म का अर्थ है विकास, वह विकास स्वय से सम्बन्ध रखता है। धर्म के नाम से धर्म नही मिलता, धर्म की प्राप्ति स्वय से होती है। और वह जब होती है तब वह स्वय अपने आप को सवारने के लिए तत्पर होता है इसके लिए अगर कोई अच्छी चीज है तो धर्म की शिक्षाय ही ह जो निर्मल और निर्दोष है।

एक कर्म है बावना, उपजे बीज बहुत।
एक कर्म है भुजना, उदय न अंकुर सूत॥

हम आत्म निरीक्षण करे।

विश्व के सभी प्राणी प्यार, स्नेह, सम्मान की चाह रखते हैं- जब उन्हे वह नहीं मिलता तो वह अपने आप से भटक जाता है। हिन्दू समाज की ऐसी ही दशा है। यहाँ मानव-मानव के बीच जो भेद पैदा हो गया है उसे दूर करना ही आपका अहम् प्रश्न है। देखना है कौन इस पहल में विजेता रहता है।

जातिय भेद के आगे हमारा हृदय नही हिलता है। इसी का यह परिणाम है कि हजारो हिन्दू भाई हमम से अलग होकर ईसाई मुसलमान आदि हो रह है। मानव गौरव के साथ जीना चाहता है। वह चाहता है प्यार और आत्मीयता। जिस काम से प्यार और आत्मीय भावना नही मिले वह उसके बीच म रहकर करें क्या ? हम तो कभी किसी अवसर पर उनको याद तक नही करते। तब वह गरीब कहो तो शरण लेगा। इन समस्त परिस्थितियो को लक्ष्य मे रखकर ही विश्व हिन्दू परिषद् ने हिन्दुत्व को प्राण द न और सगठित बनाने के लिए अपनी कदमे बढाई है और यह विशाल सगठन पुन विश्व के समस्त हिन्दू मात्र को प्राणदान बनाने के लिए सजग होकर आपके सामने आया है। विश्व हिन्दू परिषद् के कार्यकरताओ का लक्ष्य शुद्ध सामाजिक सेवा का है। हम चाहते हैं कि वतमान राजनीति से ऊपर उठकर मानव मात्र की सेवा करें। समाज व राष्ट्र की वतमान स्थिति न हम अवसर दिया है आत्म निरीक्षण करें।

आत्मधर्म

जैन धर्म व्यक्तित्व से आत्म विकास को अधिक महत्वपूर्ण मानता है। क्योकि आत्म विकास ही सच्चा सुख है। व्यक्ति के विकास से ही समाज और राष्ट्र का विकास भी सभव है। जिस राष्ट्र और समाज के लोग नैतिक दृष्टि से जितने विकसित होगे वह राष्ट्र और समाज भी उतना ही अधिक उन्नत, समृद्ध और विकसित होगा। अत जैन धम को 'आत्म धर्म' भी कहते हैं।

इस प्रकार जैन धर्म की मौलिकता उसके आत्म स्वभाव धर्म मे, सम्यकत्व मे, स्याद्वाद (अनेकान्त) में, अहिसा मे, अपरिग्रह में, स्व पुरुषार्थ मे, सार्वभौमिकता मे एव सावकालिकता मे है जैन धर्म के अनुयायी वर्तमान मे अल्प सख्या मे होने पर भी जन धर्म की मौलिकता एव गरिमा ससार मे सवमान्य ह।

सर्वोदय
एक चिन्तन

मानव का जीवन शोषणहीन अपरिग्रही हो और विचारों के लिये अनेकांत का दृष्टिकोण ही सर्वोदय है। भगवान महावीर, बुद्ध और महात्मा गांधी ने ऐसे ही विचारों का प्रचार-प्रसार देश की उन्नति हेतु किया। आज भी कगार पर खड़े राष्ट्र को इन विचारो की आवश्यकता है। सिर्फ पूर्ति हेतु आवश्यकता है कि कोई महावीर, बुद्ध या महात्मा गांधी जैसा हमारा मार्ग दर्शक, महात्मा मिल जाये।

भारत आध्यात्मिक सत और महात्माओ का देश है। इस देश मे महापुरुषो ने मानव को सत्य और अहिंसा के आधार पर मानवता प्रदान करके उनकी आत्मा मे शान्ति की प्रतिष्ठा की है और इसी की प्राप्ति के लिये उन्होंने अपना समस्त जीवन राष्ट्र व समाज को अर्पित किया है जिससे उनका मार्ग सर्वोदय तीर्थ कहलाया। सर्वोदय शब्द का इतिहास अर्वाचीन नही है। इसका उपयोग भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध के समय से ही प्राणीमात्र की रक्षा के लिये होता आया है। सर्वोदय एक सद्भावना सूचक शब्द है जिसका अर्थ होता है सब प्राणी समभाव। यह एक राष्ट्र के प्राणियो को जीवित रखने के लिये उच्चतम नारा है जिसमे प्राणी मात्र के जीवन के विकास का संकल्प है। प्राचीन भारत म सर्वोदय तीर्थ की प्रवृत्ति के महापुरुष राज्य और सपदा के भागी नही होते थे। वे निर्मोही बनकर राज्य-सपदा के वैभव प्रतिष्ठा आदि से दूर रहकर मानव व प्राणिमात्र की सेवा करना चाहते थे। उनकी दृष्टि मे राजा और रक एक थे। उनके हृदय म विशालता थी और विचारो में उदारता। भगवान महावीर और महात्मा बुद्ध ने कभी भी जाति भेद, वर्णभेद भाषागत भेद और प्रात भेद को महत्व नही दिया। उनके विचारों को सुनने के लिये मानव तो आता ही था लेकिन पशुजगत भी उनके विचारो को सुनकर उत्साहित होता था। इसीलिए प्रथम शताब्दी के महा सन्त समतभद्र ने भगवान महावीर के तीर्थ को सर्वोदय तीर्थ कहा था। विचारधारा को जीवित रखने के लिए भगवान महावीर ने अहिंसा अपरिग्रह और अनेकान्तवाद जैसे सिद्धान्तो को आधार बनाया और इन्हीं के आधार पर उन्होंने विभिन्न समाजो की स्थापना की। उनका लक्ष्य था कि सत्य के आधार पर राष्ट्र जीवित रहे और उसमे रहने वाले समस्त प्राणी सुखी और

समृद्ध बने। महावीर की अहिंसा सिर्फ प्राण-रक्षा तक ही सीमित नही थी। महावीर चाहते थे कि मानव का जीवन शोषण-हीन अपरिग्रही हो और विचारो की समता क लिए अनकात का सहारा हो। महावीर और बुद्ध के इन विचारो ने मानव को बदला। अगणित लोग उनके शिष्य बन और वे प्रचार प्रसार मे उतर पडे। अनक सघष का सामना किया। फिर भी जनता स्वाथ और हिंसात्मक आचरण म फसी रही, भोगवाद प्रबल रहा, मानव इच्छाओ का गुलाम रहा एव वह इन्द्रियो का इतना दास बना कि भारत पर बाह्य आक्रमण हावी हो गय और देश गुलाम हो गया। यह स्थिति सैकडो वर्षो तक चली। पुन देश मे कुछ विचारक युग प्रवतक महापुरुषो का उदय हुआ, जिनमे लोकमान्य तिलक, राष्ट्र पिता महात्मा गाधी आदि महापुरुषो का नाम उल्लेखनीय है। इन्होंने देश की पराधीनता स्वीकार नही की। महात्मा गाधी के युग मे अ ग्रेजो की सत्ता थी। उनके अत्याचारो से भारतीय जनता पीडित थी। इसस भारत को मुक्ति मिले इसके लिय महात्मा गाधी ने अहिंसात्मक आदोलन को जन्म दिया। जिसका नाम था असहयोग आदोलन। भारत के लिये यह आदोलन वरदान के रूप मे साबित हुआ और सन् 1947 म भारत दासता के बधन स मुक्त होकर स्वतत्र हो गया। इस मुक्ति के लिय देश मे न युद्ध हुआ और न किसी प्रकार का नर सहार। जिन महापुरुषो के हृदय मे देश को मुक्त करने की उत्कट भावनाए थी, वे स्वय समर्पित होकर आगे बढे इस आन्दोलन का नतत्व गाधी सरीख महापुरुषो क हाथ म था जिनका जीवन त्याग और तपस्या से परिपूर्ण था।

महात्मा गाधी इस युग के एक आदश थे। उनके विचारो म इतनी उदारता और विशालता थी कि उनके न तो पूज्यता की भावना थी और न किसी प्रकार की लिप्सा [illegible] क हृदय म थी। व रही रूप मे एक महामानव थे जिन्होने अहिंसात्मक क्राति के आधार पर राष्ट्र को स्वतत्र बनाया। विश्व के इतिहास मे यह एक अद्भुत घटना थी। महात्मा गाधी चाहते थे कि भारत का हर व्यक्ति सुखी और समृद्ध हो। उनके हृदय मे वर्ण भेद, जाति भेद, व सम्प्रदाय विशेष का कोई महत्व नही था। वे एक आदशवादी विचारो के महापुरुष थे। स्वतत्रता के बाद उन्होने सत्ता मे किसी भी पद को स्वीकार नही किया। उन्होने मिट्टी की तरह इस राज्य – लिप्सा की भावना को ठुकरा दिया। गाधीजी चाहते थे देश म शान्ति और स्वय की आत्मा म शान्ति की प्रतिष्ठा हो। [illegible] देश [illegible] स्वतत्र [illegible] वे एक आध्यात्मिक सत के रूप म रहने लगे। उन्होने अपनी प्राथना सभाओ म [illegible] सर्वोदय [illegible] धारा का सहारा लिया। वे चाहते थे कि राष्ट्र म इस नव क्रान्ति के साथ नया जीवन [illegible]। साम्प्रदायिकता खतम हो। मानव मानव म भेद की खाई न हो, राष्ट्र के हर व्यक्ति म भाईचारा और प्रेम का उदय हो, एक लक्ष्य हो, भारत देश हमारा है, म भारत का हू और मेरा जीवन [illegible] क्षण राष्ट्र के लिए समर्पित हो। उनका स्वप्न था रामराज्य [illegible] [illegible] साकार न हो सके। उनक निर्वाण के बाद फिर देश [illegible] [illegible] स्वार्थ की आधी म [illegible] इतने उलझ गये कि देश की स्थिति पुन डावाडोल हो गई। [illegible] है और अन्याय अत्याचार का जोर है। मानव दानव बनता जा रहा है, [illegible]।

जिनके हाथ म सत्ता है, वे ही आज अनतिकता बढा रहे है जिससे देश मे भ्रष्टाचार, बलात्कार, हत्याए, चोरी, डकती और बदमाशिया बढती जा रही हैं। ऐसी स्थिति के बीच आज गाधीजी की विचारधारा मे विश्वास रखने वाले सर्वोदय समाज के चितक, कार्यकर्ता व मनीषी यही निवेदन करना चाहता हू कि वे सर्वोदय विचारधारा के आधार पर राष्ट्र को त्राण देने के लिये विचार मथन करें, क्योकि राष्ट्र के सामने अधकार बढ रहा है। मानव ने अपनी जगह छोड दी है। देश की युवा शक्ति भी भटक रही है। वह भौतिक आकाक्षाओ मे डुबकी लगा रही है। अत निवेदन है कि कुछ समर्पित विचारधारा क लोग इस सम्मेलन मे राष्ट्र को ऊचा उठाने का सकल्प लें।

जो श्रुति ज्ञान के द्वारा अपनी शुद्ध आत्मा को जानते हैं, उन्हे सर्वज्ञ श्रुतिकेवली कहते हैं।

—समयसार

❀

आत्मा अकेला स्वय अपने किये हुए दु ख को भोगता है।

—सूत्र कृताग सूत्र

❀

जिनसे सुख की आशा करते हो वास्तव में वे सुख के हेतु नहीं हैं।

—आचाराग सूत्र

❀

आयु देने के लिये कोई भी समर्थ नहीं है।

—शान्तिपानुप्रेक्षा

राष्ट्र के लिए चारीत्रिक बल आवश्यक

मानव के मन को शान्ति आज कहीं नहीं है, हर कोई एक दूसरे की परवाह किये बिना अपने आपको समर्थ करने मे लगा हुआ है, किसी में भी नैतिकता, चारीत्रिकता देखने को नही हैं। इसके कोई कारण हो—किन्तु बिना नैतिकता और चरित्र के मानव सुखी नहीं हो सकता, मानव सुखी नहीं तो समाज सुखी नहीं, समाज नहीं तो राष्ट्र नही, राष्ट्र नहीं तो विश्व नहीं। अत कगार पर खड़े विश्व को बचाने के लिए मानव को चरित्रवान बनाना ही एक मात्र उपाय है।

राष्ट व समाज की वर्तमान स्थिति को सम्भालने के लिए निश्चित बात है कि आज विश्व के समस्त राष्टो की स्थिति दयनीय होती जा रही है और एक राष्ट दूसरे राष्ट को हजम करने के लिए प्रयत्नशील है। राष्ट के नेताओ का, कार्यकर्ताओ का एव सर्वसाधारण लोगो का चारित्रिक बल व मानसिक बल दुर्गति से खत्म होता जा रहा है जिससे नैतिक पतन के साथ मानवता का ह्रास होता जा रहा है। चारित्र और नैतिकता ही राष्ट व समाज के प्राणियो का जीवन है। इसी से राष्ट का निर्माण होता है और सरक्षण भी। ऐसी स्थिति म नावनारत सन्तो एव बुद्धिजीवियो का कर्तव्य होता है कि वे मानवता और राष्ट को जीवित रखने के लिए अपने कदम आगे बढायें। भारत आध्यात्मिक देश है। इस देश ने हमेशा एसे सन्त व महापुरुषो का जन्म दिया है जिसके चारीत्रिक बल पर भारतवर्ष का मस्तक गर्वोन्नत रहा है। प्राचीन भारत म ऐश्वर्य प्रभुता के स्थान पर सयम, तप, त्याग और निस्वार्थ सेवी साधु सन्तो की प्रतिष्ठा थी। व मानवता के प्रहरी थे। वास्तव म प्रेम और करुणा के प्रतीक थे। जीओ और जीने दो के समर्थक थ। एसे सन्त प्राय सभी धर्मों मे पाये जाते थे। लेकिन जैन सन्तो के जीवन म कुछ विशेषताएँ होती था। व पूर्ण समाजवादी विचारधारा के पोषक थे। उनके आचार मे पूर्ण अनेकता की साधना होती थी। वे एकान्त स्थान म रहते थे, उनके आचार म पूर्ण अहिंसा परिधान म पूर्ण अपरिग्रह और विचार

मे अनेकाता की साधना होती थी। वे एकान्त स्थान म रहते थे उनके शरीर पर किसी प्रकार का कपडा और साथ म कोई परिवार नहीं होता था। दिन म एक बार रखा सूखा भोजन करते थे। निरन्तर गमन करते थे। जनसम्पर्क और उनमे चारीत्रिक विकास तो उनका लक्ष्य था। सही रूप मे व सुख और शान्ति के सच्चे सन्देश वाहक थे। जिन पर उनकी दृष्टि पडती पावन हो जाता। राष्ट्र को जीवित रखने के लिए भाईचारा, प्रेम और करुणा व सहअस्तित्व की भावनाएँ पैदा करने के लिए और चारीत्रिक सम्पन्न की अभिवृद्धि के लिए पाच शिक्षाए दन थे। अहिंसक बनो, सत्य वाले, दूसरे की सम्पत्ति का अपहरण मत करो, विश्व की महिलाओ को बहिन-बेटी की तरह समझो और जीवन निर्वाह के लिए कम से कम परिग्रह रखो। ये शिक्षाए राष्ट्रीय जीवन को गौरवान्वित करती थी, व्यक्ति सुख और शान्ति का अनुभव करता था। इन्ही शिक्षाओ को महावीर जैसे महापुरुषो न अपने जीवन मे उतारा। वे विशाल सम्पत्तियो और वैभवो का अनादर कर सच्ची आत्म साधना के लिए एकान्त सेवी बन और अपनी आत्म ज्योति से ससार को प्रकाशित करते हुए विश्व कल्याण करने म उद्यत हुए। उनकी ज्योति का प्रकाश छोटे-बडे, गरीब-अमीर, छूत-अछूत सभी के भवनो और कुटियाओ को प्रकाशित करने म सक्षम रहा। उनकी दृष्टि म मानव तो क्या प्राणिमात्र समान था। वे सबके लिए मगलमय पथ का प्रदर्शन करने वाले सच्चे नेता थे। आज देश की स्थिति बडी दयनीय है। हिंसा, झूठ, चोरी फरेब, बलात्कार, अनाचार और अतिसग्रह का बोलबाला है। एक व्यक्ति दूसरे के सुख शाति का घातक बन गया है। राष्ट्र के निर्माण का जिनके कधो पर भार है वे ही भ्रष्टाचारी, जेबकट और अनैतिक होते जा रहे हैं। राष्ट्र मे कही भी शान्ति की लहर नजर नही आती। देश का हर नागरिक अपने को असुरक्षित अनुभव कर रहा है ऐसी स्थिति म देश का सरक्षण कैसे हो? क्या समाज के सामने यह प्रश्न चिह्न नहीं है? समाज उन्ही आध्यात्मिक सन्तो का समाज है जिन्होन राष्ट्र को प्राणवान बनाया। जैन समाज के सन्तो एव चिन्तको का कर्तव्य है कि वे राष्ट्र को नैतिकता का सदेश देने के लिए आगे बढें। महावीर के अनुयायी पर्यूषण पर्व इस महान पर्व पर आत्म निरीक्षण करें और राष्ट्र की चुनौती को स्वीकार करें। जैन पर्वो का सम्बन्ध आमोद प्रमोद मे नही है। पर्वो का ही आत्म-त्याग, सयम और नैतिकता की प्रेरणा सून है जिनसे हम प्रेरणा लेकर फिर उज्ज्वल भविष्य का निर्माण करें। धर्म का अर्थ राष्ट्र सेवा और मानव मन से नैतिकता और चारित्र का प्रचार है। यदि धर्म का सम्बन्ध किसी सकीर्ण दायरे से होता तो महावीर कभी भी राज प्रासादो से बाहर निकलकर राष्ट्र सेवा के लिए आगे नहीं बढते। महावीर की मुक्ति का अर्थ है बुराईयो से छूटकर स्वय का चारित्र के बल पर निर्मल बनाना।

> सच पि हि सुयणाए सुट्ठुगुणिद पि सुट्ठु पढिद पि।
> समणा भट्ठ चरित्तरागहु सक्को सुगइ णेदु। 1114/336 पे

अच्छी तरह से जाना गया, तथा अच्छी तरह पढाया गया कि श्रुतज्ञान चरित्रहीन यति को (भ्रष्ट चारित्र मुनि) सद्गति न मे जा। म असमर्थ होता है। अत चारित्र ही प्रधान है।

मृत्यु भोज

समाज अनेक ऐसी घटना चक्रों में फंसा हुआ है — जिनका वास्तविक जीवन से कोई तारतम्य नहीं है। किंतु कुछ महानुभावों की कृपा से अनेक बुराईयां धर्म व लोकाचार के नाम पर आज भी चल रही हैं। उनके परिणाम कितने भयंकर होते हैं। यह सर्वविदित है। फिर पता नहीं क्यों मनुष्य उसका विरोध करता है। किसी बुरी बात या प्रथा को यदि हम अपने घर से बन्द कर दें तो सारा समाज एक नये रूप में आ जायेगा।

भारतवर्ष कुरीतियों का खजाना है। उनमें मृत्यु भोज जैसी कुरीति का नाम भी उल्लेखनीय है। यह कुरीति कब और किस उद्देश्य को लेकर चली यह नहीं कहा जा सकता, यद्यपि धर्म ग्रंथों में कहीं भी इसका उल्लेख नहीं है, यह हम कह सकते हैं कि इस कुरीति द्वारा देश का कम नाश नहीं हुआ है। इस प्रथा ने अच्छे अच्छे घरों को बर्बाद कर दिया। और कई अनाथिनी विधवाओं का सर्वस्व अपहरण कर लिया। अगर यह प्रथा आगे भी जारी रही तो कहना होगा कि यह अभागा देश और भी रसातल को पहुंच जायेगा। देश में आज चारों तरफ से सुधार की आवाज आ रही है। सुधार के वश में नित नई संस्थाओं का उद्घाटन होता रहता है। जनता भी कृत्रिम आवेश में आकर इन संस्थाओं के लिए आर्थिक सहायता देकर धन नाश करती रहती है। किन्तु फिर भी इन संस्थाओं के द्वारा देश और जाति का सुधार नहीं होता। भारतवर्ष की जो अवस्था 50 वर्ष में पहले इन कुरीतियों को लेकर थी उससे भी बढ़कर इस वक्त हो रही है। अगर संस्थाओं के कार्यकर्ता नेतापन की धुन में न आकर सुधार के लिए आगे बढ़ें तो उनके सामने ऐसे 2 कार्य पड़े हुए हैं जिनके लिए आज तक किसी ने भी आवाज नहीं उठाई है। वे सुधार हमारे लिए आवश्यकीय हैं।

सुधार चिल्लाने से, मंचों पर व्याख्यान देने में और कागजों में प्रस्ताव पास करने में नहीं हो सकता। सुधार हमको आगे बढ़ने के लिए प्रेरित करता है। वह कहता है कि कर्तव्य करके दिखलाओ। जो तुम्हें जंचे उसको करने के लिए तुम स्वयं आगे बढ़ो विघ्न और बाधाओं की परवाह मत करो। अपने संकल्प को संकल्प रूप में मत रक्खो ऐसा करना कर्तव्य से च्युत होना है। सुधार कहता है बुरी बातों का विरोध करो। जो बुरी जंचे उसको तुम स्वयं अपने घर से बन्द करो। फिर

ससार मे आगे बढने की चेष्टा करो। अगर तुम्हारे कार्य अच्छे है तो ससार अपने आप तुम्हारा अनुकरण करने लग जायगा। सुधार मे विघ्न बाधायें आती हे। सुधारको का अपमान और अपवाद होना साधारण बात है।

वे धर्मद्रोही और जातिद्रोही आदि शब्दो से भी लाछित किये जाते हैं। किन्तु कर्मवीरो के लिये ये सब उपेक्षणीय होते है। बाहरी बातो की तरफ ध्यान देकर वे अपने कर्तव्य से च्युत नही होते हैं। सुधार के विरोधी हमेशा स्वार्थी और चापलूस होते हैं। सुधार में उनकी दाल नही गलती। सुधार से सदाचार उत्पत्ति, कदाचार का नाश होता है। वह कुपथगामियो को पसन्द नही आता। अत वे रात दिन सुधारको को गालिया दे दे कर भोली जनता म अपना प्रभुत्व धर्म के विचित्र ढाग मे प्रकट करते ही रहते हैं। सती प्रथा का धर्म से कोई सम्बन्ध नही था फिर भी धर्म ढोगियो ने इसको धर्म का रूप दे रक्खा था। राजा राम मोहन राय ने जिस वक्त इस विचित्र सती प्रथा का विरोध किया था तब रूढि भक्तो ने उसके लिए क्या नही किया था ? भारत के कोने कोने म जाति बहिष्कार और धर्म बहिष्कार की आवाज आयी थी। किन्तु इन आवाजो [illegible] क्या हुआ ? उस वीर ने क्या अपने कर्तव्य को छोड दिया ? वह आगे बढा और सर्व प्रथम [illegible] अपने ही घर से इस नाशकारिणी प्रथा का अन्त किया। यह सुधार आज सबके लिए अनुकरणीय बन गया। धीरे धीरे विरोधियो ने भी इसका अनुकरण करना अपना कर्तव्य माग मे निर्धारित कर लिया। सुधार की गति मन्द होती है। उसके माग म कई विघ्न बाधायें आती ह। विघ्न बाधायें ही सुधार की जड है।

सुधार का जन्म ही विरोधाग्नि म ही होता है और वही इसको परिष्कृत करती है। मोसर की प्रथा का राजपूत म विशेष बोलबाला है यहा पर इसकी गहरी पूछ है। अत सुकुमार नवयौवन वाले छोटे छोटे बच्चो की मृत्यु होने पर लपटी पुरुषो द्वारा जमीन करा लिया जाता है। किन्तु लपटी पुरुष श्मशान भूमि म ही इसकी चर्चा छेड देते हैं। जबकि एक तरफ चिता जल रही रही है घर वाले मृतक व्यक्ति के लिए सिर फाड रहे हैं। घर म एक अल्पवयस्का अनाथिनी विधवा चूडा फाड रही है और वह अपने सिर का रुधिर मे रग रही है। वास्तव म यह एक हृदय विदारक दृश्य है। किन्तु जिन्होने लपसियो के लिए [illegible] कुछ नही है वे बराबर है। उनको इसकी चिता भी [illegible]। चाहे कोई मर या जीव। उनको तो लड्डुओ की फिकर लगी रहती है। आखिर [illegible] तैयार [illegible] और [illegible] लम्बी लम्बी पगडिया बाधकर आ ही [illegible]। यदि [illegible] धनहीन पुरुष [illegible] करने के लिए तैयार नहीं होता है तो य जिन्दा लपटी [illegible] और [illegible] वाक्य [illegible]। वह वाक्य ही नहीं [illegible] सुनाई जाती है। उसके पास कुछ भी करने [illegible] अब घर में [illegible]। किन्तु इसका तो [illegible] ध्यान नहीं दिया जाता है। य

पुरुषों को ही ऐसा करने को कहते हो यह नहीं किन्तु जिनके पास कुछ भी नहीं ऐसी अनाथिनी विधवाओं को करने मे भी नहीं शरमाते है। उससे तो वे उनके घर का भी गिरवी रख देते है। पाठकगण यह कितना हृदय विदारक दृश्य है। यह जीमन है या राक्षसी भोजन। जिमक्कड अपने एक वक्त के जीमन के लिए कितने अत्याचार करने को तयार हो जाते है। कई अनाथिनियों को तो अप-घात तक करना होता है। इस प्रथा द्वारा कई घर बर्बाद हो चुके हैं। जाति हितैषी अगर कोई पुरुष इस प्रथा के विरुद्ध आवाज उठाता है तो ये जिमक्कड उसको नास्तिक, धर्म द्रोही आदि कहकर अपमानित किया करते है। उनको मा बाप के कुपुत बतलाते है जो मा बाप का मौसर नहीं करे उसको ये हर तरह लांछित करने को उद्यत रहते हैं। ये कहते हैं कि चाहे जीते जी मा बाप को पीटो, उसे तकलीफ दो, गालिया सुनाओ और रोटियां भी मत दो, मौसर कर देने पर यह पाप धुल जायगा। पाप धुलने का यह कितना सुन्दर मार्ग है। वास्तव मे स्वार्थ भी नमस्कार करने लायक है। कुछ लोग इस घृणित प्रथा को यह कहकर भोले लोगो को बहकाया करते है। किन्तु हमारी समझ मे नहीं आता है कि इस मृत्यु भोज का धर्म से क्या सम्बन्ध है धर्म तो ऐसे जीमन को एक पाप का मार्ग बतलाता है। धर्म कैसे आज्ञा देगा कि चाहे चारो तरफ रुदन होता रहे, घरवाले सिर फोडते रहे, अनाथिनीयें अपने सुहाग के लिए रो रो कर गगन को भी भेदती रहे लेकिन तुम तो जीमो ! धर्म तो यह कहेगा कि इस हृदय विदारक दृश्य मे तुम भोजन भी मत करो क्योंकि यह आर्तध्यान और रौद्र ध्यान का कारण है। अत इस प्रथा का धर्म से कोई सम्बन्ध नहीं है। कुछ लोग यह कहते है कि जाति गंगा को जिमाये बिना घर की शुद्धि नहीं होती। अगर यह भी मान लिया जाय तो भी उसका यह मतलब नहीं होता है कि हम उसके लिए इतना विस्तृत आयोजन करें और घरो को बरबाद करवा दें। सूतक निवारण तो एक पैसे के चावलो से भी हो सकता है। किन्तु यहा यह उद्देश्य भी नहीं होता यहाँ तो जीमने का उद्देश्य रहता है अगर यही उद्देश्य होवे तो ये जिमक्कड 15 15 वर्ष के मौसर क्यो पुराने खाते हैं। क्या इतने समय तक वह सूतक लगा ही रहता है। अत यह सब स्वार्थियो का पाखण्ड है।

समाज हितैषी पुरुषो को आगे बढ़कर इस प्रथा का समाज से भी अन्त कर देना चाहिये। उनको अपमान तिरस्कार निन्दा की तरफ कोई ध्यान नहीं देना चाहिये। समाज हितैषियों द्वारा यह सब उपेक्षणीय है हमे मौसर के विरोध मे प्रतिज्ञायें करनी चाहिये कि हम इस प्रथा मे सम्मिलित होंगे और न घर मे करेंगे ही। जब हम स्वय इस प्रथा का विरोध करके उनको प्रतिज्ञाबद्ध कराना चाहिये हम ऐसा नहीं कर सके तो जाति हितैषी कैसे। हमारा यह जीवन किस काम का प्यारे पाठकगण ये लड्डू वे ही खाने योग्य है जिनके खाने म आनन्द और प्रेम का स्रोत हो। अश्रु और खून की नदियें बहें वे लड्डू कैसे। अत भाइयो इस नाशकारी प्रथा का अन्त कर दो। आर्थिक कष्ट मे गिरती हुई इस जाति का उद्धार करो। तब ही सच्चे सुधारक हो सकते हो। इस प्रसग मे मैं जैन बन्धु और जैन दर्शन के श्रद्धेय सम्पादक महोदय पूज्य गुरुवर्य प चैनसुख दास जी को माताजी के स्वर्गवास समय इस प्रथा का सर्वप्रथम अपने घर से अन्त कर दिया है व

श्रीमान बाबू दूली चन्द जी शाह श्री एल नैपुर को भी मै धन्यवाद दू गा जिन्होंने स्वनाम धन्य पूज्य जमना लाल जी शाह के स्वर्गवास समय इस प्रथा का स्मरण तक नहीं किया। इसी तरह मित्र प मिलाप चन्द जी न्यायतीर्थ भी धन्यवाद के पात्र है कि उन्होंने अपने पूज्य पिताजी के स्वर्गवास होने पर इस प्रथा का पर्दा फाश कर दिया है। वास्तव मे यह आदर्श प्रत्येक समाज हितैषी द्वारा अनुकरणीय है।

तपरहित ज्ञान और ज्ञान रहित तप व्यर्थ है।

—भव पाहुड

❀

जो आत्मा का ध्यान करता है, यह योगी है।

—मोक्षपाहुड

❀

जब तक मनुष्य विषयो के अधीन है तब तक ज्ञान को नहीं जानता।

—शीलपाहुड

❀

लोक में जन्म का दु ख है, बुढापा, रोग, तथा मृत्यु का दु ख है। आश्चर्य है कि ससार ही दु खमय है। यहा पर प्राणी कष्ट पाते ही रहते है।

—उत्तराध्ययन

❀

हम क्या करें . ?

केवल अध्यात्म की चर्चा करने से काम चलने वाला नहीं है-त्यागियों, मुनियों और आध्यात्मिक शिविर चलाने मात्र से ही दहेज प्रथा, मृत्यु भोज, वर विक्रय जैसे असत्य दुगुणो को हम दूर नहीं कर सकते हैं। हम इन्हे दूर कैसे करें? इसके लिए एकांत मे चिन्तन करने की आवश्यकता है। तभी कोई महावीर से भगवान महावीर बनकर देश, समाज को दिशाबोध प्रदान कर सकेगा।

प्राचीन भारत मे जितने भी महान चिंतक ऋषि मुनि साधक व मनीषी हुए हैं उनके हृदय मे प्रारम्भ से ही आत्म निरीक्षण ही प्रेरणा थी जिनसे वे महान बने। आत्म निरीक्षण का अर्थ है स्वय के विकास के लिए सोचना, विचारना और जीवन निर्माण की दिशा की तरफ अपना कदम बढाना। महावीर के जीवन म और उनसे सम्बंधित साहित्य मे जीवन के प्रारम्भ से लेकर अन्त तक यही प्रेरणायें हमको मिलती हैं। भगवान महावीर के स्वय के जीवन का उदाहरण हमारे सामने है। वे स्वय बाल्यकाल से ही एकात कक्षो मे बैठकर स्वय के जीवन निर्माण के सम्बध म व देश राष्ट के विकास के सम्बन्ध मे सोचा करते थे। इस काम म ही उनका चिन्तन इतना विशाल हो गया था कि उनके पास गृहस्थ व्यवस्था मे भी बडे 2 ऋषि आकर प्रेरणा ग्रहण करते थे। महावीर एक राजकुमार थे। उनके पिता के पास अपार वैभव और सपत्ति थी। लेकिन महावीर के लिए वह आकर्षक नही हो सकी क्याकि महावीर के चिन्तन म उनका कोई महत्व नही था। महावीर ने समझ लिया था कि ये सब नश्वर हैं। इनसे शास्वत शाति सुख नही मिल सकता। इनसे मानवता लुप्त होती है। और इन्ही से मानव मे अविवेक मूढताये और अह जागृत होता है जिससे यह मानव अन्धा होकर अपने स्वपनत्व को खो देता है। इसलिये उनम प्रभुता और सत्ता का मोह कभी नही आया। बडे बडे इन्द्र नरेन्द्र उनके चरणो मे नत होकर अपन आप को धन्य मानते थे लेकिन महावीर ने उनकी तरफ अपनी दृष्टि भी नही उठाई। वे गृहस्थ जीवन मे भी पूर्ण अलिप्त रहे। महावीर की माता ने जब विवाह जैसा महत्वपूर्ण प्रश्न महावीर के सामने प्रस्तुत किया तो महावीर का माथा ठनक गया। महावीर इतने निर्विकारी थे कि उन्होन इसके लिए कभी सोचा ही नहा था। माता का आग्रह महावीर ने स्वीकारा नही। महावीर चाहते थे निर्द्वन्द्व जीवन। निश्चल जीवन। जिसम

वीतरागता देखने तक को नही मिलती। आज हमारी वीतरागता के स्थल सिनमा घर हो रहे हैं। मंदिर और मूर्ति नहीं। हमारी सन्तान अपना घर छोडती जा रही है। उनको न हमारे मन्दिर प्यार है न हमारी मूर्तियां। उनको प्यारे है सिनमाघर और वासना भडकाने वाले नये 2 नाविल्स व फिल्म के अश्लील गान। हर घर मे प्रातःकालीन भजन रेडियो और ट्रांजिस्टर से प्रारम्भ होते है और दिन भर घरो मे चला करते है। इनसे हमारा सारा वातावरण भ्रष्ट हो गया है और हम हर तरह से पथ भ्रष्ट हो गये है। इनसे बिगड गया है हमारा समस्त मानस हम हो गये है, विलासिता के गुलाम हमारी चारित्रिक संपत्ति दिनों दिन खत्म होती जा रही है। हमारे समाज मे अनैतिकता बढ़ती जा रही है। जिससे हम गुमराह होते जा रहे हैं। हम इस समय आत्म निरीक्षण के पग बढ़ाना चाहिये हम को बचाने के लिए। नहीं तो हम खत्म हो जायेंगे। ये नारेबाजी और कुल हम को नहीं बचा सकेंगे।

हमको बचाने के लिए यदि कोई सक्षम है तो महावीर का वह पथ जिस पर चल कर हम स्वयं महावीर बन सकते है। आज समाज मे काफी बुराइयां पनप रही है। जिनसे सामाजिक स्तर गिरता जा रहा है। जैसे दहेज प्रथा, मृत्यु भोज अहिंसक समाज मे वर विक्रय क्या? क्या यह अहिंसा और अपरिग्रह है? क्या कभी हमने इसके लिए सोचा? हम आध्यात्म की चर्चा करते हैं, चारित्र की चर्चा के लिए जमीन आसमान एक करते है। क्या इन त्यागियों, मुनियों और आध्यात्मिक शिविर चलाने वाले विद्वानों ने कभी इसके लिये भी आवाज उठाई है। अतः मैं तो यही निवेदन करता हूं कि हम एकांत मे बैठकर सोचे कि हम क्या करें?

❦

लोक अकृत्रिम है, अनादि-अनन्त है, स्वभाव से निष्पन्न है, जीव और अजीव द्रव्यो से भरा हुआ है, सम्पूर्ण आकाश का अंग है और नित्य है —त्रिलोकसार

✕ ✕

❀

यह समस्त आकाश अनन्त प्रदेशो वाला है। इसके ठीक मध्य मे लोक स्थित है। —कार्तिकेया०

मोक्ष मार्ग में

रत्नत्रय का महत्व

समाज के प्रत्येक मानव आत्म निरीक्षण करते हुए "सम्यक दर्शन ज्ञान चारित्राणी मोक्षमार्ग" भगवान उमा स्वामी के शाश्वत मंत्र को पूर्ण मनोवेग से जीवन मे उतारना चाहिये। मोक्ष प्राप्ति का ही यह सर्व श्रेष्ठ मार्ग है।

वास्तव में आज भौतिक युग है। इस युग में सुख के बाह्य साधन पहले की अपेक्षा इस प्राणी को अधिक उपलब्ध हैं किन्तु फिर भी उसको सुख और शान्ति नहीं है। आज सारे विश्व मे चारो ओर अशान्ति की ये ज्वाला धधक रही है। एक राष्ट्र दूसरे राष्ट्र को हड़प करना चाहता है। मानव आज दानव का रूप ले रहा है अनैतिकता रात दिन बढती जा रही है। आशकायें चरम सीमा पर हैं। फिर भी इस प्राणी यही कहता है कि हम सुख और शांति नहीं। यह बात आज भी है और प्राचीन भारत मे भी थी। भारतीय इतिहास को या विश्व के इतिहासो के अध्ययन से यह पता चलता है कि इस भूमि पर बड़े 2 सम्राट और चक्रवती हुए। उन्होंने अनेक युद्ध किये विशाल राज्य प्राप्ति के लिए। वे उनमे सफल भी हुए किन्तु उनको उससे सन्तोष नहीं हुआ क्योंकि सुख और शान्ति का मार्ग एक भिन्न मार्ग है। जिसका सम्बन्ध इन बाह्य सामग्रिया से नहीं। बाह्य सामग्रिया जड हैं अचेतन है। इनसे आत्मा का सम्बन्ध नहीं। ये सब भौतिक उपलब्धियां हैं जो मिलती भी है और क्षण भर मे खतम भी हो जाती है।

को इस लोक मे सुख और शाति की प्राप्ति नहीं मिली। एक दिन ऋषभदेव को भी एकान्त स्थल मे सोचना पड़ा कि ऋषभ तुम्हारे पास अपार वभव है फिर भी तू आकुलित क्या है ? ऋषभ की आत्मा कहती है ऋषभ जिन भौतिक विकासो मे तू सलग्न है व विकास, विकास नहीं। ये क्षण अस्थाई हैं इन विकासो से तेरा कोई सम्बन्ध नही। इनसे सुख और शाति नही मिलती। सुख और शाति का मार्ग इनसे भिन्न है। ऋषभदेव को सही दृष्टि मिली। उन्होने सोचा वास्तव मे मेरी आत्मा की आवाज सही है। मैंने जीवन के लाखो वर्ष यो ही खो डाले। अगर शाति मिल सकती है तो आध्यात्मिक जीवन से ही मिल सकती है। धन, वभव, स्त्री और पुत्र तो आकुलता का पिण्ड है। इनसे शान्ति मिल नही सकती। इस दृष्टि ने भगवान ऋषभदेव की दृष्टि को बदल दिया। ऋषभदेव सही मार्ग की खोज के लिए आध्यात्मिक जीवन की प्राप्ति के लिए घर से बाहर निस्सग दिगम्बर बनकर निकल गए एकात स्थलो मे। जहा आकर उनको खोजना था सुख और शान्ति का मार्ग वास्तव मे यही सच्ची दृष्टि है और इसी दृष्टि का नाम है सम्यग्दर्शन। विपरीत दृष्टि से हटकर सही रुप मे आ जाना ही सम्यग्दर्शन है इस सम्यग्दर्शन के सम्बन्ध मे जैन साहित्य मे काफी उल्लेख है। इसके सम्बन्ध मे यहा तक सतो ने लिख डाला है कि तीन जगत और तीन काल मे इससे ऊची चीज कोई नही क्योकि एक आदमी को सही दृष्टि का मिलना भी अति दुलर्भ है।

आज भी जैन समाज मे सम्यग्दर्शन की चर्चायें कम नही चल रही है। लेकिन वे सिर्फ चर्चायें है। उपलब्धि के लिए प्रयास नही किया जाता है। सम्यग्दर्शन होने के बाद उसका ज्ञान और आचरण शीघ्र जीवन विकास की तरफ बढ जाता है और वह एकात साधनो मे बैठ कर जीवन को आगे बढाने का प्रयास करता है। सम्यक दृष्टि आत्मा नित्य जीवन की क्षणभगुरता का विचार करता है, वह इसकी उपलब्धि को ही अपनी उपलब्धि मानता है। यह सम्यक्दर्शन आज भी मिल सकता है। आवश्यकता है एकात साधना करने। वह बातो से नही मिल सकता। सम्यक्दर्शन का स्वरुप यही विपरीता से हटने का है। अगर कोई सम्यग्दर्शन की बात करें। और काम, क्रोध, मोह, मान प्रतिष्ठा आदि को अपना जीवन बना डाले तो वह सम्यकत्वी हो नही सकता। सम्यकत्वी आत्मा के विचारो मे हमेशा सवेग बना रहता है। वह हमेशा व्रत, सयम, तप और त्याग की तरफ एक दृष्टि से निहारता है और वह सोचता है कि कब वह समय आवे जब म सही दृष्टि प्राप्त करने के बाद सही ज्ञान क बल पर सही कदम बढाऊ।

जैन धर्म म सम्यक्दर्शन और ज्ञान को महत्व दिया है उससे कही अधिक बल चारित्र को दिया है। सम्यग्दर्शन से सिर्फ दृष्टि बदलती है लेकिन जीवन की शुद्धि चारित्र से ही हो सकती है। आध्यात्मिक व्यक्ति का जीवन तो चारित्र ही है। तीर्थकरो के लिए कहा जाता है कि वे सम्यक्त्वी और सम्यकज्ञानी जन्मजात थे। लेकिन निवृत्ति के लिय उनको चारित्र की तरफ बढना पड़ा, क्योकि चारित्र एक ऐसी निवृत्ति क्रिया है जो स्वरूप की तरफ आत्मा को प्रेरणा देता है जिसके आत्मा परिणामो मे पूर्ण स्थिरता आती है। चारित्र स्थिरता का ही नाम हैं। सही दृष्टि पैदा होने के बाद ज्ञान और आचरण अपने आप निर्मल बनता है। और उसकी निर्मलता से ही आत्मा को शाश्वत सुख की प्राप्ति होती है। सम्यक्त्व होने के बाद चारित्र होना अनिवार्य है। शास्त्रो म उल्लेख है कि सम्यक्त्व हो गया है और चारित्र धारण नही किया तो वह मुक्ति मार्ग का सही पथिक नही बन सकता भगवान कुन्दकुन्द स्वामी ने भी कहा है कि सम्यकदर्शन तो सही दृष्टि है लेकिन धर्म तो चारित्र ही है।

दुर्लभ मानव जीवन

संसार के समस्त प्राणियो मे मानव श्रेष्ठ प्राणी है। जिसमे विवेक है, समझ है, वह कल्याण, परकल्याण की भावना है प्रत उसे अनेकात दृष्टि से जीवन के बारे मे विचार कर प्राप्त मानव जीवन को श्रेष्ठ बनाने हेतु चिन्तन और मनन करना चाहिये।

एक युग था जिस युग मे एकात स्थलो म साधना के रूप मे बैठकर मानव ने मानवता के सरक्षण के लिए अमूल्य सिद्धाता को सजोया, इनके बल पर मानवता को जिंदा रखने का प्रयास किया और उन सिद्धाता मे हजारो लाखो वर्षो तक मानवता को सरक्षण मिला। चाहे वे सिद्धात धर्म के नाम से प्रचलित किए गए हो और चाहे सामाजिक जीवन को विकसित करने के लिए प्रचलित किए गए हो। धर्म के नाम से आत्मा को शाति मिलती है और वह सही सुख का अनुभव करता है। इसलिए धर्म का सही अर्थ यही होता है जिससे जीवन का निर्माण होता है। विश्व के समस्त प्राणियो म मानव जीवन का दुर्लभ माना गया है, अन्य जीवनो को नही, क्योकि मानव म ही अनेक विशेषतायें और उन विशेषताओ के आधार से ही वह विश्व में एक सम्माननीय प्राणी बना। प्राणी की दृष्टि से अन्य प्राणी है लेकिन उनमे मानव ने अपने जैसी सूझबूझ नहीं देखी। इसलिए उनको पशु सज्ञा दी और अपने अनुकूल बनाकर उनसे अपना उपयोग किया। उन सबको उपयोगी जानकर उनके सरक्षण के लिए अहिंसा, अपरिग्रह जैसे महान सिद्धान्तो को जन्म दिया। इन सिद्धान्तो को मूतरूप देन के लिए कुछ महान चिन्तको ने इनके लिए परीधिया नियुक्त का जिनमे मानव दो रूप म बटा एक साधु और दूसरा गृहस्थी। साधु का जीवन इतना आदर्श बना कि उसने स्वय को विश्व-कल्याण के लिए अर्पित किया और इन्ही सिद्धाता के लिए अपने आपको खपा डाला। लेकिन गृहस्थी ऐसा नही कर सका इनका जीवन सकीर्ण रहा फिर भी किसी भी रूप मे उन सिद्धान्तो का परिपालन करता रहा। इस तरह इन दोनो ही वर्गो ने मानवता को जीवित रखने का प्रयास किया और इन्होने बतलाया कि मानव जीवन की प्राप्ति अति दुर्लभ है। यह प्राणी क्षुद्र अवस्थायें अति जल्दी प्राप्त कर सकता है लेकिन मानव जीवन इतनी जल्दी नही मिल सकता।

इन शिक्षाओ को मानव ने माना और इनसे भी ऊचे उठने का प्रयास किया और आदर्श के लक्ष्य पर आगे बढता रहा। इन सबमे भी अपने आपको मुक्त करने का प्रयास किया और यह उसमे सफल हुआ इसीलिए मुक्त कहलाया। अहिंसा और अपरिग्रह जैसे सिद्धाता की आज भी आवश्यकता है लेकिन आज का मानव इनके बल पर जीवित नही रहना चाहता। उसका सयमित जीवन खत्म हो चुका है और अब वह भेड बकरी जैसे पाशविक जीवन को ही पसन्द करना जा रहा है, इसी का

यह परिणाम है कि सारे विश्व में मानवता खत्म होती जा रही है और आदमी खूंखार होकर खुले दिल से पाशविकता को जन्म दे रहा है। देश में बड़े-बड़े सन्त इस मानवता से दूर होते जा रहे हैं। उनकी प्रतिष्ठा की भावनायें और महात्वाकांक्षायें दिन दिन बढ़ती जा रही हैं। वे धर्म के नाम पर आदमी को पशु बनाने का प्रयास कर रहे हैं। वे बड़े बड़े व्याख्यानों में ऐसे लोगों को बैठाते हैं जिनका काम सिर्फ शोषण करने का है और शोषण के बल पर ही शोषण को महत्व दिया है। न उनमें अहिंसा है और न उनमें अपरिग्रह के सिद्धांत। बातें उनकी बहुत ऊंची होती हैं लेकिन काम अति निकृष्ट।

उसी का यह परिणाम है कि सारे विश्व में मानव मानव के ऊपर हावी होकर उसी पर अत्याचार और अन्याय करके जीवित रहना चाहता है। न उसमें प्रेम है और न वात्सल्य। धर्म जीवन को इन सब बातों से दूर रखना चाहता है। धर्म ने जीवन को अनेक रूप में इसलिए ढालने का प्रयास किया कि वह किसी भी तरह जीवित रहे। लेकिन धर्म के नाम लेने वाले प्रतिष्ठा-लोलुपी उन रूपों का भी खात्मा करना चाहते हैं और वे यहां तक कह देते हैं कि ये बाह्य रूप और परिकर तुम्हारा जीवन नहीं। तू तो सिद्धों के स्वरूप में बैठा है। जो शुद्ध, बुद्ध और अतीन्द्रिय है। इसके लिए तुझे अन्य बातों से बोलने की जरूरत नहीं। वे तो बाह्य हैं, तू तो लक्ष्य बांध इन बातों से आदमी स्वच्छंद होकर पागल हो गया और उसने वास्तव में अपने आपको शुद्ध बुद्ध मान लिया और उसने खाना पीना पहनना अपने जीवन का ध्येय बना डाला।

जन साहित्य में मानव जीवन की प्राप्ति अति दुर्लभ मानी है। इसके लिए जैन सन्तों ने जीवन निर्माण के लिए चार अनुयोगों में साहित्य सर्जन किया और विविध रूप से मानवता के संरक्षण के उपाय बतलाए। प्रथमानुयोग में मानव कैसे उठता है, इससे सम्बन्धित महापुरुषों के जीवन चित्रित किए या गिर कर कैसे आगे बढ़ें, उनका जीवन वृत्त बतलाया। ऐसे जीवन निर्माण के लिए चरणानुयोग की रचना की। चरणानुयोग ही ऐसा साहित्य है जो इस मानव जीवन को सार्थक कर सकता है। चरणानुयोग बिखरे जीवन को समालता है, उसमें स्थिरता लाता है और सही रूप का निर्देश देता है। करणानुयोग और द्रव्यानुयोग तो सही बात बतलाता है। इस सही बात का क्रियात्मक रूप चरणानुयोग है। इसीलिए भगवान कुन्दकुन्द ने दर्शन को धर्म का मूलरूप कहा और चारित्र को वास्तव में धर्म माना। हमारा मन्तव्य है कि हम इस बात को समझें। जीवन को खान-पीन और पहनने में न बिगाड़ें, विषय भोग अनन्त बार किए और फिर मिल सकते हैं लेकिन जीवन की विशुद्धता कभी फिर मिल सकते। श्रद्धेय पं० दौलतराम जी ने अपने आध्यात्मिक भजनों में इस आत्मा को सम्बोधित करते हुए कई जगह कहा कि तू इन विषय भोगों का रूप जानकर छोड़ और आत्मकल्याण की भावना में अपने आपको लगा, नहीं तो तुझे पछताना पड़ेगा। आज भी देश में परमपूज्य विद्यानन्द जी जैसे महान सन्तों का विचरण है, जिन के प्रवचनों में मानव का प्रमुख अध्याय मिलती है और सही दिशा निर्देश मिलता है—मानव का कर्तव्य है कि वह उनके प्रवचनों का अन्तरंग में उन पर विचार करे और जीवन की सात्विकता का ध्यान रखे। जीवन की प्राप्ति वास्तव में दुर्लभ है जिनमें विवेक है, समझ है और स्वकल्याण परकल्याण की भावना है।

मुनि भक्तो से मुझे कुछ कहना हैं ?

मुनिराज हमारे आदर्श है, उनको प्रत्येक वाणी काय हमारे जीवन मे उदाहरण होते हैं-यदि वे धर्मानुसार कार्य करना छोड़ दे तो समाज किससे मार्ग दर्शन लेगी-आज तो भौतिकयुग मानव को साहित्य, तत्वचर्चा आदि के करने का समय ही नहीं हैं।

समन्वय वाणी मे पूर्व मे प्रकाशित मेरा लेख दिगम्बर जैन साधुओ मे बढ रहे शिथिलाचार के विरोध मे पढा होगा। हमारा उद्देश्य मुनि धर्म के विरुद्ध एक शब्द भी लिखने का नही है। हम दिगम्बर धर्म के कट्टर अनुयायी हैं तथा दिगम्बरत्व पर हमको नाज है। जहा भी दिगम्बर साधुओं का पदार्पण होता है, हम दर्शनो के लिए अवश्य जाते है। कुछ समय उनके चरणो मे बैठकर उनसे चर्चा करते हैं। परन्तु मुनि धर्म के विरुद्ध कहीं भी किसी प्रकार का स्थूल शिथिलाचार भी हमे मालूम पडता है तो हम सहन करने को तैयार नही होते। उसी समय बड़े विनीत शब्दो मे एकान्त मे बैठकर मैं उनमे व्याप्त शिथिलाचार की चर्चा भी करता हू। हम सुधार अवश्य चाहते हैं। समन्वय वाणी या जन सदेश मे जितने भी लेखको के इस प्रकार के विचार प्रकाशित होते है, उनका उद्देश्य सुधार का है, मुनि निन्दा का कदापि नही। मै तो मुनि भक्तो से यह निवेदन करना चाहता हू कि वे एकान्त मे बैठ कर इस सम्बन्ध मे विचार करें तथा मुनि भक्तो के नाम पर दूसरो पर कीचड न उछाले। इससे लोगो के हृदय मे मुनियो के प्रति आस्था पैदा नहीं होगी, दिनों दिन उदासीनता ही होती है।

एक सत्य घटना है। श्रवणबेलगोल महामस्तकाभिषेक के समय मुझे न 3 आवासनगर का इन्चाज बनाया गया था। कार्याधिकता के कारण समयाभाव रहता था। एक दिन मेरी धर्म पत्नी ने कहा अमुक आचार्य जी रोज टोकते है आप दर्शनो के लिए क्यो नही चलते। पत्नी के कहने पर मै दर्शन को गया तो देखता हू मुनिराजजी के हाथो मे नोटों का बण्डल है तथा एक परिचारिका उनके पैर से पैर लगाकर बैठी है। मुझे देखते ही मुनिराज ने वह नोटो का बण्डल एक वही के नीचे दबा दिया। मैंने महाराज से कहा कि इसीलिए आने की इच्छा नही होती और लौट आया।

इसी तरह मध्य प्रदेश कस्बे मे एक मुनि जी 5–7 वर्षो से रहते हैं। खड़े खड़े मकान बनवाते हैं। कारीगरो को पैसा दिलवाते हैं, अकाउन्ट रखते हैं, रात्रि को बोलते हैं। दर्शनार्थियो के सारे सुख सुविधा की व्यवस्था करवाते हैं। लोगो की स्वाध्याय की परिपाटी नही होने से वे यह समझने को तयार नही कि मुनि की सही चर्या क्या होती है ? यह तो स्वय मुनि भक्त भी जानते हैं कि कई तीर्थों पर स्वय मुनि आहार के लिये यात्रियो से पैसे बटोरते हैं। इस तरह की कई घटनाय हैं। परम् तपस्वी आचाय देश भूषण जी महाराज ने कोथली से जयपुर तक डोलिया से विहार किया रात चले दिन चले न ईर्या समिति का पालन हुआ और न मुनि कर्तव्य का पालन हुआ। अभी मैं

राजस्थान गया था सौभाग्य से जयपुर भी पहुंचा वहां कुछ लोग मिले पास प्राय उन्होंने महाराज रामभूषण जी की कई ऐसी बातें बतलाई जिनसे मन मस्तिष्क नाना ना गया। मार्ग में घर घर जाकर मुहूर्त आदि में शामिल होना, दुकानों पर जाकर आशीर्वाद देना, गांव में महिलाओं में अंगीठ आदि ठुमाना आदि ये सब बातें क्या विचारणीय नहीं है।

दमोह की ताजी घटना आप सबके सामने है जो मानव के हृदय को हिला देती है। एक साधु अपनी जिद की पूर्ति के लिए क्या क्या कर रहा है, यह समाज की समझने की बात है। मैं तो सब साधारण से यह निवेदन करना चाहता हूं कि वे अपनी आराधना का एक बार न्याय करलें। हमारी भावना मुनि धर्म निष्कलंक बना रहे, यही है।

जो लोग हमको मुनि निन्दक कहते हैं व स्वयं मुनि निंदक हैं आज मुनिराजों के नाम पर इनको हजारों रुपये प्रतिष्ठा आदि में मिलते हैं और ये अध्यावृत्ति के नाम पर इनको गाय भोले श्रावकों से एंठते हैं ऐसे समाज को सावधान रहना चाहिये।

समन्वयवाणी धर्म द्रोही पत्र नहीं है, इसका हम समस्त समाज का समर्थन करना है। हम ऐसे लोगों को खूब अच्छी तरह से जानते हैं जो मुनिराजों को हथियार बनाकर अपना व्यापार चलाते हैं।

दिगम्बर जैन समाज का बच्चा बच्चा भी जानता है कि दिगम्बर संत तिल मात्र भी परिग्रह नहीं रख सकते जबकि आज उनके नाम पर हजारों रुपये उनके गीत गान वाले भक्तों और परिचारिकाओं के पास उपलब्ध होते हैं। ऐसी स्थिति में हम मुनि निंदा के नाम पर चुप बैठ रहे तो एक दिन हमारे दिगम्बर संतो की परिपाटियां बिगड़ जायेगी और हम लोग रागमार्ग से भ्रष्ट हो जायेंगे।

और भी बहुत सी ऐसी बातें हैं जैसे महारानी पदमावती क्षेत्रपाल को पुजवाना, उनकी वेदियां बनाना, भजना और आराधना पर जबरदस्त बल देना। क्या कोई भी वीतरागी संत इन कुदेव समान देवी देवताओं की पूजा करने की चर्चा करेगा, जबकि समन्तभद्र रत्नकरंड श्रावकाचार में लिखते हैं कि सम्यग्दृष्टि इनमे पैदा भी नहीं हो सकता इनको तो नीच जाति के देव मानते हैं। यदि इनको सम्यग्दृष्टि भी मानते तो हमसे तो पूज्य नहीं हो सकते क्योंकि वे अव्रती हैं। और हम पंचम गुणस्थानवर्ती श्रावक। आज तक के इतिहास में आदमी को पूजने के लिये स्वर्ग से देवता आया हैं, लेकिन इनको पूजन के लिए स्वर्ग आदमी नहीं गया।

आश्चर्य तो यह है कि इन देवताओं को इतनी उत्पाती माना गया है कि इनको स्वर्ग में भी स्थान नहीं दिया गया ये। तो प्रथम नरक की प्रथम भूमि में रहते हैं। क्या इनको पूजने वाले संत तथा इनको पूजने का उपदेश देने वाले संत इस जैन धर्म की बातों का, शास्त्रों का, उल्लंघन नहीं कर रहे हैं समाज अपने विवेक से काम ले।

जैन मान्यता वीतरागता की प्राप्ति की बात कहती है वैभव और सम्पत्ति बटोरने की नहीं। सम्पत्ति प्राप्ति के लिए पूजा विवेकी कभी भी नहीं करेगा।

आशा है मेरे निवेदन पर मुनिभक्त एवं मुनिभक्त की भावना को अवश्य ही समझने का यास करेंगे व समझेंगे।